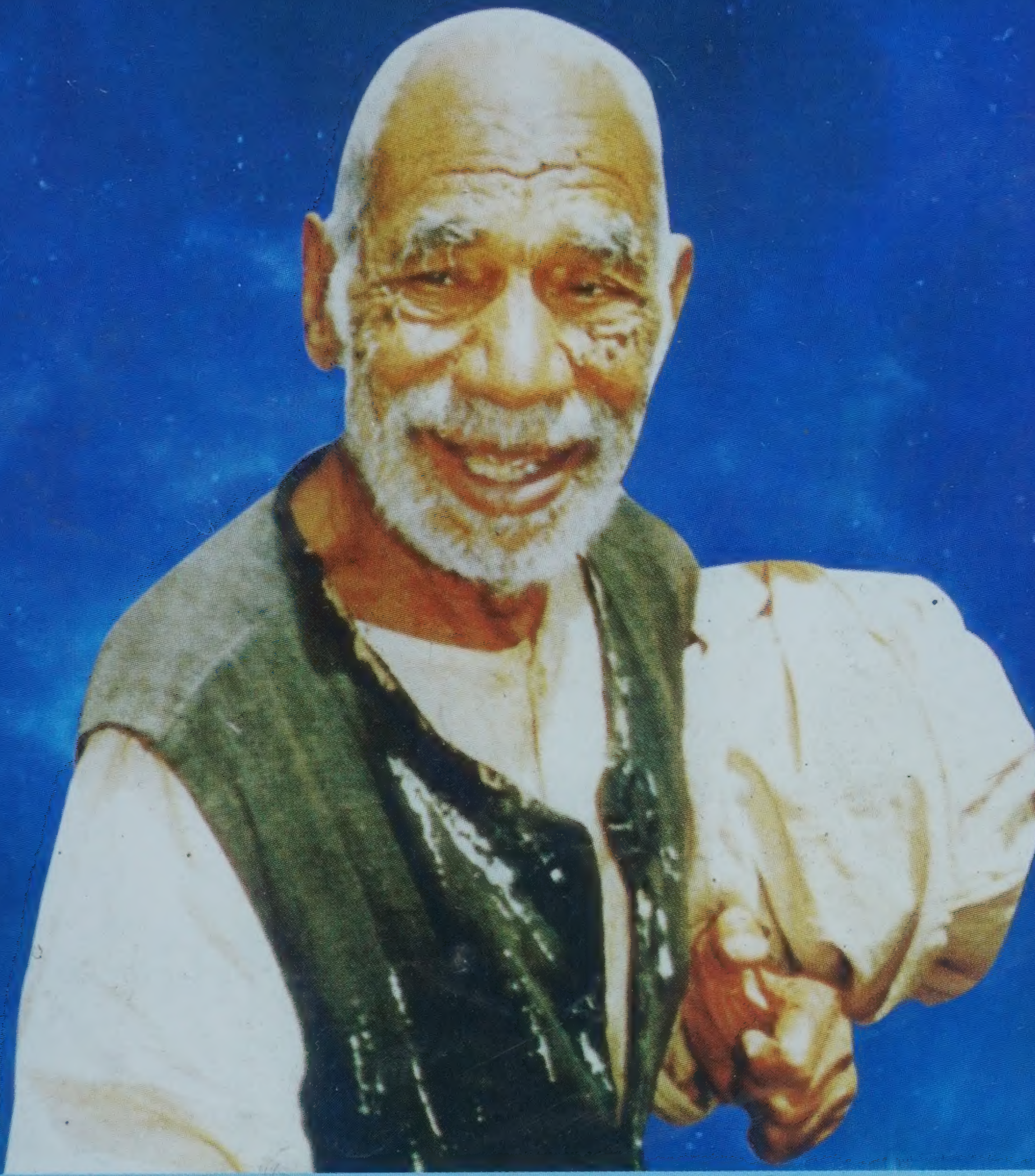
मानव सेवा ही माधव सेवा



ब्रह्मलीन संत हिरदाराम साहिब दर्शन

पुष्कर प्रसाद :

बूढ़े, बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार,
करें भावना से सेवा इनकी
पाएंगे लोक-परलोक में सुख अपार।

लेखन एवं संकलन :

आसूदो छ॒बलदास लच्छवाणी



आदरणीय जनक

स्व. श्री छबलदास जी

लच्छवानी

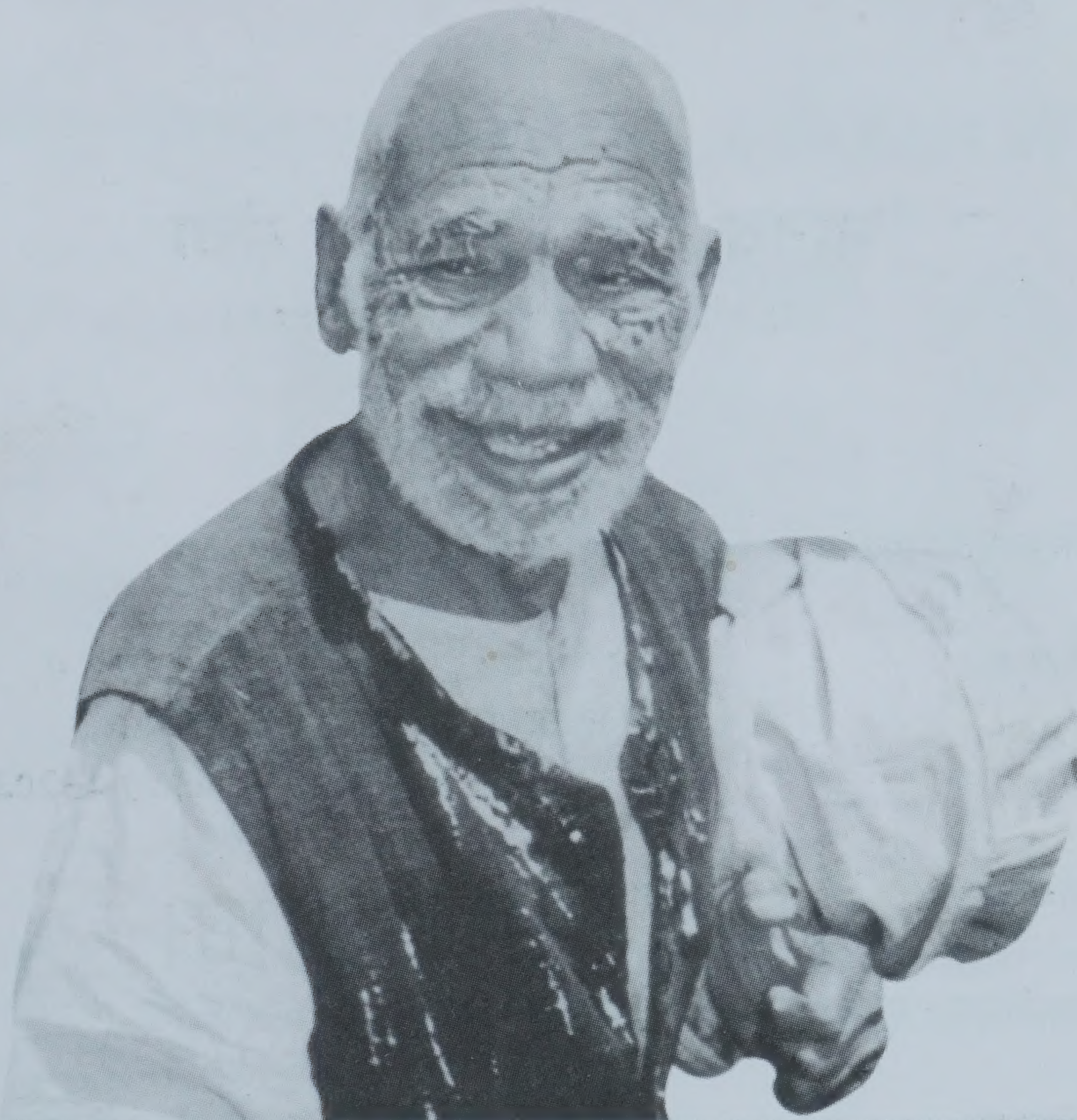
के

चरण कमलों

में

अर्पित समर्पित

मानव सेवा ही माधव सेवा



ब्रह्मलीन संत हिरदाराम साहिब दर्शन

पुष्कर प्रसाद :

बूढ़े, बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार,
करें भावना से सेवा इनकी
पाएंगे लोक-परलोक में सुख अपार।

लेखन एवं संकलन :

आसूदो छ्ब॒लदास लच्छवाणी

‘मानव सेवा ही माधव सेवा’

(ब्रह्मलीन संत हिरदाराम साहिब दर्शन)

लेखक व संकलन : आसूदो छ<u>ब</u>लदास लच्छवाणी

निवास : ‘संत आशीष’, 62, गुरू नानक कालोनी,
संत हिरदाराम जी की कुटिया के पास,
संत हिरदाराम नगर भोपाल (म.प्र.) 462030

मोबाइल : 9893809097

संस्करण : प्रथम (वर्ष 2022)

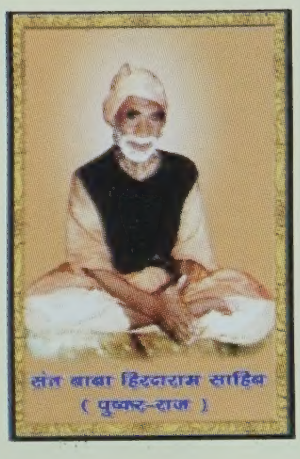
मूल्य : ₹300/- तीन सौ रुपये मात्र

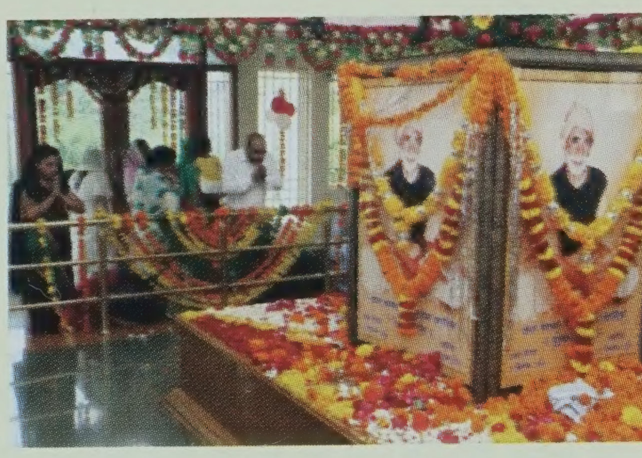
मुद्रक : मुस्कान ट्रेडर्स

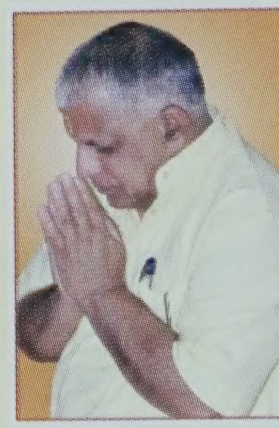
कवर पेज डिजाइन : श्री कंवल प्रकाश किशनानी, अजमेर

सेवा संकल्प धाम

संत हिरदाराम नगर, भोपाल म.प्र.







शुभकामना सन्देश

बहुत ही हर्ष का विषय है कि प्रकाशित पुस्तक 'मानव सेवा ही माधव सेवा' में ब्रह्मलीन संत हिरदाराम साहिब जी के संपर्क में आए विभिन्न शहरों में निवासरत सेवाधरियों के संस्मरण संकलित किये गये हैं ।

वास्तव में ब्रह्मलीन संतजी का जीवन और सेवा कार्यों का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत है कि उन सबका पूर्ण विवरण एक पुस्तक में संग्रहित करना संभव नही है। संतजी का 'सेवा-दर्शन' विश्व के लाखों अनुयायीयों के लिए उनका 'जीवन-दर्शन' बन गया जिस पर वे चलकर अपना मानव जीवन सार्थक और सफल कर रहे हैं

सेवा दर्शन - बूढे, बच्चे और बीमार हैं परमेश्वर के यार, करें भावना से इनकी सेवा, पाएंगे लोक परलोक में सुख अपार ।

और सुख चाहो तो सुख दो

मेरी ओर से शुभकामनाएं है कि इस पुस्तक के सभी पाठक संतजी द्वारा बताए गए उपरोक्त मूल मंत्रों को अपने जीवन में धारण कर अपना और दूसरों का जीवन संवारे और प्रभु परमात्मा से मिलन की राह में सदैव निरन्तर अग्रसर रहें।

-होतचंद धनवानी 'सिद्ध भाऊ'



श्री शान्तानंद उदासीन आश्रम

चुंगी चौकी के पीछे, अजमेर रोड़, पुष्करराज,
अजमेर (राज.) मो. 9414029637



शुभकामना सन्देश

श्री असुदो छबलदास लच्छवाणीजी,

अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि परमहंस स्वामी हिरदाराम साहिब के जीवन काल में उनके द्वारा की गई सेवा और दूसरों के दुःख को अपना मानकर उनके हृदय से निकला मानव जीवन के प्रति उनका अनुभव कि मानव सेवा ही माधव सेवा है, पूरा जीवन समर्पित कर दिया एवं भक्तों को भी यही सेवा का मंत्र देते रहे। खुद त्याग की मूर्ति होते हुए भी अपने को परमात्मा का सेवक ही बताया।

भक्ति मार्ग पर चलते हुए अपना जीवन परमात्मा को सौंप दिया, उनकी त्याग और तपस्या को देखकर उन्होंने दो मंत्र दिए, पहला मंत्र हैः-

पुष्कर प्रसाद

बूढे, बच्चे और बीमार हैं परमेष्वर के यार,
करो भावना से सेवा इनकी,
पाऐंगे लोक परलोक में सुख अपार।

एवं दूसरा मंत्र है

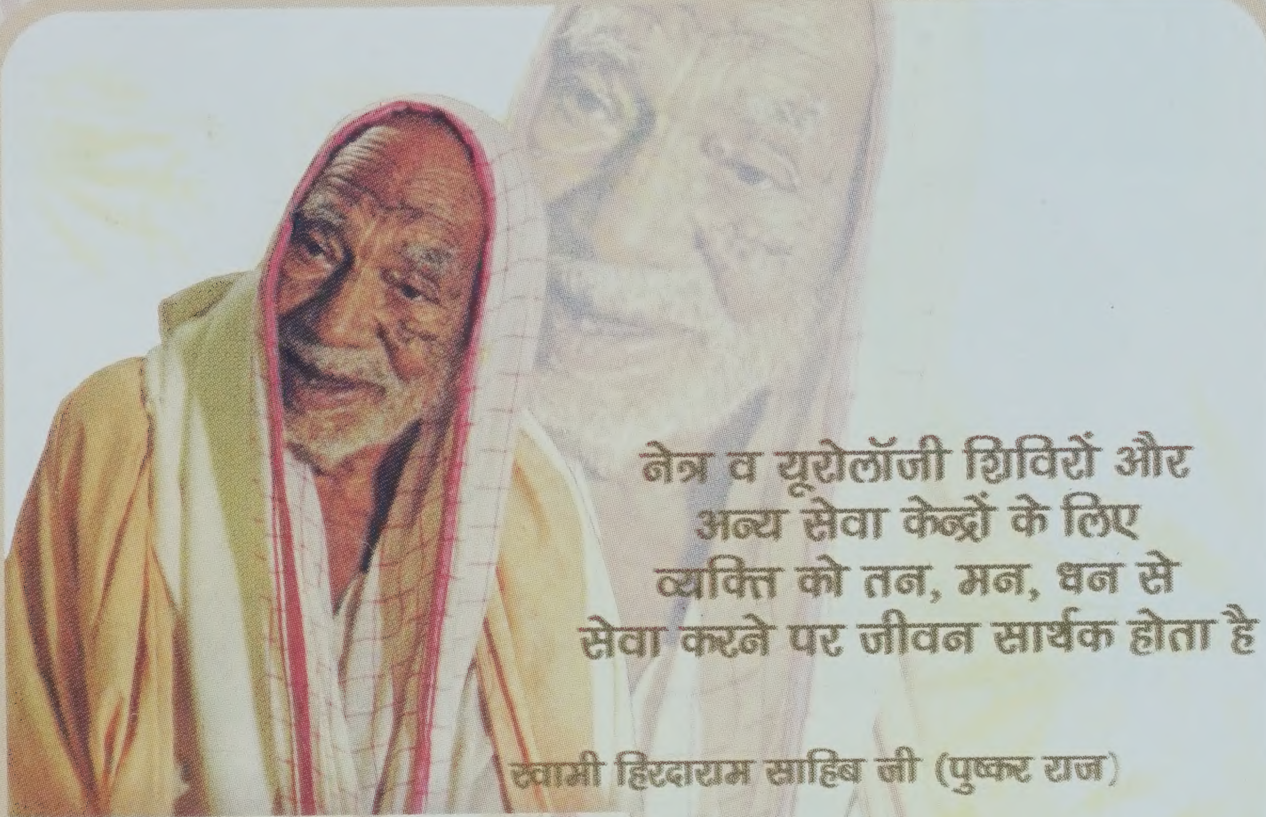
मजो थो मारे-त्याग थो तारे (मजा मारता है त्याग तारता है)

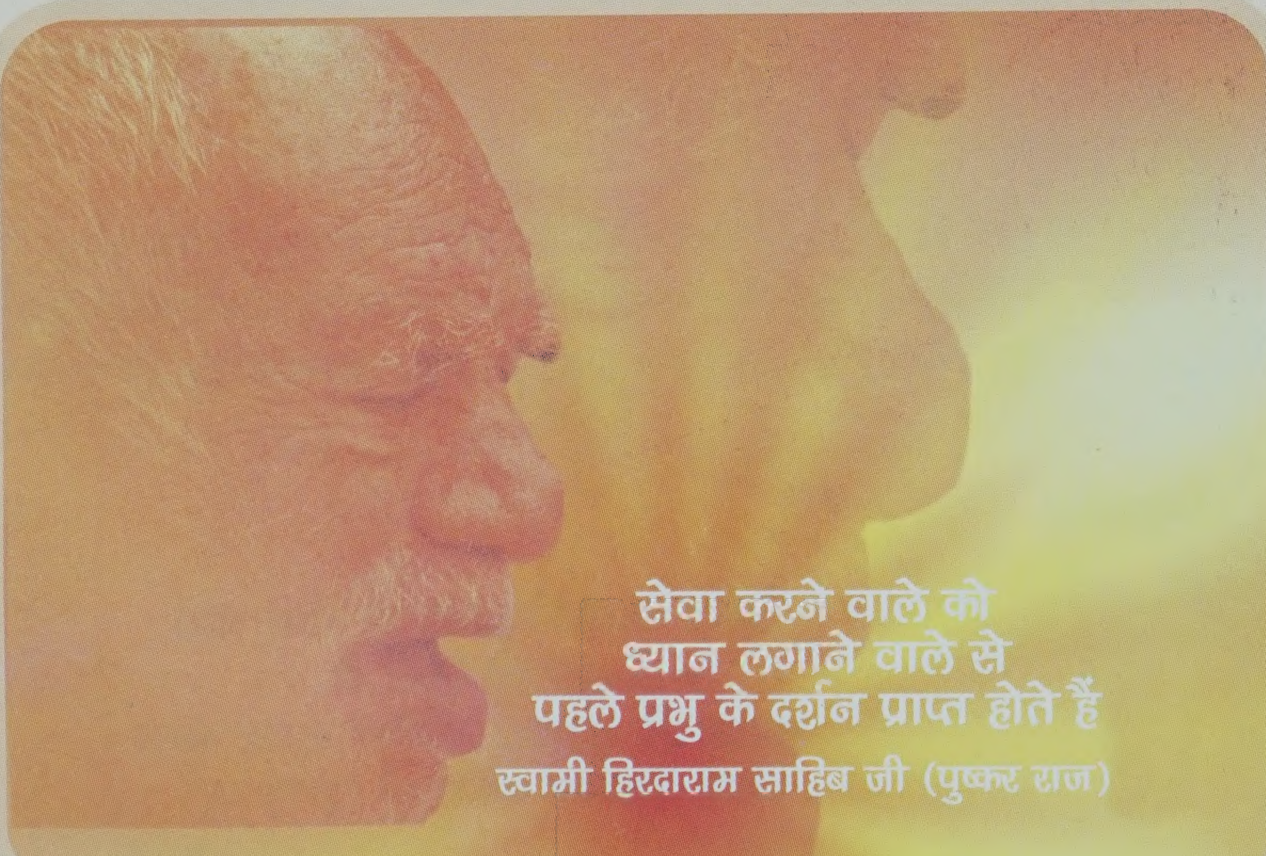
स्वामीजी ने अपने जीवन में मानव के अलावा जीव-जन्तुओं की भी उतनी ही चिंता की। वे हमेशा सेवा, सिमरन में रहते थे एवं सभी भक्तों को भी यही सिखाते थे।

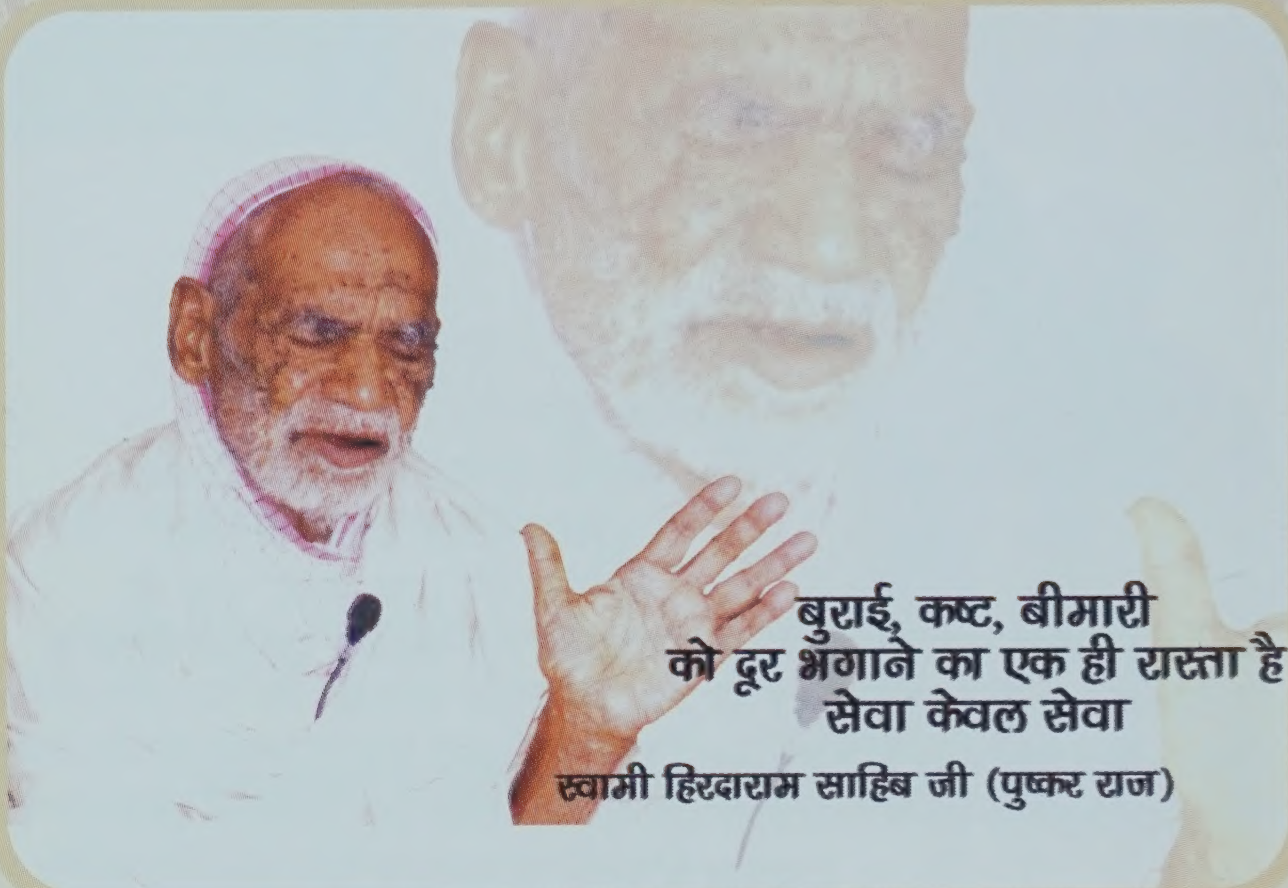
इस लिखित पुस्तक 'मानव सेवा ही माधव सेवा' में जिन श्रद्धालुओं से स्वामीजी का संपर्क हुआ, उनमें से प्रिय आसूदो लच्छवाणी जी कुछ लोगों तक पहुंच पाये, उनके अनुभव को सरल शब्दों में लिपिबद्ध किया, जो आने वाली पीढ़ीयों को संतों की महिमा की जानकारी पहुंचाने में अवश्य ही मदद करेंगे। 73 वर्ष की परिपक्व उम्र में इतना प्रवास कर मेहनत से किये गये संकलन के कार्य हेतु लच्छवाणी जी को हृदय से साधूवाद।

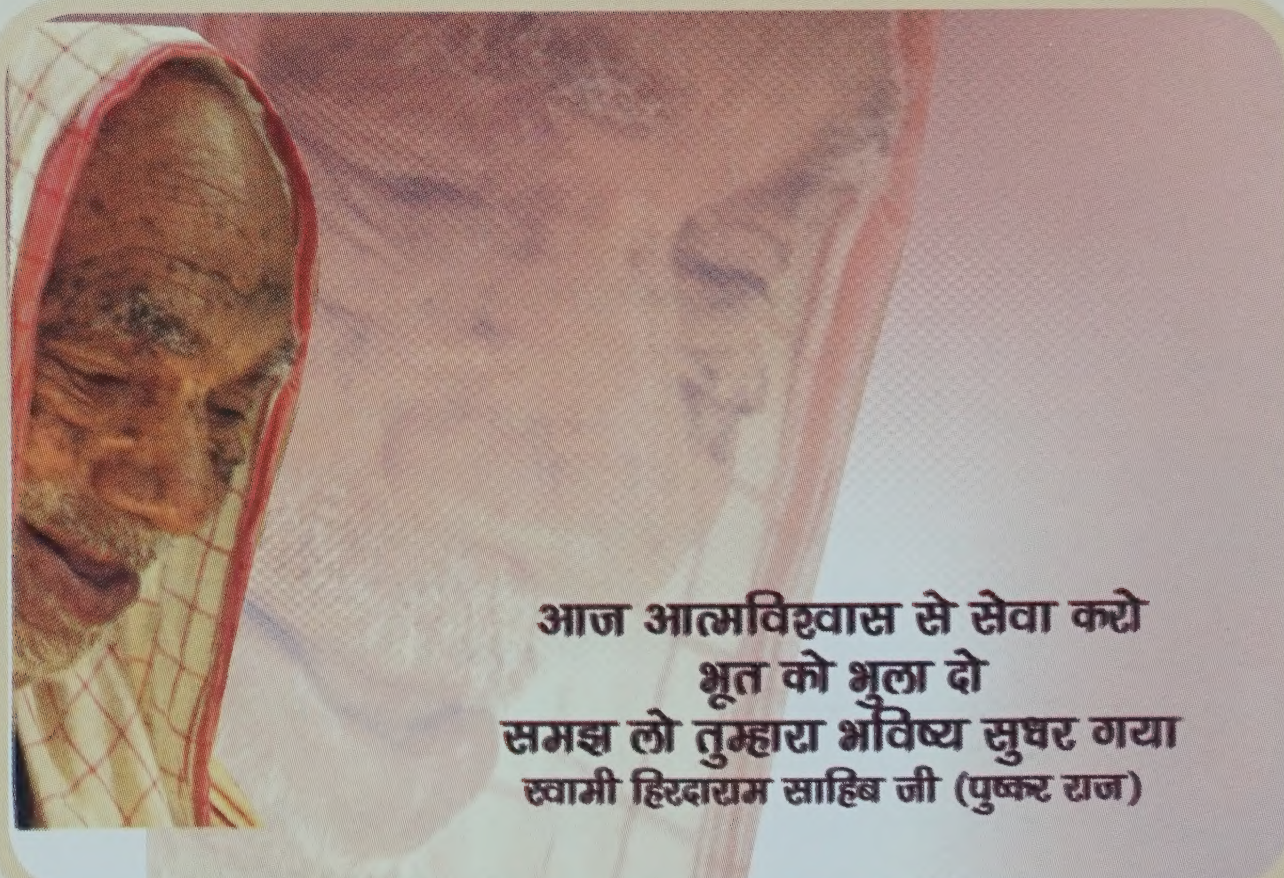
मैं परमपिता परमेश्वर एवं स्वामी हिरदाराम जी से अरदास कर आपके स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं यह संकलन जन-जन तक पहुंचे इसी मंगल कामना के साथ,

-भाई हनुमानराम उदासीन


नेत्र व यूरोलॉजी शिविरों और
अन्य सेवा केन्द्रों के लिए
व्यक्ति को तन, मन, धन से
सेवा करने पर जीवन सार्थक होता है
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


सेवा करने वाले को
ध्यान लगाने वाले से
पहले प्रभु के दर्शन प्राप्त होते हैं
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


बुराई, कष्ट, बीमारी
को दूर भगाने का एक ही रास्ता है
सेवा केवल सेवा
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


आज आत्मविश्वास से सेवा करो
भूत को भुला दो
समझ लो तुम्हारा भविष्य सुधर गया
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)

जय शदाराम JAI SHADARAM जय शदाराम JAI SHADARAM



धूणी वाला सहाय ॐ

شداڻي دربار

शदाणी दरबार

SHADANI DARBAR



जय शदाराम

हमें जानकर प्रसन्नता हुई है कि आप हमारे समाज के दिव्य महापुरुष योगी परम सुजान पूज्य सांई हिरदाराम साहिब के ऊपर एक किताब लिख रहे हैं।

''संतो की महिमा वेद न जाने
जेता कहे तेता बख्याने''

यादि संतो की महिमा का गुणगान सम्भव नहीं होता, बस कोशिश कर उनके बताये मार्ग पर चलना चाहिये, उनका संग कर अपना जीवन धन्य करना चाहिये।

पूज्य संत हिरदाराम जी एक तपस्वी, साधक, सच्चाई व सादगी प्रिय थे। भोपाल, पुष्कर, अजमेर आदि शहरों में जल सेवा, चिकित्सीय सहायता, स्कूल, आश्रम उनके महान लोक कल्याणकारी कार्य रहे, उन्हें शत् शत् नमन वे अमर रहे।

(संत युधिष्ठिरलाल)

सचो सतराम सहाई ॐ सन्त कँवरराम कृपा

शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम
Shiv Shanti, Sant Asudaram Ashram

V.I.P. Road, Alambagh, Lucknow (U.P.) Ph. : (0522) 4008800 Mob. : 9336246568



शुभकामना सन्देश

सन्तः परमार्थः विभुतः

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि संत हिरदाराम साहिब जी हिन्द के ऐसे महान सन्त जिन्होंने ऊंच-नीच व अमीरी-गरीबी के भेद को मिटाकर समता का भाव सर्वजन के हृदय में स्थापित करके उनके नैतिक आचरण को बल प्रदान किया एवं "समाज के जरूरतमंद व दीन दुखियों की सेवा ही भगवत सेवा है" के आदर्श को स्थापित किया है आप उनका जीवन चरित्र लिख रहे है।

हमारी भावना और शुभकामना है कि आपके द्वारा रचित संत हिरदाराम साहिब जी का जीवन चरित्र जन-जन तक पहुंचे एवं समाज में नई चेतना जगाये।

(दासनूदास चाँडू)
शिव शान्ति संत आसूदाराम आश्रम
लखनऊ।

अनुक्रमणिका

संस्मरण



लेखक की कलम से

नैनीताल प्रवास के दौरान संत लीलाशाह आश्रम में संत लीलाशाह दर्शन ग्रंथ को पढ़कर मन में यह विचार आया कि मेरे आध्यात्मिक गुरु ब्रह्मलीन संत हिरदाराम जी पर एक पुस्तक लिखना चाहिये। यह अक्टूबर, 2021 की बात है। मेरे स्वप्न में भी कभी यह ख्याल नहीं था, न मालूम था कि संत लीलाशाह का आश्रम नैनीताल में है। नियति को शायद मुझसे स्वामी जी पर किताब लिखवानी थी, तो प्रातः वंदनीय श्री नानक पारवानी जी ने मुझे बताया कि श्री सुरेश ख्यानी जी वर्ष में दो बार नैनीताल जाते है और वहां पर 2-3 माह व्यतीत करके आते हैं। एक बार आप भी वहां जाकर आओ। श्री नानक पारवानी जी मेरे परम हितेषी हैं, उनके कारण ही मुझे 1975 में जीवनदान मिला था। अतः मैने मन बनाया और सुरेश ख्यानी के साथ नैनीताल पहुंच गया और वहां पर मेरे मन में किताब लिखने का विचार आया। मैं 14 दिन वहां पर रहा था।

वहां से आने के बाद सिद्धभाऊ जी से मुलाकात के दौरान उन्हें अपने मंतव्य के बारे में बताया तो उन्होंने कहा यह कार्य मुझे करना चाहिये, परन्तु आप कर रहे हैं तो अच्छी बात है। फिर मैंने पुस्तक की वैसी ही रूप रेखा बनाई जैसी संत लीलाशाह दर्शन पुस्तक में थी। किताब को मैने दो भागों में बांटा। सर्वप्रथम श्रद्धेय सिद्धभाऊ के द्वारा 20 दिनों तक सेवा संकल्प धाम, संत हिरदाराम नगर, भोपाल म.प्र. में चलाई गई व्याख्यान माला की ऑडियो रिकार्डिंग दी गई जिसमें उल्लेखित घटनाओं और जानकारियों के आधार पर स्वामी जी के बारे में लिखा गया।

दूसरे भाग में मैंने स्वामी जी में अथाह श्रद्धा रखने वाले देश, विदेश में रहने वाले अनुयाइयों से मिलकर उनके संस्मरण सुनकर उनको अपने पुस्तक में समायोजित करने का मन बनाया।

सबसे पहले मैंने संत हिरदाराम नगर, भोपाल नगर में रहने वाले अनेक श्रद्धालुओं से संपर्क किया और उनके संस्मरण सुने और उनको लिपिबद्ध किया। सबका भरपूर सहयोग मिला। ऐसे-ऐसे प्रसंग सुनने को मिले जो मैंने कभी सुने ही नहीं थे। उन प्रसंगो को सुनकर, मैं अभिभूत होता रहा और अफसोस करता रहा कि संतों के सानिध्य से मैने अपने आपको वंचित क्यों रखा। परमात्मा स्वयं मेरे घर के पास विराजमान थे। ये इन प्रसंगो को सुनकर महसूस हुआ कि जिन्हें मैं सिर्फ संत समझता रहा, वे संत नहीं साक्षात परमात्मा थे।

उसके बाद, मैंने राजस्थान की 15 दिन की यात्रा की। उदयपुर, भीलवाड़ा, अजमेर, पुष्कर, जयपुर, खैरथल तक गया और वहां जो प्यार, स्नेह, सहयोग मुझे मिला वह शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं है। वहां पर तो स्वामी जी के प्रति अथाह श्रद्धा थी। स्वामीजी का जिक्र करते-करते 80-90 वर्ष की उम्र वालों का बोलते बोलते गला रूंध गया। नयनों में नीर भर आया। उनके घरों में ही नहीं, उनकी आत्माओं में स्वामी जी की छवि विराजमान थी। मैं, ऐसे-ऐसे लोगों से मिला जिनका इसके पूर्व मैने नाम भी नहीं सुना था। न वो मुझे जानते थे, न मैं उन्हें जानता था। मगर एक आत्मीयता थी कि मैं उनका गुरुभाई हूँ। मैं जानता था ये जो मेरा सम्मान कर रहे हैं, वह इस कारण नहीं कि मैं संत नगरी से आया हूं, बल्कि इसलिये कि मैं उनका गुरुभाई हूँ और उनसे उनके संस्मरण लेकर पुस्तक में शब्दों की माला बनाकर पिरोने वाला हूँ।

उसके बाद, मैं 16 जून, 2022 को गुजरात गया। एकता नगर में स्टेच्यू ऑफ यूनिटी देखने के बाद आदिपुर, गांधीधाम, राजकोट, अहमदाबाद व भड़ूच का दौरा किया। वहां पर तो मैं किसी को जानता तक नहीं था। शत प्रतिशत लोग मेरे लिये अनजान थे। उनसे मेरी पहली मुलाकात थी परन्तु उन्होंने मुझे कहीं भी महसूस नहीं होने दिया कि वो मुझे जानते नहीं हैं, मैं उनके लिये अनजान हूँ।

इस पुस्तक को लिखने के बारे में जब लोगों को पता चला तो मुझे सबने सहयोग किया। इस पुस्तक के लिये मुझे तरह-तरह के सुझाव दिये गये, प्रोत्साहित किया गया कुछ लोगों ने तो स्वयं आगे बढ़कर अपने संस्मरण मुझे बताए।

अनेक लोगों ने अपने अमूल्य सुझाव देकर अपने सुझावों से किताब की गरिमा बढ़ाने में सहयोग दिया। बहुत से लोगों ने संस्मरण लेने के लिये अनुयाइयों के नाम सुझाए गए।

यह मेरा पहला प्रयास है। मुझमें शक्ति नहीं थी, न काबिलियत थी कि मैं कुछ लिख सकूं। यह जो भी आपके सामने है, मैंने लिखा नहीं सिर्फ संकलित किया है। इससे मेरा, स्वामी जी के प्रति जो संत का भाव था, वह परमात्मा स्वरूप का हो गया है। यह प्रयास और आगे बढ़े एक श्रृंखला का रूप ले। आप लोगों में से कईयों में यह क्षमता है, वे मुझसे बेहतर लिख सकते हैं। उनको ज्ञान, उनकी गुरुवाणी में श्रद्धा, उनकी संतो में अगाध श्रद्धा और संतों के संग में रहने का उनको अवसर मिला है। मैं तो कुंए के पास रहते हुए भी कुंए तक नहीं जा पाया। मैं उस सौभाग्य से वंचित रह गया, अभी तो यह एक बूंद है, सागर तो अभी बाकी है। सागर में से भी अमृत मंथन करना पड़ेगा।

आशा ही नहीं, विश्वास है, यह क्रम आगे बढ़ेगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप स्वामी जी के बारे में जो भी जानते हैं, मुझे भेजते जाईये। मैं उनको शब्दों की माला में पिरोता जाऊंगा। यह प्रयास सिर्फ मेरे तक सीमित न रहे, मेरी आयु अभी 73 वर्ष है, मेरी कामना है कि आप लोग भी इस संकलन को आगे बढ़ाते रहे। इस तरह के नये संस्मरणों के संस्करण लगातार छपते रहें, जो आगे चलकर एक दिव्य, भव्यग्रंथ का रूप ले लें और आगे की पीढ़ी तक पहुंचे आप अपने घर के हर सदस्य को पढ़वायें, और अपने चिरपरिचितों को जिन का आप हित चाहते हैं, उनको पढ़ने को दें।

पुस्तक की समीक्षा कर मुझे अपनी प्रतिक्रियाओं व अपने सुझावों से जरूर अवगत करायें, तो मैं आपका हृदय से आभारी रहूँगा।

आपके द्वारा व्यक्त किये गये उद्गारों को मैंने लिपिबद्ध करने की कोशिश की हैं। वह एक अच्छे संदेश के रूप में जायें। मैं भी एक इंसान हूँ, हो सकता है, मुझसे किताब लिखने में जाने-अनजाने कोई ग़लती हो गई हो तो मैं आप सबके चरणों में नमन करते हुए क्षमा-याचना करता हूँ।

आसूदो छबलदास लच्छवाणी
पता: संत आशीष, 62, गुरुनानक कॉलोनी,
संत हिरदाराम साहिब की कुटिया के पास,
संत हिरदाराम नगर, भोपाल, म.प्र.-462030
मोबाइल: 9893809097
ई-मेल: assudolachhwani1950@gmail.com

मैं आभारी हूँ

मुझे दूसरा जीवन देने वाले दानदाता श्री नानक पारवानीजी की प्रेरणा से मैं श्री सुरेश ख्यानी जी के साथ संत श्री लीलाशाह आश्रम नैनीताल जा पाया। संत श्री लीलाशाह आश्रम नैनीताल, जहां से संत लीलाशाह दर्शन किताब पढ़कर, यह किताब लिखने की प्रेरणा मिली।

मैं आभारी हूं श्रद्धेय सिद्धभाऊ जी का जिन्होंने मुझे यह किताब लिखने की स्वीकृति प्रदान की, मैं आभारी हूं श्री सुन्दरदास गोहरानी जी (कानपुर) का जिन्होंने इस किताब की प्रूफ रीडिंग एवं त्रुटिसुधार कर मुझे अनुग्रहीत किया। मैं आभारी हूं श्री मुकेश भाग्या जी का जिन्होंने मुझे राजस्थान के स्वामी जी के कई शिष्यों के कॉन्टेक्ट नंबर देकर, मेरे जयपुर प्रवास के दौरान, स्वामी जी के सेवा कार्यों के दर्शन के साथ–साथ उनके अनुयाइयों से मिलवाने में भरपूर सहायता की।

मैं आभारी हूं श्री महेश कुमार दयारामानी और विजय फोबियानी जिन्होंने मुझे स्वामी जी के अनेक अद्वितीय फोटो उपलब्ध कराकर उनके टाइटलिंग करने में सहायता प्रदान की।

मैं आभारी हूं सभी 90 से ज्यादा संत प्रेमियों का जिनके संस्मरणों ने इस पुस्तक की शोभा बढ़ाई है। मैं आभारी हूं श्री कंवल प्रकाश किशनानी (अजमेर) जिन्होंने इस किताब की डिजाइनिंग, इसके अंदर की सजावट, स्वामीजी जी के अमूल्य फोटो ग्राफ्स से इस किताब को सुशोभित कर इसमें चार चांद लगा दिये हैं। प्रिंट आईडिया के श्री जमाल जी का जिन्होंने किताब को कम्पोजिंग करने में सहयोग किया।

मैं आभारी हूं श्री दयाल मूलचंदानी जी का जिन्होनें मुझे समय–समय पर अपने अमूल्य सुझाव देकर कृतार्थ किया है। उनके द्वारा अनेक नये नये लोगों से मेरा परिचय हुआ और मैं उनके संस्मरण एकत्रित कर सका।

मैं आभारी हूं अश्विनी मीरचंदानी जी का जिन्होनें श्रद्धेय सिद्धभाऊ की संतो पर चलाई गई व्याख्यान माला के आडियो रिकार्डिंग उपलब्ध करवाई जो कि किताब का प्रथम भाग बनीं।

मैं आभारी हूं श्री निसार अहमद अब्बासी का जिन्होंने पेज ले आउट डिजाईन किया।

मैं आभारी हूं उन सभी का जिन्होनें मुझे वह अपनत्व और सम्मान दिया जिसके मैं लायक नहीं था।

मैं आभारी हूं श्री मुरली भोजवानी जी एवं श्री भगवान बाबानी जी का जिन्होंने किताब को पढ़कर उसमें हुई त्रुटियों को सही करने में सहायता की।

मैं आभारी हूं पूज्य बहन दुर्गा वासदेव तेजवानी जी का जिन्होंने मेरी अधूरी रचना को पढ़कर अपने आशीर्वचनों से मेरा उत्साह बढ़ाया।

मैं आभारी हूं अपने परिवार के हर सदस्य का जिन्होनें मेरे इस पुनीत कार्य में हर तरह से हार्दिक सहयोग दिया।

आसूदो छबलदास लच्छवाणी

परमहंस संत बाबा हिरदाराम साहिब पुष्करराज
जीवन परिचय

अखण्ड भारत के सिन्ध की खैरपुर रियासत के फैजगंज तालुके में बिहणन नाम के गांव में आहूजा नाम का एक संत परिवार रहता था। इस परिवार में ही अगहन मास की 3 तारीख, विक्रम सम्वत् 1963 तद्नानुसार, 21 सितंबर 1906 को पिता स्व. सहजराम आहूजा जी के घर माता रोचल बाई की कोख से संत परंपरा में पांचवे संत के रुप में संत शिरोमणी बाबा हिरदाराम साहिब जी का अवतरण हुआ। छठवें दिन नामकरण संस्कार के दिन बालक का नाम 'राम' रखा गया। घर में खुशी का माहौल छाया था, बधाईयों का तांता लगा था, तभी संत तन्नुराम भाई जो कि रिश्ते में बालक के परदादा लगते थे, बालक को देखने आए और देखते ही कहा यह बालक आगे चलकर संत होगा। संत बाबा हरिराम साहिब जी जो कि रिश्ते में बालक के दादा लगते थे और भिरिया शहर में गुरु आश्रम में रहते थे, उन्होने भी बालक को देखते ही कहा कि यह बालक किसका है! माता रोचल बाई ने बच्चे को संत बाबा हरिराम साहिब जी की गोद में देते हुए कहा कि आपका है। तब बाबा हरिराम साहिब ने कहा तो फिर इसे मुझे दे दो। बालक राम, परिवार में माता रोचल बाई की देखरेख में धीरे–धीरे बडा हुआ और बिहणन से कुछ दूरी पर भंगू गांव के स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने गया। बेहणनि और भंगू गांव के बीच एक टीला (मिट) थी, जिसे पार कर बालक राम स्कूल पढ़ने जाता था।

बालक राम की पढ़ने में बिल्कुल रुचि नहीं थी क्योकि उसका चित तो परमात्मा प्राप्ति में लगा था। जैसा कि परिवार में संत परंपरा थी, बालक भी उसी परंपरा में आगे बढने लगा। बचपन से ही गुरुबाणी का जाप करने लगा। माता रोचल बाई भी धार्मिक प्रवृति की महिला थी, उसने भी बच्चे को धार्मिक संस्कारो से ओत–प्रोत कर दिया। बालक राम का मन संसार की गतिविधियो में बिल्कुल नहीं लगता था। वह सदैव एकांत में रहने लगा। उनका यही कथन था, यह संसार असार है, जनम–मरण के बंधन में बांधने वाला है, इससे पार पाना ही मनुष्य जन्म का ध्येय है।

परिवारकी संत परंपरा :-

1. ब्रह्मलीन भाई तनुराम साहिब
2. ब्रह्मालीन भाई धनुराम साहिब
3. ब्रह्मालीन भाई हरिराम साहिब
4. ब्रह्मालीन भाई भगत पहिलों साहिब
5. ब्रह्मालीन भाई संत हिरदाराम साहिब

गुरु आश्रम में :– बालक राम वैराग्य वृति में रहने लगे, उनका जीवन वैराग्यमय होता जा रहा था, अतः पिता सहजराम ने 12 वर्ष की आयु के बालक राम को, संत हरिराम साहिब जी, जो बालह्ामचारी थे एवं ब्रह्मचार्य का पालन बड़ी दृढ़ता से करते थेय के आश्रम में ले गए। आपको भिरियन की दरबार में सौप दिया गया। बालक राम ने भी अपने गुरु के गुणो को आत्मसात किया, वे बडी दृढ़ता से ब्रह्मचार्य का पालन करते थे। वे आश्रम में परिवार के साथ आने वाली नारियों के साथ अक्सर बात नहीं करते थे, न ही उनकी तरफ देखते थे, परन्तु उनके हृदय में यत्र नारी पूज्यते, तत्र देवता वसति का भाव रहता था। बाबा हरिराम

साहिब जिनके बचपन का नाम श्री जीवतराम था और जो भाई तनुराम के सुपुत्र थे तथा रिश्ते में बालक राम के दादा लगते थे, एक पहुंचे हुए संत थे, वे भी गुरु–शिष्य परंपरा के तीसरे गुरु थे। भिरिया संतो की नगरी थी, भिरिया की दरबार मशहूर थी, यहां पर भाई आत्माराम साहिब, भाई कृपाराम साहिब, भाई मनीराम साहिब और भाई हरिराम साहिब जैसे संत रहे। भाई हरिराम की छत्र–छाया में बालक राम आध्यात्मिक जगत में एक उभरते हुए सितारे के रुप में उन्नति कर रहे थे, वे वास्तव में संत थे, उनमें संतो के संस्कार कूट–कूट कर भरे हुए थे। संत शब्द बना है स–न–त से। स से तात्पर्य है सादगी, सहजता, सहृदयता, सरलता, संतोष, संग्रहण से परे, निर्विकारी, मस्तमौला फकीरी में जीना। न से तात्पर्य है नदी की तरह बहते जाना, एक जगह पर नही बैठना, निडर, निर्भीक, न्यायपूर्ण, तू ही, तू ही का सुमिरन करना। सदगुणो से परिपूर्ण होने के कारण बाबा हरिराम साहिब ने बालक राम का संत परंपरा में 'हिरदाराम' नाम दिया, क्योकि बालक राम के रोम–रोम में, हृदय में राम समाया था। हिरदाराम साहिब ने बाबा हरिराम साहिब की पूर्ण लगन से सेवा की। हिरदाराम साहिब अक्सर रटन/भ्रमण करते रहते थे, वे पाकिस्तान, सिंध से अखंड भारत में अमृतसर, हरिद्वार, पुष्कर आदि तीर्थस्थलो का निरंतर भ्रमण करते थे और इस तरह आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होते रहे। कुछ समय पश्चात् हिरदाराम साहिब के चचेरे भाई, पेसूमल के पुत्र, भाई गुना आहूजा भी, भाई हरिराम साहिब की शरण में आये। अब बाबा हरिराम साहिब के दो शिष्य थे, आहूजा परिवार के भाई हिरदाराम और भाई शेवाराम। भाई शेवाराम एक अच्छे गायक थे, गुरुबाणी के शब्दों की अच्छी पकड़ रखते थे, और अंतरतल की गहराइयों से वे सदा गुरुबाणी का निरंतर जाप करते रहते थे।

जब बाबा हरिराम साहिब चोला छोड़ने वाले थे, तो उन्होंने बाबा हिरदाराम को गद्दीश्वर बनाने का आव्हान किया, पर रमता योगी, बहता पानी के सदृश्य जीवन व्यतीत करने वाले बाबा हिरदाराम ने गद्दी स्वीकार करने से यह कहते हुए स्पष्ट मना कर दिया कि गद्दी में गोड्ड (शोर) है, मुझे गद्दी नहीं चाहिये, यह भाई शेवाराम साहिब को दे दो। आज यह स्थान भीलवाड़ा, राजस्थान के तीर्थ स्थल के रुप में जाना जाता है।

बाबा हिरदाराम साहिब ने पुष्कर–राज को अपनी तपो–भूमि बनाया। यहां एक कुटिया बनाकर वे सेवा, सुमिरन ओर सत्संग की त्रिवेणी द्वारा आध्यात्मिक जगत में बहने लगे। स्वामी हिरदाराम साहिब की गुरुबाणी में अटूट श्रद्धा थी। गुरुबाणी का उनको गूढ़ अभ्यास था। लगभग पूरा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब उनको कंठस्थ था। वे शुद्ध गुरुबाणी ऊँची आवाज में उच्चारित कर पढ़ने पर जोर देते थे, ताकि दूसरे लोग भी इसका लाभ ले सकें। अगर कोई गुरुबाणी गलत पढ़ता था, तो वे उसे एकदम टोक देते थे और सही पढ़ने के लिए कहते थे। स्वामीजी अमृतवेले उठकर सिमरन करते थे, जपजी साहिब, सुखमनी साहिब का पाठ करने पर जोर देते थे। श्री सुखमनी साहिब के सम्पट पाठ को बहुत महत्व देते थे। स्वामी जी के अनुयाईयों ने "साप्ताहिक सुखमनी पाठ साहिब" को घर–घर जाकर प्रचारित करने का सिलसिला शुरु किया। इस माध्यम से वे गुरुबाणी का प्रचार प्रसार करते थे।

'प्रभु की शरण सगल भये लाथे, दुख बिनसे सुख पाया'

'परमेश्वर ते भूलिया, व्यापन सब रोग'

संत हिरदाराम साहिब, अंग्रेजी वर्णमाला की ABCDEFG का पूर्ण रुपेण पालन करते थे।

A. Association of saint (साधु संग) सदैव संतो के संग में सत्संग करते थे।

B. Books reading (शास्त्र अध्ययन) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब व अन्य शास्त्रों गीता, रामायण आदि का नियमित पाठ करते थे।

C. Chanting of Harinam (नाम–सिमरन) रू. 24 घंटे नाम खुमारी, नानक चढ़ी रहे दिन रात।

D. Diet (आहार) आहार ही औषधि है, इस रुप में सात्विक शुद्ध भोजन भगवान को अर्पण कर प्रसाद स्वरुप ग्रहण करते थे।

E. Ekadashi (एकादशी) :– एकादशी का उपवास करते थे –

F. Fasting (व्रत) रू. उपवास का महत्व, लंघणम् परम औषधम के रुप में समझते थे।

G. God (ईश्वर) प्रभु का हरदम ध्यान / सुमिरन करते रहते थे।

स्वामी हिरदाराम साहिब ने अपनी सेवाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य ओर संस्कारों पर केन्द्रित किया। उनकी आध्यात्मिक शक्ति, आत्मिक संकल्प शक्ति और कर्मठता का कोई पार नही पा सकता था। वे जो भी संकल्प करते थे, उसे पूरा करके ही दम लेते थे। उनके मन में जो योजना आती थी, उसे पूरा करने में अपना जी–जान लगा देते थे। उस योजना के लिए उन्हे अपने अनुयाईयों से पैसा उधारी भी लेना पड़े, तो ले लेते थे एवं उस योजना के कियान्वयन में लग जाते थे। कहते है, उद्देश्य नेक हो, नियत साफ हो, तो परमात्मा भी सहयोगी बन जाते है।

जैसे ही योजना कियान्वयन होती थी, पैसा अपने आप आने लगता था। संत जी की शिक्षाएं, इन छोटे–छोटे अर्थपूर्ण सूत्रों में समाई है :–

1. सुख चाहो, तो सुख दो।
2. सुख चाहो, तो दुःख मत दो।
3. मजा मारता है, त्याग तारता है।
4. 'मैं' करोगे तो मरोगे, 'तुम' करोगे तो तरोगे। (स्वयं को कर्ता न माने)।
5. बूढे, बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार, करें भावना से सेवा, इनकी पाएगें लोक परलोक में सुख अपार।
6. हिकड़ा पवन खड॒ में, बि॒या पवन खूह में, तू राजी रह पहिंजे रुह में, सच्चो आनंद अथई अंदर जी सूंह में।
   (एक पड़े गडडे में, दूसरा पड़े कुए में, तुम राजी रहो अपनी आत्मा में, सच्चा आनंद है अंतर की सुंदरता में)
7. हम न तुम दफ्तर गुम, तुम करो अपना कर्म। मारो दम में दम। फिर क्या करेगा यम? वहां जा पहुंचो जहां न जनम, न मरण (मोक्ष)

संत जी ने सन् 1963 में बैरागढ़ नगरी, जो आज–कल संत हिरदाराम नगर के नाम से जानी जाती है, को अपनी कर्मस्थली बनाया और यहां पर लोगो में ऐसा सेवा का बीज बोया, जो आज वटवृक्ष के रुप में विकसित होकर सबको फल दे रहा है।

रामधुन :

वर्ष 1965 में, स्वामी जी के मन में भाव आया कि लोगो में आध्यात्मिकता की ज्योति जगाने के लिए ''हरे राम, हरे राम राम राम, हरे हरे हरे कृष्ण, हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण, हरे हरे'' मंत्र की अखंड रामधुनी का आयोजित किया जाए। पर अपने दृढसंकल्प से स्वामीजी ने प्रतिवर्ष दिसंबर माह के अंतिम सप्ताह में अखंड रामधुन का आयोजन किया जो आज 57 वर्ष तक जारी है।

मैं भी वर्ष 1965 में संत हिरदाराम नगर में निवासी बनकर आया और मुझे भी स्वामीजी का सानिध्य प्राप्त हुआ, तब मैं भी अखंड रामधुन में हिस्सा ले सका, यह मेरा

सौभाग्य रहा।

धीरे–धीरे संत नगर में सामाजिक गतिविधियो में गति आई और 1980 से लेकर आज तक श्रद्धेय सिद्ध भाउ जी के कुशल नेतृत्व में यह गतिविधियां चरम पर है। जीव सेवा संस्थान के बैनर तले अनेक सेवाऐं संचालित है, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः–

स्वामीजी का कथन था कि मंदिर एवं गुरुद्वारे बनवाने से बेहतर है स्कूल, अस्पताल और संस्कार केन्द्रो का निर्माण करना। उन्हीं पदचिन्हों पर यह सेवाऐं आधारित है।

समाज सेवा के क्षेत्र में

नव युवक सभा :

जब जुलाई 1965 में, मैं संत हिरदाराम नगर में आया तो यहां पर सिर्फ नव युवक सभा नाम से संस्था का संचालन होता था, उस समय उनकी स्टेशन मार्ग पर लायब्रेरी होती थी, जहां पर समाचार–पत्र, छोटी–छोटी पत्रिकाएं आती थी, बैठने की व्यवस्था थी, वहां पर मेरे जैसे लोग वहां जाकर पढ़ते थे। शाम को लायब्रेरी से घर ले जाकर पढ़ने के लिए पुस्तकें दी जाती थीं। यहां पर उच्च कोटि के साहित्य, कहानी संग्रह, कविता संग्रह होते थे। वहां से लेकर मैं भी पुस्तकें पढ़ता था, नाम मात्र का शुल्क था। वहीं पर लाल–रेखा उपन्यास पढ़ा था, जिसकी छाप आज भी मेरे जेहन में विद्यमान है।

लायब्रेरी के पीछे ही स्वर्गीय जमतराय रुघानी का एक मकान था, जिसे उन्होंने नव युवक सभा के बच्चों की कोचिंग कक्षाओ के लिए निःशुल्क दे दिया था। वहां पर मात्र 50 नये पैसे की फीस में बच्चो को महीने भर की कोचिंग दी जाती थी। बच्चो को कोचिंग के बाद टॉफियाँ बांटी जाती थी। उस कक्षा के लिए नगर के युवा फ्री में सेवाऐं देते थे। मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैं वहां पर बच्चो को पढ़ा सकूं।

बाद में नव युवक सभा द्वारा स्कूल बनाया गया, जो कालांतर में प्रायमरी से मिडिल, मिडिल से हायर सेकेण्डरी, हायर सेकेण्डरी से कन्या महाविधालय तक सेवाऐं दे रहा है। आज उनके तीन स्कूल भवन एवं एक कन्या महाविधालय भवन भी है।

सुधार सभा :

कालांतर में सुधार सभा का गठन किया गया। स्वामीजी के पांच अनुयाईयों ने साधू वासवानी स्कूल की आधारशिला रखी। जिसके द्वारा आज नर्सरी से लेकर हायर सेकेण्डरी तक स्कूल चलता है। इनके भी दो भवन है। एक में बालक और दूसरे में को–एज्यूकेशन है। साधू वासवानी महाविधालय का भी संत नगर में निर्माण करवाया गया।

नव युवक परिषद् :

26 जनवरी 1978 को साक्षरता अभियान का कार्य नगर में शुरु हुआ, जिसमें एक निर्धन अपितु मेघावी बालिका को यह कहकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया कि उसकी पढ़ाई का खर्चा परिवार को वहन नहीं करना पड़ेगा।

यह विचार उस परिवार के परिचितो को पसंद आया, बाद में नव युवक परिषद का गठन हुआ, जिसमें 30 समान विचारधारा के सदस्य बनाए गये। यह विचार था कि एक सदस्य एक विधार्थी का खर्च वहन करेगा। उस समय शिक्षा बहुत सस्ती थी। 72 रुपये प्रतिवर्ष खर्च कर बच्चों को पढ़ाया जा सकता था।

1982 तक आते–आते इस संस्था की जानकारी ब्रह्मलीन संत हिरदाराम साहिब

जी तक पहुंची। कार्यकर्ता जुड़ते गए। संस्था प्रगति पर अग्रसर होती रही। उसका अपना भवन तक बन गया, वहां पर बच्चों की कोचिंग की व्यवस्था की गयी, जो आज 2022 तक निरंतर जारी है।

आगे चलकर संस्था के बैनर तले भगवान कला केन्द्र की स्थापना की गयी, जहां बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पढ़ाई के साथ–साथ व्यवसायिक एवं तकनीकी कौशल द्वारा प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जाता है। वहां पर आज भी ब्यूटी पार्लर, टेलरिंग, फैशन डिजाईनिंग, कुकिंग, बैकिंग एवं कम्प्यूटर का गहन ज्ञान व प्रशिक्षण दिया जाता है।

एक कदम और आगे बढ़ाते हुए, **स्वामी विवेकानंद कैरियर एकेडमी** का गठन किया गया, जहां बच्चों को कोचिंग के साथ–साथ कैरियर में आगे बढ़ने के संबंध में व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता है।

संस्था के बैनर तले **मंजू संस्कार केन्द्र** का संचालन भी किया जाता है, जहां पर बच्चो को गुरमुखी लिपि सिखाई जाती है। उनको श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, सुखमनी साहिब, जप जी साहिब, आनंद साहिब एवं अरदास इत्यादि का पाठ भी कराया जाता है। बच्चो को श्री सुखमनी साहिब कंठस्थ करने पर उपहार स्वरुप स्वर्ण की अंगूठी प्रदान की जाती है। यहां पर विवाह योग्य कन्याओं को, ससुराल में सामंजस्य बनाने के संबंध में भी ज्ञान दिया जाता है। शुद्ध सात्विक भोजन कैसे बनाया जाए ताकि वह भोजन नहीं, प्रसाद बन जाए, इसका ज्ञान उन्हें कराया जाता है।

संस्था के बैनर तले '**मानव सेवा स्वावलंबन संस्था**' का संचालन होता है। जहां पर छोटे–छोटे ऋण देकर लोगों को व्यवसाय चलाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

स्वामीजी की प्रेरणा से संस्था के द्वारा नगर व आसपास के गांवों में टयूबवेल की सौ इकाइयों की बोरिंग करवाई गयी, जिससे नगर की पेयजल समस्या का समाधान हो गया। यहां से निःशुल्क दो समय (सुबह एवं शाम) पानी की सप्लाई की जाती है।

एक बच्चे से 1978 में शुरु कर, **नव युवक परिषद** आज 2100 बच्चों की सहायता कर रही है, जिससे नगर में साक्षरता का स्तर बढ़ा है। बच्चे शिक्षा पाकर आत्मनिर्भर बन रहे है। ये बच्चे अब संस्था को आगे बढ़ाने के लिए तन–मन–धन से सहायता कर रहे हैं।

शहीद हेमू कालाणी एज्यूकेशन सोसायटी :

संत हिरदाराम नगर में कम शुल्क पर उच्च गुणवता की शैक्षणिक सुविधाएं देने के लिए, नव युवक परिषद के कार्यकर्ताओ और स्वामीजी के अनुयाईयो द्वारा **शहीद हेमू कालाणी एज्यूकेशन सोसायटी** का गठन किया गया। आज इस सोसायटी के द्वारा नगर और आसपास के क्षेत्रो में स्कूलो व महाविधालयों का संचालन किया जा रहा है :–

1. विद्यासागर पब्लिक स्कूल, संत हिरदाराम नगर
2. मिठी गोविंदराम पब्लिक स्कूल (छात्रो के लिए), संत हिरदाराम नगर
3. केवलराम चैनराय पब्लिक स्कूल, करोंद, भोपाल
4. कला लक्ष्मणदास बेंसीमल गनवानी फाउंडेशन स्कूल, करोंद
5. नवनिध हासोमल लखानी पब्लिक स्कूल (छात्राओ के लिए), संत हिरदाराम नगर
6. राधीबाई हासोमल खनतियानी फाउडेंशन स्कूल, संत हिरदाराम नगर
7. अर्जुन हाथीराम मैमोरियल प्ले स्कूल, संत हिरदाराम नगर
8. संत हिरदाराम कन्या महाविधालय (विज्ञान, कला एवं वाणिज्य विंग, कम्प्यूटर

विंग, आर्ट एवं विज्ञान के विधार्थियों के लिए), संत हिरदाराम नगर

9. संत हिरदाराम कन्या प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा महाविधालय (स्नातक एवं स्नातकोतर कोर्सेस), संत हिरदाराम नगर

10. संत हिरदाराम इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट, बी.बी.ए. एवं एम.बी.ए. शिक्षा के लिए (केवल कन्याओं के लिए) संत हिरदाराम नगर

लक्ष्मीदेवी विक्योमल सर्राफ शिक्षा समिति, गांधीनगर के अंतर्गत संचालित स्कूलः-

1. लक्ष्मीदेवी विक्योमल सर्राफ हायर सेकेण्डरी स्कूल, गांधीनगर
2. प्रेरणा किरण पब्लिक स्कूल, गांधीनगर
3. वीना चार्ली दासवानी कन्या पाठशाला, गांधीनगर
4. सी.एच.आई कन्या विद्यालय, गांधीनगर

उपरोक्त शिक्षण संस्थाओं के कारण नगर में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। बच्चे 25 किलोमीटर दूर से पढ़ने आते है। संस्था के लगभग 65 वाहन नगर के कोने–कोने से बच्चों को लाने एवं छोड़ने का कार्य करते हैं। इस तरह शिक्षा का कार्य सुचारु रुप से चल रहा है।

जीव सेवा संस्थान एवं उनकी सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से, 48 वर्षो की सेवा यात्रा में 45 लाख लोगों की सेवा स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, समाज उत्थान इत्यादि के क्षेत्र में की जा चुकी है, जो कि आज दिनांक तक जारी है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में :

स्वामीजी एक बार नेत्र परीक्षण के लिए डॉक्टर रायजादा, हेड ऑफ डिपार्टमेंट नेत्र विभाग हमीदिया अस्पताल के पास गए, तो उन्होंने उनको बताया कि आपको मोतियाबिन्द शुरु हो रहा है, परन्तु अभी ऑपरेशन का टाइम नहीं आया है, तब स्वामीजी ने नेत्रों की महत्ता का ज्ञान धरते हुए, संत हिरदाराम नगर में नेत्र चिकित्सा शिविर लगाने का कार्य शुरु किया, भोपाल गैस त्रासदी के बाद में **सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय** के रुप में परिणित हो गया। जैसे ही स्वामीजी ने नेत्र शिविरों का आयोजन किया, मरीजो का आशीर्वाद कहें या भगवान का चमत्कार, स्वामीजी का मोतियाबिंद अपने आप ठीक हो गया। डॉक्टर रायजादा हैरान हो गए कि मोतियाबिंद अपने आप कैसे खत्म हो गया। मेडिकल इतिहास में इस तरह का पूर्व में कोई उदाहरण सामने नहीं आया है।

सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय संत हिरदाराम नगर।

उपलब्ध सुविधायें :-

1. प्रायवेट वार्ड
2. डाक्टर्स क्वॅाटर
3 एलीवेटर सुविधा

यहॉ पर अभी तक 2,95,000 नेत्र आपरेशन किए जा चुके है, जिसमें से 2,03,000 ऑपरेशन निःशुल्क किए गए है।

यहॉ पर 2993 नेत्र शिविरों का आयोजन किया जा चुका है।

यहॉ पर 96 यूरोलॉजी कैम्प का भी आयोजन हुआ है।

यहॉ पर 1920 लोगों के कार्निया, ट्रांसप्लांट किये जा चुके है।

प्लास्टिक सर्जरी के भी 6 कैम्प आयोजित किए जा चुके है।

बच्चो के हार्ट से संबंधित 2–3 कैम्पो का आयोजन भी किया जा चुका है।

इसके अतिरिक्त निम्नांकित स्वास्थ्य संबंधी संस्थान भी संत हिरदाराम नगर में कार्यरत है :

1 इन्द्रा होतचंद लालवानी चेरीटेबल हास्पिटल
2 कमला रुपचंद गिदुमल मैमोरियल दंत चिकित्सालय
3 लेखराज एण्ड कला लधाराम मीरपुरी दंत चिकित्सालय
4 दादा आत्माराम बदलानी यूरोलाजी डायग्नोसिस एवं रिसर्च सेंटर
5 दादी लक्ष्मीदेवी पैथालाजी केन्द्र
6 संत हिरदाराम प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग संस्थान

स्वामीजी का प्राकृतिक चिकित्सा में आरंभ से ही अटूट विश्वास था, क्योंकि इसके कोई दुष्प्रभाव नहीं होते। स्वामीजी को जब शरीर में पीड़ा हुई तो वे प्राकृतिक चिकित्सा के लिए इंदौर के डॉ. भोजराज छाबड़िया के पास मार्गदर्शन के लिए गए और वहां से बगैर दवाई के ठीक होकर आ गए। आरोग्य केन्द्र की स्थापना की गयी।

आरोग्य केन्द्र के अंतर्गत सुविधाएें :

1. पदमा ईश्वरदास मेहतानी फिजियोथेरेपी केन्द्र
2. स्वामी हरिराम जी महाराज इनडोर विंग
3. एक्यूपंक्चर ब्लॉक
4. संत हिरदाराम योगा हाल
5. राधा देवी बेंसीमल गनवानी फिजियोथेरेपी केन्द्र
6. प्रायवेट मरीजो के लिए कार्पस केन्द्र

स्वामी जी का कथन था, जो इस केन्द्र पर आएगा, उसके तन–मन के सब रोग मिट जाएगे। वहां पर स्वयं मैं कुछ मरीजो को लेकर आया, वे स्ट्रेचर एवं व्हील चेयर पर आए, पर वे ठीक होकर दौड़ते हुए गए।

फबियानी फिटनेस केन्द्र (व्यायाम शाला) :

युवाओं को शारीरिक रुप से सशक्त और सक्षम बनाने के लिए व्यायाम शाला का निर्माण किया गया।

स्वामीजी की प्रेरणा से शासकीय अस्पताल में भी प्रसूति गृह का निर्माण करवाया गया। स्वामीजी कभी भी यह नहीं देखते थे कि यह काम शासकीय है या अशासकीय। जहां भी उनको सेवा की जरुरत महसूस होती थी, वहां पर वे सेवा कार्य शुरु कर देते थे। उन्होनें अनेक शासकीय शालाओं का भी जीर्णोद्वार करवाया

गरीबों हेतु आवास :

गांधीनगर में गरीब परिवारो के लिए मकानों का निर्माण कर उनको निःशुल्क वितरण किया गया। गांधीनगर से लोग पलायन कर रहे थे, उनको वहां पर 450 वर्गफिट के प्लाट फ्री में आवंटित करवाकर, पलायन से रोका गया। आज गांधीनगर उन्नति के क्षेत्र में है।

संस्था के लिए काम करने वाले कर्मचारियों के लिए, कैलाश नगर, संत हिरदाराम नगर में 'संत छाया' के नाम से 32 मकानों का निर्माण करवाया गया।

वहीं पर **शेल्टर फाउंडेशन दुबई** के सहयोग से ऐसे 124 मकानों का निर्माण कर, गरीब परिवारों को बैंक से कुछ ऋण दिलवाकर नाम मात्र मूल्य पर मकान आवंटित किये

गये। आज वे सभी परिवार ऋण से मुक्त होकर अपने–अपने मकान के मालिक बन गये हैं।

जीव सेवा संस्थान –

स्वामीजी के द्वारा संचालित सेवा कार्यो के सुचारु रुप से संचालन करने के लिए 1994 में **'जीव सेवा संस्थान'** की स्थापना की गयी, जिससे देश और विदेश के दान दाताओं द्वारा अटूट, आस्था और विश्वास के साथ दिये गये दान को सुचारु रुप से संचालित करने का कार्य किया गया। स्वामी जी के आशीर्वाद से संचालित, समाज की समस्त संस्थाओं को उनकी आवश्यकता अनुसार यहां से सहायता दी जाती है।

समाज सेवा के अन्य कार्य :

संत जी के आराध्य थे : बूढे, बच्चे और बीमार। बच्चो के लिए शिक्षा बूढ़ो के लिए आर्थिक सहायता, राशन सहायता बीमारों के लिए अस्पताल, इसी पर उनका फोकस रहा। उनकी कर्मस्थली संत हिरदाराम नगर रही। संत हिरदाराम नगर डेढ़ किलोमीटर के अर्धव्यास में बसा हुआ है। यह राजधानी भोपाल का उपनगर है। यह क्षेत्र पिछड़ा था, परन्तु आज यह क्षेत्र भोपाल नगर का सबसे समृद्ध क्षेत्र है। विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से, स्वामी जी के द्वारा चलाये गये संकल्पो का सुंदर रुप से क्रियावयन होते हुए यहा देखा जा सकता है :–

1. विधवाओं को आर्थिक सहायता।
2. जरुरतमंद परिवारो को मासिक राशन वितरण।
3. गर्भवती महिलाओ के लिए पोषण सामग्री।
4. जरुरतमंदो की चिकित्सा के लिए सहायता ।
5. उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप।
6. मृत्यु उपरांत होने वाले क्रियाकर्मो के लिए आर्थिक सहायता।
7. प्राकृतिक आपदा के समय देश के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा करना।
8. वृद्धाश्रमों का संचालन।

दिव्य महिमा :

स्वामी जी में दिव्य शक्तियों का भी समावेश था, परन्तु वे कभी भी इसका प्रदर्शन नही करते थे। उनके सानिध्य में आने से अनेक लोगों के जीवन के कई क्षेत्रों में कल्याण हुआ। कुछ लोगों को उन्होनें यात्रा शुरु होने से पहले ही रोक दिया। बाद में पता पड़ता था कि यात्रा रुकने से वे अनिष्ट से बच गए थे। जिसके सिर पर उन्होनें अपना हाथ रख दिया, उसका तो भाग्य ही बदल जाता था। मैंने उनके आशीर्वाद से रंक को राजा बनते हुए देखा है। वे जो बोल देते थे, वह बदल नहीं सकता था। मैं अपने आपको देखता हूं तो लगता है कि मेरे ऊपर उनकी कितनी मैहर थी। मैं अर्द्ध–दक्ष श्रमिक (सी3) से शुरु होकर डिप्टी मैनेजर, (ई3) के समकक्ष सेवानिवृत्त हुआ। मुझे 13 प्रमोशन मिले। एक ही बात कह सकता हूं **जिथे मैहर तेरी, उते खुशियां ही खुशियां।**

स्वामी जी के पास जो भी लोग दर्शन के लिए आते थे, वे उनको बोलते थे सेवा सिमरन एवं सत्संग से जुड़ो। यदि आप लोग केवल मेरे दर्शन के लिए आए हो, तो प्रसाद लो और जाओ, बाकी सेवा से जुड़े हुए सेवकों से वे दिल खोलकर मिलते थे, बातें करते थे। **मानव सेवा ही माधव सेवा है**, यह उनके जीवन का मूल मंत्र था। जिसने अपने आपको

मानव सेवा से जोड़ा वह तर गया। स्वामी जी जहां–जहां गए, वहां–वहां सेवा के झरने, आज भी बह रहे हैं। सेवा के पावन जल से सेवक पवित्र हो रहे हैं।

सिर्फ, संत हिरदाराम नगर में ही नहीं, वे जहां–जहां गए, वहां–वहां सेवा के संकल्प शुरु होते गए। कुछ नीचे इंगित कर रहा हूं :–

1. **अहमदाबाद :**– गरीबो को राशन, सब्जी, दूध के लिए नगद भुगतान, निर्धन विधार्थियों, मेघावी छात्रों का सम्मान, गरीब परिवारो को चिकित्सा सहायता, बहुत कम फीस पर कोचिंग क्लासेस का संचालन, टेलरिंग, कम्प्यूटर का प्रशिक्षण, गरीब कन्याओं के विवाह के लिए सहायता, अंतिम संस्कार के लिए सहायता, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, रक्तदान शिविर का आयोजन, नेत्र एवं यूरोलॉजी इत्यादि कैम्पो का आयोजन। मकानो के मरम्मत के लिए सहायता। यह सब कार्य संत हिरदाराम एवं स्वामी बसंत राम सेवा ट्रस्ट के माध्यम से किये जाते है।
2. **अजमेर :**– जीव सेवा समिति के बैनर तले **दयाल वीणा चेरिटेबल डायग्नोसिस सेंटर एवं डायलेसिस सेंटर** का संचालन। इन सभी सेवा केन्द्रो के द्वारा स्वामी जी की इच्छा अनुसार सेवा कार्य सम्पन्न किए जाते है।
3. **पुष्कर :**– ऋषि गोधूमल होम्योपैथिक हॉस्पिटल का निःशुल्क संचालन।
4. **उदयपुर :**– गरीबो को राशन, गरीब बच्चो को स्कूल फीस के रुप में सहायता, उच्च शिक्षा के लिए सहायता, गरीब कन्याओ का विवाह, व्यवसायिक शिक्षा के लिए प्रोत्साहन कार्य, साधु वासवानी धर्मार्थ ट्रस्ट के द्वारा सिलाई केन्द्र, किड्स केयर स्कूल, सुखधाम वृद्धाश्रम का संचालन।
5. **जयपुर :**– गोपाल कृष्ण सेवा समिति के माध्यम से नियमित रुप से रक्तदान शिविर लगाए जाते है, जिसमें जुलाई 2022 तक 87596 इकाई रक्त को एकत्रित कर जरुरतमदों को आवश्यकता अनुसार उपलब्ध करवाया गया है।

   जीव सेवा समिति, जयपुर के माध्यम से अनेक सेवा कार्यो को स्वामी जी के निर्देशानुसार पूरा किया जाता है। यहां पर चिकित्सा शिविर, नेत्र शिविर, यूरोलाजी कैम्प, विधार्थियों को शिक्षा सहायता आदि प्रदान की जाती है।
6. **आदिपुर / गांधीधाम :**– स्वामी जी के आशीर्वाद से यहां पर भी अनेक सेवा कार्यो को **जीव सेवा संस्थान** द्वारा संचालित किया जाता है। यहॉ पर डॉ. मोहन भारती का एक्यूप्रेशर, एक्युपंचर आश्रम भी स्वामीजी के सहयोग से स्थापित किया गया है।
7. **जबलपुरः**– स्वामी जी की प्रेरणा से जबलपुर सिंधु नेत्र सेवा समिति 'तीर्थधाम' जिलहरी घाट, जबलपुर द्वारा वर्ष 1992 से प्रतिवर्ष, मकर संक्राति के अवसर पर विशाल निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया जाता है, जिसमें मोतियाबिंद के 500 से भी अधिक ऑपरेशन किए जाते हैं। यहां पर भी सर्वसुविधा युक्त नेत्र चिकित्सालय निर्मित है। यहां पर नियमित रुप से भी नेत्र ऑपरेशन किए जाते है। यूरोलॉजी शिविर भी लगाए जाते है। प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र भी संचालित किये जाते है।

आसूदो छबलदास लच्छवाणी

संत जी के परम शिष्य सिद्ध भाऊ जी द्वारा संत जी के दर्शन की व्याख्यान माला से संग्रहित

ताती वाउ ना लगई

संतों का कहना था दो की जगह एक शब्द ही बोलें, संत जी हमेशा कम बोलते थे उनके द्वारा बोले गये शब्द अनंतकाल तक ब्रह्मांड में गूंजते रहेंगे। आज विज्ञान महापुरूषों के शब्दों को ब्रह्मांड से निकाल रहा है, खोज रहा है।

हमारे पूज्यनीय ब्रह्मलीन संत शिरोमणि हिरदाराम साहिब जी भी जब बोलते थे तो बहुत कम बोलते थे सार गर्भित बोलते थे। उनके उपदेश संक्षिप्त होते थे मगर अर्थ गहरे होते थे। गागर में सागर समाया रहता था। मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है, स्वामी जी उस समय रतलाम कुटिया में रहते थे। उनके अनुयायी धर्मदास केवलरामानी का परिवार भी रतलाम में ही रहता था। भरापूरा परिवार, पढ़ा लिखा परिवार था, सभी भाई इंजीनियर थे। गुणवान परिवार था। ''गुरुवाणी'' में अथाह विश्वास रखने वाला। अमृतवेले उठना, नित्य शाम को घर में आरती, रहरास साहिब का पाठ और मधुर भजनों का वाचन होता था। धर्मदास केवलरामानी जी की धर्मपत्नी शीलवन्ती जैसा नाम वैसे ही अपने नाम को अपने शील से सार्थक करने वाली गृहकार्य में दक्ष पाक कला में निपुण, भोजन तो ऐसा बनाती थी कि अंगुलियां चाटते रह जायें। धर्मदास भी अपनी नौकरी में ईमानदार, मेहनती एवं निपुणता से कार्य करने के लिए जाने जाते थे। उनके अधीनस्थ एवं अधिकारी उनकी कार्यदक्षता एवं मधुर व्यवहार के कायल थे।

मगर अचानक एक दिन धर्मदास केवलरामानी जी के घर में मायूसी ने आकर डेरा जमाया, खिलखिलाते घर की खुशियों को पता नहीं किसकी नज़र लग गई। धर्मदास जी का स्थानांतरण आदेश आ गया। वे चिंतित हो उठे। एक घर से दो घर हो जाएंगे खर्चा बढ़ जाएगा, बच्चों की पढ़ाई पर असर पड़ेगा। सोच–सोच कर हैरान हो गए। उन्हीं के परिवार से दीवान चैनराम ने संतों को घर आने के लिए निमंत्रण दिया। स्वामी जी उनके घर पहुंचे। चाय के दौरान उन्होंने स्वामी जी को समस्या से अवगत कराया। स्वामी जी सुनकर बोले आपके घर में नित्य आरती होती है, रहरास साहिब होता है, भजन गाये जाते हैं, फिर यह क्यों हुआ? शायद आपकी भावना में कोई कमी है। हम जो भी पढ़ें, जो भी गायें, जो भी करें उसे पूर्ण अर्थ का ज्ञान लेकर करना चाहिए सिर्फ रट कर पाठ करने से तो अच्छा है न करें। यदि हम अर्थ को समझकर सच्चे दिल से उसका मनन करते हुए करेंगे तो हम को प्रतिफल भी ज्यादा मिलेगा। तब स्वामीजी ने उनको एक मंत्र दिया। ''हम सब साथ साथ रहें'' का जाप भी आरती में रोज़ करें तथा **''ताती वाउ ना लगई, पारब्रह्म सरणाई''** का भी जाप करें तीन सप्ताह तक जब उन्होंने पाठ किया तो स्थानांतरण निरस्त हो गया।

अमृतवेला कब

आजकल अमृतवेला मे उठने का संत लोग आव्हान करते हैं यदि हम महापुरूषों के द्वारा बताये गये समय को मानें तो रात्रि को 12 बजे से शुरू होकर प्रातः 6 बजे तक के समय अर्थात् सूर्योदय से पहले के समय को अमृतवेला कहते हैं यह समय ध्यान एवं गुरुवाणी के अध्ययन का आदर्श समय होता हैं। जो नित्य नेम करने वाले सिख होते है उनका अमृतवेला रात्रि को 2 बजे से शुरू हो जाता है। अमृत वेला को ब्रह्ममुहूर्त भी कहते

हैं जिसे प्रातः 4 बजे से 5:30 बजे तक का समय कहा जाता है। इस समय में उठने से शरीर निरोगी और फुर्तीला रहता है। हमारे ऋषि–मुनियों ने इसे सर्वोतम समय माना है। ब्रह्मामुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। यह ईश्वर–भक्ति के लिये सर्वश्रेष्ठ समय माना जाता है। सिर्फ आलस्य का त्याग" करना है अमृतवेला में उठने से स्वास्थ्य और सफलता दोनों मिलती है। प्रातः 3 बजे से पांच बजे तक जीवन शक्ति फेफड़ों में होती है। पंडित वैभव जोशी के अनुसार इस समय थोड़ा गुनगुना पानी पीकर खुली हवा में धूमने, प्राणायाम करने, गहरी सांसें लेने से आक्सीजन और ऋण आयन अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न होते हैं जिससे शरीर स्वस्थ व स्फूर्तिमान होता है। ब्रह्मामुहूर्त में उठने वाले लोग बुद्धिमान एवं उत्साही होते हैं।

प्रातः 5 बजे से 7 बजे तक

इस समय जीवन शक्ति आंत में होती है। इस बीच में मल त्याग कर देना चाहिए सुबह सात बजे के बाद मल त्याग करने से कब्ज आदि रोग हो जाते हैं। अमृतवेला में पशु पक्षी जाग जाते हैं, उनकी चहचहाहट मन को प्रफुल्लित कर देती है, कमल का फूल भी खिल जाता है मुर्गा भी बांग देने लगता है। सम्पूर्ण प्रकृति अमृतवेला में चैतन्य हो जाती है। हमारे गुरुदेव भी अमृतवेला को बहुत मानते थे। वे तो कहते थे कि हरघड़ी ब्रह्मावेला है। आपके हृदय में जब भी कंठस्थ गुरुवाणी अपने आप शुरू हो जाए जितनी भी बार शुरू हो जाए उतनी बार अृमतवेला है। संतजी तो दिन–रात गुरुवाणी के जाप में लीन रहते थे उनके लिए तो 24 घंटे ही अमृतवेला थी। ऊठत, बैठत, सोवत नाम यह मंत्र जिसके जीवन में समा गया उसके लिये हर घड़ी अमृत वेला है। हमारी यह देह नाशवान है। हमारा जीवन आधी श्वास का है श्वास अंदर गई और बाहर आ गई तो जिंदा हैं और बाहर नहीं आई तो मिट्टी की ढेरी है।

''जिंद मेरीये मिट्टी के ढेरीये इक दिन चलना,
विश्वास देही का मिन्ख न करो मीत''

यह संसार सपना है जग को ऐसे जानकर हम नित्य प्रभू का स्मरण करें, हर पल को अमृतवेला बनायें, वाणी का पाठ सोते जागते चलता रहे, यदि हमें वाणी पढ़ते–पढ़ते नींद आ गई तो यह वाणी सुबह जागने तक अंदर ही अंदर चलती रहती है। मैं 'कर्म ही धर्म है' में विश्वास करता था कई बार सिद्धभाऊ जी, दिलीप सीतलानी जी, पुरूषोत्तम पारवानी जी, बहन पदमा आहूजा जी जिसने मुझे गुरुवाणी से जोड़ा बोलते थे भाई पक्षी को उड़ने के लिये दो पंख चाहिये, एक कर्म का दूसरा धर्म का। आपके कर्म का पंख तो बहुत मजबूत है मगर धर्म का नहीं। मैं सुनकर हँसी में उड़ा देता था मगर आज जब में गुरुवाणी से जुड़ा हूं तो बस ऊठत बैठत सोवत नाम जपने से सुध बुध खो चुका हूँ। शत–शत नमन् उपरोक्त प्रेरणा स्रोतों को।

इच्छा मृत्यु

हम लोग आदिकाल से भीष्म पितामह के बारे में सुनते आ रहे हैं कि उन्होंने सोच रखा था कि 'जब सूर्य उत्तरायण में जायेगा तो ही मैं शरीर त्यागूंगा'। बाणों की शैया पर वे लेटे हुए थे मगर शांतचित्त थे। मगर क्या यह आज भी संभव है? हम भी उसी प्रभू की रचना हैं। जिस प्रभू की रचना भीष्म पितामह थे। सिर्फ मन की अवधारणाओं में आज अंतर हो गया है।

''मन के हारे हार है मन के जीते जीत,
पारब्रक्त्ता को पाइये मन ही के प्रतीत।''

हमारे संत शिरोमणी ब्रह्मालीन संत हिरदाराम साहब जी दिसम्बर के महीने में हरिद्वार जाते थे। यह समय सर्दियों का होता था। स्वामी जी के आश्रम के पास ही संत प्रभदास और हरिदास रहते थे। दोनों हमेशा समाधि में रहने वाले संत थे। न तन की सुध न मन की सुध। खाना मिला तो खा लिया नहीं मिला तो भी चलेगा। संत प्रभदास जी की व्यवस्थाओं के लिये स्वामीजी तन, मन और धन से समर्पित रहते थे। एक बार स्वामीजी को रास्ते से जाते हुए प्रभदास जी से सामना हो गया प्रभदास जी ने संत हिरदाराम जी को देखा और मुस्करा दिये स्वामीजी ने उनसे मुस्कराने का कारण जानना चाहा मगर उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। दूसरे वर्ष भी यही हुआ। तीसरे वर्ष में जब स्वामीजी को सामने देखा तो स्वामीजी को देखकर प्रभदास जी मुस्कराते हुए देख कर बोले

''बाहर कुछ नहीं है जो कुछ है वह भीतर ही है।''

और यह कहते हुए आगे बढ़ गए। वे अपनी मुस्कराहट का राज स्वामी जी को बता गये उस समय स्वामी प्रभदास और सेवादास की आयु 80 वर्ष के आसपास थी। स्वामीजी के आश्रम के पास ही गुरुनारायण जी रहते थे। आते जाते गुरुनारायणजी से उनका वार्तालाप होता रहता था। उस दिन भी स्वामीजी ने गुरुनारायणजी से पूछा शिवरात्रि कब है। गुरुनारायण जी ने बताया स्वामीजी अभी तो एक माह बाकी है। अच्छा एक माह बाकी है कहकर प्रभदासजी आगे बढ़ गए कुछ दिनों बाद फिर पूछा तो उन्होंने बताया स्वामीजी अभी पन्द्रह दिन बाकी हैं, फिर कुछ दिन बाद पूछा। पूछने का क्रम चलता रहा वह दिन भी आ गया जिस दिन शिवरात्रि थी। जब प्रभदासजी ने गुरुनारायण से पूछा शिवरात्रि कब है तो गुरुनारायण ने कहा स्वामीजी आज ही शिवरात्रि है। यह अमृतवेला का समय था, सुबह के चार बज रहे थे और शिवरात्रि प्रातः 5 बजे से शुरू होने वाली थी गुरुनारायण को प्रभदास जी ने कहा गुरुनारायण चाय तो पिलाओ, गुरुनारायण ने श्रद्धापूर्वक चाय बनाई और प्रभदासजी चाय पीकर चादर ओढ़कर सो गये और गुरुनारायण ने देखा कि देखते ही देखते वे शान्त हो गये। एक माह से प्रभदास जी शिवरात्रि का इंतजार कर रहे थे और शिवरात्रि के दिन ही उन्होंने शरीर को त्याग कर शिवलोक को गमन किया। हमें भी इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त है। हमारे गुरुदेव संत शिरोमणि ब्रह्मालीन संत हिरदाराम जी भी शतायु होकर ही देवलोक को गये।

आज भी हम अपने आसपास देखें जब हमारे बुजुर्गों का अंत समय आता है तो जिस व्यक्ति में उनका मोह होता है उसके आने के इंतजार में आंखें गड़ाए रहते हैं, तकलीफ में होते हैं मगर कहते हैं जब तक उनके अपने बेटा–बेटी, पोता–पोती, नहीं आते वे मृत्यु को पास में नहीं आने देंगे और जब वे आते हैं तो उनके सिर पर आशीर्वाद का हाथ फेरकर परलोक को गमन कर जाते हैं।

कबीर सोई पीर है:

अक्सर हमारा अपने ऊपर ही विश्वास नहीं होता। जब हम अपने ऊपर ही विश्वास नहीं करेंगें तो दूसरे पर विश्वास कैसे करेंगे? हममें से अनेक लोग परमात्मा पर भी विश्वास नहीं करते और यदि करते भी हैं तो आधा अधूरा। मगर हमने देखा है कि जो मन में विश्वास धारण करते हैं वे अपने विश्वास के बल पर पेड़ पौधों पर धागा बांधकर, रास्ते में पड़े पत्थर पर सिंदूर लगाकर रखे गए भगवान पर मन्नत मानकर, सूर्य देवता को अर्ध्य देकर भी अपनी मन चाही इच्छा पूर्ण करा लेते हैं। हमें विश्वास से भरे हृदय से प्रार्थना करनी चाहिये। हमारी प्रार्थनाऐं यदि अधूरे मन से या शंकाओं में डूबकर की गयी हैं तो वे कैसे पूरी होंगी। पूर्ण विश्वास ही प्रार्थना की पूर्ति करवाता है। दादा टी एल

वासवानी जी कहते थे कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना कभी प्रभू के दर से खाली नहीं लौटती। प्रार्थना और शुक्रिया दोनों ही बातें है जो इन्सान को इन्सान से देवता बनाने का सामर्थ्य रखती हैं। हमें हर कदम पर हर उस व्यक्ति का, प्रभू का, शुक्रिया अदा करना चाहिये जिसने हमारे लिये कोई छोटे से छोटा हित का कार्य किया है चाहे वह भगवान हो या अदना सा इन्सान । स्वामी रामसुखदास जी कहते हैं कि 'कृतज्ञ पर प्रभू की कृपा बरसती है और कृतघ्न पर कोप।' हमें अपने जीवन में दो शब्दों को हमेशा सीखना चाहिए धन्यवाद और खेद है वह भी सच्चे हृदय से। कई बार काम हो जाता था और कई बार नहीं होने वाला होता था तो भी स्वामीजी को पहले ही पता पड़ जाता था और दादा रोचीराम सीतलानी जी को बोल देते थे कि आज काम होने वाला नहीं है आज प्रार्थना करने के बाद भी अंतर आत्मा से आवाज नहीं आ रही है। होता भी ऐसा ही था अधिकारी, मंत्री आते थे तो उनका उत्तर भी अनमना होता था और वह कार्य नहीं हो पाता था। स्वामीजी कहते थे कि हम किसी का भला नहीं कर सकते तो न करें, मगर किसी का बुरा न करें, न ही सोचें। उनकी सोच थी 'न किसी को सता, न किसी की आह ले भला कर सकता है तो कर नहीं तो अपनी राह ले' कभी बचपन में एक गाना सुना करते थे 'भला करने वाले भलाई किये जा, भलाई के बदले दुआएं लिए जा' सचमुच एक गाना और याद आ गया 'गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा, तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा'। मैंने पग–पग पर इन बातों को अपने जीवन में महसूस किया है ये सिर्फ गाने नहीं जीवन की हकीकतें हैं। कल जो आसमान पर थे वे ज़मीं पर हैं और जो ज़मीन पर थे वे आज आसमान की ऊंचाईयों को छू रहे हैं। जो नगर सेठ थे आज उनकी संतानें कंगाल हैं और जो कल कंगाल थे अपने सत्कर्मों के कारण नगर सेठ हैं। कल जो सेठों की सौ–सौ गालियां खाते थे, जो मिलता था उनसे घर के बच्चों को रूखी–सूखी खिलाते थे आज उनको उनकी पुरानी बातें याद आती हैं तो सिहर उठते हैं और अपनी पुरानी जैसी स्थिति वालों को ऊपर उठाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। आज ही राजकोट से आये अपने पुराने पड़ोसी से मेरी मुलाकात हुई। उसकी माँ विधवा थी, घर पर तीन भाई और माँ। माँ सिलाई कर बच्चों का पेट भरती थी। वह अपने घर का बड़ा बेटा था। बर्तनों की दुकान पर नौकरी करता था, बाद में वह हाथ ठेले पर गलियों में घूम–घूमकर बर्तन बेचता था। 50 वर्षों बाद मिला था नाम था गोवर्धन वाधवानी। बचपन में उसे गोधू कहकर बुलाते थे मेरे घर के 90 डिग्री कोण पर उसका दस कदम चलने के बाद घर था। मैं 1965 में उस घर में रहने आया था और 19 जुलाई 1965 से उसे जानता था। वह मुझसे 11 दिन ही बड़ा था। 24 अक्टूम्बर 50 को उसका जन्म दिन था और मेरा 3 नवम्बर 50 का। जब बात चली तो पता चला कि आज वह एक सफल व्यापारी है, ईरान, इराक से पिण्डखजूर आयात करता है और भारत में उसका व्यवसाय करता है। उसके अधीन 200 कामगार काम करते हैं। वह आदमी जो खुद नौकरी करता था, खाने को भरपेट नहीं मिलता था आज 200 परिवारों को रोजगार देकर उनके घरों का पालन पोषण करवा रहा है। यह उसकी ईमानदारी, दया, दान और अथक मेहनत का ही परिणाम है।

''कबीर सोई पीर है जो जाने पर पीर''....

एक और दोहा है

दुर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय,
मरी खाल की सांस से लोहा भस्म हो जाय।

स्वामी जी निःस्वार्थ भाव से सेवाकार्यों से जुड़े रहते थे और अन्य लोगों को भी

कहते थे कि सेवा करनी है तो निःस्वार्थ भाव से करो। निःस्वार्थ भाव से सेवाकार्य करने से ही हमारी सामर्थ्य बढ़ती है। यदि स्वार्थ के वशीभूत होकर कोई सेवाकार्य में आता है तो वह ज्यादा दिन टिक नहीं सकता। क्योंकि देर सबेर उसकी स्वार्थ भावना उजागर हो जाती है और वह जिन लोगों की नजरों में ऊंचा था उनकी ही नजरों में गिर जाता है। लोग उसकी सच्चाई जानकर उससे दूरियां बनाना शुरू कर देते हैं, वह स्वंय ही सेवाकार्य से स्वार्थसिद्धि न होने के कारण किनारे हट जाता है। मगर जो निःस्वार्थ भाव से सेवाकार्य से जुड़ते हैं। वे आगे बढ़ते जाते हैं, हमारे नगर के अनेक लोगों को मैं जानता हूं जो सेवाकार्य से जुड़े मगर चल नहीं पाये और अब दुनिया से चले गये। आज लोगों को उनके नाम तक याद नहीं हैं और जो निःस्वार्थ भाव से आये वे बुलंदियों पर हैं? निस्वार्थ भाव से जो कार्य करेंगे वे आज यदि रसातल में हैं, हो सकता है लोग उनको न जानते हों मगर एक दिन वे अमर हो जाएंगे। कुछ लोग कुछ देर के लिये सितारों की तरह चमकते हैं मगर जब लोगों को उनकी झूठी चमक का अहसास होता है तो सिवाय थू–थू के उनके हिस्से में कुछ भी नहीं आता। हम प्रार्थना करने बैठते हैं तो उसी समय हमारे अंदर बैठा हुआ शैतान हमें प्रार्थना से भटकाने के लिये तरह तरह के निरर्थक विचार मन में लाता रहता है। पता नहीं कहाँ–कहाँ की फालतू बातें, जिनका कोई सार नहीं होता, आकर हमें विचलित कर जाती हैं और फिर जो प्रार्थना हमें अपनी इन्द्रियों को वशीभूत करके करनी चाहिए वह हो नहीं पाती। जबलपुर में स्वामीजी के शिष्य लक्ष्मीचंद जी रहते थे उनके साथ भी ऐसा होता था, जब बारबार होने लगा तो वे प्रार्थना के समय एक कागज कलम लेकर बैठ जाते थे, और उस पर अनावश्यक आये विचारों को लिख लेते थे और फिर से प्रार्थना करने बैठ जाते थे और बाद में इन विचारों का समाधान खोजते थे।

भक्ति करने से हमारी शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक सामर्थ्य में बहुत वृद्धि होती है

ऐसा देखा गया है हमें प्रभू से मन से प्रीति कैसे करनी चाहिए यह गुरुवाणी में बताया गया है।

'जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति, तिसु जन आवें हरि प्रभु चीति'

यह परतीत प्यार का सुपरलेखि रूप है, अर्थात् हम प्रभू को प्यार की पराकाष्ठा से प्यार करते हैं तभी हमारे हृदय में प्रभू के दर्शन होते हैं। प्यार, वह भी पराकाष्ठा से किया हुआ प्यार, ही प्रभू के दर पर स्वीकार होता है।

'आठ पहर प्रभू पेखहू नेरा, मिटै अज्ञन बिनसै अंधेरा'

हमें प्रभू को आठों पहर, चौबीसों घंटे अर्थात चौदह सौ चालीस मिनट, छियासी हजार चार सौ सैकंड के हर सैकिण्ड में अपने पास अनुभव करते रहना चाहिये अपने अंग संग प्रभू को सहाय समझना चाहिये तभी हमारे अंदर का अज्ञान मिटेगा। तभी हमारा अंधकारमय जीवन उज्ज्वल बनेगा। एक बार पुष्कर में संत शिरोमणी ब्रह्मालीन संत हिरदाराम जी से एक संत ने पूछा स्वामीजी ब्रह्माज्ञान होने के बाद भी मन बारंबार सांसारिक विषयों में क्यों भटक जाता है। तब स्वामीजी ने उत्तर दिया ब्रह्माज्ञान प्राप्ति के बाद भी निरंतर अभ्यासरत रहना जरूरी है यदि हम अभ्यास छोड़ देंगे तो वह ज्ञान क्षीण से क्षीणतर होता जाएगा और एक दिन वह विलुप्त हो जाएगा। हमें धीरे–धीरे अपने शरीर से मोह को खत्म करते जाना है न सिर्फ खत्म करना है बल्कि हमें धीरे–धीरे मैं आत्मा हूं का ध्यान रहना चाहिये तभी तो हम ब्रह्माज्ञानी बनेंगे।

जिसे सेवा करनी है वह कहीं भी कर सकता है उसे किसी की जरूरत नहीं है, न

किसी संस्था की, न किसी व्यक्ति की। सेवा की भावना जब भी किसी के मन में उत्पन्न होती है, तो उसकी उत्पति करने वाला कौन है? उसकी उत्पति प्रभू की इच्छा से हुई है। उनकी आज्ञा अनुसार हुई है, उन्होंने जिस हृदय में सेवा कार्य का बीज डाला है वही तो उसे प्रस्फुटित करने के लिये परिस्थितयां निर्मित करेगा। वह यह भी नज़र रखेगा कि कार्य करने वाला कितना दृढ़संकल्पित है। उसके लिये सहयोग के हाथ अपने आप आगे बढ़ते आऐंगे। सेवा करने वाले को यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि वह निमित्त मात्र है उसे ध्यान रखना पड़ेगा कि

'करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाहीं कोइ,
नानक तिसु बलिहारणै जलिथलि महीअलि सोइ'।

हम जो भी कर्म करें वह पूर्ण श्रद्धा, सची लगन और प्रभू को समर्पित करते हुए करेंगे तो कार्य का फल मीठा ही मिलेगा। एक भजन की चंद पंक्तियां याद आ रही हैं :

'ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन
वो तो गली-गली हरी गुण गाने लगी'

गुरुवाणी में सुखमनी साहिब में ज्ञान के भंडार भरे पड़े हैं। 24 अष्टपदी में कुल 192 पद है।

सुखमनी हमें वरदान देती है सुखमनी साहिब की पहली आठ अष्टपदियां अर्थात् 64 पद ज्ञान से भरी हैं अगली आठ अष्टपदी अर्थात् 64 पद भक्ति भाव प्रदर्शित करते है और अंतिम 8 अष्टपदियां अर्थात 64 पद ज्ञान को समर्पित हैं। सुखमनी साहिब में वरदान दिया गया है कि

सरब इछा ता की पूरन होइ।

लोग कहते है समय कहाँ है सुखमनी पढ़ने का, आलस्य आता है। लखनऊ के शिवशान्ति आश्रम के स्वामी चांडूराम जी ने सुखमनी की सरल व्याख्या की है। बहुतों के पास उसका आडियो भी होगा मगर सुने कौन, टाइम ही नहीं है। मगर हमें समय निकालना चाहिये अच्छी कितबों, वेद, धार्मिक ग्रंथों, गीता, रामायण का यदि हमने रोज सिर्फ 15 मिनट भी एकाग्रचित होकर अध्ययन मनन किया, तो वर्ष भर में 15ग365त्र 4575 मिनट हो जाते हैं अर्थात् 92 घंटे बहुत हैं। गुरुवाणी में कहा गया हैं

''किनका एक जिसु जीअ बसावे, ताकी महिमा गनी न आवै,
कांखी एकै दरस तुहारो, नानक उन संग मोह उधारो''

अर्थात एक कण भी हमारे मन में बस गया तो हमारा उद्धार हो जायेगा। संत कबीरदास जी के अनुसार 'कहत कबीर तब ही नर जागे, जब जम का डंडा लागे' हमारे गुरुवाणी के नवें महले के श्लोक में भी कहा गया है

'करणो हुतो सु ना कीओ, परिओ लोभ के फंध,
नानक समिओ रमि गयो अब किउ रोवत अंध'

संत हिरदाराम जी ने पुष्कर तपोभूमि पर लगातार तीन जन्मों तक तप किया है ऐसा सुनने में आया है। इतनी तपस्या के बाद भी संतजी कहते थे

हमारे जीवन के अंतकाल के समय आये हुए सदविचारों से ही हमारा पुनर्जन्म संत पुरूषों के घर में होगा नहीं तो चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ेगा।

संतो की सुखमनी साहिब, जपुजी साहिब और गुरुवाणी में अटूट आस्था थी। अमृतसर में श्यामसेन नाम का गुरुमुख था, एक खालसा था वह नित्य नेम से दिन में 3 बार सुखमनी साहिब एवं 11 बार जपुजी साहिब का पाठ करता था। कहा जाता है कि इस पाठ

से जो व्यक्ति जुड़ा रहता है उस व्यक्ति को मृत्यु पूर्व आभास हो जाता है, वह बीमार नहीं पड़ता और अंत समय में भी उसका शरीर कांतिमान रहता है। हम अपने सत्गुरुओं की शरण में जब आते हैं तो हमारा उद्धार हो जाता है। शरण में आने का अर्थ है गुरु की आज्ञा को बगैर शंका किये हुए अक्षरशः मानना। गुरुवाणी में कहा गया–

मनु बेचै सतिगुरु कै पासि
तिसु सेवक के कारज रासि।

सतगुरु का आशीर्वाद तभी मिलता है जब हम निःस्वार्थ भाव से सदगुणों पर कर्म करते हुए परोपकारी जीवन जीते हैं मगर यह तभी संभव होता है जब हमें मौत की याद बनी रहे। आज हम भूल गए हैं कि सांसारिक सुखों में लीन रहते हुए, सुखों का उपभोग करते हुए, मौत आयेगी। गुरुवाणी का एक भजन है,

'जिसके सिर ऊपर तू स्वामी सो दुख कैसा पावै,'

इसी में आगे आता है

'मरणा चीत न आवे'

बस यही हमारे पतन का कारण बन जाता है। मौत याद है तो परमात्मा का डर बना रहता है कहते है – 'जिना मन भव, तिना मन भाव'।

आज हमारा जीवन यांत्रिक हो गया है यंत्र की तरह सबेरे उठना, नहाना–धोना, नाश्ता, दोपहर का भोजन, रात्रि का भोजन, रोजगार पर जाना और फिर सो जाना। अपने अलावा अपने परिवार के अलावा कुछ सूझता ही नहीं है। आजकल तो अपनों का दायरा भी सिमट कर भाई, बहनों तक ही सीमित रह गया है। वे पुराने रिश्ते बुआ, चाचा, मौसी, चचेरे भाई बहनों वगैरह का रिश्ता बचा ही नहीं हैं। जब अपनों के रिश्ते ही क्षीण हो गये हैं तो बाकी दूर के रिश्तों की बात ही का क्या कहें? आजकल उठने और सोने का समय भी खत्म हो गया है। रात को देर तक टीवी चलता रहता है, दुकानें खुलने का समय भी बदल गया है। मुझे याद है हमारी दुकान सबेरे 7:30 बजे खुलती थी और रात्रि आठ साढ़े आठ तक बंद हो जाती थी। आजकल तो शहर में दुकानें सबेरे 11 – 12 बजे के पहले खुलती ही नहीं हैं और रात्रि को 10:30, 11 बजे तक खुली रहती हैं। ऐसे में जब दुकानदार रात को घर 11 बजे पहुंचेगा तो फिर खाना खाकर सोयेगा तो अमृतवेला में उठ ही नहीं पाता। वेद शास्त्रों में कहा गया है अमृतवेला अर्थात् ब्रह्मामहुर्त में उठकर प्रभू का स्मरण ध्यान कर शुक्रिया अदा करना चाहिए।

हमें कहना चाहिये दाता तेरा शुक्र है, पलपल के लिये आपका शुक्र है, हमारी हर श्वास में आपका शुक्र करता हूं एक भजन याद आ रहा है,

'मेरे मधुर मालिक तेरा शुक्र है, सुख का दिन गुजारा है सुख की रात्रि भी गुजारोगे, रात्रि से हफ्ता, हफ्ते से महीना, महीने से वर्ष, वर्षो से सुख से जिंदगी बिताना'। कहा जाता है, जिसका प्रभू पर जितना ज्यादा भरोसा होगा वह उतना ही ज्यादा बड़ा संत बन जाता है। उसके कथनों में उसकी शुभकामनाओं में इतनी शक्ति होती है कि बताना भी कठिन है। एक भजन गुरुवाणी में कहता है –

'जो जो मांगू ठाकुर अपने से सोई सोई देवे, नानकदास मुख ते जो बोले ईहां ऊंहां सच होवे' सच ही है सिर्फ इहां ऊहां अर्थात मानव लोक में ही नहीं उहां परमात्मा के दर पर भी कबूल होता है।

हमारे गुरुदेव संत शिरोमणी ब्रह्मालीन संत हिरदाराम जी ह्रदयज्ञान, मुख भक्ति और वैतरण वैराग्य की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। वे आसक्ति और द्वेष से रहित, मर्यादा से

भरपूर व्यवहार करते थे। यदि उनको किसी भी चीज की जरूरत होती थी तो अपने अनेक अनुयाइयों में से किसी से भी ले आने का आग्रह करते थे और जब वो चीज आ जाती थी तो अपने सेवक से उस वस्तु का मूल्य ज्ञात कर उसका तुरन्त भुगतान करते थे? अनुयायी संकोच में पड़ जाता था तो वे उसे कहते थे तुम अपनी इच्छा से जो देते हो वह तो ग्रहण करता हूं मगर यदि मैनें आपसे कोई वस्तु मंगाई है तो उसका भुगतान करना आवश्यक है। यही मर्यादा है, अतः निःसंकोच ले लो नहीं तो दूसरी बार में कह नहीं पाऊंगा हमें अपने हक का ही मिलना चाहिए जिस चीज पर हमारा हक नहीं और वह मिल जाये तो उसको नहीं लेना चाहिए हमारे हृदय में तभी निर्मलता उपजेगी जब हम वह सब हासिल नहीं करना चाहेंगे जो हमारे हक का नहीं हो। यदि हम ऐसा नहीं करते तो वह हमारा व्यवहार, हमारा आचरण, प्रभू की आज्ञा का, शिक्षाओं का निरादर होगा। हमें अपने हृदय को उज्ज्वल बनाना है। कबीरदास जी कहते हैं

'पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय'

संतजी कहते हैं

'अंदर को उज्ज्वल बनाओ, कितने पेज पढ़ोगे'

हमारा हृदय, हमारा अंतः करण यदि प्यार, करुणा, दया से रहित है तो हम चाहे कितने भी शास्त्र पढ़ लें उससे कोई अंतर नहीं पड़ने वाला यदि हमारे मन में करुणा है तो हम दूसरों की तकलीफ समझ सकेंगे। वैसे भी कहा गया है

'वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे'

हमें हमेशा दूसरों को सुख देने का प्रयास करना चाहिये।

अपने लिये जिये तो क्या जिये तू जी ऐ दिल जमाने के लिये।

कोई अशिक्षित है उसे शिक्षित करें तकि वह आगे चलकर अपने परिवार का कल्याण कर सके कोई भूखा है उसे भोजन करायें मगर साथ–साथ उसे रोजगार के लिये प्रेरित करें ताकि भविष्य में वह भूखा न रहे, आज हमने उसको खिलाया है निश्चित ही जब वो समर्थ होगा तो दूसरों की दिलोजान से मदद करेगा। कड़ियां जुड़ती जायेंगी। हर रात की सुबह हो, हम उसके साक्षी बनें, यह सोच हमारे में हमेशा बनी रहनी चाहिये। हमें हाथ बढ़ाना सीखना पड़ेगा तभी तो हम दूसरों को भी हाथ बढ़ाने की प्रेरणा दे पायेंगे।

उनके अंतर में होता नहीं था

कभी–कभी स्वामी जी अनुकूल कार्य न होने के कारण अपने अनुयाइयों पर नाराज हो जाते थे भयंकर नाराज, उनको भला–बुरा कहते थे मगर जब वे शांत होते थे तो उनको पश्चाताप होता था कि क्यों मैने इतना गुस्सा किया? वे फिर उस अनुयायी को बुलाते थे, पास में बिठाते थे और उसकी गल्ती का उसे अहसास कराते थे एवं जब तक वह अनुयायी सामान्य नहीं हो जाता था, मुस्कराता नहीं था उसे अपने पास बिठाये रहते थे। वे कहते थे **'जो सहेगा वह पायेगा'**। दूसरों की नहीं अपने हृदय की सुन। साधू टी एल वासवानी कहते थे –

'यदि तुम हमेशा खुश रहना चाहते हो तो अपने मुंह को बंद रखो'।

हम अपनी रसना को जितना बस में रखेंगे उतना ही जीवन में सुखी रहेंगे। ऐसे हृदय ज्ञानी थे हमारे संत।

'उरि धारै जो अंतरि नामु, सरब मैं पेखै भगवानु'

ऐसे ही ज्ञानी पुरूष के अंदर में मुख भक्ति का भाव होता है और हमारे स्वामी जी

तो सदैव सेवा में तत्पर रहते थे। बूढ़े बच्चे और बीमार उनकी सेवा के केन्द्र बिंदु होते थे। बच्चों की शिक्षा, कुपोषण से मुक्ति, संस्कारों से भरपूर करना ही उनका ध्येय था।

गरीब बच्चों की निःशुल्क शिक्षा के लिए नवयुवक परिषद के अतिरिक्त उन्होंने वृद्धों के लिए वृद्धाश्रम का और बीमारों के लिए **सेवासदन नेत्र चिकित्सालय, आरोग्य केन्द्र**, प्राकृतिक और योग चिकित्सालय का निर्माण कराया वैसे स्वामी जी ने वृद्धाश्रम का निर्माण तो करवाया था मगर वे इसके पक्ष में नहीं थे। शुरू शुरू में अनेक महिलायें आश्रम में रहीं मगर स्वामी जी के आग्रह पर अपने बच्चों के पास लौट गईं। अभी वृद्धाश्रम में सिर्फ दो महिलायें ही रहती हैं। ऐसी विधवा, वृद्ध महिलाओं को उनके जीवन यापन के लिये प्रतिमाह एक निश्चित राशि दी जाती है जो उनकी बच्चों पर निर्भरता कम करती है। वैसे भी अनेक आर्थिक कारण होते हैं जिनके कारण वृद्धाएं परेशान होकर वृद्धाश्रम में रहने के लिए मजबूर होती हैं मगर उनकी आवश्यक्ता के अनुरूप उनको आर्थिक मदद मिलने पर वे परिवार में सामंजस्य बिठा लेती हैं। गुरुवाणी में आता है –

'करिकिरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै, नानक इहां मुक्तु आगै सुखु पावै'।

स्वामी जी बार–बार गुरुवाणी को अत्मसात करने की शिक्षा हमें देते थे। वे कभी अपने कार्यों पर अहंकार नहीं करते थे। उनका मानना था–

'करण कारण प्रभु एकु है, दूसर नाहीं कोइ'

करने वाला दूसरा है मैं तो सिर्फ माध्यम हूं यह उनकी अटूट सोच थी। वे हमेशा दीन दुःखियों की सेवा के लिए, शिक्षा के लिये, अपने अनुयाइयों को दान देने के लिये प्रेरित करते रहते थे। वे उनको कहते थे

'धनवंता होइ करि गरबावै, त्रिण समानि कछु संगि न जावै'।

वे हमेशा मृत्यु को याद करते थे। हमारे शरीर में 9 द्वार हैं जब मौत आयेगी तो पता नहीं कौन से द्वार से निकल जाये पता ही नहीं पड़ेगा। गुरुवाणी में कहा गया है

'जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसे नीत
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत'।

हृदय में सदैव प्रभू का ध्यान रहे जब प्रभू ध्यान में रहेंगे तो हमारा चित्त निर्मल बन जायेगा। हमें घट–घट में हरी दर्शन होंगे कबीरदास जी तो कहते है

'कबीरा मन निर्मल भया जैसे गंगानीर'

हमें अपने शब्दों मे ही नहीं व्यवहार में भी मिठास लानी पड़ेगी यदि शब्द कुछ कहें और मन कुछ और, तो हमारा जीवन बनावटी हो जाता है। यह बनावटीपन सिर्फ हमें ही नहीं अन्य लोगों को भी समझ में आता है। स्वामीजी कहते थे हमें सजीव ही नहीं निर्जीव में भी परमात्मा को देखना चाहिये। सांई चांडूराम जी उदासीन शिव शान्ति सन्त आसूदाराम आश्रम लखनऊ तो कहते हैं हम जो भी सुख सुविधा के सामान उपयोग करते हैं उन्हें भी आराम की जरूरत होती है। पंखा, ए.सी., लाईट, टेबल, कुर्सी, वस्तु में, परमात्मा का अंश विद्यमान होता है जिसे विज्ञान भी आज स्वीकार करता है। विज्ञान कहता है। कि हर वस्तु में ईश्वरीयकण है। श्री होतचन्द धनवानी (सिद्धभाऊ) ने जब स्कूटर लिया तो स्वामी जी ने उनको कहा था इस में भी परमात्मा का अंश है यह मानकर व्यवहार करना, ऊबड़–खाबड़ रास्तों पर इसे, पत्थरों की ठोकरो से बचाना इसकी साफ–सफाई का ध्यान रखना तो यह तुम्हें कभी धोखा नहीं देगा, तुम्हें गिरायेगा नहीं, तुम्हारा ध्यान रखेगा। सिद्धभाऊ बताते हैं कि कई बार तो जब वे कुटिया पहुंचते थे तो पता चलता था पेट्रोल गाड़ी में है ही नहीं। कब कहां पेट्रोल खत्म हुआ उन्हें ध्यान नहीं

आता था फिर भी स्कूटर उनको अपने गंतव्य तक ले आता था। कभी उसने उनको परेशान नहीं किया।

वेद भी हमें बताते हैं कि कण–कण में भगवान है। हर जीवजंतु में प्राण हैं। सुखमनी साहब की दसवीं अष्टपदी में भी कहा गया है –

'कई कोटि ससीअर सूर नक्ष्यत्र'

हमारे ब्रह्माण्ड में अनेक तरह के जीव जन्तु है। हमारे धर्मग्रंथों में 84 लाख योनियों का वर्णन किया गया है। कई तो इतनी सूक्षम हैं कि हमें दिखती ही नहीं है। जब सूर्य की किरणें कमरे में आती है तो हम ध्यान से देखें उसमें हमें अनेक सूक्ष्म जीव दिखाई देते है। स्वामी जी कहते थे हमें अपनी नज़रें नीची करके चलना चाहिये ताकि कोई जीव जन्तु हमारे पांवों में आकर नहीं मरे। स्वामीजी की इस शिक्षा का स्वामी जी के अनुयायी अनुसरण करते हैं। मैंने अक्सर कन्हैयालाल टेवाणी एवं उनके परिवार को नीची नजरें करके चलते हुए घर के आंगन में आये कीड़ों को बड़े प्रेम से दूर भगाते हुए देखा है ताकि वे किसी के पांव में आकर अकाल मृत्यु को न प्राप्त हों। यदि हर मानव ऐसा करे तो शायद ज्यादा अच्छा होगा। स्वामी जी में हृदय ज्ञान का भरपूर प्रभाव दिखता है। स्वामी जी को अपने परदादा तन्नूराम जी से ये संस्कार मिले थे। तन्नूराम जी भी ब्रह्म ज्ञानी थे। जो जो वस्तु ब्रह्माण्ड के अन्दर है वही वही हमारे शरीर में विद्यमान रहती है **'जो ब्रत्ताण्डे सोई पिण्डे'।**

गुरुवाणी में आता है

'जो अंतर सो बाहर अनंत'

जिसने उस प्रभू को पा लिया वो अपनी प्रसन्नता आनन्द का बखान नहीं कर सकता। परमसत्ता स्वयं आनंदरूप है। उस सत्ता की प्राप्ति के बाद अन्य किसी वस्तु की चाह नहीं रह जाती है। जैसे गूंगा गुड़ को खाकर उसे कितना आनंद आया यह बता नहीं सकता वैसे ही मनुष्य भी जब परमसत्ता को प्राप्त कर लेता है तो वह बता नहीं सकता। उल्हासनगर में एक गृहस्थ तपस्वी तीजाराम जी रहते थे। उनके बारे में वहीं के स्वामी जी को अपने अनुयायी वजीरानी जी एवं कालीचरण जी से जानकारी मिली थी। वे अपनी पेंशन से ही गुजारा करते थे साथ में सिलाई सेंटर का भी संचालन करते थे। सादगी तो इतनी कि रस्सी से बुनी हुई चारपाई पर सोते थे। हमें यदि परमात्मा की अनुभूति होती है तो हमें उसका बखान नहीं करना चाहिये, किसी की भी वाह वाही नहीं चाहिये, किसी की जय जय कार नहीं चाहिये। यदि हमने ये सब चाहा तो हमारी अनुभूति धीरे धीरे क्षीण होकर विलुप्त हो जायेगी। स्वामी जी के परदादा तन्नूराम का जिक्र किया वे खेती करते थे, वस्त्र में धोती, कुर्ता ही पहनते थे कभी तो कुर्ता भी नहीं पहनते थे। आठों पहर, चौबीसों घंटे वे प्रभू स्मरण में लगे रहते थे। वे एक दिन खेत से लौटे तो परिवार वालों को कहा आंगन को लीपो एक बाल्टी पानी लाओ आज में प्राण त्यागूंगा। घरवाले आश्चर्य से भर गये ये तो अच्छे खासे हैं, नीरोग हैं, उत्तम व्यक्त्वि के धनी है ये मजाक क्यों कर रहे हैं। मगर घर के बुजुर्ग थे अतः उनकी आज्ञानुसार उन्होंने आंगन को लीपा। स्वामी जी के दादाजी ने स्नान किया और लीपे हुए आंगन में जाकर लेट गये तब लोगों ने कहा गंगाजल तो ले लीजिये उन्होंने गंगाजल लिया और पीकर बोले सब हो गया अब मैं प्राण त्यागता हूं मगर मरघट से जल्दी लौटकर आना सीधे घर आना बहुत गहरा अंधेरा हो जायेगा यह कहते हुए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। जब परिवार जन मरघट से वापस आ रहे थे सांयकाल के 4 ही बजे थे अभी अंधकार होने में 2–3 घंटे की देरी थी मगर

वास्तव में पांच मिनट के लिये इतना अंधेरा हो गया कि हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। सचमुच ब्रह्मज्ञानी सारी कायनात के मालिक हो जाते हैं कायनात उनके इशारों पर नाचती है। कहते है न '**दुनिया झुकती है झुकाने वाला चाहिए**'

कवि रोहल जी कहते है '**भरिया होवे तो कबहूं न डोल**' ऐसे ही सत्पुरषों के लिये वैराग्य वाणी में कहा गया है

'उसतति निंदिआ नाहिं जिहिं, कंचन लोह समानि,
कहु नानक सुनि रै मना मुकति ताहि ते जानि'।

लाभ हानि, जन्म मरण से दूर हो वे वैराग्य धारण कर लेते हैं वैराग्य अर्थात राग द्वेष से रहित हो जाते हैं वे जान जाते है कि वे परमात्मा का ज्योति स्वरूप हैं, वे अपने अमूल्य शरीर का मोल पहचान लेते हैं और वे इस लोक में ही नहीं उस लोक में भी सम्मान के अधिकारी होते हैं।

सिंध के ठारूशाह में एक 30–40 वर्ष का नौजवान रहता था, अच्छा सुन्दर रूप, कुलीन परिवार में जन्मा हुआ, अचानक उसकी मौत हो गई। घर वाले सन्न रह गये। उसको क्या हो गया। घर में मातम छा गया घर वाले उसके अंतिम संस्कार की तैयारी करने लगे मगर अचानक चमत्कार हुआ वह फिर से जिंदा हो गया। घर में उत्सव छा गया वह अपने पांच मिनट की मृत्यु के अनुभव बताने लगा। उसने बताया किस तरह यमलोक में पापियों को दण्ड भोगना पड़ रहा था। यमराज उनको अनेक तरह से प्रताड़ित कर रहे थे। चीख रहे थे और अपने पाप कर्मो की माफी मांग रहे थे। तब उनका वृतान्त सुन वहीं के उनके दोस्त को वैराग्य आया उसे पता पड़ा कि नूरपुर में एक संत जगतराम जी रहते हैं वे पहुंचे हुए सिद्ध पुरूष हैं जो भी उनकी शरण में जायेगा उसका उद्धार निश्चित रूप से हो जायेगा। तो उसने अपने उस साथी से, जो मृत्यु लोक दर्शन कर आया था, कहा चलो तुम भी चलो संत जगतराम जी की शरण में चलें मगर वह नहीं माना और बोला मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं मेरी उम्र ही क्या है। मैं जाऊंगा तो इनकी देखभाल कौन करेगा। तुम्हें जाना है तो तुम जाओ मैं तो नहीं जा रहा। मगर उसे तो सुनकर जैसे वैराग्य हो गया था और आकर स्वामी जगतराम की की शरण में आया। कठिन तपस्या की रोटी भी रसवल के साथ खाता था। वह स्वामी जगतराम का प्यारा शिष्य बन गया। एक दिन जब स्वामी जगतराम ने शरीर त्याग किया तो उसे उस स्थान का प्रमुख संत मान लिया गया। एक दिन एक माता ने जो आश्रम के लिए खाना बनाती थी जब रोटी बनाई तो एक रोटी बनाते बनाते जल गई और वह रोटी उस संत के पास खाने के लिये परोस दी गई। संतों ने रोटी जली देखकर माताजी को कहा अम्मा देखकर सेका करो देखो रोटी जल गई है। माताजी यह सुनकर आग बबूला हो गई और स्वामी जी को बोला एक रोटी जल गई तो आप इतना गुस्सा क्यों हो रहे हैं मेने जान बूझकर तो नहीं जलाई है स्वामी जी यह सुनकर सकपका गये उनको उस महिला से ऐसे उत्तर की आशा नहीं थी। स्वामी जी शान्त हो गये। दो चार दिन बाद जब संतजी ने यही बात दुहराई तो महिला ने कहा आज आप गदीनशीन हो गये हैं तो यह रोटी आपको जली हुई दिख रही है मगर वो दिन याद करो जब आप रोटी रसवल से खाते थे। अम्मा की बात सुनकर स्वामी जी ने कहा अभी भी तुम्हारा गुस्सा नहीं उतरा क्या अभी भी गुस्सा हो। अम्मां बोली हां मैं गुस्सा हूं। तो स्वामी जी ने कहा यदि अभी भी तुम गुस्सा हो तो फिर मेरे रहने से क्या फायदा। यह कहकर स्वामीजी ने चादर बिछाई और लेट गये। लेटते ही वह ब्रह्मलीन हो गये। सचमुच में इच्छा मृत्यु की अपार शक्ति ब्रह्मज्ञानियों को ही प्राप्त होती

है।

ऐसी ही एक घटना रतलाम में रहने वाले एक गुरुमुख की है। वे रतलाम में इम्पीरियल बैंक के ऊपर रहते थे। रेल्वे में नोकरी करते थे उन्होंने अपने घर के मंदिर में श्री गुरुग्रंथ साहिब की स्थापना कर रखी थी नित्य गुरुवाणी का पाठ, आरती और भजनों को गाया जाता था घर के मुखिया की मृत्यु के बाद उनके बेटे का गुरुवाणी से बहुत लगाव हो गया वह रात दिन गुरुवाणी के स्मरण में रमा रहता था। स्वामीजी रतलाम प्रवास पर थे तो वहां के उनके अनुयायी ने उस बच्चे को दिखाकर कहा स्वामी जी यह नौजवान पागल हो गया है। वह बच्चा सबेरे से उठ कर नाच रहा है, और वह मदहोश हो कर नाचता रहा, घर वालों को बोला मुझे देखो बाबा गुरुनानक देव लेने आये हैं और देखते देखते बच्चा चिर निंद्रा में सो गया। यह लग्न विरलों को ही लगती है, जो सचमुच में अपने आपको समर्पित कर देते है।

'ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन, वो तो गली गली हरि गुन गाने लगी'

सच है। परमात्मा का भय जिसको होगा वह ग़लत काम कभी भी नहीं करेगा। यदि हमें परमात्मां सें लगन लगानी है तो अपने मन को हर तरफ से खाली करना पड़ेगा। जो मन हमारा सांसारिक विषयों में रमकर लबालब भरा हुआ है उस मन में परमात्मा आये भी तो कहां बैठेगा। परमात्मा को निर्मलता से भरा हुआ शुद्ध, सात्विक मन ही चाहिये। गुरुवाणी में कहा गया है –

गलि पात्थर, कैसे तरे अथाह'

अतः हम अपने आपको हर बोझ से हल्का कर लें तभी प्रभू की शरण में जा पायेंगे।

स्वामी रामानंदजी महाराज सिंध के लुकमान में रहते थे। आजकल उदयपुर के आदर्श नगर में उनका आश्रम है। स्वामी रामानंद जी प्रबल साधना शक्ति के मालिक हैं वे दया के सागर एवं परोपकारी संत हैं। संतजी के जयपुर के एक शिष्य जो साधू टी.एल. वासवानी में अटूट श्रद्धा रखते हैं, उच्च संस्कारी, सम्पन्न परिवार के मालिक हैं, उन्होंने साधू टी.एल. वासवानी से प्रेरित होकर आदर्श नगर जयपुर में एक अति भव्य स्कूल का निर्माण कराया है। ऐसे परोपकारी श्री मोहनलाल वासवानी जी जो मां सरस्वती के उपासक थे, उनको एक फेफड़े में टी.बी. हो गई। यह मानव शरीर है, रोग शोक तो लगे ही रहते हैं। कुछ इस जन्म के हमारे कर्म ओर पिछले जन्मों के कर्म ही हमारे धन धान्य, स्वास्थ्य और परिवार का निर्धारण करते हैं। हमें हमारे कर्मो को निश्चित रूप से भोगना पड़ता है।

मुझे एक कहानी याद आ रही है। एक साधू को राजा ने चोरी के इल्जाम में फांसी की सजा सुनाई। चोरी भी वह जो उसने की नहीं थी। कोई चोरी करके उसके सामने सामान रख गया था जब साधू ध्यान मग्न थे। तो उसने परमात्मा से गुहार लगाई कि हे परमपिता परमेश्वर मैने चोरी की नहीं फिर भी मुझे अपमानित किया जा रहा है, लोग थू–थू कर रहे हैं, मुझे यातनाएं दी जा रही है। मेरी बात को कोई मान ही नहीं रहा कि मैंने चोरी नहीं की है, हे परमात्मा मैने इस जन्म नहीं अपने पिछले जन्मों का भी ध्यान किया मगर मुझे कहीं से भी मुझे ऐसी कोई घटना अथवा अपराध याद नहीं आ रहा जिसके लिऐ मुझे इतनी बड़ी सजा मिले। हे परमात्मां ये तेरा कैसा न्याय है। तब आकाशवाणी हुई, हे सन्यासी तुम अपने और पूर्व जन्मों को देखते जाओ तुम्हारे 101 वें पूर्व जन्म में तुमने खेल–खेल में एक कुत्ते की आंख फोड़ दी थी। उसी की सजा तुम्हें

आज मिल रही है। तो पूर्व जन्म के संस्कार, अपराध, और हमारी प्रभू भक्ति भी हमें वर्तमान जीवन में प्रारब्ध उपलब्ध कराती है। तो बात हो रही थी श्री मोहनलाल वासवानी जी की, वे अपने इलाज के लिये अजमेर में क्रिश्चियन मिशनरी द्वारा संचालित सेनीटोरियम में भर्ती हुए जो अपने अच्छे इलाज के लिये, सेवा के लिये प्रसिद्ध है, 3–4 महीने के इलाज से वे ठीक हो कर घर आ गये। मगर कुछ दिनों बाद उनके दूसरे फेफड़े में भी टी.बी. के लक्षण प्रकट हो गये। वे परेशान हो गये अभी तो 3–4 महीने मैने दुःख भोगा है, अब दुबारा फिर भोगना पड़ेगा। मायूस हो गये, तब उनके एक मित्र ने उन्हें सलाह दी कि आप स्वामी रामानन्द जी को एक पत्र लिखकर उनसे आग्रह करो कि मैं आपसे मिलकर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता हूं। स्वामी जी वैसे तो सांसारिक प्रपंचों से दूर रहते हैं, बहुत संक्षिप्त वार्तालाप करते हैं जहां दो शब्द बोलने हो वहां एक ही शब्द का प्रयोग करते हैं। मगर संत तो दया के सागर होते हैं। उन्होंने मोहनलाल जी को मिलने का समय दे दिया। मोहनलाल जी ने सेनीटेरियम वालों के मना करने के बावजूद वहां से छुट्टी ली और प्रतापनगर उदयपुर में स्वामी जी के आश्रम में जा पहुंचे। जैसे ही वे आश्रम के अंदर पहुंचे वैसे ही स्वामी रामानंद जी ने अनाप शनाप बोलना शुरू कर दिया और कहने लगे क्या मैं डाक्टर हूं? जो मेरे पास टी.बी. का इलाज कराने आये हो, जाओ वापस जाओ, मोहनलाल जी निराश होकर वहां से वापस आये, आँखों मे आंसू भरकर उदास मन लेकर। थोड़ी देर बाद रामानंद जी ने अपने शिष्य श्यामसुन्दर जी को मोहनलाल जी के पास भेजा और कहा उनको ले आओ। मोहनलाल जी लौट आये तो स्वामी जी ने कहा मैने आपको नहीं आपकी बीमारी को कहा था कि तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे चौखट को लांघने की आप दिल पर मत लीजिये, मोहनलाल जी घर आये जांच करवाई तो एक्स–रे में उनके फेफड़े साफ दिखाई दिये उनमें टी.बी. के कोई लक्षण नहीं थे।

स्वामी रामानन्द जी से हमारे पूज्य गुरुदेव ब्रह्मलीन स्वामी हिरदाराम से मुलाकात हुई, अजमेर में स्वामी तुलसीदासजी का दरबार है। स्वामी तुलसीदास जी में संत हिरदाराम जी की अटूट आस्था थी। स्वामी तुलसीदास अब तो नहीं है, मगर उनका दरबार अब भी संचालित होता है। श्यामसुन्दरजी के पिताजी लुकमान से ही स्वामी रामानन्दजी की सेवा करते थे, उन्हीं के अधीन आश्रम की सारी व्यवस्थाएं होती थी। उनकी वर्सी का आयोजन स्वामी रामानंदजी के आश्रम में किया गया था। संत जी के मन में श्यामसुन्दरजी के पिताजी के लिये बहुत श्रद्धा थी। हर वर्ष उनकी वर्सी का कार्यक्रम वहां मनाया जाता था। जिसमें स्वामी तुलसीदास को भी निमंत्रित किया जाता था। इस बार स्वामी तुलसीदास जी को निमंत्रण मिला तो उन्होंने संत हिरदाराम से कहा संत जी आप भी इस बार चलिये। स्वामी जी का तुलसीदास जी के प्रति श्रद्धाभाव और स्नेह था अतः उन्होंने जाना स्वीकार किया मगर तुलसीदास जी को आग्रह किया मुझे वहां एकांत और सात्विक भोजन का प्रसाद मिले तो ही मैं चलूंगा! संत जी वहां पर गये उन्हें एक शिष्य के घर में ठहराया गया उस शिष्य ने स्वामीजी का सच्चे हृदय से ख्याल रखा एवं उनकी इच्छा अनुसार सात्विक आहार की भी व्यवस्था की।

स्वामी तुलसीदास जी ने एक बार स्वप्न देखा था कि उनकी स्वामी रामानंद जी से मुलाकात हुई है। उस समय स्वामी तुलसीदास जी अजमेर में रहते थे और स्वामी रामानंद लुकमान सिंध पाकिस्तान में रहते थे। उन्होंने अपने स्वप्न की बात रामानंदजी को बताई तो स्वामी रामानंद जी ने कहा हां, मैं जब भारत आऊंगा तो अवश्य ही आपसे

भेंट होगी। जब स्वामी तुलसीदास जी उदयपुर पहुंचे तो रामानंद जी ने श्यामसुन्दर जी को बोला जाओ इनको आश्रम घुमाके लाओ। तुलसीदास जी जब आश्रम घूमकर आये तो रामानंद जी ने कहा जो जगह आपने स्वप्न में देखी थी यह वही जगह है ना! तुलसीदास जी बोले हां प्रभू, यह वही जगह है। रामानन्द जी स्वामी तुलसीदास से मर्यादापूर्ण व्यवहार करते थे। वे उनको विदाई के समय आश्रम के द्वार तक छोड़ने आते थे। स्वामी रामानंद ने द्वार पर खड़े होकर स्वामी को 'संग तड़ो' दिया और पूछा यह क्या है? स्वामी जी ने सोचा यह तो साफ दिख रहा है कि संग तड़ो (संतरा) है मगर स्वामी जी पूछ रहे हैं तो जरूर इसका कोई गूढ़ अर्थ होगा स्वामी जी ने उत्तर नहीं दिया तो रामानंद जी ने अपने नयनों में खुमार भरते हुए कहा यह है संग तड़ो? संग–तड़ो करे छड्डु (संग छोड़ दो)।

स्वामी जी रामानंद जी के देह त्याग के बाद भी उदयपुर जाते थे। वहां पर वहां के पार्षद प्रभुदास जी के घर पर रहते थे। प्रभुदास जी भी गुरुमुख थे। अच्छे स्वभाव, अच्छे गुणों के धनी, गुरुवाणी में आस्था रखने वाले थे। वहीं पर स्वामी जी रहे। श्यामसुन्दर जी ने आग्रह किया कि स्वामी जी उनके घर पर भी आयें। स्वामीजी ने उनका आग्रह स्वीकर करते हुए उन्हें घर आने का आश्वासन दिया।

स्वामी जी शाम को रोज पैदल घूमने जाते थे। वे शाम को ही जंगल में नित्य कर्म करने जाते थे। वहीं पर एक छोटा सा पहाड़ था स्वामी जी उस पहाड़ पर चढ़ने लगे अपने खड़ाऊं उन्होंने अपने हाथों से सम्भाल लिये और धीरे–धीरे पहाड़ पर चढ़ने लगे। जब वे पहाड़ पर चढ़ रहे थे उन्हें पहाड़ पर एक चीता दिखाई दिया। स्वामीजी ने वहीं से उल्टे पांव लौटते हुए जपुजी का पाठ करना शुरू कर दिया। जब वे नीचे उतर आये तो चीता जा चुका था।

इसके पूर्व भी स्वामी जी जब सिंध में थे तो स्वामी रामानंद जी के दर्शन के लिये वे सिंध में रायबहादुर तोताराम जी की कार में आते थे। तोताराम जी भी बहुत आध्यात्मिक स्वभाव के व्यक्ति थे। स्वामी रामानंद जी उनका आदर करते थे एवं उनको अपने समीप आसन देकर बिठाते थे। जब रायबहादुर जी स्वामी जी के साथ आश्रम पहुंचे तो रामानंद जी ने रायबहादुर तोताराम जी को बताया तोताराम संत हमारे आश्रम में आये हैं, आप यह आसन स्वामी जी को दे दो। रायबहादुर जी ने अपना आसन स्वामी जी को दे दिया स्वामीजी ने बहुत मना किया मगर संतों की आज्ञा वे टाल नहीं पाये। जब सत्संग की समाप्ति हुई तो स्वामी रामानंद जी ने श्यामसुन्दर जी की माताजी, जो संतों की सेवा में लगी रहती थीं, को कहा श्याम की मां संत आये हैं इनको वस्त्र पहना दो। माताजी ने कहा जो आज्ञा। वे रेशमी कपड़े लाईं। संत जी ने कहा यह रेशमी कपड़े क्या करेगा इसके लिये तो सादे ही कपड़े लाओ संत रामानंद की बात सुनकर स्वामी जी को अच्छा लगा।

तभी किसी शिष्य ने स्वामी रामानंद जी को बताया कि स्वामी जी ने पुष्कर में अपनी एक कुटिया बनाई है। स्वामी रामानंद जी को आश्चर्य हुआ कि स्वामी जी ने अपनी गुरुगदी का त्याग कर दिया था फिर उनको कुटिया की जरूररत क्यों पड़ी? उनको लगा शायद इसमें भी कोई सार्थक बात होगी तभी उन्होंने आश्रम बनाया होगा।

स्वामी जी जब सिंध से आये तो बंगाली संत शिवानंद जी के साथ पुष्कर की आनंद कुटिया में आकर रहे। स्वामी शिवानंद जी गुरुग्रंथ साहब हमेशा अपने साथ रखते थे। अपने पास हमेशा भारत का नक्शा रखते थे। उनका कोई आश्रम भी नहीं था। वे

माऊंट आबू की चंपा गुफा में रहते थे, जो साढ़े छः फिट ऊंची और इतनी ही लंबी थ
सिंध में भी शांति आश्रम में वे स्वामी जी के साथ रहते थे। स्वामी जी को शांति पसंद
इसलिये कभी उन्हें आनन्द कुटिया में आनन्द नहीं आता था। वहां के अपने नियम का
थे खाने के, सोने के, उठने के। उन्होंने स्वामी शिवानंद जी को कहा मुझे यहां आनंद न
आता। तब शिवानंद जी ने उनको कहा पुष्कर तपोभूमि है, वहां का आनंद ही कुछ अ
है। अजमेर शहर से भी दूर है। लोग यहां पर कम ही आते–जाते हैं। यहां रहकर अ
निर्विघ्न होकर आत्मभक्ति कर सकते हैं। स्वामी जी को यह बात अच्छी लगी। वहीं प
अजमेर के एक शिष्य घुमणसिंह को पता पड़ा कि स्वामी जी पुष्कर की आनन्द कुटिया
पधारे हुए हैं। वे उनसे मिलने आये। स्वामी जी की इच्छा समझकर घुमणसिंह ने ए
प्लाट खरीद कर स्वामी जी को दिया स्वामी जी ने वहां पर एक कमरा अपने लि
बनवाया। मगर उसमें रेत भर जाती थी बाद में उसमें लकड़ी के दरवाजे लगाये गये
खाना बनाने के लिये भण्डार गृह बनाया गया। कुटिया इतनी छोटी थी कि एक समय
5–6 लोग ही बैठ सकते थे। पाठ भी मुश्किल से हो पाता था। कालान्तर में जयपुर
मुकेश भाग्या के पिता ने वहां पर एक हाल बनवाने की स्वामी जी से आज्ञा मांगी औ
स्वामी जी ने आज्ञा इस शर्त पर दी कि वह हाल आपका होगा उसका नाम भाग्या कुटि
रखा जायेगा। ये वे ही भाग्या जी थे जिनसे स्वामी जी ने सेवा सदन नेत्र चिकित्
बनवाने के लिये एक लाख उधार लिया था, जिसे बाद में उन्होंने उन्हें एकाउंट पेई ड्राफ
बनवाकर वापस कर दिया था।

स्वामी जी का एक सूत्र वाक्य था '**मज़ो थो मारे त्यागु थो तारे**' (अर्थात मजा ह
मारता है और त्याग हमें तार देता है)। हम सब अपने इन्द्रियभोगों में व्यस्त हैं। इन्द्रि
को भोग के मार्ग पर ले जा रहे हैं। यह मज़ा हमें मार देगा। हम त्याग करना सीखें ज
हमें तार देगा। हमने देखा कि स्वामी जी अपना भोजन स्वयं अपने हाथ से बनाते थे
उनके शिष्य कन्हैयालाल टेंवाणी जी बाग की मेहंदी को काटते रहते है। हमें भी अप
जीवन को उनके आदर्शों के अनुरूप बनाना होगा। यदि हम उनके बनाये पदचिन्हों प
रहेंगे तो उनकी तरह मोक्ष गति को पाकर जीवन मरण के बंधनों से मुक्त हो जाएंगे।

संसार में दो तरह के लोग होते हैं एक मनमुख और दूसरे गुरुमुख । आज ह
इस पर विचार करेगें। अजमेर में एक गृहस्थ संत लधानी जी रहते हैं। वे ए
होम्योपैथिक डाक्टर हैं। वे अपनी सेवायें हालाणी दरबार में मुफ्त देते हैं। शुरूशुरू
हालाणी दरबार में लोगों को फ्री में दवायें दी जाती थीं मगर लोग फ्री की चीज़ की क
नहीं करते। बाद में वहां पर 25 पैसे का शुल्क रखा गया। लोगों को वहां के इलाज
बहुत फायदा होता था। अजमेर में ही संत दौलतराम पारदासानी रहते थे उनके
अनेक शिष्य थे। एक बार उनके एक शिष्य जो थधानी जी के गुरुभाई थे, उन्हो
दौलतरामजी से आग्रह किया कि मेरे बेटे की शादी में आप आइये। दौलतराम जी ने क
मैं शादी में आकर क्या करूंगा यहीं रहकर आपके बेटे की शादी निर्विघ्न और अच
तरीके से संपन्न हो इसकी अरदास करूंगा। मगर शिष्य नहीं माना, उनको कहा
आपके आने जाने की प्रथम श्रेणी की टिकिट रिजर्व करवा दूंगा। रहने के लिये अच
व्यवस्था करूंगा। मैं स्वंय आपको लेने के लिये आऊंगा आप मेरा आग्रह स्वीक
कीजिये। दौलतराम जी मजबूर हो गये। शादी के पहले सेठ जी आये उनको अपने स
ले गये। रहने के लिये अलग कमरा दे दिया मगर उनके खान–पान की आराम की अल
से व्यवस्था नहीं की। जो गरिष्ठ भोजन शादी में सबके लिये बनता था वही स्वामी जी

दिया जाता था। न उनके सोने का टाइम, न जागने का। ऊपर से मेहमानों को लगता था सेठजी के सत्गुरु आये हैं वे भी आकर स्वामी जी की शान्ति में विघ्न डालते थे। 3–4 दिन में ही स्वामी जी का स्वास्थ्य खराब हो गया शादी के बाद सेठजी स्वामी जी को स्टेशन तक छोड़ने आये साथ में एक नौकर को भेज दिया कि स्वामी जी को उनके घर तक अजमेर छोड़कर आ जाये। नौकर ने आज्ञा का पालन किया। दौलतराम जी को उनके घर पर आकर बोला स्वामी जी मेरे रेलगाड़ी का समय हो गया है मुझे आज्ञा दीजिये। दौलतराम जी बोले मैं बीमार हो गया हूं मेरा इलाज तो करवाओ मगर गाड़ी का समय हो गया है, मुझे वापस जाना है कहकर उसने असमर्थता जताई और चला गया। बाद में होम्योपैथी डॉक्टर से शिकायत भरे लहजे में स्वामीजी ने कहा मेरे मना करने के बाद भी वह मुझे जबरदस्ती ले गया और मैं बीमार पड़ गया। मैं उसके लिये अरदास कर देता तो उसका कार्य निर्विघ्न संपन्न हो जाता ऐसे होते हैं मनमुख।

गुरुमुख –

दिल्ली में रहने वाले श्री मोहनलाल वसंदानी, जो बाद में बाम्बे में शिफ्ट हो गये थे, बहुत बड़े व्यवसायी और बड़े–बड़े शोरूमों के संचालक थे। उनके सुपुत्र थे उत्तमचंद वसंदानी। स्वामी जी ने उनका नाम रखा था **'दो टके वाला नौकर'**। उत्तमचंद जी स्वामी जी से पूछते थे ये दो टके के नौकर से क्या होगा। तो स्वामी जी कहते थे ये दो टके से स्कूल, अस्पताल, धर्मशालायें बनवाएगा और अनेक असहाय लोगों की सहायता करेगा। वास्तव में उनके द्वारा परोपकार के अनेक कार्य किये गये। उनका बेटा था भीमसेन। उसकी शादी का वक्त आया तो उन्होंने स्वामी जी से शादी पर आने का आग्रह किया। स्वामी जी ने आने के लिये कहा भाई मेरे रहने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि मेरी पूजा, भजन में कोई रूकावट नहीं आये और मेरे लिये सात्विक आहार की व्यवस्था कर सको, बगैर घी–तेल का सादा उबला हुआ भोजन तो मुझे आने में कोई दिक्कत नहीं होगी। उन्होंने आश्वस्त दिया कि जैसा आप कह रहे है वेसी ही व्यवस्था करेंगे। स्वामी जी नियत तिथि पर पहुंचे। उन्होंने स्वामी जी को एकांत स्थान पर, शोर शराबे से दूर स्थान पर कमरा दिया और कमरे के बाहर एक सेवादार नियुक्त कर दिया। वह 24 घंटे वहीं पर उपस्थित रहता था। उसे ताकीद कर दिया गया था। स्वामीजी की हर जरूरत का वह ध्यान रखे। स्वामी जी के लिये सात्विक भोजन की भी उत्तम व्यवस्था उन्होंने की। और जब तक विदाई नहीं हुई उन्होंने मेहमानों को भी ढिंढोरा नहीं पीटा कि स्वामी जी आये हैं। स्वामीजी वहां पर शान्तिपूर्वक रहे। ऐसे ही अनुयाइयों को गुरुमुख कहा जाता है।

आगे भी जब कोई स्वामी जी को शादी–ब्याह के लिये निमंत्रित करता था तो वे गुरुमुख परिवार की बात बताने के लिये सिद्धभाऊ को बोलते थे। सारी बात बताकर वे आने में असमर्थता जता देते थे।

सचमुच में गुरुमुख होना कठिन नहीं है। निरन्तर अभ्यास से मनमुख भी गुरुमुख बन जाते हैं। गुरुमुख रात दिन प्रभू को अपने नज़दीक पाते हैं। उनके मन में यह भाव रहता है कि परमात्मा सब देख रहा है। अतः वे कोई भी गलत काम करने के पहले दस बार सोचते हैं। उनमें लोक–लज्जा, परोपकार, सहृदयता, अपने से छोटों के लिये प्यार, बड़ों के लिये आदर, परिवार के समस्त प्राणियों के साथ पशु–पक्षियों की चिंता, जल्दी सोना, जल्दी उठना इत्यादि गुणों का समावेश हो जाता है। गुरुमुख ही मोक्ष को प्राप्त

कर सकता है। मनमुख तो सोच भी नहीं सकता।

शरणागति

प्रार्थना तभी सफल होती है जब हम प्रभू की शरणागति में जाते है। जो प्रभू के शरणागत होकर अपने आपको पूर्णतः अर्पण कर देता है वही प्रभू को पा सकता है। तभी उसकी प्रार्थना सफल होती है। शरणागत व्यक्ति यहां–वहां भटक नहीं सकता क्योंकि उसको पग–पग पर जैसे मां अपने बच्चे को संभाल रखती है, उसे गोदी से गिरने नहीं देती, वैसे ही प्रभू भी अपने शरणागत को कभी भटकने नहीं देता और गलत रास्ते पर चलने से रोक लेता है। शरणागत मनुष्य का मन निर्मल हो जाता है। वह अपने हृदय के अवगुणों से मुक्त हो जाता है।

एक बार जब व्यक्ति अपने आपको प्रभू की शरण में डाल देता है तो धीरे–धीरे उसके अवगुण ऐसे ही निथर जाते हैं जैसे पानी की गंदगी तली में बैठ जाती है और ऊपर का पानी साफ सुथरा हो जाता है। निर्मल मन वाले के पीछे–पीछे परमात्मा स्वयं चल पड़ता है। कबीर दास जी ने अति सुन्दर रचना में कहा है।

'कबीर मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर' जो शरणागत नहीं होते उनके लिये सुखमनी साहिब की चौथी अष्टपदी में कहा गया है

'झूठ विकार, महा लोभ मोह ध्रोह
इआहू जुगति बिहाने कई जनम
नानक राखि लेहु, आपन करि करम'

हमारा मन यदि विकारों से भरा हुआ होगा तो उसमें प्रभू स्मरण बस ही नहीं सकता। प्रभू को तो वही हृदय पसंद आता है जिस हृदय में निर्मलता का वास होता हे। यदि कहीं गंदगी होती है तो उसे देखकर हर व्यक्ति दूर भागता है। यदि हमारे हृदय में गंदगी होगी तो प्रभू कैसे हमारे हृदय में आकर बसेंगे? और विकार जायेगें तो जायेंगे कैसे? विकार जाते हैं प्रार्थना से। हम प्रभू से जब सच्चे हृदय से प्रार्थना करेंगे कि हे परमात्मा! हमारे विकार हर लो। यदि हमारी प्रार्थना सच्ची है तो प्रभू को भी आकर हमारे हृदय के विकारों को दूर करना पड़ेगा। यह विश्वास जिस हृदय में बस जायेगा वह हृदय निर्मल न बने ऐसा हो ही नहीं सकता। गुरु की सेवा, प्रभू का सिमरन ही हमारे हृदय को निर्मल बना देगा। सुखमनी साहिब की पहली अष्टपदी के पहले पद में ही सिमरन की महिमा कही गई है।

सिमरउ सिमिरि सिमरि सुखु पावउ,
कलि कलेस तन माहि मिटावउ

सिमरन करने से सुख प्राप्त होता है। सिमरन भी कैसा

उठत बैठत सोवत नाम :

उठते हुए, बैठते हुए, सोते हुए निरन्तर सिमरन चलता रहना चाहिये। यदि हम सिमरन करते हुए नींद में चले गये तो रात भर सिमरन अंदर चलता रहता है। मैंने अनुभव किया है कि चलते–चलते कब सिमरन शुरू हो जाता है पता ही नहीं पड़ता। नित्य पाठ से भजन याद हो जाते हैं, वाणी याद हो जाती है, अच्छी बातें याद हो जाती हैं जो हमारा पथ प्रकाशित करती रहती हैं। इसके लिये यह भी आवश्यक है कि हमारी दोस्ती भी गुरुमुखों से होनी चाहिये। यदि किसी मनमुख से दोस्ती है भी तो उसको धीरे–धीरे अपने

रंग में रंग देना चाहिये ताकि वह भी गुरुमुख बन जाये। यह अति पुण्य का कार्य होगा। महर्षि वाल्मीकि की कथा से तो हम परिचित हैं कि वह डाकू से महर्षि बना! उसका मरा–मरा उच्चारण राम–राम में परिवर्तित हो गया और उसने रामायण की रचना कर डाली। क्योंकि वह मनमुख था, और जब ऋषियों के संपर्क में आया तो मनमुख से गुरुमुख बन गया। वैसे भी जैसा संग वैसा ही रंग हो जाता है। हमारा संग हमें सोच समझ कर चुनना चाहिये। यदि हमने संग सोच समझ कर नहीं किया, दुर्जनों के संग में रहे तो हमारी अधोगति निश्चित है।

मैं अपनी बात बताता हूं। मूढ़ व्यक्ति जिसकी छवि मंद बुद्धि की। जिसको लोग पागल समझते थे और पुराने दोस्तों से पूछो तो वो आज भी बोलते हैं वही पागल ना! मगर संगत मेरी अच्छे लोगों से थी, धीरे–धीरे उस संगत का असर हुआ। 12 वर्ष की आयु में पहली बार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से परिचय हुआ मगर शहर परिवर्तन के कारण वह छूट गया। शहर से गांव गया। गांव की मिट्टी की सोंधी सुगंध, सरल रहन–सहन, संध्या वंदन व दान, मंदिर दर्शन की आदत भी बन गई। मन निर्मल होता गया। अच्छे दोस्त मिले, अच्छा वातावरण मिला मन निर्मल होता गया। 15 वर्ष की उम्र में वापस संतनगरी में आया मगर यहां के स्मार्ट दोस्तों में उपहास का पात्र बन गया। यहाँ आकर पहले दिन ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा में गया। वहां अच्छे दोस्त मिले, संस्कार अच्छे मिले, वक्ता मिले, अच्छे प्रचारकों से परिचय हुआ, जीवन को एक उद्देश्य मिला, निर्मल हृदय के कारण अपनापन तो बहुत मिला मगर साथ–साथ उपहास का पात्र भी बना रहा। फिर भी अच्छा संग नहीं छोड़ा। विध्वंस की राह पर नहीं चला। नव निर्माण, नव सृजन का पथिक बना। संतों का संग भी इसी कारण ही तो मिला। विरले थे हमारे संत। उनके आशीर्वाद से अनेकों फलीभूत हुए हैं, मैं तो उसका जीता जागता उदाहरण हूं।

संतजी कहते थे कि हमें परनिंदा से बचना चाहिये। हमें कभी किसी की निंदा नहीं करनी चाहिये। कोई हमारी निंदा करे तो करे क्योंकि अपनी निंदा सुनने से हम अपने अवगुणों से रूबरू होंगे। कबीरदास जी कहते हैं

निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय
बिन साबुन, नीर बिना निर्मल करत सुभाय

यदि हम किसी की निंदा करते हैं तो हमारे पुण्य कम होते जाते हैं और पाप के भागीदार बनते हैं। निंदा भी दो तरह की होती है। एक उपहास उड़ाने वाली और दूसरी सुधार करने की दृष्टि से की गई। सुधार की भावना से की गई निंदा निश्चित रूप से हमें पुण्य देगी। मगर उपहास उड़ाने वाली निंदा, चुगली करने वाली निंदा हमें अधोगति को प्राप्त करवायेगी। हम किसी की निंदा करेंगे तो क्या वह हमें छोड़ देगा? हममें भी तो कमियां होंगी। वह हमसे ज्यादा बढ़ चढ़कर दूसरों से हमारी निंदा करेगा, हमारी कमियां बतायेगा और यह क्रम कभी कम नहीं होगा बढ़ता ही जायेगा। निंदा की प्रकृति, देखा गया है, पुरूषों की अपेक्षा नारियों में ज्यादा होती है। जबकि नारियों में करूणा की, वात्सलय की मात्रा ज्यादा होती है। वे निंदा से बचकर अपने आपको बड़ी आसानी से भक्ति मार्ग पर शरणागति मार्ग पर आगे बढ़ सकती हैं। पर पता नहीं क्यों उनको निंदा में इतना रस आता है जिसे वे सत्संग में आकर भी छोड़ नहीं पाती।

हमारे गुणों को दूसरों से ज्यादा हमारा अंतर्मन जानता है। हमारे अंतर्मन में ही तो प्रभू विराजमान होते हैं। हमारे प्रभू सब कुछ जानते हैं और समय–समय पर हमें सचेत भी

करते हैं मगर हमारे मन का मैल उबलने लगता है, अंतर्मन की आवाज की भी वह अनसुना कर देता है और हम सचेत होते हुए पाप करते जाते हैं, सांसारिक भौतिक तापों से अधोपतन की राह पर चलते जाते है। हमें प्रभू ने नेत्र दिये हैं देखने के लिये मगर हम उनका दुरूपयोग करते हैं। कभी आपने सोचा है हम उन नेत्रों से दूसरों को इतनी वासना भरी नज़रों से देखते हैं। प्रभू ने हमें कान दिये हैं, सुनने के लिये मगर अच्छी बातें सुनकर भी हमें याद नहीं रहतीं जबकि गंदी बातें हम शीघ्र ही ग्रहण कर लेते है और रस लगाकर सुनते हैं। अच्छे भजन याद नहीं होते मगर रोमांटिक गीत याद हो जाते है। प्रवचन याद नहीं होते, मगर गालियां याद हो जाती हैं, किसी की सुनी हुई अच्छाई याद नहीं रहती, मगर उसकी निंदा की बातें याद रह जाती हैं। प्रभू ने हमें जिह्वा दी है अच्छा बोलने के लिये, अपने भावों को शब्दों में व्यक्त करने के लिये, मीठा बोलने के लिये, मगर हम हमेशा कड़वा बोलते हैं तो इतना जोर से बोलते हैं कि जिसे सुनाना है उसके अलावा दूसरे भी सुनते हैं। हमें आनन्द आता है सामने वाले की निंदा करने में। मगर हम जिस गलती के कारण किसी की निंदा कर रहे हैं क्या वास्तव में उसने वह गलती की भी है या नहीं यह भी हमें अच्छी तरह से मालूम नहीं होता, बस सिर्फ बोलना है, अपने मन की भड़ास निकालनी है। यदि हम कुछ समय के लिये, गुस्से के समय जिव्हा को तालू से लगाकर रखते तो शायद अनर्थ करने से बच सकते थे। प्रभू ने हमें जिह्वा दी है, स्वादिष्ट खाने का स्वाद लेने के लिये, मगर हम क्या–क्या खाते हैं कभी सोचा है हमने? भक्ष्य, अभक्ष्य, सभी चीजें हम खाते हैं। वह भी चटोरे बनकर। इतना तीखा खाते हैं कि गला चोक होने लगता है, जीभ जलने लगती है, और अंदर जाकर वह तीखा खाना हमारी आंतरिक संरचना को खराब कर देता है। गरिष्ठ भोजन पचने में समय लेता है। प्रभू ने हममें देवत्व और दैत्यत्व दोनों तत्वों का समावेश किया है। मगर हम देवत्व से ज्यादा अपने दैत्यत्व से स्नेह रखते हैं। यह विडम्बना है हमारी! प्रभू ने हमें नासिका बख्शी है स्वच्छ वायु से अपने शरीर को पुष्ट बनाने के लिये, हम पुष्पों की गंध को छोड़कर परफ्यूम, डीओडिरेंट, पाऊडर, क्रीम जैसी अप्राकृतिक सुगंधों से शरीर को सुगंधित करने का प्रयास करते हैं। क्या हम यह नहीं जानते कि वे अप्राकृतिक रासायनिक पदार्थों से बने हैं? उनके छोटे–छोटे कण हमारी श्वास नली से अंदर जाकर रासायनिक क्रिया कर हमें क्षति पहुंचाते हैं? हमारी त्वचा हमारी पांचवीं इन्द्री है हम क्या करते हैं? प्राचीन काल में तेल से मालिश करवाकर उसको पुष्ट करते थे। मगर आज ब्यूटी पार्लरों में जाकर बाडी मसाज, वेक्सिंग, मालिश इत्यादि करवाकर उसको नष्ट कर रहे हैं। हमें सोचने की जरूरत है इन सब चीजों से हमारी त्वचा सुन्दर नहीं होती बल्कि थोड़े समय के लिये बनावटी आभा दिखती है जो धीरे–धीरे कांति हीन होती जाती है। बात हो रही थी प्रभू सब जानते हैं गुरुवाणी में भी कहा गया है

घटघट के अंतर की जानत भले बुरे की पीर पछानत। प्रभू की गति को प्रभू ही जानता है या फिर गुरु ही जान कर हमें बता सकता है। गुरुवाणी कहती है

'हरि की गति हरि ही जाने या जाने गुरु सूरा'

हमें यह याद रखना चाहिये कि प्रभू हमारे हर कार्य को देख रहा है अच्छे को और बुरे को भी! उससे कुछ छिपा नहीं है। हम अपने कर्म करें और फिर भूल जायें यदि हम अच्छे कर्म यश की कामना से करते हैं, दान धर्म यदि नाम के लिये करते है, स्कूल, धर्मशालाएँ, अस्पताल, कुंए, बावड़ी, जल व्यवस्था, पक्षियों के दाना पानी की व्यवस्था, करके उसका ढिंढोरा पीटेंगे, अपने नाम की पट्टिका वहां लगवायेंगे तो हमारा यह पुण्य कर्म हमें इस लोक में नाम यश देगा मगर परलोक में भले ही मिलने वाला फल, जो हमने

यहां ही भोग लिया है, केसे मिलेगा। यहाँ ले लो या वहाँ पर जाकर लो। हमें यह लोक ही नहीं अपना परलोक भी सुधारना है। हमें यह देखना पड़ेगा, सोचना पड़ेगा कि हम किस लोक के लिये सत्कर्मों में लीन हो रहे हैं। कर्म करें और भूल जायें ओर दूसरे सत्कर्म में लग जायें यही जीवन की सार्थकता है।

हमें अपने जीवन को निर्मल बनाने के लिये सेवा का सहारा लेना चाहिये। छोटी–छोटी सेवाओं से निर्मलता प्राप्त होती है। जरूरी नहीं कि बड़ी सेवा मिले। सेवा तो सेवा होती है, छोटी हो या बड़ी। कहते हैं सेवा से ही मेवा प्राप्त होता है। जितनी निःस्वार्थ सेवा उतनी ही हृदय की निर्मलता। सेवा का मौका कभी भी नहीं छोड़ना चाहिये। परिवार की हो, समाज की हो, नगर की हो, राष्ट्र की हो जो भी मिले उसे करना चाहिये। कुछ लोग सोचते हैं अवसर आयेगा तो ही सेवा करेंगे। अवसर की प्रतीक्षा क्यों करें। खुद सेवा को ढूंढ़े और सेवा में लग जायें। जहां सेवा होती हो, मालूम हो पहुंच जायें। यदि हम खुद पहुंच जायेंगे सेवा करने के लिये तो कौन हमें रोकेगा? करके देखिये, सेवा का अपना आनंद है। सेवा के बदले इतने आशीर्वाद मिलेंगे कि आपके जीवन की सोच, जीवन की धारा ही बदल जायेगी। आपके हृदय को जो आनन्द मिलेगा आप उसका वर्णन करना चाहेंगे तो भी नहीं कर पायेगें गूंगे आदमी की तरह जो शक्कर की मिठास को शब्दों में बयान नहीं कर सकता।

एक नगर में तीन सेठ रहते थे। तीनों नगर सेठ थे। तीनों के पास अथाह संपत्ति थी। तीनों के मन में आया कि कुछ दान पुण्य किया जाये। उन्होंने अपने नगर में ढिंढोरा पिटवाया कि जरूरत मंद लोगों की हम सहायता करना चाहते हैं। कल से हम लोग अमुक स्थान पर आयेंगे और यथाशक्ति आप लोगों की सहायता करेंगे। आप लोग आइये और हमें सेवा का लाभ दीजिये। लोग आने लगे और उन्होंने किसी को भी निराश नहीं लौटाया। स्वामी जी ने उन तीनों साहूकारों के बारे में अपनी राय दी। उन्होंने बताया यह पहला व्यापारी जो दान पुण्य कर रहा है उसकी देने की भावना

'राम की चिड़िया राम का खेत, आओरी चिड़िया चुगलो खेत'

वाली भावना है। सच्ची भावना यह है कि देने वाला भी वही लेने वाला भी वही है। उसके देने की भावना अहंकार रहित है। उसका यह निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य है। यह जो दान कर रहा है साथ ही साथ यह नाम स्मरण भी कर रहा है। उसके हृदय में प्रभू का स्मरण निरंतर चल रहा है, उसके स्मरण को अजपा जाप कहते हैं। यह दे रहा है तथा मालिक का शुक्रिया भी करता जा रहा है कि हे मालिक तेरा लाख–लाख शुक्र है। इस व्यक्ति को इसका फल सब से ज्यादा मिलेगा। उसकी सोच यह है मैं तो खाली हाथ संसार में आया था, प्रभू की कृपा से यह सब मिला है और मुझे जाना भी खाली हाथ है। यही भावना उसे इस कर्म का सबसे बड़ा फल प्रदान करेगी। वह अपने ऊपर प्रभू का आशीर्वाद का हाथ महसूस करता है। अजपा जाप के लिये कहा गया है

'श्वासों का सिमरण नहीं, वही अजपा जाप,

बैठने को गद्दी मिले यह पूर्व जन्म का पाप'।

हम सुख को जब प्राप्त करते हैं तो सुख मिलने के तीन नुकसान हैं। सुख मिलने से भोगों में मन लगने लगता हे और धीरे–धीरे हम सुख प्राप्त कर परमात्मा से दूर होते जाते हैं। हम भोगों में इतने व्यस्त हो जाते हे कि परमात्मा का स्मरण करना ही भूल जाते है, साथ–साथ भोगों को भोगने से हम पाप के भी कहीं न कहीं भागी बन जाते हैं। भोगों के रास्ते में चलते हुए हम भूल जाते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। भोगों की

आसक्ति हमें अकरणीय कर्म के लिये भी प्रेरित करती है और यही अकरणीय कर्म ही तो पाप है। वहीं पर दुःख जब आता है तो हमें पग–पग पर परमात्मा याद आता है। दुःख आने पर 'हे राम' अपने आप ही मुँह से निकल जाता है। हम सोचते हैं पता नहीं हमने ऐसा कौन सा कर्म किया है जिसके कारण प्रभू हमें यह सजा दे रहा है। दुःखी मनुष्य दूसरे का दुःख बड़ी आसानी से महसूस कर लेता है। दूसरों के लिये उसके मन में दया भाव आ जाता है, नम्रता आ जाती हैं। हम जब प्रभू का सिमरन शुरू करते हैं तो भक्ति में मन लगने लगता है जिससे हमारे पाप भी धीरे–धीरे कटने लगते है। हम दूसरों की ग़लतियों को भी क्षमा कर देते हैं।

क्षमा, बंदगी, गरीबी, यह संतों की है रीति।

वह हर एक को क्षमा करता चलता है। जब सबको माफ कर दिया दूसरों की गलतियों को क्षमा कर दिया तो दिल अपने आप शांत हो जाता है। गरीबी हमें नम्रता प्रदान करती है। गरीब होंगे तो अकड़ कहाँ से आयेगी। जब हम दूसरों की गलतियों को भी अनदेखी कर उन्हें ह्रदय से क्षमा कर देंगे, नम्रतापूर्व उनसे हाथ जोड़कर माफी मांग लेंगे तो विवाद अपने आप समाप्त हो जायेगा। जब विवादों से दूर होंगे तो निश्चिय ही हमारे अंदर बंदगी का भाव पैदा होगा, प्रभू की भक्ति बढ़ेगी और हम सद्प्रवृतियों के मालिक बनेंगे।

दूसरा सेठ भी दान कर रहा है मगर उसकी कामना है कि मैं इनको सुखी कर रहा हूं। दान कर रहा हूं। वह दान लेने वालों से कहता है, आप लोग मुझे आशीर्वाद दें ताकि मैं और ज्यादा आपकी सेवा करूं। यह कामना से भरा हुआ दान है। वे लोग उसे आशीर्वाद देते हुए जाते हैं और कहते हैं सेठजी फलो–फूलो, प्रभू आपको दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की दे। सेठ को मिली आशीष व्यर्थ नहीं जाती वह दिनों–दिन धनधान्य से परिपूर्ण होता जाता है। जितना वह भर रहा है उतनी ही आशीर्वादों की भरी झोली लेकर परमात्मा के पास जाता है और कामनाओं के कारण पुनर्जन्म को प्राप्त होता है, पहले से ज्यादा अमीर परिवार में। इस बार भी वह यही करता है और तीसरे–चौथे जन्म में वह पहले वाले सेठ की स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ से उसका भी अजपा जाप शुरू हो जाता है और आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

तीसरा सेठ जो दान कर रहा है उसे नाम की चाहत है, यश की चाहत है, जय–जयकार की चाहत है। वह चाहता है कि उसे संसार के लोग अच्छा कहें, उसका देश विदेश में नाम हो वह अपनी इस कोशिश में सफल भी होता है। मगर जब उसकी यश की कामना और वास्तविक जीवन में किये गये उसके कुकर्मों दुश्चरित्र के विषय में लोगों को पत्ता चलता है तो लोग उसकी निंदा करना शुरू कर देते हैं। वह सोचता है ये कितने नीच लोग हैं, मैंने इनके लिये इतना सब किया और आज यह मेरा उपकार तो मान नहीं रहे उल्टे मुझे कोस रहे हैं तो वह उन लोगों को कष्ट देना शुरू कर देता है। वह अशांत चित हो जाता है। कहा जाता है कि अंत मति सो गति जैसा अंत में हमारा व्यवहार होता है वैसी ही हमें गति प्राप्त होती है। वह आदमी दान पुण्य करने के बाद भी चौरासी योनियों के चक्कर में पड़ जाता है। क्योंकि जब उसकी मृत्यु आई तब उसकी आत्मा अशांत थी।

साथियों जिनका ह्रदय निर्मल हो परमात्मा उन्हीं को अपने गले से लगाता है। हमारे जो दोस्त निर्मल होते हैं उनकी बात ही कुछ और होती है। वे सबके चहेते होते हैं। हर व्यक्ति उन्हें अपने पास बिठाना चाहता है। चाहेगा भी क्यों नहीं जिसको परमात्मा

खुद चाहता हो उसे आप हम क्यों नहीं चाहेंगे!

व्यक्ति को हमेशा जागृत अवस्था में रहना चाहिये। जागृत अवस्था में ही हम अपने विचारों पर नियंत्रण रख सकते हैं। विचार बनने की क्रिया हमारी कर्म इन्द्रियों से बनती है। हम जो देखते हैं अपनी आखों के द्वारा, हम जो सुनते हैं अपने कानो के द्वारा, जो हम पढ़ते हैं किताबों से, जीवन की पाठशाला में वही तो हमारे विचार बनते हैं। अतः हमें अपनी आंखों से गलत बात नहीं देखनी, कानों से गलत बात नहीं सुननी, ऐसा कुछ नहीं पढ़ना जो सत्साहित्य न हो। हम ऐसा तब ही कर सकते हैं जब हम चेतन अवस्था में हों। हमारे अंदर किसी के लिये भी बुरे विचार नहीं आने चाहिये।

उर धारे जो अंतर नाम, सरब में पेखे भगवान

यही भाव जब हमारे हृदय में आयेगा तभी तो हमारा जीवन सार्थक कहलायेगा। हम सबमें परमात्मा का वास हैं यह मान लेंगे तो मनसा वाचा कर्मणा हम किसी को दुःख नहीं पहुचाएंगे, हम किसी का बुरा नहीं सोचेंगे। किसी की आह नहीं लेगें,

न कर सके किसी का भला तो अपनी राह ले।

हमें किसी की भी आह नहीं लेनी चाहिये। किसी मनुष्य की तो क्या किसी पशु पक्षी को भी नहीं सताना चाहिये। हमारे हर कर्म का हिसाब होता है अच्छे कर्मो का भी, बुरे कर्मो का भी। हमें हर जीव में परमात्मा का अंश देखना चाहिये।

उरि धारै जो अंतरि नामु, सरब मैं पेखै भगवानु निमख निमख
ठाकुर नमसकारै नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै।

दुःख आने से मन में हल्कापन आ जाता है। नयनों में नीर भर जाता है, दुःख आँसू बनकर हमारे अंदर से बाहर निकलने लगता है। एक गाना याद आ रहा है –

'राही मनवा दुःख की चिंता क्यों सताती है, दुःख तो अपना साथी है।'

सच में हर सुख का अंत दुःख में ही होता है। सुख और दुःख एक पहिये के समान हैं। कभी सुख ऊपर दुःख नीचे, कभी दुःख ऊपर तो सुख नीचे। दुःखों को सहना सीखना पड़ेगा। किसीने अपशब्द बोल दिये, छोटा है, बड़ा है, अपना है, पराया है शान्त रहेगें तो सुखी रहेंगे। अपशब्द बोलने वाला जब देखेगा कि हमारे अपशब्दों का इसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ तो वह थोड़ी देर में शान्त हो जायेगा और उसे अपनी ग़लती का अहसास होते ही वह स्वयं शर्मिदा होकर हमसे अपने किये गये व्यवहार के लिये माफी मांगेगा। हमें हृदय को निर्मल बनाना है, नम्रता सीखनी है, ध्यान करना हे, प्रभू का स्मरण करना है। जैसा सोचेंगे वैसे ही हम बन जायेंगे। हमें राग, द्वेष, लोभ सबसे दूर रहना सीखना पड़ेगा।

स्वामी जी कहते थे कि हमें शार्टकट से प्रभू को प्राप्त करना है। शार्ट कट होता तो छोटा है मगर उस रास्ते पर राजपथ जैसी चिकनाई नहीं होती। चिकनाई भरा राजपथ लम्बा होता है हम गंतव्य तक पहुचेंगे बड़े आराम से मगर देर से पहुंचेगे। शार्टकट में हमें रास्ते में कांटे, कंकड़–पत्थर मिलेंगे पैरों में चुभेंगे मगर हम जल्द अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेंगे। हमारे अंदर क्षमा का भाव भी होना अति आवश्यक है। हमें किसी ने दुःख पहुंचाया भी है तो हमें यह मानना चाहिये कि यह हमारे पूर्वजन्म के अपराध के कारण मिला होगा। हम दुःख देने वाले के लिये भी प्रभू से प्रार्थना करें कि हे प्रभू इसे क्षमा कर देना। यह अज्ञानी है इसको माफ कर देना। जब हम किसी को हृदय से क्षमा करेंगे तो हमारे अंदर आनंद पैदा होगा और आनंद का अंत परम आनंद में होता है यह हमें याद रखना चाहिये।

स्वामी जी के पुष्कर आश्रम का नाम सन्यास आश्रम था। सन्यास आश्रम के बगल में ही निर्मल आश्रम था और पीछे की तरफ उदासीन आश्रम था। पुष्कर तो वैसे ही तीर्थधाम है। अनेक जन्मों के संचित पाप भी पुष्कर राज में आने से ही छू मंतर हो जाते हैं। पुष्कर के ब्रह्म सरोवर पर अनेक घाट हैं। वहां पर ब्रह्मा जी का मंदिर है जो भारत में और कहीं नहीं है। सन्यास आश्रम और निर्मल आश्रम मुख्य सड़क से अंदर की तरफ थे और उनके लिये कोई रास्ता भी न था।

चारों तरफ रेत ही रेत थी जिस कारण दोनों आश्रमों को बहुत तकलीफ होती थी। स्वामी जी के अनुयायी घुमणसिंह जी और सेवाराम जी को स्वामीजी ने अपनी समस्या बताई तो उन लोगों ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारी के पास जाकर अनुरोध किया कि वहां पर एक 10 फुट चौड़ा रास्ता बनवा देंगें तो दोनों आश्रम वासियों को सुविधा हो जायेगी एवं आपको संतो का आशीर्वाद प्राप्त होगा। उन्होंने कहा देखेंगे। दो–चार बार उनको याद दिलाया गया मगर हर बार वो टाल जाते। निराश होकर संतजी स्वयं चलकर उस कार्यालय में गये, उच्च अधिकारी से अनुरोध किया, समस्या बताई हर बार की तरह उत्तर वही था, देखेंगे। स्वामी जी को अच्छा नहीं लगा। मगर क्या करते। पुष्कर वापस आये, आकर उन्होंने आनन्द आश्रम में, जहां वे सिखों के गुरुद्वारे में शुरू में एक महीने रहे थे, अपने जानने वाले वहाँ के संरक्षक श्यामसिंह के नाम से मनीआर्डर से पैसे भेजे कि वे पाठकर अरदास करें कि सन्यास आश्रम और निर्मल आश्रम के सामने रोड बने। श्यामसिंह जी की गुरुवाणी में अटूट आस्था थी। वे काफी वृद्ध अवस्था में थे मगर छोटी से छोटी सेवा करने में कभी संकोच नहीं करते थे। सेवा ओर सिमरण दो ऐसे चरण हैं जो हमारी जीवन नैया को भवसागर से पार करा सकने की सामर्थ्य रखते हैं। वैसे भी जब कोई उनसे पूछता था कि आप गुरुग्रंथ साहब को क्या मानते हो तो वे कहते थे साक्षात गुरुनानकदेव जी हैं। ऐसे तो सभी श्रद्धालु कहते है कि –

गुरु ग्रंथ जी मानयो प्रगट गुरां की देह

मगर बाबा श्याम सिंह कहते थे देह में ऐसा कौनसा स्थान है जो निरंतर कार्य करता है, सोते जागते उठते बैठते वह काम करता रहता है तो कहते थे वह हमारा हृदय है जिस समय वह काम करना बंद कर देता है तो हमारी सांसें थम जाती हैं। ठीक उसी तरह गुरुग्रंथ साहब गुरां की देह नहीं गुरां का हृदय है। जो हमेशा जगा रहता है। अतः जब भी हम सच्चे भाव से गुरुवाणी पढ़ते हैं, अरदास करते हैं, और वचन साहिब पढ़ते हैं, और वचन साहिब ने यदि किसी कार्य को पूर्ण होने का संकेत दिया है तो ऐसा नहीं हो सकता कि वह कार्य न हो। कार्य अवश्य होगा। वचन साहिब गुरुग्रंथ में से निकाला जाता है। जब हमें कोई शुभ कार्य शुरू करना होता है तो पहले गुरु ग्रंथ साहब के सामने खड़े होकर अरदास (प्रार्थना) करते हैं कि गुरुजी हम यह कार्य शुरू करना चाहते हैं आप हमारा मार्गदर्शन कीजिये, और हमारी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए हमें मार्गदर्शन दें। तब गुरुग्रंथ साहब का जो पृष्ठ खुला हुआ हो उसके आगे के कुछ पेजों को पलटते हैं, और जो पेज सामने आता है उसके दायें पेज के अंतिम श्लोक से शुरू करते हैं, वह श्लोक सामान्यतः बायें पेज पर या दायें पेज के अंतिम शब्द पर पूरा हो जाता है। यह श्लोक जो हमने पढ़ा वह ही वचन साहिब कहलाता है। यदि वह सकारात्मक है तो कार्य की सफलता निश्चित है और यदि वह नकारात्मक है तो उस कार्य की गति धीमी अथवा संदिग्ध होती है। इस वचन साहब को गुरु का फरमान कहते हैं।

तो बात हो रही थी कि स्वामीजी ने आनंद कुटिया में रोड बनाने के लिये अरदास

करने को कहा था। वहां पर अरदास की गई और गुरुग्रंथ साहब का वचन साहिब स्वामी जी के पास भिजवाया। स्वामीजी ने वह वचन साहब पढ़ा और कहा कि वचन साहब बहुत अच्छा आया है, अब रोड जरूर बनेगा। उसके कुछ दिनों बाद ही लोकनिर्माण के अफसर पुष्कर आये। सन्यास आश्रम से स्वामीजी उस समय नित्य कर्म के लिये निकले थे, तो वे अधिकारी से बोले – मैं निर्मल आश्रम होकर आता हूं, अब स्वामीजी बोले मैं तो घूमने जा रहा हूं। अधिकारी अचंभे में आ गया कि स्वामीजी रोड बनवाने के लिये अनुनय–विनय करने मेरे पास आये थे, मैने उनकी बात सुनी नहीं थी और जब मैं आया हूं तो वे बेफिक्र होकर 'घूमने जा रहा हूं' कहकर चले गये। किशनलाल मोटवानी जो कभी स्वामी जी से मिले ही नहीं थे उनको जब स्वामीजी की रोड की इच्छा के बारे में पता चला तो रोड 10 फुट के बजाय 20 फुट चौड़ी बनाई गई। गुरुग्रंथ साहब के फरमान में बार–बार आता है

हउ मैं तजो, नाम जपो

अर्थात् अहंकार से दूर रहें और नाम का जाप करते रहें। मगर हमारा अहंकार, हमारे द्वारा नाम को विसारना, हमें दुःख देता है। आखिर हम किस बात का अहंकार करते हैं। हमारा है ही क्या, यह शरीर हमें दूसरों ने दिया, हमें दूसरों ने सहारा देकर बड़ा किया, हमें जो भी माल पदार्थ मिले है वे हमारे पूर्व जन्मों के किये गये सत्कर्मों का प्रतिफल है और फिर अंत समय में हमें चार कंधे भी दूसरों के मिलेंगे तब हम अपनी अंतिम यात्रा पूरी कर पायेंगे। प्रभू का स्मरण ही हमारे इस लोक को सुधारेगा और परलोक को भी सुधारेगा।

स्वामीजी एक बार पुष्कर के अपने सन्यास आश्रम में एक भजन गा रहे थे जो वे एबटाबाद से सुनकर आये थे।

गुरुनानक की महिमा कही ना जाये,
महाबली अवतार जहां तहां समाय।

स्वामी जी ऊंची आवाज़ में गा रहे थे तभी वहां से एक संत जो उदासीन आश्रम में आये हुए थे और राम भक्त थे उनको स्वामी जी का गुरुनानक जी को महाबली अवतार कहना पसंद नहीं आया। वे सन्यास आश्रम में आये स्वामीजी ने उनको बैठने को आसन दिया, उनका सत्कार किया तब उस संत ने स्वामी जी को अपने आने का आशय बताया और कहा आप मर्यादा पुरूषोतम राम, गौपाल गीता के ज्ञान के सेवक, कृष्ण को छोड़कर गुरुनानक जी को, जो कलयुग में 500 वर्ष पूर्व आये हैं, महाबली अवतार कह रहे हैं। त्रेतायुग के राम, द्वापर के कृष्ण तो साक्षात अवतारी पुरूष थे मुझे अच्छा नहीं लगा? तब स्वामी जी ने उनको कहा आप बताइये त्रेता में राम हुये वे क्या कभी सुख से बैठे? राजगदी मिलने वाली थी बनवास मिला, माता सीता का हरण हो गया जिस कारण उन्हें लंकेश से लड़ाई करनी पड़ी, नदी पार करने के लिये केवट का सहारा लेना पड़ा, पुल बनाने के लिये नल–नील हनुमान का सहारा लेना पड़ा, बाली से युद्ध कर छल–कपट से मारा, चौदह वर्ष बनवास काटने के बाद जब अयोध्या आये तो सीता को त्यागना पड़ा सिर्फ अशांति में जिये। हम उन्हें मर्यादा पुरूषोत्म मानते है। उन्होंने अपने माता पिता की सेवा की, रावण के अंत समय में लक्ष्मण को उनसे ज्ञान लेने के लिये कहा, मगर रहे तो अंत तक अशांत ही ना। अब बात करें कृष्ण की उनका जन्म हुआ कारागर में, उनका लालन–पालन किया बाबा नंद और माता यशोदा ने, उनका मामा कंस उनके खून का प्यासा रहा। उन्होंने अपने मामा का वध किया, उन्होंने सारथी बनकर अर्जुन का रथ चलाया, महाभारत के युद्ध के लिये अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, राधा से प्रेम किया,

रूकमणी से विवाह किया, वृंदावन में गोकुल में गायों को चराया, गोवर्धन को अपनी उंगली पर उठाया, और कभी मथुरा, कभी वृंदावन, कभी द्वारका में रहे। अशांत ही अशांत। समय–समय पर विष्णु जी अवतार लेते रहते हैं। राम कृष्ण उन्हीं के अवतरित रूप हैं। उन्हें राम और कृष्ण के रूप में अशांति ही अशांति मिली। उन्हें लगा अब मुझे अवतार लेना है वह भी संतुष्ट, शांतचित रूप में। तो उन्होने गुरु नानक के रूप में अवतरण लिया।

देहरादून में स्वामीजी के सेवक सुन्दरदास जी रहते थे। अत्यन्त निर्धन परिवार से थे। वे एक बार स्वामी जी के पास आये और उनसे विनती की कि स्वामी जी बहुत गरीब हूं, कुछ करो जिससे मैं गरीबी से बाहर निकल सकूं। स्वामीजी ने उनको कहा घर पर जाओ और जाकर सुखमनी साहिब का संपत पाठ करो सुखमनी गुरबाणी का महत्वपूर्ण भाग है। जैसा नाम है सुखमनी वैसा ही इसका सार्थक काम है।

सुखमनी अर्थात् सुखों को देने वाली मणी।

सुखमनी के दो तरह के पाठ होते है। संपत पाठ। साधारण पाठ डेढ़ घण्टे का और संपत पाठ 5 घंटे का होता है। संपत पाठ में संपत पद को हर पद के बाद दोहराते है।

सुंदरदास जी ने स्वामीजी के वचनों का अक्षरशः पालन किया और घर में संपत पाठ करने लगा। विधि विधान के साथ। जैसे–जैसे वह पाठ करता रहा वैसे ही वैसे वह आर्थिक दृष्टि से संपन्न होता गया। एक वर्ष में ही उसके परिवार का कायाकल्प हो गया। गरीब सुन्दरदास संपन्न हो गया। वह पुष्कर आया। स्वामीजी उस समय पूजा के लिये अगरबत्ती जला रहे थे और वह आखिरी अगरबत्ती थी। उन्होंने सुन्दरदास को बोला अच्छे टाइम पर आये हो अगरबती खत्म हो गई है यह आखिरी थी, जाओ लेकर आओ। सुन्दरदास जी के मन में आया आज संतजी लालची हो गये हैं, वह बाजार गया और सस्ती वाली अगरबत्ती ले आया। संतजी ने वह अगरबत्ती देखी और उनको आनन्द की अनुभूति नहीं हुई। वे सोचने लगे यह इतना समर्थ आदमी है और अगरबती लाया भी तो उत्तम क्वालिटी की नहीं। स्वामीजी ने जब पूजा खत्म की तो स्वामीजी से रहा नहीं गया। स्वामीजी ने उसे कहा आज से तुम्हारी अवनति शुरू हो रही है। तुम्हें यह लगा कि स्वामी जी मांग रहे हैं, मैं तो तुम्हारी उन्नति के द्वार खोलने वाला रास्ता बता रहा था, और तुमने वह रास्ता त्याग दिया। सुन्दरदास जी को अपनी ग़लती का अहसास हुआ मगर तीर कमान से निकल चुका था। स्वामीजी के वचन झूठ कैसे हो सकते थे। एक वर्ष के अन्दर ही सुन्दरदास अवनति के गर्त में डूबता गया और अपनी पूर्व स्थिति में पहुंच गया।

स्वामीजी श्लोक महला नवां के श्लोक
तीरथ, बरत अरु दान करि मन मैं धरै गुमान
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु

एक वर्ष बाद फिर सुन्दरदास जी आये। स्वामीजी से अपनी भूल के लिये क्षमा मांगी। इस बीच में स्वामीजी ने स्वर्गीय दादा रोचीराम सीतलानी जी को कह दिया था यदि सुन्दरदास अगरबत्ती भेजे तो मत लेना। रोचीराम जी यह बात अपने घर पर बताना भूल गये। इस बीच एक अगरबत्ती का पार्सल सुन्दरदास जी ने भेजा था, वह घर वालों ने ले लिया था। स्वामीजी ने अपने पैसों से वह पार्सल सुन्दरदासजी को वापस भेज दिया। सुन्दरदास जी ने आकर स्वामीजी जी को नमस्कार कर अपने पुराने आचरण के लिये माफी मांगी। और प्रार्थना की कि – हे दया के सागर! मुझे क्षमा करो। मैं आपके द्वारा ही

रंक से राजा बना था मगर अपनी नीच बुद्धि के वशीभूत हो गया था आप पर मैने शंका की आज फिर राजा से रंक बन गया हूं। मेरे ऊपर दया करो। आप नहीं करेंगे तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा। स्वामीजी दया के सागर थे, उन्होंने कहा मैंने तुम को जो राह दिखाई थी उसका पुनः अनुसरण करो। उन्होंने अनुसरण शुरू किया, दिन के दो–ढाई बज जाते थे। पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ करते थे, उनकी उन्नति का चक्र पुनः शुरू हो गया। एक वर्ष बीतते बीतते वे संपन्न हो गये। सचमुच में हमारे गुरुदेव ने पता नहीं कितनों का उद्धार किया था जो सच्ची श्रद्धा और भावना से उनके पास आया वह तर गया।

स्वामीजी हर सांस ग्रास गुरुबाणी के सरोवर में डूबे रहते थे। सेवादारों और जिज्ञासुओं को प्रवचन, उपदेश एवं दर्शन के लिए प्रातः एक घंटा 9 बजे से 10 बजे तक निश्चित किया गया था। वहां जो आते थे उनको दो पंक्तियों में बिठाया जाता था। एक वे थे जो स्वामी के बताये मार्ग सेवा और सिमरन की राह पर चलते थे, और दूसरी लाईन में उनको बैठाया जाता था जो दर्शन करने आते थे। उनको प्रसाद देकर कहते थे मेरे पास आये हो तो सेवा से जुड़ो मेरे दर्शन करने से कुछ नहीं होगा। सेवा करो, प्रभू का सिमरण करो, गुरुवाणी एवं धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करो, सत्कर्मो से जुड़ो, अपने अंदर के विकारों को धीरे–धीरे कम करते जाओ तो आपका आना सार्थक होगा।

सेवा ओर सिमरन से जुड़े लोगों से वे सेवा कार्यो के बारे में बात करते थे। सेवाकार्य की दिक्कतों को समझने की कोशिश करते थे। सेवाव्रतियों को वे दिशा निर्देश देते थे। उनसे कहते थे कि तुम्हारे सेवा कार्यों की यह गंगा और ज्यादा गहरी होती जाये इसमें डुबकी लगा कर लोग तर जायें।

सिंध के संत लुकमान के शिष्य थे श्याम सुन्दरजी। श्याम सुन्दरजी गुरुवाणी क्या है इसको तीन शब्दों में व्यक्त करते थे। वे बताते थे कि उनके सत्गुरु ने उनको गुरु ग्रंथ साहिब को तीन शब्दों में समझाया है। वे तीन शब्द है पूज्य सतगुरु, सच अर्दन, छोड़ सगल विकार। सतगुरु को पूज्य माने। जो सदगुरु होते हैं उनका कहना तो प्रभू भी नहीं टाल सकते एक बार नारदजी विष्णु भगवान के पास गये उनसे विनती भी कि अमुक व्यक्ति पर कुछ कृपा करें यह निःसंतान है इसे संतान सुख प्रदान करें। विष्णु भगवान बोले इसके भाग्य में संतान सुख है ही नहीं। यह नहीं हो सकता। नारद जी निराश होकर लौटे। मगर कुछ समय पश्चात नारदजी उस सेवक के पास गये तो उसके घर में चार बच्चे खेल रहे थे। वह देखते रह गये यह कैसे संभव है। वे पुनः विष्णुजी के पास पहुंचे और उनसे कहा आपने तो कहा था उसे संतान सुख नहीं है तो फिर उसके घर में चार बालक कैसे उत्पन्न हुए। विष्णु भगवान ने नारद जी को कराहते हुए कहा नारद मेरे पेट में बहुत दर्द हो रहा है यह तभी उतरेगा जब मुझे एक प्याला मानव रक्त मिल जायेगा और मैं उसे पियूंगा। जाओ लेकर आओ नारदजी कटोरा लेकर रक्त ढूंढ़ने निकले। रास्ते में उनको एक साधु मिला नारद को देखकर बोला हे ऋषिवर आप कुछ परेशान दिख रहे है? नारद ने उनको विष्णु की बात बताई। साधु बोला बस इतनी सी बात लाओ कटोरा। नारद ने उनको कटोरा दिया। साधू ने अपने शरीर को चाकू से गोदा और बगैर किसी पीड़ा का प्रदर्शन किये कटोरा रक्त से भर दिया। नारद जी वह कटोरा लेकर विष्णु जी के पास गये तो उन्होंने बताया यही साधु है जिसने उस व्यक्ति को चार पुत्र का वर दिया था, भला उसका कहा व्यर्थ कैसे जा सकता था। साधु ने तुमसे यह भी कहा था विष्णु के लिये जो भी मेरा अंग चाहिये आँखें, कान, जिह्वा सब मैं तुम्हें दे दूंगा। नारद मेरे दर्द को देखकर यह कार्य तुम भी कर सकते थे मगर तुमने नहीं किया क्यों कि तुम्हारी श्रद्धा मेरे

में क्षीण है। मगर उस साधु की पूर्ण है। सचमुच में सत्गुरु विरले ही होते हैं।

स्वामीजी यायावर वृत्ति के थे। वे अपने भक्तों के कल्याण एवं मार्गदर्शन हेतु यात्राएं करते रहते थे। मुख्य कारण था उनके अन्दर सेवा एवं सिमरण का भाव। पहले वे सिमरण में ही रहते थे मगर जब से वे सेवामार्ग से जुड़े तो उनकी सेवा और सिमरण को जीवन का ध्येय मिल गया। वे अपने अनुयाइयों को कहते थे मनुष्य जन्म मिला है यदि मोक्ष को प्राप्त करना है तो सेवा और सिमरण को अपने जीवन के मूलमंत्र बना लो। इससे तुम इस लोक में तो जो चाहते हो वे सब आपको मिलेगा और अंत में परलोक भी सुधरेगा। प्रभू के चरणों में आपका वास होगा। आप मोक्ष गति को प्राप्त कर 84 लाख योनियों में भटकने से बच जायेंगे।

एक बार स्वामीजी जबलपुर (म.प्र.) की यात्रा पर थे, वे वहां के प्रसिद्ध डाक्टर असरानी के निवास पर रुके थे। उन दिनों वहां नेत्र शिविर लगा कर मरीजों का वहां के शासकीय अस्पताल में आप्रेशन कराया जाता था। क्रम चल रहा था उन्होंने डॉ. असरानी को कहा यहां पर भी नेत्र चिकिसालय बन जाये। जहां पर आपरेशन, भर्ती इत्यादि की सुविधा हो तो कितना अच्छा हो। मगर उसके लिये 2 एकड़ जमीन की आवश्यकता है। डॉ. असरानी ने स्वामीजी से कहा स्वामीजी मेरे पास जबलपुर के हर हिस्से में जमीन है आप देखलो जो आपको पसन्द आये वो मैं दे दूंगा। स्वामीजी उसकी दानवीरता पर बहुत प्रसन्न हुये। डॉ. असरानी ने उनको जमीन दिखाई। स्वामीजी को ग्वारीघाट के पास की जमीन पसंद आई क्यो कि वह हाईवे से लगी हुई थी। एप्रोच रोड भी था। डॉ. असरानी ने स्वामीजी को कहा यह जमीन में आपके नाम रजिस्टर्ड करवा देता हूं। स्वामीजी तो मोह माया से परे इन्सान थे। यह जमीन उनको अपने लिये नहीं नेत्र चिकित्सालय के लिये जरूरत थी तो स्वामीजी ने उनको कहा एक ट्रस्ट बनालो, जिसमें आपके जबलपुर के गणमान्य व्यक्तियों को भी सम्मिलित करो। उन्होंने परसराम पुरसवानी, एवं सेठ लख्मीचंद के नाम उनको सुझाये। स्वामीजी ने कहा ट्रस्ट के लिये अपना पहला अंश रूपये 1100 एक हजार एक सौ देता हूं। ट्रस्ट की योजना बनी ट्रस्ट का नाम नेत्र दान तीर्थ शिविर रखा गया। जब डॉ. असरानी ने दो एकड़ जमीन नेत्र शिविर के लिये दान में दी तो वहां पर एक हाल और कुछ कमरों का निर्माण कराया गया। साथ में योगा सेन्टर बना एक कमरे में प्राकृतिक चिकित्सालय खोला गया। जिसे MPEB में कार्यरत डॉ. साहू ने अपनी निःशुल्क सेवाये दे कर संचालन करना शुरू कर दिया मगर बाद में उनका जबलपुर से स्थानान्तरण हो गया। जिस कारण वह केन्द्र बंद हो गया। मगर अब भी जबलपुर में हर माह नेत्र शिविर लगता है। और वर्ष में एक बार मेगा शिविर का आयोजन किया जाता है। जबलपुर में ही रोजाना दीन बंधुओं के लिये नाश्ते की व्यवस्था रहती है। जितने आ जायें उनको दोने में नाश्ता दिया जाता है। संख्या चाहे कितनी भी आ आए किसी को वापस नहीं किया जाता यह बात वहां के युवा कार्यकर्ता ने स्वामीजी को बताई तो स्वामीजी ने कहा यह व्यवस्था मैं देखना चाहूंगा। वे सबेरे नाश्ता स्थल पर गये ओर उन्होंने दूसरों की तरह ही दोने में नाश्ता किया और औरों की तरह ही खड़े–खड़े नाश्ता किया। इतनी विनम्रता थी हमारे गुरुदेव में। जब डॉ. असरानी ने दो एकड़ जमीन नेत्रदान तीर्थ शिविर के लिये सौंप दी तो वहीं के मॉडर्न ब्रेड के निर्माता श्री टेकचंद जी ने स्वामी जी को घर पर खाने के लिए निमंत्रित किया। स्वामीजी ने कहा खाना मैं जरूर खाऊंगा मगर मुझे नेत्रदान तीर्थ शिविर पर भवन निर्माण के लिये मकान के लिए रूपये की जरूरत है जो एक लाख देगा में उसी के घर भोजन करूंगा। तो श्री टेकचंदजी के

सुपुत्र गोपालदास ने कहा स्वामीजी हम 1 लाख नहीं सवा लाख देंगे आप हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिये। स्वामीजी ने उनके घर में भोजन किया और उन्होंने स्वामीजी को एक लाख पचास हजार रूपये दिये। हमारे स्वामीजी तो नम्रता की मूर्ति थे। वे बोलते थे झुकने में, अपने आपको कम समझने में ही आनन्द है। कुछ लोग फर्श पर सोने से ही मीठी नींद में सो जाते है और महलों में रहने वालों को तो फोम के गद्दों पर भी नींद नहीं आती। जबलपुर के कार्यकर्ताओं में परसराम जी पुरसवानी, अर्जुनदास जी पुरसवानी जुझारू रूप से समाज सेवा में लगे रहते है। मेगा शिविर में श्री कन्हैयालाल टेवाणी, कन्हैयालाल रंगवानी, स्व. किशोर पमनानी निश्चित रूप से वहां जाते हैं।

पवनार आश्रम में स्वामीजी इन्दौर के श्री पूरन खटवानीजी जो कि श्री विनोबा भावे जी के साधक थे के माध्यम से पवनार जाने का कार्यक्रम तय हुआ स्वामीजी के साथ श्री आइलदास हेमनानी एवं कन्हैयालाल रंगवानी गये। पवनार आश्रम में एक कमरा था जो प्रतिष्ठित लोगों के रहने के लिये बनवाया गया था। उसी आश्रम में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी, जयप्रकाश नारायण जैसे लोगों के रहने की व्यवस्था होती थी। उसी में स्वामीजी के रहने की व्यवस्था की गई, सभी सुविधायें वहां पर थी मगर सादगी पूर्ण रूप से की गई थी दिखावा बिलकुल नहीं था। पवनार आश्रम में जो भी लोग रहते थे वे स्वयं कर्मशील होते थे। वे खेतों में काम करते, अनाज, सब्जियां उगाते, कोई वृद्ध होता था तो वो भी प्रिंटिंग प्रेस के काम में हाथ बंटाता था। कोई भी जीवन यापन के लिये दान के पैसों का उपयोग नहीं करता था। आचार्य जी रात्रि को 7 बजे ही सोने के लिये जाते थे और प्रार्थना में लीन हो जाते थे। हर आधा घंटे की प्रार्थना के बाद वे प्रभू के चरणों में अपना शीश नवाते थे यह क्रम नींद आने तक चलता रहता था। फिरे वे सबेरे अमृतवेले में उठ जाते थे। जिस दिन पवनार पहुंचे उस दिन तो आचार्यजी से मुलाकात नहीं हो सकी स्वामी जी तीन दिन का कार्यक्रम पहले ही निश्चित करके गये थे अगले दिन जब आचार्य जी से उनके मुलाकात का समय तय हुआ, स्वामीजी पहुंचे आर्चायजी ने उनको तख्त पर बैठने को कहा, स्वामीजी के साथ उनके अनुयायी भी थे, वेसे भी लोग अनुयायी सेवादारों के सामने घमंड से भर जाते हैं देखें मेरा कितना सम्मान है। मगर स्वामीजी ने विनम्रता दिखाते हुए आचार्य जी से कहा, तख्त तो मेरे पास भी है, आपके चरणों में बैठने का सौभाग्य मैं कैसे छोड़ सकता हूं और स्वामीजी आचार्य के चरणों में बैठ गये। दो सन्यासी आपस में वार्तालाप में लीन हो गए। पूरन खटवानी जी ने आचार्यजी को स्वामीजी का परिचय देते हुए बताया था कि स्वामीजी अनेक सेवा कार्यों का संचालन करते है। आचार्यजी ने कहा सेवा वही कामयाब होती है, जिसमें किसी प्रतिफल की आशा न हो।

सेवा परमोधर्मः मान कर सेवा करनी चाहिये, सेवा के बदले पैसे, यश, मान सम्मान की भावना आ गई तो वह सेवा नहीं दिखावा होता है। सेवा करके बार–बार उसका प्रचार–प्रसार करना अपने साथियों को जताना ठीक नहीं होता। सेवा के पीछे पुण्य कर्मो के लिए भी स्वर्ग की कामना भी मन में आ जाये तो, वह सेवा प्रभू के दर पर अंगीकार नहीं होती। सेवा कैसी भी हो तन की, मन की, धन की हो या मधुरवाणी की दो मीठे बोल भी यदि किसी को बोल दिये तो वह भी सेवा ही है। हमारे मीठे सांत्वना के दो बोलों से किसी का दुःख दूर हो जाये वो भी सेवा है। सेवा भी उनको ही नसीब होती है जिसके प्रारब्ध में लिखा होता है। यह पूर्व जन्मों के संस्कारों से मिलती है। सेवा करते ही शिष्य भी एक दिन गुरु बन सकता है। सेवा ही मार्ग है। जिस पर संस्कार प्राप्त होते हैं। सेवा करते हुए कुछ बातें सुनते हैं। सुनी हुई बातों को मनन करना, मनन करने के बाद उनको अपने

जीवन में आत्मसात करते हुए उतारना ही, हमें महापुरूषों की श्रेणी में ला सकता है। महापुरूष भी तो इन्सान होते हैं। इन्सान ही देवत्व को प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता है। देवता कोई आकाश से थोड़े ही उतरते हैं, हमारे कर्म ही हमें देवता बना सकते हैं। और हमें राक्षस भी बना सकते हैं। इसलिये अपने किये हुए कर्म पर हमें पैनी नज़र रखनी चाहिये। ऐसा कोई भी कर्म नहीं करना चाहिये जो हमें शर्मिंदगी से भर दे। पवनार आश्रम में ही दो सिंधी बहनें भी रहती थीं मीरा बेन और पदमा बेन वे कालान्तर में स्वामीजी से मिलने सेवा संकल्प धाम भी आई। कभी–कभी सेवा में ग़लती होने पर कोई नाराज होता है तो हमें चुप होकर सुनना चाहिये हम भी यदि उनसे बहस करेंगें तो द्वेष बढ़ेगा और यदि हम अपनी गलती मान लेते हैं तो सामने वाले को भी खुशी होगी और गुस्सा उतरने पर वही व्यक्ति हमसे प्रेम पूर्वक व्यवहार करता है। जहां हमारी सेवा की जय जयकार होती है तो वह सेवा निष्फल हो जाती है। सेवा हम नहीं करते हमसे वह ऊपर वाला, जो हमारे अन्तर्मन में बैठा हुआ है, कराता है। दीवान करमचंद सिंध में मुख्तियार के पद पर शासकीय सेवा में थे। यह बात आज़ादी के पूर्व की है। मुख़्तियार का ओहदा बहुत बड़ा माना जाता था। कलेक्टर के बाद मुख़्तियार का ही पद होता था। मगर दीवन करमचंद में अपने पद का कोई भी भाव नहीं था। संत चांडूराम जी उनसे मिलने गये तो उन्होंने उनके लिये उचित बैठने की व्यवस्था की और स्वयं बगैर किसी बिछावन के जमीन पर ही बैठ गये। वे भगत कंवरराम की वर्सी प्रोग्राम में जाते थे एवं साधारण साधक की तरह सेवा करते थे। हमारा अहंकार हमारी सेवा का प्रतिफल खा जाता है। सेवा करना है तो हमें अपने आपको भूलकर, मैं क्या हूं, न सोचते हुए, सेवक बनकर सेवा करने का आनन्द ही कुछ और ही होता है। हैदराबाद में स्वामीजी के अनुयायी जैसा राम भाग्या जो बहुत बड़े उद्योगपति थे। उनका घर 2 एकड़ के फार्म हाऊस में बना हुआ था। उस फार्म हाऊस पर प्रति दिन 1000 कबूतरों का डेरा था, पशु पक्षियों के प्रेमी थे। उनको उनके द्वारा रखे गये सेवकों द्वारा दाना पानी दिया जाता था। वे दीनदुखियों के प्रति पालक थे। स्वामीजी में उनकी अटूट श्रद्धा थी वे यदाकदा स्वामीजी को हैदराबाद आने का निमंत्रण देते थे। स्वामीजी के स्वीकार करने पर वे स्वामीजी और सिद्धभाऊ के लिये हवाई यात्रा की बिजनेस क्लास की टिकटें बुक कर देते थे। स्वामीजी उनको कहते थे बिजनेस क्लास की नहीं, एकोनोमी क्लास की टिकट भेजो, मगर वो कहते थे हम बिजनेस क्लास में सफर करते है तो हमारे गुरुजी क्यों नहीं? इतनी अटूट श्रद्धा थी उनकी स्वामीजी में वे बहुत बड़े उद्योगपति थे, उनके उत्पाद सिर्फ भारत में ही नहीं विदेशों तक में निर्यात किये जाते थे।

एक बार स्वामीजी जब उनके यहां हैदराबाद गये तो उनसे पूछा यहां पर रामकृष्ण परमहंस जी का कोई आश्रम है? उन्होंने बताया हां स्वामीजी बहुत बड़ा आश्रम है उनका एक चिकित्सालय भी है। स्वामीजी ने वह देखने की इच्छा जताई। वहां पर जब वे पहुंचे तो पता पड़ा कि रामकृष्ण परमहंसजी के 4 सेवक हैं जो आजकल रामकृष्ण परमहंसजी के सारे कार्यों को देश विदेश में निर्देशित करते हैं। उनमें से एक यहां पर हैं। रामकृष्ण परमहंस आश्रम में वैसे तो समय लेकर जाना पड़ता है चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो बड़ी मुश्किल से 3–4 दिन बाद का ही टाइम मिलता है, वह भी 5–10 मिनट, चाहे मंत्री हो, मुख्यमंत्री या फिर संतरी हो। मगर जब स्वामीजी के लिये वहां पर समय मांगा गया तो तुरन्त समय मिल गया, बोले सन्यासियों, सेवकों के लिये हमारे स्वागत द्वार सदा खुले रहते हैं। स्वामीजी जब अस्पताल पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वहां

पर पुरूष ही नर्स का काम संभाल रहे थे। वहां पर उनको तीन तरह के वेसधारी दिखे। श्वेत धवल पोशाक में, पीत वस्त्र धारी और गेरूआ वस्त्र धारी। वे बड़े ही तन्मयता से मरीजो की सेवा कर रहे थे यहां तक कि उनका मलमूत्र भी वे साफ कर रहे थे। बहुत तेज था उनके चेहरों पर।

स्वामी जी ने किसी से पूछा ये तीन तरह की अलग–अलग पोशाकों के सेवा व्रती क्यों हैं? तब उन्हें बताया गया ये धवल वस्त्र धारी नये नये सेवा से जुड़े हैं, ये सेवा करना सीख रहे हैं, इनको दो–तीन साल तक इसी तरह सेवा करना है। जब इनकी सेवा भावना परिपक्व हो जायेगी, इनकी कार्य शैली से संतुष्ट दिखेंगे तब इनका ड्रेस कोड धवल से पीत वस्त्रों में बदल दिया जायेगा।

पीतवस्त्र धारी अपना प्रथम सोपान पूर्ण कर धवल वस्त्र सेवा धारी से बने हैं। उनकी सेवा निष्ठा अब मध्य श्रेणी तक पहुंच गई है। इसे हम बाल्य अवस्था के बाद की युवा अवस्था का ड्रेस कोड मानते हैं ये युवा अवस्था में ही वान प्रस्थ आश्रम में आ गये है। यहां इनको फिर सेवा के नये सोपान गढ़ने पड़ते हैं। सेवा का प्रतिफल होता है और ज्यादा सेवा वे पहले छोटी–छोटी सेवायें करते थे, उनको उस समय सेवा का क–ख–ग भी नहीं आता था मगर आज वे क–ख–ग से आगे बढ़कर सा–रे–गा–मा–पा के आनंद सरोवर में डूबे रहते हैं। यहां पर भी उनको अपनी आस्था एवं निष्ठा का प्रदर्शन करना होता है। जब वे आस्था एवं निष्ठा के सोपान पर खरे उतरेंगें तब इनका प्रमोशन पीत वस्त्र धारी से गेरूए वस्त्र धारी, सन्यासी वर्ग में किया जाता है।

गेरूआ वस्त्र धारी तपे हुए खरे सोने की तरह होते हैं, जिनको जहां से भी परखना हो वहां से वे 100 प्रतिशत खरा सोना ही निकलेंगे। गेरूए वस्त्र तो वही आदमी पहन सकता है जिसकी सांसारिक इच्छायें, आवश्यकताएं नहीं होतीं। इसके लिए मान–अपमान समान होता है सन्यासी बनने पर मनसा, वाचा, कर्मणा एक जैसा होना पड़ता है। दूसरे का दुःख उसका अपना होता है। सन्यासी लेने में नहीं, देने में विश्वास करता है।

स्वामीजी को वहां की व्यवस्थायें और सेवा भाव देख कर आनन्द की अनुभूति हुई। जब स्वामी जी भोपाल आये तो भोपाल के महाराणा प्रताप नगर में स्थिति रामकृष्ण परमहंस आश्रम में नेत्र चिकित्सालय बनाने की इच्छा बताई स्वामीजी अपने कुछ अनुयाइयों के साथ वहां गये अपनी इच्छा बताई और वहां पर स्वामी विवेकानन्द नेत्र चिकित्सालय बनाने की रूपरेखा बनाई। उसी दिन वहां पर साढ़े तेरह लाख रूपये दान के रूप में प्राप्त हुए। स्वामीजी ने आश्रम वालों को वे पैसे दिये और कहा बाकी आप अपने साधनों से एकत्र कर यहां पर इस पुनीत कार्य की नींव रखें। मगर वे लोग अतिरिक्त धन की व्यवस्था नहीं कर पाये। वहां पर चिकित्सालय तो बना मगर नेत्र चिकित्सालय नहीं बन सका वह पाली चिकित्सालय के रूप में आज भी काम कर रहा है। सबेरे शाम डॉक्टर निःशुल्क सेवायें देते हैं।

श्री भाग्याजी समय–समय पर अपने घर पर गुरुग्रंथ साहिब का अखण्ड पाठ करवाते थे। वहां पर दर्वेश शीतल सिंह जी और दर्वेश थांवरदास जी पाठी के रूप में जाते थे। संतों के साथ जब तक संतजी वहां पर रहते थे घर में पूर्ण मर्यादित खान–पान की व्यवस्था रहती थी। भाग्याजी के तीन बच्चे भी मर्यादित भोजन एवं रहन–सहन में रहते थे। नानक भाग्या, हीरू भाग्या और ईशू भाग्या उनकी तीन संताने थीं। नौजवान थे होटलों वगैरह में भी जाते रहते थे मगर जब तक संतजी वहां रहते थे, वे सब से अपने आपको

विरक्त कर लेते थे। भाग्याजी स्वयं गुरुग्रंथ साहब के सामने खड़े होकर चंवर (एक विशेष प्रकार का बालों से बना चांदी से मढ़ा पंखा) झलते रहते थे। यह सेवाभावना भाग्यशाली लोगों को प्राप्त होती है। ग्रंथ साहिब के पाठ में यह सेवा हर श्रोता पाना चाहता है। भाग्या साहिब की धर्मपत्नी लख्मीचंद की चचेरी बहन थी। बहुत ही शालीन, गुणवान, मर्यादित जीवन जीने वाली स्त्री थीं। पाक कला में भी निपुण थीं। सबसे बड़ी बात यह है कि जो भोजन श्रद्धा से परोसा जाता है वह अमृत बन जाता है बगैर श्रद्धा से परोसा गया छप्पन भोग भी विष के समान लगता है।

ऐसे ही एक समय जब अखण्ड पाठ के लिये दर्वेश शीतलसिंह और दर्वेश थांवरदास जी हैदराबाद में भाग्या परिवार में थे उनके मन में अचानक विचार आया कि हमें कभी हवाई यात्रा का मौका नहीं मिला है, काश मिल पाता। हमारे स्वामी जी ने उनसे जाकर पूछा कि 'क्या तुम्हारा मन भी हवाई जहाज से यात्रा करने का हो रहा है'। तुरंत वो बोले 'आप तो अंतरमन की बात जानलेते हैं। हां, मन तो हमारा भी हो रहा है' तब स्वामीजी ने भाग्याजी को कहा इन दोनों पाठियों का मन हवाई यात्रा करने का हो रहा है। भाग्या जी ने तुरन्त उन दोनों की भी हवाई टिकट की व्यवस्था कर दी, ऐसी श्रद्धा थी उनकी हमारे गुरुदेव पर।

उनको अपनी संपति का जरा भी अहंकार नहीं था। सादा जीवन उच्च विचार उनके रग–रग में समाये हुये थे। अहंकार किस बात का करें, हमारा शरीर गंदगी से भरा पड़ा है। खाली हाथ आये थे, खाली हाथ जायेंगे। श्वास जो अंदर जा रही है बाहर आई तो जीवित नहीं आई, तो मांस का लोथड़ा। गुरुनानकजी ने एक बार मर्दाने से पूछा मौत कितनी दूरी पर है। किसी ने कुछ, किसी ने कुछ कहा तब गुरुनानक जी बोले हमारी मौत हमसे आधा श्वास की दूरी पर है। श्वास बाहर नहीं आई तो जीवन समाप्त। जितने भी संत लोग होते हैं वे अपने अनुयाइयों को सेवा से जोड़ते हैं। सेवा करते करते उनका मन आसक्ति से दूर होकर पवित्र होता जाता है। तब ही वे लोग सेवा से सही मायने में जुड़ जाते है।

हम संतों से जुड़े हैं तो अहंकार रहित होकर होठों से नहीं ह्रदय की अंतरतम गहराइयों से हर कार्य से जुड़ें। चाहे वह प्रार्थना हो, सेवा हो, शास्त्रों का अध्ययन हो, भजन गाना हो, जब हम कोई प्रार्थना गीत ह्रदय की गहराइयों से आँखें बंद कर उसके अर्थ को ह्रदयगम करते हुए गाते हैं तभी वह प्रभू के दर पर कबूल होता है। बाकी सब तो ढकोसला होता है, जयसिंघानीजी, विठलजी, दर्वेश शतीलसिंह जी ऐसे ही दर्वेश पुरूषों को हमने देखा है।

स्वामी लीलाशाह ट्रस्ट पालनपुर के ट्रस्टी लद्धाराम जी एवं हलद्वानी के ट्रस्टी श्री कोड़ोमल जी पुष्कर आये ओर आकर अनुरोध किया, 'हमने संत लीलाशाह का मंदिर नैनीताल में बनवाया है आपसे अनुरोध है, कि आप आकर उसका लोकार्पण करें।' यह 1994 की बात है। स्वामीजी की अवस्था 90 वर्ष से ज्यादा थी। उन्होंने उनसे कहा 'नैनीताल पहाड़ों की नगरी है, वहां पर सर्दी भी ज्यादा रहती है। इतनी दूर आकर मुझे कष्ट होगा और बीमार भी पड़ जाऊंगा।' उन्होंने फिर उनसे आग्रह किया कि 'हम वहां आपके लिए अच्छी व्यवस्था करेंगें।' तो स्वामीजी ने कहा 'संत लीलाशाह संतो में शिरोमणि थे, मैं उनका अति आदर करता हूं। मैं अवश्य नैनीताल आऊंगा।' स्वामीजी नैनीताल पहुँचे। वहां पर उनके रहने की व्यवस्था वहां के आर्यसमाज के अध्यक्ष बांकेलाल के परिवार में की गई। बांकेलाल स्वयं एवं उनका परिवार स्वतंत्रता संग्राम

सेनानियों का था। उनके दो बेटे सुबोध और अशोक जी थे। सरकारी नौकरी में थे। उनकी बहुए भी संस्कारवान एवं सेवा भाववाली थीं। वे स्वामीजी और परिवार के लिये अति उत्तम भोजन की व्यवस्था करती थी। इतनी अच्छी सेवा की कि स्वामीजी को वहां पर किसी तरह की तकलीफ महसूस नहीं हुई। उनका घर पहाड़ की थोड़ी ऊंचाई पर था। वैसे तो नैनीताल पहाड़ों की नगरी है, वहां पर मकान बहुत ऊंचाई पर होते हैं वहां के निवासी उस जीवन के आदी हो जाते है। वे मजबूत शरीर के मालिक होते हैं उनकी दिनचर्या ही पहाड़ों पर चढ़ने और उतरने की होती हैं। उनको कष्ट अनुभव ही नहीं होता बांकेलालजी के घर में एक हवन कुण्ड था, उन्होंने बताया कि यह हवन कुण्ड 150 वर्ष पुराना है। प्रतिदिन प्रातः 4 बजे उठकर नित्य प्रति हवन किया जाता है। उनका परिवार अनेक बार आजादी की लड़ाई में जेल यात्रा भी कर चुका था। स्वामीजी संत लीलाशाह आश्रम नैनीताल पहुंचे वहां पर संत लीलाशाह की तपोस्थती देखी, मुश्किल से 8X10 की कुटिया में कैसे रहते होंगे। यह तो वहां पर जो लोग गये हैं वही उन कष्टों को समझ सकते है। वहां के कार्यकर्ताओं ने बांकेलालजी की बहुत तारीफ की। तब स्वामीजी को ख्याल आया कि यहां पर नेत्र ज्योति का न होना अपने आप में अभिशाप है। टेढ़े मेढ़े रास्ते, गहरी खाईयाँ, कंपकंपाती ठंड, कठिन जैविक परिस्थितियां। जब स्वामीजी ने नेत्र शिविर की बात की तो बांकेलालजी ने कहा अच्छा विचार है, मगर हम लोगों को शिविर लगाने का अनुभव नहीं है एक बार आप यहां पर लगवा दीजिये। फिर बाद में हम लोग इसको क्रियान्वित जरूर करेंगे। स्वामीजी ने सहर्ष स्वीकार किया। वहीं पर एक मीटिंग हुई उसमें स्वामी जी के आग्रह पर दानदाताओं ने खुले हाथों से दान दिया। इतना आ गया कि एक शिविर का खर्चा आसानी से वहन हो सकता था। स्वामीजी भोपाल आये यहां से डॉक्टर्स तथा सेवादारों का एक दल वहाँ ले गये। जिसमें 20–25 लोग थे उनमें स्व. श्री रामचन्द्र हिमथानी, श्री लोकूमल आसवानी, स्व. श्री जयप्रकाश पमनानीजी थे वहां गये। उस शिविर में 100 से ज्यादा ऑप्रेशन किये गये।

नैनीताल से पुष्कर आते वक्त स्वामीजी आगरा में रूके थे आगरा में एक सुन्दरानी अस्पताल हैं वहां का कार्यभार वहीं के कार्यकर्ता जेठानन्दजी संभालते थे। वहां पर स्वामीजी के अनुयायी मेठाराम जी खिलनानी भी रहते थे। वहां स्वामीजी का परिचय एक नेत्र चिकित्सक, जो सुन्दरानी अस्पताल में इंटर्नशिप कर रहे थे, ब्रह्मऋषि शर्मा जी से हुआ। उन्होंने डॉक्टर से कहा नैनीताल में शिविर लग रहा है तो वहां पर अपनी सेवायें दो तो तुम्हारा अपना खुद का हॉस्पीटल होगा। अच्छा परिवार बनेगा आपकी आने वाली पीढ़ी उच्च संस्कारित होगी। डॉ. ब्रह्मऋषि शर्मा जी ने सहर्ष स्वीकृति दी आज उनका रायबरेली में खुद का बड़ा नेत्र चिकित्सालय है, 100 बिस्तरों का। उनका बेटा भी डॉक्टर है। जैसा स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया था वैसा ही हुआ। आज नैनीताल ही नहीं उसके आसपास अनेक आयोजन होते है। इन कैम्पों के लिये गांव--गांव जाकर मुनादी करवाई जाती है। वहां जाकर ऑप्रेशन करने लायक मरीज ढूंढे जाते हैं। उनको टेढ़े मेढ़े रास्तों से जीपों में भरकर लाया जाता है और फिर ऑप्रेशन के बाद घर तक पहुंचाया जाता है। शिविरों में श्री नारी साधवानी जी का भी गुप्तदान होता था।

आगरा से स्वामीजी जयपुर आये तो उन्हें पता चला कि जयपुर से 45 किलोमीटर दूर बस्ती इलाके के बास्को गांव और आसपास आखों के बहुत से मरीज हैं मगर गरीबी है, वहां पर शिविर लगना चाहिये। खैरथल में स्वामीजी के अनुयायी कृष्णचंद्र आहूजा रहते थे। उनसे बात हुई स्वामीजी ने बास्को में नेत्र शिविर लगाने की इच्छा जाहिर की।

उन्होंने डाक्टर कमलेश खिलनानी से मिलवाया। डॉ. कमलेश खिलरानी के पिता श्री मेठाराम खिलरानी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रह चुके थे अनेक बार वे जेल भी गये थे, अंग्रेजो की लाठियां खाईं थीं। कमलेश खिलरानी ने बताया वहां कैम्प लगाना बड़ा कठिन है। वहां तो बीहड़ जंगल है। वहां पर कोई सामान नहीं मिलेगा। सब जयपुर से मंगाना पड़ेगा। डॉक्टर, दवाईयां, पलंग, बिस्तर, सेवादारी सबकुछ। स्वामीजी ने उनसे कहा मुझे आपसे और कोई चाह नहीं है, मैं सब व्यवस्था कर लूंगा बस आप मुझे यहां से तन–मन से सेवा करने वाले सेवादार दे सकेंगे। सबने स्वीकृति दे दी। तब भोपाल से नवयुवक परिषद के अनेक अनुयायी श्री मंघाराम टहिल्यानी, श्री रमेश लालवानी, श्री पुरूषोतम पारवानी, श्री परमानन्द आसवानी, श्री गोवर्धन मंगतानी सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने वहां पर अपनी सेवायें दीं। न सिर्फ वहां पर जहां–जहां भी नेत्र शिविर लगते थे वहां पर परिषद के सेवाभावी कार्यकर्ता बड़ी लगन से जाते थे। वे सब के सब शासकीय सेवाओं में थे उसके बाद भी अपनी छुट्टियां लेकर वहां जाते थे और आनंदपूर्वक सेवा करते थे। मुझे शिक्षा के विस्तार, प्रचार–प्रसार परिषद की कोचिंग कक्षाओं के संचालन, परिषद के गोद लिये बच्चों को उत्साहित करना, जोन ऑफिसर का कर्तव्य निभाना, बच्चों से अपनत्व पूर्ण व्यवहार करना, पारिवारिक संबंध बनाना ज्यादा अच्छा लगता था इसलिये मुझे इन कैम्पों में जाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। स्वामीजी हमेशा कहते थे।

'बूढ़े, बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार, करें भावना से इनकी सेवा, पायेंगे लोक परलोक में सुख अपार।' मेरा ज्यादा फोकस बच्चों पर था वे संस्कारवान बनें, वे पढ़ लिख कर ऊंचे पदों पर पहुंचें। जिनके घर में खाने को भी नहीं है वे डॉक्टर, इंजीनियर बनें, सरकारी सेवाओं में नौकरी पायें और अपने भविष्य को सुन्दर बनायें यही मेरी कामना होती थी। और उसमें नवयुवक परिषद की पूरी टीम तन–मन–धन से सेवा करती थी। मुझे उस टीम पर गर्व था जो निःस्वार्थ भाव से शिक्षा–दान का अद्भुत कार्य करती थी।

संतनगर से 30–40 लोगों की टीम जिसमें डॉक्टर्स, सेवाव्रती स्व.रामचन्द्र हिमथानी, स्व.जयकिशन पमनानी, सिद्धभाऊजी, श्री नारी साधवानी, श्री लोकचंद आसवानी जैसे समर्पित लोगों की टीम वहां गई। उम्मीद थी कि वहां पर 500 के करीब मरीज मिलेंगे। मगर वहां तो मरीजों की संख्या बढ़ती गई। डॉक्टर लोग सोचकर आये थे एक दिन जांच, दूसरे दिन ऑपरेशन करके वापस आ जायेंगे। मगर वहां तो 641 लोगों के ऑपरेशन हुए। वहां पर प्रति दिन लगभग 12 हज़ार लोगों का भण्डारा बनता था। डॉक्टर लोग ऑपरेशन करते करते थक गये। छः दिन लगातार ऑपरेशन चलते रहे। वहां पर दवाइयों, राशन, पलंग की व्यवस्था स्वामीजी के निर्देश के अनुसार होती रही। वहां पर कोटा के स्वामीजी के अनुयायी गोबिन्द जी आये थे। स्वामीजी ने उनसे कहा 'गोबिन्द मुझे 2 लाख रूपये उधार चाहिये बाद में लौटा दूंगा' तो गोबिन्द जी ने अपने जयपुर स्थित रिश्तेदारों से 2 लाख रूपये लेकर स्वामीजी को उधार दिलवाये। वहीं पर एक अनाज व्यापारी ने शिविर के लिये बाद में 100 पलंग एवं गद्दे खरीदकर दान में दिये।

अभी भी बास्को में कैम्प लगते रहते हैं। बास्कों में कैम्प की चर्चा अधूरी रहेगी यदि वहां पर घटित एक अनोखी घटना का जिक्र नहीं किया जाये। जहां कैम्प चल रहा था वहां पर एक शिवजी का मंदिर था। कैम्प में मरीज बढ़ते जा रहे थे। स्वामीजी ने उधार लेकर पैसों की व्यवस्था कर ली थी। स्वामीजी जब भी कोई कार्य करते थे उनका विश्वास रहता था कि प्रभु करवा रहा है।

'करण कारण एक है, दूसरा नाहीं कोई'।

वो करवा रहा है मैं अपने स्वयं के लिये थोड़े ही ऋण ले रहा हूं जिसकी निमित्त ले रहा हूं वो ही आकर उतारेंगे, इतना अटूट विश्वास था। प्रभू के सेवा कार्यों के दौरान कैम्प के तीसरे दिन ही उस शिवालय में पता नहीं कहां से एक अजगर आ गया और फिर देखते ही देखते अंतर्ध्यान हो गया। स्वामीजी और सब सेवादारों ने उस अजगर को देखा। तब स्वामीजी बोले स्वंय भोले बाबा कैम्प में आकर दर्शन दे गये हैं। अब भण्डार अपने आप भर जायेंगे। हुआ भी ऐसा ही। बम्बई के प्रसिद्ध आर्कीटेक्ट कालीचरण माखीजानी किसी निजी कार्य से जयपुर आये थे, वे स्वामीजी के अनन्य भक्त थे। वहां पर आकर उनको बास्को के नेत्र शिविर की जानकारी मिली। वे स्वामीजी के दर्शन के लिये बास्को आये। जयपुर से 40 कि.मी. ही तो दूरी थी। वहां पर आकर जब उनको पता लगा कि स्वामीजी ने गोबिन्द जी के माध्यम से कैम्प के लिये 2 लाख उधार लिये हैं तो उन्होंने स्वयं तीन लाख की व्यवस्था कर स्वामीजी को कैम्प के लिये अपनी तरफ से दान में दिये। इससे कार्य में गति आ गई 2 लाख रूपये जिससे ऋण लिया था उसको वापस कर दिये गये। कैम्प की समाप्ति के बाद भी 50 हजार रूपये बच गये थे। वे वहीं के लोगों को स्वामीजी ने यह कह कर दे दिये कि भविष्य में भी यहां पर नेत्र शिविरों का आयोजन करते रहना। और आज भी वहां पर नेत्र शिविर लगते रहते हैं।

स्वामीजी यत्र–तत्र नेत्र शिविरों का आयोजन करते थे। शासकीय अस्पतालों में सुविधायें होती थी वहां के आप्रेशन थियेटर वगैरह मिल जाते थे बाकी सेवा के लिये डाक्टर, सेवाव्रती, निःशुल्क कार्यकर्ता तो व्यवस्थित रूप से संचालन के लिये उठ खड़े होते थे। मरीजों का गांव–गांव जाकर चयन करके आना, उनको वहां से अपने खर्च पर वाहन व्यवस्था करके ले आना, उनके खाने–पीने की निःशुल्क व्यवस्था करना और आपरेशन के बाद जहां से लाये थे वहां पर वापस पहुंचा कर आने तक की व्यवस्थाएँ वे सुचारू रूप से अपनी देखरेख में करते थे। वे अमृतवेला में स्वयं आकर मरीजों की सेवा के कार्य देखते थे एवं स्वयं करते भी थे।

राजकोट सौराष्ट्र का वह रेतीला स्थान है जहां रेत काफी मात्रा में पाई जाती है इस लिये वहां के लोगों में मूत्राशय में स्टोन की शिकायत अक्सर देखी जाती है। राजकोट में स्वामीजी ने पहला यूरोलोजी कैम्प का आयोजन किया जो कि काफी सफल रहा। गुजरात के उस समय के मुख्यमंत्री केसूभाई पटेल थे। यह कैम्प स्वामीजी ने राजकोट के जसन वासवानी हास्पीटल में लगवाया था। उस समय स्वामीजी को मौका मिला सरकार के एक प्रतिनिधि से बात करने का। उन्होंने कहा देखो, यहां पर लोगों को कितनी तकलीफ है। यह कैम्प तो हमने लगा लिया है। आपको नहीं लगता यहां पर यूरोलोजी के लिये एक शासकीय अस्पताल भी होना चाहियें इस प्राइवेट हास्पीटल में कितना खर्च होगा? कौन कब तक भरेगा? उस शास्कीय प्रतिनिधि ने स्वामीजी को आश्वस्त किया कि 100 बिस्तरों का अस्पताल बनवाया जाएगा। स्वामीजी ने कहा 100 से ज्यादा तो उन्होंने 200 बिस्तरों वाला अस्पताल का आश्वासन दिया। जो कालांतर में बनकर तैयार हो गया। स्वामीजी कहते थे कि सेवा करने का मन में भाव होना चाहिये। जिनके मन में यह भाव होता है उसके सामने सेवा के रास्ते अपने आप खुलते जाते हैं।

और यह भाव मन ही नहीं हृदय की अंतर तक की गहराइयों से आना चाहिये तो सेवा के मार्ग अपने आप दिखाई देने लगते हैं। इसके लिये न धन की आवश्यकता होती है न ही मौके को तलाशने की। परमात्मा स्वयं सब कर देते है। संतों का काम ही होता है

समाज के भले के लिये सोचना और उसको क्रियान्वित करना। उसके लिये भले ही कितनी भी बाधायें आ जायें, चाहे कितनी ही कुर्बानियां करनी पड़े पीछे नहीं हटना चाहिये।

एक बार जबलपुर में एक शिविर लगा हुआ था शिविर का टाइम खत्म हो गया था। वहां के डॉक्टर कपड़े वगैरह बदल कर सुस्ता रहे थे। वे दिन भर ऑपरेशन करते–करते थक गये थे। ऑपरेशन थियेटर भी सील हो चुका था। अचानक गांव का एक मरीज आया उसे बहुत पीड़ा थी उसने कंपाऊंडर से विनती की कि मैं अमुक गांव से आ रहा हूं मुझे डॉक्टर से मिलवा दो। कंपाउंडर उसे डांट के भगा रहा था जाओ शिविर खत्म हो गया मगर बार–बार रोगी के प्रार्थना करने पर उसने डॉक्टर तक उसको पहुंचाया। डॉक्टर उसकी हालत देखकर करूणा से भर गया। वह अपनी थकान भूल गया फिर से ऑपरेशन थियेटर खुलवाकर उस रोगी का ऑपरेशन किया। यह होती है असल सेवा भावना। ऐसा ही एक और वाक्या जबलपुर में घटा। शिविर में अमेरीका के डॉक्टर अमर सिंह आये हुये थे। शिविर खत्म हो गया था। तब डॉक्टर अमर सिंह जिनके स्वागत के लिये कार्यक्रम चल रहा था उन्होंने कार्यक्रम में न जाकर उस माता का ऑप्रेशन किया। ऑप्रेशन खत्म होते–होते 9 बज गये और कार्यक्रम की परवाह न करते हुए, क्योंकि गाड़ी का टाइम हो गया था, स्टेशन पर पहुंच गये। सच्चे सेवाधारी सम्मान के भूखे नहीं होते।

हमारे अंदर कोई भी शुभ कर्म करने का भाव पैदा होता है तो वह परमात्मा की प्रेरणा से ही उत्पन्न होता है। तो जो कर्म करने की इच्छा परमात्मा द्वारा पैदा की गई है वह पूरी कैसे नहीं होगी। सेवासदन नेत्र चिकित्सालय बनवाने की इच्छा स्वामीजी के मन में आई। पहले शासकीय अस्पताल में नेत्र शिविर वाले ऑप्रेशन करने की व्यव़स्था थी। मगर जब सेवासदन का निर्माण शुरू हुआ तो देश विदेश से दान दाता आते गये वे कैसे आये, कैसे गये और अनेक तो फिर बाद में आये भी नहीं और एक वर्ष के अंतराल में 1 सितम्बर 1987 को सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय बन कर तैयार हो गया। जिसका नाम दूर–दूर तक प्रसिद्ध हो गया है। उसे अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है। रोज 400–500 लोगों की OPD होती है। और शुल्क पंजीयन मात्र 150 रूपये प्रति व्यक्ति। कोरोना काल में भी वहां पर ऑप्रेशन की व्यवस्थायें चालू थी।

लखनऊ के शिवशान्ति संत आसूदाराम आश्रम में संत चांडूराम जी को हॉल का निर्माण करने की मन में भावना उत्पन्न हुई। पैसों की कोई व्यवस्था नहीं थी मगर कार्य शुरू किया तो हॉल बन कर तैयार हो गया।

संत जी कहते थे '**टहल महल ताको मिले जिस पर होवे संत कृपा**'

अर्थात सेवा भी परमात्मा की कृपा के बगैर नहीं मिलती।

'**सभ में वसे थो सांई, छो कंहिंखे घटि थो भांई**

(सब में परमात्मा का वास है इसलिए किसी को भी कम मत समझो)'

यह हमारे स्वामीजी सबको यह मूल मंत्र देते थे। आज भी संतों के समय में बने अनेक सेवाव्रती समय की परवाह न करते हुए तन, मन, धन से सेवा कार्यो में लगे रहते हैं।

सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय के नये भवन का निर्माण कार्य भी युद्धस्तर पर चल रहा है। स्वामीजी के होते हुए जो कार्य हुये जो कार्य होते थे उनके आशीर्वाद से उनके बाद भी उनके सेवकों की आस्था के कारण नये कार्य स्कूल, अस्पताल, बच्चों बूढ़ों और

बीमारों की सेवा में सब समर्पित भाव से लगे हुए हैं। अनेक ऐसे लोग भी हुए जिन्होने सेवा करते हुए अपने प्राण त्याग दिये। मुझे याद है कि श्री सेवाराम जी टहिल्यानी नित्य सेवासदन में मरीजों की सेवा करने आते थे उस दिन भी आये थे। सेवा करते–करते वहीं पर गिरपड़े और परमसत्ता में लीन हो गये।

ऐसी ही एक माताजी स्व. लक्ष्मी देवी रीझवानी थीं। वे भी सेवा करने आती थीं और सेवासदन में ही सेवा करते– करते परमसत्ता में लीन हो गईं। मैंने भी अपने भजन में कामना की है।

मेरे अपने निकट हों, हाथों में दान घट हो
मेरे पग सेवा पथ पर हो। फिर प्राण तन से निकले'
प्रभू के दर पर मेरी यह विनय कबूल होगी मेरे मन में ऐसा विश्वास है।

गुजरात के कच्छ इलाके में जनवरी 2001 में विनाशकारी भूकंप आया इसका केन्द्र भारत के कच्छ जिले के भुज तालुका में चबारी गांव के लगभग 9 कि.मी. दक्षिण पश्चिम में था। सबेरे 8:46 मिनट पर आया भूकम्प 2 मिनट तक चला जिसका केन्द्र 10 किलोमीटर की गहराई में था ऐसा बताया गया था। इस भूकंप में हजारों लोग मारे गये थे। लाखों घर क्षतिग्रस्त हो गये थे। भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 7.7 मापी गई। पूरा शहर मलवे में बदल गया था। इस भूकंप में 13805 से 20023 लोगों की मौत हो गई थी। 166800 से ज्यादा लोग जख्मी हुए थे। और 4 लाख के करीब मकान गिर गये थे। गांव के गांव जमीन में समा गये। स्वामीजी यह सुनकर व्यथित हो गये। उस समय स्वामीजी के अनुयायी श्री मंघो मंगतानी दर्शन के लिये आये हुए थे। स्वामीजी ने उनको वहां के लागों की सहायता करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने खुले हाथों से मदद की। अहमदाबाद से श्री भगवानदास जेठानी एवं गोबिंद के परिवार वहां पर सेवा के लिये पहुंचे। वहां का आलम यह था कि वहां पर पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं हो पा रहा था। वहां से स्वामीजी ने पशुओं के लिये चारा, खाने के लिये राशन भर–भर कर अहमदाबाद से ट्रकों में भेजा। वहां पर आर्थोपिस्ट डॉ. अजय मेहता पहुंचे वहां पर हॉस्पीटल की सुविधायें स्थापित की गईं। ऑप्रेशन थियेटर बनाया गया। वहां के अन्य डॉक्टरों और अजय मेहता ने लगातार 2 महीने तक ऑप्रेशन का कार्यभार संभाला। विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी से भी 200 कार्यकर्ता वहां पर आ गये थे। यद्यपि वे आर्थिक रूप से सहायता नहीं कर पा रहे थे मगर तन मन से सेवा कार्यो में जुटे हुए थे। इतना सेवाकार्य वहां पर हुआ कि कच्छ एक साल के अंदर ही पुनः स्थापित हो गया अपने नये रूप रंग के साथ। हमारे स्वामीजी जब–जब जहां जरूरत पड़ती थी बगैर जाति–पाति धर्म देखे हुए हमेशा सेवा को तत्पर रहते थे।

स्वामीजी जब राजकोट जाते थे तो वहां पर अपने अनुयायी बालचंदानी परिवार के साथ रहते थे। बालचंदानी परिवार में श्रीचंद बालचंदानी, हरीश बालचंदानी और महेश बालचंदानी थे। ये परिवार स्वामीजी के सान्निध्य में अखण्ड भारत के समय से ही संपर्क में थे। स्वामीजी हरीश बालचंदानी के घर रहते थे। श्रीचंद बालचंदानी ने यूरोलाजी केम्प में दिल खोल कर सेवा की। तीनों भाई सेवा करते थे। हरीश बालचंदानी का ह्रदयाघात से देहावसान हो गया। महेश बालचंदानी के घर के पास गौशाला थी। वहां पर ऊपर से केवल टीन की चादरों की छत थी। स्वामीजी ने उनको कहा कि इसके चारों तरफ चादरें लगवा दो। उन्होंने ऐसा ही किया। यह परिवार रोज गौशाला की आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। हर रविवार को पूरा परिवार घर से निकलता

गौशाला, कबूतरों, हिरणों के लिये आवश्यक व्यवस्था करता। किसी की की गई सेवा निश्फल नहीं जाती है अतः वह परिवार भी हर तरह से संपन्न हो रहा है।

राजकोट से अहमदाबाद जाते वक्त 14 कि.मी. दूर एक मंदिर है जिसमें पूरा राम दरबार है। उस गांव के सरपंच स्वामी रणछोड़दास के शिष्य थे। रणछोड़दास के साथ स्वामीजी के पुष्कर से ही संबंध थे। राणछोड़दास कहते थे मैं ईंट से ईंट नहीं जोड़ूंगा रोटी पे रोटी रखूंगा। वे रोज भंडारे करते थे और दीन दुःखियों की सेवा करते थे। उस मंदिर में राम दरबार तो था ही वहां पर स्वामीजी रणछोड़दास की मूर्ति भी थी। मंदिर में और भी छोटी–छोटी कई मूर्तियां थीं। वहां पर एक कुंड भी था। जिसमें एक पत्थर तैर रहा था जिस पर राम लिखा था वहां पर शंका मन में आई कि पत्थर पोला होगा। इस तरह के पत्थर वे बाम्बे में कालीचरण माखीजानी के घर में देख चुके थे। सरपंच ताड़ गया कि इनको तैर रहे पत्थर के बारे में संशय पैदा हो गया है अतः उन्होंने कहा आपको शंका हो रही है, आप उठा कर देख लो? इसका वजन 11 किलो है जो इस पर लिखा हुआ है। तब सिद्धभाऊ ने उठाया, उनकी भी शंका का समाधान हो गया। फिर स्वामीजी ने भी उस को उठाया तो वे भी आश्चर्य चकित हो गये। वह पोला नहीं था। स्वामीजी ने उस पत्थर का इतिहास जानना चाहा तो स्वामीजी को बताया गया इस मंदिर में पिछले 50 वर्षों से लगातार रामधुनी लग रही है, कभी इसमें खंडन नहीं हुआ। दिन रात 24 घंटे चलती रहती है बगैर किसी रूकावट के स्वतः स्फूर्त तरीके से। एक बार वृंदावन से एक साधू महाराज जी आये। और इस मंदिर में एक महीने तक रूके। उन दिनों भी यहां मंदिर में अखण्ड रामधुनी चल रही थी, वे इससे मोहित हो गए। एक माह बाद जब वे जाने लगे, तो गांव वालों से कहा जो चाहिये हीरे, जवाहारात, धन–दौलत आप मांगो मैं तुम्हें दूंगा। आप लोगों ने मेरी बहुत सेवा की है। मैंने देखा आपके यहां दंत शिविर, नेत्र शिविर, भंडारे चलते हैं। आपकी सेवा निःस्वार्थ है। अतः जो मांगना है मांग लो। तब गांव वालों ने कहा हमें धन दौलत हीरे जवाहारात नहीं चाहिये बस एक आशीर्वाद दीजिये कि यह रामधुनी अखंड रूप से आगे भी चलती रहे। तब उस संत महाराज जी ने एक पत्थर उठाया उस पर राम लिखा और पानी के कुंड में डाल दिया, तब से यह पत्थर ऐसे ही तैर रहा है। हर महीने इसको निकाल के गेरू से फिर राम लिख देते हैं। यह तैरने लगता है। उस संत ने कहा, राम में आज भी वही शक्ति है, जो त्रेता युग में थी, सिर्फ हमारी आस्थायें मजबूत होनी चाहिये। यह तैरता पत्थर आने वाली पीढ़ियों को यह विश्वास दिलाता रहेगा कि राम का नाम सत्य है। आपकी यह राम धुनी चलती ही रहेगी, जो आज भी चल रही है। स्व. श्री विक्योमल सर्राफ एवं स्व. श्री एम.एन. लालचंदानी जी भी इस चमत्कार को साक्षात देख कर आये थे।

सरपंच जी ने स्वामीजी को घर चलने का आग्रह किया, स्वामीजी उनके घर गये। संत रणछोड़दास जी भी जब आते थे, तो उन्हीं के घर में रहते थे। वहां पर जब स्वामीजी पहुंचे तो उनके घर में रामधुनी चल रही थी, उनसे पूछा यह कौन लगा रहा है, तो उन्होंने बोला घर के सब लोग इसको लगाते रहते हैं। कितनी श्रद्धा, कितना विश्वास था उस परिवार में। उन्होंने स्वामीजी की उचित आवभगत की। जब उन्होंने स्वामीजी को प्रवचन के लिए कहा तो उन्होंने प्रवचन दिये। उन्होंने बताया कि राम जी ने हनुमान जी को सेवा से प्रसन्न होकर वरदान दिया था कि मुझसे ज्यादा लोग तुम्हें पूजेंगे। तुम्हारे मंदिर बनेंगे। शिवजी ने भी पार्वती जी से कहा,

'उमा मेरे मन में अति विश्वासा, राम से अधिक है राम का दासा।'

स्वामीजी के बारे में, उनके सेवा कार्यों के बारे में सरपंच को पूरी जानकारी थी। जब स्वामीजी ने उनको बताया कि आप के घर के सदस्यों की संख्या 50 है तो वे आश्यर्च चकित हो गये और उनका विश्वास स्वामीजी में बढ़ गया।

पहले वैज्ञानिकों को जितने भी प्रमाण मिले थे, उससे वे धरती की उत्पति लाखों वर्षों में बताते थे, मगर अब अमेरीका में पेड़ों के अवशेष मिले हैं उनका अध्यन बताता है कि, वे 50 करोड़ साल पुराने है। इसका मतलब यह हुआ कि धरती की आयु, जीवन की आयु इससे भी ज्यादा होगी। प्रभू बेअंत है, उसकी लीलायें बेअंत हैं। जो हमारे अंदर है, वही आदि शक्ति बाहर भी है। उस शक्ति के बिना जीवन हो ही नहीं सकता। **जो अंदर सो बाहर अनंत, घट घट व्याप रहा भगवंत।** हमारे प्रभू और उसकी सत्ता साक्षात रूप से यत्र–तत्र सर्वत्र विद्यमान है; वह कण–कण, पत्ते–पत्ते अणु–अणु में व्याप्त है। हम यदि प्रभू को मूर्ति मानकर उसकी पूजा करते रहेंगे तो वह पत्थर की मूर्ति ही रहेगी। वह साक्षात भगवान हो ही नहीं पायेगा। जो कुछ हो रहा है वह उसकी इच्छा से, उसके आदेश से हो रहा है। उसकी इच्छा के आगे सर झुका कर चलेंगे, तो तर जाएंगे। यदि उसकी इच्छा के विपरीत जायेंगे तो डूब जायेंगे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में भी लिखा है

‘हुक्म रजाई चलणा’, और ‘तेरा भाणा मीठा लागे।’

जो कुछ हमें मिल रहा है सुख–दुख, धन–दौलत, अमीरी–गरीबी सब हमारे अपने कर्मों का प्रतिफल है। जो लेखा लिखवा के लाए हैं वह तो हमें भुगतना पड़ेगा। गुरुवाणी कहती है।

‘लेखे कबहों न छूटिये, खिन-खिन भूलणहार,
बख्शण हारा बख्श ले, गुरुनानक पारि उतार।’

प्रभू से अपने कर्मों की माफी मांगने से ही हम सांसारिक बंधनों से पार उतर पायेंगे। संतों की कृपा बड़ी मुशकिल से मिलती है। जिनको संत कृपा मिल जाती है वे भाग्यशाली होते हैं। संतों की कृपा उन्हीं को प्राप्त होती है जिनके ह्रदय में विश्वास होता है, श्रद्धा होती है, हार्दिक प्यार होता है। संतों के लिये ह्रदय के अंदर खिंचाव होता हैं उन्हीं को संत कृपा प्राप्त होती है। पवित्र आत्मायें बह्मांड में हर जगह जीवित अवस्था में विद्यमान हैं और हमारी हर पुकार को वे सुनती हैं, महसूस करती हैं और हमारे कार्य करती है। संत और परमात्मा में अन्तर नहीं इसीलिये तो कहा गया है –

‘हरि, हरिजन एक है’

प्रभू और संत में कोई अंतर नहीं होता। हरिजन प्रभू के प्रत्यक्ष रूप हैं जो हमें मानना पड़ेगा। हमें शरणागत होना पड़ेगा। शरणागत होने पर प्रभू हमारे सभी कर्मों को अपने आप कर जाते हैं। हम निर्मल होते जाते हैं। हम अपने आपको शरीर मानकर चलेंगे, तो कभी भी पार नहीं हो सकते। रामचन्द्र भगवान से जब गुरु वशिष्ठ ने पूछा, अभी तक जो मैंने तुम्हें ज्ञान दिया है उससे क्या सीखे तो वे बोले गुरुदेव मैंने सीखा मैं शरीर नहीं हूं, जब मैं शरीर ही नहीं हूं, तो फिर इस शरीर से मोह तो निकल ही जायेगा। तभी तो हम कह पायेंगे

दीना बंधु दीना नाथ, मेरी डोरी तेरे हाथ।
हमें मानना पड़ेगा प्रभू घटघट की, पल-पल की जाने। हमें मानना पड़ेगा
करण कारण प्रभु एक है दूजा नाहीं कोई।

जो भी हो रहा है वह सब प्रभू करवा रहा है, हमें सिर्फ देखना है, उसको उसी रूप में स्वीकार करना है। दिया तो क्या, लिया तो क्या।

'दस बसतू ले पाछै पावै, एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै,
एक भी न देइ दस भी हिरिलेइ, तउ मूड़ा कहु कहा करेइ।'

सन् 1974 में नवयुवक सभा, संत हिरदाराम नगर के बुलावे पर दादा जशन वासवानी पूने से भोपाल आये थे। स्टेशन पर उतरते ही पहले वे संत हिरदाराम जी के आश्रम पर आये। दोनों संत बड़ी आत्मीयता पूर्वक एक दूसरे से गले लगकर मिले। स्वामीजी ने दरी को खोल दिया। दोनों संत एक साथ बैठे दोनों में एक घंटे तक वार्तालाप होता रहा। जाते–जाते दादा जशन वासवानी ने स्वामीजी को कहा आप भी मेरे साथ सांयकाल के कार्यक्रम में चलना। स्वामीजी उनके साथ कार्यक्रम में गये। स्वामीजी की साधू टी.एल. वासवानी से भी मुलाकात हुई थी। दादा जे.पी. वासवानी ने संतजी को बताया जब वे साधू टी.एल वासवानी के संपर्क में आये, तो मन में बहुत अशांति रहती थी। मन किसी भी काम में लगता ही नहीं था। जो सोचते थे उसका उल्टा हो जाता था। मन की एकग्रता तो थी ही नहीं। जब यह बात उन्होंने अपने गुरुदेव को बताई तो उन्होंने कहा जशन, तुम जिसकी शरण में आकर बैठे हो, क्या तुम्हें उस पर विश्वास नहीं है? अब जो भी तुम्हारे जीवन में घटित हो उसके लिये तुम यह मानो –

'जो तुझ भाए साई भली कार'

गलत हुआ है, तो भी सोचो जो हुआ है, उसमें भी मेरा भला होगा। उसके जीवन में कितने ही तूफान आये मगर वह विचलित नहीं होता क्यों कि उसने अपने आपको प्रभू के शरणागत बना लिया है। वह दुःख और सुख को समभाव से देखता है। दुःख हमारे अशुभ कर्मो का फल है, और सुख हमारे शुभ कर्मों का फल है। दुःख हमारे अशुभ कर्मो को कम करने के लिये आते है। और सुख शुभ कर्मों को कम करने के लिये आते हैं। स्वामीजी कहते थे

'ऊठत बैठत सोवत नाम'

उठते हुए बैठते हुए, खाते हुए, पीते हुए, सोते हुए, जागते हुए हमें प्रभू का स्मरण करते रहना चाहिये। जब उनसे पूछा गया कि सोते हुये कैसे जाप होगा? तो उन्होंने बताया नाम जपते–जपते सो जाओ, नींद आयेगी मगर वह जाप नींद में भी जारी रहेगा। इससे हमें बुरे सपने नहीं आते, गहरी नींद आती है और परमात्मा के दर्शन होते हैं। यही एक तरीका है परमात्मा के दर्शन पाने का। इसे ही गीता में राजयोग के नाम से बताया गया है। हमारी वृत्ति परमात्मा में लगी रहेगी। हमारी अपने आचरण पर सजग नज़र रहेगी।

महू, वर्तमान में डॉ. अम्बेडकर नगर, में स्वामी जी के दो अनन्य शिष्य रहते थे। ज्ञानी शीतलसिंह और दर्वेश थांवरदास। जहां भी स्वामीजी पाठ रखवाते थे, इनको ही पाठी बनाते थे। दर्वेश शीतलसिंह रेलवे में गार्ड की नौकरी करते थे और दर्वेश थांवरदास भी रेलवे में टिकट चेकर का कार्यभार संभालते थे। स्वामीजी अंबेडकर नगर जब गये तो वे दर्वेश थांवरदास के घर में रूके। दर्वेश शीतलसिंह भी पास में रहते थे। जब वे ड्यूटी से घर पर आये, घर वालों को बोलकर आये खाना बनाओ में स्वामीजी के दर्शन कर उनके चरणों में सिर निवाकर आता हूं। वे पहुंचे। स्वामीजी, शीतलसिंह और थांवरदास ने जब वार्तालाप शुरू किया दर्वेशों के बारे में जिक्र शुरू हुआ तो सुहानी रात कैसे बीत गई और सुबह की सुनहरी किरणें लेकर सूर्य देवता निकले तो उनका वार्तालाप खत्म हुआ। दर्वेशों की बातें होती ही निराली हैं। स्वामीजी ने कहा आपने बातें तो की हैं। दिल से की होंगी और मानलो आपको ड्यूटी से बुलावा आ जाये तो कैसे करोगे। अभी स्वामीजी कह

ही रहे थे तभी दर्वेश शीतलसिंह को रेल्वे आर्डर आया, आपको एक घंटे बाद महू से गुड्स ट्रेन लेके जानी है। स्वामी जी और दर्वेश शीतलसिंह मुस्कुरा दिये। शीतलसिंह जी अपनी ड्यूटी पर चल दिये बगैर थकावट की चिंता किये हुए। जैसे ही महू से ट्रेन चली आगे पातालपानी नाम का स्टेशन आता है। आजकल महू से कालीकुंड तक विशेष पर्यटन ट्रेन शुरू की गई है, जो सबेरे निकलकर शाम को वापस पर्यटकों को लेकर आती है। बहुत ही सुंदर पर्यटन स्थल है। एक बार में 30 यात्री ही आते–जाते है। भोजन की व्यवस्था भी प्त्ज्ञ वाले करते है। पातालपानी पर आकर मालगाड़ी को यह कहकर खड़ा कर दिया गया कि आज ट्रैफिक बहुत ज्यादा है इसलिए मेल, एक्सप्रेस, ट्रेनों के शेड्युल के कारण ट्रेन को छः घंटे के लिये रोक दिया गया है, इस तरह शतीलसिंहजी की नींद पूरी हो गई। एक बार संत शीतलसिंह की ड्युटी लगी, ट्रेन में जा रहे थे उनको श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ करने की इच्छा हो गई। उस ट्रेन का ड्राइवर बहादुर नामक व्यक्ति था, जो रतलाम का निवासी था एवं संत में सच्ची श्रद्धा रखने वाला था। शीतलसिंह जी सुखमनी के पाठ में ऐसे डूबे कि अपनी सुधबुध खो बैठे। सुखमनी साहिब का पाठ डेढ़ घंटा तो लेता ही है। वे भूल गये कि ट्रेन चल रही है, वे ट्रेन के गार्ड हैं। उनके झंडी देने के बाद ही ट्रेन एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन के लिये रवाना होती है। जब पाठ पूरा हुआ तो उनको अपनी ग़लती का अहसास हुआ। ट्रेन 10–12 स्टेशन आगे जा चुकी थी। जब ट्रेन अगले सटेशन पर रूकी तो वे अपने गार्ड के डिब्बे से निकलकर इंजन तक गये। जैसा हम जानते हैं कि गार्ड का डिब्बा अंतिम और इंजन सबसे पहले होता है। ड्राइवर और गार्ड को तालमेल बनाकर रखना पड़ता है। वे जब इंजन के पास पहुंचे तो बहादुर से बोले, बहादुर कर क्या रहे हो मैंने झण्डी दिखाई नहीं और बगैर झंडी के तुम 10–12 स्टेशन पार कर चुके। बहादुर बोला शीतलसिंह जी आप क्या बोल रहे हैं। आपके झण्डी दिखाए बगैर मैं गाड़ी कैसे चला सकता हूं। आपने तो मुझे हर स्टेशन पर झंण्डी दिखाई है तभी तो मैंने गाड़ी बढ़ाई है। सच में दर्वेशों के संग प्रभू होते हैं। कहा गया है न

'हरि अनंत, हरि कथा अनंता।'

जो हरिकथा में, प्रभू के स्मरण में अपना जीवन लगा देते हैं प्रभू उनके अंग–संग होते हैं। गुरुवाणी का भजन है,

'गुरु मेरे संग सदा है नाले, सिमर सिमर तिस सदा संभाले।'

उसका किया, उसका दिया, उसका भाणा दर्वेशों को मीठा लगता है।

अखण्ड भारत के टाइम में सिंध में संत हरचूराम साहिब थे। वे तंबाकू का व्यापार करते थे। वहां पर जो संत होते थे, वे अपनी आजीविका खुद कमाकर अपना परिवार का जीवन यापन करते थे। वे दान में मिले पैसों का अपने जीवन की किसी भी आवश्यकता के लिये उपयोग नहीं करते थे। कोई खेतीबाड़ी करता था, कोई नौकरी करता था तो कोई व्यापार करता था। वे दान का उपयोग समाज के भले के लिये करते थे। संत हरचूराम की एक दरबार संत हिरदाराम नगर में आज भी है। वहां पर नित्य प्रति भजन कीर्तन एवं समाज सेवा कार्य चलते हैं। इनका एक शिष्य था बल्लू अविवाहित था, वह बड़ी श्रद्धा से सेवा करता था। एक बार संत हरचूराम जी ने बल्लू से खुश होकर कहा बल्लू आज जो चाहो मांग लो। बल्लू बोला सच में मांग लूं। संतों ने कहा, कह तो रहा हूं कि मांग लो, तब बल्लू ने कहा आपको देना है तो वरदान दो मैं जैसा चाहूं, वैसा हो जाये। संतों ने कहा यह तुम क्या मांग रहे हो। यह तो कठिन है। बल्लू ने कहा, आपने ही

तो कहा था जो चाहो मांग लो, मुझे देना है तो जो मैने मांगा है वह दे दो नहीं तो कोई बात नहीं। संत जी चिंतित हो गये ठीक है तुम रोज निश्चित समय पर, उचित धुले हुए वस्त्र पहनकर श्रद्धा पूर्वक पूरी तन्मयता से 40 दिनों तक श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ करो तब तुम्हें इच्छित लाभ मिलेगा। बल्लू ने उस दिन से 40 दिन का पाठ शुरू किया। संतों ने उसे बताया था इन 40 दिनों में यहां कालरा नाम की बीमारी फैलेगी, मैं भी दूसरे गांव चला जाऊंगा, अनेक लोग कालरा के कारण मृत्यु को प्राप्त होंगें। मगर तुम्हें बगैर रूके हुये 40 दिन तक श्री सुखमनी साहिब का पाठ करना है। बल्लू इरादे का पक्का था, संतों की सेवा में रहते हुये मन निर्मल हो गया था। उसने पाठ शुरू किया। संतों के बताये अनुसार गांव में कालरा फैला अनेक लोग काल कवलित हो गये। इस बीच में बल्लू के पिताजी भी शांत हो गये मगर बल्लू अविचलित रहते हुये पाठ करता रहा। संत हरचूराम भी दूसरे गांव में चले गये। देखते देखते 39 दिन हो गये। बल्लू की श्रद्धा बढ़ती जा रही थी उसे वरदान जो मिलने वाला था। एक दिन अचानक उसे एक जहरीले बिच्छू ने काट लिया। उसका शरीर पीला पड़ गया। पड़ोसियों से अनुग्रह किया कि मुझे अपने गुरु हरचूराम जी के पास ले चलो। पड़ोसी उसे ले गये संतों के पास, संत दयालु होते हैं, संतो ने उस पर दया की कहा जाकर नहाकर पाठ करो बल्लू ने ऐसा ही किया। पाठ समाप्त होने के बाद उसे शक्तियां प्राप्त हो गई। जैसा वह चाहता वैसा हो जाता।

अब बल्लू शक्तियां प्राप्त होते ही अपनी करामातें दिखाने लगा। देवी देवताओं से झगड़े करने लगा। अपने आपको बहुत बलशाली समझने लगा। संतों ने उसे करामातों से दूर रहने को कहा, मगर बल्लू पर असर ही नहीं होता था। जब बल मिल जाता है तो दातार बिसर जाता है।

'रात प्यारी, बिसरा दातार'

एक बार हरचूराम जी ने बल्लू को बोला बल्लू मेरे लिये चिलम बना दो। वे चिलम पीने के शौकीन थे। चिलम में तंबाकू डालकर उस पर अंगारे रख कर चिलम बनाते हैं चिलम सुलगती है। बल्लू ने स्वामीजी के लिये चिलम बनाई और आग को कहा जल जाओ आग जली और चिलम तैयार हो गई वह संतों के पास ले गया। संतों को आश्चर्य हुआ कि इतनी जल्दी चिलम कैसे तैयार हो गई? उन्होंने बल्लू से कहा बल्लू इतनी जल्दी चिलम कैसे तैयार हो गई? बल्लू ने कहा, मैंने आग से कहा जल जाओ। आपको चिलम इस तरह जल्दी बनाकर दे दी। स्वामीजी ने कहा बल्लू यह बात अच्छी नहीं है, मैंने अनेक बार तुम्हें करामत दिखाने को मना किया है। तुम मानते क्यों नहीं हो? बल्लू को गुस्सा आ गया उसने संतों से कहा एक तो मैने आपके लिये जल्दी चिलम तैयार कर दी, ऊपर से आप चिल्ला रहे हो। बल्लू थका हुआ था। संतों ने डांटा तो उसने कहा मुझे मत डांटो मुझे गुस्सा आया तो आपकी यह खटिया जिस पर आप बैठे हुए हो वह भी टूट जायेगी। बल्लू का इतना बोलना था और सचमुच में खटिया टूट गई और गुरुजी नीचे गिर गये। गुरुजी उठे और उसको एक चांटा मारा उसकी सारी शक्तियां खत्म हो गई और वह जैसा पहले था वैसा ही शक्तिहीन बन गया।

एक बार जब स्वामीजी पुष्कर में थे तो बल्लू अजमेर में आया। स्वामीजी को पता पड़ा तो संतों ने उसे पैग़ाम भेजा कि बल्लू पुष्कर आओ मैं तुम्हारे दर्शन कर सकूं।

बल्लू ने बड़ी विनम्रता से कहा स्वामीजी मैं इस बार बहुत व्यस्त हूं अगली बार आऊंगा तो जरूर आऊंगा। बल्लू वापस बाम्बे निकल गया। वहां पहुंचने पर उसे याद

आया कि मैं अपना पासपोर्ट तो अजमेर में ही भूल आया हूं। अतः वह पुनः बाम्बे से अजमेर आया जिनके यहां आया था उन्होंने कहा तुम्हें संत हिरदाराम जी ने संदेश भेजा था, तुम गये नहीं अब देखा तुम्हारा कितना समय व्यर्थ गया। बल्लू को अपनी ग़लती का अहसास हुआ। वह पुष्कर आया, स्वामीजी ने उससे पूरी घटना सुनी, घटना सुनाते–सुनाते बल्लू रोने लगा। उसने कहा गुरु से मैंने इतना बड़ा वरदान प्राप्त किया था, मगर अपनी बेवकूफी के कारण वह गंवा दिया। संतो नें तब उसे कहा श्री सुखमनी साहिब का पाठ जारी रखो प्रभू भला करेंगे।

'प्रभू जी वसहि साध की रसना'

उनके मुख से जो जो उच्चारित होता है वो लोककल्याण की भावना से ओत प्रोत होता था। उनकी अपनी आवश्यकताएं थी ही नहीं। वे संग्रह में भी विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने कभी दान में आये पैसों का संग्रह नहीं किया। वे कहते थे जो है उसी से शुरू करो सत्कार्य। कार्य उसका है पूरा भी वही करेगा। वे उसके भरोसे ही अपने अनुयाइयों से अनुरोध कर ऋण लेकर भी शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करने का कार्य करते थे और फिर पैसे आने शुरू होते थे तो उनको लौटाते जाते थे। स्वामी जी कहते थे हमारे सुख–दुःख हमारे शुभ और अशुभ कर्मों का प्रतिफल होते हैं। हमारे शुभ कर्म–सुख के रूप में और अशुभ कर्म–दुःख के रूप में लौट कर आते हैं। वे कहते थे,

दुनियां झूठी परमात्मा सच्चे, बच सको तो भाई बचो,
नहीं तो यह दुनिया खा जायेगी कचो (कच्चा)।

हमें अपना दृढऋ विश्वास परमात्मा में, सेवा संकल्प धाम में, अपने सत्गुरु में, अपने धार्मिक ग्रंथों में रखना चाहिए। यह सेवा संकल्प धाम संतों की तपोभूमि है। इस तपोभूमि में स्वामीं हेमराजसाहिब, स्वामीं बोद्धराज साहिब साक्षात रूप से विराजमान हैं। दोनों संत बहुत उच्च कोटि के संत हैं। वे हमारी सर्व इच्छायें पूर्ण करेंगें, ऐसा हमे विश्वास क्यों नहीं होता। हमें गुरुवाणी से निकले वचन साहिब को हल्के में नहीं लेना चाहिये। स्वामी जी कहते थे श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अखण्ड पाठ नहीं कर सकते तो उसका नइेजपजनजम है 3 संपत पाठ। हम करके तो देखें।

'बिसर गई सब तात पराई, जब से साध संगत मोहे भाई'

हम दूसरों की बुराई ना करें, हम साध संगत में आये हैं तो हम इसीमें आसक्ति बनाये रखें। दूसरों की बुराई, दूसरों से गिला शिकवा, सब भुला दें। अपने शरीर की सुध–बुध भी खो दें सत्संग में आकर क्योंकि हमारा यह शरीर भी अपना नहीं है कब साथ छोड़ देगा हमें नहीं पता। हमारा शरीर, हमारा धन, हमारे सगे संबधी कोई भी अपना नहीं है। जब तलक उनका स्वार्थ पूरा होता है तब तक वे हमारे हैं। स्वार्थ खत्म तो रिश्ते खत्म। हमारा धन खत्म हो जाये तो जो लोग कल तक हमें सलाम करते थे, कदमों में आकर बैठ जाते थे वे भी मुंह फेर लेते हैं।

'न बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रूपैया'

हम अपने स्वरूप को भूल गये हैं। हम परमात्मा के ज्योति स्वरूप हैं। इसका भान लेकर अपने ज्योति स्वरूप को निखारना पड़ेगा।

हमें अपना मूल्य पहचानना पड़ेगा। हम सिर्फ शरीर हैं यह सोचकर हम अपने शरीर को सजाने संवारने में लग जायें, यह सही नहीं है। हमें अपनी अंतरात्मा को सजाना है, संवारना है। हमें अपने विचारों पर, क्रियाकलापों पर नियंत्रण रखना है। जब हम अच्छे कर्म करने बैठते हैं तो वाह्य विचार हमें अपने पथ से विचलित करने का प्रयास

करते हैं। ऐसे विचारों को जागृत अवस्था में रहकर हमें अपने से दूर रखना है। हमें पूर्ण लगन से कष्टों को सहते हुये साधना के लिये निश्चित किये समय पर अपने ध्यान में लगे रहना है। हृदय जब शांत होना सीख जायेगा तब अंदर की यात्रा धीरे धीरे शुरू हो जायेगी और हम परम पद, परम आनंद की लहरें अपने हृदय में महसूस कर पायेंगे। स्वामी जी एक बार बाम्बे गये। वहां पर उनके शिष्य दीवान हरूमल ने उनको एक अम्मां के बारे में जानकारी दी। उस माता के सात पुत्र थे, मगर उन माता को पुत्रों का सहारा नहीं मिला वे अपने दामाद और बेटी के घर पर रहती थीं। स्थिति ऐसी थी कि चल भी नहीं सकती थी, बिस्तर पर थी। एक खटिया पर बैठती थी। थक जाती थी तो पास में एक मूढा (आसन) पड़ा रहता था उस पर बैठ जाती थी। वहीं पर कमोड पड़ा था जिस पर वे मलमूत्र त्याग करती थी। मगर परमात्मा में इस तरह लीन रहती थी कि उनको शारीरिक कष्टों का अहसास ही नहीं होता था। वे सदैव ही प्रभू के रंग में रंगी अपनी साधना में लीन रहती थीं। प्रभू उनके अंग–संग रहते थे। हमें अनेक दृष्टांत सुनने में आते हैं। स्वामी जी बताते थे, अमृतसर के पास गुरु अंगद देव का गुरुद्वारा है वहां पर एक संत रहते थे। वे गुरुद्वारे के बाहर बैठे रहते थे। पिछले तीन महीनों से वे वहां पर रह रहे थे। उनकी जमा पूंजी खत्म हो गई तो उनके मन में विचार आया कि मेंरे पास 20 रूपए होते तो मैं चालीस दिन और यहां पर आनंद प्राप्त कर सकता था। उसका विचार साकार हुआ उसे दूसरे दिन स्वयं गुरु अंगद देव जो कि गुरु नानक के अंगों से बने थे, ने आकर उसको बीस रूपये दिए व अंतर्ध्यान हो गये। स्वामीजी प्रेम को बहुत महत्व देते थे। वे कहते थे, अपने आपको प्रभु के सागर में डुबो दो। सबसे प्रेम करो। पशुओं से, पक्षियों से, अपनों से, परायों से, देश से, संसार से, प्रकृति से, अपने पड़ोस से, अपने आपसे, अपने परिवार से ज़ब हम प्रेम करेंगे तो ही हम प्रभू का साक्षत्कार कर सकते हैं। वैसे भी प्रेम भरा हृदय ही नाच सकता है, गा सकता है, आल्हादित हो सकता है, कहा गया है–

'साचे कंहू, सुन ले हो सभै, जिन प्रेम कियो, तिन प्रभू पायो

हर हृदय में प्रभू वास करता है, सजीव में, निर्जीव में, उसका विराट् स्वरूप जड़ चेतन सब में व्याप्त है। सिर्फ हमें अपने अन्तःकरण पर पड़ी हुई धुंध को हटाना है, जंगल में जाकर तपस्या करने की आवश्यता ही नहीं है। किसी पीर फकीर के आगे माथा टेकने से ही प्रभू मिलेगा यह भ्रम मिथ्या है। हमारे अंतःकरण की गहराइयों में, हमारे शरीर की हर एक कोशिका में, हमारे हृदय की हर धड़कन में, हमारे शरीर में बहने वाले रक्त की हर बूंद में वह परमसत्ता विद्यमान है। हमारी हर श्वास श्वास में हम उसे स्मरण करते रहें, प्रभू साक्षात हमें मिल जायेंगें। कहा गया है–

हरी व्यापक सर्व समाना, प्रेम से प्रकट हुये में जाना।

प्रेम में दया होती है, प्रेम में अहंकार का कोई स्थान नहीं होता। हर प्राणी के लिये दया। दया होगी तभी तो हमारे अंदर सेवा का भाव उदय होगा। स्वामी जी का मूलमंत्र भी हमें यही बताता है। यदि हमारे अंदर अहंकार आ गया तो सेवा, सेवा नहीं कहलायेगी।

बूढ़े बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार
करें भावना से इनकी सेवा,
पायेंगे लोक परलोक में सुख अपार।

हमारी आत्मा संतुष्ट हो, हमारी आत्मा किसी का दुःख देखकर द्रवित हो, हमारे अंदर तड़प पैदा हो, उसका दुःख हमें उसका नहीं अपना दुःख महसूस हो तो ही हम

लगन पूर्वक सेवा कर पायेंगे। सेवा से ही हम, प्रभू के वैकुण्ठधाम को प्राप्त कर सकते हैं। संत नरसी मेहता ने भी कहा है–

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणेरे।
अनिक जतन करि आतम नहीं द्रवै।।
हरि दरगह कहु कैसे गवै।।

गुरुवाणी में भक्ति के योग के बारे में अति सुन्दर पंक्तियां कही गई हैं–

'उरि धारै जो अंतरि नामु, सरब में पैखै भगवानु
निमख निमख ठाकुर नमसकारै, नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै।'

हम जिसकी भी सेवा करें, यही सोच कर करें कि हम भगवान की सेवा कर रहे हैं। कण कण में प्रभू विराजमान हैं, ऐसी कोई वस्तु नहीं, ऐसा कोई प्राणी नहीं, ऐसा कोई जीव जंतु नहीं जिसमें हमें भगवान नजर नहीं आये। वैसे भी हम घर में पत्थर की मूर्ति में भी तो भगवान महसूस करते हैं न, उनके सामने धूप–दीप जलाते हैं, फिर इन्सान में, जीव जन्तु में, संसार के हर प्राणी में भगवान मानकर सेवा करेंगे तो हमारी सेवा अवश्य ही सफल होगी।

'जैता कीता तैता नांउ, विणु नावै नाही को थाउ'

अर्थात् इस सृष्टि में जो कुछ विद्यमान है चाहे वह दृश्यमान है अथवा अदृश्य, सब में प्रभु समाया हुआ है।

काम क्रोध, अरु लोभ, मोह, बिनसि जाइ अहंमेव
नानक प्रभ सरणागति करि प्रसादु गुरुदेव

हमें यदि कुछ प्राप्त करना है तो हम प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं। हम विरोध करके कुछ प्राप्त कर नहीं सकते, उल्टा जो हमें मिलना था वह भी गंवा देंगे। स्वामीजी अपने प्रवचनों में कहते थे–

प्रेम में पाओगे, विरोध में गंवाओगे।

अक्सर मां बाप अपने बच्चों के बारे में दूसरों से शिकायतें करते रहते हैं। कभी उनकी तारीफ नहीं करते। जब हम बच्चों की सिर्फ शिकायत ही करेंगे तो बच्चे को डीठ तो बनना ही है न! बच्चों की जितनी आप निंदा करेंगे, दूसरों के सामने नीचा दिखाओगे, तो बच्चा निश्चित रूप से उद्दण्ड बनता जायेगा। हाँ आप यदि आप बच्चों को अच्छा बनाना चाहते हैं, तो दूसरों के सामने उनकी तारीफ करना सीखना पड़ेगा। जो जो आप अपने बच्चे को बनाना चाहते हैं, तो वैसी–वैसी ही उसकी तारीफ कीजिये। आप चाहते है आपका बच्चा सदैव सच बोले तो सबके सामने उसकी तारीफ करते हुए बोलिये मेरा बच्चा तो कभी झूठ बोलता ही नहीं है। निश्चित रूप से वह सच बोलेगा हमेशा। हर एक को अपनी तारीफ पसंद आती है। कौन है जो अपनी निंदा सुनना चाहेगा?

हमें कटु वचनों को जबान तक आने ही नहीं देना चाहिये। यदि हम अपने बच्चों से या हमारे अपनों से जहर बुझे हुए तीर की तरह कटु वचन में बात करेंगें तो अपनत्व कैसे पैदा होगा। इसलिये हम जो भी बोंलें, सोच–समझकर बोलें हिन्दी में मुहावरा है–

पहले तौलें, फिर बोलें

हमारे बोल हमारे बच्चों पर भी विपरीत असर डालते हैं। हमारे सत्कर्म, हमारा अच्छा व्यवहार, लोगों का आशीर्वाद बन कर हमारे पास लौट आता है, और हमारा दुर्व्यव्हार लोगों की आह बन कर लौटता है। चाहे आशीर्वाद हो या हाय दोनों का असर बहुत जल्दी हमारे ऊपर होता है।

मानव सेवा करने से हममें अहंकार पैदा होने की संभावना रहती है क्योंकि जब वह सेवा के बदले में हमें अपने आशीर्वचन देगा तो वे शब्द हमारे अंदर निश्चय ही अहंकार पैदा करेंगें। मगर पशु पक्षियों की सेवा करने से हमारे अन्दर अहंकार पैदा नहीं होता। अहंकार क्यों करें? अहंकार ही सब पापों की जननी होता है। मगर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम मानव सेवा न करें।

कभी संतजी भी किसी पर नाराज हो जाते थे, उसे भला बुरा कह देते थे। मगर संतजी डांटने के बाद असहज हो जाते थे, उन्हें बुरा लगता था और फिर धीरे से, प्रेम से जिसे डांटा था उसे पास बुलाते थे एवं स्नेह पूर्वक समझाते थे और तब तक उसे जाने नहीं देते थे जब तक उसको सामान्य अवस्था में नहीं ला देते थे। मगर एक बात संत जी के सभी अनुयाइयों को दिखती थी, स्वामी जी की डांट भी भाग्य के दरवाजे खोल देती थी।

संतजी कहते थे इस जीवन में सुख–दुःख आ रहे हैं ये हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों का प्रतिफल हैं। सुख आ रहे हैं तो निश्चित ही हमने पूर्व जन्मों में अच्छे कार्य किये होंगे और दुख आ रहे हैं तो इसका मतलब है हमने अपने पूर्वजन्मों में ग़लत काम किये होंगे। इसलिये यदि हम चाहते है कि अगले जन्म में हमें दुख न आयें तो हमें इस जन्म में सुसंस्कारी कर्म करने चाहिये। यही बात जिसकी समझ में आ गई वह बुरे कर्म क्यों करेगा।

हमारे साथ किसी ने बुरा किया और हमने अपने अंदर उससे बदला लेने की प्रवृति पैदा कर ली तो यह हमारे जीवन को अशंति से भर देगा। अतः हमें बुरे से बुरे व्यवहार करने वाले के लिये भी मन में शुभ विचार ही रखने चाहिये, अपनी शांति को हम तभी बना कर रख सकते हैं। हम ऐसे लोगों को माफ करना सीखें। हम माफ नहीं करेंगें तो मन ही मन कुढ़ते रहेंगे, जो हमारी शारीरिक, मानसिक अवस्था को प्रभावित करेगा। उसने ग़लत किया है तो उसका दण्ड उसे प्रकृति अपने आप देगी। बचपन में मां बाप भी यही सीख तो देते हैं, जो जैसा करेगा, वैसा ही भरेगा।

झगड़े का मूल कारण होती है नकारात्मक विचारधारा, यदि हम सकारात्मक तरीके से हर बात को लें तो झगड़ा होगा ही नहीं। सामने वाला ग़लत है तो उसको प्यार से समझायें, वह समझ जाएगा तो उसे अपने आप पर पछतावा होगा और कालांतर में हो सकता है वह अपने आचरण के लिये हमसे क्षमा मांगे।

जैसी करनी वैसा फल, आज नहीं तो कल।

हमें भी ध्यान रखना चाहिये कि जो हम बोल रहे हैं वैसा ही हमारा आचरण होना चाहिये। यदि हमारा आचरण, हमारी वाणी, हमारे व्यवहार हमारे विचारों के अनुरूप नहीं हैं तो सबको जल्द ही हमारे पाखण्ड का पता पड़ जायेगा। गुरुवाणी में भी कहा गया है–

'अवर उपदेसै आपि न करै, आवत जावत जनमै मरै।'

हमें आठों पहर सजग रहना पड़ेगा, अपने व्यवहार पर नजर रखनी पड़ेगी। हम ग़लती से भी किसी की चुगली न करें, निंदा न करें, न किसी की निंदा सुनें। हमारे कानों पर हमें नियंत्रण रखना पड़ेगा, आंखों पर नियंत्रण रखना पड़ेगा, जो हम देखते हैं, जो हम सुनते हैं वही हम बनते हैं। इसलिये न बुरा देखें, न बुरा सुनें और न ही बुरा बोलें तो हमारा जीवन सफल कहलायेगा।

गुरुवाणी में कहा गया है–

'मन अपुने ते बुरा मिटाना, पेखै सगल स्रिसटि साजना'

कण–कण में परमात्मा के दर्शन करना चाहिये। साथ ही साथ अपनी ग़लतियों को, बुराइयों का त्याग करते रहना चाहिये तो निश्चित ही हम दैत्यत्व से देवत्व को प्राप्त करेंगे। रत्नाकर डाकू ऋषि बन सकता है तो हम तो साधारण इंसान हैं हम तो आसानी से परम पद को प्राप्त कर सकते हैं।

स्वामीजी तो दिन रात प्रभू का स्मरण करते रहते थे, वे अजपा जाप की स्थिति में आ गये थे। उठत बैठत सोवत नाम, यही तो अजपा जाप की स्थिति है, मगर यह तभी हो सकता हैं जब हम शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक दृष्टि से स्वस्थ हों। इसके लिये नित्य योग, ध्यान, प्राणायाम इत्यादि का प्रयोग कर सकते हैं! स्वस्थ तभी रहेंगे, जब मेहनत करेंगे।

हमारे अंदर कृतज्ञता का भाव भी होना जरूरी है। यदि किसी ने हमारी सहायता की है तो हमें उसके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहना चाहिये और समय रहते हमें भी मौका देखकर उसकी सह्दयता से सहायता करनी चाहिये।

आज मोबाइल और टीवी का हमारे पारिवारकि रिश्तों, समाजिक रिश्तों पर गहरा असर होता जा रहा है। हम व्यक्तियों से सम्मुख होने पर भी टीवी के सीरियल और मोबाइल के आकर्षण में फंसे रहते हैं जो किसी भी तरह उचित नहीं है। यहां तक कि भोजन करते वक्त भी हम मोबाइल में उलझे रहते हैं, जबकि होना यह चाहिये कि पूरा परिवार एक साथ बैठकर बातें करें, दिन भर के अनुभवों को एक दूसरे से साझा करे, किसी सदस्य की कोई परेशानी है तो मिलकर उसका निदान करे।

झगड़ों की असली जड़ तत्काल प्रतिक्रिया होती है। यदि हमसे कोई बुरा व्यवहार करता है तो हमें तत्काल प्रतिक्रिया नहीं दिखानी चाहिये। चुप रह जाना चाहिये। परिणामस्वरूप जिसने ग़लत व्यवहार किया है उसे जब अपनी ग़लती का अहसास होगा तो निश्चित ही वह क्षमा याचना कर लेगा।

स्वामीजी कहते थे आप में से जो व्यक्ति भविष्य के लिये कुछ न कुछ बचाता रहता है, वह प्रतिकूल परस्थितियां आने पर अपने परिवार को बचा लेगा। मगर यदि हमारी बचत करने की आदत नहीं है तो फिर हमें किसी के सामने मांगने जाना पड़ेगा ओर सच तो यह है कि मंगते की कोई भी इज्जत नहीं करता।

स्वामी जी कहते थे दोस्ती भी सोच समझकर करना चाहिये। दोस्त ऐसा होना चाहिये जो विकारों से दूर हो। विकारी पुरूष की दोस्ती जी का जंजाल बन जाती है।

हमें सत्गुरुओं की शरण में अपने आपको समर्पित करना चाहिये। शरणागत पर ही प्रभू की कृपायें बरसती है।

स्वामी जी हमेशा गुरुवाणी की पंक्तियां दोहराते थे–

करण कारण प्रभु एक है, दूसर नहीं कोइ,
तुम माता पिता हम बारक तेरे, जो तुध भाए साई भली कार

स्वामीजी सन्यासी बनाने में विश्वास नहीं करते थे। वे हमेशा कहते थे सन्यासी मत बनना अपनी कमाई का ही खाना, गेरूए कपड़े पहनने से कोई साधू नहीं हो सकता। सेवा मार्ग ही पकड़ो और अपनी अंतिम श्वास तक सेवा मार्ग पर चलते रहो। कितना न सुन्दर उपदेश है यह स्वामी जी का मैने भी अपने लिखे भजन में कामना की है–

मेरे अपने निकट हों, हाथों में दान घट हो
मेरे पग सेवा पथ पर हो। फिर प्राण तन से निकले।

वे कहते थे दान के पैसों से यदि कही भंडारा भी चल रहा है, आपने प्रसाद के रूप में यदि कुछ ग्रहण किया है तो जितना ग्रहण किया है, उससे ज्यादा वहां दान देकर आएं

ताकि अन्य लोगों को भी निरन्तर उसका लाभ मिलता रहे। कड़ी से कड़ी जुड़ती जाये। वे कहते थे–

पूजा के आंत के बड़े बड़े दांत,

भजन करो तो उबरो, नहीं तो फाड़ेगा आंत।

हम किसी भी धार्मिक स्थान पर जाये तो यथा शक्ति कुछ देकर ही आयें। यदि देने की शक्ति नहीं है तो सेवा कार्य में लग जाओ। धन दान करने वाले को तो पुण्य लाभ मिलेगा परन्तु यदि आपने वहां पर सेवा कार्य किया, तो वहां आपके सेवा की मजदूरी का फल भी मिलेगा। अतः खुद आगे बढ़कर सेवा मांगनी चाहिये। हमें यह इंतजार नहीं करना चाहिये कि कोई कहेगा तो सेवा करेंगे। सेवा स्वतःस्फूर्त होनी चाहिये। सेवा करने वाले का ह्रदय निर्मल होता जाता है, करूणा से भर जाता है। श्री अर्जुनदेव जी की वाणी है

सेवा करत होइ निहकामी, तिस कउ होत परापति सुआमी

सेवा का प्रतिफल होता है ज्यादा सेवा। यदि हमें प्रतिफल में सेवा के मौके ज्यादा मिलते हैं तो सोच लें कि आपकी सेवा सत्गुरु के दर पर कबूल हो रही है। हमारी सेवायें प्रभू के खाते में जमा होती जाती हैं। कोई भी सेवा की हो, मन की हो, धन की हो, कभी भी अस्वीकृत नहीं होती। हम जितनी ज्यादा सेवा करेंगे हमारा मन उतना ही करूणा से भरता जायेगा। राह चलते चलते भी सेवा के मौके मिलते जाते हैं, जब भी मौका मिले सेवा को लपक लेना चाहिये।

कोरोना काल में तो सेवा के अनेक द्वार खुले। दानवीरों ने जमकर दान दिया। लोगों में एक बार फिर से सेवा की भावना जागी। लोगों ने क्या नहीं दिया, अनाज, कपड़े, ऑक्सीजन, दवाईयां, धन सब कुछ सेवा में यथा शक्ति लगा दिया। कुछ लोगों ने तो बगैर फल की, नाम की कामना के काम किया। गरीब से गरीब लोगों ने दान दिया। इस काल में नवयुवक परिषद के एक विद्यार्थी ने भी ग्रुप बनाकर दोस्तों से फण्ड इकट्ठा किया और 370 परिवारों को 500 रू. की अनाज किट बनाकर बांटी। लॉक डाऊन खुला पैसे बच गये तो पांच महिलाओं को पैर लगवाकर मोटर लगवाकर, सिलाई मशीनें बांटी। जिसने भी दान दिया, सेवा की, कहीं पर भी अपना नाम नहीं बताया, किसी अखबार में समाचार नहीं डलवाया, किसी सोशल मीडिया पर कोई फोटो नहीं डाला गया। काम में कितनी खुशी मिली यह तो वही लोग जानते है जिन्होंने तन,मन, धन से सेवा यज्ञ में अपनी आहुतियां डालीं। एक और परिवार ने अपने पारिवारिक सदस्यों से संग्रह कर 60 लोगों तक यह सेवा प्रदान की। ये सब कार्य स्वतः स्फूर्त तरीके से संपन्न किये गये। शुक्र है कि यह विपदा की घड़ी हमें अपने जीवन की नश्वरता को बता गई।

स्वामीजी के आशीर्वाद से संचालित जीव सेवा संस्थान पक्षियों के लिये दाना और कुत्तों के लिये उनके भोजन की व्यवस्था करता है। अमीर से अमीर आदमी भी उसको फ्री में लेना चाहता है। प्रभू ने सब कुछ दिया है, मगर दान की प्रवृति नहीं दी। शास्त्रों में कहा गया है कि अपनी कमाई का दशांष दान देना चाहिये। करोड़ों रूपये कमाने वाले दान नहीं देते अपनी तिजोरियों में भरते जाते हैं। वे यह नहीं सोचते एक करोड़ कमाया तो 10 प्रतिशत यानि 10 लाख दान में दे दिया तो भी 90 लाख तो बच गया न। उनको 10 लाख दिखते हैं, मगर 90 लाख नहीं दिखते। ये सोच का दिवालियापन है। बचपन में एक गाना सुना था।–

गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा, तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा।





संत जी के साथ





संत जी के साथ सिद्ध भाऊ





पूर्व मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री बाबूलाल गौरजी संत जी के साथ





अनुयाईयों को दर्शन देते स्वामी जी





दो संतो का मिलन दादा जशन वासवानी



प्रसाद वितरण करते हुए



यूरोलोजिस्ट डॉ. गोपाल बदलानी (यूएसए)





संत लीला शाह एवं संत हिरदाराम जी





लोकार्पण करते हुए संत जी





सेवा सदन हॉस्पिटल में स्वामी जी





गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करते स्वामी जी



चंवर डुलाते स्वामी जी





हवन की तैयारी में स्वामी जी

यह अनुभव मैने किया है, 6 रू. से दान शुरू किया था आज सतगुरुओं की महर नजर से भगवान ने बहुत कुछ दिया हैं। आप भी प्रयोग करके तो देखें।

हम जो करें उसके बदले में हम वाहवाही न चाहें, यदि हमने अपने नाम का प्रचार करने के लिये दान दिया तो हमारा वह दान व्यर्थ जायेगा।

हमें गुरुद्वारों मे चलने वाले लंगरों से सीखना चाहिये कि उन लंगरों के द्वारा रोज कितने लोगों का पेट भरता है। मैंने जब इसे गूगल पर सर्च किया तो मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही। कुछ तथ्य गूगल से–

सिर्फ स्वर्ण मंदिर में सामान्य दिनों में 50000 व्यक्ति लंगर खाते हैं और यह संख्या त्यौहारों पर एक लाख से ज्यादा हो जाती है। भोजन सात्विक ढंग से और साफ–सफाई से बनता है। सामान्य रोटी, दाल, चावल, सब्जी और खीर का प्रसाद होता है।

दो भोजन गृह होते हैं जिसमें एक टाईम पर 50000 व्यक्ति लंगर खा सकते हैं वे नीचे जमीन पर दरियों पर अनुशासनबद्ध तरीके से बैठकर भोजन करते हैं।

90 प्रतिशत सेवादारी स्वेच्छा से अपनी निःशुल्क सेवायें देते हैं। लगभग 300 सेवादार स्थायी रूप से काम करते हैं।

दो रसाईघर होते हैं। यहां पर 11 बड़े बड़े तवे हैं आटा गूंथने के बहुत सारे बर्तन और मशीने लगी हुई हैं सामान्यतः सेवादार हाथ से ही सेवा करके खाना बनाते है। छुट्टी त्यौहारों के दिन रोटी बनाने की मशीन जो कि दानदाताओं ने दान दी है, का उपयोग किया जाता है जो कि 1 घंटे में 25 हजार रोटियां बना देती है।

नित्य प्रति 50 क्विंटल गेहूं, 18 क्विंटल दाल, 14 क्विंटल चावल, 7 क्विंटल दूध, सब्जियां लगती हैं लगभग 1000 सिलेंडर भोजन पकाने में खर्च होते हैं।

यह सामग्री देहली से या स्थानीय बाजार से खरीदी जाती है। लोग वस्तु के रूप में या नगदी के रूप में दान देते है।

बनी हुई वस्तु यदि बच जाती है तो उसे फ्रिज में रख दिया जाता है। जिसकी क्षमता 7 क्विंटल तक होती है।

हर प्लेट को दोबारा प्रयोग में लाने से पहले 5 बार धोया जाता है जो कि सेवादार करते हैं। उनके द्वारा की गई सेवा की कोई दूसरी मिसाल मिलना मुश्किल है।

स्वामीजी कहते थे यदि हमें कोई इज़्ज़त देता है तो हमारा भी फर्ज़ है कि हम प्रत्युतर में इज़्ज़त दें। यदि कोई हाथ जोड़ता है तो हमें भी हाथ जोड़ कर उतर देना चाहिये।

कर्नल नारी पारवानी बताते हैं कि मिलेट्री में यदि कोई छोटा कर्मचारी, बड़े अधिकारी को सेल्यूट मारता है तो बड़ा अधिकारी भी उसका प्रत्युतर देता है। यह भारतीय सेना की शानदार परंपरा है।

यदि हमें किसी ने कुछ दिया है तो हमारे ऊपर उसका कर्ज़ है। यह कर्ज़ ही रह जायेगा यदि हमने दी हुई वस्तु का सदुपयोग नहीं किया। हम दी हुई वस्तु का सदुपयोग करके दिये गये दान के कर्ज़ को कम कर सकते हैं पुस्तक मिली है तो उसे पढ़ना है, पेन मिली है तो उससे लिखना है।

आगरे के एक दर्वेश ने एक बार संत जी को फोन पर कहा मेरे पास बहुत से शास्त्र इकट्ठे हो गये हैं, मुझे आपके अलावा कोई सुपात्र नज़र नहीं आ रहा जिसे मैं दे सकूं। मुझे मौका दीजिये। स्वामीजी को लगा कि वे भी उनका सदुपयोग नहीं कर पायेंगे अतः उन्होंने मना कर दिया। स्वामीजी तो दिन रात नाम जपने में लगे रहते थे। समय

पाकर स्वामीजी उनसे मिलने आगरा गये। उन्होंने उनको अपनी मनस्थिति से अवगत कराया और कहा आप कोई एक शास्त्र दे दीजिये, उसमें से मैं कोई एक अच्छा वचन निकालूंगा और जीवन में अपनाऊंगा दर्वेश ने एक शास्त्र दे दिया। स्वामीजी ने अरदास कर एक वचन निकाला वचन में निकला

'जिस काम को करने में मन को मज़ा आये और
मजे का अंत दुःख रूप हो, ऐसे काम का त्याग करें '

उपरोक्त वचन संतजी ने अपने जीवन में अपनाया और सूत्र दिया।

'मज़ो थो मारे, त्याग थो तारे' (मज़ा मारता है, त्याग तारता है)।

स्वामीजी कहते थे कि लोग दिन रात मेहनत करते है, पैसा–पैसा करके जोड़ते हैं, उस पैसे से मनुष्य के मन में पैसे के लिये वासना पैदा होती है और अंत में जोड़ने वाला सोचता है कि पता नहीं मेरे वारिस मेरे बाद इन पैसों को सदुपयोग करेंगे या मौज मस्ती में उड़ा देंगे। वे कहते थे–

उस दिन देर न होगी पल-पल की
जिस दिन तेरी चल-चल होगी।

इसीलिये स्वामीजी कहते थे मेहनत करें, गुरुवाणी को याद करें वही अंत समय में काम आयेगी। स्वामीजी कहते थे अब मेरी आंखे कमजोर हो गई हैं, मैं पढ़ नहीं सकता परन्तु क्योंकि मुझे गुरुवाणी कंठस्थ है इसलिये निरंतर जाप रूप में अंदर चलती रहती है।

मुझे याद है नवयुवक परिषद में एक टाईपिंग मैनेजर बहन पदमा आहूजा थीं जो मुझे गुरुवाणी में जाने के लिये प्रेरित करती रहती थीं। मेरे जीवन का मूलमंत्र था **'कर्म ही धर्म है।'**

मैं हँस के टाल देता था। श्री पुरूषोत्तम पारवानी जी, श्री दिलीप सीतलानी जी एवं सिद्धभाऊ जी भी मुझसे कहते थे कि पंछी को उड़ने के लिये दो पंखों की जरूरत होती है, मगर तुम्हारे पास एक पंख है जो बहुत मजबूत है, मगर दूसरा पंख धर्म का होना भी जरूरी है तभी तुम मोक्षगति को प्राप्त कर पाओगे। कहते है न पत्थर पर बार–बार रस्सी घिसती है तो पत्थर पर भी रस्सी के निशान पड़ जाते हैं। बार–बार यह सुनते सुनते मुझ पर असर हुआ और एक दिन मैंने बहन पदमा से बोला मुझे गुरुमुखी सिखाओ। उसके कहने पर मैं बाल–पोथी ले आया, जिसमें गुरुमुखी के साथ हिंदी के शब्द लिखे हुए थे। वे मुझे बैठ कर पढ़ाने लगीं तो मैंने कहा ये तो सरल है। खुद कोशिश करता हूं। एक घंटे की कोशिश में ही मैं गुरुमुखी पढ़ना सीख गया और फिर तो ऐसी लगन लगी कि मैं गुरुवाणी में गोते लगाने लगा। गुरुवाणी कंठस्थ होती गई। आज श्री जपुजी साहिब, श्री जप साहिब के 100 नाम, सुखमनी साहिब, शब्द हजारे, रहरासि साहिब, कीरतन सोहिला, नवें महले के श्लोक (गुरुवाणी आसा दी वार का 30 प्रतिशत भाग कंठस्थ है। इस प्रक्रिया में एक और पूज्य बहन नेहा शामनानी से मैंने सीखा कि चलते–फिरते हुए भी पाठ को मन में स्मरण करते रहना चाहिये। आज नित्य प्रति उपरोक्त गुरुवाणियों का पाठ निरन्तर चलता रहता है। उठत, बैठत, सोवत नाम ही मंत्र बन गया है जीवन का। पूज्य बहन पदमा आहूजा (मेरी गुरुवाणी की पहली शिक्षिका, प्रेरणा स्त्रोत हैं)। पूज्य बहन नेहा शामनानी जी से चलते चलते मन ही मन गुरुवाणी का जाप करने का मंत्र मिला है ऐसी बहनों के श्री चरणों में शत–शत नमन करता हूं।

सिंध में ऋषि दयाराम गिदूमल जी न्यायाधीश के पद पर कार्य करते थे। उनके

परम मित्र उनके पास आये और आकर रोने लगे, कहने लगे मेरे बेटे द्वारा कुसंगत में पड़ कर किसी की हत्या कर दी है। आपके पास उसका प्रकरण अदालत में आयेगा। आप मेरे परम मित्र हैं। मेरी आपसे विनती है कि आप जब निर्णय लिखें तो फांसी की सजा न देकर कोई और सजा दीजियेगा। ऋषि ने बोला मुझे सजा देना नहीं आता, " तो न्याय की कुर्सी पर बैठता हूं और परमात्मा मेरे हाथ से सजा लिखवाता है, मैं तो निमित्त मात्र हूं। मगर फिर भी उनके मित्र, उनसे हाथ जोड़कर विनती करते रहे। तब उन्होंने कहा आप मेरी कुर्सी पर बैठ जाओ, आप मुकदमा सुनो और फिर आप जो फैसला लिखेंगे मैं उस पर बगैर सवाल किये हस्ताक्षर कर दूंगा। मित्र खुश हो गया, फैसले का दिन आया उसने वारदात सुनी और अपना फैसला लिखा। ऋषि ने पूछा आपने फैसला लिख लिया आइये मैं इस पर हस्ताक्षर कर दूं। उन्होंने हस्ताक्षर किये, तो उन्होंने कहा, अब पढ़कर सुनाओ तो उस फैसले में उनके मित्र ने अपने बेटे के लिये फांसी देने की सजा ही लिखी थी। सचमुच में न्याय की कुर्सी पर बैठने वाला प्रभू का स्वरूप हो जाता है।

ऋषि दयाराम गिदूमल जी रोज सुखमनी का पाठ करते थे। एक बार वे पाठ कर रहे थे तो उनके घर में उनकी हत्या के इरादे से डाकू घुस आये क्योंकि उन्होंने उनके साथी को मौत की सजा दी थी। ऋषि दयाराम ने उनसे कहा बैठो मैं पाठ कर रहा हूं, फिर बात करते हैं। उन्होंने निर्विकार भाव से पाठ किया। सोच रहे थे ये डाकू मुझे मार देंगे। परिणाम यह हुआ कि उन डाकुओं को उनमें देवताओं के दर्शन हुए, उनका तेज देखकर वे चुपचाप उनको प्रणाम करके चले गये।

हमें अपने प्रभू पर भरोसा होना चाहिये, यदि प्रभू पर भरोसा है तो कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। **'मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है, वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है'**

यह भाव हमारे अंदर जितना मजबूत होगा, उतना ही हम आत्मसंतुष्टि से भरते जायेंगे। अशांत तो वे होते हैं जिनको अपने परमात्मा पर भरोसा नहीं होता। एक साधू को हत्या के झूठे जुर्म में फंसा दिया गया, उस पर कोर्ट में केस चला। साधू हरिद्वार का था। अंत में उसको फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी का दिन आया। उसे फांसी के तख्ते पर खड़ा कर गले में फंदा डाला गया, मगर चमत्कार हुआ, अप्रत्याशित रूप से फंदे की रस्सी टूट गई और साधू धड़ाम से नीचे जा गिरा। फांसी के फंदे पर चढ़ते हुए भी उसे उस परमात्मा पर अथाह विश्वास था, वह फांसी पर जाते हुये, जेल में रहते हुये नारायण, नारायण का जाप करता रहता था। रस्सी टूटते देख न्यायाधीश भी अचंभे में पड़ गया और फिर उसने भी त्यागपत्र देकर सन्यास ले लिया। यह होती है विश्वास की शक्ति।

गुरु तेगबहादुर जी ने गुरुवाणी में अनेक जगहों पर कहा है 'रे मन राम सिउ कर प्रीत' हम वही भूल गये है। हम अपनी मौत को भूल गये हैं। हमारी भी मौत आनी है। मौत का कोई समय निश्चित नहीं होता। अमेरिका में 8.14 रिक्टर स्केल का भूकंप आया, 2 लाख एकड़ जंगल में आग लग गई, न्यूयार्क बाढ़ से घिर गया। एक क्षण में हंसता–खेलता जीवन मौत के आगोश में समा गया। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, कोई अचानक आता है, हम जा रहे हैं, पीछे से टक्कर मार कर चला जाता है। हम विकलांग हो जाते हैं, हमारा दोष न होते हुए भी। यह क्या है, यह हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों का प्रारब्ध होता है, हमारे दुष्कर्मों का। कई बार हमारे साथ कोई दुर्घटना घटित हो जाती है, स्कूटर स्लिप हो जाता है। लेकिन हमें खरोंच भी नहीं आती। ऐसा लगता है जैसे हमारे सद्गुरुओं ने, हमारे परमात्मा ने अपनी बाहों का सहारा देकर हमें बचा लिया है। यह

हमारे सत्कर्मों का फल होता है।

सिंध में मार्शल ला लगा हुआ था और संत जी जंगल में तपस्या करने चले गये थे। बीहड़ जंगलों में, डाकुओं के बीच रहते थे, डाकुओं ने उनको एक पेड़ पर झोपड़ी बनाकर दी थी। उस पर बैठकर तपस्या करते थे क्यों कि नीचे जमीन पर जंगल में सांप, बिच्छू, जहरीले कीड़े, खूंखार जानवरों का डर था। संतजी दिन में एक बार मचान से उतरते , हाथ में डंडा लेकर ठक–ठक करते जिससे कीड़े मकोड़े भाग जायें। वे पास के गांव में जाते और एक ही दरवाजे जाते अगर वहां से कुछ खाने को मिल गया तो खाते नहीं मिला तो सोचते आज प्रभू की मर्जी है भूखा रखने की तो वापस आ जाते। मगर ऐसा कभी नहीं हुआ। वो एक दिन भी भूखे नहीं रहे। डाकू लोग भी उन्हें रोज आधा किलो बकरी का दूध देते थे। यह सब इसलिये था कि संतों को अपने प्रभू पर अटूट विश्वास था।

प्रिय कृपाल हेमराजानी के पिताजी श्री मंघाराम टाइप वाले स्वामीजी के लिये शर्बत बना बनाकर प्रेम से ले जाते थे। स्वामी जी को प्रभू पर पूरा भरोसा था। जिन का अपने प्रभू पर अटूट विश्वास होता है वे सुख दुःख में समभाव रखते हैं। क्या सुख, क्या दुःख उनके लिये सब समान होते हैं। उसमें वे न होश खोते हैं, न विचलित होते हैं। स्वामीजी कहते थे–

जिन्होंने पूजा गुरुनानक शाह फकीर।
वे पीयेंगे, नित्य खंडु एं खीरु (शक्कर और दूध) ।।

प्रभू हर जगह विद्यमान हैं हम उनके साक्षात दर्शन की अनुभूति कर सकते हैं। यदि हम घर में हलवा बनायें सिर्फ खाने के लिये और दूसरा हलवा बनायें गुरु के प्रसाद के लिये, अरदास करें गुरु के आगे रखकर तो आप देखेंगे कि प्रसाद के स्वाद में अंतर आ जाता है।

महापुरूषों की नजर ही हमें निहाल कर देती है, हमें उन्हें कुछ बताने की जरूरत ही नहीं पड़ती। बाबा ननसिंह, महर्षि रमण, हमारे गुरुदेव नजरों ही नजरों में निहाल कर देते हैं।

'जिथे महर तेरी, उत्ते खुशियां ही खुशियां'

मेहर होनी चाहिये सद्गुरुओं की, परमात्मा की, तो सांसारिक लोग हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

कभी–कभी अच्छे लोगों पर भी विपदायें आती हैं और बुरे लागों के साथ अच्छा होता है। तब मन में शंकायें उभरती हैं। वह सब जो हम इस जन्म में प्राप्त कर रहे हैं, वह हमारे पूर्व जन्मों के कर्मो का प्रतिफल होता है, इसलिये हमें विचलित नहीं होना चाहिये।

जिस मन गुरु की प्रतीत, तिस जन आवे हर प्रभू चीत।
जो सुख में सिमरन करें, तो दुःख काहे को होय।

असल में हम प्रभू का सिमरण भूल गये हैं। परिवार को खुश रखना, दोस्तों को खुश रखना, संसार को खुश रखना तो हमें याद है मगर प्रभू को याद करने का समय ही नहीं है। हम कृतघ्न हो गये हैं, उसकी दी हुई सौगातों को भूल गये हैं इसीलिये दुःख हमारे आसपास आ जाते है।

रात पिआरी विसिरिआ दातार

हमें सद्गुरुओं के पास जाना है, मांगना नहीं है। सद्गुरुओं को सब मालूम होता है।

हम अपने सद्‌गुरु में विश्वास रखते हैं मगर उनके वचनों का पालन नहीं करते, यही हमारे दुःखों का कारण है। प्रभू ने हमें आर्थिक रूप से, शारीरिक रूप से, मानसिक रूप से, स्वस्थ रखा है उसके बाद भी हम अपने प्रभू के प्रति कृतज्ञता का भाव नहीं रखते। माना हम कृतध्न नहीं हैं, मगर कृतज्ञ भी तो नहीं हैं, हम दुःखी इसीलिये हैं।

'पर बुरा न राखे चीत, दुःख न लागे भई मीत'

दूसरों का बुरा नहीं सोचेंगे तो हमारा मन निर्मल बना रहेगा। निर्मल मन होगा तभी तो उसमें प्रभू का वास होगा। यदि हमारा हृदय कुटिलताअें से भरा होगा तो उस कुटिलता के कचरे में प्रभू कैसे विराजमान होंगे यह सोचने की बात है। सुखमनी साहिब में कहा गया है,

'सुनत कहत होत उधार आपहिं तरे लोकहि निस्तार।'

हमें महापुरूषों के वचनों को न केवल सुनना है, बल्कि वैसा अचारण भी करना है। यदि हम अच्छा आचरण करेंगे तो परमात्मा हमारे परिवार का भी भला करेंगे। हमारे अच्छे आचरण से दूसरे भी प्रेरित होंगे और अच्छा आचरण करने वालों की एक चेन बनती जायेगी। मगर प्रयास तो करना पड़ेगा न किसी को। जो प्रयास करेगा, वह समाज का अनुकरणीय बन जायेगा। हम लोगों के बीच में मनमुटाव का मुख्य कारण हमारी वाणी होती है। यदि वाणी कटु हो तो वह नाग बन कर डस लेती है। हमारा अपना बच्चा भी यदि कोई ग़लती करता है तो उसे मीठी वाणी द्वारा समझायेंगे तो वह समझ जायेगा। वह दूसरी बार ग़लती करने के बाद, सौ–सौ बार सोचेगा। मगर यदि हमने अपनी वाणी पर संयम नहीं रखा तो वह ग़लत रास्ते पर चलता रहेगा। छिप–छिप कर बड़ी–बड़ी ग़लतियां करेगा। जोश में होश नहीं गंवाना चाहिये। संतों के सत्वचन हमारे ग्रंथों में भरे पड़े हैं। संतों के आचरण और उनकी आज्ञा को भी हमें ध्यान में रखना होगा।

क्षमा, गरीबी, बंदगी, यह संतों की है रीति।

किसी ने हमें कुछ ग़लत कह दिया तो उसका सीधा असर हमारे मन पर होता है। उनका मन विचलित हो जाता है, जो सत्संग में नहीं आते हैं। उनके मन में तत्काल विचार आता है, बदला लेने का, बदला फिर और बवाल पैदा करता है, जिसका परिणाम यह होता है कि हम क्रोध के दलदल में धंसते चले जाते हैं किंतु यदि हम सत्संग में आते हैं तो यह मन में विचार आना चाहिये कि हमारे पूर्व जन्म के किसी अपराध के कारण यह अपमान मिला है, चलो इस जन्म में हिसाब बराबर हो गया। यह सोचकर हम शांत हो जायेंगे और हमारे पूर्व जन्म के पाप धुल जायेंगे।

सिर्फ सत्गुरु और भगवान ही ऐसे होते हैं, जिनसे कोई ग़लती नहीं हो सकती। इंसान तो गलतियों का भण्डार है। इन्सान को सोचना चाहिये कि दूसरे की ग़लती पर वह विचलित न हो, क्योंकि उसकी गलतियों पर दूसरे भी विचलित हो सकते हैं। जब हम अपने परिवार में एक दूसरे की गलतियों को नजर अंदाज कर सकते हैं, तो साथियों की अनजाने में की गलतियों को नजर अंदाज क्यों नहीं कर सकते। हम एक दूसरे से मिलते हैं उसके पीछे हमारे पूर्व जन्मों के सम्बंध ही हैं। यदि किसी ने हमको भला बुरा कहा है सोचा है, तो उसका कारण पूर्व जन्म के हिसाब को बराबर करने के लिये कहा है, यही सोच कर ही हमें शांत हो जाना चाहिये। तत्काल प्रतिक्रिया ही हमारे अंदर अशान्ति पैदा करती है।

गुरु की करणी गुरु भरेगा, चेले की करणी चेला भरेगा, उड़ जायेगा हँस अंकेला। हमें अपने अंदर क्षमा का गुण पैदा करना चाहिये। क्षमा करना सीखेंगे तो हमारा चित्त

निर्मल बनेगा। हम क्षमा नहीं करेंगे तो अंदर ही अंदर उबलते रहेंगें। और सत्संग में ध्यान ही नहीं लगेगा। सत्संग में ध्यान नहीं लगेगा तो जो भी कहा जा रहा है वह अंदर में बैठेगा नहीं, अंदर में बैठा नहीं तो आचरण में कैसे आयेगा। श्री सुखमनी साहिब में कहा गया है '**करि किरपा जिसकै ह्रदे गरीबी बसावै, नानक इहा मुक्तु आगै सुख पावै।**' हमें अपने अंदर नम्रता का गुण धारण करना पड़ेगा। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी हम संतों का जीवन जी सकते हैं। गेरूआ वस्त्र पहनने वाला ही संत हो जायेगा ऐसा नहीं है। हमें अपने जीवन में उठते, बैठते, सोते, जागते उस प्रभू का नाम स्मरण करना चाहिये। हर कार्य जो हम कर रहे हैं वह प्रभू की आज्ञानुसार हो रहा है। यह भाव जिस दिन ह्रदय में आ गया तो हम भी संत हैं यह पक्का समझ लेना। श्री सुखमनी साहिब के अनुसार –

आठइ पहर प्रभू पैखहि नेरा, मिटे अज्ञान बिनसै अंधेरा।

अर्थात् हर समय हमें अपने को चारों तरफ प्रभू से घिरे हुए महसूस करना चाहिये।

परनिंदा करने से जिसकी निंदा की उसके पाप हमारे तरफ आ जाते हैं और हमारे पुण्य उसकी तरफ चले जाते हैं अतः निंदा से बचना चाहिये। कोई भी व्यक्ति जो ग़लत काम करता है उसके पीछे उसका अज्ञान ही होता है। ज्ञानी पुरूष तो ग़लत काम कर ही नहीं सकता। अज्ञानी पुरूष हमेशा अशांत चित्त रहता है। हमें प्रभू के सामने अरदास करते समय ध्यान रखना चाहिये कि **तुम मात-पिता हम बारिक तेरे, तुमरी कृपा में सूख घनेरे।** जब यह भाव हममें आयेगा तो हमारे अंदर आत्मसंतोष उभरेगा, हम दिन भर प्रफुल्लता महसूस करेंगे।

स्वामीजी ने मुक्ति का शार्टकट बताया है। वे कहते थे जिसने भी हमारा बुरा किया है उसके लिये भी जब हम अपनी प्रार्थना में बैठें तो प्रभू से कहें प्रभू इस बंदे को सुमति देना क्योंकि वास्तव में वह अपने लिये बबूल बो रहा है, जो उसके जीवन को कांटों से भर देगा। अतः इसको सुमति देना कि यह अपने आचरण को बदल सके।

स्वामीजी कहते थे हमें अपने मन में किसी का भी अहित नहीं सोचना चाहिये। हमारा प्रयास होना चाहिये कि हमारे कारण कोई दुःखी न हो। यही प्रभू की सबसे बड़ी भक्ति है। बहुत से लोग अकारण ही पशु पक्षियों को सताते रहते हैं। उनके अगले जन्म में वे ही उससे उसका हिसाब चुकायेंगे। अशुभ कर्म का फल हमेशा अशुभ ही आयेगा। शुभ कर्म का फल शुभ ही आयेगा। शुभ कर्म का फल सुख और अशुभ कर्म का फल दुख रूप में आता है। शुभ कर्मो से प्रभू के चरणों में स्थान मिलता है यह निश्चित है – '**सेवा करत होत निहकामी, तिसको प्राप्त होत स्वामी।**'

हमें सब कुछ मिल सकता है, प्रभू के सच्चे स्मरण से। मनुष्य जीवन मिला ही इसलिये है कि हम परोपकारी जीवन जियें। चौरासी लाख योनियों में फिरने के बाद हमें मनुष्य का जन्म मिला है। इसे व्यर्थ न जाने दें। कुछ लोग कहते हैं कि यह हमारे मन का भ्रम है। मगर शास्त्र जिन्होंने लिखे हैं उन्होंने ऐसे ही नहीं लिखे हैं वरन् पूरे ब्रहमाण्ड की जानकारी प्राप्त करने के बाद ही लिखे हैं। उन पर अविश्वास करने का कोई कारण ही नहीं है। एकाग्रता ही हमें प्रभू से मिला सकती है। चंचल चित्त से हम प्रभू को नहीं पा सकते। आबूधाबी के सेठ जेसाराम आसूदानी जी, जो अब अहमदाबाद में रहते हैं, ने एक बार सिद्धभाऊ को एक टेपरिकार्डर दिया था। क्योंकि स्वामीजी माइक और टेपरिकार्डर नहीं रखने देते थे, अतः वे टेपरिकार्डर अपनी बनियान में छिपा के माइक्रोफोन की तार कनेक्ट कर देते थे परिणामस्वरूप स्वामीजी के प्रवचनों के चालीस ऑडियो उन्होंने रिकार्ड कर लिये। हर आडियो 30 मिनट का है। गुरुदेव ने हमें जो रास्ता दिखाया हैं

उसी रास्ते पर हमें स्वयं चलना पड़ेगा। यदि हम उस रास्ते पर चलेंगे तो निश्चिय ही हमारे बाल–गोपाल उस रास्ते पर हमारे आचरण का अनुसरण कर आगे बढ़ेंगे।

एक बार अर्जुन ने श्री कृष्ण भगवान से पूछा यह मनुष्य जन्म क्यों मिला है तो श्री कृष्ण भगवान ने उत्तर दिया कि पूर्वजन्म में किये गये शुभ और अशुभ कर्मों का फल भोगने के लिये ही प्रभू ने यह मनुष्य जन्म हमें दिया है। यही बात शिव शान्ति आश्रम लखनऊ के संत शिरोमणि ने कही है कि ज्ञान का फल सुख है और दुःख का कारण अज्ञान है। दुःख को दूर करने के लिये दान करें। और नाम का स्मरण करने से दुख कटते जाते हैं और दुःखों का अहसास कम होता जाता है। दान भी तीन तरह का होता है तन का, मन का और धन का। मन का दान सबसे उत्तम होता है। दूसरों के दुख देख कर हममें करूणा जागे और हम उसके दुख को कम करने का यथासंभव प्रयास करें, मीठे बोल बोलकर, ढाढ़स बंधाकर, कंधे पर स्नेह भरा हाथ रखकर, तो यह भी बड़ा दान है। गुरुवाणी में भी कहा गया 'दुःख दारू सुख रोग भया'। दुख हमारे पूर्वजन्मों के अशुभ का फल होता हैं। दुःख आने पर हमें प्रसन्न होना चाहिये कि हमारे पाप कट रहे हैं, मगर हम विचलित हो जाते हैं। दुःख हमेशा रहने वाला नहीं है। ऐसी कोई रात नहीं जिसका नहीं होता सबेरा। दुख के बाद सुख आने वाला है, यह दृढ़ निश्चय हमें अपने ह्रदय में संजो कर रखना चाहिये तो दुःख हमें विचलित नहीं कर पायेंगे।

हमें प्रभू पर विश्वास रखना चाहिये और प्रभू की तरफ जाने के लिये सत्कमों का सहारा लेना चाहिये। प्रभू हमें आगे बढ़कर गले लगाने के लिये तत्पर बैठे हैं लेकिन कदम तो हमें बढ़ाने पड़ेंगे। प्रभू ने हमें अपनी लीलामयी माया जाल में फंसा रखा है। सुख क्षणिक होते हैं, उन सुखों में बहकर हम अपने प्रभू को याद करना भूल जाते हैं।

अनेक रूप माया के हेत,

माया अनेक रूपों में हमें प्रलोभित करती रहती है। क्षणिक मजा, स्थायी सुख यह प्रकृति का नियम है। हमारे पूर्व जन्मों के संस्कार ही हमें अज्ञान की तरफ ढकेल देते हैं। जानते हैं, जो हम कर रहे हैं वह सही नहीं है। पर निंदा करना, मौज मस्ती में रहना, अखाद्य पदार्थों का सेवन करना, नशों की गिरफ्त में जकड़ जाना, यह जानते हुए कि जो कर रहा हूं वह ग़लत है, मगर फिर भी हम उसमें घिरते जाते हैं। उसी में आनन्द आता है।

क्या बजाऊं ढोल, तीन लोक एक सांस का मोल। स्वामीजी कहते थे उनका 1 मिनट करोड़ों रूपये मूल्य का है। वे दिन रात नाम जपते रहते थे। स्वामीजी कहते थे हमें मानव से ज्यादा पशु–पक्षियों की सेवा करना चाहिए। मानव की सेवा करेंगे तो स्वभाव से कृतघ्न होने के कारण मानव सेवा भी करवायेगा और अहसान फरामोश भी बना रहेगा।

एक बार उनके मन की न हो तो वे दस बातें सुना जाते हैं। मगर जीव जंतु कृतघ्न नहीं होते। भक्ति की पहली शर्त है प्रभू की रजा में राजी रहना। **'एक चुप हजार सुख'**

हमें वाद–विवाद में नहीं पड़ना चाहिये। जहां वाद हो वहां पर हमारे चुप रहने से ही हम सुख का अनुभव कर सकते है। हमें अपने आपको प्रभू के नाम जपने की तरफ अग्रसर करते जाना है। क्योंकि गुरुवाणी में भी कहा गया है–

'सगल दुःख का होवत नाश, नाम जपहु गुण तास।'

संस्मरण

सात्विक भोजन - उच्च विचार

श्रीमती तरूलता लच्छवाणी,
सहधर्मिणी एवं संस्थापक नवयुवक परिषद,
संत हिरदाराम नगर
मो. 8770317996

परमहंस संत हिरदाराम जी के चरणों में शत–शत नमन।

परम पूजनीय संतजी द्वारा कही गई कुछ अविस्मरणीय बातें मैं सबसे साझा कर रही हूं।

एक बार हम बच्चों के साथ संतजी की कुटिया में गये। सोचा था संतजी के दर्शन करने के बाद ही कुछ खायेंगे। संतजी को पूर्वाभास हो जाता था। उन्होंने हमसे कहा 'आप लोग कुछ खाकर नहीं आये हो। मैंने अपने हाथों से ज्वार की रोटियां बनाई हैं। उन्होंने स्वंय हमें ज्वार की रोटी और 1–1 गिलास छाछ दी। कहा खाकर बाद में जाना।'

एक बार वे सोनागिरी हमारे घर में आये थे। वहां हमारे बगीचे में बहुत फूल थे, मैंने फूल तोड़कर संतजी के चरणों में रखे तो उन्होंने कहा कि फूल मस्तक पर रखे जाते हैं। बाकी दक्षिणा भले ही चरणों पर।

संतजी की बातें बड़ी ही शिक्षाप्रद होती थीं। हर बार कुछ नया ज्ञान प्राप्त होता था। उनका कहना था कि मनुष्य को सदैव सादा जीवन उच्च विचार वाली नीति अपनानी चाहिये। वे कहते थे कि मैं नये वस्त्रों की अपेक्षा पुराने वस्त्र पहनना ज्यादा पसंद करता हूं। यदि वह वस्त्र थोड़ा फटा हो तो ज्यादा आनन्द आता है। कहते थे कि सादा पहनने, सादा खाने से कभी मन में बुरे विचार उत्पन्न नहीं होते। मुझे तो आज भी यही लगता है कि संतजी कहीं गये नहीं है, हमारे पास ही है। मैं उन्हें हमेशा अपने आस–पास महसूस करती हूं। जैसे एक पिता अपनी संतान की रक्षा करता है अशरीरी रूप में होते हुए भी वे भी हमारे योगक्षेम का ध्यान रखते हैं।

संतों का सच्चा दर्शन

श्री सुरेश कुमार वीधान
एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर
वेयर हाऊसिंग कार्पोरेशन, भोपाल म.प्र.
मोबाइल : 9425393240

सन् 1997 की बात है राजनीति के एक धुरंधर व्यक्ति से किसी बात को लेकर तीखी नोंकझोंक हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि एक षड़यंत्र रचकर इस विवाद में खंडवा कोर्ट में अपील दायर कर दी गई। सुरेश कुमार वीधानी अपनी ईमानदारी एवं निष्ठा तथा अपनी दानशील प्रवृत्ति के कारण स्वामीजी के अतिप्रिय अनुयायी थे। आज तक उनका किसी से वाद–विवाद हुआ ही नहीं था। वे अति सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

वे स्वामीजी के आश्रम में अमृतवेला में उठकर वहां होने वाले पाठ में भाग लेते थे और लगभग 8:30–9 बजे तक वहां के छोटे–मोटे कार्य करते हुए बाहर आते, घर पर

नाश्ता कर अपने कार्यक्षेत्र पर जाते और शाम को 7 बजे के आसपास घर पर आते। अवकाश के दिन भी उनकी दिचर्या व्यस्त रहती थी। वे गुरमुख थे।

इस वाद विवाद से वे इतने व्यथित हो गये कि उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र से लंबी छुटी ले ली और उनका मानसिक तनाव के कारण स्वास्थ्य भी खराब हो गया। देखते–देखते उनके तीन महीने, तीन युगों की तरह बीते। व्यथित मन सोच–सोच कर परेशान हो रहा था कि मेरा क्या दोष था जो इस तरह षड़यंत्र रचकर मेरे उज्ज्वल चरित्र के ऊपर लांछन लगाते हुए अदालत में केस कर दिया गया है।

इस बीच उनके बड़े भाई जो नास्तिक प्रवृति के व्यक्ति थे अपनी ससुराल अजमेर गये। अचानक उनके मन में विचार आया कि पुष्करराज में स्वामीजी के आश्रम हो कर आऊं। विचार को उन्होंने क्रियान्वित किया। वे बस पकड़ कर पुष्करराज में स्वामीजी के आश्रम में आये।

स्वामीजी की चरण वंदना की। कुशलक्षेम के बाद स्वामीजी ने पूछा सुरेश कैसा है? तब दौलतरामजी ने स्वामीजी को बताया कि वह तो तीन महीने से कार्यालय ही नहीं जा रहा उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है। उसका किसी से विवाद हो गया था तभी से वह अपने आपको नर्वस महसूस कर रहा है। स्वामीजी ने सुना और क्षण भर को अपनी आंखे बंद कर लीं। दौलतरामजी स्वामीजी की तरफ ही देख रहे थे। अचानक उनको स्वामीजी में श्री गुरूनानक देव की छवि के साक्षात दर्शन होने लगे। दौलतराम की नास्तिकता भी स्वामीजी का यह रूप देखकर नतमस्तक हो गई। थोड़ी देर बाद स्वामीजी ने आंखें खोलीं, दौलतराम जी को प्रसाद दिया और कहा कि सुरेश को संदेश भेजो, वह तुरन्त अकेला ही सीधा पुष्कर आये। किसी को भी साथ में नहीं लाना है।

दौलतराम जी ने अजमेर से ही अपने भाई सुरेश को फोन कर स्वामीजी का संदेश दिया। सुरेश जी की तबियत भी ठीक नहीं थी फिर भी उन्होंने बैग तैयार किया और बस के लिये निकल गये। सुरेश जी बस का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। बस आई पूरी बस भरी हुइ थी। बस में सिर्फ एक ही सीट खाली थी। सुरेश जी को बस में बीच की ही सीट पसंद आती थी और जो सीट खाली थी वह भी एक ही थी और उनकी पसंद के अनुरूप थी। सुरेशजी इन्दौर पहुंचे। स्टेशन पर जाकर रिजर्वेशन की कोशिश की। उस समय हाथ से रिजर्वेशन होती थी। मालूम हुआ कि महू से जो पैसेंजर आती है उसमें चार्ट आयेगा। तभी मालूम होगा कि सीट खाली भी है या नहीं। सुरेश जी इंतजार करने लगे। ट्रेन आई। संयोग से उसमें भी एक ही बर्थ थी जो कि सुरेश जी को मिल गयी। यह सिर्फ संयोग नहीं हो सकता, स्वामीजी की लीला के कारण ही बस में भी एक सीट खाली थी और ट्रेन में भी एक ही बर्थ खाली थी जो सुरेश जी को मिल गयी।

इसे वे स्वामी जी का आशीर्वाद मान रहे थे। गुरमुख जो थे। ट्रेन सबेरे साढ़े छः बजे अजमेर पहुंची। वे सीधे आश्रम जाना चाह रहे थे मगर भाई के ससुराल वालों ने बोला आश्रम तो 9 बजे खुलेगा आराम से नहा–धोकर नाश्ता करके जाना। सुरेश जी ने ऐसा ही किया। वे सबेरे 9 बजे आश्रम पहुंचे स्वामीजी ने कहा मैने कहलवाया था कि सीधे आश्रम आना, तुम सीधे क्यों नहीं आये, अजमेर जाओ और अपना सामान यहीं पर ले आओ। सुरेशजी ने ऐसा ही किया। स्वामीजी ने उनसे कहा घर पर फोन करके कह दो कि तुम सकुशल पहुंच गये हो।

स्वामीजी लेट गये और सुरेशजी को अपने चरण दबाने के लिये कहा। सुरेश जी स्वामीजी के चरण दबाने लगे। जैसे–जैसे वे चरण दबा रहे थे वैसे–वैसे ही उनको अपने

अंदर शक्ति का संचार होता हुआ महसूस हो रहा था। उनका खराब स्वास्थ्य ठीक होता जा रहा था। उनको लगा वे साक्षात स्वामीजी के नहीं परमपिता परमेश्वर के चरण दबा रहे हैं। चरण दबाते–दबाते वे स्वामीजी को यह भी बताते जा रहे थे कि कैसे उनको, बिना कारण के, बिना ग़लती के प्रताड़ित किया गया है और उनके ऊपर खंडवा की कोर्ट में केस भी कर दिया गया है।

स्वामीजी ने सुना और कहा तू फिक्र मत कर। तुम सच की राह पर हो, तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा। सुरेश जी एक सप्ताह तक वहां पर रहे और जब स्वामी जी ने आज्ञा दी तो वे वापस संत नगरी में आ गये। स्वामी जी ने उनको आने के पहले बताया कि अभी यह विवाद और आगे बढ़ेगा। उग्ररूप लेगा। मगर चिंता मत करना सब ठीक हो जायेगा। तुम जाओ जाकर अपनी नौकरी ज्वाइन करो। सुरेश जी ने ऐसा ही किया। इधर खंडवा हाईकोर्ट का वारंट लेकर कुछ दिनों बाद पुलिस घर पर आई। घर वालों ने 3–4 बार सुरेश जी को फोन लगाया मगर वे सुन न सके तब उनके अधिकारी ने आकर उनको कहा आपके घर वाले आपको फोन कर रहे है; आपके घर पुलिस वारंट लेकर आई है। सुरेश जी घबरा गये। उन्होंने अपने मित्र एवं भोपाल के नगर के प्रतिष्ठित अधिवक्ता जोधानी जी को बताया। जोधानी जी बोले घबराने की बात नहीं है आप घर जाओ और उनको बोलो मैं स्वंय कोर्ट में हाजिर हो जाऊंगा। वे घर पर आये और वारंट लिया। पुलिस वालों से कहा मैं स्वंय कोर्ट में हाज़िर हो जाऊंगा मगर वे बोले आपको हमारे साथ ही चलना पड़ेगा। कल स्टेशन पर मिलें। दूसरे दिन खंडवा के लिये रेल्वे स्टेशन पर पहुंचते ही वहां पर फरियादी के बेटे की धमकी का सामना करना पड़ा कि 'जा तो सही सलामत रहे हो मगर लौट नहीं पाओगे सही सलामत'। वे लोग खंडवा पहुंचे, कोर्ट में न्यायाधीश के आने की प्रतीक्षा करते रहे। शाम के 4:30 बज गये मगर जज साहब का अता पता नहीं था। फरियादी ने एक सीनियर अधिवक्ता को अपना केस दे रखा था। उन्होंने भी अधिवक्ताओं से बात की मगर उस अधिवक्ता के सामने कोई भी अधिवक्ता वीधानी जी का केस लेने को तैयार नहीं हो रहा था। हारकर उन्होंने एक जूनियर अधिवक्ता से यह कहकर अपना वकालतनामा साइन करवा लिया, आप सिर्फ साईन कर दो बाकी मैं जिरह स्वयं कर लूंगा। 4:45 के आसपास न्यायाधीश जी आये। फरियादी के वकील ने बड़े ही मंझे हुए तरीके से वीधानी जी पर आरोपों की बौछार कर दी। उनके तर्क अत्यंत सटीक रूप से रखे गये थे। मगर वीधानी जी बिलकुल भी विचलित नहीं हुए। उनको अपने संत गुरूजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उन्होंने उनको सत्य पर डटे रहने का आशीर्वाद दिया था। अतः वे निश्चिंत भाव से आरोपी होते हुए भी खड़े रहे। जब विपक्ष के अधिवक्ता का वक्तव्य खत्म हुआ उसके तर्कों को सुनकर सबको लग रहा था सुरेशजी सजा से बच नहीं पायेंगे। अधिवक्ता के वक्तव्य खत्म होने के बाद सुरेश जी ने न्यायाधीश से आग्रह किया कि मुझे भी अपना पक्ष रखने का मौका दिया जाये। उनको मौका मिला। क्योंकि वे सत्य की राह पर थे अतः उन्होंने अपने पक्ष को इतनी सचाई के साथ रखा कि न्यायाधीश को लगा इनको झूठे इल्जाम में फंसाया गया है और उनको बाइज्जत आरोपों से मुक्त कर दिया गया। सुरेश जी की आँखों में खुशी के अश्रु उमड़ पड़े और उनका विश्वास अपने सत्गुरू में और भी बढ़ गया।

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी...

श्री मोहनलाल रूपचंद लालवानी
एच.पी. गैस एजेन्सी, रायसेन
पताः ई–2, 145 अरेरा कालोनी भोपाल, म.प्र
मो. 9300482202

जब मैंने मोहनलालजी से आग्रह किया कि मैं ब्रह्मलीन संत शिरोमणि हिरदाराम जी से सम्बन्धित कुछ यादें संकलित करना चाहता हूं तो उन्होंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी। उस दिन व्यस्त होने के कारण उन्होंने मुझसे मिलने और वार्तालाप के लिए दिनांक 30 नवंबर 2021, मंगलवार का दिन तय किया। दिन के 11 बजे के आसपास। मैंने कहा कि आपके घर आ जाता हूं बैठकर बाते भी करेंगे ओर दोपहर का भोजन भी साथ में आपके घर पर ही करेंगे। बोले इससे अच्छा तो कुछ हो ही नहीं सकता। मंगलवार की सुबह को 9 बजे मेरी नींद उनके मोबाइल काल आने से खुली। उन्होंने मुझे आने के बारे में याद दिलाया। मैंने कहा मैं आ रहा हूं। मोहनलाल जी से गुरू भाई होने के नाते मेरा गहरा आत्मीय रिश्ता था। बहुत वर्ष पहले उनके तीन बच्चों को मैं अपने साथ संत लीलाशाह आश्रम के पर्सनैलिटी डेवलपमेंट कैम्प में नवयुवक परिषद बैरागढ़ के बच्चों के साथ आदीपुर, गांधीधाम लेकर गया था। बड़े ही प्यारे बच्चे हैं। बहन सुनीता, विद्या और उनका बेटा मनीष लालवानी ये सब मेरे साथ गये थे। बात 25 वर्ष पुरानी होगी। मोहनलाल लालवानी सिंधु भवन ट्रस्ट, सिंधी सेन्ट्रल पंचायत भोपाल के उपाध्यक्ष भी हैं। समाज में उनका नाम जब भी किसी सामाजिक कार्यक्रम में पुकारा जाता है तो संत हिरदाराम जी के परम शिष्य श्री मोहनलाल करके बुलाया जाता है।

जब वार्तालाप शुरू हुआ तो उन्होंने बताया कि 26 अक्टूम्बर 1976 को उनका विवाह हुआ। वे अत्यन्त गरीब परिवार से थे उनके पिताजी आटे की चक्की चलाते थे। वे तीन भाई थे। उनके अन्य भाई अशोक लालवानी एवं मनोहर लालवानी जी हैं। मोहन लालवानी जी की साली का विवाह दतिया के लखीरामजी के परिवार में उनके सुपुत्र जयकुमार जी से हुआ है। वे भोपाल आये ओर मोहनलालजी से आग्रह किया कि बैरागढ़ में संत हिरदाराम जी के आश्रम में उनके दर्शन को चलना है। यह 1978 की बात है। तब तक मोहनलाल जी बेरोजगार थे। तो उन्होंने कहा कि क्या वे मुझे धन्धा खोलने में, नौकरी लगवाने में सहायता करेंगे। मोहनलाल जी की इच्छा बिलकुल नहीं थी दर्शन करने के लिये जाने की। भगवंती देवी, जो उनकी सहधर्मिणी थी, ने उन्हें कहा कैसी बातें कर रहे हो चलो चलकर दर्शन कर आते हैं। जैसा नाम वैसी ही गुणवान थी उनकी धर्मपत्नी भगवन्ती देवी। सुशील, सुन्दर, अच्छी पर्सनैलिटी की मालकिन थी। अनमने भाव से मोहनलाल जी जाने के लिये तैयार हुये। वे, उनकी धर्मपत्नी, उनके साढू भाई जयकुमार, उनकी साली जी श्रीमती दीपा आडवानी स्वामी जी के आश्रम में पहुंचे। उस समय इनका निवास बरखेड़ी भोपाल में था। संयुक्त परिवार में रहते थे।

जब लोग स्वामीजी के आश्रम में पहुंचे। स्वामीजी को बोला मेरी तो आने की इच्छा नहीं थी, मुझे जबरदस्ती लाये हैं। तब स्वामीजी ने कहा अब हर शनिवार को आना शाम को सात बजे। रात्रि को यहीं पर सोना और रविवार की सुबह को चले जाना। ये मैं कहां फंस गया यह उनके मन में आया। जय कुमार जी ने कहा तुम्हारा भाग्योदय हो रहा है। बड़े भग्यशाली हो, हमें कभी नहीं बोला और आप पहली बार आये हो और आपको यह

सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

इसके दो चार माह पश्चात् ही उनको भारतीय जीवन बीमा निगम में कैरीयर सेल्समेनशिप की नौकरी मिल गई तनख्वाह थी 300 रूपये प्रति माह 10 रूपये प्रतिदिन। गरीबी थी तो ये बरखेड़ी से रंगमहल न्यूमार्केट में ऑफिस तक किराया बचाने के लिये पैदल जाते थे। एक माह बाद जब उनको पहली तनख्वाह मिली तो उनकी माताजी ने कहा जाओ स्वामीजी की कुटिया में कुछ भेंट करके आओ। अनमने भाव से कितना लेकर जाऊं समझ में नहीं आ रहा था। तो बीस रूपये लेकर स्वामीजी के पास गया स्वामी जी ने वह पैसे नहीं लिये कहा अपने पास रखो मैं तुमसे बाद में इकट्ठे ले लूंगा। अभी तुम्हें जरूरत है।

जब मोहनलालजी शनिवार को आश्रम जाते थे तो स्वामीजी कहते थे मेरे पांव दबाओ। मोहनलाल जी उनके पांव दबाते थे। पांव दबवाते स्वामीजी ने अपना एक पैर उठाकर उनके सिर पर रख दिया। मोहनलालजी गदगद हो गये। स्वामीजी ने कहा एक दिन तुम हवाई जहाजों में घूमोगे। ऐसा आशीर्वाद दिया। यह बात बताते–बताते उनके आंखों में पानी भर आया, वे बहुत देर तक सुबकते रहे, रोते रहे स्वामीजी को याद करके फिर उनकी धर्मपत्नी पानी लायीं उन्होंने पानी पिया और धीरे–धीरे सामान्य स्थिति में आने लगे।

श्री मोहनलाल जी ने बताया उन्होंने 1974 में सेंट जोसफ स्कूल से हायर सेकण्ड्री पास की। उसके बाद सेफिया कॉलेज से बीएससी बायलोजी विषय से पास की। उनके मन में गैस एजेन्सी लेने की बहुत गहरी ललक थी। घर वाले, रिश्तेदार उनको समझाते थे यह तुमको मिलने वाली नहीं है। यह तो बड़े–बड़े अमीरों, उद्योगपतियों, नेताओं के बच्चों की बंदर बांट में बंट जाती है। उन्होंने इसके लिये आवेदन दिये विदिशा, खरगोन, छतरपुर, भोपाल जगह–जगह आवेदन दिये मगर हर बार उनको गैस एजेन्सी मिल नहीं पाई। 4 वर्षो तक लगातार प्रयास करते रहे मगर हर बार मुंह की खानी पड़ी। वे संतो को अजमेर में पत्र लिखकर कहते रहते थे, वे पत्र अजमेंर में श्री घुमणसिंह जी के पते पर स्वामीजी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये भेजे जाते थे। सन् 1983 में संतजी नाराज होकर बोले यह लड़का मुझे पत्र लिखकर परेशान करता रहता है। मुझे गैस ऐजेन्सी से क्या वास्ता। क्या मैं वहां का अधिकारी हूं, या सरकार का प्रतिनिधि हूं। जो इसको गैस एजेन्सी दे दूंगा। इसको बोलो मुझे पत्र लिखकर परेशान ना करे। रायसेन के लिये फिर गैस ऐजेन्सी के लिये आवेदन दिया। इंटरव्यू बहुत अच्छा हुआ मगर वही डर था कि उनक कोई राजनीतिक पहुंच नहीं थीं साधारण परिवार से संबंध रखते थे। वे निराशा से ओत प्रोत थे। चिंतित भी थे कि पता नहीं क्या होगा। वे शनिवार के दिन आश्रम पहुंचे, स्वामी ने उनको कहा सिंधी कालोनी भोपाल में गैस कंपनी के मिस्टर करमचन्दानी जी रहते हैं उनसे जाकर मिलो और उनको कहो कि वे कल आकर 9 बजे कुटिया में मिलें। वे वहां पहुंचे करमचंदानी जी ने उनसे साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्न और उनके बताये गये उत्तरों को सुना। क्योकि वे पहले ही चार साल से साक्षात्कार देते आये थे। अतः क्या क्या प्रश्न पूछे जाते है। उनको मालूम था इस तरह उन्होंने पूरी तैयारी और आत्मविश्वास से उत्तर दिये थे। दूसरे दिन करमचंदानी जी स्वामी जी से मिलने आये। स्वामीजी ने उनसे पूछा बच्चे का ज्ञान कैसा है तो वे बोले मुझसे ज्यादा ज्ञान तो इस बच्चे में हैं श्री करमचंदानी शौकतराय जी के मकान में किराये पर रहते थे। वे बस से स्वामी जी के आश्रम में पहुंचे थे उस समय तक इनके पास स्कूटर भी नहीं था। बस भी दो बार बदलनी

पड़ती थी। बरखेड़ी से भोपाल रेल्वे स्टेशन और रेल्वे स्टेशन से बैरागढ़ वर्तमान में संत हिरदाराम नगर के लिये।

अन्ततोगत्वा स्वामीजी के आशीर्वाद से 26 नवंबर 1983 को उनको गैस ऐजेन्सी का स्वीकृति पत्र मिल गया। 26–5–1984 को उन्होंने उद्घाटन किया। सन् 84–86 तक उन्होंने रायसेन से भोपाल तक आना जाना किया। फिर 86–98 तक वे अपने परिवार सहित रायसेन में किराये के मकान में रहे। सन् 84–86 तक जब उन्होंने रायसेन से भोपाल आनाजाना किया तो वे स्कूटर भोपाल में भारत टाकीज के पास रख कर बस से रायसेन जाते थे फिर लौटते हुए वह स्कूटर उठाकर घर आते थे। सन् 1987 में उन्होंने सेकण्ड हैंड कार खरीदी। सन् 1996 में उन्होंने अपना स्वयं का मकान रायसेन में बनवाया मगर उसमें छः माह ही रह पाये। मैंने वह मकान देखा है। क्या तो महलनुमा मकान था। सांची के स्तूप की आकृति का था। आज उसमे पंजाब नेशनल बैंक चलता है। सन् 1998 में वे ईदगाहहिल्स भोपाल में किराये के मकान में रहने आ गये क्योंकि बच्चों के रिश्ते रायसेन गांव में रहने के कारण हो नहीं पा रहे थे। यहां पर आते ही बच्चों के रिश्ते पहली ही बार में हो गये। उन्हें ज्यादा यहां वहां नहीं भटकना पड़ा और उनके बच्चे सुखी और संपन्न परिवारों में हैं उनके 4 बच्चे हैं। तीन बेटियां और एक बेटा।

सन् 1985 में स्वामीं जी का एक संदेश टेलीफोन के द्वारा सिद्धभाऊ ने रायसेन में उन्हें दिया कि स्वामीजी ने आपको सबेरे 9 बजे आश्रम पर बुलाया है। वे सबेरे 7 बजे रायसेन भोपाल बस से आये और दूसरी बस पकड़कर वे बैरागढ़ 9 बजे पहुंचे। तब स्वामीजी ने उनको कहा मेरे 20 रूपये तुम्हारे पास जमा है तुम्हें याद है न मैने नहीं लिये थे कहा था बाद में जरूरत होगी तो इकट्ठे आपसे लूंगा। जाओ अमुक स्थान पर अस्पताल बन रहा हैं जाकर देकर आओ। वे वहां पर गये सेवासदन नेत्र चिकित्सालय का निर्माण हो रहा था उसके लिये उन्होंने स्वामीजी की इच्छा अनुरूप उचित दान दिया। दो तीन बार ऐसा भी हुआ कि वे सबेरे नाश्ते में एक ग्लास दूध पीते थे मगर कुटिया पहुंचना होता था तो बगैर दूध पिये ही चले जाते थे क्योंकि उस समय तक दूध आता ही नहीं था। ऐसा जब–जब हुआ तब तब स्वामी जी को पता नहीं कैसे आभास हो जाता था कि वे दूध पीकर नहीं आये हैं उनके आते ही वे बोलते थे मोहन को दूध पिलाओ।

स्वामीजी ने एक बार उनसे कहा कि रायसेन में नेत्र शिविर का आयोजन करवाओ। वहां पर 1986 में गुरूग्रंथ साहब जी का पाठ रखवाया गया। स्वामीजी आये। वहां पर टेंट में शिविर लगाया गया और पहली बार में 300 लोगों का आप्रेशन किया गया। तब से वहां पर हर वर्ष यह क्रम जारी है। शिविर में होने वाले हर रोगी को रायसेन सिंधी विकास परिषद, जिसके अध्यक्ष मोहनलाल लालवानी जी हैं साथ ही वे रायसेन जिले की रेड क्रास सोसायटी के चेयरमेन भी हैं, की तरफ से कंबल/स्टील के बर्तन और आने जाने का किराया भी दिया जाता है। रायसेन में उस समय सिर्फ 30–35 परिवार ही समाज के थे और आज 2021 में भी 30–35 सिंधी परिवार ही रहते हैं।

बाद में सिंधी समाज ने सरकार से आग्रह किया कि उन्हें सिंधी धर्मशाला बनाने के लिये जमीन आवंटित की जाये। सिंधी समाज के लोग बार–बार वल्लभभवन में जाकर धर्मशाला के लिये मिलने वाली जमीन के लिये प्रयास करते थे। मगर वे हर बार निराश होकर लौट आते थे। एक बार स्वामीजी रायसेन आये तो उनको बताया गया धर्मशाला के लिये यह जमीन हमने सरकार से मांगी है। स्वामीजी उस जमीन पर चले 70 फिट

चल कर दूसरी साईड 80 फिट चले और रूक गये। आवेदन 70X100 के लिये दिया हुआ था। मगर स्वामीजी ने 70X80 तक चले और रूक गये और बोले आपका जमीन आवंटन हो चुका जाइये जाकर वल्लभभवन से फाइल लेकर आइये। विश्वास नहीं हुआ। मगर जब वल्लभभवन पहुंचे तो वहां के रिवेन्यू सेक्रटरी एस.के. जैन जी ने बताया कि आपकी जमीन का आवंटन कर दिया गया है उसी दिन वहां के कलेक्टर श्री डीएस राय ने रजिस्ट्री भी कराने में सहायता की। और वह भी 70X80 फीट की थी। आज भी 20 फीट आवंटित नहीं हुई। जिस पर धर्मशाला का निर्माण किया गया। जब धर्मशाला निर्माण के पैसों की बात आई तो धर्मशाला का ब्रोशर बनवाया गया जिसमें हाल और कमरों का निर्माण करने का प्रस्ताव रखा गया। हाल के निर्माण की कीमत 3 लाख रूपये आंकी गई। तब स्वामीजी ने कहा तुम तीनों भाई अशोक, मनोहर और आप एक–एक लाख दान दो और निर्माण कार्य शुरू करो। कार्य शुरू हुआ मगर रायसेन के निवासियों से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाया क्योंकि संख्या कम थी एवं आर्थिक रूप से वे परिवार इतने सुदृढ़ भी नहीं थे। फिर भी स्वामी के अनुयायी दुबई से श्री ईश्वरलाल आडवानी, अमेरिका से एमएन लालचंदानी एवं अन्य अनेक अनुयाइयों ने सहयोग के हाथ बढ़ाये और धर्मशाला का निर्माण पूरा हुआ। धर्मशाला का उद्घाटन दुबई के ही विक्योमल श्राफ के हाथों करवाया गया।

धर्मशाला का निर्माण कार्य शुरू हुआ तो प्रारम्भिक दिनों में निर्माण कार्यों को बताने एवं उस पर हो रहे खर्च के हिसाब के कागज लेकर जब मोहनलाल जी कुटिया पर आये तो स्वामीजी ने उन कागजों को फाड़ दिया और कहा यदि ईमानदारी से काम करोगे तो आगे बढ़ोगे ओर बेईमानी करोगे तो ये लोहे के चने हैं, इनको चबाना कठिन है गर्त में गिरोगे। तुम ईमानदारी से काम करते रहो।

रायसेन में ही गुरूद्वारे का निर्माण कार्य भी 2005 में कराया गया। जहां पर भगवान झूलेलाल जी की प्रतिमा लगायी गई एवं गुरूग्रंथ साहिब की भी स्थापना की गई है। इसमें भी दानवीरों का सहयोग मिला है।

सन् 2000 में इन्होंने ईदगाहहिल्स पर भवन का निर्माण कराया। सन् 2014 में फिर इन्होंने अरेरा कालोनी में अपना मकान बनवाया जहां वे आज रहते हैं। अरेरा कालोनी में मकान इसलिये बनवाया क्यों कि वहां से मंडीदीप पास पड़ता है।

सन् 2010 में इन्होंने मंडीदीप में फैक्ट्री लगाई जहां पर पार्ले बिस्किट एवं रस्क बनते हैं। फैक्ट्री में 450 वर्कर काम करते हैं। मनीषजी, जो उनके सुपुत्र हैं, फैक्ट्री का काम देखते है। मोहनलाल जी रायसेन और मंडीदीप दोनों जगह जाते रहते हैं।

रायसेन में गैस एजेन्सी के अलावा इन्होंने कंज्यूमर गुड्स की एजेन्सियां ले रखी थीं जो उनके भाई देखते थे। मगर उनको वह पसंद नहीं आया और दोनों भाई भोपाल आ गये। अभी एक भाई ईदगाह हिल्स, एक भाई चूनाभट्टी में रहता है।

मैं एक बात अपने बारे में बताता हूं। एक बार मेरे पास एक मित्र का फोन आया शायद उस समय मैं बाहर था। मेरे एक मित्र के भाई जो पार्ले बिस्किट फैक्ट्री में काम करते थे उनको किसी ग़लती के कारण नौकरी से निकाल दिया गया था। वे परेशान थे। मेरे मित्र ने मुझे फोन करके कहा कि आप मोहनलाल जी को बोलकर मेरे भाई को फिर से नौकरी पर रखवा दो वह बहुत परेशान है। मैंने भी उनको फोन किया। डर भी लग रहा था कि कहां वे राजाभोज कहां मैं गंगूतेली, मगर उन्होंने मेरी बात का मान रखा आज भी उनकी यह बात मुझे उनके बड़प्पन की याद दिलाती है।

वे जो किसी समय 300 रूपये की नौकरी करते थे आज स्वामीजी की असी कृपा से फैक्ट्री के मालिक हैं और उनके कारण 500 लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

कहते हैं – **जिसके सिर पर तू स्वामी सो दुःख कैसा पावे।**

उस दिन उनके घर में भोजन भी किया। घर में एक बिटिया घर के छोटे मो कामों के लिये रखी गई है। भोजन तो उनकी बहू भाविका और धर्मपत्नी भगवन्ती देवी बनाया था। अच्छा लगा। आजकल ऐसे सम्पन्न परिवारों में खाना भी बाहर की औरत बनाती हैं ऐसा मैंने देखा है। मैंने आते–आते घर की नारी शक्ति के चरणो में नमन किया। ऐसी ही नारी शक्तियां घर को स्वर्ग बनाती हैं। लौटते हुए मैं उनकी बिटिया के घर भी गया जो चूना भट्टी एरिया में रहती थी। उसकी एक बेटी हैदराबाद में पढ़ाई क रही है। सालों बाद भी वह वैसी ही स्नेह से परिपूर्ण थी जैसी मेरे साथ 25 वर्ष पहले आदीपुर जाते हुए थी।

सेवा का बीज वृक्ष बना

श्री मुरली गोलानी
मैनेजिंग ट्रस्टी एण्ड सेक्रेट्री
संत हिरदाराम स्वामी बसंतराम सेवा ट्रस्ट, अहमदाबाद
मो. 982503971

श्री मुरली गोलानी जी से मेरी मुलाकात प्रिय दिलीप सीतलानी ने करवाई। मैंने उनको फोन किया, उनसे संतों के बारे में उनके जीवन से संबंधित कुछ जानकारियां देने के लिये। मगर उन्होंने बताया कि मुरली जी अहमदाबाद से आये हुए है। आप उनसे आज चर्चा कर लीजिये। मैं भी सोच रहा था स्वामीजी के अनुयायी देश विदेश से आते रहते हैं। उनके संस्मरण भी इस ग्रंथ में संकलित करूंगा। कैसे होगा, सोच कर चिंतित था मगर हमारे स्वामीजी तो 'घट–घट की पट–पट की जाने'। मेरी सोच इतनी जल्दी साकार होगी मुझे भी विश्वास नहीं हुआ। मगर **हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े लिखे को फारसी क्या,** शाम को मैं दिलीप जी को लेकर वहां गया जहां वे रूके हुये थे, कुछ मिनटों के अन्तराल के बाद उनसे मुलाकात हुई अच्छे व्यक्तित्व के धनी थे। सौम्य स्वभाव के उनसे बात शुरू हुई उनके द्वारा बताई गई बातों को मैं शब्दों में पिरोने का प्रयास कर रहा हूं।

उनका परिवार अजमेर दिल्ली गेट स्थित स्वामी बसंतराम का शिष्य था। स्वामी बसंतराम का स्वामी शांति प्रकाश के ग्रंथ '**प्रेम प्रकाश**' के लिखने में बड़ा योगदान था। इनके बहनोई श्री भगवानदास जेठानी अहमदाबाद वाले थे। हमारे संतजी किसी को भी नामदान नहीं देते थे मगर उनको स्वामीजी का नामदान मिला हुआ था। स्वामीजी जब भी अहमदाबाद जाते थे भगवानदास जी के घर ही रहते थे। वहीं से स्वामीजी से उनका परिचय था।

श्री गोलानी जी शासकीय कर्मचारी थे मगर उनको दूसरे विभाग में डेपूटेशन पर भेजा गया था। मूल विभाग से उनकी पेंशन 138 रू स्वीकृत हुई। वे जिस विभाग में डेपूटेशन पर गये थे वह बंद हो गया। वहां से उन्हें दूसरे विभाग में डेपूटेशन पर भेजा गया। वे अपने मूल विभाग में लौटना चाहते थे। वे बराबर प्रयास करते रहे मगर उनको

सफलता नहीं मिल रही थी। वे निराश से हो गये थे। एक बार जब वे अजमेर अपने फुफेरे भाई घुमणसिंह बूलचंदानी के यहां गये तो उनका मन पुष्कर जाने का हो गया। यह सोच कर गये थे कि स्वामीजी को चलकर वस्तुस्थति से अवगत करायें। वे समय–समय पर स्वामीजी से पत्र व्यवहार करते रहते थे और उनसे आशीर्वाद देने की प्रार्थना करते थे। संतों से इनका पहला परिचय 17 जुलाई 1980 को हुआ था, 16 जुलाई 1980 को इनका विवाह अजमेर के संत बसंतराम की दरबार में हुआ। विवाह भी कैसा न बैंड, न बाजा, न निमंत्रण–पत्र, न दुल्हे का फुल सूट कुछ भी नहीं था। दरबार में वार्षिक मेला लगा हुआ था। अनेक संत महात्मा वहां पर आये हुए थे और उनकी उपस्थिति में उन्होंने अपनी जीवन संगिनी को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया। संतों के सामने उन्होंने फेरे लिये। ऐसा सौभाग्य विरलों को ही मिलता है। और अगले दिन ही वे 17 जुलाई को पुष्कर में स्वामी जी से आशीर्वाद लेने गये। स्वामीजी यह सुनकर खुश हो गये कि इन्होंने इतने सरल तरीके से अपने आपको गृहस्थ जीवन में बांधा है।

सन् 1975 में संतजी उनके अनुरोध पर उनके घर गये। स्वामीजी ठहरे तो थे भगवानदास जी के यहां जो कुबेर नगर में रहते थे और गोलानी साहिब सरदार नगर में रहते थे। जो एक दूसरे से 7 किलामीटर दूर स्थित है। इनके घर पहुंचने पर स्वामीजी ने अपने स्वभाव के अनुसार इनको सेवा कार्यो से जुड़ने का आग्रह किया। संतजी जी जहां भी जाते थे वहां पर सेवाकार्य करने का सबसे बहुत आग्रह करते थे।

इनके ट्रस्ट के द्वारा शुरू–शुरू में लोगों को अनाज और तेल देने का कार्य शुरू किया गया। धीरे धीरे अहमदाबद के 250 गरीब परिवारों को, जिनमें विधवायें और निर्धन परिवार शामिल हैं, राशन किट बांटी जाती है जिसका मूल्य 600 रूपये के आसपास आता है। उसके बाद इनमें से कुछ परिवारों के लिये दूध और सब्जी के लिये भी पैसे देने का कार्य शुरू किया। इनके साथ इस काम में इंड्–सिंध फाऊंडेशन बाम्बे, श्री किशू मेहतानी, श्री दयाल हरजानी, श्री हीरालाल रहेजा इत्यादि जुड़ते गये। काम बड़े सलीके से चलता है। जरूरतमंद लोगों से फार्म भरवाया जाता है, सर्वेटीम जाती है और चयनित परिवार को सहायता पहुंचाई जाती है।

वहां पर अपोलो हॉस्पीटल में कार्यरत डॉक्टर नरेश हिमथानी जी जो संत हिरदाराम नगर के स्व. रामचन्द्र हिमथानी के सुपुत्र हैं हर महीने के दूसरे रविवार को आते हैं और मरीजों को फ्री देखते हैं। उनको दवाइयाँ लिखते है। हम मरीजों का लगभग 5000 रू. तक का बिल भुगतान करते है।

उनकी बेटी गीतू थेलसीमिया से पीड़ित थी। हर सप्ताह उनका रक्त बदला जाता था। वे एचआईवी से भी ग्रस्त हो गई थीं डॉक्टरों ने खून बदलने से इंकार कर दिया। धीरे–धीरे उसकी तिल्ली बढ़ गई मगर संतों की दया से उसका ऑप्रेशन सफल हो गया।

वहां पर सेवा कार्यों में संत हिरदाराम प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र भी चलता है। जिसमें डॉ. पलक जिज्ञासी, जिसने संत हिरदाराम नगर के प्राकृतिक एंव योग महाविद्यालय से डिग्री कोर्स किया है, अपनी सेवायें देती हैं। स्वामी जी के संकल्प के अनुसार जो वहां पर 1995 में सेवा का बीज बोया गया था अब वृक्ष के रूप में लहलहा रहा है।

सेवा की राह से बच्चों ने छुई ऊंचाईयां

श्री थांवरदास ठारूमल वरलानी
महासचिव, नवयुवक परिषद, बैरागढ़
मो. 9425011542

श्री थांवरदास वरलानीजी बी.एच.ई.एल भोपाल की सेवा में रहते हुए मेरे कहने पर नवयुवक परिषद के सेवा कार्यो से जुड़े। धीरे–धीरे वे यूरोलाजी के कैम्प, नेत्र शिविर के माध्यम से सेवासदन से जुड़े। सिद्धभाऊ ने अभी कुछ दिन पहले अपने प्रवचनों में उनके बगैर तनाव से, हंसते हुए सेवा करने के गुणों की सराहना की थी। वे ज्यों–ज्यों संत हिरदाराम कालेज के डायरेक्टर परिषद के नींव के स्तंभ श्री हीरो ज्ञानचन्दानी जी के सान्निध्य में आते गये सेवा की अग्नि में तपकर स्वर्ण की भांति चमकते गये। उन्होंने बताया कि स्वामीजी कहते थे आप सेवा कर रहे हैं आपको अपने बच्चों की चिंता करने की जरूरत नहीं है। आप निःस्वार्थ भाव से सेवा करते रहिये आप के बच्चे अपने आप ऊंचाईयों को छुएंगे। उन्होंने बताया एक बार उनके बेटे सुनील को उन्होंने दस रूपये का नोट दिया और कहा यह 10 का नोट 100 से 1000 से एक लाख से, एक लाख से करोड़ों में बदलेगा। आज भी संतों के द्वारा उनको दिये गये 1रू., 2रू., 10रू, 100 रू, 500रू, के नोट सहेज कर रखे गये हैं। उनके साथ अनेक फोटोग्राफ भी उनके एलबम में शोभायमान हैं। एक बार सेवासदन में बच्चे खेल रहे थे, स्वामीजी आ गये उन्होंने बच्चों से कहा बोलो में सबसे अच्छा बच्चा हूं। सब बच्चो नें बोला मैं सब से अच्छा बच्चा हूं। जब इनके बेटे की बारी आई तो उसने कहा मैं अच्छा बच्चा नहीं हूं। मेरी माँ पिताजी अच्छे हैं। स्वमीजी ने जिन बच्चो ने खुद को अच्छा कहा था सबको 1 रू. का नोट दिया मगर इनके बेटे को 2 रू. का नोट दिया। एक बार स्वामीजी ने इनके बेटे को 100 रू. का नोट दिया और बोले बोलो आज से मेरा नाम पहलवान है। एक बार पुष्कर में उन्होंने कुटिया में सफेद वस्त्रों की जगह क्रीम कलर का कुर्ता पहना था, स्वामी जी ने इससे पूछा यह क्या पहना है? उन्होंन सिद्धभाऊ की तरफ कातर निगाहों से देखा, तब सिद्धभाऊ ने बात संभालते हुए कहा, साईं यह कह रहा है ग़लती हो गई आगे ग़लती नहीं करूंगा। एक बार सबेरे का समय होगा। अमृत वेला 5 या 5:30बजे होगे तो स्वामीजी ने बोला कलयुग है। मगर हम यह चाहें कि सबके बेटे हो चाहे वह हमारा दुश्मन ही क्यों न हो, हमें दुश्मन का भी भला सोचना चाहिए। स्वामीजी अपनी थाली में से खाना निकालकर उनके बेटे को देते थे। एक बार उन्होंने उसे स्टील की कटोरी भी दी थी जो उन्होंने सहेजकर रखी है। उनके बेटे ने ट्रूबा कालेज से बी.टेक किया। वहीं से उनका केम्पस में चयन हुआ और आज उनका बेटा इंफोसिस कम्पनी में डिप्टी डायरेक्टर के पद पर आस्ट्रेलिया में कार्य कर रहा है। सत्य है, संतों की शरण में जो भी गया वो तर गया। उसका लोक भी सुधरा है, परलोक भी सुधरेगा।

स्वामी जी की दूरदर्शिता

श्री नारायणदास तोतलदास खेमचन्दानी
इन्द्रप्रस्थ, लालघाटी, भोपाल, म.प्र.
मो.: 9[illegible]3358021

श्री नारायणदास, बैरागढ़ में श्रद्धा से लिये जाने वाले नामों में से, श्रद्धेय तोतलदास जी के सुपुत्र है। उनके बड़े भाई डाक्टर हैं वे एडवोकेट और दो भाई व्यवसायी हैं। उन दिनों बैरागढ़ में पुस्तकों की दो ही दुकानें थी जो दोनों शिवमंदिर गोलचक्रे में होती थीं। एक गोबिंद बुक स्टोर एवं दूसरी गुरूनानक बुक स्टोर। यह मेरी याद्दाशत में आज भी ताजा है। श्री तोतलदास जी बड़े ही विनम्र एवं सन्तों के अनन्य अनुयायी थे। जब साधू वासवानी स्कूल की स्थापना की गई उस समय वे वहां के ट्रस्टियों में मुख्य ट्रस्टी थे। इनका परिवार सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय के सामने वाली बैरेक में रहता था। बाद में वह मकान इनके छोटे भाइयों को मिला। इनके डाक्टर भाई जो सिविल हास्पीटल में डाक्टर थे उन्होंने अपना मकान सैनिक कालोनी में बनाया। वकील साहब ने सेवासदन के पीछे वाली लाइन में अपना मकान बनाया, आगे वाला मेन रोड वाला हिस्सा किसी और का था। बाद में सेवासदन नेत्र चिकित्सालय का विस्तार हुआ तो उन्होंने पीछे वाला इनसे लेकर इनको आगे वाला हिस्सा दिलवा दिया और बाद में और विस्तार हुआ तो वहां के ट्रस्टियों ने इनसे खरीद लिया। तब वे अपने वर्तमान मकान जो इन्द्रप्रस्थ कालोनी में है में शिफ्ट हो गये। आगे वाला हिस्सा वासदेव गोकलानी जी का था जो स्वामी जी के अनन्य भक्त थे। जब ये उस मकान में शिफ्ट हुये थे तो इनके पास पंखे खरीदने के पैसे भी नहीं थे तो वे पंखे उन्होंने अपने दोस्त प्रतापराय के रवि ट्रेडर्स से उधारी में खरीदे थे। एक बार स्वामीजी से मिलने पूरा परिवार कार के द्वारा उनके दर्शन हेतु पुष्कर गया। स्वामीजी ने इनको अपने आश्रम में ठहराया और बाकी परिवार वालों को उनके आश्रम के पास गंगा आश्रम में व्यवस्था की। जब स्वामीजी के साथ ये वार्तालाप में बैठे तो समय कैसे बीत गया। उनका यह वार्तालाप रात के साढ़े तीन बजे तक चलता रहा। तीन दिन तक वे कुटिया में रहे। यह घटना मई 1989 की है। भोजन भी कुटिया में होता था। स्वामीजी खुद अपने हाथों से भोजन परोसते थे। स्वामीजी ने करेले की सब्जी बनाई थी वह भी छिलके सहित। बहुत कड़वी थी उन्होंने बोला भी करेले की सब्जी बनाई है, बच्चों को कड़वी लगेगी। बाद में कुटिया में एक आम का पेड़ था तो उन्होंने उनकी सहधार्मिणी दीपा जी से पूछा आपको आम काटना आता है? ऐसे काटो कि सबको दो–दो टुकड़े मिलें। मगर बाद में उन्होंने स्वयं काटा। एक ही आम के 32 पीस कर दिये देखते ही बनता था और उन्होंने सबको बांट दिये। बाद में वहां उपस्थित श्री दयाल मूलचंदानी जो स्वामी जी के साथ ही पुष्कर में रहते थे, कहा जाओ इनको अजमेर घुमा लाओ। अजमेर में सेवा कार्यों में समर्पित जगदीश वच्छानी जी ने अजमेर में चल रहे स्वामीजी के कार्यों का अवलोकन कराया। और दयाल उनको अजमेर की दरगाह शरीफ भी ले गया। जब स्वामीजी को यह पता पड़ा तो उन्होंने दयाल को खूब डांटा ओर कहा कि दरगाह में आपको नहीं ले जाना चाहिये था।

एडवोकेट साहब की सगाई 1973 में बैरागढ़ के प्रतिष्ठित परिवार श्री चौधरीमल साधवानी की बेटी, धर्मदास साधवानी की बहन दीपा जी से हुई थी। यह पूरा परिवार स्वामीजी का अनन्य भक्त था। पांच भाई थे सबके सब स्वामीजी की सेवा में लगे रहते

थे। उनके सेवा कार्यो के लिए खुले दिल से दान भी देते थे। उनकी सगाई में स्वामीजी भी उपस्थित थे। धर्मप्रकाश जी सिद्धभाऊ के आने के पहले स्वामीजी के साथ साये की तरह रहते थे। हर सोमवार को उनके घर से ज्वार की रोटी आश्रम में लाई जाती थी जो आज बदस्तूर 45 साल बाद भी जारी है।

पुष्कर में तीन दिन बिताने के बाद जब वे लोग स्वामीजी से बिदा लेने लगे तो स्वामीजी ने पूछा अब कहां जाओगे? तो उनको बताया बच्चे साथ आये हैं। यहां से माऊंटआबू और उदयपुर जायेंगे तब स्वामीजी ने अपने लिये जो नानखटाई बनवाई थी वह पूरा का पूरा डिब्बा जिसमें 6–7 किलो नानखटाई थी इनको दे दी। 6–7 किलो थी, बोले नाश्ते में खाते रहना। शुद्ध घी की बनी हुई थी। बाद में उसी डिब्बे में नानखटाई बनवाकर उन्होंने पुष्कर भिजवा दी थी।

स्वामीजी को कहीं भी जाना होता था तो वे उनकी ही कार का उपयोग करते थे। अनेक बार उनकी कार में ही बैठकर सिद्धभाऊ और स्वामीजी जाते थे।

सन् 2004 की बात थी स्वामीजी को पुष्कर जाना था उनका फर्स्टक्लास ए.सी में टिकट बुक था। स्वामीजी की उम्र 98 वर्ष हो गई थी। उनके घर पर स्व. परसराम टहिल्यानी जी आये उनको स्वामीजी ने बुलाया है संदेश दिया। वे कुटिया पर पहुंचे तो स्वामीजी ने कहा मेरी गाड़ी में से ठंड निकलवाओ, ठंड निकलवाओ यह बात खेमचंदानी जी को समझ में नहीं आई स्वामीजी क्या बोल रहे हैं। तब उनको बताया स्वामीजी आज हैदराबाद अजमेर गाड़ी से जा रहे हैं। गाड़ी में रिजर्वेशन ए.सी फर्स्टक्लास में है तो वे बोल रहे हैं ए.सी. नहीं चलना चाहिये। इनको बड़ा आश्चर्य हुआ इसमें मैं क्या कर सकता हूं। सोच में पड़ गये स्वामीजी ने उनको ये भी बोला काम हो जायेगा छोटे अधिकारी से मिलना। ये सीधे हबीबगंज स्थित डीआरएम आफिस पहुंचे अपना कार्ड डीआरएम को भिजवाया मगर आधे घंटे तक उन्होंने नहीं बुलाया तो वे उनके अधीनस्थ पाटनी जी के पास गये। इनके साथ श्री हीरो ज्ञानचंदानी, श्री दिलीप हीरानी भी गये थे। जब वो नहीं मिले तो उसी आफिस में काम करने वाले रमेश मीरचंदानी ने उनको उनसे मिलने की सलाह दी थी। उस समय देवीशरण जी वहां डीआरएम थे। पाटनी सहायक थे। अभी ये पाटनी से मिलने जा ही रहे थे तो उनका व्यक्तिगत सेक्रेटरी किसी काम से बाहर निकला था जिसका नाम राजेन्द्रसिंह था। उनसे मुलाकात हुई उनको सारी बात बताई तो उन्होंने पाटनी साहब से मिलने से रोक दिया और उन्होंने कहा में कोशिश करता हूं। उन्होंने हाटलाईन से नागपुर में गार्ड से बात की कहा जब तक मैं न कहूं गाड़ी को मत छोड़ना। फिर उन्होंने झांसी में फोन किया और उनको कहा कि जितने भी ए कूपे में व्यक्ति हैं उन्हें डी कूपे में शिफ्ट करो। ए कूपा टायलेट के पास था उसमें स्वामीजी की व्यवस्था करवाई। छत पर कंबल लपेट कर ए.सी. का प्रभाव कम किया गया। स्वामीजी को पहले कूपे में इसलिये शिफ्ट किया गया था कि रात्रि को उनको 2–3 बार मूत्र विसर्जन के लिये उठना पड़ता था वे किसी को अपना हाथ नहीं पकड़ने देते थे। ताकि उनको दिक्कत न हो। राजेन्द्रसिंह स्वयं भोपाल स्टेशन आये थे उन्होंने पूरी व्यवस्था अपनी देखरेख में सम्पन्न कराई और स्वामीजी पुष्कर पहुंच गये। जैसा कि उन्होंने कहा था कि यह काम हो चुका है सिर्फ आपको जाकर कोशिश करनी है वह कार्य भी छोटे अधिकारी के माध्यम से होगा। वैसा ही हुआ। यह असंभव सा दिखने वाला काम कैसे हो गया आज भी वे सोच सोचकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

इसी दिन एक और चमत्कार हुआ। 2003 में इन्होंने सेन्ट्रो कार ली थी। स्वामीजी

के काफिले में तब तक अपनी कारें आ गई थी। इनकी इच्छा हुई कि स्वामीं जी काश मेरी कार में बैठते जैसे पहले बैठते थे। उस समय ये फुलसूट में थे इन्होंने जल्दी से अपनी नाईट ड्रेस मंगवाई कार में बैठे–बैठे कपड़े बदले स्वामीजी जैसे निकले उस समय उन्होंने पुरूषोतम पारवानी जी से कहा कि आज वकील साहब की इच्छा है कि मैं उनकी कार में बैठूं। ऐसा इन्होंने किसी को बोला भी नहीं था मगर स्वामीजी तो घटघट की जानते थे, उनको पता पड़ गया। उन्होंने पिछली सीट पर चादर बिछाई और कार में बैठ गये। कुटिया से लेकर बैरागढ़ स्टेशन पहुचने में 45 मिनट लग गये कुल दूरी 1 किलोमीटर 250 मीटर थी सड़क के दोनों ओर जनता उनके दर्शन को खड़ी थी। स्वामीजी की तबीयत खराब थी काफी कमजोर भी हो गये थे, वकील साहब अपनी कार को प्लेटफार्म तक ले गये। पुलिस ने उनको कहा आपको मालूम नहीं कार प्लेटफार्म पर नहीं आती आपको जेल भेज सकते हैं मगर उन्होंने कहा स्वामीजी की तबीयत ठीक नहीं है इसलिये ऐसा करना जरूरी था आपको लगता है गलत किया है तो आप कार्यवाही कर सकते हैं। मगर उन्होंने मौके की नज़ाकत को समझा एवं कार्यवाही नहीं की। स्वामीजी ने जो चादर कार में बिछाई थी वह इनको देकर कहा किसी को मत देना, तुम घर ले जाना। वह चादर आज भी उन्होंने बड़े प्रेम से सम्हालकर रखी है। कार में स्टेशन पर जाते हुए वे स्टेशन रोड पर स्थित मंदिर में दर्शन करने के लिये रूके थे। जब स्वामीजी पुष्कर पहुंच गये फोन पर उनसे पूछा तो उन्होंने बताया स्वामीजी तो आराम से सोये मगर उनके साथ के लोग तो पसीना पसीना हो गये थे।

स्वामीजी इनके चारों बच्चों की शादी में आशीवार्द देने आते थे। इनको चार संताने थी। तीन बेटियां और एक बेटा। स्वामीजी आते जरूर थे मगर चाय भी नहीं पीते थे ओर हर शादी में वे बच्चों को 100 रू. दे जाते थे। बच्चों ने उन रूपयों पर तारीख वगैरह लिखकर अभी भी सम्भालकर रखे है।

अक्टूबर 2006 में वे स्वामीजी से मिलने आश्रम में गये थे। स्वामीजी बहुत कमजोर हो गये थे। स्वामीजी ने इनका हाथ पकड़कर बोला मैं 24 घंटे तुम्हारे साथ हूं। वहां पर स्वामीजी के चचेरे भाई मूलचंदजी जो सीहोर में पुरूष नर्स के रूप में हास्पीटल में कार्य करते थे, श्री रामचंद्र पेसवानी जी भी उनके दामाद थे। वहां पर श्री कन्हैयालाल टेवानी जी भी उपस्थित थे। स्वामीजी ने उनकी आंखों में आंखें डालकर देखा इनको लगा स्वामीजी नयनों के रास्ते उनके शरीर में प्रवेश कर गये हैं। उन्होंने मिश्री का डिब्बा मंगाया और पूरा का पूरा डिब्बा इनको दे दिया बोला तुम भी खाते रहना और लोगों को बांटते रहना। अब मुलाकात संभव नहीं है।

हुआ भी यही 20 दिसंबर 2006 को स्वामीजी रात्रि में ब्रह्मालीन हो गये। सबेरे उनको स्वामी ओमलालजी का फोन आया उन्होंने कहा मेरी तरफ से फूलों का चक्र और तुलसी की माला स्वामीजी के लिये ले आना। यह अगहन (नाहरी) का महीना था। इस माह में झूलेलालजी का चालीसा महोत्सव शुरू होता है और ठकुर पंथ के लोग कहीं आते जाते नहीं हैं। स्वामीजी के दर्शन के लिये लाखों की भीड़ थी। ये जब कुटिया पर पहुंचे तो वहां हीरो ज्ञानचंदानी बागडोर संभाले हुए थे। उन्होंने लाउड स्पीकर से घोषणा करवाई कि खेमचंदानी वकील आये हुये हैं उनको रास्ता दें एवं उन्हें स्वामीजी के दर्शन के लिये आने दें। वे वहां पहुंचे स्वामीजी पर श्रद्धासुमन का चक्र चढ़ाया, तुलसी की माला गले में पहनाई जो दाह संस्कार के पहले तक उनके गले में रही। कहते हैं तुलसी की माला को अग्नि में नहीं जलाना चाहिये इसलिए उस समय निकाल दी गई। उस दिन वे

शाम को सात बजे तक वहीं पर रहे। अभी भी वे 21 सितम्बर स्वामीजी के अवतरण दिवस एवं 21 दिसम्बर उनके निर्वाण दिवस पर आश्रम जरूर माथा टेकने जाते हैं। वकील साहब 2009 में, जब उनकी 57 वर्ष की आयु थी, काफी बीमार थे वे इन्दौर के टी. चोइथराम हास्पीटल में भर्ती थे। 15 दिन हो गये थे डाक्टर बोले अभी 15 दिन और रहना पड़ेगा। मगर इनकी रूकने की इच्छा बिलकुल नहीं थी। उन्होंने सोचा ऐसे जीने का क्या मतलब है। और रात्रि को संतजी सपने में आये और बोले उठो भोपाल चलो। सबेरे जब डाक्टर भाग्या आये जो कल बोलकर गये थे 15 दिन और लगेंगे उन्होंने तबीयत ठीक देखी और 10:30 बजे छुट्टी दे दी। और 12:30 बजे हम हास्पीटल से घर के लिये रवाना हो गये। आज भी लगता है स्वामीजी हर पल मेरे और मेरे परिवर के साथ हैं।

स्वामीजी हमेशा कहते थे सामाजिक सेवा करनी है तो अपनी आवाज को शक्ति दो। डरना नहीं है दबंगता से करना है। उन्होंने बताया कि संतों की कुटिया के सामने मुख्य सड़क के दूसरी ओर से रास्ता बने ऐसी इच्छा थी वह वन के लिये वन भूमि आरक्षित थी वहां से रास्ता निकलने की समस्या थी। वहां कालेजों, स्कूलों में चार हजार बच्चे पढ़ते थे। वृद्धाश्रम भी है।

श्री हीरो ज्ञानचंदानी और वकील साहब वन विभाग के आफिस में गये। वहां मनीष सिंह के भाई जवाहरसिंह मुख्य अभियंता थे और खेमचंद अहिरवार उपयंत्री थे। उन्होंने फाइल लेकर रख ली और 4–5 दिन बाद आने को बोला। जब 4–5 दिन बाद गये तो उन्होंने बोला वह वन भूमि है वहां से रास्ता नहीं निकल सकता। यह सुनकर उनको गुस्सा आया और उन्होंने गुस्से में भरकर कहा अभी छिंदवाड़ा में उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी आये थे उनका हेलीपेड बनाने के लिये आपने 400 एकड़ जमीन को समतल किया, कितने पेड़ काटे उस समय आपको वन भूमि का ख्याल नहीं आया और यहां 100 पेड़ के बदले हम लोग 200 पेड़ लगाने को तैयार हैं। यहां 4000 बच्चों और आसपास की कालोनियों के लोगों को फायदा होगा वहां आपको वन भूमि याद आ रही है। तब जाकर उस रास्ते की मंजूरी मिली और 8–10 दिनों में वह मार्ग तैयार हो गया। तब 10 जून को आडवानीजी आने वाले थे और 8 जून को रोड बन गया था। उस समय कलेक्टर शिवशेखर जी थे उनका भी सहयोग रहा। वकील साहब की धर्मपत्नी दीपा जी से बात हुई तो उन्होंने बताया उनका नाती पढ़ने में बहुत कमजोर था।

स्वामीजी को बताया उन्होंने उसको समझाया और फिर कहा कि यह बड़ा आदमी बनेगा और सचमुच आज उनके वचन सत्य होते दिख रहे हैं। उन्होंने बताया कि जब वे पुष्कर गये थे तो वहां उन्होंने हमारे रूम में इमरजेंसी लाइट भिजवाई और जब रात को लाईट चली गई तो वह हमें काम आई। इतनी दूरदृष्टि थी उनकी। अपने मायके में वे संतो के सान्निध्य में रहीं और ससुराल भी ऐसा ही मिला। वे मेरे पति को बैठने के लिये स्वंय कुर्सी लाकर देते थे।

सेवा का जुनून

श्री मंघाराम टहिल्यानी

भोपाल मो. 9893749129

मेरे सेवा कार्यो से 1978 से जुड़े हुए मेरे अभिन्न मित्र श्री मंघाराम टहिल्यानी जी

मेरे साथ ही बीएचईएल भोपाल में कार्यरत थे। वे मुझसे आयु में एक वर्ष बड़े हैं। उनका जन्म 13 नवंबर 1949 और मेरा जन्म 03 नवंबर 1950 में हुआ। उनसे जब मेरी बात शुरू हुई तो उन्होंने कहा सेवा पूर्वजन्मों के प्रतिफल के रूप में मिलती है। जब प्रारब्ध में लिखा होता है तभी सेवा मिलती है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुणवन्ती टहिल्यानी संत हिरदाराम नगर के उस समय के प्रतिष्ठित स्कूल आनन्दराम टी. शहानी उ.मा. विद्यालय में हेडमिस्ट्रेस के पद पर कार्यरत थीं। उनका नाम आज भी आदर से लिया जाता है। 1978 से ही उन्होंने नवयुवक परिषद को दान देना शुरू कर दिया था। वे बताते हैं कि उन्होंने जो भी सेवा की या अभी भी कर रहे हैं किसी भी प्रतिफल की इच्छा से नहीं की। सेवा का जुनून ऐसा कि कुटिया के कामों से वे कई बार बाम्बे सेवा सदन की स्थापना के वक्त वहां से आवश्यक उपकरण लेकर आते थे। घंटों बस में सफर कर के आते थे। सेवा का जुनून इतना था कि घर भी याद नहीं रहता था। अनेक नेत्र शिविरों के लिये उन्होंने अपनी सेवाये दी। वे बोलते हैं कि आज उनका परिवार पढ़लिख कर अपने पैरों पर खड़ा है। स्वामीजी के आशीर्वाद के कारण ही उनके बड़े बेटे नवीन टहिल्यानी का मेडीकल स्टोर खुल सका था। बाद में वह बंद हो गया। मगर अब फिर से शुरू हो गया है। उनका छोटा बेटा भगवान कला केन्द्र पर कंप्यूटर सीखता था वहां के प्रबंधक चावला जी के सहयोग से वह दुबई जाब में लगा और बाद में चाइना में पहुंच गया। आज भी चाइना में काम कर रहा है। उनकी बेटी भी अहमदाबाद के अच्छे परिवार में ब्याही हुई है। जिसके दो बेटे आज चार्टर्ड एकाऊंटेंट की पढ़ाई कर रहे है। इनके पिताजी का यूरोलोजी केम्प में आपरेशन हुआ था। पता नहीं किसी कारण से उनका आप्रेशन सफल नहीं हुआ। अमेरिका के प्रतिष्ठित डाक्टर गोपाल बदलानी जी ने उनका आपरेशन किया था उनको फिर से केयरवेल हास्पीटल जहांगीराबाद में भर्ती कराया गया। उस समय सिंगापुर से मेलवानी ट्रस्ट के ट्रस्टी आये हुये थे। उनका स्वागत कार्यक्रम ए.टी.शहानी स्कूल के हाल में चल रहा था। उनके जिम्मे जनरेटर इमरजेंसी में लाईट चली जाये तो चलाने की थी। उन्होंने सेवा कार्य को प्रथिमकता दी। उधर उनके पिताजी जीवन–मरण की स्थिति में जूझरहे थे मगर ये सेवा में डटे रहे। फिर उनके पिताजी ने अपनी आखिरी साँस ली। इनको बीएचईएल से सेवानिवृति के समय 14 महीने की छुट्टियां भुनाने की सुविधा थी मगर इन्होंने सेवा कार्यो के लिये यह भी परवाह नहीं की और इनकी सेवा निवृति के समय 8 माह की छुटियां ही भुनाई जा सकीं। आज इनकी पोती भी एमबीए पास कर चुकी है और उसका कैम्पस में चयन हो चुका है। छुट्टियां लेने के कारण इनके अधिकारी इनको सस्पैंड करने की भी धमकी देते रहते थे। आज भी इनके परिवार में दान देने की प्रवृति जारी है।

प्रभु के सिमरन कारज पूरे

पूज्य दीदी रमादेवी पमनानी
इन्दौर मो. 9303269059

पूज्य दीदी रमा जी एवं डॉ. जय किशोर पमनानी जी का दर्शन मुझे संयोग से तब हुआ जब मैं नेत्र शिविर में भाग लेने बहन पदमा आहूजा एवं अन्य भाई बहनों के साथ पुष्कर गया था। लौटते हुए ट्रेन में वे भी थे जहां पर पहली मुलाकात हुई। उनके आग्रह

को हम टाल न सके आना था संत नगरी मगर वे अपने साथ इन्दौर ले गये। अपने घर पर उन्होंने बड़े स्नेह और आदर पूर्वक भोजन करवाया। साक्षात नम्रता की मूर्ति थे वे दोनों। वे हमें स्टेशन पर विदा करने भी आये। मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि मैं जब भी इन्दौर गया तो उनसे जरूर मिला। डॉ. साहब टेलीफोन एक्सचेंज में काम करते थे एवं स्वामीजी के द्वारा संचालित नेत्र चिकित्सा शिविर, यूरोलोजी शिविर या जो भी चिकित्सा संबधी शिविर लगते थे उसमें सपरिवार आते थे। वे डॉक्टर तो नहीं थे मगर स्वामीजी उन्हें डॉक्टर कह कर ही बुलाते थे। जी जान से सेवा करते थे। आफिस से छुट्टियां लेकर आते थे। वैसे मैं शिविरों में नहीं जाता था। शायद प्रभू ने उनसे मुलाकात के लिये ही मुझे पहली बार शिविर में भेजा था। उनका दिव्य स्वरूप आज भी मेरे नयनों में रचा बसा है। वे आज हमसे दूर ब्रह्मलीन संतों के चरणों में पहुंच गये हैं। जब मैनें बहन पूज्य रमा दीदी से संतों के ऊपर अपने संस्मरण लिखर कर भेजने को कहा तो उन्होंने अपनी आवाज़ में 26 मिनट के रिकार्ड करके संस्मरण भेजे हैं।

उनको सुनकर मैने उनके ही विचारों को लेखनीबद्ध किया है विश्वास है, मैं उनको न्यायोचित रूप से आपके सामने अपनी लेखनी के माध्यम से पहुंचा रहा हूं।

पूज्य रमा दीदी की बड़ी बहन संत हिरदाराम नगर के संतों के सबसे प्रिय परिवार, जो संतों के कुटिया के पास में ही रहता है, के डॉक्टर रमेश टेवानी जी की धर्म पत्नी हैं। वे स्वंय भी प्राकृतिक चिकित्सक हैं। रमा दीदी को उनके जीजाजी गुरूवाणी पढ़ने के लिये प्रेरित करते रहते थे। वे उनको सुखमनी साहब की प्रति भी देकर आये थे कहते थे इसके पढ़ने से आप जीवन में सफल होंगी। उन्होंने उसका पालन किया और अपनी बहन से यह आग्रह किया कि उन्हें भी संतों का दर्शन लाभ करायें मगर वे कहती थीं संत महिलाओं को आने के लिये मना करते हैं। हमारा परिवार तो उनका अनुयायी है फिर भी हम बहुत कम वहां जा पाते हैं। आपका मिलना कठिन है। मगर उनके मन में यह उत्कंठा तीव्र थी कि वे स्वामीजी के दर्शन करें। वें स्वामीजी की तस्वीर के सामने खड़े होकर उनसे दर्शन देने की प्रार्थना करती थीं और उनको कहती थीं अब मैं किसी से नहीं कहूंगी कि आपके दर्शन करना है अब आप मुझे खुद दर्शन कराने की योजना बनायेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

मेरी पढ़ाई खत्म हो गई, डॉक्टर बनने की चाह थी मगर नहीं बन पाई सोचा शायद इसमें भी कोई भलाई होगी। प्रभू ने मेरे बारे में कुछ अच्छा ही सोचा होगा। मुझे सुखमनी साहब का एक पद याद आया।

'जो कुछु करै सोई सुखुमान, भूला काहे फिराई अजान'

इतने में रमेश जीजाजी रिश्ता लेकर आये, जय किशोर पमनानी का। पिताजी उम्र में ज्यादा अंतर होने के कारण मान नहीं रहे थे, मगर माताजी और मेरी चाह देखकर रिश्ता पक्का कर दिया गया। मेरी चाह इसलिये थी कि वे स्वामीजी के अनुयायी थे और स्वामीजी उनके घर आते जाते रहते थे। इस बहाने स्वामीजी के दर्शन होंगे। सगाई हो गई। शादी की तारीख भी स्वामीजी ने निश्चित की मगर वे शादी पर नहीं आ पाये। शादी करने के बाद इनको विचार आया कि पहले स्वामीजी के दर्शन करेंगे और उसके बाद ही गृहस्थ धर्म का पालन करेंगे। यही सोचकर शादी के बाद ये लोग इन्दौर से निकले और स्वामीजी के आश्रम पहुंचते–पहुंचते शाम हो गई। तब कुटिया के गेट पर स्व. पूज्य रूपचंद दूनानी जी की डयूटी रहती थी। स्वामीजी का समय सबेरे 9 बजे से 10 बजे तक था और ये शाम को आये थे। स्वामीजी ने उनको बोल रखा था कि इन्दौर से दो लोग

आने वाले हैं। आयें तो गेट खोल देना। मगर ये तो समय पर नहीं आये थे। तब उन्होंने कहा कि मैं स्वामीजी से पूछ कर आता हूं। जब वे स्वामीजी से पूछने गये तो स्वामीजी उन पर बहुत नाराज हुए और कहा कि मैंने आपको कहा था फिर पूछने क्यों आये हो? हमने तो स्वामीजी को कोई संदेश भी नहीं भेजा था फिर उनको हमारे आने के बारे में कैसे ज्ञात हो गया हम आश्चर्य चकित हो गये। जब हम स्वामीजी के पास पहुंचे तो उन्होंने कहा आपने इनता बड़ा संकल्प लिया है कि बगैर मेरे दर्शन करने के आप गृहस्थ आश्रम में नहीं जायेंगे यह आपने मेरे लिये कुर्बानी की है। भगवान आपको सदैव खुश रखे आज के पूर्व ऐसा किसी ने भी नहीं किया। यह हमारे लिये दूसरा आश्चर्य चकित होने का मौका था कि यह बात हमने किसी को नहीं बताई थी तो स्वामीजी को कैसे पता पड़ी। अब हम निश्चित हो गये थे कि वे परमात्मा के धरती पर साक्षात अवतार हैं। उन्होंने हमसे कहा कि नमक का सेवन छोड़ सकते हो? हमने तुरन्त हां कर दिया। एक वर्ष बाद स्वामीजी घर पर आये उन्होंने नमक छोड़ने वाली बात पूछी तो हमने कहा नहीं खाते। स्वामीजी ने पूछा उससे सेहत में क्या अन्तर आया उनको बताया कि गुस्सा कम हो गया है।

उसके बाद गृहस्थ धर्म शुरू हुआ। उदर के अंदर नया जीव पनपने लगा अभी एक महीना ही हुआ था कि स्वामी जी ने सासू मां को बधाई का फोन किया। सासू मां ने कहा बधाई आई है तो बेटा ही आयेगा। स्वामीजी ने कहा था उसका नामकरण वे खुद करेंगे। समय पर बालक का जन्म हुआ। स्वामीजी को संदेश भेजा। पुष्कर आश्रम में श्री दयाल मूलचंदानी ने स्वामीजी को संदेश दिया स्वामीजी ने काफी सोचने के बाद उसका नाम उत्तम रखा। जब उत्तम छः माह का बालक था तब स्वामीजी ने उसे नाचने के लिये कहा तुरन्त ही प्रतिक्रिया स्वरूप उत्तम ने पैर चलाया जैसे वह नाच रहा हो। उस समय उनका मासिक धर्म चल रहा था। सासू मां ने उनको ताकीद किया कि वे स्वामीजी के दर्शन नहीं कर सकतीं। दूर रहना वे सोचमें पड़ गईं स्वामीजी मेरे घर में आये हैं और मैं उनके दर्शन नहीं कर सकती। मन में प्रार्थना की। स्वामीजी तो घटघट की जानते थे उन्होंने खुद आकर दर्शन करवाये। उनको गुरुवाणी का एक प्रसंग याद आया कि गुरू अर्जुन देव ने अपने शिष्यों को बोला था कि यदि सुखमनी का पूरा पाठ न कर सको तो दो पंक्तियां आपको देता हूं वो पढ़ लेना तो समझ लो पूरी सुखमनी का पाठ कर लिया। यदि ऐसे ही स्वामीजी भी हमें दो पंक्तियां दे दें तो अच्छा होगा। कुछ उनके मन में चल रहा था कि पहुँचकर आश्रम में स्वामी जी से विनती करेंगे। मगर जैसे ही वे आश्रम पहुंचे स्वामीजी ने अपने आप ही कहा आप लोग गृहस्थ हो, यदि सुखमनी पूरी नहीं पढ़ सकते तो ये दो पंक्तियां रोज पढ़ा करो।

'प्रभू कै सिमरन कारज पूरे, प्रभू के सिमरनि कबहू न झूरे'

ऐसे अंतरयामी थे स्वामी जी और कहा जब गृहस्थ धर्म के फ़र्ज़ पूरे हो जायें, बच्चों की शादी हो जाये तो

'प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार, सुख प्रभ सिमरन का अंतु न पार

का पाठ करना' सन् 2014 में मन में विचार आया कि अब बच्चे बड़े हो गये हैं। बच्चों के उत्तम और मीरा नाम स्वामीजी ने ही रखे थे । मन में विचार आया ही था तो स्वामी जी ने कहा आपके बच्चों की शादी 2016 में होगी। पहले जय किशोर 2015 में सेवानिवृत्त हो जायें तब उसको पैसे मिलेंगे तब धूमधाम से शादी करना और हुआ भी ऐसा ही।

दूसरी बार जब स्वामीजी घर पर आये तो सासू मां से पूछा जय किशोर के घर क्या नया बच्चा आने वाला है। तब उन्होंने हां कहा तो स्वामीजी चुप हो गये पहली बार उन्होंने बधाई दी थी तो बेटा हुआ था। आज बधाई नहीं दी तो मन में विश्वास हो गया कि अब तो बेटी आयेगी और ऐसा ही हुआ। स्वामीजी ने उसका नाम मीरा रखा और कहा अब इनको और संतान नहीं होगी। हुआ भी एसा ही। न हमने आपरेशन करवाया न कोई परिवार नियोजन के साधन अपनाये अपने आप ही बाद में संतान होना बंद हो गया। ऐसे चमत्कारी, भविष्य की जानने वाले थे स्वामीजी।

स्वामीजी कहते थे जो बच्चे अपने मां बाप से जेब खर्च नहीं लेते वे बड़े अधिकारी बनते हैं। यह बात उत्तम ने सुनी तो उसने भी अपनी मां से बोला मैं अब जेब खर्च नहीं लूंगा। और आज वह कर्नाटक बैंक में प्रबंधक पद पर कार्यरत है।

जब हमने इन्दौर में स्वामीजी के परलोक गमन का समाचार सुना तो हमें लगा कि उत्तम की स्वामीजी में अपार श्रद्धा है मगर उत्तम तो दो दिन बाद इन्दौर आने वाला है। वह चेन्नई में पढ़ाई कर रहा था। हमने उत्तम को स्वामीजी के परलोक गमन की दुःखद सूचना देने के लिये फोन किया तो वह बोला मैने आपको सरप्राईज देने के लिये दो दिन बाद आने की सूचना दी थी मैं तो इस समय भोपाल में हूं और इन्दौर आ रहा हूं। वह समाचार सुन उसने अपना सामान उतारा और हमसे पहले ही वह संत नगरी में पहुंच गया। स्वामीजी के परलोक गमन के समय पूरे शहर की लाईट का गुम होना संयोग नहीं हो सकता, यह दर्शाता है कि एक प्रकाश पुंज परम ज्योति में समा गया ऐसा मेरा मन कह रहा है।

हमने 21 सितम्बर को स्वामीजी का जन्म दिन अपने घर पर धूम धाम से मनाया। जब सब लोग चले गये तो पमनानी जी ने बोला आज मैंने स्वामीजी को बोला है मेरे सभी सांसारिक कार्य पूरे हो गये हैं अब आप अपने श्री चरणों में जब चाहें तब बुला सकते हैं।

यह बात जब उन्होंने कही तो उन्होंने उसे कहा ऐसा क्यो बोल रहे हैं। प्रभू सब भला करेंगे। अभी मैं हूं न आप मुझे छोड़ कर कैसे जा सकते हैं। तब उन्होंने कहा मेरा अब तुमसे कोई संबंध नहीं है, तुम खुद समर्थ हो, स्वामीजी आपको भी बोलते हैं आप उनके पुत्र हो। मैं भी उनका दत्तक पुत्र हूं। दोनो बेटे एक साथ थोड़ी जायेंगे। उसके बाद उनका व्यवहार अजीब सा होने लगा। वे संसारिक वस्तुओं से दूर होते गये। बहुत सी वस्तुएं वे लोगों को बांटने लगे। उनका कथन था स्वामीजी ने उनसे कहा था जब तुम्हें लगे तुम्हारे सांसारिक कार्य संपन्न हो गये हैं तो मुझे कहना मैं तुम्हें अपने पास बुला लूंगा। और ऐसा ही हुआ। मैंने भी स्वामीजी को कहा था ऐसा हो तो उन्होंने कहा था अभी समाज को तुम्हारी आवश्यक्ता है, तुम समाज सेवा में लगी रहो और जब होगा तो मैं तुम्हें भी बुला लूंगा। ऐसा मेरा विश्वास है कि स्वामीजी परमात्मा के अवतार थे और जरूर वे वक्त आने पर मुझे भी अपने चरणों में बुला लेंगे।

पुष्कर में नेत्र शिविर लगा था, हम लोग वहां सेवा करने गये थे तो स्वामीजी ने सबको बुलाकर उनको डॉक्टर बोला था। तब से कोई भी बीमार होता था तो वे स्वयं उसकी रात रात भर सेवा करते थे। दवाइयां भी खुद की देते थे और पैसे भी नहीं लेते थे। उनकी सेवायें निःशुल्क रहती थीं।

जब जयकिशोर जी का अंत समय निकट आया उसके पहले सिद्धभाऊ का फोन उनके सुपुत्र उत्तम के पास आया और कहा कि स्वामीजी ने मुझे कहा है कि आप तुरन्त अपनी मां के पास जाओ आपके पापा जल्दी ही देह त्याग करने वाले हैं। उत्तम सुनकर

स्तब्ध रह गया, ऐसा कैसे हो सकता है। मगर उसकी सिद्धभाऊ पर अटूट आस्था थी। वह घर आया और मां को बताया किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। उनकी तबीयत भी इतनी खराब नहीं थी। उत्तम उनसे मिलने गया। उन्होंने गंगाजल, तुलसी माता के पत्ते मंगवाये और बातें करते रहे। रमाजी स्वामीजी से शिकायत करने लगी। पमनानी जी इतनी सेवा करते हैं ऐसे कैसे आप उसको ले जा सकते हैं। ऐसा करने से लोगों का सेवा से विश्वास उठ जायेगा और सेवा करना छोड़ देंगे। तब स्वामीजी ने कहा उसकी सेवायें प्रभू के दर पर कबूल हुई हैं। इसीलिये तो बुला रहा हूं। ओर फिर जयकिशोर जी ब्रह्मलीन हो गये। सच है अच्छे लोगों का लोक तो सुखी होता है उनका परलोक भी सुहेला होता है।

मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ना चाहिए

श्री झमटमल गोपलानीजी
गुरूनानक गैस सेवा, संत हिरदाराम नगर
मो. 9300559474

श्री झमटमल गोपलानीजी बीएचईएल भोपाल से सितम्बर 2000 में लेखा विभाग से सेवानिवृत्त हुए थे। आज वे 82 वर्ष के हो चुके हैं मगर हर शाम सेवा संकल्प धाम में होने वाली सांयकाल की आरती के पूर्व की सारी तैयारियां करते हैं। उनके 2 पुत्र और एक पुत्री हैं। गुरूनानक सेवा इंडियन ऑयल, संत हिरदाराम नगर के वो मालिक हैं। उनका स्वामीजी से संपर्क उनके बहनोई स्व. श्रद्धेय रोचीराम सीतलानी जी के द्वारा हुआ था। उनके ऊपर उनके परिवार के ऊपर स्वामीजी का आशीर्वाद हमेशा रहा। उनके घर में उनके छोटे भाई केवलराम गोपलानी के घर आइस्क्रीम बनाई जाती थी। इनके सभी भाई साथ में रहते थे। और हर एक के घर में फ्रिज होता था। स्वामीजी को आइसक्रीम बहुत पसंद थी। इसलिये ये काम करने का उनको सौभाग्य प्राप्त होता था। एक बार स्वामीजी ने रोचीराम जी को बोला ये लोग इतना करते हैं। इनका गैस, शक्कर इत्यादि का खर्च होता होगा उसका भुगतान इन्हें करते हो कि नहीं तब रोचीराम जी ने कहा ये सब भाई समर्थ हैं। इनको सेवा करने में खुशी मिलती है। ये पैसे नहीं लेंगे।

इनको जब गैस एजेन्सी मिली तब उसका नामकरण संतजी के द्वारा सुझाये गये चार नामों में से जो शासकीय स्तर पर स्वीकृत किया गया रखा गया। गैस एजेंसी का उद्‍घाटन स्वामीजी के कर कमलों से करवाया गया और पहला कनेक्शन स्वामी हिरदाराम जी के नाम से आवंटित किया गया।

सेवानिवृत्ति के बाद रोचीराम जी के द्वारा उनकी सबेरे 6 बजे से 10 बजे तक कुटिया में आने की ड्‍यूटी लगाई। प्रातः 10 बजे के पहले जितने भी श्रद्धालु कुटिया आते थे उनको प्रसाद इनके द्वारा ही दिया जाता था। कुटिया की गुल्लक में जो राशि आती थी उसको गिनना और सेवा कार्यो में लगाने हेतु स्व. रूपचंद दूनानी के साथ उनकी ड्‍यूटी लगती थी।

जब स्वामीजी बीमार हुए तो इनको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि वे स्वामीजी के कमरे में जाकर उनकी सेवा करते थे।

एक बार स्वामीजी अपने रसोईघर में काम कर रहे थें उस समय वे दिगम्बर

अवस्था में थे और झमटमल जी किचन में चले गये। स्वामीजी नाराज हो गये और जी भरकर गालियां दीं और अपने अनुयायी से कहा कि इसे बाहर ले जाओ।

स्वामीजी के सामने जाने में उनको डर लगता था। स्वामीजी को देखकर वे और सारे लोग इधर–उधर छिप जाते थे। एक बार स्वामीजी की सेवा कर रहे थे। स्वामीजी कुछ हिले तो इन्होंने उनका हाथ पकड़ लिया तब स्वामीजी ने इनको चांटे मारे, और कहा '**मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ना चाहिये तुमने मेरा हाथ कैसे पकड़ लिया**'। कितना गूढ़ अर्थ छिपा था स्वामीजी के वाक्यों में यह एक गुरमुख ही समझ सकता है!

स्वामीजी महानतम मनोचिकित्सक एवं मनोवैज्ञानिक

डॉ. कन्हैयालाल रंगवानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9407254388

डॉ. कन्हैयालाल रंगवानी जी से मेरा परिचय 1965 से है। मैं 1965 में ही संत हिरदाराम नगर में गैरतगंज से रहने आया था। उस समय मैं 10वीं में पढ़ता था। मेरी बहन छठी में पढ़ती थी। उन दिनों संत हिरदाराम नगर में सांयकालीन कोचिंग कक्षायें चलती थीं। नवयुवक सभा के श्री मोतीराम लालवानी के मार्गदर्शन में कांग्रेस के नेता, समाज सेवी जमयतराय जी ने निःशुल्क इमारत उपलब्ध करवाई थीं। वहां पर 50 नए पैसे लेकर बच्चों को शाम को कोचिंग में पढ़ाते थे। उसमें से भी बच्चों को फ्री में चॉकलेट, टॉफ़ियां बांट देते थे कि वे उस लालच के कारण कोचिंग में नियमित आते रहें। हमारे समाज ने हमेशा शिक्षा को बढ़ावा दिया है। उस समय भी नौजवान अपना समय निकालकर बच्चों को निःशुल्क कोचिंग देते थे। उनके कारण बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे नंबर लेकर पास होते थे। उस समय नवयुवक सभा का स्कूल नहीं बना था। कोचिंग कक्षायें, पुस्तकालय और वाचनालय होता था। स्टेशन रोड पर जहां पर अनेक समाचार पत्र एवं मेग्जीन आते थे लोग आकर पढ़ते थे। उनमें मैं भी था जो नियमित वहां जाकर पेपर पढ़ता था। लायब्रेरी से पुस्तकें लेकर पढ़ता था। उन कोचिंग कक्षाओं में मैने भी बतौर शिक्षक अपनी सेवायें दी हैं। आज तो नवयुवक सभा के ए.टी.शहानी कन्या उ.मा. विद्यालय, के.टी.शहानी बालक उ.मा.वि., पंडित दीनदयाल कन्या महाविद्यालय, संचालित होते है। वाचनालय, पुस्तकालय अब नहीं चलते हैं। नवयुवक सभा के कारण ही वन ट्री हिल्स के प्लॉट लोगों को आवंटित हुये जो आज संत हिरदाराम नगर की समृद्ध कॉलोनियों में गिनी जाती है। वहीं पर मेरी छोटी बहन कोचिंग पढ़ने जाती थी। तभी मेरा कन्हैयालाल रंगवानी से पहला परिचय हुआ। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा के भी स्वयं सेवक थे। वे संतों की सेवा में हरीराम तुलसियानी के सान्निध्य के कारण जुड़े थे। जब उनसे मैंने स्वामीजी के बारे में किताब लिखने की बात की और उनसे उनके विचार जानने चाहे तो उन्होंने जो बताया वो ही मैं अपने शब्दों में आपके समक्ष रख रहा हूं। उन्होंने विवाह बंधन से अपने आपको नहीं बांधा। आज उनकी आयु 75 वर्ष है। वे आज भी समाज सेवा से पूर्ण निष्ठा के साथ जुड़े हैं। वे सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय, आरोग्य केन्द्र, साधू वासवानी स्कूल के ट्रस्टी रहे हैं। कालांतर में नवयुवक सभा द्वारा संचालित कोचिंग कक्षाये बंद हो गई तो उन्होंने सिंधु समाज में कक्षाएं

संचालित कीं, सिंधू समाज में कक्षायें भी नाम मात्र शुल्क पर चलती थीं। स्थान निःशुल्क प्रदान किया गया था। कालांतर में स्वामीजी ने उनसे कहा कहीं अपना स्थान खरीद लो और संचालन करो। तब उन्होंने साधू वासवानी स्कूल आज जहां पर है वहां पर आधा क्वाटर 3500 रूपये देकर खरीदा। यह राशि स्वामीजी ने उपलब्ध कराई थी। बाद में अगले आधे भाग को 6 हजार रूपये में देकर खरीदा गया। इस तरह साधू वासवानी स्कूल की नींव पड़ी। उस कार्य में सर्वश्री केवल गोपलानी, स्व. कन्हैयालाल लालवानी, कन्हैयालाल रंगवानी और स्व. आइलदास हेमनानी को स्थापना का श्रेय जाता है। यह सन् 1974 के आसपास की बात है। उन्होंने लगातार 17 वर्ष तक स्कूल के संचालन में महती भूमिका निभाई। आज साधू वासवानी स्कूल का नाम, उसके शिक्षा का स्तर बहुत ही अच्छी श्रेणी का है। पहले यह कोएड स्कूल था। अब कक्षा 8वीं तक कोएड है जबकि 9वीं से यह कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में जाना जाता है। मध्य एवं निम्न वर्ग के बच्चो के लिये यह एक अच्छा स्कूल है। अब इनका बालकों के लिए अलग स्कूल बन गया है।

स्वामी जी के सान्निध्य के कारण ये आरोग्य केन्द्र से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। सेवा सदन में भी वे सक्रिय रहे। उन्होंने स्वामीजी के बारे में बताया कि समाजहित में कोई भी कार्य हो तो वे येन केन प्रकरेण करवा कर ही चैन की सांस लेते थे। उनके लिये सेवा के तीन पात्र थे, बूढ़े, बच्चे और बीमार वे इन सबको परमेश्वर के दोस्त बताते थे। उनका मूल मंत्र भी था।

'बूढ़े बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार।
करें भावना से सेवा इनकी, पायेंगे लोक, परलोक में सुख अपार'

बूढ़ों के लिये राशन व्यवस्था, बच्चों के लिये शिक्षा दान और बीमारों के लिये चिकित्सा व्यवस्था उनके लिये सर्वोपरि थे। आज बैरागढ़ में शिक्षा का ऐसा कोई स्कूल कॉलेज नहीं है जहां पर स्वामीजी का वरद हस्त नहीं रहा हो। रोगियों के लिये आरोग्य केन्द्र, सेवासदन, शासकीय अस्पतालों के विस्तार, एवं जनरल अस्पताल में उनका बहुत योगदान है। विकलांगों के लिये उन्होंने कृत्रिम अंगों की भी व्यवस्था की। यूरोलोजी कैम्प, नेत्र शिविर, प्राकृतिक चिकित्सा शिविरों का निरन्तर संचालन करते रहे जो आज भी उनके बाद भी निरंतर जारी है।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी महानतम मनोचिकित्सक एवं मनोवैज्ञानिक भी थे। उनके सामने कोई झूठ बोलता था तो उनको तुरन्त पता पड़ जाता था। झूठा आदमी उनके सामने टिक नहीं पाता था। किसी की निगेटिव भावना को पाजिटिव भावना में परिवर्तित करने में उनको महारत हासिल थी। जो उनके पास गया वह उन्हीं का होकर रह जाता था।

उन्होंने कहा आप, लिख रहे हैं तो आपको पाजिटिव या निगेटिव जो पता पड़े क्या आप निगेटिव को लिख पायेंगे? मैंने कहा अवश्य कोशिश करूंगा कि मैं स्वामीजी का हर रूप लोगों के सामने रखूं। उन्होंने बताया कि 1984 में जब वे साधू वासवानी स्कूल के डायरेक्टर थे तो संतजी ने कहा कि स्कूल के लिये शासकीय स्तर पर मिलने वाली ग्रांट के लिये प्रयास करो। मगर वे पक्ष में नहीं थे क्योंकि रिश्वत के बिना ग्रांट मिलना मुश्किल था और वे रिश्वत देने के पक्ष में नहीं थे। स्व. उत्तमचंद ईसरानी जी भी पक्ष में नहीं थे तब सिंधी कॉलोनी में रहने वाले संत खिल्लूमल जी ने उनको समझाया कि गरीब शिक्षकों का ख्याल कर आप लोग ग्रांट लो। उनके पेट भरे होंगे तो बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पायेंगे

और उस आधार पर ग्रांट के लिये आवेदन किया गया और स्वीकृत भी हुई।

उन्होंने बताया कि संत खिल्लूमलजी ने संतों से कहा था ये स्कूल बनाना आप का काम नहीं है। तो संतों ने उनको बड़ा ही अच्छा उत्तर दिया था स्कूल बनवाता हूं मगर मैं उनसे बंधा हुआ नहीं रहता। बनने के बाद ट्रस्टी ही संभालते हैं मैं अलग हो जाता हूं। साधू वासवानी स्कूल में ही संत खिल्लूमल के नाम पर संतों ने हाल का निर्माण करवाया था। संत खिल्लूमल जी गृहस्थ में रहते हुए सिद्ध संत थे, 2010 तक वे प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में सक्रिय थे। मगर 2010 में उनको सेवानिवृत्त कर दिया गया तो उसके साथ ही त्याग–पत्र के साथ कुटिया की चाबियां भी उन्होंने सौंप दी।

श्री कन्हैयालाल टेंवाणी जी के साथ वे आज भी स्वामीजी की पुण्य तिथि एवं जन्म दिवस पर पुष्कर की कुटिया में होने वाले कार्यक्रमों में पांच–छः साल से जाते हैं।

उन्होंने रामचरित्र मानस की एक चौपाई बताई–

सुरजन, मुनिजन सबही की यह रीती, स्वारथ लाग कर हिं सब प्रीती

उन्होंने बताया स्वामीजी किसी से भी दान लेते थे तो दबंग बन कर लेते थे। वे दानदाताओं को ये तक बोलते थे कि बोलो स्वामीजी ने दान लेकर मुझपर उपकार किया है। वे दान के पैसे को अपने ऊपर कभी व्यय नहीं करते थे। वे उसमें से जीवनयापन के लिये कम, से कम जितना आवश्यक हो उतना ही, लेते थे। उनके पास बड़े–बड़े मंत्री आते थे मगर उनकी दरी फटी होती थी तो भी वे उसी पर उनको बिठाते थे। स्वामीजी के नाम पर सेवा सदन के आंरभिक दिनों में एक बैंक खाता खोला गया था। स्वामीजी को जब पता चला तो उसे उन्होंने तुरंत बंद करवा दिया था उन्होंने कभी भी धन संग्रह नहीं किया। स्वामीजी कहते थे–

धाल खाय हथऊं बि कुछ देय, नानक यह राह पछाणे कोय।
पहरीं पतण तिन खे, हथु जिन्हीजो हींग, येन केन प्रकारेण सर्वदा सर्कस गोआन।

आरोग्य केन्द्र को प्रसिद्धि दिलाने में स्वामीजी का योगदान भी बहुत बड़ा है। विदेशों से जो दानदाता संत नगरी में आते थे उनको बताया जाता था कि यहां पर जो भी डॉक्टर हैं वे सब अपनी सेवाये निःस्वार्थ भाव से, बगैर कुछ मानदेय लिये देते है। यह सेवा भावना देखकर वे अभिभूत हो जाते थे। प्रारम्भ में आरोग्य केन्द्र में केवल 1रू. शुल्क लिया जाता था। यह उन्होंने गर्व से बताया।

आह गरीबा, कहर खुदाई

चंद्र कुमार चांदवानी
संचालकः जीवन ज्योति
संत हिरदाराम नगर मो. 9200222221

श्री चन्द्र कुमार चादवानी जी के परिवार से मेरा परिचय मई 1970 के बाद हुआ। उनके चाचाजी श्री स्व. हीरालाल चांदवानी जी मेरे साथ बीएचईएल भोपाल में क्रैन ऑप्रेटर के पद पर काम करते थे। उनके चचेरे भाई स्व. मनोहर चांदवानी जी ने कुछ समय बीएचईएल में काम किया था। वे मेरे साथ ही भोजन करते थे। बाद में उनका चयन बैंक में हो गया था तो उन्होंने बैंक में नौकरी कर ली थी। स्व. हीरालाल जी संत प्रकृति के व्यक्ति थे। उनके घर मनोहरजी के कारण आना जाना होता था। पूरे परिवार

से घनिष्ठता थी उनकी बहनें बड़ी ही सौम्य, मिलनसार और दयालू प्रकृति की थीं। जब चन्द्र कुमार चांदवानी जी ने संत नगर में अपना जनरल स्टोर खोला तो उसका उद्घाटन स्वयं परम पूजनीय स्वामीजी ने किया। दुकान का नामकरण 'गुरूनानक मोदीखाना' भी संतों ने किया था। बैरागढ़ की मुख्य सड़क, के पीछे वाली सड़क जिसे गली कहेंगे, में यह दुकान स्थित थी। अपने जुझारूपन के चलते उन्होंने दुकान को उम्मीद से भी ज्यादा ऊंचाइयों पर पहुंचाया। बाद में उन्होंने भोपाल के मारवाड़ी रोड पर दुकान ली और कालान्तर में वे भोपाल के ही लालवानी प्रेस रोड पर शिफ्ट हो गये। वे हर रविवार, स्वामी जी के जन्म दिन, स्वामीं जी की पुण्य–तिथि, त्यौहारों पर भंडारा करते हैं।

उनकी तरफ से लगभग 3000 व्यक्तियों के लिये हर रविवार भोजन बनता है। उनके साथ अच्छे लोगों की एक टीम काम करती हैं। वे लोग अपनी कारें लाते हैं, उनमें भोजन सामग्री भरकर भोपाल स्थित विकलांग आश्रम, अनाथ आश्रम, विधवा आश्रम, मानसिक विकलांग आश्रम, टी.बी. हास्पीटल, बाल संप्रेक्षण गृह, झोपड़ पट्टी, मजदूर बस्तियों में जाते हैं और सबको बिठाकर भोजन करवाकर ही वापस आते है। जब शुरू में यह भण्डारा शुरू किया था तो चार पांच आश्रमों के 50–60 व्यक्तियों से शुरू होकर आज 3000 व्यक्यिों के लिये बनता है। इसके लिये उनको कभी धन की कमी महसूस नहीं हुई। भोजन भी शाही रूप में बनता है। कभी–कभी मैं भी जाता हूं तो मुझे भी भोजन करना पड़ता है। अंतिम बार जब मैं उनसे मिलने गया तो भोजन में मटर पनीर, राजमा, चावल एवं गाजर का हलवा खाकर ही वापस आया। जब उनसे स्वामीजी के बारे में बात शुरू की तो लगभग आधे घंटे तक संस्मरण सुनाते रहे जिनको मैंने अपनी लेखनी में लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है।

उन्होंने बताया जब वे स्कूल में पढ़ते थे तो एक बार दोस्तों के साथ कुटिया के पास कौतूहलवश चले गये थे। बहुत छोटे थे। वे जब गेट के पास खड़े थे तो स्वामीजी की उन पर नजर पड़ी, वे पास आये, उन्होंने पूछा क्यों आये हो? उन्होंने उत्तर दिया आप का दर्शन करने के लिये आये हैं। उन्होंने तुरंत ही भाई रूपचंद जी को आवाज देकर कहा, इनको पत्थर मार कर भगाओ। मेरे दर्शन करने आये हैं। वे लोग डर कर भाग आये उनको गुस्सा भी आया कि हम दर्शन करने आये हैं और ये कैसे संत हैं कि गालियां भी दे रहे हैं और कह रहे हैं कि पत्थर मार कर भगाओ।

फिर एक बार ये गये तो स्वामी जी से मुलाकात हुई। उन्होंने पूछा फिर क्यों आये हो तो उन्होंने उत्तर दिया स्वामीजी सेवा करने के लिये आये हैं। तब स्वामी जी ने दरवाजा खोला उनको अंदर बुलाया। उन्होंने अन्दर जाकर कुटिया का कचरा, घास–फूस साफ करने का प्रयास किया जब वापस आ रहे थे तो स्वामीजी ने उनको 1–1 रूपया और अंगूर खाने के लिये दिये। बच्चे खुश हो गये बोले ये तो अच्छी बात है दर्शन के साथ पैसे और अंगूर भी स्वामी जी ने दिये। तब उनका जाना शुरू हो गया। मगर कुछ समय बाद वे जाने से कतराने लगे। कुटिया जाना छोड़ दिया। मगर एक दिन उनके बड़े भाई नन्दकुमार ने उनको बोला आज मुझे कुछ काम है आप कुटिया जाओ और स्वामीजी को दूध गर्म करके दे के आओ। उन्होंने कहा जा रहा हूं। वे अनमने भाव से गये दूध गर्म कर ही रहे थे कि स्वामीं जी पास आये और उनको बोला कल से तो रोज आओगे ना? उनको बोलना पड़ा हां आऊंगा। इनको काम सौंपा कि ये आम के पेड़ों पर जो फल लगे उनकी निगरानी करना है।

श्री दादा रोचीराम सीतलानी जी भी आश्रम में ही रहते थे। इन्होंने उस समय वह पर काम किया आम को पकाकर, साफ कर पुष्कर स्वामीजी के लिये भेजते थे। स्वामीजी बहुत खुश हुये और उन्होंने कहा तुमने बहुत सेवा की है उसके उपलक्ष में दो हरक्यूलस साईकिलें स्वामीजी ने मंगाई एक उनको और एक उनके हमउम्र तुलसी आडवानी को दी गई।

फिर इनका कुटिया से लगाव कम हो गया। बहुत दिनों बाद जब ये गये तो स्वामीजी ने कहा, क्यों नहीं आते हो, ज्यादा देर मत रुको मगर दिन में एक बार मुझे दर्शन देकर जाया करो। संत जी का ऐसा कहना कि एक बार आकर दर्शन दे जाया करो उनके अंतरमन को छू गया। एक संत जिसके चरणों में बड़े–बड़े सेठ, सेवक, साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते थे, जिनके दर्शन के लिये सबेरे से लंबी कतारें लग जाती थी जिनकी एक झलक पाने के लिये लोग टकटकी लगाये खड़े रहते थे, मेंहदी की झाड़ियों के झरोखों से लोग उनके दर्शन के लिए झांकते थे वे संत उसे कह रहे थे कि दिन में एक बार आकर दर्शन दे जाया करो। वह शर्म से अभिभूत हो गये। और फिर वे संतों के नजदीक और नजदीक आते गये। उनमें सेवा की भावनायें बढ़ती गयीं और आज वे इतना बड़ा सेवा कार्य अपने दम पर खड़ा कर चुके हैं।

चन्द्र कुमार जी बड़े ही स्पष्टवादी हैं। किसी को भी कुछ ग़लत करते देखते हैं तो उनको सहन नहीं होता और वे बगैर लाग–लपेट के सामने वाले को उसकी ग़लती के लिये डांट कर समझा देते हैं। ग़लती किसने की है, कितना बड़ा आदमी है वे इस बात को भी कभी नहीं सोचते।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी की कुटिया में फलों के बहुत वृक्ष लगे हुये थे, अंजीर आम, पपीता, नीबू तरह–तरह के। अक्सर फलों को बांटने, खाने को लेकर कार्यकर्ताओं में तू–तू, मैं–मैं हो जाती थी। एक दिन स्वामीजी को यह बात अच्छी नहीं लगी बोले ये फल के पेड़ झगड़े की जड़ हैं इन्हें काट कर फैंक दो ओर ऐसा ही किया गया।

उन्होंने बताया उनके दो बेटे पहले ही थे, फिर जुड़वां बच्चे होने का डाक्टरों ने बताया, सोनोग्राफी करवाई गई तो उनको बताया गया जुड़वां लड़कियाँ पैदा होंगी उनको लड़कियां होने की बात सुनकर अच्छा नहीं लगा क्योंकि उनकी सोच थी कि लड़कियों को पैदा करो, बड़ा करो, शादी करो, घर अच्छा न मिले तो जीवन लड़कियों का नर्क बन जाता है। मगर क्या करते डाक्टरों ने तो रिपोर्ट में लिखकर दिया था जुड़वां बेटियां होंगी। वो रिपोर्ट आज तक उनके पास मौजूद है। यह रिपोर्ट डिलेवरी होने के पन्द्रह दिन पहले की थी। मगर जब डिलेवरी हुई तो लड़कियां नहीं उनको जुड़वां लड़के पैदा हुये। उसे यह संतो की कृपा का फल एवं चमत्कार मानते हैं। उनका कहना है कि ये चारों बेटे उन्हें संतों की कृपा से प्राप्त हुए हैं। बच्चों का नामकरण भी स्वामी जी ने ही किया था। गुलाब, भगतसिंह, निर्मल, भगतराम उनके बच्चों के नाम हैं।

वे तीन बार मौत से रूबरू हुये मगर हर बार मौत उनको छू न सकी। एक बार वे दीवाली के सीजन में भोपाल से दुकान बंद कर रात को 2 बजे लौट रहे थे, उन दिनों रास्ते के चौड़ीकरण का काम चल रहा था। लालघाटी की ढलान पर थे रास्ते में एक तरफ गड्डा था दूसरी तरफ रास्ता था जहां से एक वाहन जा सकता था। वे स्पीड में थे उल्टी दिशा से एक ट्रक आ रहा था। इनको लगा अभी टक्कर हो जायेगी। उन्होंने डर कर अपनी आंखें बंद कर ली। मौत साक्षात दिख रही थी। संतों को याद किया और पलक झपकते ही उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी ने अपने पवित्र हाथों का सहारा देकर का

को आगे निकाल दिया।

कुछ दिन पहले वे रात्रि को भोजन बांटने पास के गांव की मजदूर बस्ती में गये थे। उनके साथ मेरे अभिन्न मित्र श्री गोवर्धन मंगतानीजी भी थे जो कार ड्राइव कर रहे थे। वे हमेशा मन में संकल्प लिये हुये रहते हैं कि हे स्वामी मेरी जब मौत आये तो उस समय भी मैं सेवा के रास्ते पर होऊं। मैंने भी अपने एक भजन में अपने लिये कल्पना की है।

मेरे अपने निकट हों, हाथों में दान घट हो,
मेरे पग सेवा पथ पर हों, फिर प्राण तन से निकले।

यही कल्पना उनके हृदय में भी रहती थी। वे आ रहे थे गांव की सड़क से। उनको इन्दौर–भोपाल हाईवे पर आना था। गोवर्धन जी अपनी मस्ती में कार चला रहे थे। उन्होंने देखा कि एक वाल्वो बस चली आ रही है इन्दौर की तरफ से। उन्होंने गोवर्धन जी को आवाज दी मगर गोवर्धन जी तो अपनी मस्ती में मस्त कार चला रहे थे। उन्होंने सुना ही नहीं। उनको लगा शायद मेरा सोचा हुआ कि जब मौत आये तो मैं सेवा में लगा हुआ हूं आज सत्य होने वाला है। उन्होंने डर कर अपनी आंखे मूंद ली मगर अचानक चमत्कार हुआ स्टीयरिंग कैसे घूम गया छः इन्च फासले से वह बस निकलकर चली गई।

तीसरी बार कुछ कपड़े वे गरीब बस्तियों में बांटने जा रहे थे। उनके बेटे भगतसिंह ने उनको कहा मैं भी चलूंगा। कपड़े एक टीन के कनस्तर में भर रखे गये थे। भगतसिंह को कनस्तर के साथ पीछे की सीट पर बिठा दिया गया। कनस्टर का ढकन ढीला था। भगतसिंह बाल सुलभ चंचलता से उस ढक्कन को नीचे ऊपर करने लगा। जब गंतव्य पर पहुचे तो कपड़े बांटने के लिये कनस्तर को नीचे उतारा और ढक्कन खोला तो उसमें फुफकारता हुआ कालिया 10–12 फुट का लंबा सांप निकला और भाग गया। सोचिये यदि भगतसिंह के बार–बार ढक्कन से छेड़खानी के वक्त ऐसा हो जाता यह सोचकर वे सिंहर उठे। स्वामींजी ने कहा था बच्चों व गरीबों की आह नहीं लेना चाहिये। उनको हमेशा खुश रखना चाहिये।

आह गरीबा, कहर खुदाई।

यदि हमारे कर्म सही हैं तो सब अच्छा ही होगा। यह विश्वास उनको है। वे आज के सेवाकार्यों में अनाप शनाप शुल्क लेने पर भी असंतुष्ट नजर आये। वे बोले जब कोई दुखी होता है तो वो उसके लिये रोज प्रभू से प्रार्थना करते है। मगर जब उसके दुःख दूर हो जाते है, तो फिर प्रार्थना करना बंद कर देते हैं और उनकी प्रार्थना हमेशा स्वीकार होती है उनका मानना है दूसरों के लिये की गई हमारी प्रार्थना परमात्मा अवश्य पूरी करते हैं।

ज्ञान का अनुपम भंडार

श्री कन्हैयालाल रूपचन्द मूलचंदानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9893346736

संत शिरोमणि हिरदाराम साहिब जी की आसीस और
उनके साथ बिताए पलों की याद, सुखद अनुभव, ज्ञन–

बात सन् 1985 की है। नवरात्रि की धूम और रौनक थी भक्तिमय माहौल बना

हुआ था और उसके बाद दशहरे का दिन था। मैं लगभग 12 वर्ष का था और कक्षा पांचवीं में पढ़ता था। उन दिनों हम सब पड़ोसी मिलकर चंदा इकट्ठा करके अपने मोहल्ले में कागज, पटाखों आदि का रावण बनाते थे। सुबह 11 बजे का समय था। मैं और मेरा एक मित्र कागज के बने रावण के पास रखे हुए पटाखों की देखरेख कर रहे थे।

हम बच्चों की नादानी से एक छोटी–सी ग़लती के कारण वहां रखे पटाखे से मेरा चेहरा जल गया था। आँखों से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, मेरा दोस्त घबड़ाकर अपने घर चला गया और कुछ पड़ोसियों ने मुझे संभाला और घर पहुंचाया। मुझे बैरागढ़ के एक निजी अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद हमीदिया अस्पताल ले जाया गया। वहां डाक्टर्स ने कहा कि शायद मेरी आँखों को ज्यादा नुकसान पहुंचा है, जाँच और इलाज के कुछ दिनों बाद ही सही–सही बता पाएंगे।

यह सुनकर मेरे पिताजी और बड़े भाई संत जी की कुटिया पहुंचे। संतजी ने आंखें बंद करके ध्यान किया और फिर आशीर्वाद दिया कि कोई चिन्ता न करो। इलाज करो, ईश्वर सब भला करेंगे। बालक जल्दी स्वस्थ होकर घर आएगा। भाऊ श्री कन्हैयालाल पारवानी के हाथों संतजी कुटिया से मेरे लिये फल और मिश्री का प्रसाद भेजा करते थे बस सांई जी की असीम कृपा रही मैं 15 दिन में पूरी तरह से ठीक होकर घर आ गया। पर जलने की वजह से चेहरा काला पड़ गया था। हाथ पर भी जलने के दाग रह गये थे। संत जी ने पिताजी को एक मलहम दिया, कुछ दिनों में ही मेरा चेहरा, हाथ सब एकदम ठीक हो गये। अब तक ऐसा मलहम हमें किसी दवाई की दुकान या किसी वैद्य के पास भी नहीं मिला। ये चमत्कारी मलहम संतजी के पवित्र हाथों से ही बना हुआ था।

पिताजी और पूरा परिवार तो शुरू से ही संतों की सेवा में समर्पित थे। मैं भी जबसे समझदार हुआ, कुटिया पर सेवा कार्यों में जुड़ गया। पिताजी ने संतजी से प्रार्थना की कि आपके आशीर्वाद से यह ठीक हुआ है, इसे अपना शिष्य बनाने की कृपा करें। संतजी ने कहा शिष्य नहीं सेवाधारी बनाएंगे। उसके बाद उनकी सेवा में कभी बैरागढ़, कभी पुष्कर, जबलपुर, नैनीताल, अहमदाबाद, इन्दौर, जयपुर और हिन्दुस्तान के कई शहरों में संत और उनके आशीर्वाद से बहुत कुछ नया सीखने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

संतजी की कही बात निःसंदेह भविष्यवाणी होती थी। लगभग 30 बरस पहले एक बार संतजी ने सभी भक्तों से पूछा कि बताओ हवाई जहाज की उड़ान ऊँची या बैरागढ़ की उड़ान ऊँची होगी? तब सबने कहा कि बैरागढ़ ऊँचा होगा। संतजी ने खुश होकर सबसे कहा 'ताली बजाओ' ऐसा ही होगा। आज सचमुच बैरागढ़ ने व्यापार और अन्य बातों में जो तरक्की की है, जिन ऊंचाइयों को छू रहा है ये सबकी नज़रों के सामने है।

सन् 1988 की बात है तब इन्दौर से बैरागढ़ कार से लौटते समय संतजी ने सिद्धभाऊजी से पूछा बताओ तुम्हारे शिष्य ज्यादा होंगे कि कन्हैया के? सिद्धभाऊजी ने विनम्रता पूर्वक कहा सांईजी मैं क्या चीज़ हूं, मुझे कौन जानता है? कन्हैया के ही शिष्य बहुत होंगे। संतजी सहज मुस्कुरा उठे और उनकी आँखों में अजब सी चमक आ गई। यह उनकी ही कृपा थी कि चंद बरसों में ही मैं स्कूल शिक्षक बन गया ओर ट्यूशन भी खूब चलने लगी।

शान्ति करोड़ों खर्च कर भी नहीं मिल सकती

श्री महेश कुमार दयारामानी
सचिव जीवसेवा संस्थान,
संत हिरदाराम नगर मो. 9[illegible]011646

महेश कुमार दयारामानी जी के कारण संत हिरदाराम नगर में सेवा कार्यों के लिये धन की कमी महसूस नहीं की जा सकती। वे देश विदेश के दानदाताओं से संपर्क में रहते हैं। जीव सेवा संस्थान के सहयोग से विधवाओं को सहायता राशि, राशन वितरण, चिकित्सा हेतु अनुदान के कार्य संपन्न किये जाते हैं। जीव सेवा संस्थान की स्थापना इस उद्देश्य से की गई थी कि विभिन्न परियोजनाओं के लिये एक ही जगह धन एकत्रित हो और उसे आवश्यक्तानुसार संतों के मार्गदर्शन में चलने वाली भिन्न–भिन्न उद्देश्यों के लिये कार्यरत संस्थाओं की दैनंदिन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मुहैया कराया जाय ताकि कार्यकर्ता निश्चिंत होकर कार्यों को करते रहें और दान दाताओं को भी अलग अलग कार्यों के लिये बार–बार न कहना पड़े। उनके पास व्यक्तिगत समस्या ग्रस्त लोगों के जो भी आवेदन आते हैं उनको सर्वेटीम को सौंपा जाता है। सर्वेटीम में सम्मलित व्यक्ति किसी पूर्वाग्रह से लिप्त नहीं होते, वे समय सीमा के अंदर सर्वे करके रिर्पोट अपनी अनुशंसा के साथ सौंपती है और उनकी अनुशंसा के आधार पर जरूरतमंदो को तत्काल सहायता उपलब्ध कराई जाती है। उनके पास जो भी दान संग्रह आता है वह बैंकों के माध्यम से आता है और भुगतान भी बैंको के माध्यम से हितग्राहियों को चैक से करते हैं। उनके लेखा विभाग का काम इतना साफ सुथरा है कि वे चैन की नींद सोते हैं। शिक्षा का क्षेत्र हो, चिकित्सा का क्षेत्र हो, गरीबों को आर्थिक सहायता हो, अंतिम संस्कार के लिये सहायता राशि, कन्याओं के विवाह के लिये आर्थिक मदद की आवश्यकता आदि सर्वे टीम को, जो निष्पक्ष होती है, कोई भी आवेदन सही लगता है तो उसको किसी से भी सिफारिश करवाने की जरूरत नहीं होती। उसका कार्य ईश्वरीय प्रेरणा से अपने आप हो जाता है। आज जीवसेवा संस्थान का नाम राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाना पहचाना है तो इसका श्रेय महेश दयारामानी के कर्तव्यनिष्ठ, समर्पित एवं करूणामय हृदय को जाता है। श्री महेश दयारामानी जी का परिवार सेवा कार्यों से जुड़ा रहा है। उनके पिता स्व. श्री देवनदास दयारामानी जी संत स्वभाव के एवं गुरूवाणी में अटूट आस्था रखने वाले थे। वे संतों की कुटिया के नियमित पाठी थे, उनके घर में स्वामीजी अखंड गुरूग्रंथ साहिब का पाठ रखवाते थे और अनेक बार रात्रि के दो–दो बजे भी संतजी आकर खिड़की के पास खड़े होकर पाठ का आनन्द लेते थे। उनके भाई स्व. गनपत दयारामानी प्राकृतिक चिकित्सक थे, और आरोग्य केन्द्र प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र के संचालक थे। उनके दूसरे बड़े भाई श्री रमेश कुमार दयारामानी बम्बई के उद्योगपति होने के साथ–साथ वहां पर उल्हासनगर जीव दया संस्थान के नाम से संस्था चलाते है। उसके कार्य कहीं–कहीं पर जीव सेवा संस्थान संत हिरदाराम नगर से भी उत्कृष्ट हैं। इस तरह पूरा परिवार उनके पिताजी से लेकर स्वामी जी के सेवाकार्यो के प्रति समर्पित रहा है, और आज भी है। उनकी एक बेटी आज अमेरिका में है पहले वह बैंक में आफ़ीसर थी। एक बेटी डॉक्टर है, एवं एक बेटा पावन एचडीएफसी लाइफ में प्रबंधक के पद पर कार्यरत है।

आज स्वामीजी के बारे में जब उनसे बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ तो वह 57

मिनट तक चलता रहा। यह बातचीत उनके प्रातः कालीन भ्रमण के दौरान ही चलते–चलते हुई। स्वामीजी की तरफ से पाँच फल चीकू, केला, सेव, आम और नारंगी लेकर अर्जुन टेंवाणी जी उनके पास आये थे। अर्जुन टेवाणी ने आकर उनको ये फल देते हुए कहा कि स्वामी जी ने आपको कुटिया पर बुलाया है, 9 बजे चलना है। इसके पूर्व वे स्वामीजी के द्वारा चिकित्सा शिविरों में सेवा कार्य करते थे। वे खेलों में रूचि रखते थे। वे जब स्वमीजी के आश्रम में पहुंचे सिद्धभाऊ वहां बैठे थे। स्वामीजी ने पूछा तुम्हें फल मिले? उन्होंने कहा हां, स्वामीजी ने फिर पूछा कौन–कौन से फल मिले? उन्होंने कहा चीकूं, केला, सेव, आम और नारंगी (संतरा)। स्वामीजी ने सुनते ही कहा तुम रंग जाओगे यह थी उनकी और स्वामीजी की पहली मुलाकात। स्वामीजी ने जब उनसे बात की तब तक वे नवयुवक परिषद से नहीं जुड़े थे।

उन्होंने अपना एक और संस्मरण मुझे सुनाया। कि वे टेबिलटेनिस के अच्छे खिलाड़ी थे। वे अनेक शहरों में टूर्नामेंटों में बैंक का प्रतिनिधित्व कर चुके थे जयपुर, लखनऊ, बाम्बे में खेल चुके थे। उन दिनों वे नवयुवक परिषद में बच्चों को इंग्लिश पढ़ाते थे। उनका चयन जबलपुर में होने वाले टूर्नामेंट के लिये कैप्टन के रूप में किया गया। उनके पांच और साथी खिलाड़ी थे। उनको ट्रेक सूट, शू, बैट दिया गया। केप्टन के नाते उनको आफिस के बाद अपने साथियों के साथ 2 घंटे की प्रेक्टिस करनी थी। जनरल मैनेजर ने उनको हिदायत दी कि आप प्रेक्टिस के लिये समय निकालो? तभी एक दिन सबेरे सिद्धभाऊ परिषद में आये और उनसे कहा कि यह खेल तो जिंदगी में चलते रहेंगे, कभी हारोगे कभी जीतोगे, मगर ये जो सेवा कार्य तुम करते हो, बच्चों को पढ़ाना, धन संग्रह करना इससे जीवन में बहुत कुछ पाओगे। अब तुम सोचो तुम्हें क्या करना है। उन्होंने रात भर सोचा और अपनी मां से भी शिकायत भरे लहजे में कहा कि सिद्धभाऊ ये मत करो, वो मत करो, कहते रहते हैं। मां ने बोला संतजी जैसे बोलें वैसे ही करो। उसमें ही भला होगा। और उन्होंने दूसरे दिन खेलने के लिये जाने में असमर्थता ज़ाहिर कर दी इसलिये उन्हें हटाकर दूसरे को कैप्टनशिप सौंप दी गयी। वह घर पर जब कैप्टेन के सामान लेने आया तो मां की आंखों में स्नेह के आंसू आ गये। बाद में पता पड़ा कि उनकी टीम जबलपुर से टूर्नामेंट हार कर वापस आ गई थी।

उन्होंने एक और प्रसंग लंदन के प्रवासी रूपचंद गिद्धूमल के बारे में बताया। रूपचंद गिद्धूमल जी, बाम्बे के दानदाता एवं स्वामीजी में अपार श्रद्धा रखने वाले श्री आर. जे. आडवानी, बाम्बे की प्रसिद्ध होटल सन एण्ड सैण्ड के मालिक, के साथ संतों के दर्शन और आशीर्वाद लेने के लिये आये थे। वे उनको लेकर संत जी की कुटिया पर आये। आर.जे. आडवानी जी हमेशा आते रहते थे और रूपचंद गिद्धूमल जी पहली बार ही आये थे। लंदन के दानदाता टाई और हैट लगाये थे। आर.जे. आडवानी जी कुर्ते पजामें में आये थे। पहले सिद्धभाऊ से बातें करते रहे और 10 मिनट बाद स्वामीजी अपना आसन खुद उठाकर अपने कमरे से बाहर आये। आते ही उन्होंने सिद्धभाऊ से कहा अब मैं इनको 2 मिनट में ही वापस भेज देता हूं। उन्होंने उनको दो बाते कहीं बड़ी गूढ़ बातें थीं वे।

1. **जिंदगी में करोड़ों रूपये देकर भी शन्ति मिलती हो तो ले लो।**
2. **अपने दुशमन से भी बदला लेने की न सोचो, उन्हें माफ करते चलो।**

ये दो बातें बोलकर स्वामी जी ने अपना आसन उठाया और चले गये। तब आर.जे. आडवानी जी बोले मुझे मेरी शंका का समाधान मिल गया। मगर रूपचंद गिद्धूमलजी बड़े

अपसेट दिखे। उन्होंने सिद्धभाऊ से पूछा कि आपने संतों को बताया नहीं कि मैं लंदन से आया हूं। लंदन से बाम्बे आया, बाम्बे से भोपाल आया हूं और स्वामीजी ने मुझसे बात भी नहीं की। तब सिद्धभाऊ ने उनको बताया कि स्वामीजी ने जो बातें बोली हैं उन पर विचार कर, मनन करो तो तुम्हें परिर्वतन महसूस होगा। बाहर आकर रूपचंदजी ने आर. जे.आडवानी से कहा कि आपने तो संतों से कुछ नहीं बोला और आप बोल रहे हैं कि आपको अपनी समस्या का समाधान मिल गया। बोले सही बोल रहा हूं। स्वामीजी ने जो बोला कि दुश्मन से भी बदला लेने की मत सोचो, उसे भी माफ कर दो। उनके इन शब्दों में ही मेरी समस्या का समाधान समाया हुआ है। उन्होंने बताया कि मेरे दो पुत्र है, मेरी उम्र भी 75 साल हो गई है। मेरी धर्म पत्नी का स्वर्गवास हो गया है। मैं अपने जीते जी अपनी प्रॉपर्टी का बेटों में बंटवारा करना चाहता था, मगर बेटे संतुष्ट नहीं। अब स्वामीजी की बात सुनकर मुझे लगा कि मैं अपना जीवन तो जी चुका। 75 वर्ष से ज्यादा आयु है। दो–चार साल और जीऊंगा मैं संपति का क्या करूंगा। अपना हिस्सा नाराज हुए बेटे को दे दूंगा तो उसकी नाराजगी दूर हो जाएगी।

स्वामीजी साक्षात् गुरुनानक जी के अवतार

श्री कृपाल हेमराजानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9755109444

संत बाबा हिरदाराम साहब साक्षात गुरूनानक जी के अवतार है। उनकी महिमा अपरम्पार है। संत जी का गुरूवाणी में बहुत विश्वास था। वे हमेशा गुरूवाणी का पाठ दिन रात करते रहते थे। उनको गुरूवाणी में इतना विश्वास था कि वे शुद्ध गुरूवाणी पढ़ने वाले को हर तरह से प्रोत्साहित करते थे। प्रशंसा भी करते थे, इनाम भी देते थे। उनके कक्ष में स्पीकर लगा रहता था। कई बार वे गुरू दरबार में आकर शुद्ध गुरूवाणी पढ़ने वाले को नगद व अन्य तरह के उपहार प्रदान करते थे। गलती करने पर वे बताते थे कि वाणी ऐसे नहीं है सही वाणी प्रेम से समझाते थे। ऐसा मेरे साथ भी कई बार हुआ। उन्होंने शुद्ध पाठ करने के लिये मुझे प्रोत्साहित किया। अशुद्ध गुरूवाणी पढ़ने पर शुद्ध वाणी पढ़ने के लिये मार्गदर्शन किया। कई बार भाऊ आइलदास से भी कहते थे कि पाठी पाठ करने में गलती कर रहा है। भाऊ आइलदास प्रेम से शुद्ध वाणी पढ़ने के लिये मार्गदर्शन करते थे।

सी.टी.ओ. बैरागढ़ निवासी मेरे एक परिचित ने बताया कि सीटीओ में पानी की बहुत किल्लत थी। कई ट्यूबवेल खुदवाये पानी नहीं मिला। फिर वहां के निवासियों ने मिलकर संतजी से प्रार्थना की कि हमारे यहां पानी की समस्या है। ट्यूबवेल भी खुदवाये हैं परन्तु पानी नहीं निकल रहा है। संतजी ने एक शिष्य को बुलाकर कहा कि कल सीटीओ में ट्यूबवेल खुदवा देना। अगले दिन उस क्षेत्र में भी ट्यूबवेल खोदा गया। जिसमें से बहुत पानी निकला। अभी भी सीटीओ की बड़ी एरिया में पानी की आपूर्ति उसी ट्यूबवेल से होती है। संतजी बिना बोले सेवकों के कार्य पूर्ण करते हैं। एक बार की कृपा जो मेरे साथ हुई है इस प्रकार है। मैं हृदय रोग से पीड़ित हूं डाक्टर ने मुझे अपोलो हास्पीटल (मद्रास) चेन्नई जाने को कहा और मैंने रिर्जवेशन करा लिया। उस दिन भी मुझे

कथा में जाना था। मेरी बहन जो संत हिरदाराम नगर में रहती है मिलने आई थी। मेरी बहन ने बोला कुटिया जा रहे हो तो संतजी से पूछ लेना। आज्ञा ले लेना। कथा में संतजी बहुत देर स्टूल पर बैठे थे। मेरी इच्छा तो पूछने की बहुत थी मगर, मैं पूछने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। कथा सम्पन्न हो गई प्रसाद बांटने के लिये अखबार के पन्ने बांटे गये जिसमें प्रसाद बंटना था। मैं यह संयोग नहीं मानता हूं बल्कि गुरूजी का प्रसाद मानता हूं कि जो पर्चा मुझे मिला उसमें बड़े बड़े शब्दों में लिखा था क्या आप आप्रेशन कराने जा रहे हैं? यदि जीवन रक्षा के लिये आप्रेशन जरूरी है, तो अवश्य कराना चाहिये। आपरेशन के पहले व बाद में क्या–क्या सावधानियां रखनी चाहिये मार्गदर्शन किया गया था। इस तरह मेरे ऊपर गुरू की कृपा हुई।

हिरदाराम साहिब संत सैनिक

कर्नल नारायण पारवानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9826997701

आज कर्नल नारायण पारवानी के यहां गया तो किसी अन्य काम से था। मगर चर्चा जब आगे बढ़ी और संतजी के जीवन दर्शन पर अपने द्वारा लिखी जाने वाली किताब के बारे में उन्हें बताया तो उन्होंने भी अपने संस्मरण मुझसे साझा किये। कर्नल साहब से मेरे रिश्ते उस समय से हैं जब वे कक्षा 5वीं में पढ़ते थे यह 1965 की बात है। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक थे। 19 जुलाई 1965 को जब मैं गैरतगंज से संत हिरदाराम नगर आया उसी दिन शाखा में गया था, वहीं से हमारा परिचय हुआ। और फिर कब मैं उनके और उनके चचेरे भाइयों के परिवार का सदस्य बन गया पता ही नहीं पड़ा। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अनेक पदों पर रहे। उनकी शिक्षा भोपाल के कैम्पीयन स्कूल से हुई। उस समय कैम्पीयन स्कूल की गिनती उत्तम स्कूलों में होती थी। बाद में उन्होंने एमएसीटी से बी.ई. सिविल इंजीनियरिंग में पास की। परिवार की आय सीमित थी। उन्होंने कालेज की पढ़ाई के साथ बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर अपनी फीस वगैरह की व्यवस्था की और वहीं से उनका चयन थलसेना की इंजीनियरिंग शाखा में हो गया। प्रशिक्षण के बाद उनको आफीसर के पद पर नियुक्ति मिली और कर्नल का पद सुशोभित कर सेवानिवृत्त हुये।

उनकी संतजी से पहली मुलाकात 97–98 में हुई थी। उन्होंने सिद्धभाऊ से कहा था कि मैं अपने परिवार के साथ आकर संतों का आशीर्वाद लेना चाहता हूं। सिद्धभाऊ ने उनको कुटिया में आने को कहा। जब वे वहां पहुंचे तो सिद्धभाऊ ने संतो को उनका परिचय कराते हुये बताया कि ये कर्नल नारायण पारवानी है। संतजी के हृदय में सेना और सैनिकों के लिये बहुत आदर भाव और प्यार रहता था। उन्होंने पास में बिठाया, सेना से संबधित जानकारियां लीं और कहा सेना में नौकरी करना गर्व की बात है। जब विदा की बारी आई तो जो लोग वहां पर आये थे उनको स्वामीजी ने एक–एक फल प्रसाद के रूप में दिया मगर उनको ढेर सारे फल प्रसाद के रूप में दिये। उन्होंने बताया कि स्वामीजी की दिनचर्या एक फौजी के समान थी। फौजी को सूर्योदय से पहले उठना पड़ता था स्वामीजी भी सूर्योदय से पूर्व ही उठ जाते थे। सैनिकों की तरह ही वे व्यायाम,

योगा, पैदल चलना तो करते ही थे साथ ही अनुशासनप्रिय थे। वे समय का भी सुचारू रूप से उपयोग करते थे। ठीक उसी तरह जैसे सैनिक करते हैं। ऐसा कोई गुण नहीं था जो सैनिक में हो और उनमें न हो। वे स्वामी जी को संत की जगह संत सैनिक कहना ज्यादा पसंद करेंगे। उन्होंने उनकी तुलना करते हुये कहा कि जैसे दसवें गुरू गोबिन्द सिंह जी संत के साथ साथ योद्धा भी थे वैसे ही संत शिरोमणि ब्रह्मालीन संत हिरदाराम साहिब जी भी संत सैनिक थे। वे बार बार उनके चरणों मे नमन करते हैं।

सेवा और साधना को मुख्य ध्येय मानकर संत शिरोमणि स्वामी हिरदाराम साहिब जी के आशीर्वाद और परमहंस संतजी के उत्तराधिकारी एवं परम शिष्य श्रद्धेय संत सिद्धभाऊजी की प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा अथक परिश्रम से जीव सेवा संस्थान के विभिन्न अंगों के रूप में कई संस्थाएं जैसे शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण, चिकित्सा, पशु–पक्षियों की सेवा, गरीबों एवं वृद्धजनों की सहायता, निःशुल्क पेयजल प्रदाय आदि सेवा कार्यों के लिये स्थापित इन संस्थाओं में बड़ी संख्या में कर्मचारी एवं स्वयंसेवक कार्यरत हैं। यह सर्वविदित है कि इन संस्थाओं द्वारा कई सेवा कार्य हो रहे हैं। कुछ वर्ष पहले व्यापार की उन्नति तथा रोजगार के अवसर पर एक लेख लिखने के लिए अनौपचारिक सर्वेक्षण के दौरान मैंने पाया कि सेवा के साथ–साथ संत हिरदाराम नगर, गांधीनगर तथा कई अन्य स्थानों पर स्थापित इन संस्थानों के कारण नौकरियों के कई अवसर शहर वासियों को प्राप्त हुए हैं तथा संत हिरदाराम नगर और गांधीनगर के व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भी इन संस्थाओं के कारण अच्छा व्यवसाय मिला है। एक आकलन के अनुसार पिछले 25 वर्षे से किसी न किसी संस्थान के लिए भवनों के निर्माण का कार्य जीव सेवा संस्थान के सौजन्य से चलता रहा है। औसतन 200 मजदूर एवं तकनीकी कर्मचारी परोक्ष या अपरोक्ष रूप से नए भवनों के निर्माण या पहले से मौजूद भवनों के रख–रखाव में कार्यरत रहते हैं। जापान के प्रधानमंत्री ने कुछ वर्ष पहले जापानी संसद में कहा था कि जापान में निर्माण कार्य हमेशा जोर–शोर से जारी रहने चाहिए, कयोंकि इससे रोजगार के अवसरों की उत्पत्ति होती है। रोजगार उत्पत्ति के इसी मूलमंत्र पर श्रद्धेय संत सिद्धभाऊजी हमारे शहर के लिये कार्य कर रहे हैं। आज श्रद्धेय संत सिद्धभाऊजी की दूरदृष्टि और अथक प्रयास से कार्यरत उच्च कोटि के शिक्षण संस्थानों, चिकित्सालयों, तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्रों तथा अन्य कर्मचारी विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। इसके अलावा अपने शहर के सौकड़ों नौजवान श्रद्धेय संत सिद्धभाऊजी के प्रयत्नों से विदेशों में अप्रवासी भारतीयों के प्रतिष्ठानों में अच्छे वेतन पर नौकरी कर रहे हैं। भोपाल शहर विशेषकर संत हिरदाराम नगर और गांधीनगर में शासकीय एवं अन्य अशासकीय प्रयासों से रोजगार के क्षेत्र में विकास पिछले 70 वर्षो में नगण्य हुआ है।

विदशों से तथा देश के अन्य शहरों से कुटिया में आशीर्वाद प्राप्त करने हर वर्ष कई नागरिक आते हैं, इससे भी उपनगर के व्यवसाय में प्रगति हुई है। पिछले बीस वर्षों में करोड़ों रूपये विभिन्न सेवा कार्यों को स्थापित करने तथा उनके रखरखाव में खर्च हुए हैं। इन पैसों का एक बड़ा भाग उपनगर के व्यापारियों के टर्नओवर में बढ़ोतरी के लिए उपयोग हुआ होगा, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। गरीबों और वृद्धजनों को मिलने वाली आर्थिक सहायता के पैसे भी अंततः उपनगर में ही खर्च होते हैं जिसका फायदा व्यापारियों को ही मिलता है। जीवसेवा संस्थान द्वारा चलाए जा रहे सेवा कार्यों में से हमारे शहर में व्यापार और रोजगार को बहुत बल मिला है।

बैरागढ़ को वृन्दावन बना दिया

सुश्री द्रोपदी शाह श्री निहालचंद शाह
संत हिरदाराम नगर
मो. 9407513538

बहन द्रोपदी शाह से मेरा पहला परिचय तब हुआ जब दादी वासवानी संत हिरदाराम नगर में पधारीं थीं। यह बात सन् 1984–85 की है। तब उन्होंने उन्हें नवयुवक परिषद के बारे में जानकारी दी थी। यह मेरा सौभाग्य था। तब साधू वासवानी मिशन की तरफ से नवयुवक परिषद को आशीर्वाद स्वरूप अच्छी खासी रकम बच्चों की पढ़ाई के लिये दान स्वरूप दी गई थी। बाद में उनसे मेरा परिचय प्रगाढ़ होता गया। वे साधू वासवानी महाविद्यालय में लाइब्रेरियन के पद पर कार्य करती थीं। उन्होंने विवाह संबंधो में बंधना स्वीकार न कर ब्रह्मचर्य धर्म को निभाया। वे अब सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। कुछ दिन पूर्व ही जब यह किताब लिखने की बात चल रही थी तो मुझे पता चला कि उनका परिवार स्वामीजी के सान्निध्य में बहुत ज्यादा रहा है और आप उनसे भी स्वामीजी की बातों का पता कर सकते हैं। उनके बड़े भाई बाबूशाह से मेरा अच्छा खासा परिचय था मगर छोटे भाई से ज्यादा नहीं था। सोच रहा था कि कैसे उनसे संपर्क करूं मगर हमारे स्वामीजी तो सर्वज्ञाता है, वे घटघट की जानते है। मैं स्कूटर पर जा रहा था, स्पीड में था, अचानक मुझे लगा बहन द्रोपदी शाह रास्ते पर खड़ी थीं। मैं उनको क्रॉस करके आगे निकल गया था। मैंने अपने स्कूटर को पीछे मोड़ा स्वयं को आश्वस्त करने के लिये कि वे बहन द्रोपदी शाह ही हैं। मेरा अनुमान सही था। मैंने स्कूटर से उतरकर उनके चरण स्पर्ष किये। यह मेरी कमजोरी है कि मेरे मन में यह बात गहरे तक समाई हुई है **'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता'** छोटी हो या बड़ी हो मैं अपने रिश्तों की मर्यादा में रहते हुए अपनी बहनों, परिषद की विद्यार्थियों, बेटियों के पांव छूने में संकोच नहीं करता, चाहे कितने भी लोग उपस्थित हों। जब कभी मेरी बहुएं कुछ अच्छा काम करती है तो उनके भी पांव छूना चाहता हूं और छुए भी हैं, मगर वे हमेशा मुझे ऐसा करने के लिए मना करती हैं। मैं अपने अंतरतम की गहराइयों से अंदर ही अंदर उनको नमन कर लेता हूं। आखिर वे भी तो मेरी बेटियां ही हैं।

मेरे पांव छूते ही बहन द्रोपदी शाह ने ढेर सारा आशीर्वाद दिया। जब मैंने अपना मंतव्य बताया कि मैं स्वामीजी के विषय में **संत हिरदाराम साहिब दर्शन** संस्मरण लिखना चाह रहा हूं तो वे बहुत प्रसन्न हुई। मैंने उनसे कहा कि आपके संस्मरण भी मुझे चाहिये तो उन्होंने कहा कि उनके पास तो स्वामीजी के बारे में यादों का ज़बरदस्त खज़ाना है। तो मैने कहा मैं फिर आपसे समय लेकर आता हूं आप अपना दिल खोलकर मुझे स्वामीजी के बारे में बताइयेगा। उस दिन उनसे ज्यादा बात नहीं हो पाई। जब दूसरे दिन पहुंचा तो जी भर कर उन्होंने अपने संस्मरण सुनाये। संस्मरण सुनाते–सुनाते उनके दोनो नयनों से गंगा यमुना की धारा बहती रही। उनके संस्मरण मैने अपने मोबाइल में रिकार्ड कर लिये। उनको बार–बार रोते देख मैंने उनको पानी पिलाया। वे थोड़ी देर सामान्य होकर कुछ बतातीं मगर फिर उनके नयनों में नीर उमड़ पड़ता था। उनके 16 मिनट की रिकार्डिंग में वे कम से कम 16 बार रोई होंगी। **मेरा वश चलता तो उनके वे आंसू अपने अंदर समेट कर संग्रह कर लेता।** कितना पावन हृदय! कितनी पावन स्मृतियां थीं उनके अंदर! आइये शुरू

करता हूं उनके द्वारा दी गई जानकारियां।

स्वामीजी की कुटिया और उनके घर के बीच में एक खुला हुआ मैदान था उनके घर से स्वामीजी के आश्रम की दूरी 60–70 मीटर ही थी। बीच में न कोई घर न रास्ता। मैदान के बीचों बीच स्वामीजी की कुटिया थी। वे छोटी बच्ची थीं। संतों का उठना–बैठना रहन–सहन थीं कुटिया के पीछे पेड़ थे वहीं पर बैठ कर पढ़ाई करते थे। बचपन में यह पता नहीं था कि वे कितने बड़ी शक्ति थे। वे साक्षात कृष्ण भगवान के अवतार हैं। ऐसा बाद में लगा कि ये बैरागढ़ को वृंदावन बनाने आये हैं। संतों के दर्शनों का सौभाग्य रोज मिलता था। हम मेंहदी की बाड़ से छिप–छिप कर उनके दर्शन करते थे। कुटिया के अंदर आम के पेड़ होते थे हम वहां जाते थे और नीचे गिरी हुई अमियां (अंबिड़ियां) बीन कर लाते थे। और लोगों को कहते थे ये कुटिया से अमियां का प्रसाद मिला है और सबको बांट कर खाते थे।

उन्होंने बताया कि उनके पिता स्व. श्री निहालचंद शाह एक होटल चलाते थे। स्वामीजी एक बार वहां से गुजरे और उनके पिताजी को कहा यह जमीन कल तुमको मिलने वाली है तो उन्होंने कहा यह जमीन तो दातारसिंह जी की है मुझे कैसे मिलेगी? स्वामीजी ने कहा, कल तुम इसके मालिक बनने वाले हो। पिताजी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। और दूसरे दिन सबेरे दातारसिंह जी की कार उनकी दुकान के सामने रूकी और उनसे कहा कि यह जमीन मुझे बेचनी है पैसे लाओ आज ही तुम्हारे नाम की रजिस्ट्री करवा देते हैं। यही बात सिद्ध करती है कि स्वामीजी परमात्मा का अवतार थे कैसे कल होने वाली बात को उन्होंने आज ही जान लिया था।

उन्होंने बातया कि एक बार रात को स्वामीजी उनके स्वप्न में आये। उन्होंने देखा कि स्वामीजी कुटिया के आम के पेड़ के चक्कर लगा रहे है, एक दो नहीं बल्कि आधे घंटे तक वे चक्कर लगाते रहे, चक्कर लगाते रहे, चक्कर लगाते रहे। और फिर अचानक वे आसमान की तरफ ऊपर उठते गये। ऊपर–ऊपर और ऊपर। उन्होंने गगन की ऊंचाई को छू लिया और फिर उन्होंने अपने सब कपड़े उतारे, फिर फेंकने शुरू कर दिये सबसे पहले उन्होंने अपना काले रंग का छोटा सा कोट उतारा फिर कुर्ता, फिर चोला उतारा, अंत में अपना अंगोछा उतारा और अधोवस्त्र भी उतार कर नीचे कुटिया में फेंकते गये। और पूर्णतः दिगम्बर होकर परम ज्योति में लीन हो गये।

वे चौंक कर उठीं और सोचने लगीं ये मैंने क्या देखा कि संत ज्योति में लीन होने के बाद अपनी समाधि के अंदर उस ज्योति संग समा गये आज उनकी समाधि की धूलि लेकर जो अपने सिर माथे पर लगाते हैं उनके कार्य रास हो जाते हैं। स्वामी जी के दर पर जो भी श्रद्धापूर्वक गया वह अपनी झोलियां खुशियों से भरकर ही वापस आया। उनका कहना है कि स्वामीजी कहीं गये नहीं है, उनके चलाये गये कार्य आज भी चल रहे हैं और चलते रहेंगे क्योंकि वे ज्योति स्वरूप आज भी समाधि के अंदर विराजमान हैं। बैरागढ़ को संतों के पहले जानता ही कौन था।

संतों ने सचमुच में बैरागढ़ को वृंदावन जैसा बना दिया है। अस्पतालें, स्कूल, कॉलेज, कन्याओं के विवाह, गरीबों को राशन वितरण, विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिये नवयुवक परिषद द्वारा गोद लिया जाना, लाखों रूपयों की चिकित्सा सहायता जीव संस्थान द्वारा प्रदान करना, लड़कियों के लिये सुन्दर स्कूल, कॉलेज, प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग महाविद्यालय, एमबीए विद्यालय इसके साक्षात उदाहरण है।

सेवासदन जैसा देश–प्रदेश में प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सालय, यूरोलोजी कैंपों का

आयोजन न जाने कितने अनगिनत कार्य हो रहे हैं। इसीलिये तो बैरागढ़ का नाम संत हिरदाराम नगर कर दिया गया है। एक बार उन्होंने अपने एक और स्वप्न का जिक्र किया कि किस तरह उन्होंने देखा कि संतजी परमात्मा के आसन पर बैठे हुए है दूर गगन में, और वे उनके दरबार में पहुच गई है।

उनको डर लग रहा था। स्वामीजी अब उनको डांटेंगे, फटकारेंगे कि तुम्हें पता नहीं कि मैं स्त्रियों को अपने आश्रम में आने के लिये मना करता हूं। तुम क्यों आई हो। मैं डर रही थी मगर निश्चय कर लिया स्वामीजी नाराज हों या डांटें मुझे तो आज उनका आशीर्वाद लेकर ही जाना है। अचानक ही स्वामीजी की नजर उन पर पड़ी वे आगे आये दिगम्बर अवस्था में थे और ढेर सारा आशीर्वाद दिया। उनको आज भी यह विश्वास है कि स्वामीजी फिर अवतरित होकर इस नगरी को पवित्र बनायेंगे।

सेवा से ही प्रभु के दर्शन

श्री अर्जुनदास कांजानी
(मेरे प्राइमरी स्कूल के गुरू)
जे.के. हाऊस, ईदगाह हिल्स, भोपाल।
मो. 8889421963

श्री अर्जुनदास कांजानी मेरे बचपन में उस स्कूल में शिक्षक थे जिसमें मेरी पढ़ाई हुई थी। मुझे बचपन में स्व. श्री गेहीमल वांजानी जी, जो यूनानी शफ़ाख़ाना भोपाल के मारवाड़ी रोड स्थित दवाख़ाने में दवा वितरक के पद पर कार्यरत थे, ने घर पर ही ट्यूशन पढ़ाया और फिर मुझे कक्षा दो में भोपाल के मालीपुरा में ब्रिजिसिया स्कूल, जिसमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने शिक्षा प्राप्त की थी, मेरा प्रवेश कराया। बाद में निर्मल मीरा मिडिल स्कूल में मेरी छठवीं की अर्द्धवार्षिक परीक्षा तक पढ़ाई हुई। उसके बाद में गैरतगंज, जिला रायसेन में कक्षा छठी से कक्षा 9वीं तक पढ़ा और 1965 में फिर मैं संत हिरदाराम नगर के शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक स्कूल में आ गया। जहां से हायर सेकण्ड्री उत्तीर्ण कर सैफिया कॉलेज में दाखिला लिया। श्री अर्जुनदास कांजानी जी निर्मल मीरा मिडिल स्कूल में अध्यापक थे। मगर बाद में विद्याराम राजानी ने उनसे बगैर पूछे त्याग पत्र लिख कर स्कूल को दे दिया और उनको नौकरी छोड़ने को कहा फिर उन्होंने ठेकेदारी का काम शुरू कर दिया।

मुझे याद है कि निर्मल मीरा मिडिल स्कूल के हेडमास्टर श्री प्रियानीजी से उन्होंने 26 जनवरी के अवसर पर बच्चों को लड्डू की जगह ड्रायफ्रूट देने की मांग की थी। मेरे हृदय में उस स्कूल के सभी शिक्षकों के लिये अथाह आदर था, उनके पिताजी स्व. जेऊमलजी कांजानी की सिंधी मार्केट भोपाल में कपड़े की दुकान थी, जहां मेरे पिताजी की भी दुकान थी। वे तलैया में रहते थे। उनसे रिश्ता क्या था मुझे नहीं मालूम। मगर मैं अपनी दादी के साथ अनेक बार उस घर में गया था। आज ईदगाह हिल्स पर जेके हाऊस नाम से उनका बहुत बड़ा बंगला है। जहां उनके भाई भी रहते हैं। मुझे उनके घर जाने का दो बार मौका मिला है और उस घर की शानो–शौकत देख कर दंग रह जाता हूं। उनका एक फार्म हाऊस रायसेन रोड पर एलएनसीटी के सामने ही थोड़ी दूर पर बना है। जिसमें 6 नान एसी रूम, 6 एसी रूम और एक कपिल सूट बना हुआ है जिसे वे

आवश्यकता पड़ने पर किराये पर देते है। आज 87 वर्ष की उम्र में भी वे सबेरे 10:30 बजे से लेकर 5:30 बजे तक वहां रहते हैं। उस फार्म हाऊस पर उन्होंने दो विशाल मंदिर भी बना रखे हैं एक शिवालय और दूसरा राधाकृष्ण का। नियमित रूप से वे उसमें पूजा करते हैं।

श्री अर्जुनदास कांजानी जी से 22 साल के अंतराल के बाद 1984 में मुलाकात हुई और तब पता चला कि वे बहुत बड़े ठेकेदार हैं, जब कि मेरा उनसे परिचय सिर्फ शिक्षक के रूप में था। यह नया परिचय मुझे संतों की कुटिया से जुड़ने के बाद हुआ। मैने उनको देखा तो उनके पांव छूने से अपने आपको रोक नहीं पाया, उन्होंने मुझे पहचाना नहीं। पहचानते भी तो कैसे सन् 1962 में 11 वर्ष का बालक और सन् 1984 में 34 वर्ष का अधेड़। जब मैंने उनके पांव छूए तो उन्होंने मुझसे पूछा तुम कौन? तो मैंने उनको याद दिलाया कि मैं आपका शिष्य। आपने मुझे निर्मल मीरा मिडिल स्कूल में पढ़ाया है। उस समय मुझे नहीं मालूम था कि वे बहुत बड़े ठेकेदार हैं। उनको खुशी हुई, यह वह समय था जब नवयुवक परिषद के पास अपना भवन भी नहीं था। जब भवन लेने का समय आया तो उसके लिए उन्होंने एक लाख रूपये की सहायत की थी।

अभी जब उनसे मेरी मुलाकात हुई तो उन्होंने बताया कि उनके नानाजी टोंरमल आहूजा जी थे। स्वामी हिरादाराम जी भी आहूजा परिवार से आते हैं। इस रिश्ते में वे भी नानाजी ही थे। वे स्वामीजी के संपर्क में जब आये तो जुड़ते ही चले गये। उनके हृदय में चिकित्सा सहायता एवं शिक्षा सहायता के लिये बहुत ललक थी। स्वामीजी के कहने पर जहां–जहां स्वामीजी ने उनको सहायता के लिये कहा उन्होंने खुले दिल से सहायता की। बैरागढ़ के सिविल हास्पीटल के विस्तार के लिये उन्होंने वार्ड बनवाये। गर्ल्स हायर सैकेन्ड्री स्कूल में भी उन्होंने हाल का निर्माण करवाया। जहां–जहां स्वामीजी उनको आज्ञा देते थे वहां वे तन, मन, धन से सहायता के लिये तत्पर रहते थे।

उन्होंने बताया कि संत हिरदाराम साहिब जी निर्मल मीरा मिडिल सकूल में पूना साधू वासवानी मिशन के संत जशन वासवानी जी के साथ आये थे। स्वामीजी से तभी से उनका परिचय था। उस समय भी उनमें दान की प्रवृति थी मगर यह प्रवृति तब बढ़ी जब वे ठेकेदारी में घुसे। वहां से उनकी आय बढ़ी, पैसा आया तो वे सेवा कार्यो में लगाते गये। बगैर पैसे के सेवा कैसे होती।

वे बताते हैं कि बगैर मेहनत के कुछ नहीं मिलता और बगैर भाग्य के भी नहीं मिलता। यह सोचकर कि मुझे इनकी दया से कुछ मिला, यह वहम पालना फालतू है। मेहनत के अनुसार ही भाग्योदय होता है, आदमी रंक से राजा बन सकता है तो राजा से रंक भी बन सकता है। उन्होंने मुझसे पूछा, आप तो जानते होंगे ऐसे लोगों को जो पहले कुछ नहीं थे आज धन्ना सेठ है। और जो धन्ना सेठ थे आज कंगाल हैं।

आपको कोई प्रेरित कर सकता है। आपकी सोई शक्तियों को कोई जगा सकता है। मगर जागना आपको पड़ेगा, कर्म आपको करना पड़ेगा, बगैर कर्म के कुछ भी नहीं मिलेगा। वो बोले आप किसी के अंतर की बात नहीं जान सकते। पहचान नहीं सकते, पुरूष में अनेक शक्तियाँ है मगर नारी में अनंत शक्तियाँ होती है। पुरूष की शक्तियों का अंत होता है मगर स्त्रियों की शक्ति का कोई अंत ही नहीं है। उसमें अपार शक्तियों का वास है इसलिये तो उसे देवी स्वरूप माना जाता है।

उन्होंने बताया कि वे शिव भक्त है, मगर वे शिव के पत्थर रूप की पूजा करते है

और उनकी आस्था उसमें भी भगवान को ढूंढने लगती है। उन्होंने कहा कृष्ण ने गीता में कहा है, तुमको भी पता होगा, कि ऊपर भी मैं हूं, नीचे भी मैं हूं। राम भी मै हूं, कृष्ण भी मैं। चांद भी मैं तो सूरज भी मैं हूं। मगर इतना होते हुए भी उनको वापस जाना पड़ा वो भी एक बहेलिये का तीर लगने से।

उन्होंने एक कहानी सुनाई! एक भिखारी था वो भीख मांगता था। एक बार वह तीन दिनों से भटक रहा था। इस घर से उस घर, मंदिर से मस्जिद, मस्जिद से गुरूद्वारे, गुरूद्वारे से चर्च मगर उसको कहीं से भी भीख नहीं मिल रही थी। उसके बच्चे भूखे थे। वो भीख मांगते–मांगते गुरूद्वारे से मयखाने के पास पहुंचा। मयखाने से निकलने वाले लोगों से वो भीख मांगने लगा। इतने में एक शराब के नशे में झूमता हुआ व्यक्ति निकला, उसने उससे भीख मांगी और उसने जेब से मुठी भर कर नोट निकाले और उसको दे दिये। उसने भगवान से कहा प्रभू तुम मुझे मिले भी तो मयखाने में। भगवान कब कहां मिल जायें, कैसे हमारी सहायता करेंगे कोई नहीं बता सकता।

उन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम्हारी उम्र 70 साल से ज्यादा हो गई है। तुम अब सामाजिक दायित्व, परिवारिक दायित्व से मुक्त हो जाओ। प्रभू की भक्ति में अपना ध्यान लगाओ। तुम जो कर्म कर रहे हो कुछ लोंग उसकी तारीफ करेंगे, कुछ निंदा करेंगे। उनको करने दो। तुम्हें कोई जरूरतमंद दिखे तो उसकी सहायता करो, उससे तुम्हें संतोष भी मिलेगा, मोक्ष भी मिलेगा। संसार में कोई वस्तु न अच्छी है न बुरी है। सबमें समदृष्टि रखो, अपने आपको मस्त रखो, खुश रखो, यही पूजा है, सबसे बड़ी पूजा।

उन्होंने बताया बुढ़ापे के लिये कुछ बचा के रखो, नहीं तो बाद में पछताओगे। प्रभू को खोजोगे तो तुम्हें मिलेगा तो इक पल में मिल जायेगा, यह विश्वास रखो।

अटूट श्रद्धा से ही कारज पूरे

श्री कन्हैयालाल रामनानी एवं जया रामनानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9425009845

कन्हैयालाल रामनानी रिश्ते में मेरी मौसी के परिवार से थे। हमारे जमाने में तो कहावत थी आठवीं पीढ़ी ऊँट की और चींटी मौसेरी बहन। ऐसे दूर दूर के रिश्ते निभाते थे मां के पक्ष के लोग। घर आना जाना होता था। उनके पिताजी का गांव में कपड़े का व्यवसाय था। मेरे पिताजी भी गांव में कपड़े का व्यवसाय करते थे, यदा–कदा राम–राम हो जाती थी। टेकरी रोड पर जी–वार्ड में उनका घर होता था। उनकी फूफी, जो दादी बेगमगंज वाली नाम से प्रसिद्ध थी, उनके साथ में ही रहती थी। कालांतर में उन्होंने पंडित दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज के पीछे अपना मकान बनाया। उनकी बहनों से भी अपनापन था। मगर यह घनिष्ठता तब और बढ़ गई जब वे नवयुवक परिषद के सेवा कार्यो से जुड़े। सरल स्वभाव के थे और स्पष्टवादी। गरीबी देखी थी अतः गरीबों के प्रति संवेदनशील थे। वे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में सर्विस करते थे। संयुक्त परिवार था। 4 बहने, 2 भाई 1 बूआ। मगर अब जब वे बैंक में लग गये तो उनको विश्वास था कि अब **दुख भरे दिन बीते रे भैया, अब सुख आयोरे।** उनका तब विवाह भी नहीं हुआ था। एक बहन

और भाई भी अविवाहित थे मगर सब संतो के आशीर्वाद एवं योजनाबद्ध तरीके से काम करने के कारण सुख पूर्वक संपन्न हो गये। आज उनके भाई की अपनी इलेक्ट्रीकल गुडस की होलसेल दुकान है और वे बैंक में अभी भी कार्यरत हैं।

जब उनसे बात शुरू हुई तो उनहोंने बताया कि विवाह के पश्चात संतान उत्पति में बाधा उत्पन हो रही थी। डॉक्टरों से परामर्श किया तो बताया गया गर्भाशय में गाँठ है। ऑपरेशन करवाना पड़ेगा। तब ही संतानोत्पति संभव है। यह बात सिद्धभाऊ के माध्यम से संतों तक पहुंची। संतो ने कहा प्राकृतिक चिकित्सा और होम्योपैथिक चिकित्सा करो। स्वामीजी ने यह भी कहा पत्ता गोभी का रस पीयो गाँठ गल जायेगी। ऐसा ही किया गया, डॉक्टर जोशी से होम्योपैथिक दवाइयां ली गई और पत्ता गोभी के रस का सेवन किया। 2 माह बाद जब जांच कराई तो पता चला कि गाँठ गल चुकी थी और बगैर ऑप्रेशन के ही सब ठीक हो गया और एक वर्ष के अन्दर ही उनको पुत्रीरत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम उन्होंने उर्वशी रखा। सन् 2022 में इंजीनियर बनने तथा एमबीए करने के बाद संस्कारी परिवार में उसका विवाह संपन्न हुआ। उनका सुपुत्र भरत जब छः सात वर्ष का था आश्रम में खेलते–खेलते स्वामीजी के पास पहुंच गया और जाकर स्वामीजी के पांव छू लिये। स्वामीजी किसी को भी अपने चरण स्पर्श नहीं करने देते थे। मगर बच्चा था नाराज नहीं हुये किसी से पूछा यह किसका बच्चा है जब उनको पता पड़ा कि हमारा है तो उन्होंने उसको 500 रूपये देते हुए कहा यह बड़ा आफीसर बनेगा। कलांतर में जब भरत 16 वर्ष का था तब भयंकर रूप से दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उसकी बाईक बीआटीएस की रेलिंग में घुस गई। जीवन और मौत का प्रश्न हो गया था। घर वाले सभी नर्वस एवं चिंतित थे। मगर उनको स्वामी जी का आशीर्वाद याद आया कि यह बड़ा होकर आफीसर बनेगा। इसलिए वह आश्वस्त थे कि उनका बेटा एकदम ठीक हो जायेगा। और हुआ भी ऐसा ही। आज वह भरत आर्कीटेक्ट बन चुका है और अपनी प्रेक्टिस कर रहा है। जो स्वामीजी में विश्वास और अटूट श्रद्धा रखते हैं उनके कारज गुरूजी स्वयं पूरे करते हैं। उनकी बिटिया उर्वशी जब ढाई वर्ष की थी तब ये पं.दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज के पास रहते थे। नीचे के तल पर दुकानें थीं, प्रथम तल पर वे, उनका परिवार और द्वितीय तल पर उनके भाई गोविदजी सपरिवार रहते थे। द्वितीय तल पर एक रेलिंग बनी हुई थी हवा और रोशनी के लिये। घर में उस दिन पेंटर पेंट लगा कर गया था तो ऊपर की रेलिंग खोल कर गया था। उस समय उर्वशी दौड़ती दौड़ती ऊपर गई और रेलिंग के छेद से नीचे धड़ाम से आ गिरी। सब घबरा गये। 11 फिट ऊपर से गिरी थी। नीचे घड़े को रखने के लिये स्टैंड रखा था। उसके छेद में आकर गिरी सब घबरा गये और लगा ज़रूर इसको फ्रेक्चर हुआ होगा मगर आश्चर्यचकित रह गये जब वह खिखिलाकर हंस पड़ी और बोली मुझे डॉक्टर के पास मत ले जाना।

एक बार उनको पीलिया हो गया। खून की जांच के लिए जब उनका सेम्पल पेथोलाजी भेजा गया तो उस टेस्ट में उनको पता पड़ा कि हेपटाइटिस के लक्षण हैं। दिनों दिन तबियत खराब होती जा रही थी। जो खाते वो उल्टी के साथ बाहर निकल जाता। बहुत सारे इलाज किये आखिरकार उन्होंने सिद्धभाऊ से फोन पर आग्रह किया कि हम चाहते है कि हम स्वामीजी के दर्शन करने के लिये कुटिया पर आयें और स्वामीजी के हाथ से हमें प्रसाद के रूप में मिश्री मिले। हमारा विश्वास है कि इससे हमको लाभ होगा। आज्ञा मिली हम गये स्वामीजी से आग्रह किया कि वे अपने हाथ से इनको मिश्री का प्रसाद दें मगर स्वामीजी ने कहा मैं प्रसाद देता हूं क्या किसी को? अपने हाथ से

तुम दे दो। मगर उसने हाथ आगे बढ़ाया और स्वामीजी ने उस हाथ को ढकेल कर बोला मैंने बोला न तुम दे दो मगर इस दौरान उनका हाथ प्रसाद के पेकेट से छू गया था। वह प्रसाद खा कर वे पुनः टेस्ट करवाने गये मगर इस बार चमत्कारिक रूप से निगेटिव रिपोर्ट आई। जहां पहले टेस्ट करवाया था वहां के सेम्पिल को फिर से टेस्ट करवाया गया मगर वह अभी भी पाज़िटिव था। यह अपने आप में स्वामीजी की सिद्धियों को दर्शाता है।

उर्वशी जब छोटी थी वो खेलते खेलते स्वामीजी की गोदी में जाकर बैठ गई थी उस समय उसकी आयु डेढ़ वर्ष के आसपास होगी। बच्चों के कपड़े तो बाल्यवस्था में एक जैसे ही होते हैं, स्वामी जी को लगा कि वह लड़का है उन्होंने कहा यह बड़े होकर बहुत कैम्प लगवायेगा। संयोग देखिये अभी जिस घर में वह ब्याह कर गई है वह राधास्वामी परिवार में है और उनका काम भी फार्मा कं. का है। वे जब आश्रम पर गये तो उनको वहां पर बहुत शान्त और आध्यात्मिक शक्तियों वाला स्थान महसूस हुआ। आश्रम में सुखमनी पाठ के बाद आये हुये लोगों के लिये भोजन के लिये भंडारे की व्यवस्था होती थी। रामनानी जी थोड़ा देर से आये थे, भंडारे की समाप्ति का समय होने वाला था। स्वामीजी ने निर्देशित किया जिसने भंडारा नहीं खाया है वह जाकर खाये। वे भंडारे के लिये गये और आधा अधूरा खाकर वापस आ गये। स्वामीजी उस दिन कार्यकर्ताओं से गेट के पास खड़े होकर बातें कर रहे थे। 20–25 मिनट हो गये तो स्वामीजी ने सबको जाने की आज्ञा दी और कहा आपमें से कोई है जिसने भंडारा मन से नहीं खाया, वापस जाये खाकर आये। उनको बोलना पड़ा मैं हूं, वे जा रहे थे, तो स्वामी जी ने बोला आप लोगों में एक कोई और भी है जिसने भंडारा बिलकुल नहीं खाया। पता पड़ा कि वे बीएचईएल क्षेत्र के अशोक करनानी जी थे जो लेट आये थे, यह बात उनको कैसे पता पड़ी आज भी उन्हें आश्चर्यचकित कर देती हैं। एक बार वे व्यक्तिगत कार्य से अजमेर गये थे। वापसी का कार्यक्रम अनिश्चित था। वे स्वामीजी का दर्शन करने पुष्कर गये। स्वामीजी ने पूछा टिकट रिजर्वेशन करवाया है तो उन्होंने कहा नहीं करवाया है, वापसी का कार्यक्रम निश्चित नहीं है कि कब जाऊंगा। उन्होंने कहा ठीक है। उन्होंने संत नगर की कुटिया के लिये कुछ सामान ले जाने के लिये दिया। वे जब वापसी के लिये गाड़ी में जनरल टिकिट लेकर चढ़ गये मगर रिजर्वेशन डिब्बे में जाकर बैठ गये। गाड़ी में बहुत भीड़ थी मगर वे बैठे रहे। टीटी ने बगैर रिजर्वेशन किये सब लोगों को डिब्बे से उतार दिया बहुत भीड़ थी टिकिट चेक करने आये मगर आश्चर्य न तो सहयात्रियों ने न ही टी सी ने टिकट का पूछा सबका टिकट चेक किया मगर शायद उनको वो नजर ही नहीं आये। वो चला गया और जिस सीट पर वे बैठे थे वहां कोई आया ही नहीं और वो सो गये और इन्दौर में जाकर उतर गये। चार्ट में उन्होंने देखा उस सीट पर जयपुर से सवारी बैठनी थी शायद वो आई ही नहीं थी, उसको वे स्वामीजी का चमत्कार मानते हैं।

सेवा कार्यो से ही सुकून

श्री मनोहर चंचलानी
जयपुर मो. 9829066971

स्वामीजी से उनका परिचय 1994 में हुआ। तब जब वास्को में नेत्र शिविर लगाया

गया था। उस शिविर की जो व्यवस्था की गई थी वह तो एक दिन में समाप्त हो गई। फिर बाम्बे के कुछ लोगों ने ट्रकें भर कर वहां पर सामग्री भिजवाई थी यह बात याद करते हुए, शिव रूपी आये नागदेवता के दर्शन करके हुये आनन्द को याद कर वे अभिभूत हो गये।

एक बार स्वामीजी जयपुर आये हुए थे उनके पिताजी ने स्वामीजी से दुकान पर आने का अनुरोध किया। स्वामीजी ने स्वीकृति दी, वे दुकान पर आये 10 मिनट ही रुके। उस दौरान उन्होंने पूजा वगैरह संपन्न कराई, पिताजी ने उनको धन्यवाद करते हुये कहा स्वामीजी आप आये बहुत महरबानी की तो स्वामीजी ने नाराजगी भर लहजे में कहा गलत बोल रहे हो कहो कि दुकान पर सेठ आया है। इतने दयालु थे हमारे स्वामीजी।

बास्को के बाद जब जब भी कैम्प लगता था वे जाते थे। उनको वहां का वातावरण बहुत खुशनुमा लगता था। पोजिटिव वेव चारों तरफ फैल जाती थीं। ऐसा लगता था कि हम नेत्र शिविर में नहीं बल्कि किसी पिकनिक स्पाट पर आये है। स्फूर्ति, ताज़गी, और मन में आनंद की लहरें उठने लगती थी। वे अजमेर कैम्प में गये थे तो स्वामीजी ने सभी कार्यकर्ताओं को पुष्कर बुलाया। हम सब पुष्कर गये वहां पर शिविर के बारे में मंत्रणाएँ हुई। सब ने स्वामीजी के आगे शिविर सहायतार्थ कुछ दान राशि रखी मैंने भी रखी। स्वामीजी ने सिद्धभाऊ को बोला मनोहर ने कितने पैसे रखे हैं? उठाओ और गिनों! सिद्धभाऊ ने गिने कहा स्वामीजी 400 रूपये है। बोले 100 रू कहां गये? उन्होंने पूछा कितना सोचकर देने के लिये घर से निकले थे तो मैंने कहा 500 रूपये और दिये कितने 400 रूपये। मनोहर जी सोच में पड़ गये बोले खर्च हो गये। तो उन्होंने कहा अब दो सौ रूपये ब्याज सहित देना। मनोहरजी सोच में पड़ गये कि स्वामीजी को कैसे पता पड़ा कि मैं 500 रूपये देने बाला हूं। मैने तो किसी को बताया भी नहीं था । तब उनको स्वामीजी की शक्तियों का विश्वास मन में बैठ गया।

एक बार मनोहरजी स्वामीजी के आश्रम में अपने ढाई वर्ष के बेटे निखिल और अपनी धर्मपत्नी के साथ गये थे। निखिल बाल सुलभता के कारण आश्रम में दौड़ रहा था उस समय उसको सुनने में समस्या थी। स्वामीजी ने उसको आवाज देकर बुलाया और कहा यह प्रसाद उठालो उसने मुट्ठी भर कर मिश्री उठाई और खा गया। जब कि वह मीठा खाता ही नहीं था। यह देख कर वे आवक रह गये। उनकी श्रीमती के पास एक कंधे पर लटकाने वाला बैग था, स्वामीजी ने कहा यह बैग मत उठाओ ये डाकू उठाकर ले जायेंगे। यह 1990 की बात होगी। बात आई गई हो गई। उसी बैग को लेकर मेडम 2008–2009 में बाम्बे गई थी और आटो में बैठीं, बैग सीट पर रखा। रेड लाईट पर दो लोग आये और बैग उठकर ले गये। उस बैग में सोने की चैन, नगदी मिलाकर 25 हजार रूपये का उस समय सामान था। आज 2022 में तो उसकी कीमत 2 लाख रूपये की होगी। स्वामीजी ने कहा था 90–91 में और चोरी हुई 2008–2009 में, 15 वर्ष बाद। कितनी दूर दृष्टि थी उनकी सोच कर आज भी आश्चर्य होता है।

स्वामीजी झूलेलाल मंदिर राजा पार्क में आये थे उस समय मनोहरलाल जी के पिताजी स्वामीजी के पास निखिल को ले गये और बोले स्वामीजी यह मेरा पोता निखिल है। स्वामीजी ने उसके सिर पर आपना बांया हाथ रखते हुए पूछा यह लड़का दिमाग वाला है कि नहीं। उनका वह हाथ स्वामीजी का सिर पर आना आशीर्वाद बन गया। स्वामीजी बगैर किसी रेलिंग इत्यादि का सहारा लिये हुए सीढियां चढ़ जाते थे उनके लिये स्टेज पर सहारे के लिये तूल तकिया (बड़ा सा बेलनाकार तकिया) रखा गया था

मगर उन्होंने उसे हटा दिया।

उन्होंने एलएलबी की डिग्री हासिल की थी पर वकालत करने के मूड में नहीं उन दिनों जोधपुर में वकालत करने का रजिस्ट्रेशन करवाना पड़ता था। पहली बा चयन नहीं हुआ दूसरी बार वे 30 मार्च 1996 को, जब स्वामीजी राजा पार्क में झूलेल मंदिर का उदघाटन करने आये थे तो, उनका आशीर्वाद लेकर गये थे। जोधपुर प लंबी लाइन थी। लोग 12–13 वीं बार आये थे रजिस्ट्रेशन करवाने पता नहीं कहां से। मगर स्वामीजी के आशीर्वाद के कारण दूसरी बार में उनका रजिस्ट्रेशन हो ग काला कोट पहनो और मस्त रहो। उसके बाद वे जिला कार्यालय में वकालत करने ल वहां से उनको अच्छी आय होने लगी। उन दिनों नेत्र शिविर लगाने के लिये स्वामीजी कार्य सौपते थे। अशोक जेमन जी से स्वीकृति लेनी पड़ती थी। और मिल ज थी। आज भी मैं कहीं भी वकालत करूं मगर जो आय यहां से होती है सुकून मिलता चाहे हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट कहीं भी चला जाऊं वह सुकून नहीं मिलता। आज भी आफिस चेम्बर राजापार्क में है।

स्वामी लीलाशाह से रूहानी वार्तालाप

श्री मोहन भाग्या
हरी मार्ग जयप
मो. 98290054

श्री मोहन भाग्या जी के माता–पिता का विवाह स्वामी हरीराम जी के आशीर्वा संपन्न हुआ था। स्वामी हरीराम जी के दो शिष्य थे। हमारे गुरूजी ब्रह्मालीन स्व हिरदाराम जी एवं स्वामी शेवाराम जी। स्वामी शेवारामजी हरीशेवा धाम भीलवाड़ गदीनशीन हुए और स्वामी हिरदारामजी ने पुष्करराज को अपनी कर्मस्थली के रूप चुना। उनके दो स्थान पर आश्रम हैं, आध्यात्मिक दृष्टि से पुष्करराज में और कर्म स्थली के रूप में सेवा संकल्पधाम संत हिरदाराम नगर में। सन् 1962 में जब मोहन की आयु 12 वर्ष थी वे पहली बार अपनी माताजी के साथ पुष्कर आश्रम में गये थे।

उन्होंने बताया कि पुष्कर के आश्रम का निर्माण स्वामीजी के शिष्य घुमणसिंह ने करवाया था। रूम की छत छोटी थी जब वहां पर पाठ वगैरह होता था तो लोग ब धूप में बैठे रहते थे, उनको अच्छा नहीं लगता था। तब उन्होंने स्वामीजी से निवेदन कि कि यहां पर एक हाल का निर्माण करवाया जाये तो उन्होंने इस शर्त के साथ स्वीकृति कि उस कुटिया का नाम भाग्या कुटीर होगा। उन्होंने एक डंडा उठाया, एक ज चिन्हित की, उस पर जमीन पर हाल की हदें तय कर दीं। उन्होंने उस चिन्हित ज पर उसी साइज़ के हाल का निर्माण करवाया स्वामीजी ने कहा यह आपकी अपनी संपति रहेगी आप कभी भी आश्रम में आकर कहीं भी उठ बैठ पाठ सेवा कर सकते उसके लिये उन्होंने ड्राइंग बनाई जिसे स्वामीजी ने हस्ताक्षरित कर अपनी स्वीक प्रदान की। पुष्कर आश्रम में रेती होती थी जो बहुत गर्म होती थी। स्वामीजी से अ लेकर हम आश्रम में भी चप्पल पहनकर घूमते थे। अजमेर से स्वामीजी के लिये हम ल दलिया का मीठा भात लेकर जाते थे। स्वामीजी स्वयं खाना बनाते थे और अनेक उन्होंने रोटी स्वयं बनाई, पहले मुझे खिलाते थे और बाद में कहते थे अब तुम हाथ धो



संत जी भविष्य को देखते हुए



पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जी स्वामी जी के साथ



संत जी राष्ट्र कवि हूंदराज दुखायल जी के साथ



संत जी गंगा स्नान करते हुए



संत जी सिद्ध भाऊ गहन वार्तालाप करते हुए



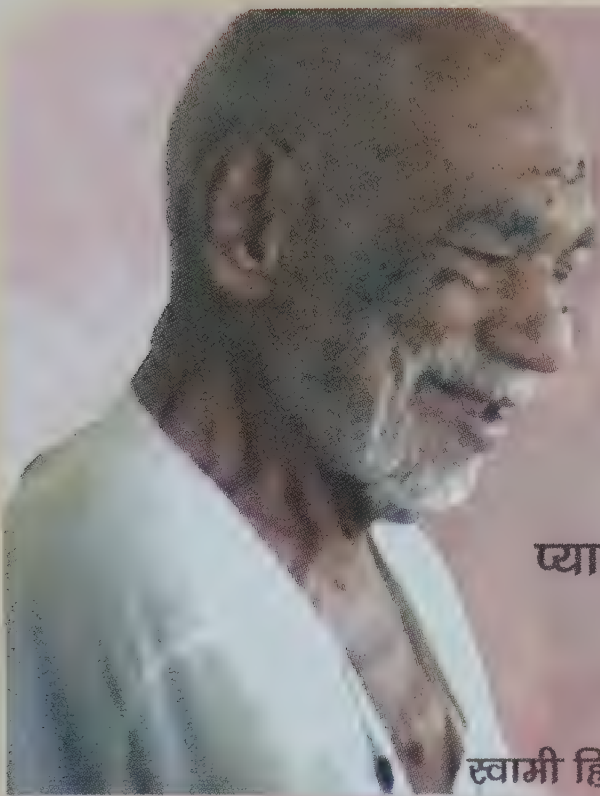
संत जी



संत जी

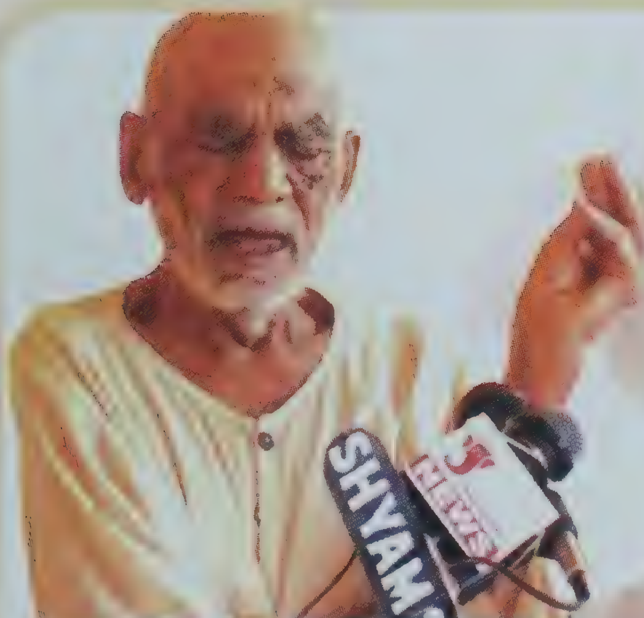


संत जी अपना भोजन बनाते हुए



प्यासे को जल, भूखे को भोजन,
नग्न को वस्त्र देने से
पूरे परिवार का
लोक-परलोक सुधरेगा

स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)



पक्षी को दाना, गाय को चारा देकर
मानव जीवन के कर्ज़ को कम करना चाहिए

स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


सादगी और शांत रहना
प्रभु मार्ग के साधन हैं
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


निःस्वार्थ सेवा, स्वर्ग का द्वार है
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)

मुझे परोसकर खिलाओ। यह सौभाग्य विरलों को ही मिलता है।

1973 में सिद्धभाऊ स्वामी जी के सान्निध्य में आये। उसके पूर्व मोहन जी, मुकेश जी ही सेवा में जुड़े रहते थे। मोहन जी भोपाल के टाऊन प्लानिंग विभाग में कार्य करते थे। जवाहर चौक स्थित शेड क्र.–8 में उनका आफिस होता था। भोपाल की जो टाऊनप्लानिंग हुई उसमें मोहन भाग्याजी का मुख्य किरदार था। उस समय की प्लानिंग पर उनके हस्ताक्षर हैं। उसके अलावा उनके मार्गदर्शन में इन्दौर, उज्जैन, रायपुर, खजुराहो के मास्टरप्लान भी संपादित हुये।

उसके बाद उन्होंने हाऊसिंग बोर्ड में नौकरी की। उनकी पोस्टिंग इन्दौर में थी। वहीं पर उनकी शादी संपन्न हुई । स्वामीजी शादी में नहीं आये मगर जय मूलचंदानी जी जो उस समय इन्दौर में रहते थे, से पाठ रखवाया गया। अजमेर के प्रेम केवलरामानी की बहन से उनका विवाह हुआ। इनके साथ ही इनके भाई सुरेन्द्र जी का भी विवाह संपन्न हुआ था। उनकी धर्मपत्नी उस समय बीए पास थीं बाद में उन्होंने एमए पास किया, मोहन जी ने भी एएमआईई की तैयारी की मगर सफल नही हो सके। स्वामीजी के कहने पर उन्होंने और उनकी धर्म पत्नी ने साधू वासवानी सकूल के निर्माण में कार सेवा भी की। वे चाह रहे थे कि उनकी धर्मपत्नी भी शिक्षक बनें मगर स्वामीजी ने मना कर दिया तो उन्होंने नौकरी करने का विचार त्याग दिया।

अजमेर में अस्पताल बन रहा था उसके लिये उन्होंने सहयोग किया। पुष्कर में हाल का निर्माण शुरू हुआ तो स्वामीजी ने कहा फर्श वगैरह खराब नहीं होने चाहिये। स्वामीजी बैरागढ़ कुटिया चले गये और उनकी इच्छानुसार ही कार्य करवाया गया।

बैरागढ़ में वे जब रहते थे तो उनको दादा रोचीराम जी एवं डॉ.भगवानदास जी भी खूब स्नेह और प्यार देते थे। बगीचे में रसीले आम भी खाने को देते थे। उन आमों में पता नहीं क्या तासीर थी कि खाने से तन, मन, आत्मा तक तृप्त हो जाती थी। एक बार पुष्कर की कुटिया में यही बात स्वामीजी को बोली तो उन्होंने फोन कर बैरागढ़ कुटिया से दूसरे दिन ही आम मंगवा लिये। फोन कर बताया कि आम आ गये हैं आकर ले जाओ। वे आश्चर्य चकित हो गये कि कल ही स्वामीजी को बताया था आज आम आ भी गये। वे आश्रम गये स्वामीजी ने घुमणसिंह, ईसरदास जी के लिये भी आम दिये मगर मोहनजी को झोला भर कर आम दे दिये।

स्वामीजी जिस कुर्सी पर बैठते थे वह कुर्सी भी उन्होंने मोहनजी को दे दी थी और कहा था इस पर बैठकर पढ़ाई किया करो। उन्होंने यह भी कहा कि इस पर अपना नाम लिखो, मोहन राजा और तारीख भी लिखो आज भी वह कुर्सी उनके पास सुरक्षित है और उसी पर बैठकर आज भी पाठ करते हैं। इतना स्नेह था स्वामी जी का उन पर, उनके परिवार पर जिसे सुनाकर वे अभिभूत हो रहे थे।

मोहन भाग्या जी को लगा कि पुष्कर आश्रम में टेलीफोन लगना चाहिये। स्वामीजी से कहा तो स्वामीजी बोले नहीं नहीं, लोग आ आ कर फोन करने का आग्रह करेंगे, मेरी साधना में व्यवधान होगा तो उन्होंने कहा टेलीफोन स्वामीजी के कमरे में नहीं भाग्या कुटीर में लगाया जाएगा। उसका एक्सटेंशन सिद्धभाऊ के कमरे में होगा और रिंगिग वालयूम इतना कम रखा जायेगा कि स्वामी जी की साधना में विघ्न नहीं पड़ेगा। इसी शर्तों के साथ टेलीफोन लगाने की अनुमति मिली।

पुष्कर ट्रस्ट में जो खाता खोला गया उसमें मुकेश भाग्या, मोहन भाग्या और स्वामीजी के नाम पर ज्वाइंट खाता खोला गया था बाद में उस खाते के नामों को

परिवर्तित करवा दिया गया।

उन्होंने हमारे नामों के साथ उपनाम जोड़ रखे थे। मोहन शुद्ध राजा, मुकेश योगीराजा, सुरेन्द्र महाराजा। 10 जून 1984 की बात है उस पर हम सब भाईयों के हस्ताक्षर करवाये गये और स्वामीजी ने भी उस पर अपने हस्ताक्षर किये। वह कागज आज भी उनके पास सुरक्षित है। सिद्धभाऊ ने अपने हाथ से लिखवाया माता सबकी मालकिन उनके पिता सबके मालिक।

स्वामीजी ने खुद अपने हाथों से लिखकर दिया मोहन भाग्या के भाग्य जागे। यह सब स्वामीजी की हस्तलिपि में उनके पास आज भी सुरक्षित हैं।

जब मोहनजी 14 वर्ष के होंगे स्वामी लीलाशाह आश्रम में आ रहे हैं ऐसा स्वामीजी ने उनको बताया। उनसे कहा यहां पर टाट पट्टी बिछा दो। लीलाशाह जी यहां बैठेंगे में वहां नीचे बैठ जाऊंगा। जब वे आये तो गेट पर ताला लगा देना। किसी को अंदर मत आने देना। अंदर और बाहर की सभी लाइटें बंद कर देना। मोहन जी ने कहा ठीक है। स्वामी लीलाशाह जी साढे पांच बजे के आसपास आये। उनके साथ जो आये थे छोड़ने के लिये उनको गेट से ही वापस भेज दिया गया। स्वामीजी और लीलाशाह जी कमरे के अंदर चले गये। स्वामीजी की आज्ञानुसार गेट पर ताला लगा दिया, लाईटें बुझा दीं। स्वामीजी जमीन पर बैठ गये तो लीलाशाह भी बगैर किसी बिछावन के उनके सामने बैठ गये। साढ़े पांच से साढ़े छः, साढ़े छः से साढे सात बज गये मगर न स्वामीजी बाहर निकले और न ही लीलाशाह जी आखिर 8 बजे के आसपास दोनों संत बाहर आये। उन के बीच ढाई घंटे में कितना रूहानी वार्तालाप हुआ होगा सोच–सोच कर आज भी मोहन जी रोमांचित हो जाते हैं। उनके जाने के बाद लाइटें जलाई गई। भोजन के नाम पर स्वामीजी और उन्होंने दूध पिया और सो गये। उस दिन कुटिया पर सिर्फ मोहन जी और स्वामीजी ही थे।

अनेक बार स्वामीजी ने उनको रूपये पैसे दिये वे सब उन्होंने आज भी संभालकर रखे हैं। हरीशेवा धर्मशाला के गदीनशीन शेवाराम जी उनको मोहन मुरली वाला नाम से पुकारते थे।

जो बोया है वैसा ही फल मिलेगा

श्री जय मूलचन्दानी
जयपुर मो. 9829065222

जय मूलचन्दानी जी से यह मेरी पहली मुलाकात थी। इनका मोबाइल नं. मुकेश भाग्याजी ने दिया था, फोन पर उनसे बात हुई, उनसे समय लेकर मैं उनके घर पर गया था। इसके पूर्व कभी नाम भी नहीं सुना था। व्यवहारकुशल, सुन्दर व्यक्तित्व के मालिक मधुर वाणी बोलने वाले , अविवाहित जीवन यापन करने वाले 48वर्षीय जय मूलचंदानी जी की स्वामीजी में अथाह श्रद्धा है, ऐसा मुकेश जी ने बताया था। उनके घर हमें पहुचने में देरी हो रही थी तो उन्होंने कहा उनको कहीं जाना है तो हमें अफसोस हुआ कि उनसे समय लेकर भी हम लेट हो गये। मगर हमारा भी इसमें दोष नहीं था। स्वामीजी के दूसरे शिष्य के यहां पर अपेक्षा से ज्यादा समय लगने के कारण ऐसा हुआ था। जब वहां स्वामीजी के बारे में चर्चा चली तो उस वार्तालाप के माधुर्य में हम डूबते चले गये थे।

स्वामी जी की बातें सुनने का, उनकी लीलायें सुनने का मोह हम कैसे छोड़ सकते थे। अतः हमने उनसे क्षमा याचना की और सीधे गंतव्य पर आये। उन्होंने भी बगैर भूमिका के स्वामीजी के बारे में बताना शुरू किया।

उन्होंने बातया कि वे स्वामीजी के संपर्क में आने वाली अपने परिवाग की चौथी पीढी के सदस्य हैं। उनके परदादा, दादा, पिताजी और अब उनकी पीढी। बचपन से स्वामीजी को देखते आये थे। पहले वे इन्दौर में रहते थे तो स्वामीजी उनके घर में आते थे और गुरूग्रंथ साहिब का अखण्ड पाठ रखा जाता था। बोले स्वामीजी बड़ी ही ऊंची शख़्सियत के मालिक थे। वे बातों ही बातों में गूढ संदेश दे जाते थे। उनके पिता स्व. श्री अटल मूलचंदानी जी का 1988 में स्वर्गवास हो गया था। उसके कुछ दिन पहले ही पुष्कर से सिद्धभाऊ ने स्वामीजी का संदेश दिया था कि स्वामीजी ने उनको पुष्कर आने के लिये कहा है। मगर पिताजी ने मना कर दिया था कि तबीयत खराब है। एक दो हफ्ते बाद आऊंगा मगर वे जाते उसके पूर्व ही वे स्वर्गधाम को जा चुके थे।

उनकी माताजी ने उनको बताया कि वे जब छोटे थे, मां की गोदी में खेल रहे थे स्वामीजी घर पर आये थे और उन्होंने उनको एक सेवफल खाने के लिए दिया था। उन्होंने मुस्करा कर एक हाथ में पकड़ा और अपना दूसरा हाथ स्वामीजी के आगे कर दूसरा सेवफल भी मांगा। स्वामीजी ने माताजी को कहा यह दूसरा सेवफल नहीं अपने लिये दूसरा भाई मांग रहा है। उन्होंने सेवफल उनको दिया और फिर जल्द ही उनके घर में उनके छोटे भाई ने जन्म लिया।

एक बार जब वे 25–26 वर्ष की उम्र के थे तो स्वामीजी के दर्शन के लिये पुष्कर गये थे। 9–10 बजे के बीच का समय होगा। वे स्वामीजी के पास बैठे थे तभी एक विदेशी पर्यटक, जो स्वामीजी में आस्था रखता था, आया और बोला स्वामीजी मेरे बच्चे मुझे सम्मान नहीं देते हैं। स्वामीजी ने सिद्धभाऊ को बोला इनको मिश्री का प्रसाद दो। वह आदमी प्रसाद लेकर चला गया। मेंरे दिमाग में बात आयी कि आखिर स्वामीजी ने उसको सांत्वना के दो शब्द भी नहीं बोले, समस्या का सामधान भी नहीं बताया और प्रसाद देकर बिदा कर दिया, क्यों? 10–15 मिनट बाद ही स्वामीजी ने टहलते हुए सिद्धभाऊ को बोला यह आदमी जो आया था जब उसने अपने मां बाप को इज्जत नहीं बख्शी तो इसके बच्चे इसे इज्जत कैसे दे सकते हैं? स्वामी जी व्यक्ति का चेहर देखकर ही उसके व्यक्तित्व के बारे में जान लेते थे।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी की महिमा का कोई अंत नहीं है। स्वामीजी के संग में उनके परिवार ने बहुत कुछ पाया है। इन्दौर में उनके पिरवार के पास बुश रेडियो की मध्यप्रदेश के लिये डिस्ट्रीब्यूटरशिप थी। बाद में उन्हें म.प्र. के सहित जयपुर राजस्थान की डिस्ट्रीब्यूटरशिप भी मिल गई। तब वे अपने परिवार सहित जयपुर शिफ्ट हो गये यह 1977 की बात है। अब एक प्रदेश से दो प्रदेश की डिस्ट्रीब्यूटरशिप हो गई थी।

वे एक बार अपने छोटे भाई भरत के साथ जो उनसे ढाई वर्ष छोटे थे, पुष्कर आश्रम गये थे। वहां पर स्वामीजी ने पूछा तुम दोनों में से पहले शादी कौन करेगा। मैंने बोला भरत, भरत ने बोला जी, स्वामीजी मुस्करा दिये। भरत की शादी पहले हो गई और वे आज तक अविवाहित हैं। उनकी दो बड़ी बहनें हैं जिनका विवाह भी जयपुर में हुआ है। आज उनका इलेक्ट्रोनिक्स का बहुत बड़ा व्यवसाय है।

उन्होंने बताया कि उनके दादाजी का स्वर्गवास 1996–97 में हो गया था। वे जब 16–17 वर्ष के थे तो वे 2001 में पुष्कर कुटिया गये थे। बुश रेडियो का प्रचलन खत्म हो

गया तो उनका व्यवसाय ठप्प हो गया था। अन्य व्यवसाय किये तो वे भी नहीं चले। उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। उनको मकान बनवाना था परन्तु पैसे थे नहीं। वे पुष्कर गये तो स्वामीजी ने पूछा मकान बनाया कि नहीं। मैंने बताया कि अभी हम उस स्थिति में नहीं हैं, आप आशीर्वाद दीजिये। तब स्वामीजी ने सिद्धभाऊ को बोला इसे मिश्री दो सिद्धभाऊ ने चार पुड़िया मिश्री की दी। स्वामीजी ने कहा और दो उन्होंने फिर चार थैली और दी। स्वामीजी ने कहा सिद्ध पूरी मिश्री दे दो। वे लगभग 20 पुड़िया थीं। फिर तो स्वामीजी की ऐसी कृपा हुई कि देखते देखते यह बंगला बन गया। क्या तो उनका शाही बंगला था। देखकर मन प्रसन्न हो गया।

वास्तव में 'जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ' जो जो स्वामीजी के संपर्क में अटूट श्रद्धा रखकर आये वे निहाल हो गये।

संस्कारित परिवार

श्री मुकेश भाग्या
सी–1, हरीमार्ग, मालवीय नगर जयपुर।
मो. 9460709679

मुकेश भाग्याजी से मेरा परिचय बहुत पुराना था। जब नवयुवक परिषद में मैं जी जान से कार्य करता था तब वे नवयुवक परिषद के दानदाता थे। जयपुर में मेरी बहन, मेरी साली, मेरी मुंहबोली बहन, मेरी अर्द्धांगिनी के चचेरे भाई; अजमेर में मेरी बहन, बुआ, भाई की ससुराल, मेरी ननिहाल और मेरी ममेरी बहनों के परिवार रहते थे। राजस्थान से हमारा पुराना नाता था। मेरे बचपन की गर्मी की छुट्टियां राजस्थान में ही बीतती थीं। दादी का मायका भीलवाड़ा और मां का मायका अजमेर बस छुट्टियां होते ही वहां पहुंच जाते थे। जयपुर में मुंह बोली बहन के घर जाता था मिलने के लिये जो पहले खजांची गली में रहती थी मगर बाद में मालवीय नगरमें रहने लगी थी। जब भी मैं मालवीय नगर जाता तब रास्ते में मुकेश जी का भव्य बंगला पड़ता था तो 2–3 बार उनसे भी मुलाकात हुई। खूब अच्छी मुलाकात होती थी। मगर ये मुलाकातें 2–3 से ज्यादा नहीं थीं। जब स्वामीजी के ऊपर किताब लिखने की बात मन में आई और मुकेश जी को बताया तो वे बड़े प्रसन्न हुये। उन्होंने 10–15 मिनट में ही स्वामीजी के प्रशंसकों के 15–20 नाम और उनके कॉन्टेक्ट नम्बर मुझे वाटसअप से भेज दिये। मैंने उनसे मांगे भी नहीं थे। इतना अच्छा उनका प्रत्युतर देखकर मन प्रसन्न हो गया। यह 2–3 महीने पहले की बात थी। अचानक मेरा अजमेर, पुष्कर, जयपुर, उदयपुर, डूंगरपुर का कार्यक्रम बना और जब मैं जनवरी माह में राजस्थान पहुचां तो उनको फोन किया कि आपने नम्बर तो भेजे मगर उनके निवास का शहर भी बताइये तो उन्होंने दुबारा मुझे स्वामीजी में अथाह श्रद्धा रखने वाले अजमेर, पुष्कर, जयपुर के लोगों के नाम भेजे, मैं तो किसी को जानता भी नहीं था। ये नंबर आगे मुझे बहुत सहायक सिद्ध हुए। उनका यह उपकार न होता तो शयद यह ग्रंथ आपके हाथ में इतने सुंदर रूप में नहीं पहुंच पाता। मुकेश जी के इस भाव को मैं सादर नमन करता हूं।

मैं जब जयपुर पहुंचा तो उन्होंने मुझसे पूछा कहां पर रह रहे हो तो मैंने जगह बतायी। उन्होंने कहा उसी स्थान पर श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति की हमारी वैन सबेरे

नाश्ता बांटने के लिये आती है। वह वैन आपको घर लेने आयेगी, उससे आप मानसरोवर स्थिति श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति के कार्यालय में आइयेगा। वहां से वहां के सेवाधारी श्री ईश्वर लाल मेहरचंदानी जी आपको हमारे नायला गांव में स्थित केन्द्र पर ले जायेंगे जहां से हमारे सेवाकार्यो का संचालन होता है। वहां पर नेत्र शिविर, यूरोलोजी शिविर, सामान्य चिकित्सा शिविर लगते हैं। वहां पर आप अवलोकन करके आना और फिर मैं आपको मिल जाऊंगा और दूसरे सेवादारों से भी मुलाकात कराऊंगा। यह सब मेरे लिये अनपेक्षित अनुभव था। शायद कोई मेरे पास आता तो मैं उसे इतना अपनत्व, महत्व शायद ही दे पाता। उन्होंने अपने जीवन के कुछ अनुभव मुझे लिखकर दिये हैं। उन्हें मैं अपने शब्दों में लिखने का प्रयास कर रहा हूं।

उन्होंने लिखा है कि वे स्वामीजी के संपर्क में पहली बार 1975 में तब आये जब स्वामीजी बोधराज साहिब के दरबार में आये हुये थे। वे उनसे मिलने के लिये वहां पर गये। उस समय वे कक्षा 11 के विद्यार्थी थे और अकेले ही पता नहीं किस प्रेरणा के वशीभूत होकर वे स्वामीजी से मिलने चले थे। स्वामीजी ने उनकी शक्ल देखकर ही कहा अपना ब्रह्माचर्य क्यों नष्ट कर रहे हो। यह सुनकर वे हक्का बक्का रह गये। इसके पूर्व स्वामीजी से उनका परिचय भी नहीं था। उनके कानों की लौवें गर्म हो गई क्योंकि स्वामीजी ने ऐसी बात कह दी थी जो उनके व्यक्तिगत जीवन से संबंध रखती थी। वे सोच में पड़ गये आखिर स्वामीजी को यह सब कैसे पता पड़ा। वे उस समय अजमेर में रहते थे। स्वामीजी ने उनको कहा कि तुम्हारा ब्रह्माचर्य नष्ट हो रहा है। कितनी अनोखी बात थी जिसे उन्होंने भांप लिया और बगैर किसी हिचक के सबके सामने कह दिया। वे शर्म से सिर झुका कर रह गये, उनको आत्मग्लानि का अनुभव हुआ। उन्होंने दूसरा सवाल किया सत्संग में जाते हो? 'न' उतर सुनकर उन्होंने कहा वे भाग्यहीन होते हैं जो सत्संग में नहीं जाते। उनकी आज्ञा मानकर अगले दिन से ही मैं अजमेर में खारी खुई स्थित स्वामी बोधराज साहिब की दरबार में सत्संग में जाने लगा। यह थी उनकी स्वामीजी से पहली मुलाकात।

श्री मुकेश भाग्या जी की माता श्रीमती विमलादेवी स्वामीजी के लिये दलिये का भात बनाती थी और वे हर रविवार उसे स्वामीजी के लिये पुष्कर आश्रम में ले जाते थे। कितना बड़ा सौभाग्य प्राप्त था इस परिवार को विशेषरूप से उनकी श्रद्धेय माताजी को जो उनके हाथ का बना हुआ दलिया प्रभू स्वरूप स्वयं स्वामी हिरदाराम जी खाते थे।

उनके बड़े भाई श्री सुरेन्द्र भाग्याजी अलग ही प्रकृति के व्यक्ति थे। उनमें सभी अवगुण थे। हिप्पियों जैसे बाल रखते थे। सिगरेट, चरस, गांजा, दारू और तो और एक दिन में 20 पैकेट सिगरेट पी जाते थे। चैन स्मोकर थे। वे भी 1974 में स्वामीजी के आश्रम पुष्कर गये। उनके हिप्पी जैसे बड़े बड़े बाल देखकर स्वामीजी नाराज हुये और जब उन्होनें अपने मुखार बिंदु से स्वामीजी को अपनी और अपने 3–4 दोस्तों की आदतों के बारे में बताया तो स्वामीजी सुनकर अवाक रह गये मगर उनके सच बोलने पर बहुत खुश भी हुये। मुझे बचपन की एक कहानी याद आ रही है जो मैंने पढ़ी थी। एक साधू को एक बुरी संगत वाला व्यक्ति मिला, स्वामीजी ने उससे बुरी संगत से दूर रहने को कहा, मगर वह नही माना तब स्वामीजी ने उसको कहा अच्छा एक बात का वायदा करो कभी झूठ नहीं बोलोगे और कोई भी कुछ बात पूछे तो उसे सच बोलोगे। वह व्यक्ति मान गया। वो बोला इसमें कौनसी बड़ी बात है। मैं सच ही बोलूंगा। अब जब भी वह व्यक्ति किसी से मिलता और कोई उससे पूछता कहां से आ रहे हो। तो वह बोलता चोरी करके आ रहा

हूं। सामने वाला बोलता छीःछीः चोरी करके आ रहे हो, हमसे दूर रहो। कभी वह शराब पीकर आता तो बोलता शराब पीकर आ रहा हूं, सामने वाला बोलता इतना गंदा काम क्यों करते हो, कभी वह जुआ खेलकर आ रहा हूं कहता तो लोग उसे कहते कि जुआरी की बीबी पल में हसें पल में रोये, कभी वेश्यागमन करके आता तो लोग उस थू थू कर कहते कितने नीच हो। धीरे धीरे सुनते सुनते उस व्यक्ति को अपने आप से ग्लानि होने लगी और उसकी ग़लत आदतें खत्म होती गई।

जब उसने स्वामीजी को कहा स्वामीजी मेरा अमेरिका जाने का मन है। तो स्वामीजी ने कहा पहले अपने यह हिप्पी कट बाल कटवाओ और यह दारू चरस, गांजा, सिगरेट छोड़ोगे तो तुम्हें वीज़ा मिल जायेगा। सुरेन्द्रजी सुसंस्कारित परिवार के बेटे थे, सिर्फ संगत गलत मिलने के कारण घिर गये थे गंदी आदतों में कहते हैं न कि संस्कार ही परिवार की विरासत होती है। सुरेन्द्र जी ने स्वामीजी के सामने प्रण लिया कि आज से नहीं बल्कि अभी से ही अपने सभी व्यसन छोड़ रहे हैं। उसका ऐसा दृढ़ निश्चय देखकर स्वामीजी भी आश्चर्य चकित रह गये। और सचमुच में ही उन्होंने अपनी बुरी आदतें त्याग दीं और परिणाम यह हुआ कि 2–3 सप्ताह में ही उनका अमेरिका जाने का वीजा आ गया।

श्री सुरेन्द्र भाग्याजी मनमौजी किस्म के व्यक्ति थे। 1975 में उनका प्रेभ प्रसंग महाविद्यालय की एक सहपाठी से शुरू हुआ। प्यार का नाम था गुड्डी, वैसे नाम लता था। वे उससे विवाह करने को आतुर थे मगर उनके परिवार वाले इस रिश्ते को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं थे। उनको सुरेन्द्र के पुराने व्यसनों की जानकरी थी। एक दिन स्वामीजी ने लता जी और सुरेन्द्र जी को पुष्कर एक साथ बुलाया। सुरेन्द्र ने बताया कि कन्या पक्ष वाले शादी की स्वीकृति नहीं दे रहे हैं और हम दोनों का मन दांपत्य सूत्र में बंधने का है। स्वामी जी ने कहा तुम्हारी इसके साथ शादी हो सकती है मगर उसके लिये तुम्हें यह हिप्पी जैसे बालों का त्याग करना पड़ेगा, गंजे हो जाओ। वो बोले स्वामीजी मुझे मंजूर है। उसी समय पुष्कर से स्वामीजी के सान्निध्य में रहने वाले बिहारी नाई को बुलाया गया। सुरेन्द्र ने तो बाल कटवाये, मगर साथ ही मुकेश जी, हरीश, ने भी बाल कटवाये उस समय गुड्डी अर्थात् लताजी आश्रम में मौजूद थीं। उसके बाद कन्या पक्ष वाले भी विवाह के लिये मान गये थे। इस बीच उनके बड़े भाई मोहनजी का रिश्ता हो चुका था। स्वामीजी पहले ही बोल चुके थे दोनों भाईयों की शादी साथ साथ होगी। पहले कन्या पक्ष वाले मान नहीं रहे थे तो मोहन का विवाह 22 नवंबर 1975 को होना तय हुआ। बाद में लता जी के मायके वाले माने तो 25 नवंबर 1975 को 3 दिन बाद ही सुरेन्द्र जी का विवाह हुआ और एक सप्ताह बाद ही वे दिसम्बर 1975 के प्रथम सप्ताह में अमेरिका चले गये। जब वे अमेरिका जा रहे थे तो स्वामीजी ने उनको कहा अपनी माताजी से अपनी रोज कान खिंचाई करवाना और अपने गालों पर चपत भी लगवाना। ऐसा रोज करना। अमेरिका जाने के बाद भी सुरेन्द्र मां से कान खिंचवाई करवाता और गालों पर तमाचा लगवाता था।

मुकेश जी हर शनिवार की शाम को अजमेर से पुष्कर जाते थे और स्वामीजी के आश्रम में ही रहते थे तथा रविवार की शाम या सोमवार की सुबह वे वापस आते थे। स्वामीजी के सान्निध्य में रहते हुये उन्होंने दूसरों से किस तरह व्यवहार करना चाहिये, भक्ति की विधि, सात्विक ज्ञान एवं अनेक सुसंस्कार ग्रहण करने का प्रयास किया। वहां पर वे आश्रम में झाड़ू लगाना, बर्तन मांजना, कपड़े धोना, खाना बनाना, स्वामीजी के पैर

दबाना भी सीख गये। आश्रम की साफ सफाई और बात करने का सलीका भी वहां रहते हुए सीख गये। आश्रम में रहने के तौर तरीके, स्वामीजी की सेवा कार्यो की जानकारी एवं प्रशिक्षण सिद्धभाऊ की सद्भावना के बिना संभव ही नहीं था और उनका वात्सल्य भरा व्यवहार, मेरे द्वारा गल्तियों को वे नजर अंदाज करते हुये अपने ऊपर ले लेते थे, यह बात मैं चाहकर भी भूल नहीं पाता। नवंबर 1979 में मुकेश जी की स्वामीजी के आशीर्वाद से नौकरी लग गई। टोंक (राज.) एवं चितौड़गढ़ में उनकी पोस्टिंग रही। टोंक और चितौड़गढ़ में रहते हुये वे अपने विचार सिद्धभाऊ के माध्यम से स्वामीजी के समक्ष रखते रहते थे। उनके मन में धीरे–धीरे वैराग्य की भावना प्रबल हो रही थी। समय समय पर स्वामीजी का आशीर्वाद और मार्गदर्शन उनको मिलता रहता था। 1 दिसंबर 1980 को उनका स्थानांतरण अजमेर हो गया। मां ने कहा जाकर देख आओ वे वहां गये और जाकर समस्या का समाधान कर दिया। बाद में मां ने उनकी बेटी का हाथ मुकेश के लिये मांगा थोड़ी नानुकर के बाद वे तैयार हो गये। स्वामीजी वैसे तो मजाक में सबको कहते रहते थे मुकेश शादी नहीं करेगा। उनकी नानुकर की बात जब स्वामीजी तक पहुंची तो स्वामीजी ने कहा वे स्वयं आकर रिश्ता पक्का कर जायेंगे और ऐसा ही हुआ। यह सगाई 1981 में और विवाह 1 नवंबर 1985 में धूमधाम से हुआ। उनकी शादी समारोह में सिंधी जगत की कोकिला श्रीमती कमला केसवानी का संगीत कार्यक्रम अजमेर क्लब में हुआ। स्वामीजी भाई के 10 मिनट देरी से जाने के कारण बस से ही पुष्कर से निकल गये थे बाद में भाई उनको बस से उतारकर कार में विवाह स्थल पर लाये थे। पं. भगवानदास शास्त्री जी विवाह संपन्न कराने वाले थे स्वामीजी के कहने पर 2 घण्टे तक पाणिग्रहण संस्कार के विधि–विधान कराते रहे और स्वामीजी वहां आशीर्वाद देने के लिये बैठे रहे।

स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए उन्हें पहले पुत्र रत्न की प्राप्ति का आशीर्वाद दिया था उन्हें 1988 में पुत्र रत्न बाद में 1993 में बिटिया वरदान स्वरूप मिली।

सन् 1977 में जब वे अजमेर के पोलीटेकनिक कालेज से सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कर रहे थे तो वहां उसमें स्ट्राइक हो गई। उस समय उन्हें 25 दिन लगातार पुष्कर आश्रम में रहने का सौभाग्य मिला। उनकी दाढ़ी भी बड़ी हो गई थी तब उन्होंने मुकेश जी को योगी मुकेश का नाम दिया। मुकेश जी 1989 में अजमेर से जयपुर आ गये और वहां पर सेवा कार्यो की ऐसी अलख जगाई जो आज भी जारी है।

अक्टूबर 1991 में ग्राम बासंको के नायला गांव में पहला कैम्प लगा आपरेशन शासकीय अस्पताल में किये गये थे। डा.सुन्दरलाल आहूजा के आग्रह पर पहला नेत्र चिकित्सा शिविर लगा। आज वहां पर बहुत बड़ा सेवा केन्द्र है जहां नेत्र चिकित्सा शिविर, यूरोलाजी शिविर लगते रहते हैं। वहां एक बहुत बड़ा कम्प्यूटर सेंटर भी है। बाद में रामकरण शर्मा सरपंच ग्राम डोडाचोर 1500 गज जमीन दान में दी जो नायला से 3 कि.मी. अंदर थी। पुष्कर आश्रम में कुएं का जलस्तर कम हो गया था तो वहां पर 8–10 बोरिंग किये गये अथाह जल स्त्रोत की प्राप्ति हुई।

स्वामीजी - आनन्द की अनुभूति

श्री घनश्याम बूलचंदानी
पूर्वसचिव, शहीद हेमूकालाणी एज्यूकेशन सोसायटी,
संत हिरदाराम नगर
मो. 7987121044

श्री घनश्याम बूलचंदानी जी की बहन पूज्य कान्ता बूलचन्दानी, नवयुवक परिषद संत हिरदाराम नगर, में भाऊ आइलदास हेमनानी द्वारा संचालित गुरुमुखी कक्षा में गुरुमुखी सीखने के लिये आती थी। वहां गुरमुखी के साथ ससुराल में कन्याएं कैसे सामंजस्य बिठायें इस बात का ज्ञान भी दिया जाता था। उस समय मैं नवयुवक परिषद में सक्रिय थी। वे कभी कभी हमारी टायपिंग इंस्टीट्यूट की इंचार्ज और मुझे गुरुमुखी यां गुरुवाणी से जोड़ने वाली मेरी बहन पदमा आहूजा से मिलने आती थीं जो उनकी सहेली थी जिन्हें मैं गुरु के रूप में देखता हूं। वहां से बहन कान्ता से घनिष्ठता बढ़ गई।

परिषद में उनको नानक हेमनानी ने जोड़ा। क्योंकि बहन कान्ता और नानक हेमनानी कॉलेज में द्वितीय वर्ष में साथ साथ पढ़ते थे। नानक हेमनानी परिषद में चलने वाली कोचिंग कक्षा में बच्चों को पढ़ाते थे। उस समय ये कक्षायें निःशुल्क संचालित होती थीं। तो बहन कान्ता ने उनको कहा वे भी बच्चों को पढ़ाने के लिये तैयार हैं। और उनको कक्षा के शिक्षक रूप में काम मिल गया। वे पूर्व में अपने घर में ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती थीं। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही सुन्दर, देवी तुल्य था। हमेशा चेहरे पे मोहक मुस्कान, देवियों जैसा तेज। वै सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति थीं। अनायास ही मेरे हाथों ने झुककर उस देवी के पांव कब छूने शुरू कर दिये पता ही नहीं पड़ा। उनके द्वारा ही उनके बड़े भाई श्री घनश्याम बूलचंदानी को परिषद में पढ़ाने का दायित्व दिया गया। वे स्टेट बैंक में जाब करते थे और हाल ही में बाहर से ट्रांसफर होकर आये थे। उनकी दो तीन वर्ष में ही शादी हो गई मगर वे एक ऐसा नायाब हीरा सेवा के क्षेत्र में जोड़ गई जो 1992 से 2018 तक लगातार 26 वर्ष तक अनवरत सेवा ड्यूटी से पहले और बाद का हर पल उन्होंने सेवा में लगा दिया।

श्री घनश्याम बूलचंदानी जी अभी भी स्टेट बैंक में कार्यरत हैं। उनकी बेटी डॉक्टर और बेटा चार्टर्ड एकाउंटेंट है। उनकी सहधर्मिणी तो साक्षात देवी स्वरूपा हैं, घर को स्वर्ग बनाने वाली। गुरवाणी में उनका अटूट विश्वास है। जब घनश्याम जी सेवा कार्य के कारण घर पर समय नहीं दे पाते थे तो घर और बच्चों का दायित्व उन्होंने बखूबी संभाला। घनश्याम जी तो सबेरे 7 बजे घर छोड़ देते थे और रात्रि 9 बजे के बाद ही घर पहुंचते थे। उन पर सेवा का जुनून सवार था।

जब मैंने उनसे स्वामीजी के बारे में वार्तालाप शुरू किया तो बातें निकलती गई। उनका जीवन दर्शन वास्तव में अद्भुत था। उन्होंने बताया कि...

जहां भी जिस स्तर की भी सेवा का मौका मिले हमें उस मौके को गंवाना नहीं चाहिये। हमारे कर्म करने से किसी का भला होता है तो वह सेवा है और नहीं होता तो वो सेवा नहीं है। जिसकी हम सेवा कर रहे हैं उसे भी लगना चाहिये, महसूस होना चाहिये कि इस व्यक्ति ने मेरा भला किया है यदि उसको नहीं लग रहा है तो हमारी सेवा व्यर्थ है। वे बोले मुझे अनेक लोग मिले जो गुपचुप तरीके से बगैर नाम, बगैर प्रतिफल की

इच्छा किये हुये कार्य कर रहे हैं। हमारी सेवा से किसी को लाभ हुआ है तो हमें उसका श्रेय लेने की जरूरत नहीं है। यह सोचना गलत है कि मैं नहीं होता तो इसकी समस्या का समाधान नहीं होता। उसका समाधान तो प्रभू ने रच रखा था। हमको प्रभू ने निमित्त बनाया कि हम उसकी सेवा कर सकें। मैं नहीं होता तो प्रभू और किसी को निमित्त बनाता सेवा करने के लिये। भगवान राम को भी लंका को विजय प्राप्त करने के लिये वानर सेना का सहारा लेना पड़ा था न।

उन्होंने कहा अगर किसी को यज्ञ करना है तो उसके लिये भी उसे देवताओं का आव्हान करना पड़ता है, यज्ञ कुंड बनाना पड़ता है, यज्ञ के लिये हवन सामग्री का संकलन करना पड़ता है तब जिसकी श्रद्धा होती है वह आता है और यज्ञ की वेदी में अपने सामर्थ्यानुसार आहुतियां डालता है।

उन्हें शैगांव (महाराष्ट्र) में श्री गजानन महाराज द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यो को देखकर आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके द्वारा संचालित स्कूलों, महाविद्यालयों, चिकित्सा क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किये जा रहे हैं। प्रतिदिन 15–20 हजार व्यक्ति उनकी समाधि के दर्शन करने आते हैं। छुट्टी के दिन तो यह संख्या लाखों में होती हैं।

उन्होंने बताया कि वहां का आनंद सागर 150 एकड़ में फैला हुआ है। वहां हर प्रवृति के लोगों के लिये व्यवस्था है। मनोरंजन से लेकर आध्यात्मिक गतिविधियां वहां पर संचालित होती हैं। वहां एक पिकनिकि स्पॉट विकसित हो गया है। जिनकी आस्था होती है आते हैं। यही हाल शिर्डी के सांईबाबा का है। सेवा के प्रवाह में लोग आते जायें, नये नये लोग जुड़ते जायें तो वह प्रवाह नदीं जैसा होता हैं जो निरंतर प्रवाहित होती रहती है। अलग अलग स्त्रोंतों से आने वाले विचार जब सेवा कार्य में जुड़ने को लालायित हों और उनको समाहित करने की आतुरता हो, दिल खोल कर स्वागत हो तो वहीं गंगा, यमुना, सरस्वती बन जाती है और यदि उसे रोक दिया जाये मिलने से तो वह तालाब बन कर रह जाती है। कभी कभी तो वो तालाब आचमन के लायक भी नहीं रहता।

घनश्याम जी स्वामी विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी गये थे। उनके 21 स्कूल पूरे देश में संचालित होते है। वहां के सेक्रेट्री श्री वासूदेवन जी ने उनको कहा कभी आपको भी मौका मिले तो पुणे के ज्ञान प्रबोधिनी नाम वाले स्कूल में जरूर जाना। ज्ञान प्रबोधिनी स्कूल की उन्होंने बहुत तारीफ की। ज्ञान प्रबोधिनी वह स्कूल है जहां से प्रति वर्ष राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में चयनित होने वाले छात्रों के 50 प्रतिशत छात्र आते हैं। क्या तो उनकी शिक्षा पद्धति है जो वास्तव में अनुकरणीय है। आज के थल सेनाध्यक्ष भी उसी स्कूल की देन है। उन्होंनें घनश्याम जी से कहा वहां जाकर उनके सेवा व्रतियों से मिलना, उनकी कार्य पद्धति का अवलोकन करना। ज्ञान प्रबोधिनी स्कूल पुणे के शुक्रवार पेठ में स्थित है। आपको आनंद की अनुभूति होगी। आनन्द क्या है? आनन्द वह है जो हमें अपने कर्मों के प्रतिफल के रूप में मिलता है। हर व्यक्ति अलग अलग तरीके से अलग अलग कर्म करता है और आनन्द की अनुभूति करता है।

उन्होंने बताया कि वे कन्याकुमारी 40 लोगों का ग्रुप लेकर साधना शिविर में गये थे जो 1 अक्टूबर 1996 से 10 अक्टूबर 1996 तक था। यह साधना शिविर परिषद के लिये विशेष तौर पर लगाया गया था। वहां पर यह कहा गया कि परिषद बच्चों को अलग–अलग स्कूलों में न भेजकर अपना पाठ्यक्रम तैयार करके अपना स्कूल खोलकर इन बच्चों को पढ़ाये तो सार्थक परिणाम आयेंगे। उसी संदर्भ में ज्ञान प्रबोधिनी स्कूल का नाम सामने आया था।

ज्ञान प्रबोधिनी स्कूल एक पांच मंजिला भवन में लगता था, उनके स्कूल की चौड़ाई बहुत कम थी मगर पांच मंजिला होने के कारण 2 हज़ार विद्यार्थी उसमें पढ़ते थे। मगर उनके पास खेलने के लिये 1 इंच की भी जगह नहीं थी। मैंने उनसे पूछा यहां शारीरिक विकास गतिविधियों और खेलों के लिये तो जगह ही नहीं है। उन्होंने कहा जुनून होना चाहिये। हमने अपने बच्चों के लिये जो शारीरिक विकास के लिये किया है उसके लिये किसी मैंदान की आवश्यकता ही नहीं है। फिर भी हमने आसपास जो संसाधन उपलब्ध हैं उनको किराये पर ले रखा हैं वहां ये गतिविधियां करवाते हैं। तब वे हमें एक स्कूल में ले गये। उसका भवन जीर्ण अवस्था में था, वह स्कूल 2–3 एकड़ में फैला हुआ था। बड़ा सा खेल मैदान था। शहर के मध्य भाग में था। पता पड़ा कि यह वही स्कूल है जिसकी स्थापना महान क्रांतिकारी वीर बाल गंगाधर तिलक ने की थी। कभी यह पूना का नंबर 1 स्कूल था। ट्रस्ट द्वारा संचालन होता था। मगर ट्रस्टियों के अपने अपने अहंकार के कारण यह स्कूल आज कबूतर खाना बन गया है। बाल गंगाधर तिलक का सपना जो स्कूल से राष्ट्रवादी, गुणवान छात्रों को बनाने का था, सपना ही रह गया। ट्रस्टियों की खींचतान के कारण अभिभावकों का मोह भंग हो गया। आज परिणाम यह है कि स्कूल बंद पड़ा है। मुझे उनकी बातें सुनकर बैरागढ़ के कुछ स्कूलों की तस्वीर आँखों के आगे नाचती नजर आई जो कभी नंबर 1 पर थे आज वे पिछड़ गये हैं। एक तो बंद होने की स्थिति में है।

उन्होंने बताया कि ज्ञानप्रबोधिनी स्कूल देखने के बाद वे भोपाल आये और उसके बाद उनको अपने माता–पिता, धर्मपत्नी, बच्चो के साथ अजमेर हालाणी दरबार जाना था तो वे अजमेर गये और वहां सुनीलजी पहले ही पुष्कर पहुंच चुके थे। उन्होंने स्वामीजी को वहां का सारा वृतांत बता दिया था। स्वामीजी से पुष्कर आने की आज्ञा मांगी तो उन्होंने 20 अक्टूबर 1996 प्रातः काल 10 बजे आने का समय दिया। वे सपरिवार दर्शन करने कुटिया पर गये। यह पहला मौका था जब वे सपरिवार वहां पर गये थे। तब स्वामीजी ने पूछा कि आप विवेकानन्द केन्द्र गये थे तो क्या अच्छा लगा तब उन्होंने बताया कि उनका विद्यालयों का संचालन सबसे अच्छा लगा। 22 स्कूल चलते हैं। स्वामी विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी के अन्दर भी एक स्कूल था जिसकी संचालिका बहन निवेदिता जी थीं जिन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत ले रखा था वे राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ की अद्भुत हस्ती एकनाथ रानाडे जी से प्रेरित थी। इनके अधिकतर स्कूल अरूणाचल प्रदेश में हैं वहां पर बच्चों को संस्कार, शिक्षा, भारतीयता का पाठ पढ़ाया जाता है। साथ ही साथ उनमें यह भावना कूटकूट कर भरी जाती है कि स्वयं बनूंगा मगर साथ ही साथ समाज को भी बनाऊंगा। उनके अधिकतर स्कूल ग्रामीण क्षेत्रों में हैं जहां पर उनको खेती बाड़ी की भी शिक्षा दी जाती है। खाद्, बीज, निराई, गुंड़ाई सभी की शिक्षा दी जाती है। कृषि की नई नई तकनीकों का ज्ञान कराया जाता है। उनको मालूम है कि बगैर गांवों के विकास के देश का विकास संभव ही नहीं है। उनको प्रेरित किया जाता है कि वे शिक्षा पूरी कर अपने गांव में जाकर अपने साथ साथ गांवों को भी विकसित करें।

स्वामीजी सुनकर आनंदित हुए। उन्होंने कहा आगे क्या? तो उन्होंने कहा हम भी एक स्कूल खोल सकते हैं। तब स्वामीजी ने कहा तुम संचालित करोगे? मैंने कहा सब मिलकर कार्य करेंगे। सब मिलकर कार्य करेंगे सुनकर स्वामीजी नाराज हुये और बोले यहां पर सब लोग हैं क्या? यहां तो सिर्फ तुम ही हो तुम अपनी बात करो। तुम संचालित करोगे? तो मैंने उनसे कहा जैसी आपकी आज्ञा होगी, आशीर्वाद देंगे तो जरूर करूंगा।

बोले ठीक है जाकर रूपरेखा बनाओ उसके बाद स्वामीजी ने उनके माता पिता, सहधर्मिणी तथा बच्चों से भी बात की।

संतनगरी में आकर विद्याालय के बारे में चर्चायें शुरू कीं। कुछ मॉडल बायलाज लेकर, कुछ अपने जोड़कर बायलाज का निर्माण किया। स्वामी विवेकानन्द एज्यूकेशन सोसायटी रखने का विचार किया मगर वह नाम पहले से पंजीकृत था तो बाद में दूसरे नाम पर विचार करने को कहा गया। 25 नवंबर 1996 को इस संदर्भ में भगवान कला केन्द्र पर टी.वी रिपेयरिंग रूम के अंदर मीटिंग की गई मीटिंग में कुल पांच लोग ही थे। उस समय वे परिषद के सचिव एवं भगवान कला केन्द्र के प्रभारी थे। मीटिंग में पांच लोग उपस्थिति थे। सोसायटी का गठन हुआ। उस वर्ष रक्षा सिसोदिया जी को शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिये राष्ट्रपति पुरस्कार दिया गया था। उनको सोसायटी का प्रथम अध्यक्ष बनाया गया। हीरानन्द ज्ञानचंदानी, महेश दयारामानी, कन्हैयालाल रामनानी, लोकचंद जनियानी, जीवन आसवानी एवं उनको मिला कर 7 लोगों को जोड़ा गया क्योंकि यह न्यूनतम आवश्यक संख्या थी सोसायटी के गठन के लिये। यह उनकी जीवन की स्वामीजी से सब से यादगार मुलाकात थी।

उनका मानना है कि उनकी और उनके परिवार की आज जो स्थिति है वह संतों के आशीर्वाद के कारण ही है। उनका बेटा सीए बन कर बिग 4 कंपनी में मैनेजर के रूप में काम करता है। बेटी भी एमबीबीएस के बाद एमडी कर चुकी है। उसका विवाह अच्छे परिवार में हुआ है। बहू भी संस्कारवान परिवार से है, पढ़ी लिखी है और सुदृढ़ रूप से घर को संभाल रही है। घर में सुख शान्ति है तो स्वामीजी के आशीर्वाद के कारण।

आगे उन्होंने बताया कि 23 मार्च 1997 को शहीद हेमूकालाणी एज्यूकेशन सोसायटी के बैनर तले विद्यासागर पब्लिक स्कूल का प्रारंभ हुआ उस स्कूल की पहली छात्रा के रूप में उनकी बेटी प्रिया बूलचंदानी का फार्म भरा गया। पहले वह संत हिरदाराम नगर के संस्कार सकूल में के.जी–1 में पढ़ती थी। उसे वहां से निकालकर विद्यासागर पब्लिक स्कूल में फार्म नं–1 पर केजी–2 में दाखिला करवाया गया। यह स्कूल के लिये गर्व का विषय हो सकता है कि उसकी पहली विद्यार्थी ने 10वीं में एवं बारहवीं में मेरिट सर्टिफिकेट प्राप्त किया और आज एमएस करने के बाद जेजे हॉस्पीटल बाम्बे में काम कर रही है। उनकी बिटिया ने तृप्ति अग्रवाल कक्षा से कोचिंग कर नीट परीक्षा में 73वीं रैंक प्राप्त की और भोपाल के गांधी चिकित्सा महाविद्यालय से एमबीबीएस किया। गवर्मेंट कोटा की सीट थी। उन्होंने ग्रांड मेडीकल कॉलेज से, जो भारत का पहला मेडीकल कॉलेज था और 1933 में स्थापित हुआ था, अपनी मनपसंद ब्रांच से एमएस किया। वे यह सब स्वामीजी के आशीर्वाद का ही प्रतिफल मानते है।

भविष्यदृष्टा स्वामीजी

श्री विष्णु गेहाणी
निर्देशक साधू वासवानी स्कूल
संत हिरदाराम नगर।
मो. 9893159353

मैं श्री विष्णु गेहाणी जी को तब से जानता हूं जब मेरे दोस्त मुझे मंदबुद्धि समझते

थे। 1965 में गैरतगंज से मैं बैरागढ़ आया था, शहर के तौर तरीकों से अनभिज्ञ था। श्री गेहाणी उस समय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सक्रिय स्वंय सेवक थे। मुझसे 14–15 वर्ष बड़े। मैं 15 वर्ष का किशोर स्वंय सेवक और वे युवावस्था के प्रेरणापुंज। वे नवयुवक सभा द्वारा संचालित ए.टी. शहानी सिंधू माध्यमिक शाला के वर्षों तक निर्देशक रहे और वर्तमान में साधू वासवानी स्कूल के संचालक तथा नवयुवक सभा के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। 86 वर्ष की उम्र में भी उनकी क्रियाशीलता को देखकर मुझे भी लगता है प्रभू मुझे उनकी तरह ऊर्जावान एवं सेवा कार्यो के लिये समर्पित जीवन प्रदान करें ताकि अपने जीवन की अंतिम श्वास तक मैं कर्मशील रहूं। जब मैं बीएचईएल में कार्य करता था तो मैंने अपने डेस्क कैलेंडर के ऊपर एक प्लास्टिक की पट्टी लगाई थी जिस पर एक तरफ स्वामीजी का वाक्य **सुख चाहो तो सुख दो** और दूसरी तरफ **कर्म ही धर्म है** लिखकर रखा था। ये मेरे जीवन के दो मूल मंत्र हैं। श्री गेहाणी ने अपना संपूर्ण जीवन शिक्षा के लिये समर्पित किया हुआ है। उनके निर्देशन में नवयुवक सभा की छात्राओं और छात्रों का जीवन स्तर, बौद्धिक स्तर, शैक्षणिक स्तर, चारित्रिक स्तर बहुत ही ऊंचा दिखता था। वे अत्यंत अनुशासन प्रिय निर्देशक थे। स्कूल में प्रवेश के लिये लोगों की इतनी ज्यादा लालसा थी कि लोग येन केन प्रकरेण स्कूल में बच्चे का प्रवेश करवाने के लिये प्रयत्नशील रहते थे। मेरे बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा भी उन स्कूलों में हुई। जब उनसे मैंने स्वामीजी के बारे में किताब लिखने की बात कही तो उन्होंने कहा मैं अपने विचार आपको लिखित रूप में दूंगा। आज उनका फोन आया और में लपक कर उनसे लिखा लेख लेने जा रहा हूं। बगैर कांट छांट के वह आपके सामने प्रस्तुत करूंगा। वे स्वामीजी के प्रति असीम आस्था रखते हैं। स्वामीजी के दिशा निर्देश पर ही वे नवयुवक सभा के स्कूल के दायित्वों से मुक्त होकर साधू वासवानी स्कूल में गये थे। बैरागढ़ के मध्यम एवं निम्न आय वाले परिवारों के लिये वह स्कूल आज भी आदर्श माना जाता है। उचित फीस, अनुशासन और शिक्षा का सुन्दर स्तर स्कूल की मुख्य विशेषताएं हैं।

मेरा पूरा जीवन समाज के लिए समर्पित रहा है। 65 वर्षों से शिक्षा और समाज सेवा में हूं। 86 साल की उम्र में भी थका नहीं हूं। आप सोचो संतो का मेरे ऊपर कितना आशीर्वाद और कृपा होगी। संतो से मैंने स्मरण, समर्पण तथा सेवा सीखी है। संत जी 1961–62 में बैरागढ़ में जैसे ही आए वैसे ही हम उनसे जुड़ें। मैं कुटिया पर घर से बिस्तर लेकर सोने जाया करता था और नारी शिक्षा एवं विकास– 1967 से जब नवयुवक सभा में प्रौढ़ शिक्षा, बालवाड़ी, नारी शाला, कन्डेन्स कोर्स जैसे मोमबत्ती, अगरबत्ती, पापड़ आदि बनाकर महिलाओं को रोजगार से जोड़ना, ये सब नारी शिक्षा की सीख हमको संतों के प्रवचन से मिली। और 20 लड़कियों को हाईस्कूल परीक्षा में बिठाकर 15 लड़कियों को उत्त्तीण करवाया। जिनको शिक्षा और अन्य सरकारी नौकरियां मिलीं जो अपने आप में एक मिसाल है। जिसने मुझे शिक्षा जगत से जोड़ा।

रामधुनी का महत्व – संतों द्वारा रामधुनी दौलतराम धर्मशाला में लगाई जाती थी जहां हम रात–दिन बेठे रहते थे। जिससे मुझमें सिमरण की भावना पैदा हुई। रामधुनी लगाने वालों को विशेषकर जो प्रातः काल आकर रामधुनी लगाते हैं पुण्य मिलता है तथा पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। मैं पुत्रों के डब्बे भरकर आया हूॅ। संत जी कहा करते थे जो रामधुनी लगाएगा उसे पुत्र रत्न अवश्य प्राप्त होगा। मैं ये इसलिए कह रहा हूँ कि मेरा दामाद खूबचंद हरचंदानी जब रामधुनी लगा करती थी उसमें प्रातः काल 4 बजे उठकर रामधुनी लगाने आया करता था। और कुछ समय के बाद उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

जब ये संतों को मेंने सुनाया वे बड़े खुश हुए और मेरे दामाद को बुलाया और आशीर्वाद दिया। आज मेरा नाती एक बड़ी कम्पनी में कम्प्यूटर इंजीनियर हैं जिसका लाखों रूपये मासिक वेतन है। ये दर्शता हे रामधुनी की महिमा।

ऑखों का अस्पताल खोलना – संत जी द्वारा ऑखों के शिविर लगाए गए। जिसमें स्कूल के बच्चों को मरीजों की सेवा करने के लिए भेजा जाता था। कई सेवा कार्यो से मैं जुड़ा। ब्रिटेन की राजकुमारी सेवा सदन अस्पताल का अवलोकन करने आई थी तब मैरे बच्चों द्वारा भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए थे। जिससे बच्चों और मुझमें सेवा भावना की ललक पैदा हुई।

नवयुवकपरिषद का गठन – आगे चलकर नवयुवक परिषद का गठन हुआ। जिसके जन्म दाता आसूदो लच्छवाणी थे। आज भी उनको मैं प्रणाम करता हूॅ। परिषद द्वारा गरीब बच्चों को गोद लेकर शिक्षा कार्य किया जाता था। जिससे मैं भी जुड़ा तथा मेरे स्कूल के कई शिक्षक परिषद के बच्चों से जुड़े। और परिषद के जितने भी कार्यक्रम हुआ करते थे नवयुवक सभा के स्कूल में हुआ करते थे। स्कूल के पास में ही दौलतराम धर्मशाला थी जहॉ रामधुनी लगती थी, जिसमें भी स्कूल के माध्यम से पूरा सहयोग दिया जाता था।

स्कूल खुलवाने संबंधी – समय ने करवट बदली। संतों ने मुझे बुलाया और कहा कि लड़कियों के लिए स्कूल खोलो क्योंकि पहले केवल सिन्धु मिडिल स्कूल हुआ करता था। 1974 में ए.टी. शहानी के नाम से लड़कियो के लिए स्कूल खोला गया। जिसके लिए दानवीरों के माध्यम से स्कूल को खड़ा करने में संतों का आशीर्वाद मिलता रहा। संत स्वयं मुम्बई हमको लेकर चला करते थे। जैसे किशनचंद टी. शहानी, दादी लखानी, दादा विक्योमल आदि दानवीरों से हमें मिलवाते थे। परन्तु आठवीं के बाद जब लड़के सिन्धु मिडिल स्कूल से अन्य स्कूलों में जाने लगे तो संतों ने मुझे फिर बुलाया और कहा कि लड़कों के लिए भी स्कूल खोलें क्योंकि उनको अन्य स्कूलों में पढ़ाई तो मिलेगी परन्तु संस्कार, सेवा नहीं मिलेगी। संतो ने मुझे 50,000 रूपये आशीर्वाद के दिए और कुछ समय के बाद के.टी.शहानी के नाम से लड़कों के लिए स्कूल खोला गया तथा संतजी के.टी. शहानी स्कूल का अवलोकन करने भी चले थे।

नवयुवक सभा के स्कूल में प्रवेश के लिए बहुत ही भीड़ लगती है। और कई बच्चों को दाखिला नहीं मिल पा रहा था। 1988 में मेरी बड़ी बेटी की शादी होने वाली थी। मेरे परिवार की आर्थिक हालत बहुत ही कमजोर थी इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न जो बच्चे वापस लौट रहे हैं उनको दाखिला दे दी जाए। इसलिए मैंने पड़ोस के भवन में 6 कमरे किराए पर लिए और अपना निजी स्कूल खोलने की योजना बनाई। विश्वास करो मुझे आधे घण्टे में 300 बच्चे मिल गए और काउंटर पर 60,000 रूपये डोनेशन आ गया। और अब मुझे लगा कि मैं अपनी बेटी की शादी अच्छे से करवा पाऊंगा। परन्तु एक–दो दिन के बाद पुनः जब मैं संतों की कुटिया पर गया तो संतों ने मुझसे कहा कि मैने सुना है कि तुमने स्कूल खोला है तो मैंने केवल हाँ बोला। संतजी शांत मुद्र में बैठे रहे और थोड़ी देर के बाद कहा कि गेहानी तुम अपना स्कूल नही खोल सकते। क्योंकि स्कूल खोलने से तुम्हें केवल पैसा मिलेगा। परन्तु इज्जत, मान–सम्मान तुम्हें नहीं मिलेगा। तुम समाज के लिए पैदा हुए हो पैसा तुम्हारे पुत्र कमाएगें। वो जहाजों में घूमेंगे। श्रद्धेय सिद्ध भाऊ को बोला इनको मिश्री दो और जाने दो। मैने आते से ही 60 हजार रूपये नवयुवक सभा के खाते में जमा करवा दिए और 300 बच्चों को सिंधु मिडिल सकूल के स्कालर रजिस्टर में

करवा दिया और फिर मैंने अपना निजी स्कूल खोलने के लिए मुड़कर भी नहीं देखा।

संतों की भविष्यवाणी देखिए कि मेरा बड़ा बेटा एग्ज़ीक्यूटिव ईंजीनियर है दूसरा हाँगकाँग में है, तीसरा वकील है और चौथा लॉस एंजेलेस अमेरिका में कम्प्यूटर इंजीनियर है।

गांधीनगर में विक्योमल सर्राफ स्कूल खोलना – संतों ने मुझे पुष्कर से फोन किया कि गाँधीनगर में जो सरकारी स्कूल है वो केवल 10वीं तक है। इसलिए लड़कियाँ बैरागढ़ में ए.टी.शहानी और कन्या उ.मा. विद्यालय में अध्ययन करने आती हैं जिसके कारण उनका समय बर्बाद होता है और बस का खर्चा भी करना पड़ता है तथा अन्य असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। जिससे कई लड़कियाँ पढ़ाई छोड़ रही हैं। इसलिए तुम गाँधीनगर जाओ और वहाँ झूलाघर है उसमें लड़कियों के लिए 9वीं से 12वीं तक स्कूल खोलो। जब मैं गांधीनगर गया तो मैंने देखा कुछ झूले लगे हुए हैं और दो चार कमरे बने हुए हैं कुछ लोग कह रहे थे यहाँ पर मंदिर आदि बनाने की योजना है। मैं आश्चर्य में पड़ गया कि इस स्थान पर 9वीं से 12वीं तक स्कूल कैसे खुलेगा जबकि मान्यता का नियम है कि प्राथमिक शाला पहली से पांचवीं तक माध्यमिक शाला छठवीं से आठवीं तक और हायर सेकण्ड्री नवीं से खोला जाता है। मेरे पास कुछ भी नहीं था केवल संतो का आशीर्वाद था। मैं चलता गया और अधिकारियों से बात की उन्होंने कहा ऐसा होता ही नहीं है कि नवीं से बारहवीं तक मान्यता मिले फिर भी चमत्कार हुआ। और नवीं से बारहवीं तक मान्यता मिल गई। मैं 10हजार रूपये वेतन आदि के लिए सुधार सभा साधु वासवाणी स्कूल से ले जाता था तथा जीप में के.टी.शहानी का स्टॉफ ले जाता था। इस तरह स्कूल चलता गया। बच्चे वार्षिक परीक्षाएँ देने ए.टी.शाहनी बैरागढ़ में आते थे। समय के साथ नर्सरी से विद्यालय खोला गया और हम घर–घर गए, टीसीयां इकट्ठी कीं और हजारों बच्चों को विद्यालय में पढ़ाना शुरू किया। स्कूल का नाम लक्ष्मीदेवी विक्योमल सर्राफ रखा गया। इस स्कूल में मैं करीब 10 साल रहा।

दीन दयाल तथा साधु वासवानी कॉलेज कैसे खुला – नवयुवक सभा के.टी.शाहनी में करीब 3 हजार विद्यार्थी अध्ययनरत थे। उससे लगा हुआ मीट मार्केट हुआ करता था। जिसके कारण बदबू आदि आती थी। मैं 2000 बच्चों का जुलूस निकालकर कलेक्टर ऑफिस में गया और कलेक्टर ने बच्चों की बात सुनने के बाद दूसरे दिन मीट मार्केट हटवा दिया और शासन द्वारा मीट मार्केट की जमीन नवयुवक सभा को दे दी गई। इसके साथ ही स्कूल के पीछे एक लकड़ी का टाल हुआ करता था जिससे भी बच्चों की पढ़ाई को देखते हुए वह जमीन भी शासन द्वारा नवयुवक सभा को दे दी गई।

अतः मैं और मेरे साथ नवयुवक सभा के उपाध्यक्ष आदरणीय के.एल.हांडा संतों के आशीर्वाद लेने पुष्कर अजमेर गये। यह घटना करीब 1990 की है और संतों ने जब पूछा कैसे आना हुआ तो हमने पूरा घटनाक्रम बता दिया कि कैसे हमें वहाँ जमीन मिल गई है और हम वहाँ स्कूल खोलना चाहते है। थोड़ी देर बाद संतो ने कहा स्कूल नहीं लड़कियों के लिए कॉलेज खोलो। लड़कियों को भोपाल बसों आदि में जाने के कारण परेशानी का सामना करना पड़ता है क्योंकि बैरागढ़ में लड़कियों के लिए शासकीय अशासकीय कोई भी कॉलेज नहीं है। संतों ने कहा कि लड़कियाँ पढ़ेगी तो दो परिवार पढ़ लिख जायेंगे और उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। हम दोनों आश्चर्य में पड़ गये कि कॉलेज कैसे खुलेगा तो संतों ने कहा कि कॉलेज तुम नहीं खोल रहे हो खोलने वाला कोई और वह है ईश्वर। तुम सब निमित्त मात्र हो। अतः उन्होंने एक सप्ताह के लिए पूजा करने के लिए

कार्यक्रम बनाकर दिया। जैसे गुरू ग्रंथ साहिब का पाठ, गीता का पाठ, सुखमनी का पाठ, हनुमान चालीसा का पाठ और रामायण का पाठ इसी प्रकार पूरा सप्ताह हमने धार्मिक कार्यक्रम किए। उसके बाद संत जी जब बैरागढ़ में पधारे तो दीन दयाल कॉलेज के नाम से संतो के द्वारा भूमि पूजन किया गया। जिसमें मंत्री आदरणीय बाबूलाल गौर तथा अन्य गणमान्य उपस्थित थे। उस समय देखते–देखते संतों के आह्वान पर करीब 25 लाख की धनराशि इकट्ठी हो गई उसके बाद संतो ने कार्यकर्ताओं को विदेश यात्रा पर भेजा और धनराशि इकट्ठी की गई और दीनदयाल महाविद्यालय के नाम से भव्य इमारत खड़ी की गई। जिसमें हजारों लड़कियां पढ़ती हैं। यह नगर के लिए शान और गर्व की बात है। उसके साथ ही करीब 1980 के आसपास आनन्दमयी माँ वन ट्री हिल्स पर दातार सिंह द्वारा टेकरी के पास जमीन दी गई जिसके पास एक छोटा सा हाल था। सतों की कृपा दृष्टि देखिए उन्होंने मुझे बुलाया और मुझे भी उनके साथ गिट्टी की तगाड़ी उठाने और श्रमदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और हम उस कॉलेज के निर्माण में निमित्त बने। इस तरह यहाँ साधु वासवानी महाविद्यालय की भव्य इमारत बनाई गई जो साधु वासवानी महाविद्यालय के नाम से जानी जाती हैं और संत नगर के लिए गौरव का कारण है।

साधु वासवानी स्कूल - 1991–92 में संतों ने मुझे फिर कुटिया पर बुलाया जिसमें नवयुवक सभा और सुधार सभा के सदस्य भी उपस्थित थे। उनके सामने संतों ने कहा कि अब साधु वासवानी स्कूल विष्णु गेहानी संचालन करेगा। मैं चाबी इनको सौंप रहा हूँ। और जब तक ये रहेगा इसे कोई कुछ नहीं बोलेगा। और संतों ने सबके सामने मुझे साधु वासवानी स्कूल की चाबी दी और सिद्ध भाऊजी मुझे यहॉ छोड़कर गए। इसी बीच में जब ये राधा मंघन भवन और नंदवानी भवन बनाने की योजना बनी तो संतों ने मुझको बुलाकर कहा कि तुम रहोगे तो मैं ये निर्माण कार्य करवाऊंगा। और मैंने संतों के इस सेवा कार्य को करने के लिए हामी भरी वर्ष 2000 के बाद में साधु वासवानी में आ गया। आज मुझे यहां 22 साल हो गए हैं और श्रद्धेय सिद्ध भाऊजी ने मुझे फ्री हैन्ड छोड़ा जिस कारण मैं कुछ कर पा रहा हूँ। गलतियाँ भी हुई होंगी फिर भी संतों के आशीर्वाद से जो मुझसे बना साधु वासवानी स्कूल के लिए किया। इस स्कूल में 1700 बच्चे है। साधु वासवानी स्कूल संत नगर के गरीब बच्चों के लिए वरदान है। 9 बच्चों को प्रावीण्य सूची में लाकर आज ये स्कूल संत नगर के पहले पायदान पर खड़ा है। जो स्कूल संस्कारों के साथ रामधुनी, देशप्रेम, खेलकूद और मंच देने के साथ ही अच्छा इंसान बनाने का संकल्प लेकर चलता हो तो वह स्कूल अवश्य अग्रणी रहेगा।

काले कपड़े व छोटे बाल रखने के संबंध में - संतो ने एक मुहिम चलाई थी जिसमें उन बच्चों को जिनके बाल बड़े हुआ करते थे। उनको छोटे बाल करवाने के लिए कहा करते थे कभी–कभी कुटिया में नाई को बुलाकर भी बच्चों के बाल छोटे करवाये जाते थे। मैने भी समय–समय पर तीन बार मुंडन अर्थात् छोटे बाल करवाये। इसके पीछे संतों का यही कहना था कि तुम प्राचार्य हो इसलिए तुम्हारा प्रभाव बच्चों के ऊपर अधिक पड़ेगा और वे बाल कटवाने में रूचि लेंगे।

काले कपड़ों के बारे में एक बार मार्च 2006 में जब मेरे बच्चे की शादी हो रही थी जब उनके पास अपने बच्चे को आशीर्वाद लेने के लिए निमंत्रण कार्ड देने गए तब संतों ने कहा पहले तुम पति–पत्नी स्कूलों में जाओ फिर मुझे कार्ड देना। संत जी कहा करते थे कि सफेद कपड़ों में पवित्रता, सौम्यता होती है। यदि बेदाग जीवन जीना है तो सफेद

कपड़ों से सीख मिलती हैं क्योंकि वे कपड़े बेदाग हुआ करते हैं। इसीलिए स्कूलों से रेलियाँ निकालते हो, तख्तियाँ तथा बैनर बनवाकर नारे लिखते हो कि सफेद कपड़े पहनो तथा काले कपड़ों का बहिष्कार करो जिससे जागरूकता बच्चों और अभिभावकों में पैदा हो। इस प्रकार के कार्यक्रम कुटिया पर भी हुआ करते थे। संत जी स्वयं अपने श्री मुख से कहते थे कि कपड़ों का प्रभाव सभी पर बहुत पड़ता है अतः कई लोगों ने अपने घरों में से काले कपड़े निकाल दिए तथा सफेद कपड़े पहनना शुरू किए।

अलहलोकी फकीर – संत जी मुझे समय–समय पर कुटिया में बुलाकर राजनेताओं, विधायकों समाज सुधारकों तथा गणमान्य व्यक्तियों को बुलाने के लिए कहा करते थे। एक बार उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि के.एल.हांडा जो उनके परम शिष्य थे उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया है इसलिए मुझे बैठक में चलना है। मेरे पास एक स्कूटी हुआ करती थी। संतों ने कहा इस पर बैठ जाए। परन्तु मुझे डर होने लगा। मैंने संतो को कहा कि मैं 5 मिनट में कार ले आता हूँ। और उसमें चलते हैं मुझे मालूम था बैरागढ़ में तीन लोगों के पास एंबेसडर कार हैं और मुझे कोई भी संतो के नाम पर कार दे देगा। परन्तु संतो ने कहा चलो गेहानी पैदल ही चलते हैं। और ओल्ड बी–वार्ड सेवा सदन रोड से उनके घर पहुँचे। बैठक से उठने के बाद वापस भी संत उसी मार्ग से कुटिया तक पैदल आए। मैंने पहली बार देखा अलहलोकी फकीर कैसे होते है।

परिवार पर संत कृपा – संतों की कृपा मेरे और मेरे परिवार पर हमेशा बनी रही जब कभी संत जी मुझे किसी कार्यक्रम में देखते थे तो मंच पर बुलाकर कुछ बोलने के लिए कहते थे। उसके साथ मुझे और मेरी पत्नी को बुलाकर लाखों रूपए देते थे कि जाकर गरीबों में बांट दो। इस पुण्य कार्य से संतों ने हमें और हमारे परिवार को जोड़ा। मेरी बड़ी बच्ची की शादी दिसम्बर 1988 में हो रही थी तो मैं कुटिया पर संतों से बच्ची को आशीर्वाद दिलाने तथा चरण घुमाने के लिए प्रार्थना करने के लिए गया तो संत ज़ी ने आने की हामी भरी। उसके बाद संत सिद्ध भाऊ और मैं कार में घर के लिए रवाना हुए तब संतजी बी वार्ड में आहूजा परिवार के घर थोड़ी देर के लिए रूके। और उस परिवार को उन्होंने आशीर्वाद के रूप में कुछ धनराशि दी। कार में बैठने के बाद संतो ने सिद्ध भाऊ से कहा सिद्ध ये लोही चने हैं। इसको चबाना बड़ा मुश्किल है इसलिए दान में मिले हुए पैसे का उपयोग सेवा कार्यो में करना चाहिए।

कुटिया में संत जी मुझे कई बार बुलाया करते थे। एक बार कुटिया में कोई नहीं था, संतों ने मुझे अपने साथ बिठाया और खाना खिलाया। खाना फीका था और तेल भी नहीं था। उस समय मुझे संतो ने कहा कि तुम स्कूल खोलो उनका निर्माण करो और समय के साथ उनको छोड़कर दूसरे स्कूलों मे चले जाओ। सिंधी में कहावत है **अड़ि एं छड़ि** (बनाओ और छोड़ो)। उन्होंने कहा कि तुम अपना नैतिक पतन न होने देना और पैसे कमाने की लालच मत करना। तुम अपने लक्ष्य में सफल होगे। आज मैं समझता हूं संतों का कहना कितना सत्य निकला। 55 साल से मैं शिक्षा जगत से जुड़ा हूं जब कभी भी नैतिकता और पैसे कमाने के लुभावने अवसर आते थे और मन विचलित हो जाता था तो संतो का स्मरण करता था क्योंकि मैं तो साधारण इंसान था। संतों के आशीर्वाद से मैं अपने मार्ग से कभी नहीं भटका। इसलिए ऐसे संत को, जिन्होंने मेरा और मेरे परिवार का जीवन सफल बनाया शत–शत नमन।

जीव सेवा ही प्रभु सेवा

श्री दयाराम मूलवाणी
ट्रस्टी, पुष्कर कुटिया, पुष्कर
मो. 9414300047

पुष्कर कुटिया के वर्तमान में 5 ट्रस्टी हैं। जिनमें स्वामीजी के परलोक गमन के बाद दयाराम जी का नाम जोड़ा गया था। उनकी पुष्कर की हलवाई वाली गली में किराने की पुश्तैनी दुकान है। सधारण सा व्यक्तित्व मगर ट्रस्टी है यह जानकर आश्चर्य हुआ। मेरी उनसे मिलने की इच्छा थी, पुष्कर में डॉ. कन्हैयालाल जी के पास बैठा था। वहीं पर अजमेर से साधू जी आ गये थे। वे अपने स्कूटर पर बिठाकर मुझे उनके दुकान तक ले गये। टेढ़े–मेढ़े रास्तों से होते हुए मैं अकेला जाता तो शायद परेशान हो जाता। संतों का काम था और पग–पग पर वे मुझे सुगमता पूर्वक आगे बढ़ाते जा रहे थे। कहते हैं जिसके सिर ऊपर तू स्वामी सो दुःख कैसा पावे। सचमुच संतों की रहमतों का भंडार मेरे ऊपर है। शतशत नमन संतों को, संतो के प्यारों को।

जब उनके पास पहुंचा बातें शुरू हुईं तो उन्होंने बताया कि उनकी माताजी संतों के आश्रम में जाती थीं और वहां पर खाना वगैरह बनाती थीं, सेवा करती थीं। भाई घुमणसिंह जी की धर्मपत्नी भी वहां आती थीं। मुझे याद आया कि एक ऐसा ही नाम सामने आया था। भाई दिनेश पारदासानी जी की माताजी वहां जाकर खाना बनाती थीं। कभी कभी सिद्धभाऊ की माताजी भी पुष्कर आश्रम आती थीं तो आनंदमय वातावरण हो जाता था। दयारामजी तब युवा थे, घर दूर था, माताजी को स्कूटर पर छोड़ने आश्रम तक जाते थे और बाहर ही छोड़ कर आ जाते थें। एक वर्ष तक ऐसा ही चलता रहा। एक बार स्वामीजी ने उनको आवाज देकर बुलाया, अपने पास बिठाया, कुशल क्षेम पूछी और कहा कि इतने बड़े बड़े बाल क्यों रखवाये है। मैं कॉलेज का विद्यार्थी था उस समय तो यह फैशन था। जो छोटे बाल रखता था दोस्त उसे दकियानूस मान लेते थे। क्या बोलता, उत्तर देते नहीं बना। स्वामीजी ने कहा कटवा लोगे? मरता क्या न करता। स्वामीजी ने वहीं पर मेरे बाल कटवा दिये। मैं कुटिया में अंदर पहली बार ही गया था। थोड़ी खिन्नता मन में आई, फिर सामान्य हो गया।

उसके बाद धीरे धीरे स्वामीजी के प्रति श्रद्धा बढ़ती गई। मैं जो सोचता वह अपने आप हो जाता था। संतों से गाय, पशु, पक्षी बच्चों, बूढ़ों और बीमारों की सेवा करने का संदेश ग्रहण किया और जब, जहां पर जरूरत होती है अपनी सामर्थ्य अनुसार करते रहते है।

स्वामीजी की आज्ञा से पुष्कर वृद्धाश्रम में अक्सर मिठाई, आम, फ्रूट, सहायता राशि देने का दायित्व भी उनको मिलता था। जिसे वे सहर्ष स्वीकार करते । बाद में तो उनका नियम बन गया हर बुधवार को अपने घर से अलग अलग तरह का नाश्ता बनवाकर ले जाते थे। मगर कोरोना के बाद वह बंद हो गया और अब तो वृद्धाश्रम को 'अपना घर' वालों नें गोद ले लिया है तो वहां पर बाहर का सामान लेने पर प्रतिबंध लग गया है।

संतजी बताते हैं कि जब उनका भाई 1960 में पैदा हुआ था तब उन्होंने आश्रम पर भंडारा करवाया था और जो भी वहां पर भोजन करने आये सबको उन्होंने एक एक

रूपया दक्षिणा भी दी थी। उनके दादाजी 1970 में परलोक सिधार गये तब वे मात्र 3 वर्ष के थे। उनका जन्म 1963 में हुआ था।

उन्होंने बताया बंटवारे के बाद सीधे वे पुष्कर ही आये थे और 75 वर्षों से यही पर रह रहे हैं और यहीं दुकान पर काम कर रहे हैं। उनके बड़े भाई भी साथ में हैं। जब आये थे तो पैसा भी कम था। बाद में चोरी भी हो गई मगर काम बढ़ता गया। उनके दादा का नाम श्री पमनदास जी था। उनकी ननिहाल पालनपुर में है। वे अपने नाना श्री मंघाराम जी के कारण संतों के सान्निध्य में आये। उनके पिताजी का नाम श्री लालचंद जी था जो 1997 में परलोक धाम चले गये थे।

वही पर उनके भतीजे हेमन्त से भी बात हुई उन्होंने बताया कि जब स्वामीजी पुष्कर होते थे तो सिद्धभाऊ उनको बोलते थे हर शनिवार की रात को आकर कुटिया पर सोया करो। उनकी उम्र 12–13 वर्ष थी वे कुटिया पर जाते। स्वामीजी शनिवार की रात को समस्त लोगों से वार्तालाप करते थे। अजमेर के सेवाव्रतधारी आते थे। सब लोग स्वामीजी की चरण सेवा में लग जाते थे। एक बार स्वामीजी ने उनसे पूछा चाय पीते हो। उन्होंने कहा हां तो स्वामीजी ने कहा चाय पीना छोड़ सकते हो, तो मैं बोला सबेरे उठकर पढ़ाई करता हूं, जब तक मां चाय बनाकर नही देती मेरी आंखें ही नहीं खुलतीं, मैं पढ़ ही नहीं पाता। पर उन्होंने कहा छोड़कर तो देखो छूट जायेगी। उनका कहना माना और चाय पीना बंद कर दिया। बीच में 10–15 साल बाद एक बार किसी कारणवश 2–3 चाय पी तो तबीयत ही बिगड़ गई। आज उनकी उम्र 34 वर्ष है, 22 साल बाद भी उनका चाय पीने का क्रम बंद है। उन्होंने बताया कि स्वामीजी के ब्रह्मलीन होने के बाद पुष्कर में सेवाकार्य बढ़े ही हैं कम नहीं हुए। यहां पर पहले होम्योपेथिक हॉस्पीटल ही था, अब नेत्र रोग विशेषज्ञ सप्ताह में दो बार आते हैं। दयाल वीना डायग्नोस्टिक के लिये सेम्पल लेने का काम भी शुरू हुआ है जो पहले नहीं था। उनकी माताजी का नाम श्रीमती जमुनादेवी था।

हेमन्त ने बताया कि एक बार सिद्धभाऊ से उन्होंने कहा कि भाऊ स्वामीजी के बाद पुष्कर की कुटिया सूनी–सूनी लगती है तब सिद्धभाऊ ने कहा तुम्हारी सोच गलत है। स्वामीजी का पहले एक शरीर था और आज वे हजारों शरीरों के साथ संसार में विद्यमान हैं। जहां, जब कोई उनको याद करता है वे वहां पहुच जाते हैं। हेमन्त को भी लगा सिद्धभाऊ का कथन सत्य है। वे जब भी आश्रम जाते हैं तो उनको महसूस होता है स्वामीजी मूड़े पर बैठे हुये हैं। उसे जीवन में जब भी समस्या आयी उसने, स्वामीजी को याद किया और समस्या अपने आप समाप्त हो गयी।

हेमन्त जी ने बताया कि स्वामीजी को व्यवधान पसंद नहीं आता था। एक बार वे पुष्कर कुटिया गये थे। स्वामीजी उनसे लगभग 200 मीटर दूर खड़े थे। उन्होंने जमीन छूकर वहीं से उनको, प्रणाम किया। उन्होंने देखा, रूकने को बोला। थोड़ी देर बाद आये और कहा मुझे प्रणाम क्यों किया, कोई काम था क्या? मैने कहा काम नहीं था। छोटा बच्चा हूं आपका आशीर्वाद पाने के लिये प्रणाम किया था। वे बोले इससे मेरा ध्यानभंग हो गया। मैने उनसे हाथ जोड़कर क्षमा मांगी।

हेमन्त जी बोले हम जब पुष्कर आये थे तो दाल रोटी की जुगाड़ बड़ी मुश्किल से होती थी आज स्वामीजी की कृपा से हर सुख सुविधा घर में मौजूद है। हेमन्त जी मुझे वहां से फिर आश्रम पर लाये इस बीच में बातों का सिलसिला चलता रहा उन्होंने बातया कि वे और दयाराम जी कुटिया पर गये थे। वहां पर गौशाला के लोग आये थे और

स्वामीजी को गायों के लिये चारा उपलब्ध कराने को कहा। मगर सवामीजी ने उनको डांट कर भगा दिया। वे निराश होकर चले गये। बाद में स्वामीजी ने दयाराम जी को बुलाया, उन्हें कुछ धनराशि दी और कहा वहां जाकर देखो वास्तव में परेशानी है तो उनको चारा लेकर दो। मगर पैसा किसने दिया कहां से आया यह बात उनको बतानी नहीं है। दयाराम जी ने ऐसा ही किया। वह गौशाला पुष्कर से 15 किलोमीटर दूर थी। वहां ट्रालियां भर भर कर चारा भिजवाया गया। ऐसे थे हमारे संत, नाम की इच्छा से दूर।

बाल गोपाल सेवा ही कृष्ण सेवा

श्री जयकिशन आडवानी
कंवर नगर जयपुर
मो. 9829058410

मैं गया था उद्धवदास जी से मिलने के लिये जयपुर। वे झूलेलाल मंदिर में बैठे थे। फोन करके समय लेकर गया था। मेरे जीजाजी मुझे अपनी एक्टिवा पर शास्त्री नगर से वहां लेकर गये थे, उसी समय जयकिशन आडवानी जी भी वहां आ गये। परिचय हुआ पता चला कि वे भी संतों के मुरीद हैं। उनसे पूर्व में परिचित नहीं था, जिनेसे मिलना था सूची में भी उनका नाम नहीं था क्योंकि जो नाम मिले थे वे सब के सब मुकेश भाग्या जी से मिले थे। मगर उद्धवदास जी ने उनकी बहुत तारीफ की तो मैंने कहा इनसे बात हो जाये फिर आपसे बात करते हैं। उन्होंने कहा मैं थोड़ी देर में घर के काम निपटा कर आता हूं। उद्धवदास जी की बातों में स्वामीजी के प्रति अथाह उत्साह एवं श्रद्धा झलक रही थी अतः मैने भी कहा ठीक है। वे चले गये। उद्धवदास जी से वार्तालाप समाप्त हो गया वे भी चले गये मगर तब तक आये नहीं, मैं अकेला मंदिर में बैठा रहा। किसी और को टाइम दिया हुआ था, सोचा छोड़ो में चला जाता हूं। उठने को हुआ तो वे आ गये। मैंने प्रभू को धन्यवाद दिया और उनसे बातचीत शुरू हुई।

संतों से उनका परिचय उनकी ननिहाल वालों के कारण, जो बाम्बें में रहते हैं, 1991–92 में हुआ। मामाजी जयपुर आये हुये थे उनको अजमेर होते हुए पुष्कर जाना था। बोले मुझे बस में बिठाकर आओ। उस दिन रविवार था। उन्होंने नई कार ली थी तो उन्होंने कहा चलिये मैं भी चलता हूं, कार लेकर चलते हैं। हम लोग पुष्कर पहुंचे, स्वामीजी के दर्शन हुए उनके पावं छूने को झुका तो उन्होंने रोकते हुए कहा भगवान भला करेंगे। उनको देख कर मन में विचार आया यदि मैने कभी गुरू बनाया तो इन संतों को ही बनाऊंगा। दर्शन करके लौट आया।

1996–97 में आदर्श नगर में स्वामीजी आये हुए थे। वे डॉ. के. एल. खिलनानी के यहां बैठे थे उनकी धर्मपत्नी भी बालरोग चिकित्सक थीं। वहां पर बच्चों की सेवा के लिये मेडीकल कैम्प लगाने की योजना चल रही थी तो उन्होंने और उनके भाई ने जो वहां उपस्थित थे कहा कि हमारा एक जागरूकता संगठन कंवरराम नगर में बना हुआ हैं आप आज्ञा दें तो इस काम को आगे बढ़ाने में हम सहयोग करें। डॉ. की सहमति मिलने के बाद पहला कैंप उनके घर पर 96–97 में लगाया गया और यह क्रम निर्बाध रूप से हर माह के अंतिम रविवार को आज तक चलता है। स्वामीजी हमारे सहयोग की बात सुनकर अति प्रसन्न हो गये थे। उसके बाद यह कैम्प जवाहर नगर में चलने लगा। कोरोना के

कारण पिछले वर्ष से यह कैंम्प डॉ. आलोक उपाध्याय अपनी क्लीनिक पर ही लगा रहे हैं। आखिरी रविवार को यह बगैर फीस के बच्चों को देखते हैं और दवाइयां लिखकर देते है जो मेडीकल स्टोर से फ्री में मिल जाती हैं। जिसका भुगतान समाज करता है।

बच्चों का कैम्प शुरू हुआ, कितने कैंप लगेंगे जब बात चली तो तय हुआ कम से कम 8–10 तो लगना चाहिये। उस समय डॉ. खिलनानी को दो बेटियां थी और जयकिशन जी को एक बेटी थी। चमत्कारिक रूप से जब 10वां कैम्प लगा तो डॉ. खिलनानी को पुत्र रत्न की प्रप्ति हुई उसके बाद उन्हें भी पुत्र रत्न की प्रप्ति हुई मगर बच्चे को बचपन से हार्निया की समस्या थी, रीढ़ की हड्डी में भी कुछ समस्या थी। हार्निया का एक बार ऑप्रेशन भी करवाया मगर फायदा नहीं हुआ। स्वामीजी आये हुए थे। आदर्शनगर में वच्छानी परिवार में रूके हुए थे। वे अपने बेटे विनायक को लेकर गये। स्वामीजी चादर ओढ़ कर सोये हुये थे बोला था मुझे डिस्टर्ब मत करना, फिर भी हनुमान भाऊ ने स्वामीजी की चादर हटाई और कहा जयकिशन आया है अपने बेटे को लेकर आपके आशीर्वाद की कामना लेकर। हम डर रहे थे स्वामीजी नाराज न हो जायें। मगर स्वामीजी के चेहरे से जैसे ही चादर हटी उनका तेज देख कर हम अचंभित हो गये। वे उठे और 100 रू. मंगाये और विनायक को जो अभी मुश्किल से डेढ़ वर्ष का था, देते हुए कहा यदि यह नोट लेता है तो इसका मतलब होगा यह बड़े होकर कैम्प लगायेगा नहीं लिया तो समझ लेना यह सेवा मार्ग पर नहीं जायेगा। आश्चर्य हुआ कि वह नोट विनायक ने ले लिया। बाद में उनको अपनी शादी की सालगिरह के दिन 6 जून 2002 को फिर से पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई उनके भाई के घर भी 16 अप्रैल 2003 बेटे ने जन्म लिया। उसके बाद हृदय शुद्धि सेवा ट्रस्ट सेवा निकेतन का निर्माण हुआ जिसमें बाल चिकित्सा शिविर लग रहे है। उन्होंने बताया स्वामीजी की कृपा से सेवा कार्य दिनों दिन बढ़ रहे है। अलग अलग संस्थायें काम कर रही हैं। जीव सेवा समिति, श्री गोपाल कृष्ण सेवा सामिति इत्यादि अपने अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

सेवा प्रकल्पों से जुड़ने में आत्मिक आनंद

श्री हरीश (साधु) नानकानी

अजमेर मो. 9413135345

21 जुलाई 1984, द्वितीय शनिवार को स्वामीजी से उनकी मुलाकात हुई। मुलाकात के माध्यम बने हरीसिंह जी गंगा नगर जिले में रहते थे। उनके भाई स्वामीजी के पुष्कर आश्रम में रहते थे और उनका नाम तपस्वी के रूप में प्रसिद्ध था उन्होंने ही साधू नानकानी को स्वामीजी के बारे में बताया और कहा कि मौका मिले तो जरूर स्वामीजी के दर्शन को जाना। हरीश जी पावर हाऊस में नौकरी करते थे। वे जब आश्रम पहुंचे गेट खोलकर अंदर गये कोई भी उनको नहीं दिखा तो वे दूब पर जाकर बैठ गये। 10–15 मिनट बाद स्वामीजी बाहर से आये उनके हाथ में कमण्डल था, आते ही उन्होंने हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया। बोले मैंने भी अबोधों के अंदाज में हाथ हिलाकर उत्तर दिया। स्वामीजी कमंडल रख कर हाथ धोने लगे। 5–7 मिनट बाद स्वामीजी आये नाम पूछा, कहां से आये हो और मेरे बारे में आपको किसने जानकारी दी तो मैंने उनको बताया नाम हरीश नानकानी है। मगर लोग मुझे साधू के नाम से बुलाते हैं। अजमेर में

रहता हूं और हरीसिंह से आपके बारे में जानकारी मिली थी। स्वामीजी ने कहा अच्छी बात है और अपने साथ आश्रम में ले गये। मुझे अपने चरणों को दबाने का मौका दिया वह भी पहली बार में। शायद मैं सौभाग्यशाली था। जब बाद में मैं आश्रम जाता तो देखता था स्वामीजी 99 प्रतिशत श्रद्धालुओं को दरवाजे से ही प्रसाद देकर विदा कर देते थे। जब पैर दबा रहा था तो उन्होंने कहा मैं किसी का स्वागत नहीं करता तुम जब भी आओ सेवा करना और चले जाना। मैं कुछ पूछूं तो बात करना नहीं तो मुझे शांति में रहने देना।

फिर तो स्वामीजी से गहरा रिश्ता बनता गया, नेत्र शिविर, यूरोलाजी शिविर, चिकित्सा शिविर सेवा के अनेक प्रकल्पों से जुड़ने में आत्मिक आनंद की अनुभूति होती गई।

सन् 2002 से 2004 तीन वर्ष तक स्वामीजी स्वास्थ्य की दृष्टि से कमजोर होते गये। तब रात्रि को जाकर कुटिया में सोते थे। राजस्थान विद्युत मंडल में नौकरी करते थे। 5 बजे के आसपास आफिस से आते थे और फिर बस के द्वारा पुष्कर जाते थे। साढ़े 7 बजे तक पुष्कर पहुंचते थे उस समय बैरागढ़ से भी लोग पुष्कर आते थे। और रात्रि की सेवा करते थे। स्वामीजी तख्त पर सोते थे और ये बाहर बिस्तर लगाकर सो जाते थे। ज्यादा सेवा की जरूरत नहीं होती थी। रात्रि को वाशरूम वगैरह के लिये ही स्वामीजी कभी कभी ही उठते थे तभी जरूरत पड़ती थी। स्वामीजी को रात्रि में जब कभी चाय पीनी होती थी, कोई निश्चित समय नहीं था रात को 11 बजे, 12 बजे, 1बजे, दो–ढाई बजे तब बोलते थे साधू चाय बना दो। मैं चाय बना देता था। वे बोलते जाओ सो जाओ, मैं सो जाता था और प्रातः सात–साढ़े सात बजे वापस अजमेर के लिये निकल जाता था।

5 नवंबर 2004 को स्वामीजी आखिरी बार पुष्कर से संत हिरदाराम नगर के लिए रवाना हुए। साधू जी ने उनको कहा स्वामीजी मैंने अजमेर में एक प्लाट लिया है यदि एक बार जाने के पूर्व वहां पधारकर आशीर्वाद करेंगे तो मैं धन्य हो जाऊंगा। स्वामी पुष्कर से संत हिरदाराम नगर जाने के लिए पहले मीनाक्षी एक्सप्रेस से इन्दौर तक फिर इन्दौर से संत हिरदाराम नगर जाते थे मगर बाद में जयपुर से भोपाल ट्रेन से जाते थे। स्वामीजी ने आग्रह स्वीकार कर कृतार्थ किया। कार से प्लाट तक आये। महरभरी नजर से देखा और फिर रवाना हो गये।

साधू जी बचपन से ही आध्यात्मिक रुचि के व्यक्ति थे। इसीलिये ही तो दोस्तों ने उनका नाम हरीश की जगह साधू नानकानी कर दिया था। उन्होंने स्वामीजी को भी एक बार कहा था मैं भी उस रास्ते का अनुगमन करना चाहता हूं जिस पर आप चले हैं। स्वामीजी ने कहा एक बार फिर से अपना वाक्य दोहराओ, मैंने कहा स्वामीजी मैं भी उसी रास्ते पर चलना चाहता हूं जिस रास्ते पर चलकर आपने सन्यास की ऊंचाइयों को छुआ है। मेरी बात सुनकर उन्होंने सिर हिलाकर खुशी जाहिर की मुझे ऐसा लगा।

उनकी संतानों में दो बेटे हैं दोनों बेटे चाइना में व्यापार करते थे। कपड़े का व्यवसाय है। उनका संबंध मिडिल ईस्ट के देशों से है। वे वहां निर्यात करते थे। 2020 में जब इंडिया आये तो कोरोना का प्रकोप हुआ तब से वे इंडिया में ही हैं। अब वे अहमदाबाद में हैं। एक को दो बेटे और दूसरे को एक बेटा है। अच्छा व्यवसाय है। उनका छोटा भाई पहले से ही अहमदाबाद में बड़े पेमाने पर कपड़े का व्यवसाय करता है। यहां पर अब सिर्फ वे और उनकी पत्नी ही रहते हैं।

जवानी के दिनों मे ये मदिरा पान भी करते थे। स्वामीजी को यह बात पता थी मगर इन्होंने मन में दो बातें सोच रखी थी,

1. स्वामीजी कभी मुझसे नहीं पूछेंगे कि तुम शराब पीते हो क्या?

2. स्वामीजी कभी भी मुझे कहेंगे नहीं कि साधू तुम शराब छोड़ दो।

3. मगर कभी न कभी यह बात भी जरूर आश्रम परिचर्चा में आयेगी।

उन्होंने बताया कि इन्दौर के मनीष वाधवानी के नानाजी शराब पीते थे। मनीष की नानी ने स्वामीजी को आकर यह बात बताई तो मनीष के नानाजी बोले स्वामीजी यह नाक में लेकर नसवार सूंघती है यदि यह आज से नसवार सूंघना बंद कर दे तो मैं भी शराब पीना छोड़ दूंगा और दोनो ने स्वामीजी के सामने इस बात को मान लिया। यह घटना बताते हुए साधू से स्वामीजी ने पूछा इस बात से तुम क्या समझे तो मैंने कहा मेरे मन ने कहा है कि साधू आज और अभी से शराब पीना छोड़ दो यह घटना 31 मार्च 1998 की है। स्वामी जी यह सुनकर अति प्रसन हुए। उन्होंने सिद्धभाऊ को जोर से आवाज लगाई "सिद्ध इधर आओ"। सिद्ध ने सोचा स्वामीजी ने इतनी जोर से क्यों आवाज लगाई है वे दौड़कर आये तो स्वामीजी ने कहा हरीश से पूछो आज क्या हुआ है। तब मैने सिद्धभाऊ को बताया कि आज मैंने शराब पीना छोड़ने का संकल्प लिया है। यह बात सुनकर स्वामीजी अति प्रसन्न हुए।

साधू ने बताया वे स्वामीजी से खूब बाते करते थे, डरते तो बिलकुल नहीं थे। स्वामीजी जब भी बुलाते थे तो जिस तरह के वस्त्रों में वे होते थे वैसे ही चले जाते थे। सिद्ध भाऊ के बाद उनको ही यह सौभाग्य प्राप्त था।

20 अक्टूबर 2006 को सिद्धभाऊ का फोन आया। उन्होंने कहा साधू आजाओ स्वामीजी की सेवा करनी है। 23 अक्टूबर को दीवाली थी मैंने कहा दीवाली करने के बाद आऊंगा तो उन्होंने कहा तुम्हे दीवाली पर क्या करना है, जल्दी आ जाओ। तब मैंने स्टेशन पर जाकर रिजर्वेशन करवाया। 22 अक्टूबर का रिजर्वेशन मिला जयपुर से भोपाल का। 23 अक्टूबर दीवाली के दिन सबेरे संत हिरदाराम नगर पर उनके साथ मुकेश बजाज जी भी साथ आये थे। स्वामीजी बहुत कम बोलते थे। पहचानते थे। वे 5 नवम्बर तक संत नगर में रहे। बाद में उन्होंने दिसम्बर में आने का कार्यक्रम बनाया मगर भाई की लड़की की सगाई के कारण आ नहीं सके। फिर दिसम्बर में ही स्वामीजी महाप्रयाण के लिये चल दिये। सिद्धभाऊ से सूचना मिली और कहा गया कि कोई नहीं आये मगर फिर भी 10–12 लोग अजमेर से आये और हम लोग समय पर पहुंच गये थे।

तीनो लोकों के मालिक

श्री प्रेम केवलरामानी

अजमेर मो. 9414355338

मैं 24 से 29 जनवरी तक चचेरी बहन के बेटे के विवाहोत्सव पर शामिल होने 22 तारीख को घर से नीमच, डूगरपुर, उदयपुर के लिये निकला और मन में यह तय करके निकला कि 27 को अजमेर, पुष्कर, जयपुर, खेरथल में जो लोग स्वामीजी में श्रद्धा रखते हैं उनसे उनके संस्मरण सुनूंगा। उदयपुर में श्री प्रेम पाहूजा से मुलाकात हुई। अथाह स्नेह और यादों का खजाना उनसे मिला। 30 तारीख को जब अजमेर पहुंचा तो पहला फोन मैंने प्रेम केवलरामानी जी को किया और अपने आने का मंतव्य बताया उन्होंनें अति हर्षित होते हुए मेरे कार्य में पूर्ण सहयोग देने का वायदा किया। दूसरे दिन जब वे

वृद्धाश्रम जा रहे थे, जिसके जाने का रास्ता वैशालीनगर से ही था, उन्होंने मुझे साथ में ले लिया। मैं वैशालीनगर में अपनी बहन के घर पर रूका हुआ था। वे 31 जनवरी 2022 को लगभग 11 बजे वैशालीनगर आये। बहुत ही सुन्दर व्यक्तित्व के धनी। देवतुल्य तेज देखकर मैं अभिभूत हो गया। वे एस यू वी गाड़ी में आये थे। उन्होंने प्रेम पूर्वक मुझे गाड़ी में बैठाया और वृद्धाश्रम ले गये। यह वृद्धाश्रम अभी 14 जनवरी से ही शुरू हुआ था और 17 दिन में ही 10 वृद्धों को आश्रम में आश्रय दे दिया गया था। आश्रम का निर्माण किसी और ने करवाया था और कहा कि जो स्वामीजी के सामाजिक सरोकारों से जुड़े है वे संचालन करें। उन्होंने बताया कि कभी हम लोगों ने स्वामीजी से कहा था कि अजमेर वें वृद्धाश्रम बनाया जाये। उनका आशीर्वाद मिलने के बाद भी वह क्रियान्वित नहीं हो पाया था। मगर कामना स्वामीजी ऐसे पूरी करेंगे कि बना बनाया आश्रम हमें मिल जायेगा और हम उसे अपने मन माफिक चला सकेंगे सोच से परे था। जब हमें वृद्धाश्रम का दायित्व सौंपा गया तो हमने उनसे कहा कि हम यह दायित्व लेने को तैयार हैं पर शर्त यह है कि हम अपने गुरूदेव की तस्वीर यहां जरूर लगायेंगे। उन्होंने हमारी शर्त स्वीकार कर ली। आज वृद्धाश्रम में घुसते ही सामने गुरूदेव की तस्वीर नज़र आती है। उस आश्रम में 28 वृद्धों को रखने का प्लान है भूतल पर और प्रथम तल पर सिलाई सेन्टर, कंप्यूटर सेन्टर का सेटअप करेंगे। इस कार्य के लिए उन्होंने दानदाता भी तलाशने शुरू कर दिये थे। आश्रम की व्यवस्था देखकर आनन्दानुभूति हुई। मैं आश्रम में एक घंटे तक रहा। उन्होंने बताया कि वह आश्रम में रोज दो घंटे के लिए आते हैं। मगर चाय वगैरह नहीं पीते दान के पैसे की, वे अपना दूध, शक्कर, चाय पत्ती, अदरक के खर्चे स्वयं करते हैं। सिर्फ वहां के कर्मचारी उन्हें बनाकर देते हैं। ऐसी शुभ भावना के लिये मैंने अंदर ही अंदर उनको शत शत नमन किया। वृद्धाश्रम का नाम श्री अमरापुर सेवा घर वृद्धाश्रम रखा गया था और इसका निर्माण एनआरआई अमोलक खानचंदानी ने पूर्वजों की याद में करवाया था। भवन तीन मंजिला था। हृदय गदगद हो गया व्यवस्थाऐं देखकर। बातों का सिलसिला आगे बढ़ा तो उन्होंने बताया 'हमारे मन में कोई कार्य करने की इच्छा आती थी तो हम सीधे स्वामीजी के दर्शन के लिये पुष्कर जाते थे। स्वामीजी को कुछ बताते भी नहीं थे मगर हमने पग पग पर अनुभव किया कि हमारे सोचे हुये कार्य समय पर अपने आप पूरे हो जाते थे।'

उन्होंने यह भी बताया कि एक बार उनकी धर्मपत्नी जो शासकीय सेवा में कार्यरत थीं, के स्थानांतरण की समस्या आ गई थी। हमें मालूम हुआ कि स्वामीजी जयपुर से अजमेर के लिये रवाना हो गये। रास्ते में स्वामीजी की कार निकली तो हम लोगों ने प्रणाम किया। बाद में पता पड़ा कि जो स्थानांतरण हम रोकने की कोशिश काफी दिनों से कर रहे थे और रुक नहीं रहा था वह स्थानांतरण उस दिन रद्द हो गया। श्री केवलरामानी जी ने मुकेश भाग्या के संसर्ग में आकर ही 1975 में स्वामीजी के दर्शन किये थे। यह वह जमाना था जब लोग हिप्पीकट बाल रखते थे। ये कॉलेज के विद्यार्थी थे मगर जब आश्रम गये तो बाल छोटे रखकर गये थे। छोटे बाल होने के बाद भी स्वामीजी ने नाई को बुलाया। उन्होंने खुद अपने हाथ से मशीन चलाकर उनके बाल काटे यह उनका सौभाग्य था कि तीनो लोकों के मालिक अपने हाथ से उनके बाल काट रहे थे। वे स्वामीजी के मूलमंत्र **'बूढे, बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार, करें भावना से सेवा इनकी पायेंगे लोक परलोक में सुख अपार'** को साथ लेकर चलते हैं। वे उदयपुर, कोटा, अजमेर, जयपुर जहां–जहां भी चिकित्सा, यूरोलाजी, नेत्र शिविर लगते थे वे वहां जाकर सेवा

करते हैं।

वे अपने जीवन से संतुष्ट दिखे। बोले जीवन मे उतार चढ़ाव तो आते रहते हैं मगर ऐसे भी दुःख नहीं आये जो विचिलित कर जायें। उनकी तीन पुत्रियां है। दो का विवाह कर चुके हैं और एक बाकी बालीबुड में कास्ट्यूम डिज़ाइनर है उसका विवाह होना बाकी है।

उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रीफिकेशन का कार्य उनकी ही देखरेख में होता था वे सप्ताह में 3–4 बार कुटिया पुष्कर जाते थे। अजमेर में स्वामीजी ने अनेक स्थानों पर बोरिंग कराई है, संत हिरदाराम नगर की तरह। वहां की बोरिंग तो स्वामीजी ने कराई मगर उसके संचालन का सारा खर्च और विद्युत आपूर्ति व्यय जहां जहां बोरिंग हुई वहां की सोसाइटियां वहन करती हैं।

संतों के आशीर्वाद का प्रतिफल

श्री दिनेश दौलतराम पारदासानी
अजमेर मो. 9413224988

दिनेश जी से मेरा फोन पर वार्तालाप हुआ उनको अपने आने का प्रयोजन बताया। सुन कर बहुत प्रसन्नता व्यक्ति की मैंने उनसे आने का समय मांगा और बताया मैं वैशालीनगर की कॉलोनी में बहन के घर में रह रहा हूं। उन्होंने बताया वे भी 300–400 मीटर दूर वैशालीनगर की कालोनी में ही रहते है। आप जो लोकेशन बता रहे हो में स्वयं आ जाऊंगा। आप क्यो कष्ट कर रहे हो। समय तय हुआ वे निश्चित समय पर आये। उनके चेहरे की सौम्यता और तेज देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। सरल सा पहनावा, कोई बनावटीपन नहीं। बड़े सरल व्यक्ति लगे। उनको देखकर हृदय प्रफुल्लित हो गया। बहन के घर में भूतल पर सिर्फ दो ही कमरे हैं। साथ में दो उच्च नस्लीय कुत्ते भी उन्होंने पाल रखे हैं। वे आने में डर रहे थे मगर उनको एक कमरे में बिठाया, दरवाजा अंदर से भिड़का दिया और वार्तालाप शुरू हुआ।

उन्होंने बताया कि उनका परिवार स्वामी जी से 1952 में जुड़ा। पिताजी बड़े सरल स्वभाव एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। वे पुष्कर आश्रम में आते जाते रहते थे। स्वामीजी से वे शादी के पहले से जुड़ गये थे। उनके चाचाजी ही उनको स्वामीजी से मिलवाने ले गये थे। फिर स्वामीजी से आत्मीयता जुड़ गई। तब पुष्कर आश्रम में एक ही कमरा था। वहीं पर ही वे स्वामीजी के साथ तपस्या में लीन रहते थे। स्वामीजी उनके पिताजी को कहते थे तुम भी सन्यासी बन जाओ। पर इसी समय स्वामीजी के आशीर्वाद से पिताजी की योग्यतानुसार उनकी नौकरी लग गई। तब उनके पिता श्री दौलतरामजी ने कहा स्वामीजी मेरी नौकरी लग गई है। मुझे मां बाप की सेवा करनी है और विवाह कर के गृहस्थी बसानी है। मैं सन्यास ग्रहण नहीं कर सकता।

उस समय एक ज्योतिषी आश्रम पर आये उनको जन्म पत्री देखने का भी ज्ञान था। उनके पिताजी भी कुटिया पर थे। ज्योतिषी ने बताया आपका, मेरा और इनका पूर्व जन्म का रिश्ता है। उन्होंने स्वामीजी की जन्मपत्री देखकर कहा आपकी आयु 125 वर्ष तक रहेगी। स्वामीजी ने कहा यह ज्यादा है, वो बोले नहीं स्वामीजी जन्मपत्री यही बता रही है। तो उन्होंने कहा बहुत ज्यादा बता रहे हो। तब उन्होंने कहा 100 वर्ष के साथ

सवाई के 3 माह जुड़ गये थे, 21 सितम्बर 1906 से 21 दिसंबर 2006 तक।

एक बार स्वामीजी और उनके पिताजी आश्रम से भ्रमण पर निकले। थोड़ा चक्कर लगाकर आते हैं। यह 1960 के आसपास की बात है उस समय पुष्कर में जंगल जैसा होता था। दूर दूर तक लाईटें भी नहीं थी आसपास कोई आश्रम भी नहीं था। वे रास्ता भटक गये। रात होने को आ गई। अंधेरा हो रहा था। थक कर चूरचूर हो गये थे भूख भी बहुत लगी थी। तब स्वामीजी ने कहा आश्रम पर चलकर क्या खाना बनायेंगे तो पिताजी ने कहा कि मैं तो थक गया हूं। मैं तो चलकर सोऊंगा। बोले खाना तो खाना पड़ेगा, बनाना भी पड़ेगा। इतने में उनको एक झोपड़ीनुमा जगह दिखी स्वामीजी ने कहा चलो यहां पर अपन सन्यासी हैं भिक्षा मांग लेते हैं। झोपड़ी से रोशनी बाहर आ रही थी। उन्होंने आवाज लगाई कोई है सन्यासियों को भोजन चाहिये। अंदर से कोई आवाज नहीं आई। उन्हांने कहा पूड़ी, भाजी, भजिये, मालपुआ, हलवा का भोग लगाओ सन्यासियों को। अंधेरा था तब पिताजी ने उनसे कहा स्वामीजी यह तो हम अपनी अपनी कुटिया के बाहर खड़े है और मांग रहे है, यहां कुछ थोड़े ही मिलेगा।

उन्होंने बताया कि एक बार पिताजी आफिस से छुट्‌टी लेकर एक सप्ताह के लिये पुष्कर गये थे। स्वामीजी ने उनको और सभी जो उपस्थित थे उनके सामने उनको कहा देखो यह आया तो है अभी इसको घर की याद आयेगी और चला जायेगा। पिताजी ने कहा नहीं मैं छुट्‌टी लेकर आया हूँ। आप विश्वास करो में एक सप्ताह तक यहीं रहूंगा। अभी बातें हो ही रही थी कि उनकी धर्मपत्नी और भाई मोटर साइकिल पर आश्रम आ पहुंचे। उन दिनों आवागमन के साधन बहुत कम थे सब बस से ही अजमेर से पुष्कर जाते थे। वे उनको देखकर अचंभित हुये तो स्वामीजी ने कहा मैने कहा था न तुम जल्दी वापस घर जाओगे देखो ये तुम्हे लेने आ गये। पता पड़ा कि उनके भाई के लड़के को डॉक्टरों ने थेलीसीमिया से पीड़ित बताया है। इसीलिये वे उनको लेने आये हैं। मजबूरी में उनको जाना पड़ा। स्वामीजी को आने वाले समय में क्या होने वाला है पता पड़ जाता था। बाद में वह बच्चा शांत हो गया। 3–4 वर्ष का ही था वह बालक। उन्होंने अपने जन्म की दास्तान बताते हुए कहा कि उनके पूर्व दो बहनों का जन्म हो चुका था। स्वामीजी अक्सर उनके पिताजी को कहते रहते थे तुम्हें बेटा चाहिये। पिताजी हंसकर कहते थे मुझे बेटा नहीं आपका आशीर्वाद चाहिये। हर बार स्वामी जी कहते थे और वही जवाब पिताजी उनको देते थे। एक दिन स्वामीजी ने उनको एक फल दिया। पता नहीं क्या था उनको याद नहीं, और कहा जाकर तुम भी खाना और बहूरानी को भी खिलाना। उन्होंने ऐसा ही किया। कुछ महिनो बाद उनका जन्म हुआ। बाद में एक और पुत्र का जन्म हुआ मगर वह ज्यादा दिन संसार में नहीं रहा। दिनेश जी ने कहा में संतों के आशीर्वाद का प्रतिफल हूं।

अपने संस्मरण को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने बताया कि 21 सितम्बर 2006 को स्वामीजी का 100वां जन्म दिन था। सभी कार्यकर्ताओं ने पुष्कर जाने का निश्चय किया। ये अपनी मोटरसाइकल से निकले। उस समय उन्हें पेट्रोल भरवाने का ध्यान नहीं रहा। गाड़ी रिजर्व में थी। पुष्कर घाटी पर आकर मोटर साइकिल बंद हो गई। तब उनका ध्यान माइलोमीटर पर गया तो गाड़ी में पेट्रोल 0 था। उनका अपना पेट्रोल खपत का अनुभव भी यही कह रहा था कि पेट्रोल खत्म हो गया है। आसपास कोई पेट्रोल पम्प भी नहीं था और था तो 6–7 कि.मी. दूर, अब क्या करें। परेशान थे। स्वामीजी का ध्यान लगाया। और पता नहीं क्या सोचकर उन्होंने गाड़ी में किक लगाई तो मोटरसाइकल स्टार्ट हो गई। वे उस पर बैठे और जाकर कुटिया पर गाड़ी रूकी, तब भी पेट्रोल शून्य ही

बता रहा था। उस दिन की बात सोचकर आज भी उनके रोंगटे खड़े हो जाते है।

स्वामीजी उनके पिता श्री दौलतरामजी से कहते रहते थे कि आधी कुटिया तुम ले लो मैं इतनी बड़ी कुटिया क्या करूंगा। पिताजी उनको मना कर देते थे। तब उन्होंने कुटिया का कुछ हिस्सा किसी सन्यासी को दे दिया। यह कुटिया के पीछे का हिस्सा था। उससे जो भी पैसा मिला या नहीं मिला उसे संतों ने दान में दे दिया। उन्होंने बताया वह हिस्सा आज उदासीन आश्रम है। कितने अचरज की बात है कि स्वामीजी ने अपना जो हिस्सा दे दिया था उसमें हनुमान भाऊ रहते हैं और उसमें स्वामीजी का पेनोरोमा और समाधी बनी हुई है। सिद्धभाऊ उसके बाद ही स्वामीजी के संपर्क में आये।

दिनेश जी पुष्कर आश्रम जाते रहते थे। विद्यार्थी जीवन में वहां पर बैठकर पढ़ाई भी करते थे क्योंकि आश्रम में शांति रहती थी। एक बार उन्होंने स्वामीजी से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि मुझे आपसे बात करनी है। बोले जाओ जाकर बैठ जाओ। मैं जाकर दरी पर बैठ गया। स्वामीजी आये और पूछा बोलो क्या कहना हैं। मैने उनको अपनी परेशानी बताते हुये कहा मेरी नौकरी नहीं लग रही है। आप आशीर्वाद दीजिये। उन्होंने दो मिनट के लिये आंखे मूंदीं, ध्यान लगाया, तब कहा सबेरे उठकर मां बाप के चरण स्पर्श किया करो। उस दिन से वे अपने मां बाप के नित्य चरण स्पर्श करने का नियम कभी नहीं भूले।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी के संसर्ग में रहने के कारण वे हर तरह की बुराइयों से बचे रहे। उनका भरा पूरा परिवार है। दो बहनों में से एक ने विवाह ही नहीं किया साथ में ही रहती है। एक भाई बाम्बे में किसी अमेरिकन कम्पनी में काम करता है। उनका बेटा यूके में पढ़ाई कर रहा है अब स्पेस रिसर्च पर काम कर रहा है। उनकी बेटी देहली यूनीवर्सिटी से ग्रेजूएशन कर रही है। धर्मपत्नी शासकीय सेवा में लगी हुई है। घर में खुशियां ही खुशियां हैं। हमने स्वामीजी के दर के अलावा अन्य किसी दर पर माथा नहीं टेका जो कुछ मिला है इसी दर से मिला है। सांई जी का शुक्रिया है। उनकी बेटी ने 12वीं में 97प्रतिशत अंक हासिल किये उसका नाम प्रेरणा है। बेटे का नाम यश है। धर्म पत्नी शिक्षा विभाग में सहायक पद पर कार्यरत है। वे विवाह के पूर्व ही जाब में थी। मगर स्वामीजी ने उसका नाम गोबिन्द रखा तो घर में उसे गोबिन्द कहकर ही बुलाते है।

उनके पिताजी को होम्योपैथिक पद्धति से चिकित्सा करने की मान्यता मिली हुई थी। वे 1990 में सेवानिवृत्त हुये। तब स्वामीजी ने उनको पुष्कर में ही ऋषि गोधूमल धर्मार्थ चिकित्सालय में सेवायें देने को कहा तो उनके पिता सबेरे बस से पुष्कर जाते थे और 1 बजे तक वहां पर सेवायें निःशुल्क देते थे। मरीजों को दवायें भी मुफ्त दी जाती थीं। वहां से लोटने के बाद वे घर पर अजमेर के वैशालीनगर में भी मरीजों को निःशुल्क चिकित्सकीय सलाह देते थे। उनके पिताजी का 86 वर्ष की आयु में 2010 में देहावसान हुआ।

स्वामीजी ने अपने जीवन काल में पुष्कर कुटिया के लिये अपनी इच्छा जाहिर कर दी थी। उन्होने उसके लिये 5 लोगों को अधिकृत किया था। स्व. श्री घुमणसिंह जी, जगदीश जी वच्छानी, स्व. दौलतराम पारदासानी जी, मोहन भाग्याजी एवं श्री दयाराम जी यह बात स्वामीजी के देहावसान के बाद सिद्धभाऊ ने बताई थी। उस समय भाई घुमणसिंह का परलोक गमन हो गया था। अतः पुष्कर के दयाराम जी को ट्रस्टी बनाया गया। उस कुटिया को कोई विक्रय नहीं कर सकता है। न किराये पर दिया जा सकता है, न हस्तांतरण किया जा सकता है। दौलतराम पारदासानी श्री दिनेश पारदासानी के

पिताजी थे।

स्वामीजी जब गांधीधाम, आदीपुर में स्वामी लीलाशाह आश्रम में पहुंचे तो स्वामी लीलाशाह उठ कर चले गये। वहां के शिष्य स्वामीजी को उतना ही सम्मान दे रहे थे जितना वे अपने गुरू लीलाशाह को देते थे। बाद में स्वामीजी लौटे तो उन्होंने बताया कि मैं इसलिये उठकर चल दिया था कि मेरे ये लोग आपके सामने होने के बाद भी मुझे ज्यादा सम्मान देते इस लिये मैं चला गया था। बाद में पालनपुर के एक अनुयायी ने उनसे पूछा कि आपके बाद हम किसमें आस्था रखें तो उन्होंने उनको कहा था मेरे बाद आप संत हिरदाराम जी को अपना गुरू मानना। उनका नाम मंघाराम जी था।

स्वामी हरीराम जी की आरती रचने का सौभाग्य उनकी माता जी को जाता है। स्वामी हिरदाराम जी ने कभी भी धन संचय में विश्वास नहीं किया। अखण्ड भारत के बंटवारे के समय कुछ संतों ने धन संग्रह यह सोचकर किया कि पता नहीं कैसी विकट परिस्थितियां पैदा हों तो संतों ने इस बात का विरोध किया और कहा हमने वैराग्य लिया है तो धन का क्या करेंगे और यह कहकर उन्होंने गुरू का आश्रम छोड़ दिया। गुरू ने तब कहा कि तुम एक स्थान पर रह नहीं पाओगे तुमने मुझे त्यागा है। शायद इसीलिये वे दो जगह रहे एक पुष्कर और दूसरा संत हिरदाराम नगर।

स्वामीजी ने दिया सफेद व हल्के कपड़े पहनने का संदेश

श्री कंवल प्रकाश किशनानी
स्वामी कॉम्पलेक्स, अजमेर
मो. 9829070059

श्री कंवल प्रकाश जी से मेरा कोई पूर्व परिचय नहीं था। प्रेम केवलरामानी से बात हुई थी तो उन्होंने मुझे कहा मैं आपसे 11 बजे वैशाली बस स्टाप पर मिलता हूं। उनका फोन आया तो मैं बस स्टाप पर गया। वहां पर एक कार में कंवलप्रकाश जी और केवलरामानी बैठे थे। उनकी वैभवपूर्ण कार देख कर संकोच में पड. गया मगर मिलना तो था उन्होंने मुझे कार में बिठाया और अमरापुर सेवा आश्रम (वृद्धाश्रम) ले गये वहां पर मैंने उनका सौम्य एवं रौद्र दोनों रूप देखे। एक कर्मचारी ने कुछ गड़बड़ की थी उसको उकडूं बैठा रखा था, वह रो रहा था। पता चला कि उसने अक्षम्य अपराध किया था। किसी वृद्ध के पैसे उसने अपने एकाउंट में ट्रांसफर करा लिये थे। रखा था सेवा करने के लिये अभी 15–20 दिन में ही उसने हेराफेरी कर ली थी तो उनका रौद्र रूप धारण करना मुझे न्यायोचित लगा। वे कुशल प्रशासक हैं। उनको आशापुर सेवा आश्रम का संचालन सौंपा गया था और अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया था।

तब उन्होंने बताया कि उनका पालन पोषण अजमेर के पंडित आत्माराम व्यास जी के परिवार में हुआ। उनकी मातृभाषा पर ज्यादा अधिकार नहीं था। वे 1992 में स्वामीजी से संपर्क में आये, उनका विवाह भी स्वामीजी के आशीर्वाद से संपन्न हुआ। जीव सेवा समिति अजमेर के सचिव श्री जगदीश वच्छानी की धर्मपत्नी एवं उनकी अर्धांगिनी आपस में चचेरी बहनें थी।

जब स्वामीजी के संपर्क में आये तो वे उनकी दिनचर्या, स्वनिर्भरता, खुद के कपड़े

खुद धोना, खुद का खाना अपने आप बनाना वह भी तेल, नमक, घी, शक्कर के बिना और अपने आसन खुद उठाकर ले जाना जैसे कार्यों से प्रभावित हुए। वह स्वामीजी जिसके लिये लोग सर्वस्व तन, मन, धन लुटाने को तत्पर रहते थे, दान की गठरियां सेवा करने के लिये लाते थे और उस तरफ वे दखते भी नहीं थे। वरन् समस्त राशि सेवा के कार्यो के लिये दे देते थे। उनकी अपनी आवश्यकताएं तो कुछ थी ही नहीं। 1996 में उन्होंने एक मारूति वैन ली थी, स्वामीजी को वह कंम्फर्ट लगती थी कारें तो बहुतों के पास थी मगर वैन जैसी कम्फर्ट स्वामीजी को कहीं नहीं लगती थी। स्वामीजी उनको अपने कार वाला ड्राइवर कहकर बुलाते थे। इसे वह अपना सौभाग्य ही मानते हैं।

स्वामीजी संत नगरी से अजमेर रेल्वे स्टेशन पर आये तो वहां के स्टाफ का इतना सहयोग रहता था कि कार को प्लेटफार्म पर लेने की अनौपचारिक आज्ञा मिल जाती थी। स्वामीजी जब आये तो उन्होंने आते ही इच्छा जाहिर की कि उन्हें वीना दयाल हरजानी डाइग्नोसिस सेंटर और ड़ांदूराम दरबार में जाना है। उसने गाड़ी वीनादयाल हरजानी डाइग्नोसिस सेंटर के रास्ते पर डाल दी मगर हमारा थोड़ा ध्यान दूसरी तरफ था तो आगे निकल आये। जब हमने गाड़ी मोड़ी तो स्वामीजी ने कहा कि हमें अब न तो ड़ांदूराम दरबार में जाना है और नहीं वीनादयाल डाइग्नोसिस सेंटर जाना है वहां पर बहुत भीड़ हैं अब तुम पुष्कर चलो। स्वामीजी को कैसे पता पड़ा कि वहां पर भीड़ है जब कि हम लोगों को पता ही नहीं था। थोड़ा आगे चलने पर सावित्री कालेज के पास स्वामीजी ने चिल्लाया गाड़ी रोको हम डर गये थे क्या हुआ। पता पड़ा कि सामने गाय आ गई थी जो हमें दिखी नहीं। गाय कहां से आई और कहां चली गई पता ही नहीं पड़ा। स्वामीजी जब वेन में बैठते थे तो पता नहीं क्या हो जाता था कि वेन की स्पीड 40 कि.मी. से ज्यादा बढ़ती ही नहीं थी चाहे कितना भी एक्सीलेटर दे दो। वैसे सामान्यतः वे 80–100 कि.मी. की गति से गाड़ी ड्राइव करते थे।

जब पुष्कर पहुंचे तो स्वामीजी ने सिद्ध और हनुमान भाऊ को आदेश दिया कंवल प्रकाश, जो मेरा ड्राइवर, मेरा सारथी है जैसे कृष्ण भगवान के अर्जुन के सारथी थे, को एक 10 रू का नोट दो। स्वामीजी ने नोट देकर कहा अब इस नोट पर जितनी चाहें उतनी बिंदिंया लगा लो। जितने चाहे 0 लगा लो। लोगों ने कहा यह स्वामीजी का आशीर्वाद है इसे संभालकर रखलेना। मैने भी उस नोट को मंदिर में रख दिया। उसके बाद हमारे संस्थान में पहली बार 2003 में दूसरी बार 3–4 वर्ष पूर्व आग लगी सब जलकर राख हो गया। मगर सतगुरू की दया का क्या बखान करूं कि उस नोट को कुछ भी नहीं हुआ। सन् 2000 में उन्होंने इंडिया मोटर्स कं. जो कचहरी रोड पर थी की जमीन 1 करोड़ रू. में खरीदी। स्वामी जी को बताया। स्वामी जी ने कहा इतनी बड़ी रकम कहां से लाओगे। मैने स्वामीजी को बोला आपने ही तो दस रू. का नोट देते हुये कहा था कि जितना चाहिये जीरो लगा लेना। मैने तो ले लिया था अब 0 लगाने का वक्त आ गया है। सब हो जायेगा। आपका आशीर्वाद चाहिये।

बात आगे बढ़े उससे पूर्व उन्होंने बोला में अपनी पारिवारिक और वितीय रूचि के बारे में आपको बता दूं तो आप इस 1 करोड़ के सौदे की सही तरीके से व्याख्या कर सकेंगे। उन्होंने बताया उनका जन्म 23 जनवरी 1967 को हुआ था। वे अपने बेटे के नामकरण के बाद, जो उनका नाम पंडित ने रखा था, 'गौरान्ग' को लेकर स्वामीजी के आश्रम गये और उनको बोला स्वामीजी इसको आप कोई नाम सुझाइये तो स्वामीजी ने कहा इसको मेरा नाम दे दो। आज से इसका नाम स्वामी है। इसको स्वामी ही कहकर

पुकारना। आज भी उसका प्रचलित नाम स्वामी हैं सिर्फ शासकीय कार्यो में ही गौरान्ग का प्रयोग होता है। यह बात थी 1993 की।

अब बात हो रही थी 1 करोड़ की जमीन खरीदने की तो उसके लिये 20 करोड़ रू. की प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनी, शेयर होल्डरों को जोड़ा और कंपनी का नाम जब स्वामीजी से मांगा गया तो उन्होंने कहा स्वामी के नाम से ही कंपनी बनाओ। बेटा हुआ 93 में स्वामीजी ने नाम दिया स्वामी और 2000 में कंपनी बनी उसका नाम रखा स्वामी। अर्थात् स्वामीजी की दूर दृष्टि को भविष्य की जानकारी पहले से ही थी यह देख कर उनका मस्तिष्क बार बार स्वामीजी के चरणों में झुकता गया।

उनकी कंपनी बनी सन् 2000 में और 2006 तक उनके ऊपर 7 करोड़ का लोगों का ऋण हो गया था, जिसका वे 10 लाख रूपये प्रति माह ब्याज का भुगतान कर रहे थें। अंदर से टूट गये थे। वे स्वामीजी के पास आये और प्रार्थना की अब मेरे सिर के ऊपर पानी निकल गया है। मुझे स्वामी काम्प्लेक्स के माया जाल से आप ही निकाल सकते हैं। स्वामीजी ने बात सुनी, दो मिनट के लिये आंखे मूंद कर ध्यान में चले गये और फिर बोले कि जाओ तुम्हारा भला होगा।

उनके ऊपर 7 करोड़ का कर्ज था स्वामीजी ने कह दिया था भला होगा। उन्हें विश्वास था। स्वामीजी ने 20 दिसम्बर 2006 को रात्रि के 10 बजे महाप्रयाण किया था। उसके पूर्व 15 नवम्बर को उन्होंने अपनी एक प्रापर्टी बेची, सामने वाले ने बैंक से ऋण लिया और 19 नवम्बर को उनके एकांउट में रूपये आ गये। जिससे उनका बजट संतुलित हो गया।

उसके पूर्व में अपने काम्प्लेक्स का ऊपरी तल वे बेच चुके थे अब इन्होंने अपना भूतल बेचा, इससे उन्होंने अपने शेयर होल्डर्स का बकाया क्लीयर किया और ऊपरी तल उन्होंने फिर से वापस ले लिया जिसे आज रसोई रेस्टोरेंट के नाम से जाना जाता है। अर्थात् स्वामी के महाप्रयाण के पूर्व वे अपने समस्त कर्जो से मुक्त हो चुके थे।

एक बार जब वे स्वामीजी से मिलने संत हिरदाराम नगर आये थे तो स्वामीजी ने उनको कहा था अपने जेब में पैसे मत रखा करो। उन्होंने उनकी घड़ी, सोने की चेन, सोने की अंगूठियां जो पहनी हुई थी सबको उतरवा दिया था और कहा था पैसा अहंकार पैदा करता है इससे अपने पास मत रखा करो। उस दिन से उन्होंने जेब में पैसे रखने छोड़ दिये। अंगूठी, चेन, घडी सब उतार दी। अब उनके जेब में सिर्फ उनका परिचय पत्र और एक हीअरिंग एड की मशीन की बैटरी ही रहती है क्योंकि उनको सुनने की कुछ समस्या है। स्वामीजी ने कहा था उनको सब 90 को 100 में बदलना चाहते है। जिसके पास 90 रू. हैं वो सौ की जुगाड़ में है। जिसके पास 90 हजार है वो एक लाख के लिये परेशान है और जिसके पास 90 करोड़ भी होंगे तो उसे संतुष्टि नहीं होगी वह उसे 1 अरब में बदलना चाहेगा। मेरे मन में सवाल आया तो मैंने उनसे पूछा कि आप पैसा नहीं रखते कभी आवश्यक्ता नहीं पड़ती? तो वे बोले पेट्रोल नौकर भरवाकर आते हैं। क्लेम ले लेते हैं। कभी गाड़ी पंचर हो गई तो मैं आटो से आ जाता हूं यहां उसको भुगतान हो जाता है। परिवार के साथ जाता हूं तो श्रीमती साथ होती हैं उनके पास पैसे होते हैं। मगर मेरे को स्वामीजी ने कहा था पैसे मत रखो और मैं नहीं रखता, न रखूंगा कभी। आज जिस जगह आप बैठे हो 7 करोड़ का कर्ज उतारने के बाद भी यह उससे तीन गुना ज्यादा करोड़ों की प्रापर्ट्री मेरी अपनी है। जून 2003 में इन्होंने केबल के व्यवसाय में जाने की योजना बनाई। स्वामीजी के पास गये। स्वामीजी ने सुनकर कहा किस धंधे में घुस

रहे हो? अच्छा नहीं हैं, बच्चे बिगड़ेंगे तो? मैने स्वामीजी से कहा मैं तो काफी लागत लगाकर सामग्री खरीद कर चुका हूं तो उन्होंने कहा देखो, मगर तुम को इसमें हानि ही होगी।

स्वामीजी ने एक बार उनको बुलाया जाओ उस केबल वाले को बुला के लाओ उसके पास पूरा सैटअप होगा टीवी का। वे गये स्वामीजी तब पम्पलेट वगैरह छपवाकर के सफेद कपड़े पहनने के लिये लोगों में जागरूकता पैदा करने का प्रयास कर रहे थे। तब उन्होंने उनसे कहा कि तुम बताओ इस वातावरण को निर्मित करने में क्या सहायता कर सकते हो? जो कर सकते हो करो। उन्होंने अलग अलग समूह में लोगों को बुलाया, सफेद चादर पर धवल वस्त्र पहने हुए लोग आये सबने अपने अपने विचार व्यक्त किये कि सफेद रंग तो शांति का प्रतीक, दोस्ती का प्रतीक, होता है दुश्मनी को त्यागकर, आगे बढ़ने का। हास्पीटल में नर्सें सफेद रंग के कपड़ों में सबके लिये पूजनीय देवी स्वरूपा होती हैं। उन्होंने एक सीडी बनाई। स्वामी जी टीवी तो देखते नहीं थे मगर उनको सीडी दिखाई तो उस मीटिंग में एक सरदार जी थे वे कपड़े तो सफेद पहन कर आये थे मगर पगड़ी उनकी काली थी। स्वामी जी ने पूछा यह काली पगड़ी पहन कर आया है तो इसकी बातें भी नकारात्मकता से भरी हुई होंगी। और वास्तव में ऐसा ही था तो उन्होंने कहा कपड़े और उनके रंग वगैरह भी हमें प्रभावित करते हैं। अब दुबारा फिर मीटिंग में बुलाओ तो इसको बोलना यह सफेद पगड़ी पहन कर ही आये। जब फिर से वीडियो बनी तो स्वामीजी को वह बहुत पसंद आई और उसकी लाखों प्रतियां उन्होंने बनवाकर अपने अनुयाइयों के जरीए समाज में बांटी।

बैरागढ़ की कुटिया पर जब सीडी अंतिम रूप में बनकर पहुंची तो कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर स्वामीजी सीडी देख रहे थे। वे बहुत खुश हुये और सबको बोला देखो इस लड़के ने कितने सुंदर ढंग से इस कार्य का संपादन किया है। दिल खुश हो गया और उन्होंने हंसते हुए सबको ताली बजाने को कहा और उन्होंने स्वंय भी तालियां बजाईं। उधर स्वामीजी तालियां बजवा रहे थे उधर उनके दुःख दर्द दूर हो रहे थे। एक व्यक्ति से पैसे लिये हुए थे, बड़ी ब्याज दर थी उसे वे कंपनी के शेयर या तीन दुकानों का सौदा करने के लिये कह रहे थे, मगर वो मान नहीं रहा था। वे तीन दिन से सही तरीके से सो नहीं पा रहे थे मगर ठीक उसी समय उन तीन दुकानों का सौदा हो गया और वे कर्ज मुक्त हो गये। संतनगरी के कार्यकर्ताओं ने जब उनको स्वामीजी की तालियों वाली बात बताई और पूछा कि क्या पिछले 2–3 घंटे में आपके साथ कुछ अच्छा घटित हुआ है? वे निरूत्तर हो गये, आंखें भर आई, गला रूंध गया और जो मनचाही हुई थी उसका वर्णन कर दिया।

वे सन् 1997 में स्वामीजी के पास गये और उनके सामने इच्छा ज़ाहिर की कि अजमेर में एक वृद्धाश्रम बनाना चाहिये। स्वामीजी ने कहा कठिन कार्य है, बनाना आसान है संचालन कठिन है। फिर भी बैरागढ़ जाओ और जाकर देख आओ। हरी चंदनानी जी, कंवलप्रकाश जी और सत्यसाई बाबा मंदिर के ट्रस्टी महेश तेजवानी जी गये थे। स्वामीजी ने 1100 रू दिये इस कार्य के लिये। सिद्धभाऊ ने कहा वृद्धाश्रम खोल रहे हो मगर ऐसा न हो कि आपको वृद्धाश्रम में रहना पड़े। हम लोगों ने प्रयास शुरू किये एक जगह भूमि पूजन भी किया, पहले से संचालित किसी दूसरे वृद्धाश्रम वालों के साथ जुड़े भी मगर हम दो कदम आगे बढ़ते परमात्मा हमें तीन कदम पीछे धकेल देते, मगर स्वामीजी के दिये 1100 रू. हमारे पास थे हमें विश्वास था कि कार्य होना ही है। हो

जायेगा ऐसा विश्वास था। अचानक एक दिन मोतीराम जी आये और बोले आपसे एक काम है। मैंने कहा बताओ यदि संभव होगा तो हम आपकी मदद जरूर करेंगे। तब उन्होंने बताया कि हमारी ट्रस्ट ने करोड़ों रूपये की लागत से एक अमरापुर सेवा आश्रम (वृद्धाश्रम) बनवाया है, तीन मंजिला भवन है। पूर्णतः सुसज्जित है। हम चाहते हैं कि उसका संचालन आप अपने हाथ में ले लें। मैंने कहा मैं अकेला कैसे कर सकता हूं। इसके लिये 10–15 लोगों की टीम बनेगी, समय देना पड़ेगा, रिकरिंग खर्चे होंगे। उन्होंने कहा रिकरिंग खर्चों की चिंता मत करो जिन्होंने बिल्डिंग बनवाई है वे करेंगे। फिर 10–15 लोगों की मीटिंग बुलाकर एक कमेटी बनाई गई। हरी चंदनानी जी, कंवल प्रकाश जी एवं महेश तेजवानी जी को न केवल वृद्धाश्रम के संचालन के पद दिये गये बल्कि उनको मूल पारिवारिक ट्रस्ट में भी जोड़ा गया है।

1996 में डां. गोपाल बदलानी जी के सहयोग से यूरोलाजी कैम्प लगाया गया। स्वामीजी ने उनसे पूछा क्या तुम्हें लग रहा है कि व्यवस्थाएं ठीक से चलेंगी तो उन्होंने कहा आप हमारे पीछे खड़े हैं तो फिर हम चिंता क्यो करें। सब अच्छा ही होगा। उन्होंने कहा इस कैम्प की जिम्मेदारी मैं आपको देता हूं जब जब यह लगेगा पेपर पर भले ही किसीका नाम हो मगर मार्गदर्शन तुम दोगे, बगैर नाम पद की लालसा रखते हुए। तब से वे इस सेवा का अपने ग्रुप के साथियों के साथ निर्वहन कर रहे हैं। वे शिविर में चाय भी अपने खर्चे से पीते हैं। इतना तक कि वृद्धाश्रम में भी वे दूध चाय पत्ती, शक्कर, अदरक खुद की ले जाते हैं सिर्फ वहां के कर्मचारी उनको बना के देते हैं। तब मैंने उनसे पूछा फिर कल आपने मुझे आश्रम पर चाय पिलाई थी वोले वो भी आश्रम के पैसों से नहीं थी। स्वामीजी रात्रि को किसी भी समय आपरेशन थियेटर पर आ जाते थे। कभी 4 बजे, कभी 2 बजे कभी 3 बजे। कोई निश्चित समय नहीं था। आते से ही कहते थे उसको तकलीफ है। हमें नहीं पता पड़ता था, मगर स्वामीजी को पता पड़ जाता था। वे कहते थे जाओ मरीजों की सेवा करो, उनके पांव दबाओ। हम दबाते थे उनके पांव दबाते दबाते हमारी दिन भर की थकान दर्द सब अपने आप उतर जाता था।

उन्होंने बताया कि संत नगरी से निकलने के बाद हनुमान जी पहले भीलवाड़ा फिर हरिद्वार रहे और उसके बाद उनको उज्जैन में महामंडलेश्वर बनाया गया वहां से वे उनको अजमेर लाये, बूढ़ा पुष्कर में उन्होंने आश्रम के लिये जमीन ली और स्वामीजी की आदमकद प्रतिमा बनवाना शुरू की। इस बीच उन्होंने कुटिया के बाहर आकर अपने गुरू के स्थान पर माथा टेका। तभी उदासीन आश्रम के राममुनी निकले उनकी नजर हनुमान भाऊ पर पड़ी और बोले आपको मैं 12 वर्ष से खोज रहा हूं, आप हैं कहां! उनको अपने आश्रम ले गये और अपने आश्रम का उन्हें विधिवत उत्तराधिकरी घोषित कर दिया। 13 बीघा में बना वह आश्रम उनको मिला जब स्वामीजी की मूर्ति बनना शुरू हुई ते मैने उनसे पूछा कि इस मूर्ति को आप बनवा तो रहे हैं मगर लगवायेंगे कहां? बोला जिसकी मूर्ति बन रही है उसे ही तय करना है कि उन्हें कहां स्थापित किया जाये। मेरी हस्ती थोड़े ही है कि मैं उनके लिये स्थान का चयन कर सकूं। उनके पास स्वामीजी के कुछ अंतिम अवशेष थे। वह मूर्ति थी तो उनको स्थापित करना था। बात चली तो यह तय हुआ कि उदासीन आश्रम में ही एक हाल का निर्माण करवाकर वहां स्थापित की जाये। इसके पूर्व श्री कंवलप्रकाश जी को राजस्थान धरोहर पेनोरोमा प्राधिकरण का सदस्य मनोनीत किया गया था। इनके निर्देशन में राजस्थान की चालीस पेनोरोमा को सजाने संवारने का

दायित्व इन्हें दिया गया। ये अचंभित थे कि आखिर उनको क्यो पेनोरोमा बनाने के क में सम्मिलित किया गया। जब कि यह उनका कार्यक्षेत्र ही नहीं था। मगर उन्होंने दायित्व भलीभांति निर्वहन किया।

जब स्वामी जी की मूर्ति के बारे में बात चली कि शायद इसी पेनोरोमा का अनु प्राप्त करने के लिये ही उन्हें यह कार्य मिला होगा। यह स्वामीजी की इच्छा के बगैर ही नहीं सकता था। 42 संग्रहालय बनाने के लिए मेरे द्वारा राजस्थान के सशक्तिकरण लिए तकरीबन एक लाख कि.मी. से ज्यादा की यात्रायें की। मूर्ति बनाने वाले, डिस् करने वाले, पी ओ पी का काम करने वाले, इतिहास खंगालने वाले सब तरह के लोगों संपर्क में आया और उस काम में निपुणता आती गई। वसुंधरा राजे, शेखावत जी सबके चहेते बन गये।

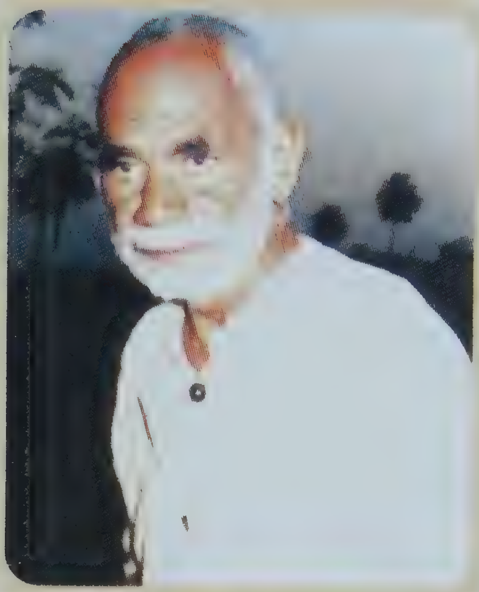
हनुमान सांई की सोच थी कि 10X10 का एक कमरा बनाया जाये और उस स्वामी जी की आदमकद प्रतिमा और कुछ पुराने फ़ोटोग्राफ्स लगाये जायें। मगर ज कार्य शुरू करने का विचार बना तो 40X80 का हाल बन गया। और फिर स्वामीजी पेनोरोमा का निर्माण हुआ। अब मुझे समझ में आया कि आखिर मुझे राजस्थान धरो पेनोरोमा प्राधिकरण का सदस्य क्यों बनाया गया था। किसके इशारे पर बनाया गया थ उन्होंने मुझे स्वामीजी की मूर्ति भी भेंट की जो अनेक दिनों से मेरे जेहन में थी कि अ मंदिर में स्थापित करूंगा। मैंने तो **'जो जो मांगू ठाकुर अपने से सोई सोई देवे'** अपने जी में देखा है। उन्होंने एक डेस्क कैलेंडर भी दिया जिसमें हर तारीख पर स्वामी जी जीवन दर्शन के छोटे–छोटे वाक्य उद्घृत हैं। बड़ा ही सुन्दर, संग्रहणीय, प्रेरणा प्रद करने वाला कैलेंडर था हर दिन पर स्वामीजी का सुन्दर चित्र मुद्रित किया हुआ था।

उन्होंने एक किताब भी दी जो उनके मार्गदर्शन में प्रकाशित हुई थ सिंधी/अजमेर जिसमें अजमेर के संत, नेता, समाज सेवियों, इतिहास के साथ 16 हज परिवारों का नाम, पता, व्यवसाय, मोबाइल नं. दिये गये थे संग्रहणीय अंक था।

उनके कम्प्यूटर में स्वामीजी के 10 हजार फ़ोटो ग्राफ्स, अनेक वीडियो का अन् संग्रह था।

उन्होंने कहा कि आप किताब लिखकर मेरी मनोकामना पूरी कर रहे हैं। संतो लिये यह जीवन समर्पित है। आप जब कहो मैं हमेशा तैयार रहूंगा। तो मैंने उनको आ किया कि मैं किताब लिख लूंगा मगर उसको सजाने संवारने एवं प्रकाशन का काम अ करेंगे जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया उन्होंने तो यहां तक कहा कि किसी अ साहित्यकार का सहयोग लेकर उसमें लेखन त्रुटियां भाषा प्रवाह को भी सही करवा दें पेनोरोमा की डिजाइन 31 दिसम्बर 2017 को बन कर तैयार हुई। पेनोरोमा बनाने के लि बच्चों ने अपनी गुल्लक तोड़कर अपने पैसे दिये। उन बच्चों में से, जिनकी स्वामीं जी आस्था थी, किसीने 500, रूपये किसी ने 600, किसी ने तो 100 ऐसे करके अपने इक किये हुए पैसे खुशी–खुशी इस पावन कार्य के लिये दिये।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी की जो मूर्ति बन रही थी उसके लिये उन्हें 32 ब अजमेर से जयपुर जाना पड़ता था ताकि वह मूर्ति साक्षात और सजीव लगे।



संत हिरदाराम जी साहेब



मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान आशिर्वाद लेते हुए



संत जी अनुयाईयों के बीच



अध्ययन करते स्वामी जी



संत जी ध्यान मुद्रा में



संत जी की वानर सैना



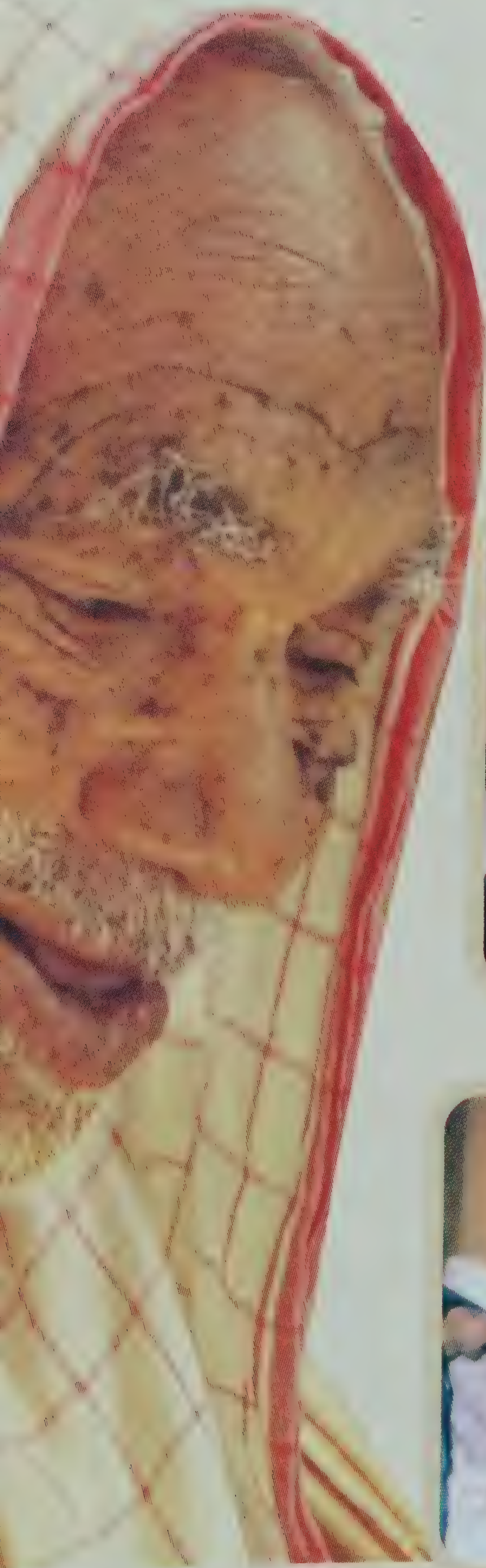
शक्ति साधना में स्वामी जी



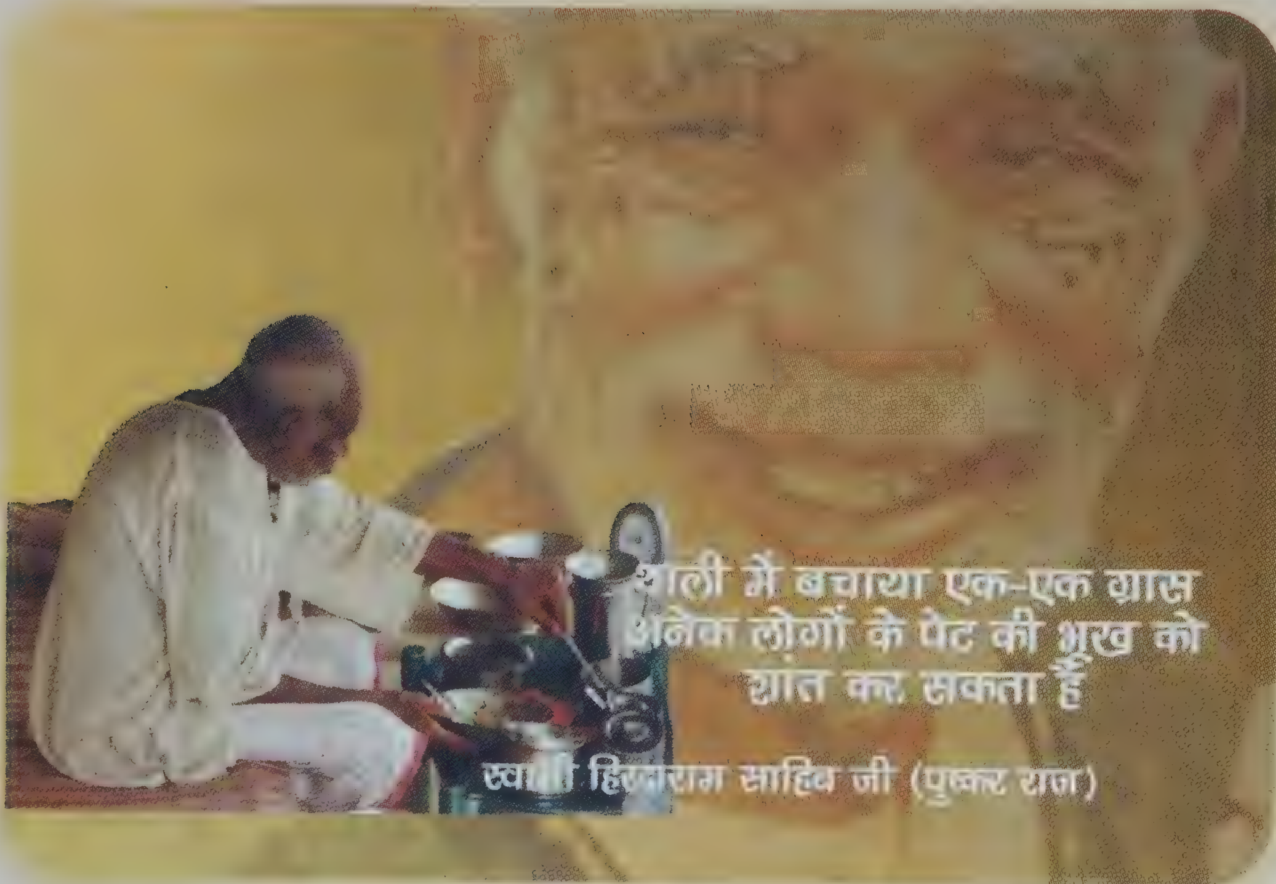
भण्डारा वितरण करते हुए स्वामी जी



दर्वेश शीतल सिंह गुरुबाणी का पाठ करते हुए



संत जी


थाली में बचाया एक-एक ग्रास
अनेक लोगों के पेट की भूख को
शांत कर सकता है
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


सेवा का नशा,
समस्त नशों से बड़ा है
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


एक ज़रूरतमंद बालक को शिक्षित कर
आप शिक्षा की अखंड ज्योति
जला सकते हैं
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


पराई कन्या का विवाह कराने पर
आपके परिवार में सुख व शांति
का विस्तार होगा
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)

स्वामीजी के दर्शन चाहो तो सेवा करो

श्री हरी चंदनानी
अजमेर मो. 9649750811

श्री हरी चन्दनानी वैशालीनगर, अजमेर स्थित आयकर कॉलोनी में रहते हैं। पहले दिन फोन किया तो पता चला कि वे जयपुर में है। दूसरे दिन उनसे समय लिया तो उन्होंने सबेरे का समय दिया और कहा आप मेरे पास आयें और नाश्ता मेरे साथ ही घर पर करें। मैंने कहा ठीक है, उन्होंने पूछा बेतकल्लुफ होकर बताइये नाश्ते मे आप क्या पसंद करेंगे। मैंने कहा सिंधियों का मीठा नाश्ता जो भी आपको पसंद हो, दूसरे दिन सबेरे निश्चित टाइम पर उनके घर पहुंचा। अपनेपन से मिले। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। श्री जगदीश वच्छानी जी के नेतृत्व में 20–25 सेवादारों की टीम होती थी जो स्वामीजी के सेवा कार्यों को संचालित करते थे। जीव सेवा समिति के सचिव पद पर वच्छानी जी और अध्यक्ष पद पर कालीचरण जी का नाम होता था। अच्छा कार्य चल रहा है। स्वामीजी के जन्म दिवस, निर्वाण दिवस गुरूनानक जयंती के अवसर पर संत नगरी से 10–15 लोगों की टीम आती है।

वे 1992 में स्वामीजी से जुड़े। वे अजमेर के यूआईटी में इंजीनियर के पद पर काम करते थे UIT में देश बजाज जी एवं जगदीश वच्छानीजी आते रहते थे। उनकी मंशा थी कि जीव सेवा समिति के तत्वाधान में शहर में प्याऊ (जलाश्रम) की व्यवस्था उन्हें सौंपी जाये। मगर उनका काम नहीं बन रहा था। नवम्बर दिसम्बर 1992 में स्वामीजी ने उनको आश्रम आने का निमंत्रण भेजा। हरी चंदनानी जी की ननिहाल खिलरानी परिवार सिंध में भिरियन में रहते थे और संत जी का आश्रम और जन्म स्थान भी भिरियन में ही था। इसलिये उनके घर में संतों के बारे में समय–समय पर बातें होती रहती थीं। सन् 1962 में जब चाइना ने भारत पर आक्रमण किया रात को ब्लैक आऊट होता था तब संत जी अजमेर आते थे और अपनें अनुयाइयों के घर रामधुनी लगवाते थे तब हरी चंदनानी जी की आयु बमुश्किल 7 वर्ष थी। संत जी भी रामधुनी में स्वयं भी उपस्थित रहते थे।

एक बार 1992 के नवम्बर दिसम्बर में जगदीश वच्छानी जी, सचिव जीव सेवा समिति, अजमेर घर पर उनको बुलाने आये और कहा कि संतों ने आपको पुष्कर आश्रम में बुलाया है। मैं उनके साथ पुष्कर आश्रम चला गया। उसके पूर्व साधू नानकानी जी भी उनको आश्रम चलने के बारे में कहते थे। उन्होंने सुन रखा था जो भी स्वामीजी के आश्रम में दर्शन करने जाता था उनको प्रसाद देकर कहते थे जाओ, अब दर्शन हो गया। इसलिए वे उस तरीके से जाना नहीं चाहते थे कि जाऊं और प्रसाद लेकर वापस आ जाऊं। स्वामीजी को बताया गया कि ये हरी चंदनानी जी है और यूटीआई में इंजीनियर के पद पर कार्य करते है। ये चाहें तो आपके प्याऊ का संकल्प पूरा करवा सकते हैं। बातों का सिलसिला जब चला तो स्वामीजी ने कहा कि आपकी माता का नाम कौशल्या देवी है। आपके पिताजी का आपकी बाल्यवस्था में जब वे मात्र 25 वर्ष की थीं तो देहावसान हो गया था। वे मेरी पुत्री के समान हैं। उस नाते आप हमारे नाती हुये। उन्होंने विधायक जी से कहा अब तो मैं इसका नाना हूं यह मेरा नाती हुआ। अब आपकी सिफारिश की आवश्यकता नहीं है। अब यह खुद काम करवा देगा। तब स्वामीजी ने कहा कि हमने अजमेर शहर में प्याऊ लगाने का सोचा है आप इस संकल्प में सहायता करो। आज

रविवार है अैर कल सोमवार को आप प्रकरण को आगे बढ़ाओ और मंगलवार को स्वीकृति चाहिये। मुझे लगा यह कैसे हो सकता है। यह प्रकरण तो जिलाध्यक्ष कार्यलय से स्वीकृत होना है और वहां की जिलाध्यक्ष अदिति मेहता जी बड़े अनुशासनात्मक तरीके से काम करती है। मैने स्वामीजी से एक हफ्ते का समय मांगने का विचार किया उसके पूर्व ही स्वामीजी ने कहा कल सोमवार है, तुम सच्चे दिल से प्रकरण को आगे बढ़ाओ और मंगलवार तक प्रकरण की स्वीकृति लेकर आओ। असंभव लगने वाला कार्य था, मगर वे सोमवार को ऑफिस आये, प्रकरण बनाया और उसे जिलाध्यक्ष ऑफिस भिजवा दिया और ऐसा चमत्कार हुआ कि मंगलवार को प्रकरण स्वीकृत हो गया और अजमेर शहर का पहला प्याऊ शास्त्री नगर में स्थापित किया गया। जिसका उद्घाटन स्वयं स्वामीजी के करकमलों से हुआ। उसके बाद अजमेर नगर में 25 प्याऊओं का निर्माण किया गया। उनके निर्माण कार्य का दायित्व दयाल मूलचंदानी जी को सौंपा गया और बाद में प्याऊ पर पानी की व्यवस्था और संचालन की जिम्मेदारी उन्हें दी गई। याऊ में फ्रिज लगाना, पानी की व्यवस्था करना, बिजली कनेक्शन करवाना, टंकियों का इंतजाम, रात्रि को भी जरूरतमंदों को पानी मिल सके उसके लिए बाहर नल लगवाने का कार्य किया गया। इस कार्य से अजमेर निवासियों को बहुत राहत मिली। अजमेरवासी इस कार्य के लिये स्वामीजी के शुक्रगुजार हैं। 1993 से 1995 तक वे स्वामी जी के सतत संपर्क में रहे और हर तरह की सेवा की। यह कार्य सुचारू रूप से स्थापित हो गया है और स्वतः स्फूर्त तरीके से चल रहा है। इसलिये उनका कार्यभार कम हो गया है।

सन् 1993 में संतों ने आशागंज में कार्यकर्ताओं की मीटिंग बुलाई और कहा कि यह वर्ष पानी के हाहाकर के लिये जाना जायेगा। इतनी कमी होगी कि पानी के लिये झगड़े होंगे और गोलियां तक चलेंगी। आशागंज में गागनदास का लकड़ी का टाल था। उसमें एक कुँआ था। स्वामीजी ने श्री गागनदास से कहा कुंए में मोटर लगाओ; बाहर जानवरों के पीने के लिये पानी का कुंड बनवाओ ताकि सभी को राहत मिल सके। श्री गागनदास जी हाथ जोड़ कर बोले स्वामीजी इस कुंए का पानी पीने लायक नहीं है। उसमें से पेट्रोल और डीजल की बदबू आती है। कारण यह है कि कुंए के अंदर ही कुछ झिरियां है उनसे इस तरह की समस्या है। स्वामी जी ने वहीं खड़े खड़े एक लोटा जल लिया, अरदास की और पानी का लोटा कुंए में उड़ेल दिया और चमत्कार हुआ कुंए का पानी निर्मल हो गया। आज भी उस कुंए का जल लोग पीते हैं और स्वामीजी के इच्छानुसार वहां जानवरों के लिये पानी का कुंड बना हुआ है। स्वामीजी ने 1993 के जनवरी माह में ही पानी की कमी की बात कही थी और वास्तव में वह अदभुत रूप से सत्य हुई। अजमेर जिले की ब्यावरा तहसील में 4–5 दिन बाद ही नल आते थे और गोलियां भी चलीं। कितनी दूर की बात स्वामीजी जान लेते थे!

उसके साथ ही उन्होंने स्वामीजी के सान्निध्य में यूरोलाजी, नेत्र शिविर, गरीबों को राशन वितरण इत्यादि सेवा कार्यों में सक्रिय सहयोग दिया। दुबई से श्री विक्योमल सर्राफ बोरे भर–भर कर उपयोग किये हुये कपड़े एकत्रित कर भेजते थे। उनको अलग–अलग कराना, प्रेस करवाकर जरूरत मंदों तक पहुचाने का कार्य किया जाता था। श्री विक्योमल सर्राफ, आसनानी जी एवं कालीचरणजी का अजमेर पर वरदहस्त रहा।

गुरूवाणी के उपासक ग्रंथी श्री शीतलसिंह जी अजमेर आश्रम आते रहते थे। अमृतवेला उठकर नहाधोकर वे गुरूवाणी का पाठ करते थे। एक बार अजमेर के 8–10

सेवा व्रतधारी संत हिरदाराम नगर आये थे ओर संतों के साथ धूप में बैठकर संतो से बात कर रहे थे। संत दीवाली के बाद संत नगरी से आते थे और होली के बाद जाते थे। उसी समय की बात है। जब अरदास पूरी हुई तो स्वामीजी ने बताया संत शीतलसिंह महाप्रयाण को गये वे विमान में आये थे, मैंने उनको जाने की आज्ञा दे दी, वे मोक्षगति को प्राप्त कर निजधाम को प्रस्थान कर गये। उन्होंने सिद्धभाऊ को बुलाकर कहा कि शीतलसिंह के परिवार को फोन कर बताओ कि शीतलसिंह मेरे पास आये थे, मुझसे अंतिम विदाई लेने के लिये, अब वे मोक्षधाम को चले गये। आप लोग रोना नहीं ओर 12 दिन तक सुखमनी का पाठ करो। सिद्ध भाऊ ने महू में उनके बेटों को स्वामीजी का संदेश दिया वे भी सुनकर स्तब्ध रह गये कि उनको शरीर त्याग किये हुए 5–10 मिनट ही हुए हैं संतों को कैसे पता पड़ा। ऐसे थे हमारे संत जी।

संत जी की अजमेर नगर को सबसे बड़ी सौगात दयाल वीणा हरजानी डायग्नोस्टिक सेन्टर है जहां पर बहुत ही कम लागत पर स्वास्थ्य सबंधी जांचें की जाती हैं। वे शुक्रगुजार हैं, डॉ. गोपाल बदलानी जी के, जो हर साल यूरोलाजी कैम्प में अमेरिका से आकर 100–125 लोगों के ऑप्रेशन करते हैं।

उनके नानाजी दयालदास खिलरानी, उनके भाई छबुलदास खिलरानी जी स्वामीजी के सेवा कार्यो में अति सक्रिय रूप से भाग लेते थे। भेरूमल भंभानी आर.एम.एस. में सर्विस करते थे। वे अक्सर स्वामीजी की कुटिया जाते थे सेवा करने के लिये। उनको 3 बेटियां थी। वे हर बार स्वामीजी को बताते थे स्वामीजी बेटी हुई है। तीसरी बेटी होने पर वे बहुत उदास से कुटिया पर आये और स्वामीजी को बताया। स्वामीजी ने एक बार भेरूमल जी को बोला भेरू अगली बार जब अजमेर से आओ तो एक मटका (मटु) लेकर आना। उन दिनों पुष्कर जाना इतना आसान नहीं था। बस से जाना पड़ता था। साल में 2–3 बसें खाइयों में गिर जाती थीं। स्वामीजी की आज्ञा भेरूमल कैसे टालते, वे मटका लेकर पुष्कर पहुंचे स्वामीजी ने कहा धोकर मेरे कमरे में रख दो। उसके बाद उनके घर में पुत्र की प्राप्ति हुई। पहला पुत्र सी.पी.डब्ल्यू.डी. में काम करता था और दूसरे वासदेव भम्भानी ने राजस्थान विद्युत मंडल में नौकरी की और 4 वर्ष पूर्व वो भी सेवानिवृत्त हो चुके हैं। ऊपर के दोनो किस्से 1955 के आस पास के थे। भेरूमल भम्भानी ने लोगों को कैसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई बताया तो लोग ढेरों मटके लेकर पुष्कर आने लगे तो स्वामीजी ने भेरूमलजी को बहुत डांटा तब उन्होंने लोगों को बताना बंद कर दिया। उनकी चाह थी उनको एक पोता हो। बातों में बात निकली तो उनको भेरूमल भम्भानी के बारे में बताया कि कैसे स्वामीजी के द्वारा दो पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो वे भी बाम्बे मलाड से अजमेर आई और एक मटका खरीदा और फिर धोकर पानी भरकर पुष्कर आश्रम में रख आईं। स्वामीजी तब इस नश्वर संसार को छोड़कर महाप्रयाण कर गये थे। उनको भी पौत्र रत्न की प्राप्ति हुई। स्वामीजी अभी भी अपनी शक्तियों के साथ विराजमान हैं।

चमत्कारिक चवन्नी

श्री मोहनलाल बूलचन्दानी
अजमेर मो. 9414365757

श्री मोहनलाल बूलचन्दानी पिता श्री घुमणसिंह जी एक बार संतो के संग में रहते

हुए मैने उनके मुखारबिंद से और सिद्धभाऊ से घुमणसिंह जी की तारीफ सुनी थी। वे संतो के प्रिय अनुयाइयों में से थे। पुष्कर मे स्वामीजी की सेवा मे लगे रहते थे। आज 73 वर्ष की उम्र में उनके परिवार में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अजमेर, उदयपुर के अनुयाइयों से मिलने के बाद अफसोस महसूस कर रहा हूं कि मैं अभागा क्यों रह गया स्वामी जी के कुटिया के पास रहने के बाद भी उनके परमात्मा स्वरूप के बारे में न किसी से सुना, न किसी ने बताया। मैं उनको सिर्फ सन्यासी ही समझता था वह भी ऐसा सन्यासी जो समाज की सेवा करने के लिये अवतरित हुआ है। वे बूढ़े, बच्चे और बीमार की सेवा में तन–मन–धन से लगे रहते थे और आने वाले हर अनुयायी से कहते थे कि मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं है परन्तु तुम सेवा पथ पर बढ़ोगे, तो तुम्हें ईश्वर के दर पर वह हर चीज मिलेगी जो तुम सोचोगे। अपना अमूल्य समय निकालकर देश से विदेश से मेरे पास दर्शन करने आते हो, मिलने आते हो लेकिन अगर तुमने सेवा कार्य नहीं किये तो तुम्हारा आना व्यर्थ है। अपना समय बर्बाद मत करो। जितना समय तुम मेरे दर्शन करने के लिये निकालकर आये हो उतना समय तुमने सेवा में लगाया होता तो मुझे ज़्यादा खुशी होती। अजमेर में, उदयपुर में जिनसे भी मिला उन्होंने बताया कि स्वामीजी संत नहीं भगवान के साक्षात अवतार थे। उनके घरों में संतजी का मंदिर, उनके कपड़े, उनके खड़ाऊ उनके दिये हुए उपहारों की मैंने आरती उतारते हुए देखा है। मुझे सौभाग्य मिला है ऐसे परिवारों में जाने का, उनके चरणों को छूने का, उनके घर के उस स्थान पर बैठने का जहाँ स्वामीजी बैठते थे। धन्य हो गया मेरा जीवन। जिससे भी मैने बात की कि मैं संत हिरादाराम साहिब जी के विषय में किताब लिख रहा हूं वह खुश हो गया और उनका प्यार, स्नेह, आदर पाकर अपने आपको धन्य समझने लगा। उनको बताया कि सिद्धभाऊ से आज्ञा लेकर ही किताब लिख रहा हूं, संतों की कुटिया के पास उस मकान में रहता हूं, जिसका प्लाट स्वामीजी द्वारा मुझे दिया गया था। वे सब मेरे लिये अजनबी थे न मैंने कभी उनका नाम सुना था, ना ही मिला था फिर भी पहली बार में ही अत्यंत आत्मीयता से मिले। मेरे पास आते तो शायद इतनी आत्मीयता मैं उनको नहीं दे पाता। जिनसे भी मिला वे सभी आयु में शायद मुझसे छोटे थे। उनके शब्दों में कहीं भी बनावट नहीं थी। हर शब्द उनके हृदय की गहराइयों से निकलता था।

उनके परिवार, उनके सुपुत्र से मुलाकात हुई। बहूरानी भी थी। उन्होंने बात शुरू करते हुये बताया कि 1951 में उनसे बड़े भाई थे। उम्र 2 वर्ष के आसपास रही होगी, घर में सफाई का काम चल रहा था, पास में सफाई में काम आने वाले सामान रखे थे। उसमें एक एसिड की बोतल भी थी। भाई का नाम मोहन था, वह आया और आकर के एसिड वाली बोतल उठाई, मुंह से लगाई और थोड़ी मात्र में पी गया। हॉस्पिटल उसको ले जाया गया परन्तु अथक प्रयासों के बाद भी उसे बचाया नहीं जा सका।

संत जी हमारे घर आये, दादी जी का रो–रो कर बुरा हाल था। उस समय वे अजमेर की खारी खुई मोहल्ले में रहते थे। संतजी ने दादी से कहा, चिंता मत करो तुम्हारा मोहन, फिर तुम्हारे घर आयेगा और इसी घर का पानी पियेगा। ऐसा बोलकर संत जी चले गये। संतजी चले तो गये परन्तु संत जी बैचेन होकर सोचने लगे कि मैं बोलकर तो आ गया, तुम्हारा मोहन वापस आयेगा, मगर उसके लिये मुझे कुदरत का कोई इशारा तो चाहिये कि मोहन आयेगा या नहीं। वे जंगल में चले गये ओर मन में विचार किया कि जंगल में कहीं चवन्नी मिल गई तो यह संकेत होगा कि मेरी कही बात सत्य होगी। वे जंगल में चले गये मगर जंगल में चवन्नी कैसे मिलती! डेढ किलोमीटर जाने के बाद

उनको एक घुंघरु मिला जो कि बकरियों के पेरों में बांधा जाता है। अब उनको विश्वास हो गया कि चवन्नी भी मिलेगी। फिर एक डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद उनको चवन्नी (आज के 25 नए पैसे) मिल गई। उनको अब पक्का विश्वास हो गया। वह चवन्नी उन्होंने लाकर घुमणमल जी के परिवार में दे दी जो आज तक उनके पास सहेजकर रखी हुई है। आज से 71 वर्ष पूर्व की वह चवन्नी चमत्कारिक थी। संतों ने अपने हाथों से लाकर दी। वह उनके लिये अमूल्य धरोहर बन गई। उसके बाद उनका जन्म हुआ और नाम भी मोहन ही रखा गया।

संतों के पास जो भी श्रद्धालु दान सेवा कार्यों के लिये दे जाते थे, उसका पूरा लेखा जोखा नगद राशि वाला घुमणमल जी ही रखते थे और जहां जहां उसकी जरूरत होती थी उनको दे देते थे। उन्होंने बताया कि हांगकांग से दयाल हरजानी जी आये थे आकर उन्होंने संतों से कहा कि मैं चाहता हूं कि अजमेर में एक चिकित्सा परीक्षा केन्द्र बने, जहां पर मुफ्त में या कम पैसे लेकर लोगों का चिकित्सकीय परीक्षण (डाईग्नोसिस) किया जा सके। बाहर तो अनाप शनाप पैसा लेते है। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को राहत मिलेगी। उन्होंने बताया कि स्वामीजी के पुष्कर आश्रम के लिये प्रारंभिक आर्थिक सहयोग जबलपुर के तुरियोमल, दिल्ली के संतदास पेसूमल और संत घुमणमल से मिला था। पुष्कर कुटिया का निर्माण 1954 में हुआ था। तब मोहनलाल जी की आयु 3 वर्ष थी। वे 1951 में जन्मे थे। उन्होंने बताया जिस घर में वे अभी रह रहे हैं। उसके गृहप्रवेश, उनकी शादी, उनके बच्चों के जनेऊ संस्कार सब में स्वामीजी स्वयं साक्षात रूप से विराजमान थे। उनका विवाह 1981 में हुआ। संत शीतलसिंह उनके घर में गुरूग्रंथ साहिब का पाठ रखने के लिये महू से अजमेर आते थे। उनके घर के एलबम में संतों के अनेक फोटो सुसज्जित थे। संत जी कभी फोटो नहीं खिंचवाते थे मगर उनका पहला फोटो उनके विवाह के समय खींचा गया था। मोहन जी की धर्मपत्नी इंदौर से, बहुएं, रतलाम और जयपुर से हैं।

संत जी 2004 में पुष्कर आये थे। उनकी माताजी संतों की सेवा करती थीं। वहां पर खाना भी बनाती थीं। संत हिरदाराम नगर में तो सेवकों का तांता लगा रहता है क्योंकि आश्रम वहीं पर है मगर पुष्कर का आश्रम अजमेर से दूर है तो सेवक चाह कर भी रोज नहीं जा सकते थे। संत जी जब आये तो माताजी उनसे मिलने गईं। दूसरे दिन फिर गईं संतों ने कहा माई आप कल आये थे, फिर आज आये हैं। मां ने आंखों में आंसू भर कर कहा पता नहीं फिर मिलना होगा या नहीं इसलिये आई हूं। संयोग देखिये कि 2004 में संतजी पुष्कर से गये तो फिर वापस नहीं आये। 20 दिसम्बर 2006 को रात्रि को 10 बजे जब स्वामीजी ने महाप्रयाण किया ठीक उसी समय उनकी माताजी के मुंह से चीख निकल गई और ढाई घंटे बाद वे भी महाप्रयाण कर गईं। कितना नजदीक थीं वे उस परमेश्वर के साक्षात अवतार संतों के, यह आम आदमी की समझ से परे है।

उनकी माताजी 20 दिसंबर 2006 को कोमा में चली गई थीं उनका नाम जमुना बाई था। जब संतजी का 10 बजे के आसपास महाप्रयाण हुआ उस समय वे चीखकर उठीं, होश में आईं फिर कोमा में चली गईं और रात्रि को 12 बजकर 10 मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस ली।

स्व. श्री घुमणसिंह जी सब रजिस्ट्रार के पद पर शासकीय सेवा में थे उनके दादा दयाराम जी सिंध प्रांत में मुख़्तियार के पद पर कार्यरत थे जिसे आज तहसीलदार कहा जाता है।

उन्होंने हैदाराबाद के जेसाराम भाग्या जी का एक किस्सा बताया कि जेसाराम भाग्या जी अपने घर में गुरूग्रंथ साहिब का पाठ करवाते थे। भाई सीतलसिंह और थांवरदास जी महू से जाते थे। एक बार उन्हें हैदराबाद से अमेरिका जाना था। सीधी हवाई यात्रा की सुविधा नहीं थी। हैदराबाद से लंदन और फिर लंदन से अमेरिका जाना पड़ता था। वे स्वामी जी से आज्ञा लेकर निकले। लंदन पहुंचे उनको लंदन में अपेक्षित रूप से ज्यादा समय लग गया तो जिस फ्लाइट से उन्हें अमेरिका जाना था उस की जगह उन्होंने अगली फ्लाइट से जाने की योजना बनाई बाद में पता पड़ा कि जिस फ्लाइट वे नहीं गये वह फ्लाइट क्रेश हो गई थी और उसमें से एक भी यात्री जीवित नहीं बचा था। वे इसे स्वामीजी का आशीर्वाद ही मानते हैं। उनकी बात सुनकर मुझे भी ऐसी ही घटना याद आ गई। संत हिरदाराम नगर से गोविन्द मनसुखानी पुष्कर गये थे स्वामीजी से मिलने के लिये। उसने बोला स्वामी जी बस का रिजर्वेशन किया हुआ है। बोले दूसरी बस से चले जाना। भला वह स्वामीजी की आज्ञा कैसे टाल देता। पता पड़ा कि जिस बस से वह जाने वाला था उसका एक्सीडेंट हो गया था। अनेक लोग ज़ख्मी हो गये थे। उन्होंने बताया कि संतजी महाशिवरात्रि और शरद पूर्णिमा उत्सव मनाते थे। उनके पास जो भी दान दक्षिणा आती थी वे अपने पास नहीं रखते थे। पूरा का पूरा पैसा समाज सेवा में लगा देते थे। वे त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने बताया कि अप्रैल 2021 में उनका पूरा परिवार कोरोना संक्रमण से पीड़ित रहा। उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हें पता है संतों के गुरूबाबा हरीराम अपनी गद्दी उनको सौपना चाहते थे मगर संतों ने लेने से इंकार कर दिया था तब उनके गुरूभाई शेवाराम को वह गद्दीनशीन किया गया। जब उनके गुरू ने उनको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहा तो उन्होंने कहा, घर बार छोड़कर सन्यास लिया है और फिर आश्रम में बैठकर मौज मस्ती करूं फिर सन्यास लेने का फायदा क्या? मुझे फकीरी में रहने दो और वे फकीरों की तरह ही रहे। जो भी उनको सेवा कार्यो के लिये मिलता था वे हाथ भी नहीं लगाते थे। सब पैसे सिद्ध भाऊ, हनुमान जी को दे देते थे। वे कहते थे सन्यासी वह जब वह मरे तो उसके पास अपने कफन के लिये भी पैसे न हो। नहीं तो वह संत नहीं ठग होता है।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी जब अजमेर प्रवास पर आते थे तो बोधराज के मंदिर में आकर रहते थे। 15–15, 20–20 दिन। हम लोग छोटे बच्चे थे। उनके घर पर संतों के लिये खाना बनता था। वे टिफन में भरकर ले जाते थे। यह सौभाग्य उनको प्राप्त हुआ।

उन्होंने वर्तमान में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की गतिविधियों से असंतुष्टि जाहिर की, मगर उन्होंने यह भी माना 1947 में जब हम लोग पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आये उस समय उन्होंने हमारी काफी सहायता की। उन्होंने सरदारों के द्वारा चलाये जाने वाले लंगरों एवं सेवा कार्यो की दिल खोलकर सराहना की।

हम न तुम दफ्तर गुम

डॉ. कन्हैयालाल ऋषि गोधूमल
ऋषि गोधूमल चेरिटेबल हॉस्पीटल,
पुष्कर राज(राज) मो. 7742920566

मुझे अनेक लोगों ने कहा था कि पुष्कर जाकर डॉक्टर कन्हैयालाल से जरूर

मिलना जो स्वामीजी के संसर्ग में बहुत रहे हैं। आपको उनसे स्वामी जी के बारे में अनेक वृतांत सुनने को मिलेंगे। सबेरे अजमेर से निकलकर पुष्कर पहुंचा और सबसे पहले आश्रम न जाकर सीधे ऋषि गोधूमल चेरिटेबल हॉस्पिटल चला गया। यहां पर वीना दयाल डायग्नोस्टिक सेन्टर के लिये सेम्पल लिये जाते हैं। साथ ही साथ यहां पर निःशुल्क होम्योपैथिक अस्पताल का संचालन भी होता है। हॉस्पिटल का दायित्व डॉक्टर कन्हैयालाल जी के पास है। बड़े ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। पास में ही उनका निवास स्थान था। वे अपनी निःशुल्क सेवायें अस्पताल को देते हैं। यह मेरी उनसे पहली मुलाकात थी। उस अस्पताल के प्रांगण में वह कमरा भी देखा जहां स्व. वासदेव तुलसियानी जी रहते थे। वे आज चल रहे सिस्टम से असहमत दिखे। आक्रोश उनकी वाणी में छलक रहा था। सत्यवादी थे, निडर थे, स्पष्टवादिता थी उनके व्यवहार में।

उन्होंने बताया आकाश, अग्नि, भूमि, जल, वायु पांच तत्वों का सृजन परमात्मा ने किया है जिससे वे पांच तत्व निकले वो ही तो परमात्मा है। परमात्मा सूक्षम तत्व के रूप में कण कण में विद्‌यमान हैं। वे घट–घट वासी हैं। उनके बिना संसार में कुछ भी नहीं हैं। वे सर्वव्यापक हैं। गुरूनानक देव जी ने कहा है।

पाताला, पाताल लख आगासा आगास, ओड़क ओड़क भालि थके,
वेद कहिन इकबात सहस अठारह कहनि कतेगा, असुल इक धातु लेखा होइत लिखीए,
लेखे होइ विकारसु, नानक वड॒ा आखीए आपे जाणै आपु

हम शरीर नहीं है, हम मन नहीं है, बुद्धि नहीं है। सनातन धर्म ने हमें यही सिखाया है। जो उस तत्व को जानता है, वह राममय है और जो उससे विमुख है वो रावण है।

आज सबकी सोच यही है – ना बाप बड़ा ना भैया सबसे बड़ा रूपैया।

आज रूपया ही सबको महत्वपूर्ण लग रहा है। रिश्ते–नाते, सच्चाई ईमानदारी का कहीं नामो निशान नहीं बचा। हर एक सिर्फ और सिर्फ अपने बारे में सोचता है। मैं खुश रहूं दुनिया जाये भाड़ में, यह प्रवृति नहीं होनी चाहिये। वे वर्तमान शासन व्यवस्था से संतुष्ट नजर नही आये। स्वामीजी की निःस्वार्थ भावना वाली बात आज नजर नहीं आती। उनको स्वामीजी के शब्द याद आये। उन्होंने बताया स्वामीजी कहते थे

हम न तुम, दफ्तर गुम, तूं कर पहिंजो कम,
मार दम में दमु पोइ छा कंदो जमु, उते वही पहुचु, जिते मरु न ज॒मु
(न मैं, न तुम, तुम करो अपने कर्म, लगाओ पूरा दम फिर क्या करेगा यम, वहां जाकर विराजो। जहां जीवन नही, नहीं मरण)

उन्होंने बताया पुष्कर कुटिया में सिद्धभाऊ स्वामी बोधराम के ग्रंथ से कथा पढ़ते थे। स्वामीजी बीच बीच में उनसे पूछते थे, कन्हैया तुमने कथा में क्या सुना वो बोलते थे स्वामीजी मुझे कुछ समझ में नहीं आया। स्वामीजी मुझे कहते थे मूढ़मति हो? मैंने कहा मूढ़मति हूं तभी तो आपके पास आया हूं। आपने पूछा मुझे क्या चाहिये। मुझे और कुछ नहीं सिर्फ आपकी कृपा चाहिये और सचमुच में उनकी मेरे ऊपर असीम कृपा हुई। आज वे मेरे शरीर में पूरी तरह डाऊनलोड हो गये हैं।

उन्होंने बताया कि उन्होंने पहले बी.एस.सी. की, बाद में मनोविज्ञान में एम.एस.सी. किया। उसके बाद उन्होंने होम्योपैथी में 5 वर्ष पढ़ाई कर डॉक्टर की उपधि हासिल की, योगा में भी उन्होंने पढ़ाई की। स्वामीजी उनको श्री सुखमनी साहिब पढ़ने के लिये प्रेरित करते थे। उन्होंने पढ़ना शुरू किया मगर उनका मन यहां से वहां, वहां से यहां भटकता रहता था। कभी नकारात्मक विचार आकर उनका ध्यान भंग कर देते थे। स्वामीजी ने

पूछा सुखमनी पढ़ना शुरू किया। उनको उपरोक्त बातें बताई तो स्वामीजी ने कहा तुम अपना कर्म करते रहो विचार आते हैं तो आने दो, वे परेशान करते हैं करने दो मगर तुम सुखमनी साहिब पढ़ना जारी रखो। फिर तो ऐसी कृपा हुई कि सारी श्री सुखमनी साहिब की 24 श्लोक में 24 अष्टपदियां, 1924 पद हैं, पूरे के पूरे कंठस्थ हो गये। स्वामीजी की कृपा अंतस्तल तक पहुंच गई।

उन्होंने बताया पुष्कर मे डॉ. गोपाल बदलानी, यूरोलोजिस्ट अमेरिका से यूरोलोजी कैम्प में ऑप्रेशन करने आये हुये थे। ऑप्रेशन शुरू हो चुके थे इतने में संदेश आया कि उनके पिताजी की तबीयत खराब है बाम्बे में । डॉक्टर ऊहापोह में कि क्या करूं। दोनों तरफ उनका मन डोल रहा था। एक तरफ पितृत्व हिलोरें मार रहा था और दूसरी तरफ सेवा। स्वामीजी को पता चला, उन्होंने डॉक्टर साहिब को बोला आप ऑप्रेशन करो करतार सब भली करेंगे। डॉक्टर गोपाल जी की स्वामीजी में अटूट श्रद्धा थी। उन्होंने ऑप्रेशन पूर्ण किये। तब तक जब तक डॉ. बदलानी अपने पिताजी तक नहीं पहुंचे उनके प्राण बचे रहे। यह स्वामीजी की असीम शक्तियों का चमत्कार था।

उन्होंने बताया स्वामी जी सचमुच में गुरू ही थे उनके जैसे गुरूओं के लिये ही लिखा गया है

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्मा, तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

शिक्षक, आचार्य और गुरू शब्दों को लोग पर्यायवची शब्द मानते हैं परन्तु वे शब्द पर्यायवाची नहीं हैं उन्होंने व्याख्यान करते हुये बताया कि शिक्षक वह है जो किताबें पढ़ पढकर बच्चों का जीवन संवारने के लिये किताबी शिक्षा देता है।

आचार्य वह है जो धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन कर अपने अनुयायियों को धर्म का ज्ञान देता है। परन्तु गुरू वह है जो व्यक्ति के दिमाग को पढ़ता है। उसके अंदर क्या मंथन चल रहा है उसको पढ़कर उससे क्या कार्य करा सकते हैं, और उस राह में अभी वह कहां पर है, यह जान जाता है। आचार्य अनेक हो सकते है, ग्रंथी अनेक हो सकते हैं, अध्यापक अनेक हो सकते हैं परन्तु गुरू बनना सबसे कठिन कार्य है। उन्होंने बताया मन की चार स्थितियां होती हैं। एक बाह्य मन जो यह दर्शाता है कि जो आप है। उसके बाद है अंदर वाला मन, वह जो दूसरों के बारे में अच्छे–बुरे तरह–तरह के विचार रखता है। तीसरा स्तर वह है जिसमें हमारे पूर्व जन्मों के संस्कार भरे पड़े है। इसको अंग्रेजी में Concious,(सचेत) Unconcious, (अचेत) Subconcious, (अवचेतन) Superconcious (अतिचेतन) मनः स्थिति कहा जाता है। सचमुच में गुरू वही है जो अपने शिष्य की इन चारो स्थितियों का समझ सके, पढ़ सके और वक्त पड़ने पर वे कैसे परिवर्तित हो सकती है, इसका प्रयत्न कर सफलता प्रदान करे।

उन्होंने अपने बारे में बताया। 1986–87 की बात है, वे सिगरेट का सेवन करते थे। स्वामी जी तक यह बात पहुंची, स्वामीजी ने पूछा कन्हैया सुना है आप सिगरेट पीते हो। मैंने भी कहा हां पीता हूं। स्वामीजी ने कहा छोड़ दो। मैंने भी कहा हां गुरूजी। आठ–दस दिन तक गुरूजी पुष्कर में रहे तब तक उन्होंने सिगरेट नहीं पी। जब वे पुष्कर से संत हिरदाराम नगर गये तो फिर पीना शुरू कर दिया। उन्होंने चिट्ठी लिखकर स्वामीजी को सच्चाई बता दी। स्वामीजी उनकी सच्चाई से अति प्रभावित हुये। बाद में जब स्वामीजी 7–8 माह बाद पुष्कर आये तो उन्होंने कहा मैं भी कोशिश करता हूं, तुम भी कोशिश करो, शायद तुम्हारी आदत छूट जाये और ऐसा ही हुआ मेरी आदत छूट गई।

उन्होंने बताया एक बार मैंने स्वामीजी से पूछा, ये लोग जो आते हैं और कहते हैं कि स्वामीजी के आशीर्वाद से हमें पुत्र रत्न, पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई है, स्वामीजी ने मेरी बात काटते हुये कहा इसमें मेरा कोई भी आशीर्वाद नहीं है। वे संकल्प करके आते हैं, उनकी संकल्प शक्ति ही फलीभूत होती है। स्वामीजी कहते थे गीता में मनुष्य के तीन गुणों का वर्णन किया गया है। तमोगुण, रजोगुण ओर सतोगुण। सबसे श्रेष्ठ होता है सतोगुण। सतोगुण कैसे बढ़ेगा जब हम स्वयं अपने तमोगुण को हटाने या कम करने का प्रयास करेंगे तभी सतोगुण का प्रभाव पड़ेगा। हमारे अंदर ऐसा नहीं हो सकता कि सिर्फ एक गुण रहे। रहेंगे तीनों, मगर जो गुण अधिकता में हमारे अंदर विद्यमान होगा वैसी ही हमारी प्रवृत्ति बन जायेगी।

स्वामीजी कहते थे सात्विक आदमी की आवश्यकताएं बहुत कम होती है इसलिये वह ज्यादा कमाने, ज्यादा मकान बनवाने, अच्छे कपड़े पहनने इत्यादि में विश्वास नहीं करता। वह अपनी मेहनत, अपनी ईमानदारी से पैसा कमाता है और अपना जीवन व्यतीत करता है। वह अपने व्यापार का विस्तार भी सीमित मात्रा में करता है। वह हमेशा सतोगुणों से सराबोर रहता है और प्रभू के दर पर हमेशा अरदास करता है। उठते बैठते प्रभू का शुक्र मानता है और सदैव उसकी प्रभू के प्रति सदैव यह अरदास होती है

तू ठाकुर, तुम पहि अरदासि, जीउ पिंडु सभु तेरी रासि।।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे, तुमरी क्रिपा में सूख घनेरे।।
कोइ ना जानै तुमरा अंतु, ऊंचे ते ऊंचा भगवंत।।
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी, तुम ते होइ सु आगियाकारी।।
तुमरी गतिमिति तुम ही जानी, नानक दास सदा कुरबानी।।

जिसको यह बात समझ में आ गई वह आदमी कभी संकल्प करता ही नहीं है। करूणा तो हर प्राणी के हृदय में विद्यमान होती ही है। वह दया का सागर होता है। हमारे हर कर्म के पीछे हम सोचें कि हमने दया की गलत है। उन्होंने एक उदाहरण दिया कि हम खाना खा रहे हैं और उसी समय कोई भूखा आ गया। हमने उसमें से उसे खिला दिया यह दया या करूणा नहीं है। हमारे पास था, हमने उसे दे दिया। देने वाला कोई और है, उसके दिये हुए में से हमने दे दिया। बात यहीं पर खत्म हो गई।

ऋषि गोधूमल जी डॉ. कन्हैयालाल जी के पिताश्री थे। ऋषि गोधूमल चेरिटेबल हॉस्पिटल जिस जमीन पर बना है वह ऋषि गोधूमल जी ने ही क्रय किया था। उनकी माताजी बचपन में ही शांत हो गई थी। उनके भाई और कहीं रहते थे इसलिए डॉ. कन्हैयालाल अपने पिता के साथ रहते थे। बाद में कन्हैयालाल जी का मन सन्यास लेने का हुआ तो उन्होने स्वामीजी से कहा। स्वामीजी ने कहा सन्यास मत लो, मैं तुम्हे गुप्त सन्यासी बनाऊंगा। गुप्त सन्यास वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति यह भाव कर लेता है

'तन, मन, धन सब कुछ है तेरा, तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा'

जब यह भाव आ जायेगा तो संसार में रहते हुए भी राजा जनक की तरह रहोगे। स्वामीजी ने राजा जनक का दृष्टांत बताया कि एक आदमी एक सन्यासी के पास गया सन्यास लेने, उसने कहा में पारंगत नहीं हूं तुम राजा जनक के पास जाओ वो तुम्हें सन्यास समझायेंगे। वह व्यक्ति राजा जनक के पास पहुंचा वहां पर आमोद प्रमोद चल रहा था, नृत्य हो रहा था। वह व्यक्ति बहुत अचंभित हुआ और सोचने लगा यह खुद आकंठ आमोद प्रमोद में डूबा हुआ है मुझे क्या ज्ञान देगा। वह वापस जाने के लिये मुड़ा, राजा जनक ने कहा आये हो तो आतिथ्य स्वीकार करो, रात्रि को यहां रहो और सबेरे चले

जाना। वह व्यक्ति लोभ संवरण नहीं कर सका और रूक गया। उसे सुन्दर राजमहल के मेहमान खाने में रखा गया। वह बिस्तर पर लेट गया, मगर ऊपर नजर गई तो देखा एक तलवार उसके ऊपर एक कमज़ोर रस्सी से बंधी हुई है। वह बेचारा रात भर सो नहीं पाया ड़र की वजह से। सबेरे राजा ने पूछा अतिथि रात को कोई तकलीफ तो नहीं हुई नींद तो अच्छी आई ना। वह बोला रात भर सो नहीं सका, तलवार जो लटक रही थी। तब जनक बोले मेरी भी यही स्थिति है मेरे ऊपर भी मौत का भय है, ये मेरे प्रारब्ध में आमोद प्रमोद लिखे हुये हैं, भोग रहा हूं, मगर मौत याद है इसलिये राजा होते हुए भी मैं अपने आपको राजा नहीं मानता।

स्वामीजी ने उनको गुप्त सन्यास दे दिया और कहा कि जो भी आपके पिताजी आपको दे गये है सफेद है, काला है जो भी है वो तुम मुझे दे दो। मैं तुम्हारा आज से मालिक, तुम मेरे नौकर। आपने अपने उद्यम से जो भी कमाया है उसकी बैंक में सावधि जमा कर दो, उससे आपको जो भी ब्याज मिले उससे अपना जीवन यापन करना। तुम होम्योपैथिक डॉक्टर हो। तुम्हें हॉस्पिटल बनवा देते हैं, उसमें गरीबों की सेवा करना। कितने मरीज आते है नहीं आते हैं उसकी चिंता मत करना। सब प्रभू की इच्छा मान, लाभ हो रहा है या हानि हो रही है यह मत सोचना। तुम्हारी आवश्यकताएं सीमित हैं, सन्यास तुमने धारण कर लिया है, इसलिये यह अस्पताल आपके पिता श्री स्व. ब्रह्मऋषि गोधूमल चेरिटेबल हॉस्पिटल के नाम से जाना जायेगा। प्रभू की दया से, स्वामीजी के असीम आशीर्वाद से, आज भी उनकी आज्ञा मानकर, गुरू के वचनानुसार कार्य कर रहा हूं और जीवन के अंतिम श्वास तक करता रहूंगा।

वे अपने सब भाई–बहनो में सबसे बड़े थे। उनके पिताजी उनका विवाह करवाना चाह रहे थे। इनके विवाह न करने का प्रभाव बाकी भाई बहनों के विवाह में विघ्न डाल रहा था। परिवार की भलाई को ध्यान में रखते हुये उन्होंने विवाह किया, मगर पहले दिन ही उनको पता चला कि यह विवाह उनकी पत्नी ने स्वेच्छा से अपनी स्वीकृत से नहीं किया है। अतः उन्होंने उसको स्पर्श तक नहीं किया। उनका किसी अन्य लड़के से प्रेम संबंध था। एक वर्ष होते होते उन्होंने उससे विवाह विच्छेद कानूनी तरीके से कर लिया। उसके बाद उनको फिर से परिवार की तरफ से दूसरा विवाह करने के लिये कहा गया मगर उन्होंने स्वीकार नहीं किया और अभी तक उन्होने विवाह नहीं किया। एक वर्ष की अवधि में उन्होंने अपनी पत्नी का स्पर्श तक नहीं किया था। इतने दृढ़निश्चयी हैं कन्हैयालाल जी उन्होंने कहा अंत भला तो सब भला, उन्होने अपने जीवन में न किसी का बुरा किया और ना ही किसीके बारे में बुरा सोचा। वे अपने जीवन से, क्रियाकलापों से संतुष्ट दिखे।

उन्होंने बताया लोग सेवा के लिये संत, महात्माओं की मूर्तियां लगा लेते हैं और सेवा के नाम पर दुकानदारी करते है। उन्होंने कहा लोग महात्मा गांधी की मूर्ति लगा रखते हैं दफ्तर में और उनके सामने ही रिश्वत लेते है। स्वामीजी कहते थे जो भी हमसे पाप कर्म होते है वह शरीर, मन, बुद्धि के माध्यम से होते हैं। गुरू की शरण में जाने से पूर्वजन्मों के कर्मो का नाश हो जाता है। बड़े से बड़ी सिद्धि है किसी मृत को जीवित कर देना और बड़े से बड़ा पाप होता है किसी की हत्या करना। न तुम शरीर हो, न मन हो, न बुद्धि हो। तुम सच्चिदानंद स्वरूप हो, ज्योतिस्वरूप हो, तुम अपना कर्म करते रहो। उन्होंने बताया स्वामीजी के पास दानदाता आते थे, स्वामी जी दान में आये पैसों को हाथ भी नहीं लगाते थे। उनके पास ढेरों व्यंजन, फल फ्रूट आते थे मगर वे सब बांट देते थे।

स्वयं वही भोजन करते थे जो सत्य की राह पर चलने वाला व्यक्ति रूखा सूखा बनाकर लाता था। स्वामी जी कपड़े स्वयं खरीदते थे और दौलतराम पारदासानी जी के घर से सिलकर आते थे, वही पहनते थे। फट जाते थे तो खुद सुई धागा लेकर, उसकी तुरपाई करते थे और पहनते थे।

उन्होंने बताया स्टार टी.वी. वाले स्वामीजी के पास आये थे, उन्होंने कहा स्वामीजी हमें आप पर आपकी आस्था पर कोई संदेह नहीं है, मगर एक सवाल हमारे जेहन में बारबार घूम रहा है कि आपके संपर्क में आने वालों को कौन सी जादूई छड़ी मिल जाती है कि देखते–देखते लाखों करोड़ों के मालिक बन जाते हैं। जब कि आम आदमी हजारपति भी नहीं बन पाता। स्वामीजी क्या जवाब देते? वे सिद्धभाऊ से कहते रहते थे कि आप सेठ लोगों से ज्यादा मेल मिलाप मत बढ़ाओ, वह आपको दु:ख देगी। सिद्धभाऊ भी महसूस करते हैं कि आज जिनके पास पैसा आ गया है चारित्रिक दृष्टि से, आध्यात्मिक दृष्टि से उनकी भक्ति में शुद्धता नहीं है। शुद्धता तब होगी जब कमाने का रास्ता शुद्ध होगा, किसीका दिल दुखा कर नहीं कमाया होगा। लोग आज उसे पुरातन जमाने की सोच मानते हैं। सेवा करनी है तो तन,मन धन से सेवा करनी है। सेवा के नाम पर ढकोसला करने से कृपा कभी नहीं मिलेगी। गुरू की कृपा मिलेगी तो सिर्फ आपके सत्भाव से किये गये सत्कर्मो के लिये, आपके माता–पिता, आपके आचार्य आपके शिक्षक आपके गल्त तरीके से किये गये अच्छे कर्मो के लिये आपकी पीठ थपथपा सकते हैं परन्तु गुरू इन सबसे अलग होता है, वह शुद्ध भावना के बिना केवल दिखाने के लिये किये गये कर्मों पर कृपा नहीं कर सकते।

वहां पर एल.जी.जेठानी जी भी मिले जो 86 वर्ष के थे। कभी बहुत अमीर धन्ना सेठ थे, मगर ग़लत कामों से उनका सब कुछ समाप्त हो गया। उनके दो बेटों मे से एक बेटा अमेरिका में, एक जयपुर में रहता है। दो बेटियों में से एक अमेरिका में ओर दूसरी दिल्ली में रहती है। उनकी धर्मपत्नी अपने पुत्र के साथ अमेरिका रहती है मगर वे आज ऋषि गोधूमल परमार्थ चिकित्सालय के उसी कमरे में एकाकी जीवन जी रहे हैं जिसमें स्व. श्रद्धेय वासदेव तुलसियानी जी रहते थे। सब विधि का विधान कर्म फल है।

रामधुनी की महत्ता

श्री किशनचंद वाधवानी जी
जयपुर मो. 9414446885

श्री मुकेश भाग्या जी के साथ ही मैं श्री किशनचंद वाधवानी जी के घर गया। वे इस समय 88 वर्ष की आयु के है। परन्तु उनको देखकर कहीं से भी नहीं लगता कि वे 88 वर्ष के हैं। चेहरे पर तेज तो सन्यासियों जैसा। उनके पुत्र विदेशों में हैं। संतजी ने 1962 के चायना युद्ध के समय में अजमेर में रामधुनी का आयोजन करवाया उन्होंने बोला सेना अपना कार्य देखेगी, मंत्री अपना क्षेत्र देखेंगे, सरकार अपना कार्य करेगी। संत समाज को भी अपना कार्य करना पड़ेगा। यह रामधुनी 28 दिन तक चली, उस समय रामधुनी के साथ–साथ श्री सुखमनी साहिब के संपत पाठ भी साथ–साथ चल रहे थे। पूर्व निश्चित समय पर 28वें दिन रामधुनी के साथ संपत पाठसाहिब का पाठ कर भोग लगाया गया। जिस समय यह भोग समाप्त हुआ उसी दिन चायना की तरफ से सीज फायर का ऐलान

कर दिया गया। उस संपत पाठ में संपत की पंक्तियां श्री सुखमनी साहिब की 22वीं अष्टपदी का सातवां श्लोक था

तिस ते दूरि कहा को जाइ, उबरै राखनहार धिआइ।।
निरभउ जपै सगल भउ मिटै, प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै।।
जिसु प्रभु राखै तिसु नाहीं दूख, नामु जपत मनि होवत सूख।।
चिंता जाइ मिटै अहंकारु, तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु
सिर ऊपरि ठाढा गुरू सूरा, नानक ता के कारज पूरा।।

उन्होनें बताया कि एक बार पुष्कर कुटिया पर अमेरिका से नत्थुरमल लालचंदानी सपरिवार आये हुए थे। उनकी धर्मपत्नी कौशल्या देवी भी उनके साथ थीं। वे स्वामीजी के लिये गेरूए रंग के कपड़े लाये थे। उन्होंने संतजी से प्रार्थना की स्वामीजी इन वस्त्रों को आप सिलवाकर पहनना। स्वामीजी ने लिया तभी कोई साधू वहां पर आया, स्वामी जी ने वह कपड़े साधू को उनके सामने ही दे दिये। यह कहते हुए कि मेरे पास दो पोशाकें हैं, एक पहनता हूँ दूसरी धोकर सुखा देता हूँ। इसलिये मुझे जरूरत नहीं है मैंने इनको दे दिया। स्वामीजी की अपनी आवश्यकताएं तो थीं ही नहीं। इधर आया, उधर बांट दिया, वे संग्रह में विश्वास ही नहीं करते थे।

एक बार किशनचंद जी की माताजी संत हिरदाराम नगर गई थीं तो वे कुटिया पर स्वामीजी को माथा टेकने के लिये गई। तो स्वामजी ने कहा जाओ अम्मां तुम्हें पोता होगा। वास्तव में ऐसा हुआ भी। उनकी माता हाथ की चक्की पर गेहूं पीसकर आटा ले जाती थी। एक बार जब माता कौशल्या जी अमेरिका से आई तो उन्होंने पहले दिन संतो के लिये खाना बनाया बड़ा स्वादिष्ट बना था। परन्तु दूसरे दिन खाना खाते हुये उन्होंने कौशल्या दीदी से कहा बिटिया आज तुम किस विचार से व्यथित थीं आज तुम्हारे खाने में आनन्द नहीं आया। स्वामीजी किसी को भी सच बोलने मं संकोच नहीं करते थे।

एक बार उनके सुपुत्र भगवान वाधवानी जी स्पेन से आये, तब उन्होंने संतों से आग्रह किया कि आप जयपुर आइये तो वे जयपुर आये थे। तब सिद्धभाऊ ने कहा था स्वामीजी आये तो हैं परन्तु वहां पर वे आराम मे थे। फिर उन्होंने जयपुर आने के लिये सिद्धभाऊ को अनेक बार कहा। परन्तु उन्होंने कहा क्या आपके घर में इंडियन स्टाइल में शौचालय है? ऐसे शौचालय हमारे घर में प्रथम तल पर थे, नीचे सभी वेस्टर्न स्टाइल में थे, अतः उन्होंने आने में असमर्थता जताई। संतों की कुटिया में दरवाजों को पैंट लगाना, पुताई करना, बरसात के दिनों में काई जम जाने पर उसे लोहे की पतरी लेकर साफ करना, पेड़ों के पते बीनना, झाडू लगाने की सेवा उन्होंने आनंद पूर्वक की। वह वक्त गुजर गया। श्री किशनचंद वाधवानी जी रेल्वे में सर्विस करते थे। संतों के बारे में, याद करते हुए उनका गला रूंध जाता था, उनकी आंखों में आये हुए आंसू उनकी आस्था के प्रत्यक्ष प्रमाण थे।

लोक सुखी परलोक सुहैला

डॉ. सुन्दरदास आहूजा
जयपुर मो. 9166266117

डॉ. सुन्दरदास आहूजा, नायला में आरएमपी डॉक्टर हैं, उनकी क्लीनिक के

बगल में ही उनके सुपुत्र का मेडीकल स्टोर है, क्लीनिक के सामने ही रोड की दूसरी तरफ उनका मकान बना हुआ है। नायला में सेवा केन्द्र देखने के लिये गया था तो रास्ते में 3 कि.मी. पहले ही उनका क्लीनिक था। वहां से उनके सुपुत्र को साथ लेकर सेवा केन्द्र जाना था। वहां पर रूके और डॉ. सुन्दरदास आहूजा से बात शुरू की, हँसमुख, मिलनसार, अपनत्व से भरपूर व्यक्तित्व। उन्होंने स्वामीजी के बारे में अपने जो अनुभव बताये वे आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं।

उन्होंने बताया वे 1984 से संतों के संसर्ग में थे। जब भी मौका मिलता था वे पुष्कर चले जाते थे। एक बार वे पुष्कर के लिये निकले, दो दिन वे अपनी ससुराल अजमेर में रूके। पुष्कर पहुंचने पर संतों ने पूछा 2 दिन पहले आने वाले थे, विलंब क्यों हो गया तो उन्होंने कहा, दो दिन अजमेर में अपनी ससुराल में रूक गया था। संतों ने पूछा क्या खाकर आये हो। मैं संकोच में पड़ गया संतों को केसे बताऊं कि मैंने मदिरा पान के साथ साथ मांस–मच्छी का भी सेवन किया है। मगर झूठ बोलना मेरी आदत में नहीं था, मैने संतों को सचसच बताया। उन्होनें डांटते हुए कहा, आये हो पवित्र स्थान पर और अखाद्य पदार्थ खाकर आये हो, अच्छी बात नहीं है। मैं चुप हो गया। संतों ने ज्यादा कुछ नहीं कहा।

उस दिन शरद पूर्णिमा थी। कुटिया पर 400–500 आदमियों का जमघट लगा था। संतों ने प्रवचन शुरू किया और बताया कि आप में से कुछ ऐसे लोग भी यहां पर उपस्थित हैं, जो मदिरा के साथ–साथ मांस मच्छी का प्रयोग करते है। आज भी यहां पर आये है। जब स्वामीजी ने बोलना शुरू किया तो वे डर गये और सोचने लगे कहीं स्वामी जी इतनी भरी सभा में उनका नाम लेकर शर्मिंदा न कर दें, वे प्रभू से प्रार्थना करने लगे, प्रभू ऐसा मत होने देना। उनकी कृपा प्रभू के दर पर कबूल हूई। संतों ने सिर्फ यह कहा कि यह ग़लत काम है, नहीं करना चाहिये। इनको संतोष हुआ वहीं पर मन ही मन सोचा आज के बाद न मदिरा पान करूंगा और न ही मांस का सेवन, सादा भोजन करूंगा जो आज भी कायम है।

सन् 1991 में स्वामी जी नायला गये थे, उन्होंने पूछा मांसाहारी सेवन चालू है यां बंद मैंने उन्हें बताया बंद है, वे प्रसन्न हुए। उन्होने पूछा कहां रहते हो मैने उनको बताया कि मैं किराये के मकान में रहता हूं। मकान हमने जयपुर में लिया है। उन्होंने पूछा जयपुर में क्यों, मैने कहा बच्चों की पढ़ाई वगैरह के हिसाब से। बोले यहां पर प्लाट लिया है? मैंने कहा हां सामने लेकर रखा है, उन्होंने कहा यहीं मकान बनाओ, यहां के मरीजों का ख़्याल कौन रखेगा। देर रात में किसी को तकलीफ होगी तो वह कहां जायेगा। मैने कहा स्वामीजी मेरे पास 80 हजार रूपये ही हैं उसमें मकान कैसे बनेगा। उन्होंने कहा शुरू करो पैसे कम नहीं पड़ेंगे। कम पड़े तो अजमेर में अमुक सेठ के पास जाना वह तुमको दे देगा। उसी दिन स्वामीजी से भूमि पूजन करवाया और काम शुरू कर दिया। उस वर्ष अच्छी आमदनी हुई, पैसों के हिसाब से कभी चार तो कभी दो कारीगर लगाकर काम करवाया और मकान बनकर तैयार हो गया। किसी से पैसे लेने की आवश्यक्ता ही नहीं पड़ी। ऐसी कृपा रही संतों की कि काम अपने आप पूरा हो गया।

स्वामीजी हॉस्पिटल परिसर में गए, हॉस्पिटल में एक कुंआ था। उन्होंने बताया कि कुएं में पानी बहुत कम आता है, परेशानी है। स्वामीजी वहां चले, कुंए में झांककर देखा और डॉक्टर से बोले कुंए में बोरिंग करवा देते हैं। परन्तु मुझे लिखित में चाहिये कि कोई भी आयेगा तो उसे पानी देने से इंकार नहीं करोगे। वे बोले हम तो शासकीय

कर्मचारी हैं, लिखकर नहीं दे सकते। फिर बोरिंग नहीं करवाई गई, परन्तु उस दिन के बाद से स्वामीजी का प्रताप कहें कि कभी पानी की कमीं नहीं हुई।

उन्होंने कहा आज भी जब जो भी मन में सोचते हैं, वे कार्य अपने आप हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि जहां पर सेवा केन्द्र बना है, वहां पर पहले हनुमान जी की छोटी सी मढ़िया बनी हुई थी। स्वामीजी के आदेश पर वहां एक माह तक लगातार सुंदरकांड का पाठ किया गया और आज वह छोटी सी मढ़िया विशाल मंदिर में परिवर्तित हो गई है।

उनका एक बेटा यश इंजीनियर है और दूसरा वैभव डॉक्टर बन गया है। वैभव जयपुर में जॉब करता है, एक बेटा विजय है जो मेडीकल स्टोर चलाता है। दो पोते दर्श और पर्व हैं। उनके नामों का चयन मुझे अति सुन्दर लगा। उनकी धर्मपत्नी रजनी जी भी हिन्दी लिटरेचर से ग्रेज्यूएट थीं। उनको मैने संत हिरदाराम नगर नवयुवक परिषद के साक्षरता अभियान जैसा कार्य करने के लिये प्रेरित किया। वहां पर उस महान आत्मा के भी दर्शन हुये, जिसने सेवा केन्द्र खोलने के लिये 10 हजार वर्ग फुट जमीन दान में दी थी। उस पुण्यात्मा का नाम था, पंडित रामकरण जी। उन्होने बताया कि पहले नायला में कैम्प लगता था, सामान लाने ले जाने में दिक्कत होती थी। तब उन्होंने वालंटियर्स को बोला हमारी जमीन थोड़ी सी अंदर है, आप देख लीजिये, पसंद आये तो वहां पर सेवा केन्द्र बनवा लीजिये। उस जमीन पर जानवरों का बाड़ा होता था। वालंटियर आये उन्होंने देखा और फिर उन्होंने जमीन जीव सेवा समिति को दे दी। वहां पर एक मढ़िया भी थी, संतो ने वहां पर एक माह तक सुन्दरकांड का पाठ करवाया था। जब सेवा केन्द्र का निर्माण शुरू हुआ तो मढ़िया के लिये छोटा टुकड़ा ही रखने की कोशिश की। हर बार वे लकीर खींचने की कोशिश करते परन्तु सफल नहीं होते। फिर यह चमत्कार देखकर बड़े मंदिर की योजना बनाई गई अब वो बन गया है। गांव में थोड़ी दूर शिव पार्वती का एक 200 वर्ष प्राचीन मंदिर था उसकी मूर्तियां भी लाकर मंदिर में स्थापित की गई है। पंडित रामकरण जी से मैंने पूछा आपने 10 हजार फुट की जमीन सेवा कार्यो के लिये निःशुल्क दी तो आप अपने जीवन में क्या परिवर्तन महसूस करते हैं। वे बोले प्रभू की कृपा से आज हम दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहे हैं। इसे वे संतों का, अपनी दानशीलता का प्रसाद मानते हैं।

सकारात्मक सोच के प्रेरक

श्री तीरथदास प्रियानी
आदर्श नगर, जयपुर
मो. 9828021007

हम लोग नायला से लौटे, रास्ते में ईश्वर में हरचन्दानी ने कहा, भूख लगी है, चलो कहीं पर खाना खाते हैं। मैंने कहा फल–फ्रूट खा लेते हैं, परन्तु वे माने नहीं और एक ढाबे पर भोजन किया। दाल, दही और चावल का आर्डर दिया। खाने में आनन्द आ गया। वहां से खैरथल जाने के बारे में पता किया तो मालूम चला कि अभी 1 घंटा देर से जायेंगे। सोचा चलो एक दो श्रद्धालुओं से स्वामीजी के विषय में संस्मरण एकत्रित कर लेते हैं। उन्होंने बताया पास में ही स्वामीजी के अनुयाइयों में से श्री तीरथदास प्रियानी का घर है। उनसे आज्ञा लेकर उनके घर पहुंचे। मालूम हुआ कि वे छः भाई हैं और एक

ही जगह सबके अलग अलग मकान बने हुये है। बाउन्ड्रीवाल एक ही है। एक भाग में तीन और दूसरे भाग में तीन भाई रहते हैं। 3 मंजिला भवन। हर भाई का एक एक मंजिल पर घर था। यह जानकर अच्छा लगा कि सभी भाई साथ–साथ रहते हैं। उनका दाल मिल का व्यवसाय था और इसी नाम से लोग उनको जानते थे। हम उनके घर पहुंचे, बहुत ही स्नेह पूर्वक मिले। फोन पर उनसे मेरी पहले भी बात हुई थी उस समय वे अजमेर गये हुये थे। हालाणी दरबार अजमेर के अनुयायी थे। तब मैने उनको बताया मैं दो दिन पहले अजमेर में था और हालाणी दरबार में भी आया था, मुझे सिंधी देवनागरी भाषा में भागवत पुराण की आवश्यकता थी। अजमेर के दरगाह बाजार में पांच विक्रेताओं से पूछा उनके पास भी नहीं थी। उन्होने हालाणी दरबार मे मिल सकती है ऐसा बताया था। वहां पर गया था मगर नहीं मिली। उन्होंने कहा फिक्र मत करो मेरे पास जयपुर में है। आप आओगे तो मैं आपको दे दूंगा और जब उन्होंने दिया वह भागवत पुराण नहीं भागवत महापुराण था। यह थी उनकी दरियादिली। वास्तव में मुझे भागवत महापुराण की जानकारी नहीं थी कि कहां मिलेगा। मेरे पास पूजनीय दुर्गा तेजवानी जी का फोन आया, भाई मुझे भागवत पुराण की आवश्यकता है, कहां मिलेगा। मैं उनके लिये ही भागवत महापुराण ढूंढ़ने निकला था। मुझे किसी ने ग्वालियर के पुस्तक विक्रेता का जिक्र करते हुये बताया वहां मिलेगा। उनसे फोन पर बात की तो उन्होंने बताया कि उनके पास उपलब्ध है, दो हजार रूपये कीमत है, मैने उनका फोन नं. पूज्य वासदेव तेजवानी जी को दे दिया था। जब मैं भागवत महापुराण लेकर संत हिरदाराम नगर में आया तब तक वे ग्वालियर से मंगा चुके थे। अतः वह महापुराण मैने दादी ठाकी की दरबार में भेंट कर दी।

श्री तीरथदासजी के चाचाजी और दादाजी हालाणी दरबार, अजमेर में बहुत ही आस्था रखते थे। स्वामीजी से उनका परिचय ऊधवदास जी के कारण हुआ। एक बार ऊधवदास जी ने कहा चलो पुष्कर चलते हैं, स्वामी जी को जयपुर लाना हैं। एम्बेसेडर कार थी। उनको पुष्कर से अजमेर आना था। तीरथदास जी को कार चलाना आती थी। स्वामी जी ने कहा जल्दी सो जाओ सबेरे 3 बजे जयपुर के लिये रवाना होंगे। वे लोग सबेरे 2–3 बजे जागे और फिर पुष्कर के लिये रवाना हुये। स्वामीजी ने कहा था जब भी गाड़ी चलाएं तो कार में ऑयल, पेट्रोल और हवा चैक कर लेना चाहिये। कार तो ऊधवदास की थी। स्टार्ट किया, तो समझ में आया कि ब्रेक सिर्फ 25 प्रतिशत ही काम कर रहे थे। पुष्कर से अजमेर तक तो पहाड़ों की खतरनाक ढलान थी ब्रेक फुल दबाने पर ही कार्य कर रही थी। सोचा पेट्रोल डलवा देंगे मगर पेट्रोल पम्प तो अजमेर में ही मिलना था। स्वामीजी ने स्पीड कम देखकर पूछा तीरथदास जी क्या हुआ, स्पीड इतनी कम क्यों है। तब उनको समस्या बताई तो उन्होंने कहा प्रभू सब भला करेंगे। प्रभू का जाप शुरू कर दो। उन्होंने वह शुरू किया और सकुशल जयपुर पहुंच गये। वो बताते हैं कि वह बात याद आते ही, आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। स्वामीजी के विराट् व्यक्तित्व के कारण ही यह संभव हो सका था।

जब मैं उनको लेकर जयपुर पहुंचा तो स्वामीजी ऊधवदास जी के घर मे रुकने वाले थे। मैने उनसे प्रार्थना की कि स्वामीजी आप से मेरा अनुरोध है कि आप ऊधव के घर के बजाय मेरे घर मे रुकें। उन्होंने स्वामी जी से यह भी कहा आप मेरे घर रुकेंगे तो मैं लंगर में सब को भोजन कराऊंगा। उन्होंने कहा सच मे लंगर करवाओगे! तो मैने कहा हां स्वामी जी तब उन्होंने ऊधवदास जी से कहा कि मैं तीरथदास प्रियानी के घर रुक रहा हूं। उन्होने कहा जैसी आपकी इच्छा। पहली बार हमारे घर में रूके थे। तब मैने दोस्तों,

मित्रों, हालाणी दरबार के अनुयाइयों को भी स्वामीजी के आने और अपने घर में रहने की बात बताकर, लंगर में आने का न्योता दिया। सौ से डेढ़ सौ की संख्या में लोग स्वामी जी के दर्शन और लंगर के लिये आये। दूसरी बार जब नायला में कैम्प लगना था, स्वामीजी आये, उन्होंने पूछा यहां कोई गुरूद्वारा है, मैने उनको बताया कि भाई हिम्मत सिंह का गुरूद्वारा है, वे गुरूद्वारे में चले, माथा टेका और फिर उन्होंने हिम्मत सिंह से पूछा अखण्ड पाठ साहब रखते हो? उनके हाँ कहने पर स्वामीजी ने कहा आप नेत्र शिविर की सफलता के लिये अखण्ड पाठ रखो। पाठ शुरू भी तुम करो, और समापन पर भोग लगाने का दायित्व भी तुम्हारा है, जो तुम्हारी दक्षिणा है, हम दे देंगे हमें समय मिला तो जरूर आयेंगे। उस कैम्प में बहुत से लोग आये, नायला का सेवा केन्द्र, नायला से काफी अंदर गांव में स्थित था, जंगल टाइप का वातावरण था, पानी की बोतल भी वहां उपलब्ध नहीं होती थी।

स्वामी जी तीरथदास जी के घर पर ही रहते थे, वे बातें करते–करते रसोईघर में भी चले जाते थे ओर पूछते थे खाने में क्या बनाया है, सादा खाना ही खाते थे। उनका पहना हुआ चोला फटा हुआ था तीरथदास जी की धर्मपत्नी मंजू जी ने उनको कहा स्वामीजी आप उतार कर दे दीजिये मैं सिलाई कर देती हूं। उन्होंने उसको सीकर दिया, स्वामीजी बहुत ही खुश हुये और सिद्धभाऊ से कहा सिद्ध यह मेरी मां भी है, बहन भी है, उन्होंने आशीर्वाद की झड़ी लगा दी।

उन्होंने बताया जब वे संतों के लिये खाना बनाती थीं तो मन के अन्दर ही अंदर गुरूवाणी का पाठ करती रहती थीं। उससे भोजन बहुत ही स्वादिष्ट बन जाता था। एक बार उन्होंने करेले की सब्जी बनाने को कहा छिल्कों सहित, सिर्फ उबली हुई। टमाटर तक उसमें नहीं डलवाये, वह स्वाद के लिये नहीं पेट भरने मात्र के लिये ही खाते थे। एक बार वे मुकेश भाग्याजी के घर रुके हुये थे तो उसने घर पर उनके लिये मूंग की हरी दाल वाली चावल की खिचड़ी राम–राम जपते हुए बनाई तथा पालक की सब्जी बनाकर ले गयीं जो उन्होंने बड़े ही आनन्दपूर्वक खाई। वे बड़े भाव पूर्वक बना कर गई थी, जिस भाव से उन्होंने बनाया था उतने ही भाव से उन्होंने खाया भी।

एक बार वे जयपुर आये, वच्छानी जी के घर मे रुके थे, पता नहीं मंजू जी को ख्याल आया कि स्वामीजी को मैं खाना बनाकर भेजूं। उन्होंने तीरथदास जी को यह बात बोली, तीरथदासजी बोले जहां पर रुके हुए है वहां के लोगों ने खाना बनाया होगा, तुम्हारा खाना वो क्यों खायेंगे। उन्होंने कहा मैं बना रही हूं आप ले जाना, खायें तो ठीक नहीं खायेंगे तो भी ठीक मुझे बनाना है। उन्होंने खाना बनाया। वे खाना लेकर गये। स्वामीजी को वहां पर भोजन परोसा जा रहा था तो उन्होंने कहा स्वामीजी मंजू ने आपके लिये खाना बनाया है। वे बहुत खुश हुये और उन्होंने कहा कि बिटिया खाना अच्छा बनाती है और उन्होंने वही खाना खाया।

एक बार तीरथदास जी इन्दौर गये थे। वहां पर उनके ससुर जी स्वर्ग सिधार गये थे। उनकी तेरहवीं का कार्यक्रम था, वहां पर उन्हें पता चला कि स्वामीजी इन्दौर आये हुए हैं। आठ–दस घर बाद ही वह घर था जहां स्वामीजी रुके थे। वे स्वामी जी के दर्शन को गये, स्वामी जी ने उनसे पूछा आप यहां? उन्हें बताया कि ससुर जी का स्वर्गवास हो गया है। वहां पर पाठ साहब रखवाया है। जहां पर पाठ चल रहा था, स्वामीजी वहां जाकर जमीन पर बैठ गये, मगर उनको अच्छा नहीं लगा क्योंकि जो बिटिया पाठ कर रही थी, सिर्फ मन ही मन में पढ़ रही थी। तब स्वामीजी ने नाराज होते हुये कहा बिटिया

पाठ हमेशा जोर से पढ़ना चाहिये इससे वातावरण में पाजिटिव तरंगें पैदा होती हैं। वातावरण शुद्ध होता है, और जो बैठे हैं उनके कानों मे भी वाणी जाती है। हमेशा पाठ ऊंची आवाज में ही पढ़ना चाहिये। ये छोटी छोटी बाते हमने स्वामीजी के सांन्निध्य में सीखीं। अब वे भी जब पाठ करने बैठते है तो ऊंची आवाज में पढ़ते हैं। उनके घर पर भी श्री गुरू ग्रंथ साहिब विराजमान हैं।

उन्होंने बताया कि जब हालाणी दरबार के संतों को ज्ञात हुआ कि मुझे भागवत महापुराण चाहिये तो उन्होंने तीरथदास को बोल दिया तुम्हारा वाला उसे दे देना। यह मेरी सकारात्मक सोच का ही परिणाम था। मुझे ऐसा लगा।

हालाणी दरबार और स्वामीजी

श्री लालू भगवान प्रियानी
आदर्श नगर, जयपुर
मो. 9352055383

श्री तीरथदास प्रियानी के घर पर ही उनके भाई भागचंद भी आ गये। उन्होंने भी अपने संस्मरण बताकर मुझे निहाल कर दिया। उन्होंने बताया कि स्वामी जी जब भी जयपुर आते थे तो वच्छानी जी, खेमानी जी एवं डॉ. खिलरानी के घर में रहते थे। 1975 से स्वामीजी से उनका संबंध था। प्रियानी परिवार 1980 में जयपुर आया। स्वामी जी खेमानी जी के साथ सांयकालीन भ्रमण पर निकले थे। एक दिन जब वे भ्रमण पर निकले तो इनके घर के पास आकर रुक गये, खेमानीजी से पूछा यह किसका घर है? खेमानी जी ने कहा नये नये आये हैं। पूछा इनके घर में श्री गुरूग्रन्थ साहिब विराजमान हैं क्या? उन्होंने कहा मुझे ज्ञात नहीं है, बोले ठीक है कभी मैं इनके यहां रुकूंगा। स्वामीजी उनके घर में पहली बार 1990 में आकर रहे और फिर जब भी आते थे उन्ही के घर में रहते थे।

उन्होंने बताया कि अजमेर में पहला यूरोलोजी केम्प हालाणी दरबार में डॉ. तोलाणी के नेतृत्व में लगा था। स्वामी हिरदाराम जी को पता चला तो वे हालाणी दरबार आये, कैम्प के बारे में जानकारी ली और फिर उन्होंने पुष्कर में यूरोलोजी कैम्प लगाया। उसके बाद यूरोलोजी कैम्प जयपुर में शुरू हुये। अब तो भोपाल में बहुत बड़ा यूरोलोजी ऑप्रेशन सेटअप खड़ा हो गया है, जहां अमेरिका से आकर डॉ. गोपाल बदलानी जी ऑप्रेशन करते हैं।

हालाणी दरबार में स्वामीजी अखंड पाठ साहिब की लगातार चलने वाली श्रृंखला शुरू करना चाहते थे परन्तु हालाणी दरबार के संतों ने कह दिया कि ऐसा संभव नहीं है क्योंकि अन्य लोग भी अपने–अपने घरों में दरबार साहिब का पाठ रखवाते थे।

जब हालाणी दरबार साहिब के संतों का परलोक गमन हुआ, तब संत हिरदाराम जी भी वहां आए थे। उस समय संत साधूराम जी को उत्तराधिकारी के रूप मे हालाणी दरबार की गद्दी पर बैठना था, परन्तु उन्होंने कहा मैं अभी अपरिपक्व हूं 10 वर्ष बाद ही मैं इस गद्दी पर बैठने का साहस कर पाऊंगा। संचालन में कोई भी कमी नहीं रहेगी, संचालन करता रहूंगा। संत जी तब उनको बहुत आशीर्वाद देकर गये। यह 1985 की बात है। स्वामी गोबिन्ददास जी अपने काम खुद करते थे। चाय वगैरह संगत को बांटने में भी आगे रहते थे।

स्वामी जी कहते थे कि जब भी भोजन बनाओ मन में जाप करते रहना चाहिये और कम से कम बोलना चाहिये। बोले हमारे पिताजी सिंध में बाबा स्वरूपदास जी का बखान करते हुये बताते थे कि जब वे किसी से मिलते थे तो चार बातें पूछते थे। कौन हो, आपके पिताजी का नाम क्या है, कहां से आये हो और लंगर खाकर जाना। स्वामी हिरदाराम साहिब भी उनसे मिलने गये थे। वे गये, उनके पांव छुए। उन्होंने वहीं चार प्रश्न उनसे किये स्वामीजी ने आधे घंटे में 6 बार उनके चरण स्पर्श किये परन्तु वे अपने ध्यान में इतने तल्लीन थे कि हर बार एक ही प्रश्न बगैर नाराज हुए पूछते गये।

सेवा के जनक

डॉक्टर मीरा खिलनानी
डॉक्टर के एस खिलनानी
आदर्श नगर जयपुर
मो. 9414077341

डॉ. खिलनानी स्वयं नेत्र सर्जन हैं और डॉ. मीरा खिलनानी बाल्य चिकित्सा में एमडी हैं। संतों के सम्पर्क में आये तो हृदय शुद्धि सेवा निकेतन संस्थान के माध्यम से बाल चिकित्सा शिविर लगाने का निर्णय हुआ। प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को लगता है। आसपास से 350 से 400 बच्चे आते हैं। निःशुल्क फीस के साथ–साथ दवाइयां और डाइग्नोसिस टेस्टिंग भी फ्री में करते हैं। टी.बी. के मरीज भी आते हैं। उनका इलाज 8–9 महीने का होता है। उनको भी फ्री ट्रीटमेंट दिया जाता है। हर माह आकर उनको दवा ले जानी पड़ती है। टी.बी. छुआछूत वाली बीमारी है, वंशानुगत भी होती है, और दूसरों के संसर्ग में आने से भी होती हैं। वहां पर मिर्गी के मरीज भी आते है। उनका इलाज 2–3 साल चलता है, उन्हें भी हर महीने आकर दवाइयां ले जानी पड़ती हैं। एक्स–रे की जरूरत पड़ती है तो करवाते हैं।

उन्होंने बताया कि सेवा लेने वालो से ज्यादा भाग्यशाली आप है कि प्रभू ने आपको सेवा के योग्य समझा तभी तो आप को सेवा मिली है। उन्होंने बताया हमारे आग्रह पर स्वामी जी हमारे घर आये थे, वे पूरे घर में घूमे, उन्होंने कहा इस घर की एक–एक ईंट ईमानदारी के पैसे से बनी हुई है। उनको घर में पवित्रता का वास नजर आया।

उनके पास में ही माखीजानी परिवार रहता है, उनके आग्रह पर भी स्वामीजी उनके पूरे घर में घूमे, उनके घर में ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी, स्वामी जी सीढ़ीयों से ऊपर जाने लगे तो माखीजानी जी ने कहा स्वामीजी ऊपर कुछ भी नहीं है। स्वामजी आधी सीढ़ियों से नीचे उतर आये। माखीजानी परिवार ने अनेक बार प्रथम तल बनाने का प्रयास किया मगर सफल नहीं हो सके हैं। उनकी माताजी और पिताजी फ्रीडम फाइटर (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) थे। उनके पिताजी श्री मेठाराम खिलनानी जी एवं माताजी गंगादेवी थीं। उनके पिताजी सिंध में इम्पीरियल बैंक में एकाऊंटेट के पद पर कार्य करते थे जिसे अब भारतीय स्टेट बैंक (स्टेट बैंक आफ इंडिया) के नाम से जाना जाता है। बाद में उन्होंने वह नौकरी छोड़ दी और स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन से जुड़ गये।

यहां पर उनको कांग्रेस सरकार ने विस्थापितों को स्थापित करने का काम दिया। अनेक जगह पर उन्होंने लोगों को बसाया। अंत में दिल्ली में रहे। 1957 में वे जयपुर आ गये तब से वे जयपुर में ही रह रहे है। पिताजी एलआईसी का काम करते थे, उनके जीवन यापन का यही एक मात्र साधन था। उनकी एक बहन बैंक में नौकरी लगती है, दो बहनें और एक भाई भी डॉक्टर हैं।

उन्होंने बताया उनकी पढ़ाई शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय से हुई। वहां पर फीस 400 रूपए प्रति वर्ष थी। पुरानी किताबों से पढ़ाई करते थे, कालेज पास में था तो पैदल ही कालेज चले जाते थे। उनको राष्ट्रीय प्रतिभा खोज स्कालरशिप मिलती थी 1200 रू. प्रति वर्ष जो 7 वर्ष तक उनको मिली। उस समय शिक्षा इतनी महंगी नहीं थी।

बात आगे बढ़ी तो उन्होंने बताया कि स्वामीजी और उनके पिताजी का जन्म स्थान और जन्म सन् एक ही थे। 1906 में स्वामी जी और उनके पिताजी मेठाराम खिलनानी का जन्म हुआ था। वे साथ–साथ खेलते थे। बाद में स्वामी जी अध्यात्म की ओर चले गये और उनके पिताजी ने स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन की राह पकड़ ली और 1942 में 3 वर्ष कारागृह में काटे।

स्वामीजी जी 1981 में जयपुर आये और वच्छानी जी के घर गये तो वे स्वामीजी के दर्शन करने गये। वे स्वामीजी के हम उम्र थे। स्वामीजी ने उनसे पूछा बच्चे क्या करते हैं, उन्होंने बताया बाकी सब अपने अपने कर्म क्षेत्र में लगे हुए हैं, छोटा बेटा साथ में रहता है, नौकरी करता है। बोले जाओ बेटे को ले आओ। उस समय मेरी उम्र 22–23 वर्ष की थी आकर मैंने स्वामीजी को माथा टेका। उन्होंने कहा सेवा करोगे, मुझे क्या सेवा करनी है, कैसे करनी है, क्या होती है आदि का ज्ञान ही नहीं था तो मैंने उनको बताया में एम.बी.बी.एस. डॉक्टर हूं। उन्होंने पिताजी को कहा इसे नेत्र सर्जन बनाना वास्तव में मुझे वही ब्रांच मिल भी गई और मैं नेत्र सर्जन बन गया।

स्वामीं जी के हृदय में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियो के लिये, गांधीजी के लिये, सैनिकों के लिये बहुत आदर भाव रहता था। वे उनकी बहुत इज्जत करते थे। पिताजी की बहुत इज्जत करते थे, उनके पिताजी भी सेवा कार्यो में लीन रहते थे। उस समय सेवा कार्य आज के मुकाबले 100 गुना कठिन काम था। गरीबी थी। देश परतंत्र था।

उन्होंने बाद में बास्को नेत्र शिविर लगाया जिसका जिक्र में पहले ही कर चुका हूं। उसके बाद 2019 तक कैम्प लगातार लगाया। मगर कोरोना काल में बंद था। फिर भी वे हर तीसरे रविवार को जाते हैं, रोगियों की जांच करते हैं। 100–150 मरीज आते हैं जो ऑप्रेशन योग्य होते हैं उनका ऑप्रेशन किया जाता हैं। वे शासकीय सेवा में हैं, अब सेवा निवृत्त होने वाले है। वे बोले संतों के संग में ही समझा कि सेवा क्या होती है, उसका सुख क्या होता है और उसके लाभ भी प्रत्यक्ष रूप से जीवन में अनुभव किये।

उन्होंने बताया कि उन्होंने संत लीलाशाह को नहीं देखा था, मगर उनके बारे में बहुत सुना है, लेकिन हमारे संत हिरदाराम साहिब जैसा संत मैंने जीवन में दूसरा नहीं देखा। दो जोड़ी कपड़े, न्यूनतम आवश्यकताएं, झोपड़ी में बगैर किसी विलासिता के जीवन जीना, स्वयं अपने हाथों से बगैर नमक, तेल, शक्कर, के उबला हुआ खाना बनाकर खाना, समय का अनुशासन, जो समय बोला 9 बजे तो उसका पूर्णतः पालन करना, दीन दुखियों की सेवा करना, चिकित्सा शिविर लगाना, बच्चों, बूढों, बीमारों को परमेश्वर के दोस्त बताना, उनकी भावना से सेवा करना और यही था उनका जीवन दर्शन। उनको पता चल जाता था कि कौन सा अनुयायी कौन सी इच्छा मन में रख कर

आया है।

उन्होंने बताया कि उनका जुलाई 1998 में स्थानान्तरण हो गया, वे परेशान हो गये। सिद्धभाऊ से अनुरोध किया सिद्धभाऊ ने कहा आप संतों के पास पुष्कर आओ। समय निश्चित हुआ प्रातः 9 बजे का। वे 9 बजे समय पर कुटिया पर आ गये। स्वामीजी ने उनसे पहला प्रश्न किया उत्तर कौनसी दिशा में है, वो उत्तर दिशा को बूझ नहीं पाये तो संतों ने कहा यही तुम्हारी समस्या है, दुनिया में क्या हो रहा है, तुम्हारे ट्रांस्फर की बातें चल रही थीं और तुमको पता ही नहीं था। ऐसा केसे हो गया? उस दिन 30 जुलाई 98 थी वे वापस आये और ट्रांसफर रोकने के लिये आवेदन दिया। 31 जुलाई तक ही यह संभव होता है और स्वामीजी के आशीर्वाद से उनका ट्रांसफर रुक गया और उसके बाद आज 24 वर्ष बाद तक जब वे रिटायर हो रहे हैं उनका फिर कभी ट्रांसफर नहीं हुआ। स्वामीजी जानते थे, अन बोली कथा पहचानते थे और अपने भक्तों के कार्य संवार देते थे।

जब भी वे स्वामीजी से मिलने जाते थे तो कुछ खाकर नहीं जाते थे। वहां पर जाते थे तो स्वामीजी पूछते थे क्या खा के आये हो तो मैं बोलता कुछ भी नहीं खाया, नाश्ता भी नहीं किया। तब एक बार स्वामीजी उनको साथ लेकर रसोई घर में गये, वह उनका रसोई घर था, जहां वे स्वयं अपने लिये भोजन बनाते थे ओर उन्होंने उन्हीं बर्तनों में उनको खाना परोस के दिया जिसमें वे स्वयं खाते थे। ऐसे भक्त वत्सल थे स्वामी जी।

उनका बेटा आईआईटी खड़गपुर से उत्तीर्ण हुआ, उनकी एक बेटी दिल्ली यूनीवर्सिटी में इंग्लिश की प्रोफेसर है। डॉक्टर साहब का गृहस्थ में रहकर भी सन्यासी जैसा आचरण है। वे आज भी जवाहर नगर झुग्गी बस्ती में कैम्प लगाते है। उन्होंने बताया शासकीय सेवा में रहते हुये डॉक्टर को सेवा के बड़े बड़े अवसर मिलते हैं। मिलते तो प्राइवेट डॉक्टर को भी हैं, मगर हम लोग गरीब लोगों का इलाज करते हैं। जो नये नये डॉक्टर आते हैं उनको भी सेवा भाव सिखाते हैं जो कि प्राइवेट डॉक्टर नहीं कर सकता। नायला गांव में बिल क्लिंटन भी आये थे।

पूर्व जन्म के साथी

श्री एल.जी. मूलचंदाणी
स्पेन मो.9827056790

श्री एल जी मूलचंदाणी जी मूलतः अजमेर के निवासी हैं। स्वामीजी की असीम कृपा से वे छोटी उम्र में ही स्पेन चले गये थे। उनकी पहली यात्रा साढ़े तीन साल की रही। उनका वेतन तो 10000 रूपए प्रति माह तय हुआ था मगर एक साल में वे अपने अथक प्रयासों से तीन गुना वेतन पर पहुंच गये थे। उनसे जब चर्चा हुई तो पता चला कि वे संतों के अनन्य सेवादार स्व. रोचीराम आडवानी जी के दामाद, मेरे आत्मीय सहयोगी श्री तुलसी आडवानी जी के बहनोई हैं।

अब वे स्पेन में ही सनग्लास एण्ड इलेक्ट्रॉनिक्स का व्यापार करते है। स्पेन में दुकानें रात्रि को 10 बजे बंद हो जाती हैं। एक बार दुकान बंद करने के पहले गोदाम में बने वॉशरूम में फ्रेश होने के लिये गये और दुकान बंद करना भूल गये। लगभग 1 घंटे बाद माल के चौकीदार का उनके पास फोन आया कि आप कहां हैं, आपकी दुकान की

लाइटें तो बंद हैं मगर दुकान खुली है। वे घबरा कर अनेक शंकांओं से घिरे दुकान आये, शंका होना तो लाजिमी था क्योंकि इसके पूर्व भी उनकी दुकान के ताले तोड़कर चोरी हो चुकी थी और अब तो दुकान खुली थी। मगर जब वे दुकान पर पहुंचे तो उनके दुकान से कुछ भी चोरी नहीं हुआ था। इसे वे स्वामी जी का चमत्कार ही मानते हैं।

उन्होंने बताया कि वे पुष्कर स्वामीजी के आश्रम गये थे और स्वामीजी की पगदाब सेवा कर रहे थे। तब स्वामी जी ने उनको कहा था लक्ष्मण तुम मेरे पूर्व जन्म के भी साथी हो। क्योंकि हम जब किसी से भी मिलते हैं तो उसके पीछे कोई न कोई संबंध होता है। उन्हीं संबंधों के कारण माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई बहनों के साथ मिलते हैं। वे सबको बड़े गर्व से बताते थे कि मेरा पूर्व जन्म भी मनुष्य का ही था। वैसे हमारे शास्त्रों में 84 लाख योनियों का वर्णन है, मगर अनेक विद्वान इस धारणा को नहीं मानते, उनका कहना है जैसे आम की गुठली से आम का पेड़ ही बनेगा वैसे ही मनुष्य शरीर का पुनर्जन्म मनुष्य ही होता है। हां, कर्मो के अनुसार वह गरीब–अमीर हो सकता है, परन्तु बनेगा वह मनुष्य।

पुष्कर आश्रम से मिलती हैं सकारात्मकता

श्रीमती गरिमा बजाज
वैशाली नगर अजमेर
मो. 9571133645

श्री देश बजाज, स्वामीजी के अनन्य सेवावृती थे। उनकी तबीयत बहुत ज्यादा खराब थी। पता चला कि वे मित्तल हॉस्पिटल में भर्ती हैं। आज उनकी छुट्टी होने वाली है। वे शास्त्री नगर में रहते हैं। मगर उनके दूसरे भाई स्व. बजाज जी का परिवार वैशाली में रहता था। उनसे मेरा पूर्व परिचय था। वैशाली बस स्टॉप पर ही उनकी स्टेशनरी की दुकान है। मैं जब भी अजमेर जाता था उस दुकान पर जाकर उनके बारे में पता कर आता था। इस बार गया तो पता पड़ा कि वे नहीं रहे। मगर फिर भी मैं पता पूछकर उनके घर गया, और घर वालों से कुछ संस्मरण देने के बारे में आग्रह किया।

पूज्य बजाज परिवार की विदुषी महिला से बात की तो उन्होंने जो बताया उसमें से जो समझ पाया वो आपके सामक्ष रख रहा हूं। उन्होंने बताया कि स्वामीजी इस घर में आये थे। वे इस कमरे से निकलकर उस कमरे तक गये, पीछे की तरफ जंगल जैसा माहौल था उस तरफ घूमने के लिये निकल गये। अभी नई नई कॉलोनी बन रही थी, हमारे घर में बाउंड्री वाल भी नहीं थी। स्वामी जी कुछ देर बाद जंगल से आ गये और उन्होंने आते ही कहा यह कमरा मुझे सबसे ज्यादा पसंद आया, क्या मैं यहां पर रह सकता हूं। हमने अति प्रसन्नता पूर्वक कहा, यह हमारा सौभाग्य होगा। हम ऐसे पवित्र क्षणों को कैसे गंवा सकतें है। आपका घर है, आप रहिये।

श्री बजाज साहिब और उनकी श्रीमती दोनों का परिवार स्वामी जी में अपार श्रद्धा रखते थे, परिवारों का आपस में परिचय था, अतः दोनों परिवार विवाह बंधन में बच्चों को बांधकर एक हो गये। स्वामजी के आशीर्वाद से ही उनका विवाह संपन्न हुआ।

उनका बेटा स्नातक है और भवन निर्माण सामग्री का आयात–निर्यात का व्यापार करता है। बजाज साहब पोस्ट एवं टेलीग्राफ ऑफिस से वरिष्ठ पोस्ट मास्टर के पद से

सेवानिवृत्त हुए थे, उनके बेटे ने बताया जब वे गर्भ में थे तो उनकी माताजी स्वामीजी के दर्शन के लिये पुष्कर गई थीं। उनके दिल में मालपुआ खाने की बहुत इच्छा हो रही थी क्योंकि पुष्कर में आने वाले मालपुआ पसंद करते हैं। मगर यह बात सिर्फ माताजी को ही पता थी, जैसे ही वे पुष्कर आश्रम पहुंचे तो स्वामीजी ने उनको बोला इस माता की इच्छा मालपुआ खाने की हो रही है इसे मालपुआ खिलाओ, जबकि माताजी ने किसी को बताया भी नहीं था लेकिन स्वामीजी तो सब जान जाते थे।

एक बार उनके पिताजी को कपड़े प्रेस करने थे, परन्तु आश्रम में प्रेस नहीं थी। उसी समय पता नहीं कहां से एक अनुयायी आया और आश्रम को प्रेस देकर चला गया। कितनी अजीब बात है सोच में जो बात आई वह साक्षात रूप से साकार हो गई। यह था कुटिया मे व्याप्त सकारात्मक तरंगों के प्रवाह का असर।

एक बार उनके नानाजी ने संतों से निवेदन किया कि बिटिया विवाह योग्य हो गई है, आशीर्वाद दीजिये। संतों ने पुष्कर कुटिया में श्री गुरू ग्रंथ साहब के पाठ का आयोजन किया। उनकी नानी से पूछा विवाह तय करना है, लड्डू बांटोगी। नानी ने कहा हां क्यों नहीं। पाठ शुरू हुआ, संतजी आश्रम में चहल कदमी करते रहे। उन्होंने न कुछ खाया न पिया सिर्फ चहल कदमी ही करते रहे। पाठ का समापन हुआ तभी पता नहीं कहां से चार साधू आये, संतों ने उनको चार चार लडू बांटे और कहा, **चार चार बेड़ा पार**। उनके बाद ही उन्होंने प्रसादी ग्रहण की और फिर जल्द ही उनकी बेटी का विवाह तय हो गया।

संतों में नूर के दर्शन

श्री दिलीप गुलराजानी
जापान

बैरागढ़ के वृद्धाश्रम में पिछले 3 महीने से वे स्वास्थ्य लाभ करने के उद्देश्य से रह रहे है। उनको Brain में कुछ समस्या के कारण ऑप्रेशन कराना पड़ा। सिद्धभाऊ के कहने पर अब छः महीने यहां पर और छः महीने जापान में रहने की योजना पर काम कर रहे हैं। वे सबेरे अमृतवेला में कुटिया पर जाते हैं, कुछ होम्योपैथिक और कुछ आरोग्य केन्द्र के दिशा निर्देशानुसार इलाज करते हैं। रोज गुरूवाणी का पाठ करते हैं, मधुर संगीत सुनते हैं, शाम को सेवा सदन में जाकर मरीजों के लिए भोजन वितरण व्यवस्था में भाग लेते हैं।

उनके पिताजी श्री रेवाचंद गुलराजानी रेल्वे में गार्ड के रूप में कार्य करते थे, उन्होंने अपने सीमित साधनों के होते हुए भी उन्हें इंजीनियर बनाया। उनके चाचाजी हीरानंद गुलराजानी जापान में व्यवसाय करते थे, उनके यहां जॉब करने के लिये वे जापान गये। लगभग 10 वर्षो तक उन्होंने वहां पर जॉब किया और बाद में उन्होंने अपना व्यवसाय शुरू किया। उन्होंने विवाह भी एक जापानी महिला से करके उसे अर्धांगिनी बनाया, जिनसे उनको एक बिटिया भी है। जो आज एक बैंक में सर्विस करती है। उनकी अनुपस्थिति में उनकी धर्मपत्नी वहां व्यसाय का संचालन करती है।

उन्होंने बताया कि उन्हें सिद्धभाऊ और संतो में एक ही नूर के दर्शन होते हैं। उन्हें जापान में अच्छा तो नहीं लगता, जो संस्कृति, अपनापन और प्यार भारत में है वह जापान तो क्या पूरे संसार में कहीं नहीं है।

उन्होंने बताया कि जापान के लोग मृदुभाषी एवं संस्कारों से भरे हुए हैं। कर्म में विश्वास करते हैं। उन्होंने बताया वहां पर लोगों में दान की प्रवृति बहुत कम पाई जाती है।

प्रसाद का असर

श्री कन्हैयालाल टेंवाणी
संत हिरदाराम नगर।
मो. 7974599916

कन्हैयालाल टेंवाणी से मेरा परिचय तो पुराना था। मैं 1965 में संत. नगर में रहने आया था कक्षा 10वीं में पढ़ता था। उस समय बैरागढ़ में स्कूल की किताबों की दो ही दुकानें थीं। एक इनका गुरूनानक स्टोर दूसरा पूज्य स्व. मास्टर तोतलदास जी का गोबिंद बुक स्टोर। हम लोग किताबें वहीं से लेते थे। मेरे संबंध 1976 में उनसे ज्यादा जुड़े जब मैंने पार्ट टाइम डिप्लोमा मैकेनिकल इंजीनियरिंग में करने के लिये भोपाल के सरदार वल्लभ भाई पोलीटेकनिक में प्रवेश लिया। वे वहां पर क्लर्क के पद पर कार्य करते थे। स्व. मंघनमल पेसवानी भी वहीं पर कार्य करते थे। दोनों मृदुस्वभाव के थे इस कारण भी उनसे गहरे संबंध हो गये। 26 जनवरी 1978 को जब साक्षरता अभियान का कार्य शुरू हुआ तो मेरे और मेरी धर्मपत्नी के 6–6 रूपये लेकर जब उनसे किताबें लेने गया, उनको उद्देश्य बताया तो उन्होंने कुल 18 रूपये दान में दिए, 6 रूपये स्वयं, 6 माता जी के और 6 अपने पिताजी के नाम से दिये और कहा आज के बाद आपसे बगैर लाभ हानि के व्यापार करूंगा, आपके उद्देश्य की पूर्ति के लिये, आपसे आजीवन बंधा रहूंगा। आज तक वे अपनी बात पर कायम हैं। अब तो गुरूभाई भी हैं। मैं 1982 में स्वामीजी के साथ जुड़ा जब कि वे तो उनसे पहले ही जुड़े हुये थे। जब उनसे बातें शुरू हुई तो उन्होंने बताना शुरू किया।

जो भी संतों के दर पर कोई आशा रखकर आता है, उसकी आशा अवश्य ही पूरी होती है। उन्होंने बताया कि एक बार एक वृद्ध अपने साथी के साथ आटो में बैठकर कुटिया पर आये। वह चलने फिरने में भी असमर्थ थे। स्वामीजी ने उनको देखते ही कहा इसको बाहर निकालो, बाहर निकालो। फिर भी उन्होंने संतो के दर पर माथा टेका, फल आदि रखे, स्वामीजी को 5 रू. दक्षिणा दी तो संतों ने उनसे कहा यह 5 रू. सांई धनाराम जी के दरबार में जाकर डालना। जाओ, प्रभू भला करेंगे। जब वे गये तो कन्हैयालाल जी को संतों ने कहा मैने उनको नहीं बीमारी को बाहर निकलने के लिये कहा था। वे तीन बार फिर कुटिया पर आये और एक दम स्वस्थ हो गये थे। उन्होंने श्री सुखमनी साहिब की कुछ पंक्तियां कहीं–

जो इछै, सोई फलु पावै, साध कै संगि न बिरथा जावै।
कोटि अप्राध साध संगि मिटै, संत क्रिपा ते जमते छुटै।

उन्होंने एक अन्य दृष्टांत में बताया कि संतनगरी का एक नौजवान बीमार हुआ, उसे बाम्बे ले जाया गया, डॉक्टरों ने उसे देखा मगर लाइलाज बता दिया, फिर भी उसके भाई ने उसे वहां भर्ती करवा दिया। उसके भाई का संतों में अटूट विश्वास था। वह वापस भोपाल आया और स्वामी जी को आकर दया करने के लिये प्रार्थना की। स्वामी जी ने

कहा मैं कोई डॉक्टर थोड़े ही हूं। मैं क्या करूंगा। वो नौजवान गेट के बाहर जाकर बैठ गया। स्वामीजी अपने कमरे में चले गये और समाधि में लीन हो गये। स्वामीजी लगभग 1 घंटे बाद समाधि से उठे तो उन्होंने पूछा वो बालक है या चला गया। सेवकों ने बताया कि वह गया नहीं अभी भी बाहर बैठा है। स्वामीजी ने उसको बुलाया और मिश्री का प्रसाद दिया और कहा इसमें से थोड़ा प्रसाद भाई को, थोड़ा डॉक्टर को और थोड़ा प्रसाद अस्पताल के कर्मचारियों को खिलाना। जाओ प्रभू भला करेंगे। वह खुश होकर ग़या, हवाई जहाज से टिकट बुक करवाई और फिर जैसा स्वामीजी ने कहा था वैसा ही किया। स्वामीजी प्रसाद में हमेशा मिश्री ही बांटते हैं। जिस डॉक्टर ने उसके ऑप्रेशन के लिये मना कर दिया था बाद में उसी ने ऑप्रेशन किया। आज वह युवक बैंक में नौकरी करता है, और ठीक है।

अपक्वाहार का महत्व

श्री राणोमल दावानी
इन्दौर मो. 8770209025

श्री राणोमल दावानी का नाम मुझे भाई दयाल मूलचंदानी ने छः सात माह पहले यह कहकर बताया था कि राणोमल की बेटी की मनोहर डेरी वालों के घर में शादी की हुई है। वे संतों के अच्छे शिष्यों में से हैं आप एक बार उनसे जरूर मिलें। एक दो बार मैंने उनको फोन भी किया एक दिन संयोग से दयाल जी रास्ते में मिले और उन्होंने बताया कि राणोमल जी वृद्धाश्रम में आये हुए हैं। मैं भी 5 किलोमीटर की दैनिक पैदल यात्रा पर निकला ही था। अतः बगैर एक क्षण भी गंवाये वहां पर पहुंच गया। उनको देखकर उनके चरण स्पर्श की इच्छा पैदा हुई और उन्होंने न जानते हुए भी पूछा आप लच्छवानी जी हैं मैंने कहा हां। उन्होंने बताया कि अभी दयाल थोड़ी देर पहले आया था और आपका जिक्र निकला था।

वार्तालाप शुरू करते हुए उन्होंने बताया कि आज से 25 वर्ष पहले उनके मन में अमरनाथ यात्रा करने का विचार आया। तीन परिवार और भी तैयार हुये थे। उसके लिये उन्होंने 2000 रूपये निर्धारित शुल्क भी जमा कर दिया था। टिकट भी बुक हो गये थे। अचानक उनके मन में विचार आया कि स्वामी जी की आज्ञा ले लेनी चाहिये। यही विचार कर वे पुष्कर गये। स्वामीजी को अमरनाथ यात्रा के बारे में बताया। स्वामीजी ने पूछा कि और कौन कौन जा रहा है। उनको साथ जाने वाले परिवारों की जानकारी दी। स्वामीजी ने सुना दो मिनट आँखें बंद की, ध्यान किया और कहा कि तुम अमरनाथ मत जाना। मैंने कहा स्वामीजी जैसी आपकी आज्ञा। उन्होंने कहा हो सके तो जो जा रहे हैं उनको भी मना करना कि वे भी न जायें। जब वे स्वामीजी से वापसी की आज्ञा मांगने गये तो उन्होंने फिर कहा वे जाते हैं तो जायें मगर तुम मत जाना। वे लौट आये और अपने सहयोगियों को कहा स्वामी जी ने आज्ञा नहीं दी है अतः मैं नहीं चलूंगा उन्होंने जो 2000 रू. शुल्क दिया था वह भी उनको वापस नहीं मिला। जब वे लोग यात्रा शुरू कर दिल्ली स्टेशन पर पहुंचे तो उनको वहां पर सूचना मिली की अमरनाथ में भयंकर तूफान आया है और हजारों लोगों की जान चली गई है। वे फिर भी कटरा तक गये वहां पर उनको बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा और वे बगैर दर्शन किये ही वापस लौट आये।

स्वामीजी ने कई बार इस घटना का जिक्र संगत के सामने किया कि राणो को मैने अमरनाथ यात्रा जाने के लिए मना किया था और वह नहीं गया।

श्री राणोमल जी की आयु आज 88 वर्ष की है और वे पूर्णतः स्वस्थ हैं। उन्होंने अन्य वृतांत में बताया कि वे एक बार कुटिया पर आये थे, संतजी को प्रणाम किया। कुटिया में दाहिने हाथ पर छोटी सी दरबार बनी हुई थी। वहां पर संत शीतलसिंह जी पाठ कर रहे थे। संतजी ने उनको कहा वहां जाओ और जाकर पाठ का आनन्द लो। वे दरबार में गये माथा टेका और पाठ सुनने लगे। स्वामीजी उस समय खिड़की के बाहर आकर खड़े हो गये। थोड़ी देर बाद उन्होंने आंखे खोलीं तो उनको साक्षात गुरूनानक साहिब के दर्शन हुए। पाठ तो शीतलसिंह जी कर रहे थे लेकिन शीतलसिंह की जगह उनको गुरूनानक शाह के साक्षात दर्शन हुये। ऐसी असीम कृपा थी संतों की उन पर। मैंने कहा दृष्टि भ्रम रहा होगा। बोले नहीं वह दृष्टि भ्रम नहीं था बल्कि सत्य में ही उन्हें गुरूनानक शाह के साक्षात्कार हुए थे।

स्वामीजी से उनका पहला परिचय इन्दौर में 1968 में हुआ था। स्वामीजी स्वास्थ्य लाभ के लिये डॉ. भोजराज छाबड़िया जी के पास आये थे। उनसे उनकी सिंध से मित्रता थी। वे पहले बाम्बे में रहते थे। वे उनको बाम्बे से इन्दौर लेकर आये थे। सिर्फ उनको ही नहीं अनेक मित्रों को उन्होंने इन्दौर में बसाया। उन्होंने डॉ. छाबड़ियाजी को अनेक तरह से बसने में मदद की। उनका इन्दौर की पलासिया कॉलोनी में 6500 वर्ग फुट प्लाट पर हवेलीनुमा बंगला था। वे 1965 में सिंध से इन्दौर शिफ्ट हुए थे मैंने उनसे पूछा इतने वर्ष बाद आप सिंध से आये ऐसा क्यों? बोले वहां पर सिंध में आज भी जो सिंधी हिन्दू रहते हैं वे आर्थिक, सामाजिक, नैतिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं। वे उसके बाद भी सिंध, अफगानिस्तान, यू.ए.ई. आते जाते रहे।

बात चल रह थी स्वामीजी अपने स्वास्थ्य लाभ के लिये डॉ. छाबड़िया के पास आये थे वहीं पर उनसे मुलाकात हुई। वे स्वामीजी के लिये गेहूं के जवारे उगाते थे उनको पीस कर, शहद मिलाकर स्वामीजी को पिलाते थे और सच्चे दिल से स्वामीजी की सेवा करते थे।

26 अक्टूबर 1977 की शरद पूर्णिमा को स्वामीजी के बुलावे पर पहली बार वे डॉ. भोजराज छाबड़िया को साथ लेकर पुष्कर गये थे। स्वामीजी ने कहा था आने जाने का खर्च आप करना भोजराज से मत करवाना, मैं दे दूंगा उसके बाद तो उनका क्रम बन गया कभी पुष्कर, कभी भोपाल की कुटिया पर आना जाना लगा रहा। उन्होंने बताया कि 1968 में डॉ. रमेश टेंवाणी भी इन्दौर में अपने स्वास्थ्य लाभ के लिये डॉ. छाबड़िया के पास आये थे। उसके बाद ही उनका परिचय कन्हैयालाल टेंवाणी परिवार से हुआ। उन्होंने भी डॉ. छाबड़िया के मार्गदर्शन में 10 दिन का उपवास किया था। जिसमें अपक्वाहार का ही भोजन वे करते थे। मूंगफली और बादाम को छोड़कार अन्य सूखे मेवे, गाय का दूध वगैरह उनकी आहार दिनचर्या में थे।

उनका विवाह 14 वर्ष की आयु में ही हो गया था। उनका वैवाहिक जीवन 73 वर्ष का रहा। डेढ़ वर्ष पूर्व ही उनकी सहधर्मिणी उनको छोड़कर चली गईं। उनको इसका बहुत आघात लगा। उनको ब्रेन हेमरेज हो गया। उसके बाद 2–3 अलग अलग हॉस्पिटल में रहकर उन्होंने इलाज करवाया। अब वे ठीक हैं मगर अब भी उनकी याददाश्त ठीक नहीं है। बोलते बोलते उनके शब्दों का तारतम्य टूट जाता है। उनके परिवार में 5 बेटे और 3 बेटियां हैं। एक बेटी नागपुर में, एक भोपाल में और एक इन्दौर में

ही है। 5 बेटों में से 2 दुबई और 2 इन्दौर में हैं। एक बेटे का हार्ट अटैक के कारण स्वर्गवास हो गया था। पत्नी के स्वर्गलोक सिधारने के बाद वे अमृतवेला में उठ जाते हैं और गुरूवाणी का जाप करते रहते हैं। जिससे उनकी जिंदगी में दुःखों को सहने की शक्ति आ गई है।

प्राकृतिक चिकित्सा से चमत्कार

डॉ. किशन बच्चानी
संत हिरदाराम नगर।
मो. 9009178918

डॉ. किशन बच्चानी मेरे ममेरे भाई हैं। मैं भोपाल लखेरापुरा में रहता था, और वे संत नगर में छोटे बच्चे थे, हर सप्ताह नानी के घर जाना हैं। आजकल के बच्चे ननिहाल जाने से कतराते है। ये आपस में 6 भाई, 3 बहनें; हमारे दूसरे मामा के 7 बेटे और 2 बेटियां सब लगभग किशोर अवस्था में खूब महफिल जमती थी। तितलियां पकड़ना, टेकरी पर चले जाना, पानी की बहुत किल्लत थी तो टेकरी पर पानी की टंकी थी वहां से पानी भर कर लाना, पास में साबुन फैक्ट्री से साबुन का पानी खरीदकर लाना और उसमें कपड़े धोना। आज भी वे बातें याद आती हैं। दांत काटी रोटी के संबध थे। आजकल तो भाई—भाई के संबंध भी मतलब की तराजू पर तौले जाते है। दोनों मामा एक ही मकान के दो हिस्से करके आगे और पीछे रहते थे। एक बैरक के बाद ही खाली मैदान था दूर दूर तक फैला हुआ। डॉ. किशन बचानी भाईयों में 5वें नंबर पर हैं। दो भाई तो अब नहीं रहे मगर 4 भाई और 3 बहनें अब भी है। वे सामान्य कद काठी के हैं। उनकी अपनी आवश्यकताएं सीमित हैं। सादाखाना, सादा खानपान उनकी दिनचर्या है। आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व मैंने उनको सेवा कार्यों से जुड़ने का आग्रह किया। नवयुवक परिषद संत हिरदाराम नगर जो मेरे द्वारा गठित की गई ऐसी सामाजिक संस्था थी, जो ऐसे बच्चों को पढ़ाने का जिम्मा लेती है जिनके मांबाप कहते हैं कि हम गरीब हैं, हम खाये या बच्चों को पढ़ाये। ऐसे मां—बाप को आश्वस्त कर बच्चों को स्कूल भेजा जाता है, उनका पूरा खर्चा परिषद वहन करती है। मां—बाप के ऊपर कोई बोझ नहीं आता। उस समय ऐसे बच्चों के लिए फ्री कोचिंग व्यवस्था चलती थी। उसमें इनको टीचर का दायित्व सौंपा गया। टीचर के साथ—साथ ये बच्चों को संस्कारित भी करते थे, बिल्डिंग का रखरखाव, दान—दाताओं से दान का संग्रह करने के अलावा जोन इंचार्ज का दायित्व भी साथ साथ संभालते थे।

बाद में वे आरोग्य केन्द्र से जुड़ गये। 1995 में वे आदीपुर डॉ. मोहन भारती के आश्रम में गये वहां पर उन्होंने एक्यूप्रेशर की ट्रेनिंग ली। उस समय संतनगरी से 6—7 लोग वहां गये थे। वहीं पर होतचंद धनवानी (सिद्धभाऊ) एवं स्वामाजी भी गये थे। वहीं पर उन्हें संतो के समीप आने का मौका मिला। मौका न कहकर हम कहें कि सुनहरा मौका मिला। वहां पर संतों के संसर्ग में आने के बाद उनके विचारों में बहुत परिवर्तन आया। शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्तर में बहुत ही वृद्धि हुई। वहां पर जाने के बाद उनका चाय पीना बंद हो गया। आज 27 वर्ष बाद भी उनका चाय पीना बंद ही है। जब वहां से लौटकर आये तो उन्हें स्वामीजी की सेवा का मौका ज्यादा मिलने लगा। वे

रोज कुटिया में जाकर स्वामीजी के हाथों, पैरों, पीठ, पेट और सिर की मालिश करते और सेवा करते थे।

मैंने बताया कि उनकी आवश्यकताएं कम थीं। उनका एक ही बेटा है। उसने भी प्राकृतिक चिकित्सा में बी.एन.वाई.एस. कोर्स कर्नाटक से पास किया है। जब वह डॉक्टर बन गया तो उन्होंने 50 वर्ष की आयु में शासकीय सेवा से स्वैच्छिक आधार पर सेवा निवृत्ति ले ली और जी जान से मरीजों की सेवा में जुट गये। आज उनके द्वारा अनेक मरीज ठीक हो रहे हैं लेकिन वे कहते हैं कि ठीक तो स्वामीजी के आशीर्वाद से हो रहे हैं।

सेवा का मोती, अनमोल माला

श्री दिलीप राजानी
ऐश्वर्या साड़ी, संत हिरदाराम नगर।
मो. 9977995099

श्री रमेश राजाणी समाज सेवा के स्तंभ हैं। वे सेवासदन नेत्र चिकित्सालय के ट्रस्टी हैं। उन्होंने अपने जीवन में बहुत उतार चढ़ाव देखे हैं। उनको देखकर मुझे **'मदर इंडिया'** फिल्म का एक गाना याद आता है।

गिर गिर कर मुसीबत में संभलते ही रहेंगे, जल जायेंगे मगर आग पर चलते ही रहेंगे
गम जिसने दिये हैं वही गम दूर करेगा, दुनिया में हम आये हैं तो जीना ही पड़ेगा।

उनके परिवार में अनेक उतार चढ़ाव आये। संत नगर के इतिहास में दूसरा देह दान, उनकी माताश्री का संत हिरदाराम प्राकृतिक एवं योग महाविद्यालय को किया गया। किसी के कहने पर सेवा सदन के ट्रस्टी पद से उनको हटा दिया गया था। परन्तु प्रबंधन ने उनको लिखित में क्षमा प्रार्थना के साथ पद वापस सौंप दिया।

उन्हीं रमेश राजानी के सुपुत्र दिलीप राजानी हैं। सेवा का भाव उन्हें परिवार से ही संस्कारों में प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया कि उनके परिवार ने एक भूखण्ड खरीदा था, उसके भूमि भूजन के लिये स्वामी जी को निमंत्रित किया गया था। जिस दिन भूमि पूजन होना था उस दिन स्वामीजी को कुटिया से लाने का दायित्व परिवार ने उनको दिया था। वे निश्चित समय पर कार लेकर आश्रम आये। वे कार ड्राइव कर रहे थे। स्वामीजी एवं सिद्धभाऊ कार की पिछली सीट पर विराजमान हुए। उनके पिताजी श्री रमेश राजानी उनके साथ आगे बैठे थे। जब कार चली तो स्वामीजी ने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा तुम किस के सुपुत्र हो। मैं अबोध था, छोटी उम्र थी 16–17 वर्ष की। मगर पता नहीं मेरे मन में एकदम बिजली कौंधी और मेंने कार रोकी , संतों की चरण वंदना की और कहा स्वामीजी मैं आपका पुत्र हूं। स्वामी जी ने तब रमेश जी को बोला आपका यह पुत्र दानवीर बनेगा, कैंप लगायेगा और मरीजों की बहुत सेवा करेगा।

इसके बाद तो सेवा का ऐसा नशा चढा कि गांव–गांव जाते थे, लाउड स्पीकर ले जाते थे, पूरे गांव में ढिंढोरा पीटकर नेत्र शिविरों, यूरोलॉजी शिविरों की लोगों को जानकारी देते थे और मरीजो को भर भर कर बसों द्वारा सेवा सदन लाते थे, ऑप्रेशन करवाकर फिर उनको छोड़ने जाते थे।

उन्होंने बताया कि नर्मदा नदी में बाढ़ आई थी, उस समय उनके पिताजी 14 दिन तक सेवा कार्य करते रहे। वे 14 दिन तक घर ही नहीं आये थे। सचमुच में स्वामीजी द्वारा

बनाई गई सेवा की माला में अनेक अनमोल मोती हैं। हर एक का अपना रंगरूप, अपनी सुन्दरता है।

वैष्णवजन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे

श्रीमती तुलसी रामकुमार पेसवानी
(संतजी की भतीजी)
संत हिरदाराम नगर मो. 7898442921

स्व. मंघनमल पेसवानी जी सरदार वल्लभभाई पालीटेकनिक में शासकीय सेवा में थे। मेरा पहला परिचय उनसे 1976 में वहीं पर हुआ था। वे सादगी के अवतार, मृदु भाषी, अपनेपन की भावना से भरे हुये थे। महाविद्यालय के छात्रों से उनका बहुत अपनापन था। उनके परिवार की एक संयुक्त कन्फेक्शनरी आईटम की थोक दुकान संत नगर के मुख्य बाजार में थी। 1978 में जब मैंने साक्षरता अभियान संस्था के अन्तर्गत गरीब बच्चों को शिक्षा देने की बात शुरू की तो वे भी उसमें दान दाता बन गये। बाद में यह संस्था नवयुवक परिषद बन गई। वे दानदाताओं से प्रतिमाह दान का संग्रह करते थे। वे संग्रहकर्ताओं में सबसे ज्यादा संग्रह किया करते थे। उनके स्वर्गवास के बाद अब उनके भाई श्री रामकुमार पेसवानी एवं उनके पुत्र साथ साथ बने दो घरों में रहते हैं। श्री राम कुमार पेसवानी जी संतों की समाधि स्थल को 9 बजे प्रातः से 10 बजे प्रातः तक खोलकर रखते हैं एवं दर्शनार्थियों को प्रसाद वितरण का कार्य करते हैं। आज जब उनसे स्वामीजी के बारे में बात करने गया तो दीदी तुलसीजी पेसवानी एवं रामकुमार जी ने जो संयुक्त रूप से बताया वह अपने शब्दों में लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। वे लोग वार्तालाप के दौरान अनेक बार भावुक होकर रोने भी लगे। बोलते–बोलते उनका गला कई बार रुंध जाता था।

एक बार मंघनमल पेसवानी जी घर से सौंठ खाकर संतो की कुटिया में गये। वहां पर उन्होंने प्रसाद के रूप में भोजन ग्रहण किया एवं प्रसादी के बाद छाछ का सेवन किया। मगर घर आये तो उनके बदन में ऐंठन होने लगी। हाथ पांव ने काम करना बंद कर दिया। शरीर में इतनी भयंकर अकड़न कि सहन करना कठिन लग रहा था। तुरन्त डॉ. रमेश कुमार चांद को बुलाया गया। वे आये दवाइयां दी मगर कोई लाभ नहीं हुआ। उसके बाद उस समय के प्राकृतिक चिकित्सक श्री हरीराम तुलसियानी को बताया गया। वे आये बोले इनको मेरे चिकित्सालय ले आओ। थोड़े गुस्सैल किस्म के थे और मंघनमल जी तो जाने की स्थिति में थे ही नहीं। सारी रात पीड़ा में बीती। सबेरे 5 बजे के लगभग होतचंद धनवानी (सिद्धभाऊ) घर पर आये उनको स्वामीजी ने भेजा था। स्वामीजी को पता नहीं कैसे पता चल गया था कि मंघनमल जी की तबीयत खराब है। सिद्धभाऊ नाराज हुये कि आपने बताया क्यों नहीं। वे एक डाइट चार्ट बनाकर लाये थे और कहा फिक्र मत करो जैसा–जैसा और जो–जो इसमें लिखा है वही भोजन इनको देना। इसके अलावा कुछ भी नहीं देना। रिश्तेदार–नातेदार आ रहे थे, और तरह तरह की शंकायें जाहिर कर रहे थे। वे बोल रहे थे इस डाइट चार्ट से क्या होगा आप किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाओ। हमें अपने गुरूदेव में पूर्ण आस्था थी, जैसा जैसा उन्होंने कहा था हमने वैसा वैसा ही किया और फिर 8 दिन में ही पूर्णतः स्वस्थ हो गये।

यह वृतांत सुनकर मुझे भी याद आया। 1985 के आसपास मेरी सहधर्मिणी तरूलता लछवानी की तबीयत खराब हो गई थी। तब भी सिद्धभाऊ ने कहा था उसको अपक्वाहार पर रखो, नहीं रहेगी तो तबीयत ऐसी खराब होगी कि उठ ही नहीं पाएगी। उस समय मेरी घर वाली लगातार सात माह तक अपक्वाहार पर रही, उस समय उनकी उम्र 28 वर्ष के आसपास होगी और आज 66 वर्ष, मगर आज वे पहले से भी ज्यादा स्वस्थ हैं। अभी भी वे सादगी पूर्ण भोजन, सात्विक आहार करती हैं। वास्तव में प्राकृतिक चिकित्सा जैसी कोई दूसरी पद्धति है ही नहीं।

संत हिरदाराम नगर में शायद 1965 से अखण्ड रामधुनी का 7 दिवसीय आयोजन दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से शुरू होकर, नव वर्ष के दिन समापन होता था। 7 दिन तक संतनगर हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे की मधुर धुन से ओत प्रोत हो जाता था। समापन के दिन प्रसादी का वितरण होता था और यह दायित्व कपड़ा एसोसिएशन द्वारा संपन्न किया जाता था। एक वर्ष कपड़ा एसोसिएशन ने स्वामी जी को परेशान करने हेतु यह निर्णय लिया कि इस बार प्रसादी वितरण एसोसिएशन के माध्यम से नहीं होगा। सभी कार्यकर्ता चिंतित हो गए। स्वामीजी तक संदेश पहुंचा। स्वामीजी ने कहा, सब अच्छा होगा, काम मेरा नहीं है। राम जी खुद आकर करेंगे। आखिरी दिन आ गया। कुटिया के सेवादारी चिंता में घूम रहे थे। अचानक कुटिया के द्वार पर एक कार रुकी। उन्होंने दरवाजा खटखटाया, अमृतवेला थी, चिंतित सेवादारों ने दरवाजा खोला उन्होंने कहा आज प्रसादी वितरण के साथ सबको भोजन हमारी तरफ से करवाया जायेगा। आप लोग व्यवस्था करो। सबेरे सबेरे दुकानें खुलवाई गईं, सामान खरीदा गया और फिर तो ऐसा रंग जमा जो पहले कभी नहीं हुआ था। बाद में कपड़ा एसोसिएशन के पदाधिकारीयों ने स्वामीजी से माफी मांगी और भविष्य के लिये ऐसा नहीं करेंगे कहा।

उस प्रसंग में उन्होंने बताया कि एक बार एक वयोवृद्ध महिला अमेरिका से आई। उनको अनेक असाध्य रोग थे। वे हर तरह की दवाइयां खा खा कर ऊब चुकी थी। उन्होंने अपनी पीड़ा स्वामीजी को बताई स्वामीजी बोले मैं कोई डॉक्टर नहीं हूं मेरे पास क्या है। उन्होंने कहा आप दया के सागर है, मैं आपकी शरणागत आई हूं आप मुझ पर कृपा करें। तब स्वामीजी ने कहा सिविल हॉस्पिटल जाओ, वहां पर दवाइयों के वितरण के लिये टेबिल लगाओ और गरीब मरीजो को दवाई फ्री में बांटो। उस महिला ने स्वामी जी की आज्ञा मानी, जैसे जैसे वे दवाइयां बांटती गई वैसे ही वैसे वे ठीक होती गईं। उनकी तबीयत एक दम ठीक हो गई।

स्वामीजी अहमदाबाद प्रवास पर गये हुए थे। वहां पर सिंधी समाज के प्रसिद्ध गायक परमानन्द प्यासी जी ने उनसे आग्रह किया कि वे उनके घर पर पधारें और अपनी चरण धूलि से घर को पवित्रता प्रदान करें। स्वामीजी ने उनका आग्रह स्वीकार किया वे उनके घर गये। स्वामीजी ने सबेरे तौलिया लपेट कर अपने वस्त्र धोने के लिये उनकी अर्धांगिनी को दिये। परमानन्द जी ने अपनी धर्मपत्नी से कहा अच्छी तरह निचोड़कर साफ करके धोना। तब उनकी धर्मपत्नी के आंखों में आंसू आ गये और उन्होंने अपने पति को वह चोला दिखाया जो स्वामीजी पहने हुये थे और जो जगह जगह से तार तार हो रहा था। वो स्वामीजी जो अनेक स्कूल, वृद्धाश्रम, अस्पताल, निर्धनों की सहायता में करोड़ो रूपये खर्च करते है उनको अपने कपड़ो की भी चिन्ता नहीं थी। वे गुदड़ी के लाल थे। धन्य हैं ऐसे सत्पुरूष।

वैष्णवजन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे।

स्वामी हिरदाराम साहिबजी की पांच बहनें थीं। वे तो सन्यासी बन गये थे। उनके भाई व उनकी दो बहनों की शादी जोधपुर में निश्चित कर दी गयी। दोनों वर चाचा और भतीजे थे। एक के पिताजी का नाम रांवलदास था। स्वामीजी स्वयं कन्यादान करने पहुंचे थे। रांवलदास जी सोने चांदी का व्यापार करते थे, बहुत ही अमीर थे। उन्होंने अपनी बहूओं के लिये सोने के बहुत गहने बनवाये। संतजी ने उनको कहा था विवाह में मांस मच्छी और शराब की व्यवस्था मत करना। उन्होंने कहा ठीक है। विवाह संपन्न हो गया। स्वामीजी किसी अनुयायी के घर चले गये। रांवलदास को उनके दोस्तों, रिश्तेदारों ने दबाव डालकर घर में शराब और मांस मंगवाया और पकाने की तैयारियां होने लगी। तब तक स्वामीजी अचानक आ गये। उन्होंने यह सब देखा और नाराज होते हुये रांवलदास को कहा रांवल अब तक तो तुम थे सेठ अब हो जाओगे तुम गरीब ठेठ। रांवलदास जी डर गये उन्होंने उसी समय शराब की बोतलें फोड़ दीं, मांस फिकवा दिया मगर तीर कमान से निकल चुका था। उन्होंने बार बार स्वामीजी से माफी मांगी। तब स्वामीजी ने दया करके बोला फिर से बनोगे सेठ। मगर रांवलदास अपने जीते जी सेठ नहीं बन सके। वे बहुत गरीब हो गये थे। यहां तक कि उनकी बहन को भी मांगकर कपड़े पहनने पड़ते थे। मगर रांवलदास जी भक्ती में लीन हो गये। बाद में उनकी संतान के दिन फिरे। अब वे मध्यम श्रेणी के परिवारों में आ गये हैं।

स्वामीजी की बहन अपने ससुर का बहुत सम्मान करती थीं। सबेरे सबेरे उनको चाय वगैरह बनाकर देती थीं। एक बार उसने मजाक मजाक में स्टोव से तेल निकाल दिया, ससुर जी को परेशान करने के लिये। ससुरजी सबेरे उठे उन्होंने स्टोव जलाया, तेल नहीं था फिर भी जल गया और वे चाय बनाकर अपनी बहू के लिये भी लाये। स्वामीजी के भाई ने दोनों बहनों की शादी चाचा और भतीजे से कर दी जो स्वामीजी को अच्छा नहीं लगा तब उन्होंने अपनी नाराजगी भाई को बताई। भाई ने उनको कहा आप तो सन्यासी हो गये, मुझे तो अपना कर्तव्य निभाना था ना। स्वामीजी को उनकी बोलने की टोन पसंद नहीं आई तब उन्होंने उनको कहा तुम्हें पुत्र संतान नहीं होगी। भला संतों की वाणी असत्य कैसे होती। उनको नौ बेटियां हुई, बेटा हुआ ही नहीं।

स्वामीजी 21 दिसम्बर 2006 को जिस समय ब्रह्मलीन हुए तब रात्रि का समय था। उसी समय उनके घर की खिड़िकियां जोर से आवाज करते हुए खुलगईं। उस दिन स्वामीजी के परलोकगमन के समय पूरे शहर में लाइटें चली गई थीं, बूंदाबांदी भी शुरू हो गई थी। संतो के जाने के शोक में आसमां भी रो रहा था। लोग डर गये कि खिड़की इतनी जोर से आवाज करके क्यों खुल गई। बहू डर कर ससुर से लिपट गई थी। सोचा कोई चोर होगा या कोई बिल्ली वगैरह आई होगी। उन्होंने जब घर बनवाया था तो स्वामीजी को घर पर आने के लिये अनेक बार कहा था। मगर वे आये नहीं थे। थोड़ी देर बाद उनकी बहन, जो कैलाश नगर रहती थी, का फोन आया कि कुटिया में बहुत लाईटें जल रही हैं। मिट्टी कुटिया के अंदर ले जा रहे हैं। पता नहीं क्यों? घर से कुटिया पर फोन किया तो जानकारी मिली कि स्वामी जी ब्रह्मलीन हो गये है। तब लगा कि स्वामी जी की आत्मा ही घर में आई होगी स्वामी जी ने अपना वायदा जाते जाते भी निभाया।

उन्होंने बताया उनकी बेटी बड़ी हो रही थी। कक्षा 12वीं में पढ़ रही थी। बैरागढ़ में कोई कन्या महाविद्यालय नहीं था बेटियों को भोपाल पढ़ने जाना पड़ता था। वे चिंतित थे। स्वामीजी को उन्होंने समस्या बताई। स्वामीजी ने कहा चलो अभियान आपके घर से

शुरू करते हैं, वहां जितने भी लोग बैठे थे सबने सामर्थ्यानुसार दान दिया। बाद में रामधुनी पर भी स्वामीजी ने लोगों को आगे आने के लिये कहा और देखते ही देखते एक वर्ष में ही बैरागढ़ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय कन्या महाविद्यालय की स्थापना हो गई।

नैतिकता की परिकाष्ठा

श्री मुरलीधर दूनानी
अरेरा कॉलोनी, भोपाल
मो. 9425672770

श्री मुरलीधर दूनानी जी के परिवर से मेरा नाता शायद 1965 में ही हो गया था। मैं राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ की शाखा में 19 जुलाई 1965 को गया था जिस दिन मैं पहली बार बैरागढ़ में रहने आया था। उस समय शाखा का माहौल अति उतम था। अच्छे संस्कारी लोग आते थे। शायद उनमें इनके भाई श्रीचंद दूनानी भी आते थे। शाखा के बाद परिवारों में आना–जाना होता था। आजकल तो किसी के घर जाने में 10 बार सोचना पड़ता है। 1969 में उनके मंझले भाई स्व. लखमीचंद दूनानी जूनियर कालेज में 12वीं कक्षा में मेरे सहपाठी थे। बाद में वे भी बैंक में लग गये थे। वे मेरे अभिन्न साथी श्री नानक पारवानी के घनिष्ठ मित्रों में से थे। वे आत्मीय संबंधो में विश्वास रखते थे। 26 जनवरी 1978 को जब मेरे मन में साक्षरता अभियान का विचार उत्पन्न हुआ, उसी दिन जिन लोगों ने सहयोग का हाथ बढ़ाया उनमें मुरलीधर दूनानी जी भी एक थे। जब उनसे समय मांगा तो उन्होंने आने के लिये कहा। वे मेरे घर से 20 कि.मी. दूर थे। उनके घर का नंबर नानक जी ने दिया। मेरे लिये नया इलाका था। ढूंढने में दिक्कत आई मगर अन्ततोगत्वा मैं पहुंच गया। उनसे वार्तालाप शुरू हुआ तो उनका पहला वाक्य था कि –

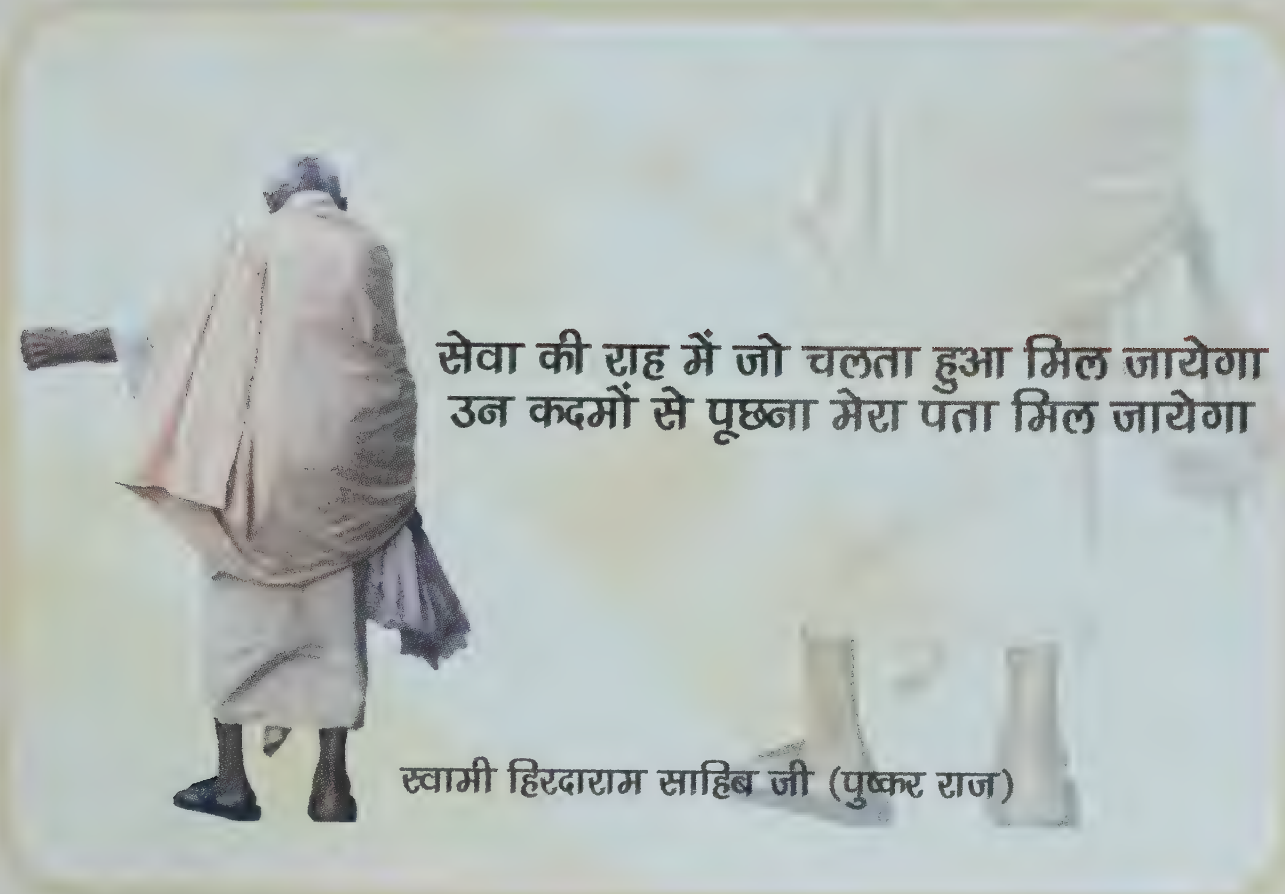
संत हिरदाराम जी संत नहीं साक्षात परमात्मा के अवतार थे। यह एक वाक्य ही उनकी संतों में श्रद्धा को बताने में के लिए प्र्याप्त है। उन्होंने बताया कि ग्वालियर के ट्रेजरी आफीसर श्री श्यामकुमार सुंदरानी जो संत नगर के प्रसिद्ध डॉक्टर सुरेश भंभानी के परिवार से संबंध रखते हैं, जब भी संत नगरी आते थे तो उनके घर में ही आकर रहते थे जब कि उनकी ससुराल उनके घर से 50 कदम ही दूर थी। वे उनके घर पर ही खाना खाते, सोते और आराम करते थे। एक बार जब वे आये तो उन्होंने पिताजी श्री रूपचंद दूनानी को कहा मुझे संतों की कुटिया जाना है। उन्होंने कहा मैं आपको संतों की कुटिया तक ले चलता हूं, मुझे सिंधी मार्केट भोपाल में अपनी दुकान खोलनी है, तुम्हें गेट पर छोड़ दूंगा। गेट खुले न खुले तुम देख लेना। उन्होंने बताया कि श्री रूपचंदजी साधू संतों में विश्वास नहीं करते थे। वे अपनी दुकानदारी के प्रति ईमानदार थे, सबेरे 10 बजे दुकान खोलना और रात को अगरबती जलाकर दुकान को बंद करना उनकी दिनचर्या थी। वे श्री श्याम सुंदरानी जी को ले गये। संयोग देखिये उस समय ही संतजी गेट पर पहुंचे और श्याम सुंदर जी के लिये गेट खोला और पिताजी को वे ही शब्द बोले जो पिताजी ने श्याम सुंदर को बोले थे, आपको तो दुकान जाना है न जाओ जाकर अपनी दुकान खोलो। पिताजी का मुंह खुला का खुला ही रह गया कि कैसे स्वामीजी को वे शब्द पहुंच गये जो उन्होंने श्याम सुन्दर जी को घर पर कहे थे। यह वाक्या 1970 से पहले का था।

उन्होंने बताया कि उनकी पहली नौकरी पशु चिकित्सा विभाग में लगी। उनकी टाइपिंग स्पीड उस समय 70 शब्द प्रति मिनट की थी। नौकरी की शर्तें उन्हें पसंद नही

आई। दो दिन बाद ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। उसी दिन उन्हें एन.सी.सी. डिपार्टमेंट में दूसरी नौकरी मिली। वेटेरनिटी चिकित्सा विभाग का ऑफिस जेल पहाड़ी पर था, वहां पर सब सुविधाऐं भी नहीं थी, वहां से जहांगीराबाद तक पैदल फि जहांगीराबाद से रायल मार्केट के लिये बस और फिर रायल मार्केट से बैरागढ़ के लि बस। पहले दिन ही घर पहुंचते पहुंचते साढे आठ बज गये थे। एन.सी.सी. ऑफिस कर्नल चौहान जी थे उनको अच्छा टायपिस्ट चाहिये था। वह ऑफिस भोपाल के बुधवार में स्थित था, वहां के लिये रोजगार दफ्तर से इंटरव्यू मिला। वहां के आफीसर जसवानी जी ने उनको अपनी गारंटी पर किराये की सायकिल एक मुसलमान दुकानदार दिलाई और वे इंटरव्यू देने गये। वे इंटरव्यू में देर से पहुंचे मगर उनका इंटरव्यू हुआ टाइपिंग स्पीड 72 शब्द प्रति मिनट की रही, उन्हें अपाइटमेंट आर्डर मिल गया। उन्हों उसे ज्वाइन करने के लिये कहा, मगर उसने दूसरे दिन के लिये अनुरोध किया, क्योंकि उस दिन तो वे वेटरनिटी डिपार्टमेंट में नौकरी कर रहे थे।

कुछ दिनों के बाद स्वामीजी के कहने पर उन्होंने बैंक के लिये साक्षात्कार दिया उनका यूको बैंक में चयन हो गया। जहांगीराबाद में यूको बैंक में कार्यरत केसवानी जी उनके पिताजी के पास आये और बधाई देते हुये कहा कि यदि भोपाल में नौकरी चाहिये तो हमारे बैंक के निर्देशक गजवानी जी जयपुर ऑफिस में है वे मूलतः ग्वालियर के रहने वाले है। यदि आपका ग्वालियर में कोई पहचान को हो तो उसके द्वारा गजवानी जी से कह कर भोपाल के लिए नियुक्ति आदेश निकलवा लो। ग्वालियर में भंभानी जी से मिल उनका घर गजवानी से 4 घर छोड़कर था। दांतकटी रोटी जैसी दोस्ती थी, उनके माध्यम से जयपुर गया, श्री गजवानी जी से मिला। वे यूको बैंक के सिल्वर जुबली फंक्शन में भोपाल आने वाले थे वहां मिलने के लिए कहा। वे उनसे मिले उन्होंने भोपाल के प्रबंधक अग्रवाल जी से मेरे लिए भोपाल हेतु नियुक्ति आदेश देने के लिये कहा गजवानी जी उन्हीं के घर प्रोफेसर कॉलोनी में रुके थे। संयोग देखिये गजवानी जी को उसी रात दिल का दौरा पड़ा और भोपाल में ही वे स्वर्गधाम सिधार गये। बाद में उनको भोपाल की पोस्टिंग का आर्डर नहीं मिला। स्वामीजी ने उनको स्टेट बैंक आफ इंडिया में नौकरी के लिये फार्म भरने के लिये कहा। उन्होंने मुझे कहा सीहोर बैंक के मेनेजर से जाकर मिलकर आओ, उनको बोलना मैंने भेजा है। मैं उनके पास गया उन्होंने कहा पहले आवेदन क्यों नहीं दिया था। उनको यूको बैंक वाली पूरी बात बताई। उन्होंने मुझे भोपाल के रीजनल ऑफिस के एक समकक्ष अधिकारी का नाम दिया और कहा कि आवेदन पत्र टाइप करके उनसे जाकर मिलना। दूसरे दिन वे रीजनल ऑफिस गये, उस अधिकारी से मिले। वे आवक शाखा में ले गये जहां आवेदन आते थे। बाद में वे स्टेट बैंक में चयनित भी हो गये। इस तरह स्वामीजी के आशीर्वाद और दूर दृष्टि से स्टेट बैंक में लग गये। जिस दिन उनको आर्डर मिला उस दिन शाम को उन्होंने दिलवा दिया जबकि उसका टायपिंग टेस्ट भी नहीं हुआ था। एक बार उनका स्केल 3 के प्रमोशन के लिये साक्षात्कार था, जिस कारण वे कुटिया पर नहीं गये थे। स्वामीजी ने पूछा आज मुरली क्यों नहीं आया उनको बताया कि मुरली का इंटरव्यू है तब उन्होंने कहा उसे इंटरव्यू की क्या जरूरत है, वह तो वैसे ही पास है। तब पुरूषोतम पारवानी जी ने बोला इन्टरव्यू तो देना ही पड़ता है। यह 1995 की बात है और उस समय उनका प्रमोशन हो गया। बाद में वे स्केल 4 में सेवानिवृत्त हुये।

एक बार स्वामीजी ने उनको कहा आप अपने वेतन में से एक महीने का वेतन दा



स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)







हवन वेदी पर



संत जी देव प्रकाश जी के साथ



पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी स्वामी जी के साथ



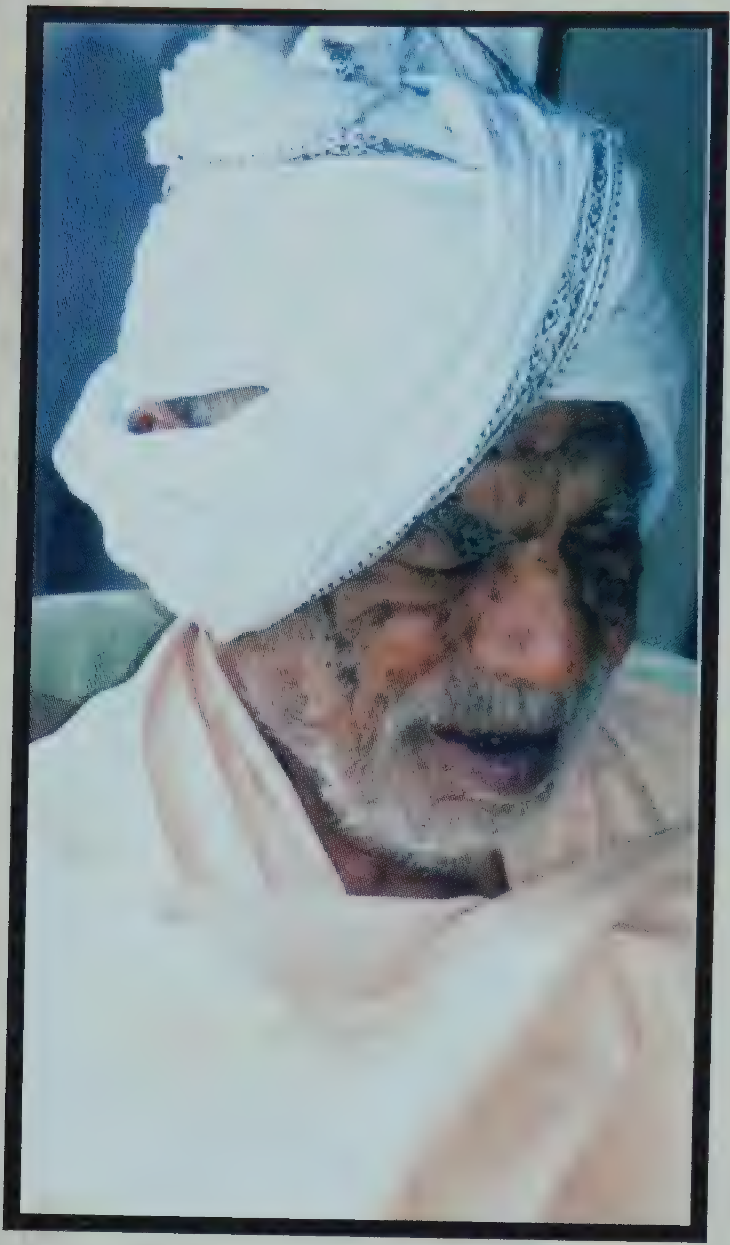








sp. Dada K. H. Lakhani (M/s Kayvee United (HK) Ltd.)





में दिया करो, उन्होंने कहा स्वामीजी में दो महीने का वेतन दान में दूंगा। स्वामीजी ने हंसते हुए दादा रोचीराम सीतलानी जी को बुलाया और कहा, आपने इस जैसा मूर्ख देखा है। वे कुछ समझ नहीं पाये, तो उन्होंने कहा मैंने इसको एक महीने का वेतन दान में देने को कहा और यह मूर्ख बोल रहा है दो महीने का दूंगा। पूछो ऐसा क्यों बोल रहा है? रोचीरामजी ने उनकी तरफ प्रश्नवाचक नजरों से देखा, तो उन्होंने कहा अब मेरा बेटा भी जाब पर लग गया है तो एक महीने का मेरा और एक महीने का बेटे का दूंगा। परन्तु स्वामीजी में दूंगा आपको ही, आप जिसे देना चाहें देना। उन्होंने कहा शिक्षा के लिये, स्वास्थ्य के लिये और अन्य कार्यों के लिये दान देना, तीन हिस्से करना। तब उन्होंने 11000 रू. नवयुवक सभा को, 11000 रू. सेवासदन नेत्र चिकित्सालय को प्रतिवर्ष देना शुरू किया और बाकी अन्य जगह जहां भी आवश्यकता होती है वहां दान देते हैं। यह प्रक्रिया तब से ही लगातार चल रही है।

स्वामीजी ने उनको कहा था कभी भी किसी से त्यौहारों पर मिलने वाली गिफ्ट के रूप में मिठाई वगैरह भी स्वीकार मत करना। और इस बात को उन्होंने सदैव पालन किया। एक बार उनकी पोस्टिंग पिपरिया ब्रांच में प्रबंधक के रूप में थी। वहां पर एक तेल मिल का व्यापारी था, वह दीपावली के मौके पर उनके लिये सोने का हार लेकर आया। साथ में वहां के एक सिंधी सोयाबीन व्यापारी मनोहर को भी लेकर आया। मनोहर ने उनको पहले ही बता दिया था कि ये अलग किस्म के प्रबंधक हैं, हमारे समाज के हैं। हमने अनेक बार उनको घर पर भोजन के लिये निमंत्रित किया है मगर वे नहीं आते। उन्होंने तेल मिल के व्यापारी से कहा कि मैं कोई भी गिफ्ट नहीं लूंगा। हां, कानून के दायरे में बैंक के लेन–देन के समय के बाद भी बैंक के खुले होने तक भुगतान चाहिये अपको दिला दूंगा। परन्तु ओवर ड्राफ्ट की सीमां से एक पैसा भी ज्यादा नहीं। वह तेल मिल वाला जब बार–बार आग्रह करने लगा तो उन्होंने कहा मैंने मना कर दिया फिर भी आप मान नहीं रहे तो मैं एस.पी. को फोन करके बुलाता हूं। तब वो घबरा गया और वापस चला गया। उनको अपने इस गुण पर आज भी नाज है। जब वे पिपरिया में मैनेजर थे उस समय एक महिला को बनखेड़ी का ब्रांच मैनेजर बनाकर भेजा गया। उसने फोन किया कि वो पिपरिया आ रही है और उनके साथ में रहना चाहती है। उन्होंने अपनी श्रीमती को समस्या से अवगत कराया और उनको संतनगरी से पिपरिया बुला लिया क्योंकि यह उनको स्वीकार नहीं था कि कोई अकेली महिला उनके साथ रहे। यह नैतिकता की पराकाष्ठा थी

बालू को गूंथना

श्री अशोक ईदनानी
आयकर कॉलोनी वैशाली नगर अजमेर
मो. 9829617898

मैं सन् 1982 में, संत हिरदाराम नगर से निकलकर कुछ पारिवारिक कारणों से बी.एच.ई.एल. भोपाल एरिया में रहा था। शायद 1980 से 1984 तक। पहले किराये के मकानों में, बाद में मैंने सोनागिरी कॉलोनी में एलआईजी मकान नं. 105 बी सेक्टर, पिपलानी क्षेत्र में ले लिया था। मेरे सामने वाले मकान नं. 106 में स्व. किशनचंद ईदनानी

रहते थे किराये के मकान में। पारिवारिक संबंध बन गये थे। सज्जन व्यक्ति थे। उनका परिवार छोटा सा परिवार था, पति पत्नी और एक बेटा मनीष। मुश्किल से 2 वर्ष का ही होगा। खुशहाल परिवार था। मनीष का ननिहाल भी उसी कॉलोनी में था। बहुत मिलनसार, अपनत्व से भरा परिवार। कालांतर में वे अजमेर शिफ्ट हो गये, उसके पहले मैं भी संत हिरदाराम नगर में संतों की आज्ञा मानते हुए वापस आ गया था। मनीष आजकल अपनी मां के साथ अफ्रीका में अपना व्यवसाय करता है। संयोग से वह अजमेर आया हुआ था यह बात उनके चाचा अशोक कुमार जी से मिलने पर पता पड़ी। मैंने उनसे मनीष का नम्बर लेकर काल किया, उससे मिलने की इच्छा जताई तो वह मिलने के लिये आ गया। वो 2–3 साल का बच्चा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी हो गया था। नयन उसको देखकर तृप्त हो गये।

अशोक ईदनानी जी उस समय कुछ व्यावसायिक परेशनियों के कारण मुझे समय नहीं दे पाये, मगर बाद में उन्होंने अपनी आवाज़ में रिकार्डिंग करके संतो के बारे में अपने अनुभव बताये।

उन्होंने बताया कि यह बात 94–95 सन् की है, जब उनके पिताजी संतों की सेवा में गुप्तरूप से लगे रहते थे। अशोक जी बाल सुलभ शैतानियों में माहिर थे। पिताजी जब भी पुष्कर जाते तो उसे अपने साथ संतों की कुटिया पर ले जाते थे। स्वामीजी पुष्कर से रेती मंगाते थे और आश्रम में जहां जरूरत होती थी बिछा देते थे। संत आश्रम में साधारणतः नंगे पांव ही रहते थे, और उस रेती पर भी चलते रहते थे। इनके पिताजी स्व. जेठानंद ईदनानी जब भी पुष्कर आते तो वे रेती को अपने हाथों से ऐसे गूंथते रहते थे जैसे आटा गूंथ रहे हों। बालक अशोक समझ नहीं पाता था कि पिताजी ये क्या करते रहते है। एक दिन उसने अपने पिताजी से पूछ ही लिया पिताजी आप जब भी आते हैं तब इस रेती को गूंथते रहते है। तब उनके पिताजी ने कहा, बेटा तेरे पिताजी इस रेंती से कंकड़, पत्थर, कांटें और कचरा अलग करते रहते हैं। स्वामीजी इस रेती पर नंगे पांव चलते हैं। यह गुप्त सेवा है जो कोई नहीं करता। इसीलिये इसमें मुझे आनन्द आता है।

सन् 2000 में पिताजी का देहावसान हो गया। उनके बाद जब भी में पुष्कर आता हूं वही काम मैं करता रहता हूं क्योंकि मुझे आभास होता है कि स्वामीजी आज भी उस स्थान पर आकर विचरण करते रहते हैं।

उन्होंने बताया कि उन्होंने 2001 में एक दुकान क्रय की। आजू बाजू के दुकानदारों ने उस दुकान को मनहूस दुकान का नाम दे रखा था। उस दुकान में एक आदमी ने अलग अलग टाइम पर एक के न चलने पर, दूसरे से तीसरा धन्धा करके सात अलग अलग धन्धे किये मगर चल नहीं पाये, यह बात बताकर मुझे उन्होंने खूब हतोत्साहित किया। वे अंदर ही अंदर डर गये। वे संतों की शरण में गये, दोपहर के 12 बजे के बाद। संतों का समय 9 से 10 बजे तक ही होता है। थोड़ा नाराज हुये पूछा ग़लत समय पर क्यों आये हो? उनको बताया कि दुकान खरीदी है, अड़ोस पड़ोस वालों ने डरा दिया है, समझ में नहीं आ रहा है क्या करूं, मार्गदर्शन दीजिये। मुझमें नकारात्मकता आ गई है। तब स्वामीजी ने कहा दुकानें मनहूस नहीं होती, मनुष्यों के कर्म मनहूस होते हैं। मैं अपने जीवन भर की संचित पूंजी उसमें लगा चुका था। उसमें मैं मेडीकल स्टोर खोलना चाहता था। स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा दुकान खोलो और दुकान का उद्घाटन अपनी माताजी से रिबन कटवाकर करना। दुकान सबेरे 6 से रात्रि के बारह बजे तक चलेगी। मैने उनकी बात मानी, अपनी माताजी से रिबन कटवाई और सचमुच में

दुकान, जिसको लोग मनहूस कह रहे थे, ने मेरे भाग्य के द्वार खोल दिये। मैं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ हो गया। ऐसे थे हमारे दीन दयाल स्वामीजी, दीनों के रखपाल।

उन्होंने बताया एक बार वे पुष्कर कुटिया से लौट रहे थे। उनके पिताजी साथ में थे, एक यात्री ने आकर उनके पिताजी से पूछा, यहां ब्रह्मा जी का मंदिर क्न्ां पर है।, पिताजी ने कहा मुझे ज्ञात नहीं है, आप आगे किसी से पता करना। पुष्कर प्रसिद्ध ही ब्रह्माा मंदिर के लिये है। पूरे भारत में ब्रह्माा जी का एक ही मंदिर है जो पुष्कर में है। मैंने पिताजी से पूछा आपको ब्रह्मा जी का मंदिर नहीं मालूम तो पिताजी ने कहा मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक। मैं पुष्कर में स्वामीजी की कुटिया के अलावा कहीं गया ही नहीं। उनके पिताजी की अस्थियों को भी पुष्कर में प्रवाहित किया गया था।

उनके पिता स्व. जेठानंद जी राजपत्रित अधिकारी थे। वे स्वामीजी के पांव दबाने की सेवा करते थे। अपने हाथों की हथेलियां ऊपर करके स्वामीजी के पांवों को आराम देने के लिये दबाते थे। सामान्यतः हथेलियां नीचे करके ही बुजुर्गो के पांव दबाये जाते हैं। अशोक जी को बड़ा अटपटा लगता था कि पिताजी हथेलियां ऊपर करके पांव क्यों दबाते हैं। उन्होंने अपने पिताजी से पूछा तो उन्होंने बताया कि स्वामीजी की अवस्था ज्यादा है। यदि मैं हथेलियां नीचे करके पांव दबाऊंगा तो उनके टांगों पर दबाव ज्यादा पड़ेगा जिससे उनको तकलीफ होगी। इसलिये हथेलियां ऊपर करके मैं दबाता हूं। रेत में से कंकड़ पत्थर बीनने, स्वामीजी के पैर किस तरह दबाने चाहिये जैसी सेवाएं अपने पिताजी के बाद उन्होंने संभालीं। एक बार स्वामीजी ने उनसे पूछा कि क्या यह काम आपने पिताजी से सीखा है। स्वामीजी ने उनसे पूछा! क्या करते हो। उन्होंने कहा नौकरी ढूंढ़ रहा हूं, अभी तक बेरोजगार हूं। उन्होंने कहा उठो जाओ, कौन कहता है कि तुम बेराजगार हो?

स्वामीजी का उस दिन का आशीर्वाद ऐसा फला कि एक महीने के अंदर ही उन्हें सिंगापुर में 3000 रूपये की नौकरी के लिये, अच्छे पद के साथ ऑफर मिला। वे छः साल सिंगापुर में रहे। उनकी शनिवार रविवार छुट्टी होती थी। वे वहां पर मेलवानी ट्रस्ट के संपर्क में आये। वे समाज सेवियों से जुड़ने लगे। शनिवार–रविवार को उनके साथी घूमने–फिरने में गंवा देते थे वे वहां पर दुकानों पर जाकर पुराने कपड़े की डैड स्टाक ले आते थे, वे दान में या 25 प्रतिशत कीमत पर लेकर आते थे। शनिवार शाम तक इकट्ठा करते, उनको धोते, रविवार को उनको प्रेस करके पार्सल बनाकर पुष्कर भेजते गरीबों में बांटने के लिये। बाद में वे इसे बैरागढ़ और उसके बाद आदीपुर भेजने लगे। लगभग 3 हजार पार्सल उन्होंने वहा से भेजे। एक बार उनको वहां पर श्री चेलाराम कृपलानी जी ने पार्सल ले जाते देखा उससे पूछा तो उन्होंने पूरी बात बताई। उसके बाद उन्हें पार्सल में लगने वाले 20 डालर की रसीद चेलाराम जी के ऑफिस में देकर उनका भुगतान मिलना शुरू हो गया।

पुराने जमाने में अजमेर में जब रात्रि में किसी घर में कोई स्वर्ग सिधार जाता था तो उस प्राणी को मालिश करने और उसकी संभाल करने की जिम्मेदारी इनकी टीम करती थी, क्यों कि उस समय आइस बाक्स का प्रचलन नहीं हुआ था।

1990 के आसपास भाई घुमणसिंह जी, लोकवानी जी, ब्यावर वाले साहब इनके पिता श्री जेठानन्द जी, पारसमल जी वेल्डिंग वाले, नरसिंघाणी जी ये सबके सब रविवार को साइकिल से अजमेर से पुष्कर जाते थे। ब्यावर वाले ट्रेन से अजमेर आते और वहां से साइकिल लेकर सबके सब एक जगह इकट्ठे होते और फिर पुष्कर जाकर स्वामी जी के

निर्देश पर कुंआ खोदते थे। प्रातः 9 बजे से शाम को 5:30 बजे तक कुआं खोदने का कार्य लगातार 72 सप्ताह तक हर रविवार को चला। 15 फुट पर ही कुएं में पानी का झरना फूट पड़ा। स्वामीजी के दिशा निर्देश पर कुआं खोदने के साथ ही उसको प्लास्टर करवाने का काम शरू कर दिया था। प्लास्टर का काम हाथ से ही किया जाता था ताकि कहीं कूंआ खोदते खोदते गिर नहीं जाये। वह कुंआ आज भी कुटिया में स्थापित है।

उनकी बहन कृष्णा ईदनानी भी डॉक्टर थीं। उन्हें लोग संतों की डॉक्टर कहते थे। वे एमबीबीएस के साथ एमएस भी थीं। स्वामी जी, उनके पिताजी के हाथों से अजमेर संतों के लिये प्रसाद भेजते थे, जो उनके पिताजी बड़ी श्रद्धा से वहां देकर आते थे। स्वामी जी जब भी अजमेर आते थे तो जतोई दरबार में जरूर जाते थे। संतों के अजमेर आने पर, उनके सारथी के रूप में पहले दौलतराम पारदासानी एवं बाद में कंवलप्रकाश जी सारथी के रूप में रहते थे। स्वामीजी उनको कहते थे सारथी का मतलब जानते हो ना अर्जुन के सारथी श्री कृष्ण भगवान थे। स्वामीजी कभी–कभी मौज में आकर सेवादारों को हनुमान कहकर पुकारते थे। कहते थे हनुमान यानी जो सदैव सेवा में तत्पर रहता हो।

एक बार जब कुंआ खोदा जा रहा था उस समय शाम को सब सेवादार साइकिल लेकर अजमेर जाने लगे तो स्वामीजी ने उनको रोक दिया था और कहा कि अभी मत जाओ बारिश हो रही है। एक घंटे बाद जाना। सब लोग आकाश की तरफ देखने लगे, मगर आकाश बिलकुल साफ था, कहीं भी बादलों का नामों निशान नहीं था। उनको लगा स्वामीजी ऐसा क्यों बोल रहे हैं। धूप छिटकी हुई है। सूर्य चमक रहा है। मगर वे रुक गये और फिर 10 मिनट के अंदर देखते ही देखते अंधेरा छा गया और एक घंटे तक मूसलाधार बारिश होती रही। यदि किसी ने पुष्कर देखा हो तो यह चारों तरफ ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से घिरा है। उनकी बेटी सी.ए. की इंटरमीडियेट परीक्षा पास कर चुकी है, आर्टीकलशिप शुरू हो गई, लड़का 10 वीं में पढ़ रहा है। 1999 में उनके पिताजी की बायपास सर्जरी दिल्ली में करवाई गई। स्वामीजी उस पर बहुत नाराज हुये, उनको बायपास सर्जरी का निर्णय पसंद नही आया। उसके बाद उनके पिताजी 2 माह बाद ही परलोक धाम को सिधार गये।

उनके पिताजी ने उनको 'हां' का पाठ सिखाया और उसका उन्होंने अभी तक पालन किया है। कितनी भी विपरीत परिसथितियां हो मगर वे 'हां' ही बनकर रहते हैं। स्वामीजी कहते थे कोई भी आपके पास समस्या लेकर आता है तो हमेशा सुनो और प्रयास करो कि उसकी समस्या का हल हो जाये। मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे से भी ज्यादा महत्व है सेवा करने का।

स्वामीजी का मूल मंत्र **'बूढ़े, बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार, करें भावना से इनकी सेवा पायेंगे लोक परलोक में सुख अपार।'** उसका मतलब वह नहीं है जो कहा गया है, इसका मतलब यह है कि यदि हम इनकी सेवा करेंगे तो हमें अंत समय में किसी से सेवा लेने की आवशकता ही नहीं पड़ेगी। उन्होंने बताया कि उनके घर का नाम स्वामी विला, उनके दुकान का नाम स्वामी मेडीकल, उनकी अफ्रीका वाली फर्म का नाम स्वामी वर्जिन क्रीएशन है। उसीसे प्रेरित होकर कंवलप्रकाश जी के कांपलेक्स का नाम स्वामी कांम्पलेक्स रखा गया।

उन्होंने बताया कि उनके पिताजी कहते थे, कभी संतों के पास किसी मंदिर में, किसी साधू फकीर के पास जाओ तो कोई भी शंका या सवाल लेकर मत जाया करो, वे

स्वयं जान जायेंगे, मन में सिर्फ एक ही बात दोहराया करो, मेहर करो, मेहर करो। दया करो, दया करो।

उत्तम दान रक्तदान

श्री ईश्वर मेहरचंदानी,
सचिव श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति, जयपुर
मो. 9351599276

श्री ईश्वर मेहरचंदानी जी 1998 में पुष्कर कुटिया में गये थे, वहीं पर स्वामीजी के प्रथम दर्शन करते ही उनका मन उनमें रम गया। उसके बाद वे संत हिरदाराम नगर की कुटिया में आये। स्वामीजी की प्रेरणा से चलने वाली जीव सेवा समिति से जुड़े। बाद में 2002 में श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति का गठन हुआ, **'रक्तदान, महादान'** का मूल मंत्र लेकर काम शुरू किया गया। उनके पास 3 छोटी एम्बुलेंस एवं 2 बड़ी बसें इसी काम से जुड़ी हुई हैं। नवम्बर 2022 तक 22 वर्ष के सफर में वे 88359 से ज्यादा लोगों से रक्तदान करवा चुके हैं। वे गांव गांव शहर शहर जाकर लोगों को रक्तदान के लिये प्रेरित कर के दान करवाते हैं। साथ साथ वे अन्य सेवा कार्य भी चलाते रहते हैं। बाल चित्रकथाएं, मासिक पत्रिका **'सबका भला करो भगवान',** का भी प्रकाशन करते हैं उन्होंने कुछ पुस्तकें मुझे भी दीं उनमें ईश्वर की महिमा, सिद्धवाणी नाम से सिद्धभाऊ के छोटे छोटे कोटेशन का संग्रह पहली बार मुझे दखने को मिला। इसके अलावा संत कबीर, बाबा गुरूनानक देव, स्वामी विवेकानन्द, शिर्डी के सांईबाबा की चित्रकथाऐं अत्यन्त सुन्दर रूप से संग्रहीत एवं प्रकाशित की गई थी। उन्होंने बताया नायला में हमारे हर वर्ष दो कैम्प लगते थे, मगर अभी कोरोना के कारण बंद हैं, अब जल्द ही फिर शुरू हो जायेंगे।

उन्होंने बताया अन्य संतों की तरह स्वामीजी ने भी मोक्षगति के लिये तीन ही मार्ग बताये है। सेवा, सिमरण और सत्संग। उन्होंने कहा सेवा के साथ साथ सिमरण और सिमरण के साथ सेवा साथ साथ सत्संग चलना चाहिये। दोनों चीजें एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक तरफ सेवा है और दूसरी तरफ सिमरण दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, एक के बिना दूसरा अधूरा है।

वे 2007 में रिटायर हो चुके हैं। उनका कहना है आज जो कुछ भी इज्जत है वो सब स्वामी जी के साथ जुड़ने के कारण ही है। आज मेरा जो कुछ भी है वह सब संतों का है। उनका मूल मंत्र उन के द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका **'सबका भला करो भगवान'** से ही पता चल जाता है। वे कहते हैं हम दूसरों का भला करेंगे तो हमारा भला स्वयं ही हो जायेगा।

वे आज 75 वर्ष के हैं। उनका घर समिति के ऑफिस से 5 कि.मी. दूर है। वे वहां पर अपनी सेवायें निःशुल्क प्रदान करते हैं। वे 9:30 बजे तक ऑफिस आ जाते हैं, व्यस्त हैं इंसलिये मानसिक शांति का अनुभव करते हैं। बोले घर पर बैठ कर क्या करता। यहां पर व्यस्त हूं आनंद आता है। अभी तक 1265 कैम्पों का आयोजन वे कर चुके हैं।

उनकी समिति पक्षियों के दाने की व्यवस्था, गायों के लिये चारे और गुड़–गाजर की व्यवस्था करके गौ शालाओं को देकर आती है। जयपुर में 5–6 स्थानों पर रोज सबेरे

नाश्ता बनाकर भेजते हैं, जो एक जगह स्टॉल लगाकर जरूरतमदों में बांटा जाता हैं। बांटने का कार्य संतों के अनुयायी अपने अपने क्षेत्र में करते हैं। इनका काम सिर्फ वहां तक पहुंचाने का होता है। मैंने देखा कि मानसरोवर कॉलोनी से शास्त्री नगर की दूरी 17 कि.मी. की है मगर सामग्री निश्चित समय पर एम्बूलेंस में भरकर, निश्चित स्थानों पर आ गयी थी और लेने वालों की लाइन लगी हुई थी।

उन्होंने बताया कि उनके साले साहिब पुष्कर में स्वामी जी से जुड़े हुए थे। उनके माध्यम से ही वे 1998 में स्वामीजी के दर्शन हेतु गये। स्वामीजी ने उनसे कहा नेत्र शिविरों में सेवा किया करो। ये पुष्कर जाते तो रहते थे, मगर सेवा कार्यों से जुड़ नहीं पाये। 2004 में उनको हार्ट अटेक आया व अस्पताल में भर्ती हुए। बहुत गंभीर अटैक आया था। डॉ. खिलरानी के माध्यम से हॉस्पिटल में भर्ती हुये। उनके साले के द्वारा बात सिद्ध भाऊ को और फिर उनके माध्यम से संतो तक पहुंची। संतो ने कहा इसको कुछ नहीं होगा, मुझे इससे बहुत से सेवा कार्य करवाने हैं। इनके सामने ही एक महिला का ऑप्रेशन हुआ था, मगर वे बच नहीं सकीं तो इनसे डॉक्टर जी ने कहा ऑप्रेशन मत करवाओ। करवाओगे तो भी 6–7 गोली रोज खानी पड़ेगी, नहीं करवाओगे तो भी खानी पड़ेगी। इन्होंने ऑप्रेशन नहीं करवाया और आज 18 वर्ष बाद भी सेवा कार्य कर रहे हैं। हार्टपेशेंट के साथ डायबेटिक भी हैं।

उन्होंने कहा जैसे–जैसे हमारे समाज के पास पैसों के भंडार भरते जा रहे हैं वैसे वैसे हमारे दिल दान देने के लिये छोटे होते जा रहे हैं।

हम एम्बुलेंस में नायला के लिये निकले जो मानसरोवर कॉलोनी से 25–30 कि. मी. दूर थी। वहां पर नेत्र शिविर, चिकित्सा शिविर, यूरोलाजी कैम्प के आयोजन होते थे। बातों का सिलसिला जारी था अचानक उनके मोबाइल की घंटी बजी दूसरी तरफ़ से किसी को बी+ रक्त की आवश्यकता के संबंध में उनकी अनुमति चाही गई थी। उन्होंने तुरन्त ही उसको ब्लड बैंक के माध्यम से बी पॉजेटिव रक्त की आपूर्ति करवा दी। उन्होंने बताया कि वे जो रक्तदान शिविर से रक्त एकत्रित करते हैं वह जयपुर की 32 ब्लड बैंकों को दे देते हैं वे रक्त की बोतलें श्री गोपालकृष्ण सेवा समिति के नाम से जमा हो जाती हैं और जब जहां भी हमें रक्त की आवश्यक्ता होती है वह निःशुल्क ही मरीजों को दे दिया जाता हैं। फिर हमारे एकाऊंट से वह कम हो जाता हैं।

उन्होंने बताया कि जब हम कोई भी कार्य सकारात्मक सोच के साथ करते हैं तो हमें संतुष्टि का अनुभव होता है और हृदय आनंदित होकर हिलोरें लेने लगता है।

उन्होंने बताया कि सिद्धभाऊ ने उन्हें एक सीख दी है कि आज जो काम आपको मिला है उसे आज ही खत्म कर दो, कल के लिये मत टालो, कल के लिये टाल दिया तो वह कार्य कब होगा, होगा या नहीं होगा कह नहीं सकते। इसलिये वे आज का काम आज ही निपटा लेते हैं।

उन्होंने बताया वे सेवा कार्यों के लिये लोगों से दान देने की अपील करते हैं। कम से कम 100 रू प्रति माह अधिकतम 1000 प्रति माह लेते हैं। बोले ऐसा करने से दानदाता लगातार बना रहता है। उससे संपर्क बना रहता है। यदि हम उससे वार्षिक लेंगे तो वह इस साल तो दे देगा। मगर अगले वर्ष देगा या नहीं देगा पता नहीं। इसलिये हर माह लेना ही ज्यादा उचित समझते हैं। उन्होंने बताया कि उनकी समिति का हर माह 2.5 लाख का खर्च है। आज ही उनके पास 5 यूनिट ब्लड की आवश्यकता हेतु फोन आ चुके हैं। रात्रि को 2–2 बजे भी उनको फोन आते हैं और वे उसकी व्यवस्था करके हार्दिक

प्रसन्नता अनुभव करते हैं।

उन्होंने कहा सिद्धभाऊ उन्हें कहते हैं लोग अपने बाप व रिश्तेदारों को भी अपना खून देने में संकोच करते हैं और वे उन्हें रक्तदान देते हैं यह बहुत बड़ी बात है। वे बताते हैं कि आज समाज सेवा के लिये लोगों के पास समय नहीं हैं, पहले पद ले लेते हैं मगर सिर्फ फंक्शन में आते हैं। कुर्सियों की शोभा बढ़ाते हैं। और चले जाते हैं।

मुक्ति के तीन मार्ग

श्री ऊधवदास नेभनानी
कंवर नगर, जयपुर
मो. 8769426579

अजमेर से संत जी के प्रेमियों से मुलाकातों की मधुर स्मृतियां समेटे हुए, उनसे स्वामीजी के विषय में मिले संस्मरणों के अथाह अनमोल खजाने लेकर प्रफुल्लित मन से मैं आज एक दिन पहले ही राजस्थान की गुलाबी राजधानी जयपुर में था। मुकेश जी के द्वारा प्रदत्त सूची में पहले ही नंबर पर श्री ऊधवदास जी का नाम था जो कंवर नगर में रहते थे। उनको देखते हुए लगा कि वे रूहानी शख़्सियत के मालिक होंगे। चेहरे पर तेज, मदमस्त चाल, चमकता ललाट देख कर ही उनको प्रणाम करने का मन हुआ। वे मेरे हम उम्र थे।

संतजी जब नैनीताल, हल्द्वानी व मसूरी में गये थे तो उन्होंने उनको भी वहां पर बुलाया था। संतजी वहां पर पहाड़ों पर घूमते रहते थे। हरिद्वार में भी स्वामीजी जाते थे तो वहां पर आश्रमों में घूमते रहते थे, वे कनखल भी जाते थे। वे जयपुर में भी 12–15 दिन रुकते थे। वच्छानी जी के घर पर सबसे पहली बार जब आये थे तो खेमानी जी के घर रुके थे। स्वामीजी के परसराम रायसिंघाणी जी की माताजी के साथ परिवारिक संबंध सिंध से ही थे। वे स्वामीजी से 15 वर्ष बड़ी थीं उन्होंने 101 वर्ष की उम्र में परलोकगमन किया। ऊधवदास जी बोले संतजी की उन पर असीम कृपा थी। वे पुष्कर गये थे, समय ज्यादा हो गया था, मगर उनको आने दिया गया यह 1976 की बात होगी। स्वामीजी ने देखकर विनोदी लहजे में कहा देखो आज ये ऊधो मुझसे अपने कान खिंचवाने आया है। उस समय मुकेश भाग्याजी भी वहां पर निकर पहने हुए विराजमान थे। उन्होंने बताया उनका संतों से प्रथम बार मिलन सन 1971–72 में उस समय हुआ था जब बोधराम जी के घर पर 12 दिन का श्री गुरू ग्रंथसाहिब का पाठ रखा गया था। यह पाठ हमेशा उसी महीने में रखा जाता था, जिसे मुहर्रम कहा जाता है, ताजिये रखे जाते हैं। इनकी तिथि निश्चित नहीं होती अंग्रेजी केलेंडर के हिसाब से। उनके पिताजी का नाम सुन्दरदास जी था, उनकी भी स्वामीजी में अटूट आस्था थी। उनका अपना अनाज का व्यवसाय था, सबेरे जल्दी जाना और देर से आना उनकी दिनयर्चा में शामिल था। ऊधवदासजी सबेरे 7 बजे दुकान चले जाते थे। व्यवसाय तो 6 बजे तक सिमट जाता था मगर माल के ट्रक रात्रि को आते थे, तो उनका माल उतरवाना, भाड़े का भुगतान करना, मजदूरों को मजदूरी देना इत्यादि काम उनके जिम्मे ही रहते थे। वे सादगी पसंद थे, सफेद कुर्ता पाजामा पहनते थे, नित्य शेविंग करते थे, बाल छोटे रखते थे अपने आपको एकदम नीट एडं क्लीन रखते थे। उनका जन्म 17 सितम्बर 1948 में हुआ था उस दिन

भगवान विश्वकर्मा की जयंती भी होती है। उनका अपने खान–पान पर उसी त
नियंत्रण रहता था, जैसे संतजी का।

उन्होंने बताया उनका विवाह दिसम्बर 1969 में हुआ था, सगाई के डेढ़ वर्ष बा उस समय उनकी आयु मात्र 21 वर्ष थी। उन्होंने शुरू शुरू में सचिवालय में नौकरी की मगर पिताजी ने उनको कहा, हम लोग मानते हैं, उतम खेती, नीच नौकरी, बढ़ता व्यापा तुम नौकरी छोड़ो, तब उन्होंने अहमदाबाद जाकर व्यवसाय भी किया। ईदनदास के चा भाई है, कपड़े का व्यवसाय करते हैं। वे अनाज के व्यापारी हैं, और एक भाई आलू प्या का व्यवसाय करते हैं।

पहली बार स्वामीजी के पास अपने पिता सुंदरदास जी के साथ गया था। पिताज ने 2रू देकर कहा वहां कीर्तन हारमोनियम पर यह रख देना। मैंने ऐसा ही किया। भगत विट्ठलदास जी का चावलों का अच्छा खासा कारोबार था, उनको हारमोनियम में जो भ पैसे मिलते थे, वे गरीबों में बांट देते थे।

स्वामी जी के पास जब मैं पहुंचा, माथा टेका तो उन्होंने दो मिनट तक सिर प हाथ रखा और फिर अपने पास में बिठाया। बोधराम जी ने स्वमीजी को बोला आपके रहन की व्यवस्था हमने सुन्दरदास जी के घर में रखी है, यह ऊधव उन्हीं का सुपुत्र है स्वामीजी ने हंसते हुए उनसे पूछा कि मैं आपके घर में रहूं आपको ऐतराज तो नहीं है मैंने कहा स्वामीजी हमारा अहोभाग्य। हम घर में कुल 7 सदस्य हैं। और घर में आठ कमर हैं। मेरी अभी–अभी शादी हुई है, कोई सन्तान अभी है नहीं। मेरे और भाई को भी सन्तान नहीं है। घर साफ सुथरा है आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।

उसी समय वहां पर 8–10 नौजवान स्वामीजी के दर्शन करने आ गये। वह जमाना था हिप्पीकट बालों का, उनको देखकर संतों ने उन्हें कहा इसको देखो इसके बाल कितने छोटे और साफ हैं। आपने इतने बड़े बाल क्यों रखे हैं। मेरी इच्छा है ये बाल कटवा लो, अभी तो रात्रि हो गई है, कहो तो कल में नाई को बुला लेता हूं। कुछ ने बोला बाद में कटवा लेंगे और कुछ ने कहा कल सबेरे हम कटवा लेंगे अपने आप। परिवार वालों ने बच्चों को समझाया स्वामीजी की बात मानोगे तो जीवन में रंग जाओगे। जिन बच्चों ने उनके वचन मानकर बाल कटवाये वे आज बहुत ऊंचाईयों पर है और बाकी आज भी हैरान परेशान हैं। सन्त जी हमारे घर में रहने आये, 12 दिन का पाठ था। उसके बाद भी वे पांच दिन हमारे घर रहे। उनको मां के हाथ की बनी हुई रोटी बहुत पसंद आती थी, वे कहते थे, शंकर की मां जैसी तवा रोटी बनाती हैं वैसी तवा रोटी मैंने और कहीं नहीं खाई। वे जब भी आते तभी यही बात दोहराते थे। वे बताते हैं कि हमारे घर में बहुत स्नेहपूर्ण माहौल रहता है। एक दूसरे के लिये स्नेह, आदर का भाव भी बहुत रहता है।

स्वामीजी की जिसने भी बात मानी, उनके बताये मार्ग पर चला वह आगे बढ़ गया। स्वामीजी ने मुक्ति के तीन रास्ते ही बताये सेवा, सत्संग और सिमरण। इनमें से भी सेवा में ही परमानंद है। उसमें कहा गया है कि प्रभू का हर पल उठते, बैठते, सोते, जागते सिमरण करेंगे तो हम ग़लत रास्ते पर जा ही नहीं सकते, क्योंकि हम परमात्मा के नाम का जाप करते हैं इस लिये पाप में ज्यादा मन लगता नहीं है। एक ही विचारधारा के लोग आपस में मिलते हैं क्योंकि सत्संग में तो वही लोग आते हैं न जिनको परमात्मा याद है, जिनके हृदय में उसका वास है। सेवा का मार्ग वहीं से निकलता है। सत्संग बताता है अच्छे कर्म आपको मोक्ष गति तक ले जायेंगे सत्संग हमें यह भी बताता हैं कि राम शबरी

के झूठे बेर खा सकते हैं और यह भी बताता है कि कोई भी कार्य छोटा–बड़ा नहीं होता।

पिछले 8 वर्षों से जयपुर में कहीं भी भागवत कथा, या गीता ज्ञान के कार्यक्रम होते हैं तो वे जरूर जाते हैं। वे जीव सेवा समिति में पदाधिकारी भी रहे। उन्होंने देखा पद पर रहते हुए वे जो कार्य कर रहे हैं उनमें पद का बंधन है लेकिन अगर वे पद पर नहीं होंगे तो ज्यादा स्वतंत्र हो कर कार्य कर सकेंगे। दूसरे को पद देंगे तो वो और उत्साह से कार्य करेगा। कार्य का दायरा बढ़ेगा। उन्होंने बताया स्वामीजी के बाद तो कार्य और तेजी से आगे बढ़े हैं। सेवा में तन, मन, धन किसी की कोई कमी नहीं आई है। स्वामीजी ने सिखाया है–

'एक देवै, दस पावै, बीच में गोता कोई नहीं खावे'

वे कहते थे कि दान देने के लिये किसी पर दबाव नहीं डालना है। जो दे उसका भला, जो न दे उसका भी भला। उनका कहना था जो जितना दान देगा उसका दस गुना उसके पास लौट कर जरूर आयेगा। आज नहीं तो कल आयेगा, मगर आयेगा जरूर। जब स्वामीजी पुष्कर में रहते थे तो वे कुटिया पर संपत पाठ रखवाते थे। उसके लिये भगत विट्ठलदास जी वहां जाते थे। वे ऊधवदास जी से 30 वर्ष बड़े थे। ऊधवदास जी उनको पुष्कर छोड़ने महीने में एक बार जरूर जाते थे। शरद पूर्णिमा पर भी वे पुष्कर जाते थे। एक बार स्वामीजी ने उनको आग्रह किया कि आप आज यहीं पर रह जाओ रात को भी सत्संग की महफिल जमायेंगे। तब वे रुक गये थे। भगत विट्ठलदास जी बहुत ही ज्ञानी एवं भक्तवत्सल थे। भाई घुमणसिंह जी, मास्टर छत्तूमल भी संपत पाठ करने में माहिर थे बाद में वे भी संपत पाठ करना सीख गये थे मगर उनको संपत की लाइन पढ़ने में दिक्कत होती थी–

'सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु, भगत जना कै मनि बिस्राम'।।

उन्होंने फिर श्री सुखमनी साहिब का पाठ करना शुरू किया और 22 वर्षो तक लोगों के घर घर जाकर श्री सुखमनी का पाठ करवाते थे। वे बोले आज भी वे बीमारियों से दूर हैं। स्वामीजी की, गुरूवाणी की यह असीम कृपा है उन पर। जिस दिन वे कुटिया पर पहुंचे, देर से पहुंचे थे आने तो दिया उस समय स्वामीजी सिर्फ एक लंगोट पहने हुये थे। उन्होंने कहा कुंए पर जाओ पानी की बाल्टी मेरे लिये भरो मैं नहाऊंगा, एक बाल्टी और भरो वह कुबड़ा साधू नहायेगा। वहां पर रमेश, जो कुटिया पर ही रहता था, उनसे कहा इसको छाछ पिलाओ, मैं नहा कर आता हूं तो मैंने कहा हां मैं छाछ पियूंगा आप नहा कर आ जाइये आपके साथ बैठकर पियूंगा। स्वामीजी आम खुद भी खाते थे मुझे भी खिलाते थे जो फल फ्रूट कुटिया में श्रद्धालु लाते थे एक दो अपने लिये रखकर सब बंटवा देते थे। केले, सेवफल, आम सब बांट देते थे।

तभी स्वामीजी ने कहा तुम्हारा साथी रायसिंघानी तो चला गया। यह बात स्वामीजी को अपनी दिव्य शक्ति से ज्ञात हुई तब तक कहीं से सूचना नहीं आई थी। वे वहीं पर थे डेढ घंटे के बाद वहां पर टेलीग्राम आया जो उनके पुत्र ने भेजा था। रायसिंघानी जी अक्खड़ टाइप के व्यक्ति थे, बड़े अधिकारी थे, कभी कभी शराब का भी सेवन कर लेते थे। छोटी उम्र में ही संसार छोड़ गये। तब स्वामीजी ने बताया उसका शरीर तो मृत हो गया है, मगर आत्मा अभी भी यहीं पर है। स्वामीजी ने बताया हर आत्मा का देह त्याग के बाद उसके कर्मो के अनुसार यमराज की दरबार में हिसाब होता है और तब वह शरीर का साथ छोड़ती है। अब वह देखो, उसकी आत्मा जा रही है, तुम देखना चाहोगे? तो मैंने कहा जैसा उचित लगे। वे ऊपर देखने लगे, मैंने भी देखा एक पक्षी हवा

में पंख फड़फड़ाता हुआ जा रहा था उस पर एक कपड़ा भी डला हुआ था। यह देखने के बाद तो मेरा स्वामीजी में विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

श्री मुकेश भाग्या जी के मकान का मालवीय नगर जयपुर में गृह प्रवेश की पूजा का कार्यक्रम था। स्वामीजी वहां पर आये हुये थे। यह नवंबर का महीना था। मुकेश जी का आग्रह था कि हम लोग सपरविार वहां पर आयें। माताजी जिद कर बैठीं कि मुझे स्वामीजी के दर्शन करने हैं। स्वामीजी ने कहा शंकर की मां आज तुम पहले की तरह मुझे रोटी सेंक कर खिलाओगी। यहां तो बहुत भारी व्यंजन बने हैं। मैं दवाइयां खा–खा कर परेशान हो गई हूं, ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि ये गोलियां बंद हो जायें। तब स्वामीजी ने कहा ठीक है कल से तुम्हारी गोलियां बंद हो जायेगीं। शाम को घर आये। भगत कंवरराम की वर्सी का कार्यक्रम था। वे रात्रि को भगत सुनती रही। सबेरे अरदास चल रही थी उन्होंने भगत साहिब को 5 रू दिये और अपने लिये अरदास करने का कहा इधर स्वामी जी ने कहा था कि उनकी गाड़ी से वे उनको पुष्कर छोड़ कर आयें। शाम को फिर स्वामीजी का फोन आया, आप मत गाड़ी लाना मोहन भाग्या ने कर ली है, वह छोड़ आयेगा। माताजी ने स्नान किया और फिर सोईं तो हरी ओम तत्सत। फिर उठीं नहीं। उनकी गोलियां जो स्वामीजी ने बंद करने का कहा था वे सच में बंद हो गयीं। कितनी दूर दृष्टि थी स्वामी जी की यह बात इसी से पता पड़ जाती है। स्वामीजी जयपुर से जा चुके थे। उन्हें पुष्कर में सूचना दे दी गयी।

उन्होंने संतो की आज्ञा का हमेशा पालन किया। देर सबेर हो सकती थी मगर उनकी आज्ञा टाल नहीं सकता। उनका जनम कृष्ण जन्मभूमि मथुरा में हुआ था। उन्होंने शिक्षा भी अच्छी ग्रहण की थी। उनके गले में सरस्वती मां का वास है। वे भजन भी बहुत अच्छे गाते हैं। उन्होंने अपना एक भजन भी मुझे गा कर पूर्ण श्रद्धा और मधुर स्वर में सुनाया, सुनकर आनन्द आ गया। उन्होंने कहा संतो के वचन थे – ऐसी करनी करके जाओ, जो दुनिया तुमको याद करे। वे बोले जो अच्छा काम करता है वह किसी न किसी क्षण याद आ ही जाता है, उसकी चर्चा होती ही है। उन्होंने कहा संतजी कहते थे जल्दी सोना, जल्दी उठना, प्रभू का नाम जपना।

उन्होंने बताया जब जब स्वामीजी ने बुलाया तब तब वे गये। धन्धे में सामान्य से ज्यादा ही लाभ होता था उस दिन उन्होंने जो भजन गाये वे वास्तव में दिल की गहराइयों में उतर गये। अंत में उन्होंने श्लोक महला नवां का यह श्लोक सुनाया–

करणो हुतो सो ना कीओ, परिओ लोभ के फंद
नानक समिओ रमि गइओ, अब क्यूं रोवत अंध

नर सेवा ही नारायण सेवा

डॉ. अर्जुन टेंवाणी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9131498065

टेंवाणी जी का पूरा परिवार स्वामीजी के लिये समर्पित था। स्वामीजी के सबसे पुराने अनुयाइयों में इनका नाम सर्वप्रथम आता है। इनका परिवार गुरूवाणी और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति झुकाव के कारण संतों का प्रिय परिवार बन गया। डॉ. रमेश

टेंवाणी, डॉ. लता टेंवाणी, डॉ. अर्जुन टेवाणी, डॉ. सरस्वती टेंवाणी, डॉ. गुलाब टेंवाणी, डॉ. कोशल्या, डॉ. रेखा, डॉ. रीना एक ही परिवार से सात सात प्राकृतिक चिकित्सा के डॉक्टर! कितना बड़ा समर्पण होगा। आप सोच सकते हैं आज भी डॉ. अर्जुन टेंवाणी जी शाम को 5 से 7 बजे तक लोगों को निःशुल्क टेलीफोनिक परामर्श देते रहते हैं। वे यू–ट्यूब से भी जुड़े हुए हैं। उनसे जब बात शुरू हुई तो उन्होंने बताया कि स्वामीजी कहते थे कि आरोग्य केन्द्र (प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र) और सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय उनके दो नेत्र हैं। उन्होंने आगे कहा कि आरोग्य केन्द्र और उनकी कुटिया दोनों ही मेरे आश्रम हैं, पहले आरोग्य केन्द्र पर जाकर अपना स्वास्थ्य लाभ करें और बाद में मेरी कुटिया पर आयें। एक बार वे सबेरे 5 बजे के करीब आरोग्य केन्द्र पर आये और छत पर चले गये और उन्होंने कहा मेरे अंदर से कोई कहलवा रहा है कि जो भी मेरे यहां आयेगा, यहां की मिट्टी का लेप करायेगा उसके तन–मन के सब रोग खत्म हो जायेंगे और आज वे भी उसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करते हैं। जैसी जिसकी भावना होती है उसी के अनुरूप उसको लाभ होता है। शुरू शुरू में लोग आते थे, किडनी फेल हो गई है, लंग्स की समस्या है, ऐसे लोगों को हम इलाज करने से डरते थे मगर वे कहते थे हम सब तरफ से निराश हो चुके हैं इसलिये यहां आये हैं, हम अपनी रिस्क पर आ रहे है। वे आये और ठीक भी हुए। वे आते थे शरीर शुद्धि के तरीके, खान–पान में बदलाव आदि समझकर जाते थे, उसी के अनुसार आचरण करते थे। जब शरीर की आंतरिक शुद्धि हो गई, पेट में सात्विक भोजन पहुंचा और साथ में स्वामीजी की करूणा भी, जो यहां के कण कण में बसी हुई है, तो वे स्वस्थ हो जाते थे।

स्वयं संत जी जब 50–55 वर्ष की अवस्था के थे तो उनको पेट संबंधी बीमारियों ने जकड़ लिया। उन्होंने हर तरह की चिकित्सा पद्धति से इलाज करवाया। एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी मगर मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की। स्वामीजी का मन भक्ति में भी नहीं लगता था। एक बार कुटिया पर संत खिलूमल जी या दीवान करमचंद जी स्वामीजी से मिलने आये। स्वामजी ने उनको अपनी समस्या बताई वे थोड़े नाराज हुये और बोले साधू भी कभी बीमार होता है क्या? जरूर आपके शिष्यों ने आपको आग्रह करके गरिष्ठ भोजन करवा दिया होगा इसीलिये ऐसी समस्या हुई है स्वामीजी ने कहा अब क्या करूं। उन्होंने उनको कहा आप प्राकृतिक चिकित्सा करवायें और उसके लिये आपको इन्दौर जाना पड़ेगा, सबेरे बगैर नाश्ता किये हुये, 12 बजे के पहले पहुंचना होगा। वहां डॉक्टर भोजराज छाबड़िया ही आपको व्याधि से मुक्ति दिला सकते हैं। यह बात सुनकर सिद्धभाऊ को लेकर स्वामीजी इन्दौर आये, समय से पहले आये। स्वामीजी कमरे में प्रविष्ट हुए तो बगैर नमस्ते किये, बगैर बात किये डॉक्टर छाबड़िया बोले आपको पेट की तकलीफ है, आपको भोजन हजम नहीं होता, आपने एलोपेथी, होम्योपेथी, आयुर्वेदिक, यूनानी सब दवाइयां कर ली हैं मगर लाभ नहीं हो रहा। स्वामी जी आश्चर्य चकित हो गये, न देखा, न बात की, न नमस्ते की और पूरा हाल जान लिया। वास्तव में इलाज इसके पास ही है। तब डॉ. छाबड़िया जी बोले क्यों आए हो। स्वामी जी बोले इलाज करवाने। डॉक्टर ने कहा बीमारी ज्यादा है, इलाज कठिन है कर पाओगे? बोले हां, तब डॉ. छाबड़िया जी बोले आपको 40 दिन का उपवास करना पड़ेगा। 40 दिन के उपवास की बात सुनकर स्वामीजी सोच में पड़ गये बगैर खाना खाये किस तरह चालीस दिन उपवास होगा। उन्होंने सिद्ध भाऊ से बात की स्वामीजी बोले उधर आग है, इधर पानी है, उधर करें तो भी मरेंगे, इधर भी मेरेंगे। वहां गोलियां खा खाकर शरीर खोखला

हो रहा है। क्या करें अंत में निर्णय लिया कि इलाज करवायेंगे, उपवास करेंगे। उन्होंने स्वीकृति दी। तब डॉक्टर साहब ने उनको कहा बैठो, डॉक्टर साहब ने तरबूज मंगवाया और एक टुकड़ा काट कर कहा लो खाओ। स्वामीजी ने कहा आपने तो कहा था 40 दिन उपवास रखना है। बोला हां बोला था, आपको उपवास में वही खाना है जो मैं खाने के लिये दूंगा। उन्होंने एक एक टुकड़ा करके पूरा तरबूज उनको खिला दिया। इसका असर दो घंटे बाद देखने को मिला। स्वामीजी को मल त्याग की इच्छा होनी शुरू हो गई वे गये और पता पड़ा कि उनके पेट के अंदर जमा कचरा प्रेशर के साथ बाहर निकलना शुरू हो गया। उनका पेट हल्का हो गया। उनका पेट हल्का हो गया तो वे बोले अब तो बीमारी लग ही नहीं रही है। डॉक्टर साहब ने कहा यह तो बाहर जो कचरा जमा था वह निकला है अभी अंदर बहुत कचरा है। आपको रुकना पड़ेगा। वे 8–10 दिन रुके। डॉक्टर छाबड़िया के पास फल–फ्रूट कच्ची सब्जियां, एनीमा, कटि स्नान जैसे साधन थे, जिनके द्वारा स्वामीजी को खूब स्वास्थ्य लाभ हुआ।

स्वामीजी को लगा यह तो सरल पद्धति है, फिर वे 8–10 दिन और रुके और मरीजों से कैसे बात करते हैं, धूप, हवा, पानी, मिट्टी से कैसे रोग ठीक होते हैं, कटि स्नान, एनीमा, फल फ्रूट का सेवन, सात्विक आहार के बारे में उनसे सब बातें सीखीं। तब संतों को लगा यह ऐसी सरल, सुलभ कम खर्च वाली पद्धति है तो इसको यहां पर भी शुरू करें और इसका प्रचार प्रसार देश भर में होना चाहिये मैं इसका प्रचार करूंगा शायद यह जीवन प्रभू ने मुझे इसी कार्य के लिये दिया है। इसी विचार के साथ डॉ. हरी तुलिसियानी के घर में इसको शुरू किया गया। वहां पर स्व. दानोमल परियानी, रोचीराम आडवानी वगैरह जाते थे और डॉ. छाबड़िया भी वहां पर आते थे। यह प्राकृतिक चिकित्सा की पहली प्रयोगशाला बनी, संत हिरदाराम नगर के आरामशीन रोड पर बी–61, न्यू में।

स्वामीजी ने सोचा मुझे फायदा हुआ है, अन्य मरीजों को भी भेजा जाये देखें, उनको भी फायदा होता है यां नहीं। ऐसे मरीज भेजे गये जो लाइलाज घोषित किये जा चुके थे। उनमें से अनेक ठीक होकर आ गये।

डॉ. अर्जुन टेंवाणी ने बताया उनके बड़े भाई डॉ. रमेश टेंवाणी जी की तबीयत खराब हुई। उनको सिर दर्द की भयंकर शिकायत हो गई। डॉ.रमेश हिमथानी, सिद्धभाऊ, और रमेश टेंवाणी समकालीन विद्यार्थी थे, दो तो आगे बढ़ गये मगर वे अपनी बीमारी के कारण स्नातक भी नहीं बन पाये। इतनी भयंकर पीड़ा थी कि वे आत्महत्या करने की बाते करने लगे थे। उनको डॉ. छाबड़िया के पास भेजा गया। वहां उन्होंने 40 दिन तक इलाज लिया और ठीक हो कर आ गये। बाद में वे एक वर्ष तक उपवास पर रहे। एक दम फिट हो गये। बाद में उन्होंने नौकरी करते हुए कर्नाटक से बी.एन.वाई.एस. (बेचलर आफ नेचरोपैथी एवं यौगिक साइस) की डिग्री लीं, अन्य अनेक डिप्लोमा कोर्सेस किये एम. फिल., पी.एच.डी तक उन्होंने पास की। उन्होंने कहा मैं स्वामीजी के आशीर्वाद और डॉ. छाबड़िया के सहयोग से ठीक हुआ हूं, अब मुझे यह पद्धति जन जन तक पहुंचानी है। इसी संकल्प को लेकर काम कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि उनके बड़े भाई कन्हैयालाल टेंवाणी को पेरेलेटिक अटैक आया था जिसका प्रभाव उनके चेहरे पर पड़ा था। हॉस्पिटल में दिखाया, उन्होंने उनको ठंडी चीजों से बचने की सलाह दी। मगर स्वामीजी ने उनको डॉ. छाबड़िया के पास भेजा, उन्होंने ठंडे पानी के टबों में बैठाया और वे भी ठीक होकर आ गये। उनके बाद डॉ.

अर्जुन टेंवाणी और पुरूषोत्तम पारवानी भी इन्दौर प्रशिक्षण लेने गये। पुरूषोत्तम जी तो आगे नहीं बढ़ पाये, मगर उन्होंने ट्रेनिंग पूरी की।

एक बार गुरूनानक जयंती पर कुटिया में कार्यक्रम था, कुटिया की छत पर सब बैठे थे तो स्वामीजी ने दक्षिण दिशा की ओर हाथ उठा कर कहा उस तरफ प्राकृतिक चिकित्सा का एक अस्पताल बनेगा। उस तरफ तो जंगल ही था, समझ में नहीं आया कहां बनेगा। थोड़े ही दिनों में वहां पर नवयुवक सभा, सिंधू समाज एवं गांधी नगर सोसाइटी ने प्लॉट काटे। उनमें से एक प्लॉट इन के भाई कन्हैयालाल टेंवाणी और एक अन्य अनुयायी को मिला उन्होंने वे प्लॉट स्वामीजी को प्राकृतिक चिकित्सालय बनाने के लिये दान स्वरूप दे दिये। दो प्लॉट और खरीदे गये। इस तरह 4 प्लॉट स्वामी जी को मिलने से हॉस्पिटल को चारो तरफ रास्ते का लाभ मिल गया। तब 10x10 में एक लोहे की चदरों से खपरा बनाया गया और उसे आरोग्य केन्द्र का नाम दिया गया।

बाद में वहां एक्यूप्रेशर कैम्प भी लगाया गया जिससे मरीजों को लाभ हुआ और वहां पर योग केन्द्र की भी स्थापना हुई। आज बढ़ते–बढ़ते आऊटडोर के साथ इनडोर ट्रीटमेंन्ट की व्यवस्था भी है।

उन्होंने बताया उनका एक्सीडेंट हुआ। हाथ में फ्रेक्चर हुआ था। ऑप्रेशन हुआ, एक माह बाद पता पड़ा कि बायें हाथ की उंगलियां काम ही नहीं कर रही मजबूरी में दायें हाथ से काम करना शुरू किया। सिद्धभाऊ को भेजकर डॉक्टर से पुनः ऑप्रेशन करने को कहा, वे मान नहीं रहे थे मुश्किल से माने पुनः ऑप्रेशन हुआ और हाथ ठीक हो गया। फिर उन्हें आरोग्य केन्द्र की सेवा में लगा दिया। सबेरे पुरूषों के लिये, शाम को महिलाओं के लिये इलाज की व्यवस्था शुरू हुई। डॉ. लता टेंवाणी, डॉ. पार्वती चोइथाणी, शाम को देखती थी।

स्वामीजी ने कहा था यहां पर सेवाभावी निःशुल्क सेवा करने वाले डॉक्टर ही रखेंगे। क्योंकि जो डॉक्टर पैसे लेंगे वे सेवा नहीं कर पायेंगे उनका ध्यान पैसे पर ही होगा। तब यहां पर डॉ. गनपत दयारामानी, डॉ. कन्हैयालाल रंगवानी, डॉ. माधवदास चोइथानी, डॉ. लता टेंवाणी, डॉ. पार्वती चोइथाणी, डॉ. अर्जुन टेंवाणी हम सब सेवा भाव से सेवा करते थे। अब शासकीय मान्यता प्राप्त डॉक्टर काम कर रहे हैं। उनको आरोग्य केन्द्र वेतन नहीं देता। संत हिरदाराम नेचरोपैथी एवं यौगिक साइंस महाविद्यालय में पढ़ाने के बदले उनको वेतन भुगतान होता है।

ईमानदारी का प्रत्यक्ष प्रमाण

श्री भगवान जसवानी
संत हिरदाराम नगर
मो.6260549040

भगवान जसवानी जी से मेरा परिचय 1978 से है, उस समय से जब मैंने साक्षरता अभियान नाम से गरीब विद्यार्थियों को पढ़ाने के बारे में बहन पुष्पा जोशी का नई दुनिया समाचार पत्र में संपादक के नाम लिखा पत्र पढ़कर, पढ़ाने का सोचा था। तब वे गुरू नानक स्टोर पर काम करते थे और आज भी वे उसी की बड़ी शाखा भगत कंवरराम स्टेशनरी स्टोर पर काम करते हैं। मैने उनको हमेशा सात्विक रूप में ही पाया है। वे

विपश्यना में पारंगत हैं, जो उनकी दिचर्या का अंग है। एक ही संस्था में 44 वर्ष तक काम करना मालिक का प्रिय पारिवारिक सदस्य बन जाना उनकी ईमानदारी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जब उनसे बात शुरू की तो उन्होंने बताया कि उनकी बेटी की किडनी फेल हो गई थी, 6–7 बार डायलेसिस पर रहना, डेढ़ वर्ष में 6–7 बार वेन्टीलेटर पर जाना डॉक्टर भी निराशा के आगोश में रहते थे, वे बोलते थे बहुत ही क्रिटिकल स्थिति है। मगर स्वामी जी आज भी अपनी शक्तियों के साथ विद्‌यमान है। वे चैतन्य स्वरूप हैं। उनकी सब पर कृपा रहती है। डॉक्टर भी भगवान पर आस्था रखने वाले थे, परन्तु फिर भी वे हिम्मत हार जाते थे। मगर इतनी विकट परिस्थितियों में भी जब स्थिति ठीक हो जाती थी तो हिम्मत बढ़ जाती थी। मेरी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी। समाज ने मेरी दिल खोलकर मदद की। परिवार के लोग ऑप्रेशन करवाने के मूड में नहीं थे, खर्चा ज्यादा था और संभावनायें कम थीं। पारिवारिक कलह थी, हमारी मनःस्थिति भी कमजोर थी। हम प्रातःकाल उठकर अमृतवेले में कुटिया जाते थे, प्रार्थना करते थे, मगर परिस्थितियां दिनों दिन खराब होती जा रही थीं, हर तरफ निराशा का अंधकार दिखाई दे रहा था। घर वाले विरोध पर उतर आये थे।

एक दिन वे जब दुकान के लिये जा रहे थे, उनको सिद्ध भाऊ मिल गये, उन्होंने पूछा बिटिया कैसी है, तो उन्होंने बताया डॉक्टर कहते हैं ट्रांस्प्लांटेशन के अलावा कोई रास्ता नहीं है। उन्होंने पूछा फिर किडनी कौन देगा तो मैंने बताया कि मेरी किडनी मैच हो गई है, तो उन्होंने कहा फिर देर क्यों कर रहे हो यह काम कर लो। उनका संकेत पाजेटिव था, मैंने मन बना लिया और उस समय से स्थितियां अनूकूल होती गई। उन्होंने कहा यह काम करलो भगवान भला करेंगे। मुझे लगा बोल सिद्धभाऊ रहे हैं मगर उसके पीछे स्वामीजी की प्रेरणा है। मैंने ठान लिया अब तो यह काम करना ही है। जितनी आवश्यकता थी उससे ज्यादा आर्थिक मदद आने लगी। घर वाले जो पहले विरोध में थे वे भी सकारात्मक होते गये। मेरी बेटी आज विलकुल स्वस्थ है। इससे बड़ी स्वामीजी की कृपा का क्या बखान करूं!

डॉ. रमेश कुमार टेंवाणी स्वामीजी के अति प्रिय अनुयाइयों में से हैं। उन्होंने उनको विपश्यना पूजा पद्धिति के बारे में बताया और उनके सहयोग से वे विपश्यना केन्द्र तक पहुंचे। विपश्यना उपासना पद्धति गोयनका जी द्वारा स्थापित संस्था है। यह भगवान बुद्ध की पूजा पद्धति है जो ज्ञान मार्ग से संबंधित है।वे इस पद्धति में गये और उससे गहराई से जुड़ते गये। स्वामीजी का मार्ग भक्ति मार्ग था। मगर जब वे तुलनात्मक दुष्टि से ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग की विवेचना करने लगे तो दोनोमें कोई अंतर ही नहीं है। वैसे भी सभी पूजा पद्धतियां हमें अलग–अलग रास्तों से उस विराट् सागर से ही मिलाती हैं। जैसे नदी, नाले बहते तो अलग–अलग हैं पर उनका गंतव्य स्थान अंततः समुद्र ही होता है।

उनकी बड़ी बहन एक बार स्वामीजी के सत्संग में गई थी, जब प्रसाद बंटना शुरू हुआ तो उन्होंने प्रसाद के लिये एक हाथ बढ़ाया, तो स्वामीजी ने कहा कि बिटिया कभी भी प्रसाद एक हाथ से नहीं लेना चाहिये, अपना दूसरा हाथ बढ़ाओ और फिर दोनों हाथों से प्रसाद लो। बात छोटी थी मगर स्वामीजी ऐसी ही छोटी शिक्षाओं के द्वारा अपने अनुयाइयों को धर्म का मर्म समझाते थे। उनकी छोटी बहन दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में होने वाली सात दिवसीय अखण्ड रामधुनी, जो सन 1965 में स्वामी जी द्वारा दौलतराम धर्मशाला में शुरू करवाई गई थी और आज 57 वर्ष बाद भी प्रति वर्ष लगती है,

में जाती थी। एक बार स्वामीजी समापन दिन के अवसर पर रामधुनी में आये और अपने प्रवचनों में बोले

जेको डींदो सउ, तहिंखे थींदो ढउ,

अर्थात् जो मुझे सौ रूपये दान में देगा उसको कभी भी जीवन में प्रभू कमी नहीं होने देगा। यह बात बहन को बहुत अच्छी लगी। यह बात 1970 के आसपास की है। उस समय सौ रूपये की बहुत कीमत होती थी। मुझे याद आ रहा है, मेरी उस समय बीएचईएल में ट्रेनिंग थी और 60 रूपये प्रति माह मिलते थे। बहन ने 100 रू. दक्षिणा रख दी और वे देकर बहुत प्रफुलित थीं।

करतार भली करेगा

श्री सुरेश सभलानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9039252475

यह उस परिवार से आते हैं, जिन्होंने छोटे स्तर से उठकर ऊंचाईयों को छूने में सफलता प्राप्त की है, अपनी मेहनत और सदाचरण के द्वारा। मैंने इनको सबेरे–सबेरे पेपर बांटते भी देखा है। और साक्षरता के लिये पूरे परिवार को प्रयास कर आगे भी बढ़ते भी देखा है। यह शून्य से हीरो बने हैं। पूरा परिवार स्वामी जी में अथाह आस्था रखता है। व्यसनों से दूर, जी जान से कुटिया में सेवा और संक्षिप्त वार्तालाप। न किसी की लल्लो–चप्पो, न किसी से चख–चख। इनके दूसरे भाई भी अपनी नौकरी के अलावा घर की आय बढ़ाने के लिये पार्ट टाइम व्यवसाय भी करते हैं और हमेशा दूसरों की सहायता को तत्पर रहते है। इनके उत्तम आचरण के कारण, स्वामीजी का इन पर हमेशा आशीर्वाद का हाथ रहा है। बहुत कम लोग होते हैं जो सच्चाई से अपने अतीत के बारे में सत्य बोलने से परहेज नहीं करते। सुरेश जी भी उन्ही में से हैं। उन्होंने निम्न आय वर्ग से अपने मध्यम आय वर्ग में आने का पायदान दर पायदान जिक्र निःसंकोच भाव से मेरे सम्मुख किया।

उन्होंने बताया कि वे सीआरपी क्षेत्र में संत नगरी में रहते थे। उनका घर कन्हैयालाल टेंवाणी जी के घर के पास था। वे संतों से घनिष्ठ संपर्क में थे। माताजी की इच्छा थी कि उनके बच्चे भी संतों से जुड़ें। वे इसके लिये अनेक बार उनसे आग्रह कर चुकी थीं। स्वामीजी ज्यादा लोगों से मिलते नहीं हैं, इसलिए उनको ले जाने में उन्हें संकोच होता था। कुटिया पर उनके पिता स्व.नामोमल जी के मित्र ठाकुरदास मनवानी (अजमेरी हलवाई) का परिवार भी संतों के सान्निध्य में था। माताजी ने उनसे आग्रह किया तो उन्होंने कुटिया पर ले जाने के लिये स्वीकृति दी। उनके साथ उनके बड़े भाई कन्हैयालाल जी, माताजी, वे स्वयं एवं ठाकुरदासजी कुटिया के निश्चित समय 9 और 10 के बीच गये। माताजी संतों के प्रसाद के लिये लड्डू का प्रसाद ले गई थीं। उस समय कुटिया में कम लोग ही आते थे। स्वामीजी अपने आसन पर विराजमान थे, उन्हांने ठाकुरदास जी से इनका परिचय पूछा। माताजी ने लड्डुओं का प्रसाद स्वामीजी को दिया।

स्वामीजी प्रसन्न हुए। उन्होंने बड़े भाई से कहा बोलो मुझे लड्डू पसंद नहीं हैं। उन्होंने कहा मुझे लड्डू पसंद नहीं हैं। फिर स्वामीजी ने सुरेश जी से कहा बोलो मुझे लड्डू पसंद नहीं हैं, मगर सुरेश जी ने बोला मुझे लड्डू बहुत पसंद है। स्वामीजी मेरी बात सुन कर खुश हुए। लड़के ने सच बोला है, यह पहला नंबर आयेगा। उस समय वे पढ़ने में कमजोर थे, शासकीय स्कूल में पढ़ते थे। माताजी को आश्चर्य हुआ कि स्वामीजी कह रहे हैं पहला नंबर आयेगा, यह तो कमजोर है पढ़ने में। ख़ैर माताजी ने तब उनको शासकीय स्कूल से निकालकर ए.टी. शहानी स्कूल में डॉ.ल दिया, जहां के प्राचार्य श्री विष्णु गेहाणी जी थे। स्वामीजी के वचन ग़लत कैसे हो सकते थे? उसके बाद वह हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आना शुरू हो गया।

सुरेश जी ने बताया कि वे जब–जब भी घर से निकलते थे तब–तब अपने माता–पिता के पांव छूकर निकलते थे, बाजार जाते वक्त, स्कूल जाते वक्त, कुटिया जाते वक्त, दरबार जाते वक्त, वे मां बाप के पांव छूकर जाते थे। कुटिया जाते थे, प्रातः 9 से 10 और जो भी सेवा सुलभ होती करके आ जाते थे। एक बार स्वामीजी ने उनको अपने पास बुलाया, स्व. आइलदास हेमनानी उनके पास खड़े थे। स्वामीजी ने उनसे कहा कि यह लड़का जब भी घर से निकलता है अपने मां बाप के पांव छूकर निकलता है, पूछो इससे मैं सही बोल रहा हूं या गलत। उन्होंने कहा आप सच कह रहे हैं। सुरेश जी आश्चर्यचकित थे कि स्वामीजी को यह बात कैसे मालूम हुई, परन्तु फिर ख्याल आया वे तो परमात्मा का साक्षात स्वरूप हैं उनसे कोई बात कैसे छिप सकती है।

संतों की कुटिया में शरद पूर्णिमा और गुरूनानक जयंती पर रात्रि को श्री गुरूग्रंथ साहिब जी का पाठ दरबार में और छत पर भाई नथुरमल की भगत का आयोजन होता था। रात्रि को खीर बनती थी जो प्रसाद के रूप में आमंत्रित व्यक्तियों को दी जाती थी। स्वामीजी लिस्ट बनवाते थे, जो जो अनुयायी नियमित आते थे स्वामीजी के सान्निध्य में होते थे उनको बुलाया जाता था। ऐसे ही गुरूनानक जयंती पर लिस्ट बनी, सुरेश पारवानी व भगवान वीधानी को यह कार्य सौंपा गया कि जाकर लोगों को निमंत्रित कर आयें। उस समय वे भी कुटिया पर थे मगर लिस्ट में उनक नाम नहीं था। उनके मन में यह विचार आया काश मेरा भी नाम होता। दिनभर बेचैन रहे। घर पर उनका मन, बार बार उस लिस्ट में नाम नहीं है, सोचकर घोर निराशा में डूब जाता था। अचानक शाम को साढ़े सात बजे चन्द्र चाडवानी जी एवं दिलीप सीतलानी जी ढूंढ़ते आये कि सुरेश का घर कौन सा है और उनको कुटिया पर आने का निमंत्रण दिया। वे गये। उसके बाद तो ऐसी कृपा हुई कि लिस्ट बनाने और निमंत्रण देने की जिम्मेदारी उनको ही मिलने लगी।

उन्होंने बताया वे 2 भाई और 5 बहनें हैं, मां–बाप सहित कुल 9 जनों का परिवार। पापा अकेले कमाने वाले। काफी गरीबी थी मगर आज वे पोस्ट एंड टेलीग्राफ आडिट में सीनियर आडीटर के पद पर कार्यरत हैं। आज उनके पास खूबसूरत मकान, घर में कार, भाई की अच्छी नौकरी, बहनों की अच्छे घर में शादी, भतीजी चार्टर्ड एकाउंटेंट, हर चीज है। वे अपने आफिस मे तीन प्रमोशन ले चुके हैं। वे इसे स्वामी जी की कृपा मानते हैं।

वे 9वीं कक्षा में पढ़ते थे। उनके बड़े भाई का एक्सीडेंट हो गया। रीढ़ की हड्डी में चोट लगी थी। हास्पीटल में भर्ती थे। वे कुटिया में सेवा करते थे। उनको लगा स्वामीजी को बताकर उनसे आशीर्वाद मांगें, भाई के लिये, मगर हिम्मत नहीं हो रही थी। स्वामी जी दादा रोचीराम जी एवं आइलदास हेमनानी के साथ बैठे हुए थे। अचानक उन्होंने उसे आवाज देकर बुलाया। एक कटोरी में अंगूर का प्रसाद दिया और पास में बिठाया। मगर

इनकी हिम्मत नहीं हुई स्वामजी से कुछ बोलें। जब वे नहीं बोले तो अनपेक्षित रूप से स्वामी जी ने पूछा आप कितने भाई हो। वे भाई के बारे में बताना चाहते थे और स्वामीजी ने खुद ही पूछ लिया। तब उन्होंने भाई के दुर्घटनाग्रस्त होने की बात बताई और उनसे आशीर्वाद मांगा। स्वामीजी ने कहा भगवान सब भली करेंगे। अच्छा! भाई ठीक हो जाये तो कुटिया पर ले आना। सचमुच भाई ठीक हो गये। उनको कुटिया पर ले गये। पूरी कुटिया घुमाई, उन्होंने कहा था मुझसे मिलाना, तब तक स्वामीजी आराम करने लगे, भाई का यह दूसरा मौका था कुटिया में जाने का।

उनकी माता का नाम गोपीदेवी, पिताजी का नाम नामोमल था। उन्होंने साधू वासवानी स्कूल में जाब किया परन्तु उनकी शासकीय सेवा में जाने की इच्छा थी। उनकी माताजी ने अनेक बार स्वामीजी से अनुरोध किया। उन्होंने नाबार्ड बैंक में लिखित परीक्षा पास की थी। स्वामीजी ने प्रसाद देकर कहा करतार भली करेंगे। मगर उनका टायपिंग पेपर बिगड़ने के कारण चयन नहीं हुआ। उनको विश्वास नहीं हो रहा था कि स्वामी जी ने कहा था करतार भली करेंगे, फिर भी नहीं हुआ। मगर उसके बाद एस.एस. सी. में चयन हुआ। जो कि नाबार्ड बैंक से कई गुना अच्छी नौकरी है। वे 26 वर्ष से भोपाल में पदस्थ हैं। इसलिये उन्हें लगता है नाबार्ड में चयन नहीं हुआ तो अच्छा ही हुआ।

निःस्वार्थ सेवा से ही प्रतिफल

श्रीमती सुशीला गणपत दयारामानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 6264177324

स्व. गणपत दयारामानी से मेरा रिश्ता सन् 1965 से ही था। पूज्य स्व. देवनदास दयारामानी जी गुरूवाणी के उपासक थे। उनको पूरा गुरू ग्रंथ साहिब कंठस्थ था। दिन रात, सोते जागते उनके अंतरमन में गुरुवाणी का जाप चलता ही रहता था। वे संत कुटिया के मुख्य पाठी थे। उनके गणपत दयारामानी, रमेश दयारामानी, स्व. शंकर दयारामानी और महेश दयारामानी 4 पुत्र थे। रमेश दयारामानी के साथ हमारे घनिष्ठ संबंध थे। श्री नानक पारवानी, स्व. परमानंद मंगतानी, रमेश और मेरी चौकड़ी थी। आज भी एलबम में हम तीनों का साथ में खिंचवाया फोटो है, 50 वर्ष पुराना। दांत काटी रोटी का संबंध था जो आज भी कायम है। पूरे परिवार में सेवा का भाव कूट कूट कर भरा है। गणपत जी आरोग्य केन्द्र के जीवन पर्यंत डॉ.क्टर रहे। और प्रभारी भी रहे। महेश दयारामानी जीव सेवा संस्थान के सर्वेसर्वा है। उनके मार्ग दर्शन में देश–विदेश के दानदाता संस्थान से जुड़े हुए है जिनके अथाह सहयोग के कारण बैरागढ़ संत हिरदाराम नगर बन गया। श्री रमेश कुमार दयारामानी जी भी उल्हासनगर में जीव दया संस्थान नाम से सेवा कार्यो को अतिसुन्दर रूप से संचालित कर रहे हैं। परिवार के मुखिया ही नहीं, बच्चे भी सेवा कार्यो के लिये समर्पित हैं।

श्रीमती सुशीला दयारामानी ए.टी.शहानी स्कूल में एक सफल अध्यापिका का कार्य निर्वहन कर सेवा निवृत्त जीवन व्यतीत कर रही है। उनसे जब चर्चा शुरू की तो उन्होंने बताया कि उनके बेटे का प्रातः काल 6 बजे के आसपास ट्रक से एक्सीडेंट हुआ। एक्सीडेंट बहुत भयंकर हुआ था। स्कूटर ट्रक के अंदर घुस गया था और वे ट्रक के

साइड में जाकर गिरे थे। उनको बहुत कम चोटें आई थीं। उस समय गणपत जी आरोग्य केन्द्र में थे, उनको सूचना मिली वे घबरा कर गये, मगर बच्चे को सकुशल देखकर, उनकी जान में जान आई। स्कूटर तो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। उनको लगा संतों के सेवा कार्य में लगे होने के कारण ही सूली से कांटा हो गया था। दूसरे दिन स्वामीजी को पता चला, उन्होंने संदेश भिजवाया वे घर पर आ रहे हैं। तब विनय ने अपने पिताजी को कहा हम सेवा करने जाते है, जब स्वामीजी आते हैं तो हम बच्चों को पीछे कर देते है और बड़े बड़े यहां शो बाजी करते हैं, वे सेवा कर रहे हैं। स्वामी जी आये, बैठे, बच्चे से हाल चाल पूछा और फिर अपने आप बोले लोग बोलते हैं कि हम सेवा करते हैं नाम दूसरों का होता है यह सोचकर पाप करते हैं। हम लोग स्वामी जी का यह रूप देख सहम से गये, सोच में पड़ गये, अभी थोड़ी देर पहले हमारे तीन बेटे विजय, विनय, वैभव कुल पांच लोग आपस में यही बात कर रहे थे और किस तरह स्वामी जी तक यह बात दिव्य शक्ति से पहुंच गई। सचमुच में वे विरले संत थे।

सेवा से विचार शुद्ध

श्री लोकेश चांडवानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9039737806

श्री लोकेश चांडवानी जी के दादा धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। वे मेरे साथ बीएचईएल में क्रेन आपरेटर के पद पर कार्यरत थे। मेरे कार्यस्थल और उनके कार्यस्थल में 20 मीटर का ही अंतर था। बस में भी साथ साथ जाते थे। वे मुझसे उम्र में बड़े थे, उनके लिये मेरे हृदय में आदर के भाव थे। पारिवारिक संबंध तो नहीं थे मगर उनके घर आना जाना होता रहता था। उनकी बेटियां, बेटों और भतीजों से मेरा बहुत स्नेह था। संयुक्त परिवार था। उनकी 3 बेटियां, 2 बेटे भरा पूरा परिवार था।

श्री लोकेश जी के पिताजी स्व. मनोहरलाल चांडवानी जी भी कुछ समय तक बीएचईएल में कार्य करते थे, उन्होंने बाद में पंजाब नेशनल बैंक में नौकरी कर ली थी। एक आकस्मिक सड़क दुर्घटना में उनका स्वर्गवास हो गया। नेक बंदे थे, मिलनसार थे।

श्री लोकेश जी का पूरा परिवार स्वामीजी में अटूट आस्था रखता था। अपने दादा हीरालाल जी के साथ ये संतों की कुटिया में जाते थे। स्वामीजी कहते थे सबेरे पक्षियों को दाना देना, गौ सेवा करना, मरीजों की, वृद्धजनों की सेवा करना ही हमारा सच्चा धर्म है। यह बात उनके जेहन में बचपन से ही बैठ गई थी। आज सबेरे सबेरे इनके घर में 3 किलो चावल, 50–60 गेहूं की रोटियां पकाई जाती हैं और फिर ये घर से निकल पड़ते हैं। सबेरे 7 बजे के करीब संत नगर में टेकरी के पास बनी पानी की टंकी से शुरू कर, मां आनंदमयी आश्रम, बूढ़ाखेड़ा तक लगभग 2 कि.मी. के रास्ते में वे पक्षियों के लिये दाना, गायों के लिए चारा, कुत्तों और जानवरों के लिये रोज रोटियां लेकर जाते हैं और उनको खिलाकर आते हैं। इनकी टीम के अन्य लोग भी इनका बहुत सहयोग करते हैं।

उन्होंने बताया हमारा 4 दोस्तों का ग्रुप है। मगर हर एक का अलग अलग एरिया बंटा हुआ है। हर एक दोस्त के घर में चावल ओर रोटियां बनती हैं और वे अपने–अपने क्षेत्र में इस कार्य को अंजाम देते हैं। पहले यह कार्य छोटे स्तर पर था मगर कोरोना काल

में लाकडॉ.ऊन के बाद इस कार्य में काफी प्रगति हुई है। यह रूटीन 1 घंटे का होता है। श्री दिलीप चंचलानी, रतन हार्डवेयर वाले, श्री रतनलाल जी, श्री भगवानदास मूलचंदानी जी इस कार्य से जुड़े हैं। हम लोग जगह जगह पक्षियों के लिये घौंसले, भोजन और पानी के लिये मिट्टी के पाट रख उनमें अनाज भर कर आते हैं। पक्षी, गिलहरी, कौवे आकर वे दाना चुगते हैं। एक दिन भर कर आते है, दूसरे दिन सबेरे वे पाट खाली ही मिलते है।

उन्होंने कहा जब से हम सेवा कार्यों से जुड़े हैं तब से हमारे काम प्रभू की कृपा से अपने आप संपन्न हो जाते हैं। सेवा से हृदय के विचार शुद्ध होते हैं, व्यापार में उन्नति महसूस की है। घर में सुख शान्ति, बच्चे आज्ञाकरी हो जाते हैं।

इसके अलावा भी, वे जहां जहां सेवा कार्य होते हैं, वहां तथा शिक्षा के लिये भी दान देते हैं। उन्होंने बताया सेवा कार्य करके आने के बाद ही वे अपनी नित्य की पूजा पाठ करते हैं। सेवा परमोधर्मः उनके जीवन का मूलमंत्र बन गया है।

उनके परिवार में उनकी माता, धर्मपत्नी तो स्नेह की साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। उनकी एक बहन का हिंगोली महाराष्ट्र में विवाह किया हुआ है। जैसा नाम है उनका गीता, वैसी ही गीता जैसी पवित्र है, ज्ञान से भरपूर। उनकी एक बहन जयपुर में विवाहित है। उनमें भी परिवार से मिले सद्गुणों का भण्डॉ.र है।

सात पीढ़ियों की वंशावली

श्री लोकूमल चंचलानी
सदस्य संत परिवार
संत हिरदाराम नगर, भोपाल म.प्र.

काफी समय पूर्व मुझे लोकचंद चंचलानी ने जो नवोदय विद्यालय में सेवारत हैं, बताया था कि उनके परिवार से लोकूमल चंचलानी, सेवानिवृत्त पोस्ट मास्टर, ने भी संतों के विषय में किताब लिखी थी, मगर वे उसे किन्हीं कारणों से प्रकाशित नहीं करवा पाये। उन्होंने उनकी जीवनी लिखी है क्योंकि वे उसी परिवार से संबंधित हैं, जिस परिवार में संत जी ने जन्म लिया था। इस परिवार में संत परंपरा रही है। इसके पूर्व चार संत हुए हैं। पांचवे क्रम पर संत हिरदाराम जी आते हैं। उनसे मिलने की इच्छा थी उनके पास गया, उन्होंने सोमवार को आने को कहा। मैं सोमवार को स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण जा नहीं पाया और फिर मंगलवार को गया। वार्तालाप शुरू हुआ। उन्होंने बताया कि स्वामी जी जोधपुर के जंगलों में तपस्या करने आते थे। उनके पास सिर्फ एक आना (आज के छः नये पैसे) था। आज तो 25 नये पैसे से छोटा कोई सिक्का दिखता ही नहीं है। मैंने 1,2,5,10,20 पैसे के सिक्के देखे हैं।, उसके पूर्व हमारे जमाने में पैसा टको (दो पैसा), एक आना, दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी, चांदी का रूपया भी चलते देखे हैं। उसके पूर्व पाई, अधेला, देखे तो थे मगर प्रचलन में नहीं थे। एक आना लेकर वे तपस्या करने निकले थे। वे अपनी तपस्या के माध्यम से अपने श्वासों को संयत कर सातवें तल तक ले जाते थे। प्रभू के स्वरूप में, कोई मनुष्य रूप धारण कर शाम को आता था और उनको दो रोटी और सब्जी दे जाता था। यही उनका आहार था। एक बार उनके कान में बहुत दर्द हुआ। असहनीय दर्द। वे सोच रहे थे काश मेरे पास चार आने होते तो बादाम रोगन लेकर कान में डॉ.ल लेता तो दर्द में राहत मिलती। फिर सोचा जो प्रभू की इच्छा। इतने

में शाम को वह बंदा उनके लिये भोजन लेकर आया। भोजन दिया, उसने पूछा स्वामी जी कुछ और चाहिये तो बोलिये। स्वामीजी ने कहा कुछ नहीं चाहिये। स्वामी जी ने उसको अपने कान की पीड़ा या बादाम रोगन की चाह की बात नहीं बताई, मगर वे स्वयं बोल पड़े स्वामीजी बादाम रोगन ले आऊं। स्वामी जी सोच में पड़ गये, मैंने यह बात बोली ही नहीं किसी को, इसको कैसे पता पड़ गई।

उन्होंने मुझे संत वंशावली भी बताई जो उन्होंने बनाई है, बड़ी खोज बीन कर, सात पीढ़ियों का उसमें विवरण है।

संत जी की शिक्षा सिंध प्रांत में ही हुई। 12 वर्ष की अवस्था में संत जी का नाम राम से दीक्षा लेने पर हिरदाराम जी रखा गया। इनके चचेरे भाई शेवाराम जो उनसे छोटे थे 10 वर्ष के वे भी संत प्रवृत्ति में आ गये। संत हरीराम जी 21 जून 1947 को स्वर्ग सिधारे यह बात सुनकर स्वामीजी आये। हरीराम जी की तेरहवीं पर सभी संत महात्मा आये। उस समय स्वामीजी की उम्र 41 वर्ष थी। उस समय सिंध प्रांत में दो दरबारें थी। संतों ने कहा एक दरबार भाई शेवाराम जी संभालें और दूसरी दरबार संत हिरदाराम जी। मगर स्वामी जी ने कहा मैने सन्यास ले लिया है तो फिर मैं दरबार का क्या करूंगा? आप दोनों दरबार शेवाराम जी को ही दे दें। यह कह कर वे तपस्या करने फिर से जंगलों में चले गये। इस बीच भारत का बंटवारा हो गया। स्वामीजी को कुछ मालूम ही नहीं था। बाद में वे पुष्कर आये। जब यह समाचार संत नगर में पहुंचा तो उनसे मिलने हरचूराम जी गये। पूरा परिवार अलग अलग शहरों में बंट गया था। जिसकों जहां प्रभू ने पहुंचाया वे वहीं बस गये। 30–32 परिवार संत नगरी में थे। स्वामीजी बैरागढ़ आये, आज जो कुटिया है वह एक बदरूद्दीन नाम के मुसलमान के पास थी। वे यह कुटिया स्वामीजी को देकर चले गये। उन्होंने कोई पैसा नहीं लिया।

डॉ.. भगवानदास, मास्टर श्री लखीमल मूलचंदानी, श्री दानोमल प्रियानी जी, सेवा में लग गये। 1961 में इनके पिताजी सबेरे सवा सात बजे दर्शन के लिये गये मगर स्वामीजी ने उनको बाहर जाने को कहा। इनके पिताजी को गुस्सा आया और वापस लौट गये। मगर फिर वे सोचने लगे वे संत है उनको गुस्सा नहीं करना चाहिए। वे लौट के आये। कुटिया के बाहर बैठकर जप साहिब का पाठ किया, जनवरी 1961 ठण्ड का प्रचण्ड प्रकोप था। 8 बजे कुटिया के दरवाजे खुले वे अंदर गये बम्बई के एक अनुयायी भी आये थे। वे उनके साथ बैठ गये। स्वामीजी ने उनको कहा आपको मालूम है न मेरा टाइम 8 बजे का है। आप को मालूम है मैंने परिवार, रिश्तेदारो से मोह का त्याग कर दिया है अतः आप लोग भी मुझमें मोह मत रखिये।

1993 में उन्होंने संतों के परिवार की वंशावली लिखी, 7 पीढ़ियों का उसमें जिक्र है। संतों को बताया संतजी खुश हुए, सबको कहा कि लोग वर्तमान में अपनों को ही याद नहीं रखते और देखो ये सात पीढ़ियों को ढूंढ़ लाया है। उन्होंने ताली बजाकर आशीर्वाद दिया।

पुष्कर से एक संत आये थे, वे आश्रम का भोजन ग्रहण नहीं करना चाह रहे थे। स्वामीजी के आदेश पर आहूजा परिवार को एक एक दिन खाना खिलाने का आदेश दिया जिसे परिवार ने बखूबी अंजाम दिया।

स्वामी जी के आदेश के कारण इनके परिवार का कोई भी सदस्य संस्थाओं से नहीं जुड़ा। उनके पिताजी के सामने जो सेठ बैठे थे बाम्बे वाले उन्होंने स्वामीजी को 5रू. भेंट किये। स्वामी जी ने पैसे धन्नाराम दरबार में भिजवा दिये। उनको न खाने पीने का

मोह था, न ही पैसों का मोह। स्वामीं जी की संत लीलाशाह में बहुत आस्था थी।

स्वामीजी के अंत समय में इन्होंने संतों से कहा कि उनके अंतिम क्रियाकर्म का दायित्व उनके परिवार को दिया जाये जिसे संतों ने नहीं माना।

उन्होंने बताया कि हरीशेवा धाम भीलवाड़ा में वे गये थे। वहां पर सिर्फ अमीरों का सम्मान होता देखकर उनको बुरा लगा।

1996 में उनके आग्रह पर स्वामीजी उनके घर पधारे थे। उनकी आज्ञानुसार उनकी बंडी के लिये कपड़ा वगैरह लेकर आये थे। जो उन्होंने संतों को भेंट किया। वे 45 मिनट तक बैठे थे जो उनके लिये फल–मेवा लाये थे उन्होंने फल विक्रेता स्व. हेमनदास को दे दिया। जो उनको दक्षिणा दी थी उसमें से उन्होंनें काफी कुछ वहीं उनके परिवार वालों को, रिश्तेदारों को बांट दिया। 45 मिनट तक काफी चर्चायें होती रही। उन्होंने अरदास वगैरह भी की। उन्होंने बताया सचमुच में वे साक्षात परमात्मा का स्वरूप थे मगर अफसोस कि उनको संत नगरी पहचान नहीं सकी। उनके नाम का सबने उपयोग किया मगर जिस स्थान के वे अधिकारी थे वह उनको नहीं मिला।

वे बोले जो भी आज संभाल रहे हैं वे भी संत प्रवृति के हैं। प्रभू सबको खुश रखे। उन्होंने कहा न वे निंदा करते हैं न निंदा सुनना पसंद करते हैं। उन्होंने कहा वे सेवानिवृत्त जीवन से संतुष्ट हैं। पेंशन इतनी मिल जाती है कि खर्च ही नहीं कर पाते। औलाद सुपात्र है, घर में संतों की कृपा से शान्ति, समृद्धि, शिक्षा, लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती सभी का वास है और इन्सान को क्या चाहिये।

सच्चे संत की प्राप्ति

डॉ.. सुरेश भम्भानी एवं डॉ.. कांची भम्भानी
संत हिरदाराम नगर मो. 9893344123

स्वामी जी के आशीर्वाद से मुझे एक प्लाट गुरूनानक कालोनी में उपहार स्वरूप मिला। मैं उस लायक नहीं था, मगर संतों ने बगैर मांगे मुझे दिया। वह प्लाट 1800 वर्ग फुट का था। डॉ.. भम्भानी का प्लाट 1450 वर्ग फुट का था, बाद में स्वामीजी की आज्ञानुसार उन प्लाटों को बदला गया। मुझे डॉ.. भम्भानी वाला और मेरा डॉ.. भम्भानी को प्लाट दिया गया। हस्तांतरण की पूरी प्रक्रिया एवं खर्चा डॉ.. भम्भानी ने किया। जब कार्य संपन्न हुआ तो डॉ.. भम्भानी ने मुझे 350 फुट प्लाट के लिये पैसे उस समय के कलेक्टर रेट के अनुसार भिजवाये जिसे मैंने स्वामी जी को, सिद्धभाऊ को बताया, उन्होंने आज्ञा दी तो मैंने उसे रखलिया। इसके पूर्व मेरा डॉ.. भम्भानी से ज्यादा परिचय भी नहीं था। कुछ दिन पूर्व वे मुझे मिले और कहा मेरे पास भी संतों की कुछ यादें हैं आपको बताना चाहता हूं। वे पहले या दूसरे व्यक्ति थे जो आगे बढ़कर मुझे बताना चाह रहे थे। उन्होंने शनिवार की शाम को मेरे घर पर आने का वायदा किया। मगर वे नहीं आये। उनको रविवार को फोन किया। उन्होंने कहा वे कहीं व्यस्त होने के कारण आ नहीं सके। बाद में बात करेंगे।

वृहस्पतिवार को डॉ.. कांची भम्भानी का फोन आया, उन्होंने शनिवार के दिन 11 बजे क्लीनिक पर आने को कहा। मैं शनिवार 19–04–2022 को 11 बजे उनके क्लीनिक पर ठीक 11 बजे पहुंचा। उनसे बात शुरू हुई। उन्होंने जो बताया वह मैं आपके सामने

रखने का प्रयास कर रहा हूं।

उन्होंने बताया कि वे अपनी पहली बिटिया गरिमा के जन्म के बाद उसको लेकर स्वामी जी की कुटिया पर गये थे। स्वामीजी ने उसको प्रसाद उठाने के लिये कहा, उसने प्रसाद उठाया। स्वामीजी ने कहा एक और उठाओ, वह नहीं उठा रही थीं तो उसकी दादी ने कहा एक अपने भाई के लिये उठा लो। उसने उठा लिया। गरिमा उस समय एक वर्ष की ही थी। डॉ.. साहिबा ने परिवार नियोजन के लिये कापर टी लगवा रखी थी। मगर उसके बावजूद उनको गर्भ धारण हो गया जो वे नहीं चाहती थी मगर फिर धीरज का जन्म हुआ। मगर धीरज बहुत कमजोर पैदा हुआ था।

वे बार बार डॉ.. सुरेश जी से कहती थीं कि मुझे स्वामीजी की कुटिया ले चलो। मगर वे टाल देते थे। एक बार उस बात को लेकर नर्वस होकर रोने लगी। उनके आंखों से आंसू टपक रहे थे। वे क्लीनिक पर ही बैठी थी इतने में ही सिद्धभाऊ आये और उन्होंने आकर दो थैली मिश्री का प्रसाद दिया और बोले कि एक तुम पानी में घोलकर पी लेना और दूसरा धीरज को पिला देना। बलिहारी ऐसे सतगुरू के मिश्री की बात जब सुरेश जी को पता चली तो वे भी हैरत में पड़ गये।

उनके बाद जब डॉ.. जी कुटिया गये तो स्वामी जी ने कहा यह डॉ.क्टर कुटिया पर इसलिये आने से कतराता है कि कहीं स्वामी जी इससे लाखों रूपये दान में न मांग लें। मेरी पोजीशन ऐसी नहीं हैं कि मैं दे सकूं। मैं खुद कर्ज में डूबा हुआ हूं, तब मैं स्वामीजी को क्या जवाब देता।

एक बार संत आसाराम जी भोपाल प्रवास पर आये थे। हमें बहुत लोगों ने उनके प्रोग्राम में आने के लिये एप्रोच किया। डॉ.क्टर सुरेश जी ने जाने का मन बनाया। उनको यह कहकर, जाने से मना किया, हमारे गुरू बैठे हैं वहां आप क्यों जा रहे हैं। वो नहीं गये। उसी दिन डॉ.. सुरेश सपरिवर कुटिया पर गये, मगर बाबा रूपचंदने उनको (कांची जी) कुटिया के अंदर यह कहकर जाने नहीं दिया कि महिलाओं के लिये अनुमति नहीं है। वे साइड में खड़ी हो गईं। डॉ.. सुरेश जी अंदर गये। स्वामीजी ने कहा इनकी श्रीमती इनको रोज बोलती हैं कुटिया पर होकर आओ नाश्ता बाद में दूंगी मगर यह कभी कहता है देर हो गई , कभी लेट आता है। आज भी इसकी धर्मपत्नी साथ में आई है, जाओ उसको अंदर बुलाओ। उन्हें बुलाया गया उस समय स्वामीजी के हाथ में 2–3 पुड़ियां थीं सबको एक एक पुड़िया दी और कहा पहचानो यह क्या है किसी ने चूर्ण कहा, किसी ने हरड़ कहा, तब डॉ.. कांची ने कहा स्वामीजी यह त्रिफला चूर्ण है। स्वामीजी खुश हो गये उन्होंने कहा बनाया किसी और ने, पहचाना किसी और ने। पता पड़ा वह चूर्ण संत आसाराम के द्वारा निर्मित किया गया था और पहचाना डॉ. कांची ने। स्वामीजी इशारा कर रहे थे कि किस तरह डॉ. सुरेश जी को आशाराम बापू के प्रोग्राम में जाने से रोका गया था।

डॉ. भम्भानी ने बताया कि वे स्वामीजी के लिये खीर बनाकर ले जाती थी, खीर बनाते समय मन में प्रभू स्मरण चलता रहता था स्वामीजी को उस खीर में अमृत का स्वाद आता था। इसी तरह वे दही जमा के ले जाती थीं वह भी उसकी सबसे तारीफ करते थे। एक बार जब वे खीर बना रही थी तो वे किसी से बात करते हुये बना रही थीं। जब स्वामीजी ने खीर खाई उनको स्वादिष्ट नहीं लगी। उन्होंने कहा आज किसी से बात करते हुये खीर बना रही थीं? प्रभू का स्मरण करके नहीं बनाई इसलिये ये अमृत तुल्य नहीं लग रही। मैं किसी से बात कर रही थी यह बात उनकी दिव्य दृष्टि से छिप नहीं

सकी।

डॉ.. साहब का परिवार अक्सर स्वामीजी को पेठा पुष्कर भेजता था किसी बस से सेटिंग हो गई थी। एक बार कोई अजमेर जा रहा था तो उन्होंने पेठा अपनी ननद को भेजा और कहा जीजू को कहना ये आश्रम में दे आयें। वे गये मगर उनको जाना अच्छा नहीं लग रहा था। वे भुनभुनाते हुए गये तो स्वामीजी ने कहा हमें जो भी सामान भेजो वह गुरमुखों के हाथ भेजा करो मनमुखों के हाथ नहीं भेजा करो।

एक बार सुरेश जी के मन में कुछ शंकायें थी। स्वामीजी उस समय उदयपुर में थे डॉ.क्टर साहब ने उनको संदेश भेजा कि वे उदयपुर आना चाहते हैं। मगर वहां से स्वामीजी का संदेश आया आप उदयपुर मत आओ, आप वहां पर मरीजों का इलाज करो। आपकी शंकायें अपने आप सुलझ जायेंगी। जब कि डॉ.क्टर साहब ने उनको शंकाओं के बारे में कोई बात ही नहीं कही थी।

एक बार डॉ.क्टर साहब के मन में आया कि वे संसार से विरक्त होकर भक्ति मार्ग पर आगे बढ़ें। यह बात उन्होंने संतजी से शेयर करी तो संतजी ने उनको कहा, यदि मैंने सन्यास नहीं लिया होता तो मैं डॉ.क्टर बन कर सेवा करता। तुम तो स्वयं डॉ.क्टर हो। तुम अपना पेशा मत छोड़ो। तुम सेवा करते रहो प्रभू तुम्हें आकर दर्शन देंगे।

एक बार डॉ.क्टर साहब ने थोड़ा सा दान स्वामीजी को दिया। स्वामीजी ने उनको वापस कर दिया, कोई ज्यादा राशि नहीं थी। स्वामीजी ने कहा अभी तुम कर्ज में चल रहे हो इसलिये मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। कितनी दया और करूणा के अवतार थे स्वामीजी!

एक बार पारिवारिक विघटन के समय में भी इनको उचित धनराशि नहीं मिली उस समय ये लाखों के कर्जे में डूबे हुए थे। वे पारिवारिक बंटवारे से असंतुष्ट थे। उस समय उनके ऊपर मार्केट का, बैंक का, रिश्तेदारों का कर्ज था। चिंता में डूबे हुए थे। अर्द्धरात्रि के समय अचानक संत जी विराट रूप में उनके सामने खड़े हो गये। उनके घर की छत बीस फुट पर थी और स्वामीजी इतने ही ऊंचे दिख रहे थे। तब स्वामीजी ने उसी विराट स्वरूप में कहा चिंता मत करो, यह तुम्हारा कर्जा एक वर्ष में ही उतर जायेगा। और वास्तव में वह कर्ज एक वर्ष में ही उतर गया।

एक बार स्वामीजी जिस दिन पुष्कर जाने वाले थे उसी दिन डॉ.. भम्भानीजी कुटिया पहुंच गये। श्री चन्द्र चांडवानी जी ने उनको बिठाया और कहा स्वामीजी आज जाने वाले हैं आपको मालूम है न। स्वामी जी आज किसी से नहीं मिलेंगे। तभी स्वामीजी ने चन्द्र को बुलाया और उनको चार पैकेट प्रसाद के दिये और कहा डॉ.क्टर साहब को दे दो और कहना चार, बेड़ा पार और वास्तव में उस दिन जो शंका लेकर डॉ.क्टर साहब गये थे उससे उनको मुक्ति मिल गई।

एक बार स्वामीजी आरोग्य केन्द्र आये थे। डॉ.क्टर साहब का घर भी पास में ही था। वे अपने बच्चों को लेकर गईं स्वामी जी के दर्शन करवाने के लिये। उन दिनों उनकी कार भी चोरी हो गई थी। स्वामीजी ने धीरज को बुलाया पूछा तुम्हें कार चाहिये, उसने बोला हां। कार लेकर उसमें मुझे बिठाओगे धीरज ने फिर बोला हां और थोड़ी देर में कार ले ली गई।

एक बार सेवा सदन में डॉ.. खेमचन्दानी और डॉ.. भम्भानी साथ में खड़े थे। स्वामी जी ने डॉ.क्टर साहब से पूछा आपमें से बड़ा डॉ.क्टर कौन? सुरेश जी ने बोला में तो प्राइवेट डॉ.क्टर हूं, इस लिये खेमचंदानी बड़े डॉ.क्टर और में छोटा। वहीं पर धीरज भी

खड़ा था स्वामीजी ने कहा धीरज बड़ा डॉ.क्टर। बात आई गई हो गई। धीरज का मन मेकेनिकल इंजीनियर बनने का था।

उन्होंने बताया डॉ.. भम्भानी के पिताजी को हार्टब्लाकेज की समस्या हुई। उनको देहली ले गये डॉ.क्टरों ने बताया उनकी नसें 90 प्रतिशत ब्लाक हैं। बायपास करवाना पड़ेगा। मगर पिताजी तैयार नहीं हुए तब स्वामीजी को फोन किया गया तो उन्होंने कहा एंजियोप्लास्टी करवा लो। मगर डॉ.क्टर मानने को तैयार नहीं थे। एक टाइम पर अधिकतम तीन ही एंजियोप्लास्ट हो सकते थे, मगर उन्होंने 4 बैलून डॉ.ले। एक शिफ्ट भी कर दिया। उसके बाद उनके पिताजी 25 वर्ष तक स्वस्थ्य रहे और उनको कोई पीड़ा भी नहीं हुई। स्वस्थ जीवन जिये।

उनके घर के भूमि पूजन के लिये स्वामीजी आये थे उन्होंने एक जगह मिट्टी उठाई होंठो में कुछ बुदबुदाया और कहा यहां बोर खुदवाना। वहां पर बोर खुदवाया गया और बहुत ही कम गहराई पर मीठे पानी का झरना फूट पडॉ.। पैसे आते गये और महल जैसा मकान बनकर तैयार हो गया। लोग हैरान थे कि इस जगह पर इतनी कम गहराई पर पानी कैसे आ गया।

एक बार डॉ.क्टर को स्लिप डिस्क की समस्या हो गई। किसी ने उनको सर्जरी करवाने की सलाह दी। मगर स्वामीजी ने उनको मिश्री देकर कहा खाओ और दौड़ लगाया करो और फिर बगैर सर्जरी के ही उनकी समस्या समाप्त हो गई।

उनकी क्लीनिक में जो भी आता है, वह ठीक हो जाता है। वे यह मानते हैं कि वे नहीं स्वयं संत जी उनकी क्लीनिक में विराजमान हैं इसीलिये बहुत से क्रिटीकल बीमारियों वाले मरीज भी उनके यहां से ठीक होकर जाते हैं। वे इसे संतों का चमत्कार मानते है।

एक बार स्वामीजी ने उनको कहा तुम्हें बेटी बनाऊं यां बहू। उन्होंने कहा आप तो मुझे बेटी बना लीजिये। तब स्वामी जी ने कहा नहीं, मैं बेटी बनाऊंगा तो तीज त्यौहार पर तुम्हें देना पड़ेगा और बहू बनाऊंगा तो मुझे बेटा भी मिल जायेगा और तुम बहू के नाते बना बनाकर मुझे खिलाओगी। तब मैंने कहा जैसी आपकी इच्छा।

स्वामी जी ने सुरेश जी को बताया आपने मुझे घोड़ी दी थी। सुरेश जी समझ नहीं पाये घर पर आकर पिताजी को बात बताई तो उनके पिताजी ने बताया उनके परदादा ने स्वामीजी के दादाजी को घोड़ी दी थी। उन दिनों कारें तो थी नहीं लोगों को सवारी के लिये घोड़ियां दान में देते थे। स्वामी जी ने उनको इस तरह उनके पूर्व जन्म का संकेत दे दिया था।

उनको लगता है आज भी स्वामीजी प्रकृति में विराजमान हैं। उनकी कुटिया का प्रसाद मुंह में डॉ.लते ही उनके विघ्न समाप्त हो जाते हैं। वे बताते हैं कि सिद्धभाऊ के मार्गदर्शन में बच्चों को अनाथ आश्रमों में ले जाते है। चिकित्सा शिविरों में ले जाते है, बच्चे सुसंस्कारित है; और क्या चाहिये। वे संत नगरी में आकर अपना जीवन सफल मानते हैं। कभी अनाथ आश्रम, कभी कोढ़ियों के, कभी सूरदासों के आश्रम में कभी गौशालाओं मे जाकर बच्चों का जन्म दिन मनाते है। उन्होंने बतया कि सिद्धभाऊ में भी अथाह शक्तियां है वे ऐसा महसूस करते हैं।

डॉ.. कांची जी ने बताया कि उनके चचेरे भाई को संतान नहीं हो रही थी। उन्होंने उसके लिये बाम्बे, मद्रास, देहली में बहुत इलाज करवाये लगभग 20 लाख रूपये खर्च किये। हर जगह से नकारात्मक रिपोर्ट आई। यह 20 वर्ष पहले की घटना है तब उन्होंने

किसी का बच्चा गोद लेने का कार्यक्रम बनाया मगर जिसने बच्चा देने के लिए हां की थी वह मुकर गई। तब उनसे कहा बोला भोपाल आये हो तो स्वामी जी की कुटिया पर माथा टेक कर जाओ। वे दोपहर 1 बजे के करीब आये और कुटिया के बाहर मन्नत का धागा बांध कर गये। उन्होंने मन्नत मानी कि उनको बेटा गोद मिल जाये और उन्हें संतान सुख भी प्राप्त हो। उनको बच्चा गोद मिल गया। तीन माह बाद वे उनके घर गई तो पता चला कि वे गर्भवती थीं। अनहोनी कैसे होनी में बदल गई वे आश्चर्य चकित रह गई।

प्रकृति की देन

श्री रमेश कुमार रायचंदानी
मुकेश इलैक्ट्रीकल्स, भोपाल।
मो. 8827585468

कभी कभी प्रकृति पता नहीं किस तरह अनजान लोगों को हमसे जोड़ देती है। जो भी हमसे मिलता है वह हमारे पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण मिलता है। ऐसा मैंने कहीं पर सुना या पढ़ा है। मेरे बेटे के साढ़ू भाई के पिताजी संयोग से भोपाल, दुबई से आये थे अपनी किसी व्यक्तिगत यात्रा पर श्री अशोक कुमार मूलचंदानी जी जो संयुक्त अरब अमीरात में व्यवसाय करते हैं। वैसे तो मूलतः वे नागपुर के निवासी है मगर उनका परिवार वहां पर हैं। उनके बेटे का भी दुबई में व्यवसाय है। मैं जब दुबई गया था वहां पर भी उनसे मुलाकात हुई थी। फिर एक बार उनके बेटे की शादी में नागपुर सपरिवार गया था। बड़े ही मृदुस्वभाव के हैं। उनके बेटे का नाम रोहित है जो अब मेरे बेटे के साढ़ू हैं।

जब श्री अशोक मूलचंदानी जी भोपाल आये तो मैंने उनको अपने घर पर आने का निमंत्रण दिया। उनके साथ ही श्री रमेश कुमार रायचंदानी जी भी घर पर आये थे। मेरा उनसे कोई भी परिचय नहीं था। श्री रमेश कुमार रायचन्दानी जी की अर्धागिनी के वे बड़े भाई थे उन्हीं के घर में रूके थे। प्रकृति ने उनको मुझसे मिलाकर बड़ा उपकार किया। आज मैं यह महसूस कर रहा हूं। प्रकृति आपकी सहायता करती है यदि आप नेकनियती से कोई कार्य कर रहे होते हैं। बगैर किसी स्वार्थ, बगेर किसी नाम की चाह के। यह मेरा अनुभव रहा है।

प्रकृति को भी अपने कार्य करवाने के लिये किसी देह की आवश्यकता होती है, परमात्मा उस देह में संकल्प पैदा करते हैं और प्रकृति उस संकलप को आगे बढ़ाने के लिये पगपग पर फूल बिखेरती रहती है।

आज जब श्री रमेश रायचंदानी जी से मैने स्वामीजी के बारे में बताने के लिये कहा तो उन्होंने बताया कि वे छः–सात साल की उम्र में अपने दोस्तों के साथ खेलने जाते थे। उन्होंने बताया उस समय बैरागढ़ में एक कच्ची टाकीज होती थी। वहां घूमने जाते थे। खजूर के पेड़ों से खजूर तोड़कर खाते थे खेलते खेलते पटरी पार कर, लाऊखेड़ी तक चले जाते थे। लौटते हुये झाड़ियों से झांक–झांक कर स्वामीजी का दर्शन करते थे। कभी हो जाता था, कभी नहीं। उस समय स्वामी जी भी नये नये संत नगरी में आये थे, उनके बहुत ही कम अनुयायी थे। 5–7 ही होंगे। उनमें उनके चाचा स्व. गैलाराम रायचंदानी, स्व. जुगतो नाई वगैरह प्रमुख थे। चाचाजी से, जुगतो नाई से, स्वामी जी की लीलाओं के बारे में सुनते थे।

एक बार दिल्ली से उनके मामा श्री मुरलीधर अंबानी आये हुये थे। उनकी स्वामी जी में अटूट श्रद्धा थी। वे स्वामी जी के लिये कुछ भेंट सोचकर आये थे। वे स्वामी जी के दर्शन करने को गये तो स्वामी जी ने उनको कहा अमुक सेवा कार्य चल रहा है। उसमें तुम्हारा योगदान चाहिये। मगर वे उतना सोच कर आये नहीं थे। उन्होंने पिताजी श्री स्व. प्रभदास रायचंदानी जी से कहा मुझे 10000 दस हज़ार रूपये उधार चाहिये मुझे दे दो। मैं देहली जाकर तुमको वापस भेज दूंगा। उस समय 10000 रू. का मतलब था आज का दस लाख रूपये। पिताजी सुनकर आश्चर्य चकित रह गये। बोले क्या करोगे 10000 रू. तो उन्होंने कहा स्वामी जी को समाज सेवा के लिये देना है। उन्होंने कहा इतना ज्यादा। उन्होंने कहा मैं जितना दूंगा उससे 100 गुना ज्यादा एक साल में कमा लूंगा ऐसा मेरा विश्वास है। पिताजी ने उसको 10000 रू दिये जो बाद में उन्होंने 2–3 दिन बाद ही वापस भेज दिये थे।

धीरे धीरे स्वामीजी की ख्याति और कार्य बढ़ते गये, बैरागढ़ संत हिरदाराम नगर बन गया। उनके आश्रम पर अनेक नेता आने लगे, श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा, श्री बाबूलाल गौर, श्री लालकृष्ण आडवानी, श्री नरेन्द्र मोदी इत्यादि। पक्ष–विपक्ष के सारे नेता। दूर दूर देशों तक और विदेशों तक उनकी ख्याति पहुंची। उनके समाज सेवा के कार्यों का विस्तार होता गया। रामधुनी सेवा से उनकी समाज सेवा शुरू हुई और उनकी सेवाओं का विस्तार होता गया। अनेक स्कूल, कालेज, पानी की समस्या, झुग्गियों का बैरागढ़ से विस्थापन इत्यादि ऐसे कार्य हैं जिन्होंने बैरागढ़ को अत्यन्त विकृत छबि से निकालकर ऐसा बना दिया कि उनके नाम से बैरागढ़ का नाम संत हिरदाराम नगर कर दिया गया। आज भी उनके सदाव्रत चल रहे हैं। उनको अफसोस है कि वे उनके संपर्क में बहुत कम रहे।

उनके पिताजी पहले इन्दौर कोर्ट में नौकरी करते थे। अभी उनको नोकरी किये हुए 10–15 दिन भी नहीं हुये थे कि किसी केस के पक्ष में फैसला आने के कारण लाभान्वित पक्ष के व्यक्ति ने उन्हें 100 रू की रिश्वत दी। उस समय उनकी तनख़्वाह 50–60 रू प्रति माह थी। यह 1953 की बात थी जब उनका जन्म हुआ था। उन्हें बहुत ही ग्लानि का अनुभव हुआ और दूसरे दिन से वे नौकरी पर गये ही नहीं और अजमेर में शिफ्ट हो गये। बाद में वे संत नगरी में आ गये थे।

उनके पिताजी पहले यहां पर लक्ष्मी टाकीज के मालिक स्व. श्री खियलदास लालचंदानी परिवार के पास नौकरी करते थे।

1975 में राज इलेक्ट्रीकल्स नाम से पीर गेट पर उनकी दुकान खुली। 1977 में मुकेश इलेक्ट्रीकल्स भारत टाकीज रोड पर जिस पर वे स्वयं बैठते हैं, 2000 में दूसरी शाखा खुली जिस पर श्री मुकेश रायचंदानी बैठते थे। 2016 में उनकी आई टी पार्क भोपाल में ग्रीन सरफर नाम से एल ई डी लाइट्स, डेकोरेटिव लाइट्स की फैक्ट्री खुली। उनके बेटों का डी बी मॉल में फूड जोन में रेस्टोरेंट भी चलता है। उनकी तरह ही उनके बेटे मनीष एवं धीरज भी बड़े ही सौम्य, मेहनती हैं और अपनी योग्यता से इंडस्ट्री को ऊचाइयों में ले जा चुके है। देश के हर कोने में उनके उत्पादों की मांग है।

कभी उनको अपने यहां पर कर्मचारियों की आवश्यकता होती है, या बगैर पूछे भी किसी को उनके पास भेज देता हूं तो उनको रोजगार पर रख लेते है।

उनको मुझ पर, भरोसा है, यह उनकी मेरे ऊपर मेहरबानी है। प्रभू उनको हमेशा खुश रखे।

दिशा ज्ञान

श्री भगवानदास मूलचंदानी
संत हिरदाराम नगर भोपाल म.प्र.
मो. 7898830073

भगवानदास मूलचंदानी से मेरा पूर्व परिचय बिल्कुल नहीं था, उनका जिक्र श्री लोकेश चांदवानी ने मुझसे किया था कि वे गौ सेवा से जुड़े हुए हैं और वे स्वामीजी के काफी नजदीकी रहे हैं। आप उनसे जरूर मिलियेगा। एक बार उनसे पहले भी बात करने की कोशिश की मगर वे अपने स्वास्थ्य के कारण परेशान थे तो उन्होंने उस समय बात नहीं की। आज जब मैं प्रातः कालीन भ्रमण पर था तो वे रास्ते में मिल गये और उनसे आग्रह किया तो वोले दस मिनट बाद बात करते है। मैने इंतजार करना ठीक समझा और उनका इंतजार करता रहा। वे 10–15 मिनट बाद आये। सार्वजनिक स्थान पर मैने उनसे बात करना उचित नहीं समझा और पास में बने उनके घर पर चल कर बात कर सकने की संभावना के बारे में उनसे पूछा तो वे सहर्ष तैयार हो गये। 15 मिनट की दूरी पर ही उनका घर था। पैदल ही उनके घर पहुंचे।

बात शुरू हुई। उन्होंने बताया कि, एक दिन वे संतजी की कुटिया पर काम कर रहे थे शाम के साढ़े सात बज गये थे घर जाने की सोच ही रहा था कि स्वामीजी ने मुझे बुलाया और पूछा कि तुम्हें कितना दिशा ज्ञान है? उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम को कैसे पहचानोगे? मुझे वास्तव में दिशा ज्ञान बिलकुल नहीं था। मैंने उनको जो बताया वो सब गलत निकला। तब उन्होंने एक सेवक को आज्ञा दी जाओ इसको पीछे साइड ले जाओ और इसको दिशाओं के बारे में अच्छी तरह समझाओ और जब तक इसे समझ में नहीं आये तब तक जाने मत देना। उनको बड़ा ही अजीब लगा कि आज जब में घर जाने की सोच रहा हूं तो इस समय स्वामीजी क्यों मेरे को दिशा ज्ञान करवाने के पीछे पड़े हैं। मन में खीझ भी उत्पन्न हो रही थी, मगर स्वामीजी की आज्ञा का उल्लंघन भी तो नहीं कर सकता था। लगभग 30–40 मिनट तक मुझे दिशा ज्ञान करवाया गया और जब उनको लगा कि अब में दिशा ज्ञान में पारंगत हो गया हूं तो उन्होंने घर जाने दिया। वे घर सोचते हुए जा रहे थे स्वामीजी बगैर किसी कारण कोई काम करते नहीं हैं, जरूर इस में भी मेरी कोई भलाई होगी। सोचते सोचते वे घर पहुंच गये। दूसरे दिन अदालत में उनकी पेशी थी। उनकी कार से एक्सीडेंट हो गया था। वे कोर्ट में पहुंच गये। जज साहब आये, जिरह शुरू हुई। जज साहब ने एक ही प्रश्न पूछा। उन्होंने पूछा कि तुम किस दिशा से आ रहे थे, जब कार चला रहे थे। मैने उनको उत्तर दिया माननीय मैं पूर्व दिशा से आ रहा था। मेरा उत्तर सुनते ही न्यायाधीश ने मुझे उस कार दुर्घटना के आरोप से दोष मुक्त करते हुए बाइज्जत बरी कर दिया। कार दुघर्टना वाली बात मेरे अलावा किसी को भी पता नहीं थी, न दोस्तों को, न घर वालों को, नहीं न्यायालय में हुई अपील के बारे में। स्वामीजी को तो पता ही नहीं था।

उनकी मुख्य सड़क पर प्रापर्टी थी। पहले वहां चक्की थी, फिर दाल मिल बनवाई मगर सफल नहीं हो सकी। वे प्रापर्टी को बेचना चाहते थे। बात चल रही थी साढ़े तीन लाख में बेचने को तैयार हो गये थे। मगर स्वामीजी ने कहा इसे बेचो मत, यह प्रापर्टी आपके घर में बोरे भर भर कर लक्ष्मी को लायेगी। उन्होंने स्वामीजी की बात को माना और आज उनकी बात सत्य साबित हुई है। दो भाइयों का परिवार संपन्नता के नये

आयाम स्थापित कर रहा है।

इनके पिता श्री चोइथराम जी पहले इन्दौर में रहते थे मगर बाद में संत नगरी में आ गये थे। स्वामी जी से इन्दौर में ही परिचय हुआ था। उन्होंने बड़े सेठ बनने का आशीर्वाद दिया था।

बरसात के मौसम में उनकी शादी होनी थी। नया नया मैरिज गार्डन शुरू हुआ था उसमें विवाह होना था, स्वामी जी इस विवाह में आये थे। उस दिन आसपास के इलाकों में भारी बारिश हुई थी, मगर सुन्दरवन नर्सरी में एक बूंद भी पानी नहीं बरसा था।

स्वामी जी काले कपड़ों को घर में पहनने के लिये सबको मना करते थे। उन्होंने एक बार उनसे कहा घर में जाकर देखो काले कपड़े हैं क्या? उन्होंने अपनी अर्धांगिनी को यह बात बताई उन्होंने ढूंढा एक कपड़ा ही मिला। स्वामी जी को बताया उन्होंने कहा नहीं और भी कपड़े हैं। रोज रोज एक निकलता गया। चार दिन में चार कपड़े निकले तब स्वामी जी ने कहा हां अब कोई कपड़ा बाकी नहीं है। इन कपड़ों को जला दो, किसी को देना भी मत। ये कपड़े दोगे किसी को तो भी उस पाप के दोषी आप होंगे।

हम बच्चे थे अक्सर हमसे गल्तियां हो जाती थीं, ग़लती हो गई तो हम अपने दिल ही दिल में ग़लती को स्वीकार कर माफी मांग लेते थे मगर ग़लती हो गई और हमने खुद अपने आपसे माफी नहीं मांगी तो स्वामीजी को पता पड़ जाता था। वे हमें बुलाते, हमारी ग़लती बताते और हमसे लिखित में माफी मंगवाते थे। हमारे मन में बहुत सी कामनाये जन्म लेती थीं स्वामीजी हमारी भावनाओं को अपने आप ही समझ जाते थे। और हमारी कामनायें उनके आशीर्वाद से हमेशा पूर्ण हो जाती थी। ग़लती होने पर स्वामी जी डंडों. से पीटते भी थे। अनेक बार उनकी पिटाई भी हुई थी स्वामीजी के द्वारा।

सुखमनी साहिब की महिमा

डॉ.. नरेश वासवानी

संत हिरदाराम नगर, मो. 9303103976

यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं संत शिरोमणि हिरदाराम साहिब जी के नगर में रहकर भी कभी उनके पास नहीं गया। परन्तु मुझे याद है संत जी के परम शिष्य स्व. रोचीराम जी के मेरे पिंताजी स्व. दौलतराम से अच्छे सम्बन्ध थे। वे अक्सर पिताजी से मिलने आते थे। सरल स्वभाव के धनी स्व. रोचीराम जी ने पिताजी से आग्रह किया कि आप सुखमनी साहिब जी का पाठ साहिब करवाया करो। तब पिताजी ने पूछा ठीक है, उसके लिये क्या करना होगा। स्व.रोचीराम जी ने कहा कुछ नहीं बस इतना ही कहा कि मैं डॉ.यरी में नोट कर देता हूं। जब भी तारीख खाली होगी हम आपको खबर कर देंगे आप बस कड़ांइ प्रसाद की व्यवस्था करना। बाकी हमारी टीम आएगी वो सुखमनी पाठ साहिब करेगी। पिताजी ने कहा ठीक है। तब स्व.रोचीराम जी ने कहा सुखमनी साहिब का पाठ साहिब सुबह सुबह ही होगा। कुछ ही सप्ताह बाद रोचीराम जी ने पिताजी को बोला कल रविवार है और सुबह आपके घर में सुखमनी साहिब का पाठ साहिब करना है। आप बस फूल मंगाकर और कड़ांइ प्रसाद बना कर रखना।

हमारे पिताजी ने हमें बुलाया। वे बहुत खुश थे उन्होंने कहा कल संत शिरोमणी हिरदाराम साहिब जी के सेवाधारी हमारे घर में सुखमनी साहिब का पाठ साहिब करने आ

रहे हैं। उसकी व्यवस्था करनी है। उन्होंने हमारी माताजी से कहा कड़ांइ प्रसाद शुद्ध घी में बनाना कल सुखमनी साहिब का पाठ साहिब हमारे घर पर संत जी के सेवाधारी करने आ रहे हैं। तब हमारी माताजी ने मुझे कहा कि तुम सभी रिश्तेदार, चाचा, भाईयों, व ननिहाल में न्यौता देकर आओ, कल सुबह हमारे घर में संत जी के सेवाधारियों द्वारा सुखमनी साहिब का पाठ साहिब किया जाएगा आप जरूर आवें। रात में पिताजी ने घर के एक कमरे के कोने में लकड़ियों से छोटा सा मंदिर बनाकर उसे साड़ी व दुपटों से तथा फूलों से सजा कर तैयार किया। वो पहली बार था कि सारी रात हम जागकर घर के कमरे को सजाने में लगे रहे। फूलों व आम के पत्तों से सजाया।

सुबह के करीब 6 बजे साई वल्लर भाई साहब व उनके सुपुत्र नारायण भाई साहब दादा रोचीराम जी तथा तीन चार सेवाधारी साथ में आये और कमरे की सजावट को देखकर वल्लर भाई साहब बहुत खुश हुए उन्होंने पिताजी को इस नेक कार्य के लिये ढेर सारा आशीर्वाद भी दिया।

सुखमनी साहिब का पाठ साहिब समाप्त हुआ। पिताजी ने सबके लिए नाश्ता तैयार करवा रखा था उन्हें नाश्ता करवाया और अति प्रसन्न होकर सेवाधारियों को विदा किया।

तब से हमारे घर की सारी बाधाएं दूर हो गई बरकत होने लगी। हमने अपनी फ्रिज,मोटर वाइडिंग और अलमारियों की रिपेयरिंग की दुकान खोली जो खूब चलने लगी, पूरे शहर में नाम था। अब यह प्रसंग हर साल घर पर होने लगा। स्व. दादा रोचीराम जी के परलोक सिधारने के पश्चात एक दो बार ही सुखमनी साहिब का पाठ साहिब हुआ फिर बन्द हो गया।

आज भी मुझे वो दिन अच्छी तरह से याद है यह लगभग सन् 1989–90 की बात है। मैं उस समय पिताजी के साथ गांव–गांव में ट्यूब–वैल की मोटर फिटिंग के लिए जाता था और सुबह करीब 7 बजे हम निकल जाते थे और दोपहर या शाम के समय वापस आ जाते थे। उस दिन भी हम काम से निकल ही रहे थे कि संत जी के सेवाधारी श्री कन्हैयालाल पारवानी जी ने दरवाजे पर दस्तक दिया। पिताजी ने झांक कर देखा जाली से श्री कन्हैयालाल पारवानी जी थे, पारवानी जी को देख करके उनके मुंह से निकल गया अरे इसको भी अभी आना था। तब तक मैने दरवाजा खोला पारवानी जी अन्दर आए और पिताजी को बोला दौलतराम जी आज कुटिया में आपको साईं संत हिरदाराम साहिब जी का काम करना है, वो भी सब काम छोड़कर! पिताजी ने भी अनायास ही कह दिया चलो। उस दिन हम अपना काम छोड़ कर संत जी के काम में बिना समय गंवाये लग गए।

यह जानकारी पिताजी को पहले से ही थी कि कुटिया में लगे कूंए की मोटर खराब हो गई है और कई लोग उसे सुधारने के लिए करीब एक हफ्ते से लगे हुए हैं। पिताजी ने पहले वाला सामान (टूल्स) वाले बैग में से निकाल कर दूसरा सामान भरा। और पारवानी जी से कहा चलो। दादा पारवानी जी ने अपनी साइकल पर दादा से सामान वाला झोला लेकर रखा परन्तु पिताजी ने झोला साइकल से उतारा और कहा हम मोटर साईकल से आ रहे हैं। आप साइकल यहां खड़ी करो साथ में चलते हैं। परन्तु पारवानी जी नहीं माने वे अपनी साइकल से कुटिया पहुंचे और हम भी मोटर साइकल से कुटिया पहुंचे। तब संत जी कुटिया में टहल रहे थे। हमारे पहुंचते ही वे जोर से चिलाए दौलो (दौलतराम) आ गया अब देखो कैसे मोटर नहीं सुधरती लोग जानते कुछ नहीं और

हमारा इतना वक्त भी बरबाद कर दिया। देखो अब कुछ ही समय में मोटर कैसे पानी दे–देगी।

संत जी ने पहले हमें बिठाया मिश्री का प्रसाद खिलाया और बाद में हम अपने काम से लग गए। अभी हम काम कर ही रहे थे करीब आधा घंटा ही हुआ था कि संत जी हमारे साथ में आकर कुर्सी पर बैठ गए। हम अपना काम कर रहे थे इधर संत जी पास में बैठे हमारे काम को देख रहे थे। थोड़ी देर बाद संत जी वहां से चले गए। हमें करीब दो घंटे लगे होंगे काम करके पूरा किया ही था कि संत जी फिर से हमारे पास आए और कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने हमें सामान समेटते देखा तब संतो ने हनूमान से कहा देखा मैने कहा था न कि अब थोड़े ही समय में मोटर चालू हो जाएगी दौले के हाथ में जादू है। पर यहां के लोग समझते ही नहीं। इधर उधर भटकते हैं।

पिताजी ने हनूमान को बोला बेटा मोटर का बटन दबाओ। हनूमान ने मोटर का बटन दबाया और कूंए से पानी निकलने लगा। सांई जी बहुत खुश हुए।

हमें सांई जी ने बिठाया, प्रसाद दिया और, पिताजी से कहा दौला तुम्हारा ये बेटा मुझे दे दो, मैं इसकी शादी करवाऊंगा। परन्तु पुत्र मोह के कारण पिताजी ने संतों की बात को मजाक में टाल दिया। आज भी मैं अपना दुर्भाग्य समझता हूं कि संतो ने मुझे दान में मांगा और हमारे पिताजी ने नहीं दिया। परिणाम स्वरूप आज हमारे ऊपर विपदाओं के बादल छाए हुए हैं।

कब होगी संतों की मेहर शायद मेरी पीढ़ी तक तो संभव नहीं लगता कि ऐसा कोई चमत्कार होगा। परन्तु संतों की दूरदृष्टि देखिये उन्होंने पिताजी को कहा था दौला तुम्हारा ये बेटा तुमसे ज्यादा नाम कमाएगा वो सच साबित हुई। आज मेरा नाम देश के कई शहरों के सम्मानीय लोगों की जुबान पर है।

नारियल ने दिया जीवनदान

श्री कमल मनसुखानी
संत हिरदाराम नगर मो. 8120726006

मनसुखानी परिवार से मेरा संबंद्ध बचपन से था। मेरी नानी और उनकी दादी आपस में सगी बहनें थीं। दोनों के घर में 50 मीटर की ही दूरी थी। बचपन में मेरा ननिहाल में आना जाना लगा रहता था। मौसेरे भाइयों का घर था उनके घर भी यदा कदा मां के साथ जाना होता था। आज जैसे बर्फानी रिश्ते उस जमाने में नहीं होते थे। अपनापन होता था। कमल जी के बड़े भाई परिषद से जुड़े हुए थे। वे आर्थिक दृष्टि से भी संपन्न थे। उनके एक चाचाजी की दुकान गैरतगंज में थी। मेरी किशोर अवस्था भी गैरतगंज में गुजरी थी।

आज डॉ.. नरेश वासवानी जी, सम्पादक सिंधू प्रभात, का फोन आया कि आपने कमल मनसुखानी जी से संतों के बारे में बात नहीं की है। वे संतों के सान्निध्य में रहे हैं। उनके संस्मरण आपकी किताब में जरूर होने चाहिये। मैंने कमल जी को फोन लगाया तो उन्होंने बताया कि 15–20 दिन पहले उनको हार्ट अटैक आया था, बहुत घातक अटैक था मगर अब वे ठीक हैं। आप घर पर आइये तो बात करते हैं। उन्होंने 8 बजे का टाइम दिया। मैं निश्चित समय पर उनके घर गया। वास्तव में वे काफी कमजोर दिख रहे थे,

मगर उन्होंने दिल खोलकर स्वागत किया। इसके पूर्व शायद एक दो बार ही उनके घर गया होऊंगा अन्यथा घर के बाहर से ही, वे नहीं होते थे तो, उनकी सहधर्मिणी जिन में मुझे वात्सलय मयी बहन नजर आती थी, के पांव छूकर आ जाता था ढेर सारी दुआओं के साथ। उनसे बात शुरू हुई उन्होंने बताया।

उनकी शादी से 17 दिन पूर्व उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई थी। 10 दिन पहले से खराब चल रही थी, मगर 17 दिन पहले तो हालत खराब होती गई। पीलिया हो गया था। मैं कुटिया जाता था, मेरे बड़े भाई गोबिंद जी भी जाते थे। जब बहुत दिनों से कमलजी कुटिया नहीं गये तो गोबिन्द जी से संत जी ने पूछा कमल आजकल कुटिया क्यों नहीं आ रहा और आप इतने मायूस क्यों दिख रहे हो? तब गोबिन्द जी ने स्वामीजी को बताया कमल की तबीयत बहुत खराब है। कमल की शादी 17 दिन बाद होनी है, साथ साथ दो बहनों की शादी भी है। बच्चों का जनेऊ संस्कार भी होना है। कमल उठने की हालात में नहीं है, लग रहा है शादी कैंसिल करनी पड़ेगी। तब स्वामी जी ने कहा कमल को किसी तरह कुटिया लेकर आओ। कमल को जैसे तैसे कुटिया में गोदी में उठाकर स्वामीजी के पास बिठाया। स्वामीजी ने उनको जोर से डॉ.टते हुए कहा सीधे होकर बैठो और डिब्बे में से अपने हाथ से मिश्री का प्रसाद निकाल कर उनको खाने के लिए अपने हाथों से दिया। उनमें पता नहीं कहां से शक्ति आ गई। मुट्ठी भर प्रसाद खाने लगे। उनके गले से पानी ही नहीं उतरता था और उन्होंने मिश्री खाई। स्वामीजी ने कहा 'खाधी मिश्री दुःख वियो विसिरी' (मिश्री खाकर दुःख बिसर जाई) उस दिन से उनकी तबीयत ठीक होने लगी। घर आते से ही वे टेक लगाकर बैठ गये। नाश्ता किया। ठीक समय पर उनकी शादी हुई। स्वामी जी ने आशीर्वाद की पखर (कपड़े का हार उत्तरीय) उनको भेजा था, जो उनके गले में डॉ.ला गया। श्री होतचंद धनवानी (सिद्धभाऊ) शादी में आये थे। शादी के पूर्व स्वामी जी ने उनके परिवार से 3 वचन लिये।

1. शादी के बाद मजलिस (शादी के बाद भाई–बंधु व ननिहाल का भोजन) मत करना, उसमें जो खर्च होता है (उस समय सात–आठ हजार होता था) उससे शासकीय बालक उ.मा.विद्यालय संत हिरदाराम नगर में बच्चों के लिये कमरा बनवाना।
2. दोनों भाई जीवन भर मांस मच्छी और शराब का सेवन मत करना।
3. कमल विवाह के पश्चात एक माह बाद ही गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करे। तब तक वह ब्रह्माचर्य आश्रम में ही रहे।

उन्होंने स्वामी जी की तीनों बातें मानी विवाह के पन्द्रह दिन बाद ही स्कूल में दो कमरों का निर्माण करवाया। नौ हजार के करीब खर्चा आया। स्वामीजी स्वयं देखने आये उन्होंने पूछा ये कमरे किसने बनवाये है सब ने कहा कमल ने। स्वामीजी ने फिर पूछा फिर सबने कहा, कमल ने स्वामीजी ने कहा ठेकेदार कौन है तो सबने कहा कमल हैं तो उन्होंने आशीर्वाद दिया तुम बहुत बड़े ठेकेदार बनोगे। उस समय कमलजी की कपड़े की दुकान थी। आज से 35–36 साल पहले की बात है। उस समय उनकी दैनिक बिक्री एक लाख से ज्यादा थी। मगर धीरे धीरे उनका रूझान ठेकेदारी में बढ़ता गया और दुकानदारी में घटता गया। अब वे सिर्फ ठेकेदारी ही करते हैं। उनका विवाह 8 दिसंबर 1988 को हुआ था।

उन्होंने अन्य विवरण में बताया कि वे बाम्बे गये थे तो स्वामी जी का संदेश आया वहां से पानी वाले कच्चे नारियल लेकर आना। उन्होंने 15 नारियल खरीदे। बोरा भर कर

जब बस में पहुंचे जिसमें हमारी टिकट बुक थी बैठने लगे तो बोरा देखकर बस वाले ने बिठाने से मना कर दिया तब उन्हें दुःख हुआ और बाद में दूसरी बस से आये। बाद में पता चला कि जिस बस वाले ने बिठाने से मना किया था, वह बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी और उसमें 16 यात्रियों का दुःखद निधन हो गया था।

स्वामी जी उनकी शादी के दूसरे दिन उनके घर पधारे थे और लगभग 90 मिनट तक वे वहां पर रहे ऐसी थी उनकी हमारे परिवार पर कृपादृष्टि। कमल जी ने बताया वे सर्दियों में जरूरतमंदों को स्वेटर, गर्मियों में चप्पल, अनैक मोकों पर लोगों को राशन का वितरण करते हैं।

सुख चाहो तो दुःख मत दो

श्री नारायण साधवानी
ट्रस्टी स्वामी शांति प्रकाश आश्रम,
संत हिरदाराम नगर मो. 7389855000

श्री नारायण साधवानी जी से मेरा परिचय 1992 में हुआ। जब देश बाबरी विध्वंस के बाद सांप्रदायिकता की आग में झुलस रहा था। भोपाल भी उससे अछूता नहीं था। मगर संत नगरी में परिस्थितियां सामान्य थीं। लोग शहर छोड़कर संत नगरी में आकर आश्रय लिये हुए थे जिसकी व्यवस्थाए ए.टी. शहानी स्कूल में की गई थी। उस समय स्वामी जी द्वारा अन्नक्षेत्र चल ही रहा था, मगर साथ ही साथ निर्धन परिवारों तक राशन पहुंचाने की जिम्मेदारी मुझे श्री नारायण साधवानी जी के साथ दी गई थी। यह मेरा शायद उनसे पहला परिचय था। जब मैं उनसे मिलने गया तो उनसे वार्तालाप में 53 मिनट कैसे बीत गये पता ही नहीं पड़ा।

वे संत जी के सेवा कार्यो से 1988 से जुड़े थे जब उनकी उम्र 30 वर्ष के आसपास थी। इसके पूर्व उनका परिवार संतों के प्रति समर्पित रूप से सेवा कार्यों से जुड़ा था। उनके पिताजी और चार चाचाओं का परिवार संतों से जुड़ा था। इनके पिताजी श्री अर्जुनदास एवं चाचा धर्मदास, लीलाराम जी, गेहीमल जी, भावनदास जी सब स्वामी जी से जुड़े थे।

1988 में संत नगरी में एक ही विदेशी कार थी जो उनके पास थी। स्वामीजी को कहीं आना जाना होता था तो वे अपनी कार में ही उनको ले जाते थे। स्वामी जी अजमेंर जाते थे तो उनको इन्दौर तक अपनी कार में ही लेकर जाते थे और जब वे अजमेर से आते थे तो वे उनको इन्दौर से लेकर आते थे। नारायण साधवानी जी मंच से दूर रहते हैं। उनका मानना है कि हम किसी को अनुकूल नहीं लगते हैं तो अपने आपको ज़बरदस्ती फिट करने का प्रयास न करें। न किसी पर आक्षेप करें, न किसी से अपेक्षा करें। हम अपने आपको ही सुधारें। सेवा करने वाले कहीं भी सेवा कर सकते हैं, हम अशांत रहकर सेवा नहीं कर सकते।

हम तन से, मनसे या धन से किसी भी तरीके से सेवा कर सकते हैं। तन की सेवा नहीं तो मन की सेवा करें, यदि मन से नहीं संभव तो धन से सेवा कर सकते हैं। सेवा में यह भाव होना चाहिये तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा। प्रभू की रजा में राज़ी रहें।

उन्होंने एक वृतांत में बताया कि एक नगर सेठ किसी सन्यासी के पास गया। वह

बहुत चिंतित था कि मेरे पास जो धन है मेरी मृत्यु के बाद उसका कैसे उपयोग कर सकता हूं। सन्यासी ने उसको कहा 75 प्रतिशत दान कर दो। 25 प्रतिशत को कहीं पर भी दया धर्म के कामों में दान दिया जाये तो निश्चित ही यह धन तुम्हारे मरने के बाद भी तुम्हारे साथ जायेगा। उन्होंने बताया कि कार्य ऐसे करें कि आगे भी लोग उससे लाभान्वित होते रहें। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया स्वामीजी ने जो बैरागढ़ में और आसपास पानी की व्यवस्था की है आज हजारों लोग उससे लाभान्वित हो रहे हैं। कितनी दूर की सोच थी उनकी। कितनी तृप्त आत्माओं से आशीर्वाद के शब्द निकलते होंगे।

उन्होंने बताया संत नगरी में स्वामी जी के प्रकल्पों को लेकर 40 संस्थायें काम कर रही हैं। अस्पताल, कालेज, पंचायतें, सेवासदन, स्कूलों से कितने लाभान्वित हो रहे है। यह सभी सेवाएं या तो निःशुल्क हैं या फिर नाममात्र शुल्क लेते है। हमें किसी की भी आलोचना नहीं करनी चाहिये। प्रबंधन करने वालों को संस्थाओं को चलाने के लिये कुछ कड़े नियम भी बनाने पड़ते हैं।

उन्होंने बताया कि उनमें सब प्रकार के विकार थे। दोस्तों की टीम थी, रोज शराब, कबाब के दौर चलते थे। उनके घर की अलमारी शराब के अनेक ब्रांडों. से भरी रहती थी। श्री दयाल आशाजी ने एक बार संतों को बताया कि साधवानी जी में बहुत विकार है इसे रोकिये। स्वामी जी हंसकर बोले अभी समय नहीं है। जब समय आयेगा यह खुद छोड़ देगा। फिर 12 फरवरी 2008 को वह दिन आ गया जब स्वामी देवप्रकाश जी ने उनको नाम दान दिया। उस दिन से उनका खाना–पीना सब छूट गया। उस दिन उन्होंने अपने दोस्तों को घर पर बुलाया और पार्टी की सब शराब खत्म कर दी मगर उन्होंने नहीं पी। उन्होंने बताया सब संतो में एक ही ज्योति होती है। चाहे स्वामी हिरदाराम साहिब जी हों या स्वामी देव प्रकाश जी।

उन्होंने बताया अपनी तारीफ से बचो। तारीफ में उलझोगे तो सेवा के फल नष्ट हो जायेंगे। संतो के दर पर माथा टेकने से भाग्य की लकीरें बदल जाती हैं। उनके द्वारा सिंधी सेवा ट्रस्ट की स्थापना की गई। जिसके लिये एक शान्ति वाहन और शव को सुरक्षित रखने के लिये फ्रिजर की पेटीयां बनवाई गई जिससे बैरागढ़ के लोगों को शव यात्रा, पगड़ी रस्म, इत्यादि की सुविधायें दी गई। श्री तेजूमल धनवानी जी एवं उन्होंने पहला दान अपनी तरफ से दिया था। आज उसकी आफिस बन गई है। सब कुछ देखते ही देखते हो गया। उनकी दो बेटियां इन्दौर में विवाहित हैं और बेटे की भी शादी हो गई है। उन्होंने बताया अनेक लोग समाज सेवियों की शिकायत लेकर स्वामी जी के पास आते थे तो स्वामी जी उनको कहते थे ठीक है मैं उनको अलग कर देता हूं आप सेवा करोगे? तो शिकायत करने वाले अपना सा मुंह लेकर चले जाते थे। उन्होंने बताया ट्रस्टी लोग जो दानदाता आते हैं उनके सम्मान में पलक पांवड़े बिछा देते हैं। किसी से दान करवाना इतना सरल नहीं होता। उन्होंने बताया स्वामी जी का मंत्र था 'सेवा एवं सिमरण' और स्वामी शांति प्रकाश का मंत्र है – **'भोजन और भजन'** उन्होंने बताया कि दयाल आशा जी जो आज 80+ के हैं। कल्याण के आसपास 700 से ज्यादा सूरदासों के लिये राशन व्यवस्था, बगैर जाति–धर्म के भेद भाव के, माताओं की सेवा, बच्चों की सेवा करते हैं। किसी की निंदा न करें। और अगर कोई निंदा हमारी करता है तो कबीर दास का दोहा याद रखें – **'निंदक नियारे राखिये, आंगन कुटी छवाय।' निंदा सही की है तो हम स्वयं को सुधारै।**

सो दुःख कैसा पावे

श्रीमती गुड्डी सुरेन्द्र भाग्या
यूनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिका
मो. 001757–6527009

भाग्या परिवार के मोहन भाग्या जी, मुकेश भाग्या जी के बारे में और परिवार के बारे में मैं पहले ही वर्णन कर चुका हूं। उनके दो भाई सुरेन्द्र भाग्या जी एवं हरीश भाग्या जी यूएसए में रहते हैं। सुरेन्द्र भाग्या जी एवं उनकी सहधर्मिणी गुड्डी भाग्या जी से मेरी वीडियो काल, आडियों काल पर बात हुई और उनसे मुझे 8 मिनट की एक वाइस रिकार्डिंग मिली जिसे मैं आपके सामने रखने का प्रयास कर रहा हूं।

उन्होंने बताया उनकी बेटी गीतू 11 वर्ष की थी। जब वह स्वामी जी से मिली तो स्वामी जी ने उसको कहा तुम आंखों की सर्जन बनना। 11 वर्ष की बेटी को ज्यादा समझ में तो नहीं आया मगर स्वामी जी ने उससे मैं बड़ी होकर आई सर्जन बनूंगी कहकर 3 बार दोहरवाया। गीतू का रुझान उस क्षेत्र में था ही नहीं मगर आज वह आंखों की सर्जन ही है।

दूसरी घटना में उन्होंने बताया कि गीतू की शादी होनी थी। उसकी शादी की तैयारियों के संदर्भ में भारत वर्ष आये हुए थे। सुरेन्द्र जी तब दुबई में व्यवसाय करते थे। जब वे यहां से सामान वगैरह खरीदकर वाशिंगटन पहुंचे तो बहुत थके हुए थे। फिर भी गीतू के बहुत दबाव डॉ.लने पर सुरेंन्द्र जी मान गये और उससे मिलने गये। वह 3 घंटे की दूरी पर थी। वहाँ पहुँचकर गुड्डी जी खाना बनाने किचन में गई और सुरेन्द्र जी जाकर लेट गये। बस सुरेन्द्र जी की तबीयत खराब होना शुरू हो गई। उन्होंने घबरा कर गीतू को बताया कि वे उसी के शहर में आये हुये हैं। उन्होंने कहा सुरेन्द्र जी को तुरन्त एम्बुलेंस में लेकर जो भी नर्सिंग होम पास में हो वहां ले जाओ। एंबुलेंस आई और सुरेन्द्र जी को संयोग से उसी अस्पताल में ले जाया गया जहां पर गीतू कार्य करती थी। उनका आप्रेशन हुआ बेटी डॉ.क्टर थी तो वहां के डॉ.क्टरों ने भी सहयोग किया और वे ठीक होकर घर आये।

आज से 12 वर्ष पूर्व 2010 में सुरेन्द्र जी घर से कार लेकर काम से निकले डेढ़ घंटे की ड्राइव थी। हाईवे पर थे अचानक उनकी कार आगे जा रही कार से टकरा गई क्योंकि ट्रेफिक बहुत ज्यादा था तो पीछे आ रही कार ने भी सुरेन्द्र को टक्कर मार दी। कार पलट कर लुढ़कती हुई पास के गड्ढे में जाकर गिरी। कार की स्थिति देखकर यह अंदाजा था कि चालक का पता नहीं क्या हुआ होगा। उनको हेलीकाप्टर से हास्पीटल लाया गया। स्वामी जी का आशीर्वाद कहें या चमत्कार कहें कि सुरेन्द्र जी को खरोंच तक नहीं आई थी।

'जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावै।'

गुड्डी जी वहां पर डे स्कालर बच्चों का प्ले स्कूल भी चलाती हैं। वहां के नियमानुसार 12 बच्चे ही अधिकतम आ सकते है जो उनके घर में ही चलता हैं।

पद या आर्थिक दण्ड

श्री राकेश गोबिन्द मनसुखानी
संत हिरदाराम नगर मो. 9425009669

कमल मनसुखानी के घर बैठा ही था कि उनके भतीजे राकेश वहां पर आ गये। उन्होंने बताया कि उनपर शुरू से लक्ष्मी माता की असीम कृपा रही है। मगर 1989 से 1991 तक उनके व्यवसाय में बहुत से व्यवधान आये। उनके पिताजी श्री गोबिन्द मनसुखानी जी संतों की कुटिया गये। संतों ने उनको कहा अभी जाकर तुम आराम करो। कल बात करेंगे। दूसरे दिन स्वामी जी की कुटिया के दरबार में गोबिन्द जी गये, गुरूदर पर अरदास (प्रार्थना) की और फिर संतो के सामने गये। संतों ने कहा प्रभू सब भला करेंगे। जब कि उनके पिताजी ने उनको कुछ कहा ही नहीं था अब चाहो तो तुम घर जा सकते हो। पर यदि समय हो तो सात दिन तक यहीं पर रुको। सेवा करो। तब वे वहीं रुक गये और उन्होंने वहां सेवा की। उनके लौटते ही उनका व्यवसाय पहले से भी ज्यादा बढ़ गया जो आज तक भी बहुत ही अच्छा चल रहा है।

उन्होंने एक वृतांत में बताया कि 1991 में बाम्बे से एक सेठजी आये थे। स्वामी जी के लिये एक फीएट पदमिनी कार लेकर आये थें वह उन्होंने स्वामी जी को भेंट की। साथ में वे एक ड्राइवर भी लाये थे कि यह ड्राइवर आपके साथ रहेगा। इसका वेतन भी मैं ही दूंगा। स्वामी जी बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने कार को अपनी बाहों के हार पहनाये और सेठजी से पूछा सचमुच यह कार मेरी ही है ना। सेठ जी बोले जी आपकी ही है। बोले अब मैं जो चाहूं उस कार का करूं मालिक हूं तो मैं बेचना चाहता हूं। सेठजी ने कहा जी तब उस सेठ जी ने उस कार का 1,71,000 रू. देकर खरीद ली और कहा मै इस कार को हमेशा अपने पास ही रखूंगा। स्वामी जी ने वो पैसे सेवा सदन में एक मशीन खरीदने के लिये दान दे दिये। आज भी वे सेठजी सेवा सदन के ड्राइवर का वेतन भुगतान करते है।

उन्होंने बताया कि संत नगरी में इने गिने व्यक्ति हैं जिन्होंने किसी संस्था में कोई पद स्वीकार नहीं किया। उनमें स्व. किशनचंद चोटरानी, श्री लोकूमल आसवानी, स्व. दीपक चोटरानी और स्व. गोबिन्द मनसुखानी जी ने पद स्वीकार नहीं किया। उनके पिताजी को पद नहीं स्वीकार करने के कारण स्वामी जी के द्वारा उन पर तीन बार आर्थिक दण्ड भी लगाया गया था।

सेवा से जबलपुर बना तीर्थधाम

श्री विजय लखमीचन्द पुरसवानी
जबलपुर मो. 9302751182

सुख चाहो तो सुख दो, हरिओम, सतनाम
पूज्य स्वामीं हिरदाराम साहिबजी की जै

पूज्य स्वामीं हिरदाराम साहिबजी जबलपुर आते थे तो हमारे गलगला स्थित निवास पर ही रूकते थे, मैरे बड़े चाचा स्व. परसराम पुरसवानी एवं मैरे पिता स्व. लखमीचन्द पुरसवानी स्वामीं जी के परम् भक्त थे। समय बीतता गया, स्वामींजी की

ख़्याति धीरे–धीरे जबलपुर शहर में ही नहीं अपितु पूरे मध्यप्रदेश में फैलने लगी। यह स्वामीं जी के परोपकार एवं गरीबों की सेवा कार्यो की ख़्याति थी। उसका ही परिणाम धीरे–धीरे जबलपुर में भी उनके अनुयायी बढ़ने लगे।

उनके अनुयाइयों में एक नाम जबलपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं दीन दुखियों की सेवा करने वाले, समाज को साथ ले चलने वाले पापुलर ब्रेड फैक्ट्री के संस्थापक सेठ स्व. टेकचन्द केसवानी जी का नाम अग्रणी श्रेणी में गिना जाता है।

पूज्य स्वामी जी के जबलपुर आगमन पर स्व. टेकचन्द केसवानी जी के अनुरोध करने पर स्वामी जी एक–दो बार नेपियर टाउन स्थित उनके बंगले पर भी रुके थे। पूज्य स्वामी जी के आदेशानुसार बैरागढ़ की भांति जबलपुर में भी दीन दुखियों की (खासकर गरीबों एवं बूढ़ों की) सेवा कार्य के लिए (जैसे कि आंखों का आपरेशन एवं सम्पूर्ण इलाज) एक टीम बनाई गई उसमें प्रमुख रूप से स्व. परसराम पुरसवानी, एवं श्री लखमीचन्द पुरसवानी स्व. पारूमल रीझवानी, स्व. किशनचन्द रंगवानी, स्व. सखावतराय अन्दानी, स्व.घनश्यामदास असरानी (जो कि स्वंय डॉ.क्टर थे) स्व. श्रीचन्द लालवानी, स्व. हेमनदास भगवानदास बालानी एवं समाज के कई गणमान्य एवं बुजुर्गवार भी थे।

पूज्य स्वामी जी का एक स्लोगन था'

बुढा बार ऐं बीमार, आहिन परमेश्वर जा यार,
कयो दिल सां इन्हनि जी सेवा, पाइन्दव लोक परलोक में सुख अपार।

पूज्य स्वामी जी के इस ही उपदेश को कार्यरूप देने के लिए एवं पूज्य स्वामीं जी की प्रेरणा से जबलपुर में बैरागढ़ की डॉ.क्टर्स एवं अनुभवी सेवाधारियों की टीम के साथ पहला उसके बाद दूसरा–तीसरा नेत्र शिविर जबलपुर में ग्वारीघाट स्थित गुरूधाम (बाबा मोहनदास जी का आश्रम) में लगाया गया। उसके बाद घन्टाघर स्थित सिन्धी धर्मशाला में भी एक दो बार नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। बैरागढ़ एवं इन्दौर की डॉ.क्टर्स टीम एवं अनुभवी सेवाधारी टीम का सहयोग जबलपुर वासियों को शुरू से ही मिलता रहा है। अक्सर ठंड के मौसम में पूज्य स्वामी जी जबलपुर दीन दुखियों की सेवा का हाल–चाल लेने आते रहते थे।

एक बार पूज्य स्वामी जी के जबलपुर आगमन पर स्व. डॉ.. घनश्याम असरानी जी ने अपनी भावना प्रकट करते हुए स्वामी जी से कहा कि ग्वारीघाट में गुरूधाम के सामने मेरा बड़ा प्लाट है, मैं उसमें से कुछ हिस्सा नेत्र शिविर को अस्पताल बनाने के लिए देना चाहता हूं। एवं प्लाट की बाकी का हिस्सा आपके अन्य सेवाधारी ले लें जो सेवा कार्यो के लिए एक अच्छा स्थान बन सकता है– स्वामी जी को यह बात जंच गई उन्होनें यह बात शिष्यों (स्व. परसराम पुरसवानी, स्व. लखमीचन्द पुरसवानी, स्व. पारूमल रीझवानी, स्व. कन्हैयालाल ईसरानी, स्व. दुर्गादास खत्री एवं अन्य) से कही। सभी ने स्वामीं जी की यह बात सहर्ष स्वीकार की। इस तरह उस जमीन की रजिस्ट्री कर उस स्थान का नाम स्वामी जी के आदेशानुसार तीर्थधाम रखा गया एवं उस पवित्र भूमिपर नेचुरोपैथी की सेवा रोजाना चालू की गई। वहां पर साल में एक बार 16 जनवरी को नेत्र शिविर का आयोजन काफी समय तक किया गया। बाद में शिष्यों को यह लगा कि इतनी पवित्र भूमि पर सिर्फ साल में एक बार नेत्र शिविर का आयोजन हो रहा है बाकी सारा साल यह भूमि यूंही पड़ी रहती है। सो इस बात पर जबलपुर के सिन्धी समाज, शिविर के सेवाधारियों ने डॉ.क्टर्स टीम के साथ मीटिंग करके यह निर्णय लिया गया कि अब इस भूमि पर (तीर्थधाम) में (इतवार को छोड़कर) प्रतिदिन आखों की जांच होगी एवं आवश्यकता अनुसार सप्ताह में

दो–यां तीन दिन मरीजों का आपरेशन होगा।

इस प्रशन्सनीय कार्य की भूरी–भूरी प्रशन्सा सिर्फ जबलपुर शहर में ही नहीं पूरे महाकौशल क्षेत्र में होती है। सन् 2020 के कोविड के समय में वृद्धजनों एवं गम्भीर मरीजों को डॉ.यलेसिस उपचार कराने में बहुत ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ा इस भीषण त्रासदी से गुजरने के बाद तीर्थधाम सेवाधारी टीम ने यह निश्चय किया कि तीर्थधाम में आंखों के इलाज के अलावा दूसरी जरूरी सेवाएं जरूरतमन्दों को दे सकते हैं। यह विचार करते हुए फरवरी 2022 को पूज्य स्वामी जी के आशीर्वाद से पांच डॉ. यलेसिस मशीनें तीर्थधाम में पीड़ितों के लाभार्थ स्थापित की गई हैं। लाभार्थियों से इस सेवा का शुल्क नाम मात्र लिया जाता है।

सतनाम् - पूज्य स्वामी जी को चरण रज का सेवादारी

निर्मल मन के धनी स्वामीजी

श्री रमेश परसराम पुरसवानी
जबलपुर मो. 9893137444

मैं रमेश पुरसवानी आत्मज स्व. परसराम पुरसवानी जबलपुर में ही जन्मा जबलपुर में ही निवासरत हूँ। मेरे पिताजी व मेरे छोटे चाचा स्व. श्री लखमीचन्द जी दोनों ही संत हिरदाराम साहिब के परम शिष्य थे। मेरी ससुराल बैरागढ़ में ही सेठ साजनदास खूबचन्दानी (साजन चप्पल स्टोर एवं झूलेलाल बूट हाऊस वाले) के यहाँ है।

आज मैं 71 साल का हूँ। मैं जब लगभग 13–14 वर्ष का था, मुझे अच्छी तरह याद है कि संत जी जब भी जबलपुर आते थे हमारे घर पर ही रहते थे। उनका आना और हमारे यहां रुकना बहुत अच्छा लगता था। संतजी की प्रेरणा एवं कृपा से उस समय हर रविवार को सुबह 6 बजे सुखमनी साहिब का पाठ एवं हर सोमवार को रात्रि 8 बजे से 9 बजे तक रामधुनी (हरे राम, हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे) साल भर चलती रहती थी। उसमें संत जी के विशेष शिष्य स्व. सेठ सखावतराय, स्व. सेठ तूरियामल एवं स्व.सेठ हेमनदास हमारा पूरा परिवार एवं कई सेवाधारी निरंतर सेवा करते थे। यह नियम कई वर्षों तक अनवरत रूप से चलता रहा। कुछ वर्षों बाद वर्ष में एक बार पूरे महीने रामधुनी चलती थी लेकिन हमारे चाचा लखमीचन्द जी के स्वर्गवास के बाद बंद हो गई।

अपने अनुभव–

एक बार सन् 1985 के आसपास मैं और मेरी धर्मपत्नी संत जी के दर्शन करने कुटिया के लिए घर से निकले। रास्ते में एक हाथ ठेले पर सेवफल एकदम लाल बहुत ही अच्छी क्वालिटी के दिखे। मन में भाव आया कि यह संत जी के लिये लेते हैं। उनसे प्रार्थना करेंगे कि ये फल वही खाए। कुटिया में प्रवेश कर बगीचे मैं बैठे। पैकेट देखते ही संत जी ने सेवक को बुलाकर कहा रमेश से पैकेट ले लो, मेरी खटिया पर तकिये के पास रख दो ये मेरे लिये सेवफल लाए हैं।

ऐसे ही मैं एक बार सपरिवार कुटिया में बगीचे में बैठा था। बगीचे में 10–15 लोग और भी बैठे थे। संत जी आर्शीवचन दे रहे थे। अचानक सेवक को बुलाकर बोले आज मेरा मन है सबको मक्खन एवं लोला (मीठी कोकी) खिलाए। इतने में बाहर गेट खड़कने

की आवाज हुई। प्रवेश का समय बंद हो चुका था तो भी संत जी ने सेवक से कहा देखो कौन है। एक वृद्ध माता ने सफेद वस्त्रों में प्रवेश किया वे स्टील के डिब्बे देते हुए बोली यह प्रसाद मक्खन एवं लोला सबके लिए है। मेरी आँखों में आँसू आ गए–मन ही मन उनके चरणों मैं प्रणाम किया

जबलपुरवासियों से उनका विशेष स्नेह था, इसी वजह से उनकी हमारे ऊपर विशेष दया रही। उनके आशीर्वाद से ही आज यहां तीर्थधाम में सिन्धू नेत्रालय एवं प्राकृतिक चिकित्सालय एवं डॉ.यलेसिस सेन्टर विशाल रूप से चल रहा है।

पिताजी का सन् 1982 के आसपास दिल का बायपास आप्रेशन मुम्बई में हुआ। उस समय संत जी पुष्कर कुटिया में थे। पिताजी से स्नेह के कारण पिताजी को देखने एवं स्वास्थ्य लाभ का आशीर्वाद देने सिद्धभाऊ के साथ मुम्बई पहुँचे एवं आशीर्वाद दिया।

एक बार पिताजी बैरागढ़ शादी में गए हुए थे वहाँ अचानक ही उनकी तबियत बिगड़ी और कुछ दिन हास्पीटल में एडमिट होना पड़ा। छुट्टी होने पर जब पिताजी संत जी की कुटिया पहुँचे उन्हें कार से उतरने को मना किया एवं खुद संत जी गेट के पास खड़े होकर बहुत ज्यादा समय तक पिताजी से बातें करते रहे। इस वजह से बैरागढ़ की जनता को काफी समय तक संत जी के दर्शन का लाभ मिला।

सत्य बोलो और दमदार आवाज में बोलो

श्री श्रीचंद बालचंदानी
राजकोट (गुजरात) मो. 7600056190

कई दिनों से यह नाम सुन रहा था। राजकोट में दो भाई हैं श्री महेश बालचंदानी एवं श्री श्रीचंद बालचंदानी। दोनों स्वामीजी के अनन्य सेवक हैं। संत नगर के कन्हैयालाल रामनानी एवं लोकचंद जनियानी अपने व्यक्तिगत काम से गये थे एवं उनके घर रहकर आये है। मैने दो तीन बार उनको फोन पर स्वामी जी के बारे में संस्मरण भेजने को कहा। जब संस्मरण नहीं मिले तो स्वयं गुजरात का दौरा तय किया और एकता नगर, आदीपुर, गांधीधाम से होते हुये राजकोट आया। राजकोट में धर्मशाला में रूकने का मन था मगर धर्मशाला में रूम नहीं मिला मेरे बचपन के पड़ोसी श्री गोवर्धन वाधवानी जी को समस्या बताई तो वे आये और अपने घर ले गये। वहां से ही श्री श्रीचंद जी को फोन किया तो उन्होंने शाम को छः बजे घर आने को कहा, शाम को श्री गोवर्धन जी के साथ उनके घर गये। आलीशान घर था। उनसे मुलाकात हुई बार्तालाप शुरू हुआ।

उन्होंने 1944 से घटनाक्रम शुरू किया। उन्होंने बताया कि संतजी भिरियन के डिग्गी बाजार से पैदल जा रहे थे। उनके दादा स्व. चेतनदास जी ने उनको आवाज दी और कंधे से पकड़कते हुए बोले हिरदाराम चलो, मेरे घर चलते हैं। संत जी चल दिये। घर पहुंचकर चेतनदास जी ने बहू से कहा कि बहू संत जी आये हैं खाना बनाओ, संतजी को आम के साथ खाने को दो। उन्होंने खाना बनाया संतजी को खिलाया और फिर संतों से बोले स्वामीजी आशीर्वाद दो कि मेरी बहू को पुत्र रत्न की प्राप्ति हो। संतजी ने कहा यह तो खुशी की बात है पुत्र रत्न होगा तो हमें एक चेला मिल जायेगा। हमें ऐसे चेले तो चाहिये और चले गये। 22 दिसम्बर 1944 को बहू को बेटा हुआ और वह वे स्वयं थे जो उनके गर्भ से संतो के आशीर्वाद से अवतरित हुये थे। नाम रखा गया श्रीचंद।

12–13 वर्ष की अवस्था में उनका संतों से साक्षात्कार हुआ। उन्होंने पूछा गुरुवाणी में क्या क्या आता है। वे बोले जपुजी साहिब और आसा दी वार का पाठ करता हूँ। और क्या आता है? उन्होंने बताया वे कबीर, रहीम, सूरदास, तुलसीदास जी का साहित्य पढ़ते हैं। उस पर मनन भी करते हैं। उन्होंने स्वामीजी को शाह और स्वामी के साहित्य भी गाकर सुनाये। स्वामी जी सुनकर आत्मविभोर हो गये। वे बोले मेरे हृदय के अन्दर बहुत ही आनंद की हिलोरे उठ रही हैं; मगर यह तुम्हारी अपनी वाणी तो नहीं है। तो मैंने उनको कहा शुरुआत ऐसे ही तो होगी।

उन्होंने बताया कि 12–15 वर्ष की उम्र में जपुजी साहिब, 20 साल की उम्र आसा दी वार, 22 साल तक सुखमनी को कंठस्थ कर लिया था और 9वें महले के श्लोक तो सालों से उनके रग–रग में बसे हुए हैं। स्वामी जी अति प्रसन्न हुए और उनसे बोले आप मेरी कुटिया संभालोगे। उन्होंने उत्तर नहीं दिया तो बोले ठीक है, ठीक है मैं समझ गया। उनके उत्तर न देने के पीछे एक कारण था वे दूसरे किसी साधू के संपर्क में थे जो गृहस्थ थे। उन्होंने उनको कह रखा था कि गृहस्थ धर्म से उत्तम कोई धर्म नहीं होता। सन् 1952 से ही संतजी हर 4–5 साल के अंतराल पर राजकोट आते रहते थे और उनके घर पर ही रहते थे। वे तथा उनका परिवार स्वामी जी का भक्त था और स्वामी जी भी उनके परिवार को बहुत प्यार करते थे।

1996 में स्वामी जी ने उनसे पूछा यूरोलोजी कैम्प लगवाओगे? उन्होंने हां कहा! यूरोलोजी कैम्प का आयोजन हुआ। पहले कैम्प में 300–400 मरीज आये, उनमें से 75–100 आप्रेशन के योग्य पाये गये। यह पूर्णतः निःशुल्क सार्वजनिक कैम्प था जिसका बहुत प्रचार किया गया था। सौराष्ट्र के 9 जिलों से मरीज आये थे। स्वामी जी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा अब यहां पर यूरोलोजीकल हास्पीटल का बीजारोपण करो। उसके लिये स्वामी ने 6000 रू दान में दिये और उनको एक लाख रूपये दान देने को कहा। अन्य लोगों ने भी दान दिया। अच्छी खासी राशि जमा हो गई। उस यूरोलोजी कैम्प में राजकोट के बड़े बड़े 7 डॉ.क्टरों ने फ्री में अपनी सेवायें प्रदान की। विदेशों से भी डॉ.क्टरों की टीम आई। जिसमें डॉ. गोपाल बदलानी एवं दानदाता स्व. नत्थुरमल लालचंदानी जी भी उपस्थित थे।

यह काम 4–5 साल तक हर वर्ष चलता रहा। सेवादार अपनी सेवायें भी फ्री में देते थे। स्वामीजी कहते थे दूसरों के लिये आपका यह सेवा भाव आगे चलकर अपको अपनों की सेवा करने के संस्कार भी प्रदान करेगा।

उस कैम्प में किसी ने रत्नपुर गांव में भूदान का भी आश्वासन दिया जो राजकोट से 17–18 कि.मी. दूर था। दान राशि इक्ट्ठी हुई पड़ी थी मगर हास्पीटल का निर्माण शुरू नहीं हो पा रहा था। अचानक 2010–11 में यह बात शासन तक पहुंची और उनको बुलाया गया। मंत्री महोदय ने उनको सर्किट हाऊस बुलाया, साथ में संबंधित अधिकारियों को भी बुलवा भेजा। सब लोग आये उनको मंत्री महोदय ने कहा इनको यूरोलाजी हास्पीटल बनवाने के लिये जमीन का आवंटन करना है जितनी भी शासकीय जमीन जहां पर खाली पड़ी है उसका इनको अवलोकन करवाओ और जो जगह इनको उपयुक्त लगे वह इनको आवंटित करनी है।

वे गये, जमीन देखी और एक साइट पसंद की। ये स्वयं सिविल इंजीनियर थे इसलिए इनको जमीन के आसपास के लाभ हानि के बिन्दु अपने आप समझ में आ जाते थे, उन्होंने जमीन पसंद की और उनको लगा कि 1250 वर्ग मीटर जमीन काफी होगी।

फिर भी उन्होंने 2500 वर्ग मीटर मांग ली इस पर मंत्री ने कहा कि बाद में विस्तार की जरूरत पड़ेगी तो क्या करोगे और उनको 5000 वर्ग मीटर ज़मीन 1 रूपये वर्ग मीटर के हिसाब से आवंटित करने का अधीनस्थ अधिकारियों को आदेश दिया।

तब श्रीचंद जी को स्वामी जी की कही बात याद आ गई कि जो भी बोलो सत्य बोलो और दमदार आवाज में बोलो। तब उन्होंने मंत्री महोदय से कहा कि यह शासकीय कार्य है इसमें समय लग सकता है किन्तु मुझे काम शीघ्र ही शुरू करना है अतः आवंटन में शीघ्रता की जानी चाहिए तो उन्होंने उनको 30 दिन के अंदर आवंटित करने का आश्वसन दिया और राजकोट जैसे नगर में यूरोलोजी हास्पीटल के लिय 5000 रूप्ये में 5000 वर्ग मीटर जमीन का आवंटन हो गया।

वैसे यदि मरीज प्राइवेट में किसी डॉ.क्टर के पास जाता है तो दूसरा डॉ.क्टर उसको देखने से पहले अनेक बार सोचता है, मगर यहां पर जो मरीज आते उनके केस रात को 10 से 1 बजे तक सब डॉ.क्टर मिलकर स्टडी करते थे। और हर डॉ.क्टर अपनी योग्यता के अनुसार रोग की गंभीरता के अनुसार आप्रेशन के लिये कुछ मरीज चुन लेते थे। ये मैं करूंगा, ये तुम करना, ये वो करेगा। कोई विवाद नहीं, कोई लालच नहीं, पूर्ण समर्पण के साथ सेवा कार्य होता था।

एक एक मरीज को फ्रूट बांटने का काम स्वामी जी स्वयं अपने कर कमलों से करते थे। वे उस दिन फल बांटने आये तो उनको एक मरीज का बिस्तर खाली दिखा उन्होंने जानकारी प्राप्त की तो पता चला कि मरीज बहुत गंभीर अवस्था में है उसको आप्रेशन के लिये ले गये हैं मगर बचने की संभावना क्षीण है। तब स्वामी जी ने उसके पलंग पर भी फल रखवाये और कहा वह जरूर वापस आयेगा और ऐसा ही हुआ भी। कितनी अवर्णनीय शक्तियां थी स्वामी जी में बता नहीं सकता।

उन्होंने बताया वे 1947 में राजकोट में आये थे। हर 4–5 वर्ष में स्वामी जी राजकोट आते थे मगर वे हर बार हमारे यहां ही रहते थे कभी उनके घर, कभी भाई के घर, कभी चाचा के घर, कभी चचेरे भाइयों के घर। स्वामी जी उनके परिवार को बहुत ही प्यार करते थे।

65–66 में वे बैरागढ़ संतों की कुटिया पर अपने चाचा किशनचंद जी के साथ आये थे। कुटिया को अंदर से ताला लगा हुआ था। उन्होंने खटखटाया अंदर से 8–10 वर्ष का एक बालक उछलता कूदता हुआ गेट पर आया। परिचय पूछा और कहा स्वामी जी से नहीं मिल सकते और फिर बगैर ताला खोले भाग गया। हमने फिर से दरवाजा खटखटाया वह फिर आया तब चाचाजी ने उसको कहा जाओ स्वामी जी को संदेश दे दो कि राजकोट से किशनो(किशनचंद) आया है। वह बोला नहीं बताऊंगा, दरवाजा नहीं खुलेगा तब चाचाजी ने कहा नहीं बताओगे तो स्वामीजी तुम्हें बहुत डॉ.टेंगे जाओ और जाकर उनको बताओ कि राजकोट से किशनो आया है। वह अंदर गया स्वामीजी को संदेश दिया। स्वामीजी ने उसके डॉ.टते हुए कहा जाओ उनको अंदर ले आओ।

दादी पारी वो सन्त थीं जिन्होंने उनको कहा था सन्यासियों के चक्कर में मत आना। गृहस्थ आश्रम ही सबसे सुन्दर आश्रम है। दादी पारी स्वयं गृहस्थ धर्म में भी संत स्वरूपा थी।

1966 में उनकी इच्छा हुई कि वे अमेरिका जाकर एमएस करे। उनके 5–6 दोस्त अमेरिका जा रहे थे। वे बोलीं क्यों जा रहे हो? और अच्छी पढ़ाई करूंगा अच्छी नौकरी मिलेगी, अच्छा यश मिलेगा जीवन में संपन्नता आयेगी। वे बोली वह सब तो तुम्हें यहां भी

मिलेगा। मगर जो वहां नहीं मिलेगा वह है संतो का संग, यह बात उनको अच्छी लगी और फिर उन्होंने जाने का विचार छोड़ दिया और भारत में ही रहे। आज वे अपने दोस्त जो अमेरिका गये थे उनसे कम संपन्न नहीं है।

वे 11 बार विपश्यना शिविरों में भाग ले चुके हैं। आज भी वे उसका नियमित अभ्यास करते हैं और थोड़ी देर में ही प्रज्ञाअवस्था में आजाते हैं। प्रज्ञा अवस्था वह अवस्था है जिसमें संपूर्ण जानकारी वाली सजगता बनी रहती हैं। उठते, बैठते, चलते, फिरते, खाते, पीते, नहाते, धोते, बोलते, मौन रहते, सुनते, देखते, चखते, सूंघते, छूते हुए संपूर्ण सजगता बनी रहती है। चिंतन चले तो भी स्पष्ट अनुभव होता है कि मन शरीर से जुड़ा हुआ है। वे पढ़ते हैं 2–3 पंक्तियां पढ़ने पर ही प्रज्ञा की स्थिति आ जाती है। वे जान रहे हैं कि उन्हें जीवित अवस्था में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सबकी प्राप्ति हो गई है। उनके घर पर एक महिला सहायक के रूप में कार्य कर रही थी। वह हमारे लिये चाय नाश्ता लेकर आई थी। उन्होंने बताया इस बिटिया से बहुत स्नेह हो गया है इसमें भी हमें भगवान नजर आता है। ये महिला बताती है कि उनके पिताजी ने आज से 30 वर्ष पूर्व हमारे घर की नींव की खुदाई का काम किया था। इसको हमारे घर के हर सदस्य से लगाव हैं हम भी इसे अपना ही मानते है। उन्होंने आसा दी वार का एक पद सुनाया–

आपै भांड साजिअनु, आपे पूरणु देइ, इकन्ही दुधु समाईऐ, इकि चुल्है रहन्हि चड़े।

अर्थात आप ही शरीर रूपी बर्तन बनाता है, तथा आप ही खाने पीने को देता है। एक में दूध जमाया जाता है, तथा एक चूल्हे पर चढ़े रहते हैं एक निहाली पर सोते हैं, तथा एक सेवादार बने खड़े रहते हैं, परमात्मा उन्हें संवारता है जिन पर कृपा दृष्टि करता है।

इकि निहाली पै सवन्हिं, इकि उपरि रहनि खड़े।
तिन्हा सवारे नानका, जिन्ह कउदरि करे।

उन्होंने बताया कि एक बार पीठ द्वारका के पाठी, राजकोट के गुरूद्वारे के पाठी के साथ उनके पास आये। उनके गुरूद्वारे के लंगर चलाने के लिये उनको सामग्री की आवश्यकता थी। हमने उनसे कहा जो भी आपको चाहिये लिस्ट बना दीजिये हम आपको भेज देंगे तो उन्होंने राजकोट के गुरूद्वारे के पाठी से पूछा क्या यह गुरमुख है। तो उन्होंने कहा हम सिर्फ पाठ पढ़ते हैं मगर यह पढ़ता ही नहीं समझता भी है। इतना फर्क है इसमें और हममें। हम पढ़े और समझकर पढ़े यह अनुभूति ही द्वैत में अद्वैत की बात है। उन्होंने गुरूवाणी के जप साहिब से कुछ पंक्तियां उद्धृत कीं

आखणि जोर चुपै नह जोरु, जोरु न मंगणि,
देणि न जोरु न जीवणि, मरणि नह जोरु
जोरु न राजमालि मनि सोरु जोर न सुरती गिआनि वीचारि, जोरु न जुगती छुटै संसारु
जिसु हथि जोरु करि वैखे सोई, नानक उतमु नीचु न कोई।

उन्होंने गुरुनानक देव जी को कोट करते हुए कहा–

एक नूर ते सब जग उपजा, कोन भले कौन मंदे,
अव्वल अल्लाह, नूर उपाया, मालिक के सब बंदे

उन्होंने महर्षि रमण के चेतना के बारे में विचारों को कोट किया

'जब हमारी चेतना अंदर की तरफ यात्रा करती है तो हम सजग हो जाते हैं, अपने हर कर्म के प्रति, मगर यह चेतना जब बाहर की तरफ यात्रा करती है तो हम दुनिया की यात्रा में भटक जाते हैं।'

उन्होंने बताया कि उसकी मर्जी के बगैर कुछ नहीं होता। वह करवा रहा है हम कर रहे हैं; जिस दिन वह चाहेगा कि हम कर्म विहीन हो जायें तो हम कर्म कर ही नहीं सकते। उसकी इच्छा है तो हम न चाहते हुए भी मजदूरी कर रहे हैं और वह नहीं चाहेगा तो हम चाहकर भी मजदूरी कर नहीं पायेंगे। जब हम अंदर की यात्रा पर जायेंगे तो फिर हमें किसी मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे में जाने की जरूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने कहा जीवन में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं उससे घबराना नहीं चाहिये। वे 5 भाई हैं और उनकी 5 फ्लोर मिल्स हैं। उनकी स्वंय की जो फ्लोर मिल है उसकी क्षमता 120 टन प्रति दिन की पिसाई करने की है। उनके परिवार का पहले नमक का व्यवसाय था। बाद में खाद का, उसके बाद सीमेंट का पुश्तैनी कारोबार जमा हुआ था। उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग में डिग्री कोर्स किया था। उस समय हालात खराब थे। नौकरी नहीं मिली। एक प्राइवेट कम्पनी में नौकरी मांगने गये तो उन्होंने कहा कोई जगह खाली नहीं है। तब उन्होंने उनको कहा कि वे अपनी सेवायें बगैर वेतन के देने के लिये तैय्यार हैं। तो उन्होंने उनको रख लिया। सात महीने तक वे बगैर वेतन के काम करते रहे। वे सोच रहे थे कि ये वेतन नहीं दे रहे मगर परमात्मा के पास तो उनका लेखा लिखा जा रहा है न। सात महीने बाद उनको शासकीय नौकरी के लिए साक्षात्कार के लिए बुलावा आया। 250 इंजीनियर आये थे। 20 का चयन हुआ। उनमें उनका भी नाम था। यह वर्ष था 1966 वेतन तय हुआ 387 रू, प्रति माह। यहां भी वे बगैर समय का ध्यान रखते हुये परमात्मा को समर्पित कर कार्य करते रहे। 200 रू. प्रति माह वे अपने पिताजी को मनी आर्डर कर देते थे और 187 में अपना खर्चा चलाते थे। यह क्रम 1969 तक चला। 1969 में उनके पास उनके पिताजी का पत्र आया कि मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती है वापस आ जाओ। उन्होंने त्यागपत्र देकर नौकरी छोड़ दी अब वे अपने व्यवसाय में रम गये। साइकिल पर घूम घूम कर निर्माण स्थलों पर जाते और सीमेंट का आर्डर बुक करते। 400–500 बोरियो का आर्डर मिलता था। हर बोरी पर 15 नये पैसे से 25 नये पैसे बचते थे। इस तरह 125 रू कमा लेते थे। उन्होनें नौकरी करते हुये किसी से कभी कोई बेईमानी नहीं की, रिश्वत नहीं ली। वे सच्चे थे तो उनकी आवाज में सच्चाई का दम होता था।

वे गत 25 वर्षो से राजकोट सिंधी समाज के उपाध्यक्ष हैं, उनके मन में राजकोट में सिंधू भवन की स्थापना का विचार है। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी उनके बचपन के मित्र हैं उन्होनें उनको भू आवंटित कर दी है रियायती दर पर अठारह करोड़ जमा करना है। चार करोड़ जमा कर चुके हैं प्रयास जारी है। बाद में उस पर भवन बनने के लिये भी 7 करोड़ की आवश्यकता होगी।

उनको समाज की भलाई के लिये किसी से भी अपील करने, मांगने में संकोच नहीं होता। कोई उनके पास आया है तो मजबूरी में ही आया होगा यह उनकी सोच है। अतः पहले वे स्वयं मदद का हाथ बढ़ाते हैं फिर दूसरों से भी करवाते हैं मगर पूर्णतः संतुष्ट होने के बाद ही, पूर्णतः जांच करने के बाद ही।

वे डॉ.. अमलानी के यहां बैठे थे उनके साथ में एक और व्यक्ति भी था। आते ही उन्होंने कहा यह बंदा मुझसे पूछ रहा था वह खुदा का बंदा कौन है जिसने यूरोलोजी कैम्प लगवाई थी, तो मैं इसको ले आया कि देख यह है वह ख़ुदा का बंदा। उस व्यक्ति ने दोनों हाथ उठाकर कहा 'ऐ ख़ुदा के बंदे, ख़ुदा तुम्हारा भला करेंगे।'

उनके पास संतो के प्रवचनों की 1962 की रिकार्डिंग भी है। संतों के द्वारा उनको लिखे गये हस्त लिखित पत्र उनके पास आज भी सुरक्षित हैं।

एक बार संत जी ने उन्हें बहुत बुरी तरह डॉ.टा था। वे पुष्कर कुटिया पर गये थे वहां पर उन्होनें भोजन किया। थोड़ी देर बाद संतों ने उनसे पूछा खाना खाया? उन्होंने कहा हां! उनसे पूछा बर्तन धोये? मैने प्रत्युतर में सिर झुकाया, क्योंकि मैंने झूठे बर्तन ही रख दिये थे। उन्होनें कहा बर्तन धोकर रखने चाहिये। तब मैने बर्तन धोये और आज भी मैं अपने खाने के बर्तन खाना खाने के बाद स्वयं ही धोता हूं। जो आदत बन गई है।

वे स्वामी जी की सादगी से बहुत ही प्रभावित थे और वही सादगी के गुण अपने जीवन में भी अपना लिये है। उन्होंने बताया कि कोई दुखियारा उनके पास सहायता मांगने के लिये आता है तो उनके हृदय के अंदर करूणा का निर्झर उत्पन्न हो जाता है और जब तक उस व्यक्ति की सहायता का कार्य संपन्न नहीं हो जाता तब तक वे बैचेन रहते हैं। स्वामी जी ने एक बार उनको बताया कि वे पिछले जन्म में मुनि थे। और पिछले जन्म के संस्कार इस जन्म में भी साथ चल रहे हैं, आपने पिछले जन्म में भी बहुत समाज सेवा की है। एक बार वे जूनागढ़ में संत जी के पांव दबा कर सेवा कर रहे थे। स्वामीजी लेटे हुये थे जब स्वामी जी जगे तो उन्होनें उसे अपने गले से लगा लिया था। ऐसा सुयोग शायद बहुत कम लोगों को प्राप्त होता है।

स्वामीजी ने बनाया गुरूवाणी का प्रचारक

सुश्री द्रोपदी धनवानी

संत हिरदाराम नगर मो. 9827436951

द्रोपदी दीदी को आज लोग ''गुरू मां'' के नाम से पुकारते हैं। मगर मेरे लिये वे आज भी वह बहन हैं जो गरीब बच्चों को शिक्षा देने के लिये फ्री में नवयुवक परिषद द्वारा संचालित कोचिंग कक्षाओं में बड़ी श्रद्धा, तन्मयता और समय पर आकर निःस्वार्थ भाव से पढ़ाती थी। वे एक अच्छी कवियत्री भी हैं। वे स्टेट बैंक आफ इंडिया से सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। वे अच्छे परिवार से उनका रिश्ता है। उनके परिवार की समाज में बड़ी साख है। उनके भाई सुशील जी ज्वेलर्स हैं। इतना होने के बाद भी उन्होंने विवाह बंधन में अपने को नहीं बांधा। कल जब मैंने उनसे फोन पर मिलने का समय मांगा उन्होंने दोपहर को 11 बजे का समय दिया। मैं भूल गया। शाम को याद आया तो रात्रि के 9 बजे उनके घर गया वे अरदास कर रही थीं। मैंने इंतज़ार किया और फिर उनसे स्वामीजी से संबधित संस्मरण सुनाने को कहा। उन्होंने जो कहा वह आपके समक्ष विस्तार पूर्वक रखने का प्रयास कर रहा हूं। उन्होंने बताया कि आज वे जो भी हैं वे संतों के आशीर्वाद से ही हैं। उन्होंने बताया आज लोग मुझे ''गुरू मां'' बोलते हैं तो उसमें सारा श्रेय संत जी का ही है। वे पहले शिक्षक थीं। वे स्टेट बैंक आफ इंडिया के लिये साक्षात्कार के लिये जा रही थीं। उनके पैर में मोच आई हुई थी। फिर भी वे संत जी की कुटिया में साक्षात्कार के पूर्व माथा टेकने गईं। उनको लग रहा था यदि कुटिया से उनको प्रसाद मिल जाता तो उनका चयन निश्चित हो जाता। वे गईं, माथ टेका, लौटकर गेट तक आगईं मगर उनको प्रसाद नहीं मिला। वे निराश हो रही थीं इतने में संत जी अचानक प्रगट हुए और उन्होंने पूछा बिटिया आपको प्रसाद मिला। जब मैंने नहीं बोला तो उन्होंने उनको प्रसाद दिलाया। वे प्रफुल्लित मन से निकलीं इस विश्वास के साथ कि अब मेरा चयन कोई रोक नहीं सकता। उनसे साक्षात्कार में कुछ पूछा ही नहीं गया नाम के अलावा उनको अजीब

लगा मगर जब सूची निकली तो उनका नाम सबसे पहले क्रम पर था। इसे वे संतों का आशीर्वाद ही मानती है।

वे इन्दौर में नैनोद माता के दर्शन के लिए गई थीं मगर उनको आनन्द नहीं आया। वे बुझे मन से वापस आ गईं। जब वे संत हिरदाराम नगर में बस से उतरीं तो उन्हें पता चला कि संत जी रामधुनी पर आये हुए हैं। वे घर न जाकर धुनी पर चली गई। संत जी फ्रूट का प्रसाद सबको दे रहे थे। वे भी लाइन में लग गईं। उनकी नजर फ्रूट के थाल में रखे लड्डू पर टिक गई और उनको लगा यह लड्डू मुझे मिल जाये तो कितना अच्छा हो। एक ही लड्डू था और वह उनको ही मिला मगर संतों ने कहा संतों से बड़ी चीजें मांगी जाती हैं। कैसे उनके हृदय की बात संतों तक पहुंची उनको आज भी आश्चर्य होता है। उसके बाद कुटिया से उनका लगाव बढ़ता गया। जैसे जैसे संत जी कहते वे वैसे वैसे गुरूवाणी को अंतर्मन में बिठाती गई। वे हर रविवार को किसी न किसी के घर पर सुखमनी का पाठ करने जाती थीं। एक बार संत जी ने उनको किसी सेवादार के घर सुखमनी का पाठ करने की आज्ञा दी। मगर संयोग से उनकी बुआजी जो नागपुर शहर में रहती थी, यहां पर आई हुई थीं। बुआजी ने संतों का दर्शन कराने का आग्रह किया। मैंने अपनी मंडली को सुखमनी पाठ करने भेज दिया और ख़ुद बुआजी के साथ स्वामीजी के दर्शन करने कुटिया पर गई। स्वामी जी ने बुआजी को वहां देखकर कहा तुम्हें सुखमनी पाठ पर जाना था वो छोड़कर तुम मेरे हाड़ मांस से बने शरीर का दर्शन करने आई हो। स्वामी जी ने डॉ.टते हुए कहा उठो जाओ और जाकर सुखमनी का पाठ करो। वह दिन और आज का दिन मैंने उनकी बात को गांठ बांध कर रख लिया है। ऐसे थे हमारे संत जी।

स्वामी जी ने उनको संत तनूराम की समाधि की चाबी देते हुए कहा वहां जाओ और बच्चों को जपुजी का ज्ञान दो और कंठस्थ करवाओ। वे वहां जाने लगीं, बच्चे आने लगे। काफी समय बाद कुछ सरदार जी आये और उन्होंने कहा आप गुरूवाणी का अपमान कर रहे हो। जपुजी साहिब अमृतवेले में पढ़ा जाता है। तब उन्होंने कहा मैं संतों की आज्ञा से यह काम कर रही हूं। यदि कुछ ग़लत है तो मैं अभी छोटी बच्ची हूं मुझे इन बातों का ज्ञान नहीं। आप संतों से बात कर लें इस संदर्भ में तो अच्छा होगा। उन्होंने बोला हम संतों से चर्चा करेंगे मगर उनकी हिम्मत ही नहीं हुई संतों तक जाने की। उन्होंने बताया कि स्वामी जी के कहने पर उन्होंने काले कपड़ों का परित्याग कर दिया था और अपने प्रवचनों में सबको यही कहती थीं कि काले कपड़े मत पहनो। काले कपड़े न पहनने से उनके जीवन में बहुत परिवर्तन आये। उनके संपर्क में एक बच्ची आई जो सिर्फ काले कपड़े ही पहनती थी उसको डरावने सपने आते थे। उन्होंने उस बच्ची के सारे काले कपड़े जलवा दिये जिससे उसके जीवन में भी परिवर्तन आया।

आज वे मानती हैं कि उनके घर पर 24 घंटे गुरूवाणी का पाठ चलता रहता है, जपुजी साहिब चोपाई साहिब, सुखमनी साहिब, गुरुग्रंथ साहिब का पाठ चलता रहता है। संत नगरी में यह बहुत घरों में चलता है, इसका श्रेय सिर्फ संत जी को ही जाता है।

फलीभूत होते देखे स्वामीजी के आशीर्वाद

श्री हीरानंद भागचंदानी
गांधीधाम (गुजरात) मो. 9574009042

संयोगवश रनजीत आसनानी जी से बातों में पता चला कि स्वामी जी के प्रति श्रद्धा रखने वाला एक और परिवार भी गांधीधाम में है। मेरे पास तो सिर्फ उनका ही नाम था। मैंने कहा हो सके तो उनसे मिलवा दो। उन्होंने मोबाइल लगाया और 5 मिनट बाद ही मेरे सामने हीरो भागचंदानी जी बैठे थे। उनसे वार्तालाप शुरू हुआ तो पता चला कि उनकी माताजी की ननिहाल बैरागढ़ के दो तपस्वी भाईयों साईं डा॒ंदूराम, और सांईं होतराम जी के परिवार में थी। स्वामीजी उन दोनों सन्यासियों की बहुत इज्जत करते थे। उनके कारण उनका भी संपर्क स्वामी जी से था। उनका जन्म बैरागढ़ में ही हुआ था। स्व. किशनचंद चोटरानी जी के घर में। वे उनके मामाजी थे। मेरा संपर्क उनके ममेरे भाई स्व. दीपक और अनिल चोटरानी के साथ गहरा रहा है।

उन्होंने बताया कि जब वे 17 वर्ष के ही थे उनके पिताजी स्वर्गलोक को सिधार गये थे। जब वे स्वामी जी से मिले तो उन्होंने होतचंद आसनानी जी से आग्रह किया कि कहीं पर भी इस बच्चे की नौकरी लगवा देना। और उन्होंने उनकी नौकरी लगवा दी थी। स्वामी जी ने उनको यह भी आशीर्वाद दिया था कि उनका बेटा बड़ा आफीसर बनेगा और आज सच में उनका बेटा बहुत बड़ा आफीसर बन गया है। उनकी माताजी हर साल अपने पीहर संत नगरी में आती थीं और जब भी आती थी तो स्वामी जी के दर्शन के लिये कुटिया अवश्य जाती थीं। एक बार जब वे कुटिया गईं तो स्वामी जी ने उनको कहा यह तुम्हारा आखिरी अवसर है कुटिया पर आने का। उनको कुछ समझ में नहीं आया स्वामी जी ऐसा क्यों कह रहे हैं। मगर स्वामी जी तो दूर दृष्टि रखते थे और वास्तव में ऐसा ही हुआ वे उसके बाद आश्रम नहीं जा पाई। उनकी मौसी भी बैरागढ़ में रहती है। जिनसे मेरा भी संपर्क रहा है। वे स्कूल में अध्यापिका थी। दादी कलां मेहतानी। उनका बेटा है दिलीप मेहतानी। उनको स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया था कि उसे सरकारी नौकरी मिलेगी। वह बहुत ही सरल स्वभाव का था। उसका साक्षात्कार हुआ। पांच पद रिक्त थे उसका मेरिट लिस्ट में छठे नंबर पर चयन हुआ। उन छः में से एक का चयन बैंक में हो गया तो उसने ज्वाइन नहीं किया और इस तरह उसका चयन बोर्ड आफिस में हो गया। आज दिलीप की बेटी डाक्टर बन रही है।

स्वामीजी के आशीर्वाद से बने सेवा कार्य के स्तंभ

श्री होतचंद आसनानी
सेवानिवृत्त प्रोजेक्ट डायरेक्टर,
कांडला पोर्ट गांधीधाम (गुज.)मो. 9429815245

इसके पूर्व उनके सुपुत्र श्री रनजीत आसनानी जी से उनके बारे में काफी जानकारी मिल चुकी थी। अब उनसे मिलने की बारी थी। 91 वर्ष की अवस्था में भी वे कुर्सी पर बैठे हुये गुरूवाणी का पाठ कर रहे थे। बड़ी ही सादगी की मूर्त थे वे। साधारण

कुर्ते पजामें में बैठे थे। सफेद रंग की पोशाक में उनका देवत्व प्रकट हो रहा था। अपनी सौम्य मुस्कराहट से उन्होंने हमारा स्वागत किया। उनके पास बैठे और वार्तालाप शुरू हुआ। मैंने उन्हें बताया कि मुझे आपका परिचय श्री दयाल मूलचंदानी जी ने मुझे दिया था। आपके शहर में आकर मैंने आपकी ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा निःस्वार्थ सेवा भावना, सबकी सहायता के लिये तत्पर रहने, समाज के लिये समर्पण और स्वामी जी के प्रति आपकी अटूट आस्था के बारे में सुना है। इज्जत से आपका नाम हर जिव्हा पर है। वे मुस्कराकर बोले सब खाक हो जायेगा। कुछ नहीं रहेगा।

उन्होंने बताया कि संत हिरदाराम नगर पर स्वामी जी की अपार कृपा थी। उन्होंने बैरागढ़ को संतनगरी बना दिया यह देखकर वे अपने आपको गौरवान्नित महसूस करते हैं कि वे माया–मोह से मुक्त उस योगी के संपर्क में रहे और उनकी सेवा का कोई पल नहीं गंवाया।

वे नवाबशाह जिले के एक गांव में पैदा हुये मगर वहां से बाद में ठारूशाह में आकर बस गये। उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा पास किया। बाद में उन्होंने ए. एम.आई.ई. की भी परीक्षा पास की जिसकी मान्यता स्नातक डिग्री के बराबर है। उनका रेल विभाग में भी चयन हुआ था। उन्होनें यूपीएससी की परीक्षा भी उत्तीर्ण की थी। उसमें पास होने के बाद उनकी नियुक्ति असिस्टेंट एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के पद पर प्रोजेक्ट इंचार्ज के रूप में कांडला बंदरगाह पर हुई जिसका निर्माण उनके मार्गदर्शन में शुरू हुआ। वे संतों के साथ यूरोलोजी कैम्प, नेत्र शिविर एवं चिकित्सा शिविरों से भी जुड़े रहे। उन्होंने संतों के द्वारा सौंपे गये हर कार्य को बड़ी निष्ठा, मितव्ययता एवं गुणवत्ता के साथ संपन्न कराया।

वेतन नहीं केवल सेवा

डॉक्टर मोहन भारती
आदीपुर मो. 9427819416

डा. मोहन भारती आदीपुर में एक्यूप्रशेर, एक्यूपंचर का आश्रम चलाते हैं। आदीपुर पहुंचने के पहले भी मैं संत नगर में रहते हुए उनसे 2–3 बार मोबाइल के द्वारा बातचीत कर चुका था। आदीपुर, गांधीधाम के मेरे पास दो ही नाम थे। डा. मोहन भारती और इंजीनियर एच.के.आसनानी। एक आदीपुर तो दूसरा गांधीधाम। गुजरात आने पर स्वामी जी के बारे में अन्य भी कुछ संस्मरण मिलेंगे जो मैं आप तक पहुचा पाऊंगा यह सोचकर घर से निकला था। न कोई रिश्तेदर था और न ही कोई ऐसा व्यक्ति जो वहां मेरी सहायता कर सके। मगर मुझे अपने संतों पर विश्वास था कि वे मुझे वहां पर अवश्य सहायता करने वालों से अपने आप मिलवायेंगे। कार्य मेरा व्यक्तिगत नहीं ईश्वरीय कार्य था तो मैं निश्चिंत होकर 16 से 26 जून का कार्यक्रम तय कर टिकटें रिजर्व करवा कर आदीपुर, गांधीधाम, राजकोट, अहमदाबाद और सूरत के लिए निकला था। प्रारंभ आदीपुर से ही था और कोई नाम भी नहीं था। स्वामी लीलाशाह की तपोभूमि थी। इसके पूर्व भी मैं 2 बार आदीपुर आ चुका था। एक बार बच्चों के पर्सनालेटी डेव्हलपमेंट कार्यक्रम में, दूसरी बार धर्मपत्नी के साथ आश्रम में सिर नवाने के लिये। डा. मोहन भारती जी को फोन किया उन्होंने 4 बजे का समय दिया। बहुत ही सौम्य व्यक्तित्व के मालिक,

90 वर्ष की अवस्था में भी चुस्त दुरुस्त, सेवा का जज्बा लिये हुए व्यक्ति। उन्हें देखते ही उनके चरणों तक मेरे हाथ अपने आप पहुंच गये। वार्तालाप शुरू हुआ उन्होंने बताया कि– उनकी सहधर्मिणी को स्तन कैंसर हो गया था। बहुत दवाइयां की, ऐलोपैथी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथी मगर कहीं से फायदा नहीं हो रहा था। किसीने प्राकृतिक चिकित्सा में जाने की सलाह दी। मरता क्या न करता और कोई विकल्प बचा भी नहीं था। डा. से मिले उन्होंने 3 महीने तक अपक्वाहार पर रहने की बात कही। साथ ही साथ अन्य प्राकृतिक पद्धतियों को अपनाने को कहा। 3 महीने तक उनकी बातों का मनन किया, पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ। धीरे धीरे उनकी सहधर्मिणी एक दम ठीक हो गई। वे कैंसर की गांठे खत्म हो गई। यह उनके लिये चमत्कार से कम नहीं था। उन्होंने इस विधि में पारंगत होने के लिये अपने आपको समर्पित कर दिया। आज वे एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर के द्वारा लोगों को ठीक करते हैं। किसी से कोई मांग नहीं करते। 20 रू प्रति दिन में इलाज हो जाता है। 10 दिन तक रोगी के साथ एक सहायक को भी लाना आवश्यक होता है। वह सहायक पूरी निष्ठा और लगन के साथ पूरी प्रक्रिया को सीखते हैं और फिर वे स्वयं पारंगत हो जाते हैं और स्वयं एक्यूप्रेशर के यंत्रो से उनका इलाज करते हैं।

स्वामी जी उनके कार्यो से बहुत प्रभावित थे। वे स्वयं आते थे और आरोग्य केन्द्र की टीम भेजते थे वे आकर प्रशिक्षण ले जाते थे। डा. किशन बच्चानी, डा. रमेश टेंवाणी, डा. अर्जुन टेंवाणी, डा. कन्हैयालाल रंगवानी, इत्यादि उनसे प्रशिक्षित होकर गये। स्वामी जी का उनके ऊपर वरदहस्त रहता था। उनके आश्रम को विकसित करने में स्वामी जी का भी योगदान रहा। उनके इतने बड़े आश्रम में सिर्फ 2 ही वैतनिक कर्मचारी थे एक सफाई कर्मचारी और एक रसोई घर संचालक। बाकी जितने लोग भी उनके पास कार्य करते थे वे अवैतनिक और स्वेच्छा से सेवा करने वाले थे।

डा. मोहन भारती अपने सेवा के कार्यों का प्रशिक्षण देने के लिए कई बार विदेशों की भी यात्राएं कर चुके हैं। वे मानते हैं कि वैतनिक लोग सेवक नहीं हो सकते। उनमें सेवा का भाव आ ही नहीं सकता। उनकी दो बेटियां हैं, उन्होंने भी अपने जनक का सेवा मार्ग अपनाते हुए विवाह बंधन में बंधना स्वीकार नहीं किया। उनके आश्रम में लोगों को भर्ती करने की भी व्यवस्था है। उनके पास न केवल देश बल्कि विदेशों से भी अनेक लोग स्वास्थ्य लाभ लेने आते हैं।

स्वामीजी की आज्ञा

श्री रनजीत जी आसनानी
गांधीधाम मो. 9429815245

गांधीधाम में मुझे एच.के. आसनानी जी का नाम दिया था मूलचंदानी जी ने, उनके पास नम्बर भी नहीं था। उन्होंने बताया कि वे 90 वर्ष के आसपास के होंगे। उन्होंने जीव सेवा समिति के माध्यम से स्वामी जी की सेवा की है। जब मैं आदीपुर पहुंचा तो उनके बारे में भगवान हरदासमलानी जी, जो मेरी मुंह बोली साली के जेठ थे, से मैंने जानकारी चाही तो उन्होंने तो उनकी तारीफ में इतने कसीदे पढ़े कि मैं उनसे मिले बगैर ही उनका मुरीद बन बैठा। उनकी ईमानदारी, उनका संक्षिप्त वार्तालाप का गुण, उनकी देशभक्ति,

उनकी कर्तव्य परायणता की तारीफ तो उन्होंने इतनी की कि मैं शब्दों में उनको व्यक्त करने में असमर्थ हूं। उनके पास भी उनका नम्बर नहीं था। बड़ी मुश्किल से उनको उनके सुपुत्र का नम्बर मिला। उनसे 19 तारीख को सबेरे बात की और उनसे उनके पिता श्री से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने अपने पिताजी से बात करवाई। शाम को 6 बजे का समय निश्चित हुआ। मैं भगवानदास हरदासमलानी जी के साथ उनके घर गया जो कि उनके घर से 8 कि.मी. दूर था। मुझे आदीपुर में भगवानदास हरदासमलानी जी के घर में रूकने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे अपने छोटे भाई जगदीश हरदासमलानी के साथ मुझे रेल्वे स्टेशन पर लेने आये थे। मैं आश्रम में रूकने का सोच कर गया था। उनको बहुत बोला मगर वे नहीं माने और अपने घर ले गये और दो दिन तक साथ में ही रहकर सहायता की।

हम 6:05 बजे सायं को उनके घर पहुंचे, हमारा स्वागत उनके बेटे रनजीत आसनानी जी ने किया श्री एच.के.आसनानी जी प्रथम तल पर थे। नीचे ही उन्होंने जलपान करवाया बातों का क्रम शुरू हुआ तो उन्होंने बताया कि–

डा. मोहन भारती को आश्रम के लिये जमीन का आवंटन उनके पिताजी द्वारा ही किया गया था। डा. मोहन भारती स्वामी जी का इलाज करते थे। एक्यूप्रशेर, तेल स्नान, मुल्तानी मिटी स्नान, धूप स्नान वे उनको स्वामी लीलाशाह आश्रम में ही कराते थे, वहीं पर जहां आज स्वामी लीलाशाह की मूर्ति लगी हुई है उसके पास ही तालाब होता था, जहाँ पर वे स्वामी जी का उपचार करते थे। स्वामी जी के कहने पर ही उनके पिताजी द्वारा आश्रम की जमीन का आवंटन उनको किया था। आश्रम के निर्माण में भी स्वामी जी का सहयोग रहा।

उन्होंने बताया मुझसे पहले 1 भाई और 4 बहने थी। मगर भाई का र्स्वगवास हो गया था। बाकी 4 बहने ही थीं। स्वामी जी के आशीर्वाद से इस शर्त पर कि उनके मां बाप मांसाहार छोड़कर शाकाहारी बनेंगे तो उनके 3 बेटे होंगे। पिताजी शाकाहारी थे ही, माताजी मांसाहारी थीं। मगर उन्होंने भी शाकाहारी जीवन अपना लिया। स्वामीजी ने उनसे कहा कि आपको 3 संतानें होंगी उनका नाम रनजीत, पारजीत और जलजीत रखना। उनका कुंडली के अनुसार षष्ठी के दिन नाम प्रभू, दूसरे भाई का नाम विजय निकला मगर उनके प्रचलित नाम स्वामी जी के द्वारा दिये गये नाम रनजीत और पारजीत ही हैं। उन्होंने बताया कि स्वामी जी जिस तख्त पर हमारे घर में बैठते थे, वह तख्त हमने आज भी संभाल कर रखा है।

उनके पिताजी का स्वामीजी से पत्र व्यवहार होता था। पुराने जमाने में जवाबी पोस्ट कार्ड की पद्धति चलती थी। पिताजी के पत्र के उत्तर में जवाबी पोस्ट कार्ड पर स्व. घुमणसिंह जी के द्वारा उतर लिखवा कर वे भेजते थे। अनेक पोस्ट कार्ड, अन्तर्देशीय पत्र उन्होंने अभी भी स्वामी जी की धरोहर मान कर संभाल कर रखे हुए हैं। पिताजी की आज्ञा है कि उनके परलोकगमन के बाद उन्हें पवित्र नदी में प्रवाहित कर देना। वे पिताजी के साथ हर साल पुष्कर जाते थे। 10–15 दिन वहां पर रहते थे। पिताजी रात्रि को भी वहां रहते थे और बाकी लोग अजमेर लौट आते थे। माताजी पुष्कर में रसोईघर संभालती थीं। बगैर मसालों, नमक का भोजन बनता था। उन्होंने बताया कि जब स्वामी जी का स्वास्थ्य खराब था तो वे संत नगरी में आये थे। उनकी हालत देख कर उनकी आखें भर आई थी। पता नहीं क्यों, मन भावुक हो गया था। वहां पर भी तो उनको सिद्धभाऊ ने टोकरी देकर कहा जाओ सेवा कर लो। तो उन्होंने वहां पर आम के पते

बीनने और झाड़ू लगाने का कार्य किया।

उन्होंने बताया कि उनके पिताजी देश के विभाजन के समय परिवार से बिछुड़ गये थे और अकेले ही देहली पहुंच गये थे। एक अनजान महिला ने उनको आश्रय दिया। उनका नाम माता धन्नीदेवी था। उन्होंने अपने घर में रखा। वहीं पर उनकी पढ़ाई लिखाई हुई। उनकी अवस्था उस समय 15–16 वर्ष की थी। वहीं पर रहकर उन्होंने डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। धन्नीदेवी बहुत अमीर परिवार से संबंधित थीं। वहीं पर उनकी संतों से पहली मुलाकात हुई। उन्होंने बताया कि उस समय उनके पास लैंड लाइन टेलीफोन होता था जो कि शासकीय कार्य के लिये उन्हें दिया गया था। रोज प्रातः 5 बजे उनके लैंडलाइन पर सिद्धभाऊ फोन कर स्वामी जी के संदेश देते थे। आज भी कुछ चुने हुए संदेश सिद्धभाऊ के प्रातः 3 बजे के आसपास आते हैं। वे उनको सुनते हैं।

स्वामी जी की आज्ञा से लीलाशाह आश्रम में पानी की पाइप लाइन बिछाई गई थी उसमें निर्मला देवी गिदवानी जी का सहयोग प्राप्त हुआ। वे गुजरात सरकार में उच्च पद पर थीं। स्व. हूंदराज दुःखायल के कहने पर स्वामी जी के चरण दबाने की सेवा करने का उनको सौभाग्य प्राप्त होता था। स्वामी जी के पांव बहुत कठोर और काले होते थे । उस समय पिताजी के द्वारा 14 लोगों को रोजगार दिया गया। वे भी चाहते थे कि वे भी नौकरी करें। उन्होंने पिताजी से कहा तो उन्होंने उनको मना कर दिया। तब वे व्यापार में चले गये। आज उनको खुशी है कि व्यापार से समय निकालकर उन्हें अपने पिताजी की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। स्वामीजी हर वर्ष गांधीधाम आते थे। वे शाम को 6 से 7 तक स्वामी लीलाशाह आश्रम में साधकों से मिलते थे और 8 से 9 बजे तक उनके घर पर मिलते थे। स्वामीजी से गुरूजी की बहन हीरो भागचंदानी की माताजी, मिलने आईं तो उन्होंने उनको देखते ही पहचान लिया था। उन्होंने बताया कि स्वामीजी जिस साधक को जो भी कहते थे वे साधक उनको हां–हां ही कहते थे। 'ना' तो उन्होंने किसी के मुख से सुना ही नहीं था किसीकी आवाज ऊंची तो किसी की आवाज नीची होती थी बस यही अंतर होता था। पुष्कर में पहला नेत्र शिविर लगना था। संतो का पिताजी के पास फोन आया कि पुष्कर में इतने पैसे भेजो। उन दिनों उनकी आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं थी, वे कर्ज में थे फिर भी उन्होंने स्वामी जी का आदेश मानकर पैसे भेजे। संतों के सहयोग से गांधीधाम में होम्योपैथिक क्लीनिक और जीव सेवा समिति की स्थापना हुई। वे आज भी घरेलू इलाज करते हैं। एलोपैथी, होम्योपैथी भी नहीं लेते। उन्होंने बताया कि बचपन में उनको चार दिन तक मल विसर्जन नहीं हुआ, उनको संत लीलाशाह के पास ले जाया गया उन्होंने कहा जाओ अपने आप हो जायेगा और वे वापस आ गये और हो गया था।

टर्निंग प्वाइंट

श्री संतोष भाग्या

संत हिरदाराम कुटिया, अहमदाबाद

मो. 9727157978

यह संयोग ही था कि मैं कुबेर नगर संतों की कुटिया पर पहुंचा। वहां के कार्य देखे। वहां के अध्यक्ष संतोष भाग्या जी से अनायास ही मुलाकात हो गई। मेरी सूची में उनका नाम कहीं पर नहीं था। यह संयोग है कि उनसे मुलाकात हुई। वे अच्छे

नाटकनवीस हैं। उनकी उम्र 85 साल है। उनसे जब मैंने आने का प्रयोजन बताया तो उन्होंने भी अपनी यादें स्वामीजी से जुड़ी हुई बताई।

उन्होंने शुरू करते हुए कहा हम तो संतों के चरणों की धूल के बराबर भी नहीं है। फिर भी संतों का उनके परिवार पर बहुत आशीर्वाद रहा। संत जी उनके घर पर भी दो बार पधारे। उन्होंने उनको गुरूग्रंथ साहिब घर में स्थापित करने के लिये कहा था।

उनके पिताजी संतों की जमीन पर सिंध में खेती बाड़ी का कार्य करते थे। वे लाल रंग की लंगोट पहनकर काम करते थे। उस समय उनकी उम्र 6–7 वर्ष ही थी। मगर उस समय की यादें अभी भी बरकरार है। उनका नाम स्व. गागूमल भाग्या था। उनके चाचाजी भी संतों की सेवा में समर्पित थे। वे बचपन से ही स्वामी जी को अपने अंग संग मानते हैं। उन्होंने बताया कि जब स्वामी जी पहली बार उनके घर आये थे तो उनकी सहधर्मिणी कणाह प्रसाद बनाकर लाई। स्वामी जी ने कणाह प्रसाद देखते ही कहा। अनुत्तीर्ण, अनुत्तीर्ण सहधर्मिणी बहुत डिप्रेस हो गईं। वे रोने लगीं तो स्वामी जी ने कहा। कणाह प्रसाद बनाने के लिये पहली शर्त है उसे देसी घी में बनाया जाता है। दूसरी शर्त होती है बगैर चप्पल पहने और सिर पर पलू रख कर ही प्रसाद बनाया जाता है। तुमने इन तीनों बातों का ध्यान नहीं रखा।

उनका एक भाई लाइबेरिया(अफ्रीका) में काम करता है। दूसरा, किशोर इंडिया में ही है मगर उसकी श्रद्धा संतों में नहीं रही संतों के आशीष के भंडार खुले पड़े है। मैं उनकी कृपाओं का बखान किन शब्दों में करूं समझ में नहीं आ रहा। उन्होंने कहा मुझमें कोई गुण नहीं है, मैं बहुत गंदा आदमी हूं यह उनके शब्द उनकी महानता के परिचायक हैं। वे 30 साल पहले भोपाल में अपने निर्देशन में नाटक खेलने आये थे जो बहुत ही फ्लाप रहा था। तब वे बैरागढ़ में किसी प्रशंसक के कहने पर उनके घर गये थे वहीं उन्हें ध्यान आया कि इस नगरी में संत रहते हैं। उनके दर्शन करने चाहिये। उस घर में एक बुजुर्ग अम्मां से उन्होंने इच्छा जाहिर की कि वे संतों के दर्शन करना चाहते हैं। उस अम्मां ने कहा जाना है तो जाओ मगर संत जी बहुत गुस्से वाले हैं। वे आपको डांटेंगे भी, गालियां भी देंगे और हो सकता है मारें भी। चांटे भी लगा सकते हैं यदि तुम्हें यह सब मंजूर हो तो जाओ। मैने कुछ सोचकर कहा मुझे जाना है।

अम्मां ने एक छोटी बिटिया को साथ भेजा कि जाओ इनको दूर से ही कुटिया दिखा के आना, तुम मत जाना। पांच–सात मिनट का पैदल रास्ता था वह बिटिया साथ में आई और दूर से ही कुटिया दिखाकर चली गई। मैं कुटिया के दरवाजे पर पहुंचा, दरवाजा खटखटाया एक बार, दो बार, सिद्धभाऊ आये उन्होंने मुझे देखा और कहा सन्तू तुम यहां? मैंने कहा हां एक नाटक का मंचन करने आया था इसलिये संतों के दर्शन के लिये आ गया। वे बोले आपको मालूम है न कि 10 बजे संतों का दरवाजा बंद हो जाता है, अब शाम को 6 बजे खुलेगा। मैंने उनको बताया 6 बजे मेरी ट्रेन का समय है। वे बोले संत जी की सख्त हिदायत है कि किसी को भी समय के बाद प्रवेश नहीं देना है।

इतने में संतों की आवाज आई सिद्ध संतू को अंदर आने दो। वे आश्चर्य चकित हो गये। संत अंदर आराम कर रहे थे काफी दूर होंगे, वहां से गेट भी नहीं दिख रहा होगा, फिर भी संतों को कैसे ज्ञात हुआ कि संतू आया है। सिद्धभाऊ ने अपनी अंटी से चाबी निकाली, ताला खोला और वे कुटिया में प्रवेश कर गये। वे वहां पर जाकर बैठे जहां पर स्वामी जी आकर बैठने वाले थे। उनके आसन के पास। इतने में उनके दिमाग में एक शरारत ने जन्म लिया वे और पास खिसक गये मूड़े के इतने पास कि स्वामी की पद दाब

सेवा का मौका मिले तो कर सकूं।

संतों का सिंध से ही उनके घर से गहरा संबंध था। वे आकर बैठे और उन्होंने उनकी मां का नाम लेकर पूछा सुशीला कैसी है। मीरा कैसी है, विष्णो, तुम्हारे पिता गागनदास तो परलोक सिधार गये हैं। 15–20 मिनट वे संतों के पास बैठे और संतों ने उनको एक लात मारते हुए कहा कि उठो प्रसाद लो और जाओ उस समय दोपहर का एक बज रहा था।, मेरी गाड़ी का समय 6 बजे था क्या करता सामान लेकर स्टेशन पर जाकर बैठ गया। यह वाक्या मेरे जीवन का टर्निंग पाइंट बन गया। संतोष जी नाटकनवीस थे उनके शब्दों मे नाटक में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का समावेश था। पहले उन्होंने क्लाइमेक्स शब्द का प्रयोग किया था, अब वे टर्निंग प्वाइंट का प्रयोग कर रहे थे। सुनकर अच्छा लगा। उनका बोलने का अंदाज भी नाटकीय था। उनके दिमाग में शरारत सूझी जैसा शब्द भी एक नाटककार ही प्रयोग कर सकता है। नाटक में एक्टिंग के साथ साथ, कलाकारों के मैकअप, नाटक के निर्देशन, कास्ट्यूम के चयन, मंच सजा, कलाकारों की रिहर्सल इत्यादि की जिम्मेदारी भी उनकी होती थी। वे सरकारी नौकरी से कार्यालय सहायक के पद पर काम करते हुए सेवानिवृत्त हुये।

उसके बाद उनके साथ ही आटो में बैठकर अपने गंतव्य की तरफ रवाना हुआ क्यों कि उनका घर उसी मार्ग पर पड़ता था। बातों बातों में उनके घर तक जाने का मौका मिला। उनका वह कमरा भी देखा जहां पर उन्होंने गुरूग्रंथ साहिब की स्थापना कर रखी थी उन्होंने घर की गैलरी को कमरे में बदल दिया था और पूरा कमरा गुरूओं को समर्पित कर दिया था। कमरे का पंखा 24 घंटे चलता रहता था। एक तख्त था उस पर गुरू नानक जी की फोटो रखी हुई थी। उनके शयन के लिये तख्त बनवा दिया गया था। कमरे में ए.सी. का भी प्रबंध था। देखकर मन गद्गद् हो गया।

संतों ने नाम दान दिया

श्री भगवानदास जेठानी
अहमदाबाद मो. 9328230194

श्री भगवानदास जी का नाम मैं सुनता आया था लंबे समय से। नवयुवक परिषद में विद्यार्थियों को जो स्कूल यूनीफार्म बांटी जाती थी उसका कपड़ा अहमदाबाद के श्री भगवानदास जी ही भेजते हैं यह मैंने सुना हुआ था। फोन पर 2–3 बार मैंने उनसे संस्मरण भेजने को कहा मगर जब उन्होंने नहीं भेजे तो मैं अहमदाबाद आ गया। उनको फोन करके समय मांगा तो उन्होंने दूसरे दिन सबेरे आने को कहा और कहा कि वे 8 बजे घर से अपने बेटे और पोते के साथ व्यवसाय के लिये निकल जाते हैं। उनके घर पर मेरा स्वागत हुआ। घर के सदस्यों के साथ नाश्ता करते हुये 2 घंटे कैसे बीत गये पता ही नहीं चला। नाश्ते में स्वादिष्ट गुजराती व्यंजन खाकर मन तृप्त हो गया। बाद में उनके द्वारा भेजे आटो से उनके आफिस पहुंचा। जब वार्तालाप शुरू हुआ तो उन्होंने कहा कि उनकी सामर्थ्य नहीं है कि वे सन्तों की महिमा का वर्णन अपनी जिव्हा से कर सकें। मेरे बहुत आग्रह करने पर उन्होंने बताया कि स्वामी जी बैरागढ़ को स्वर्ग बना गये हैं। आज से 50 वर्ष पूर्व का बैरागढ़ आज यदि संत हिरदाराम नगर से जाना जाता है तो यह एक ही वाक्य बहुत है उनकी महिमा का बखान करने के लिये। स्वामीजी अपने दोनों हाथों से

संत नगरी को आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं। आज वहां की बिल्डिंगें, कार्य, कार्यकर्ता जो कर रहे हैं वह वास्तव में अद्वितीय है। उन्होंने बताया कि वे बड़े ही वहां हुए हैं, स्वामी जी के दर्शन के बगैर उनको आनन्द ही नहीं आता था। वे दौड़ते हुये आते थे। वे पुष्कर होते थे या बैरागढ़ वे घर वालों को बताकर चल देते थे। स्वामीजी उनको 3 दिन ही आश्रम में रूकने की आज्ञा देते थे। वे कहते थे आप व्यवसायी हो, आपको ज्यादा नहीं रोकूंगा। उन्होंने बताया कि हमारी सात पीढ़ियां स्वामीजी से जुड़ी हुई हैं। उनके परदादा, दादी, पिताजी व स्वयं उनके बेटे अब उनके पोते भी स्वामीजी से जुड़े हुए है। उसके पूर्व की भी दो पीढ़ियां स्वामी जी से जुड़ी हुई थीं। हमारा उनका संबंध अविभाजित भारत के सिंध से ही उनके गुरू हरीराम जी से शुरू होता है। उन्होंने बताया कि वे हर रामधुनी पर यहां पर आते थे।

स्वामी जी को उनके तीन जन्मों का ज्ञान था। पिछले जन्म में वे क्या थे, इस जन्म में क्या हैं और अगले जन्म में क्या होंगे यह वे जानते थे। हमारे संत छिपे हुए गुदड़ी के लाल थे। उन्होंने कभी अपने आपको, अपनी शक्तियों को दिखाने का प्रयास नहीं किया।

संतो के जीवित रहते हुये ही उनके जन्म दिन पर बैरागढ़ का नाम संत हिरदाराम नगर करने वाले थे मगर संतों को जैसे ही मालूम हुआ तो उन्होंने उसका डटकर विरोध किया फिर वह प्रक्रिया रोक दी गई और संतों के महाप्रयाण के बाद कार्यान्वित की गई।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी ने कभी अपने आपको उजागर करने का प्रयास ही नहीं किया वे शान्ति प्रिय व्यक्ति थे। जब हमारे कुलगुरू के बारे में मैंने उनको बताया कि उनके मांसांहार और मंदिरापान के कारण मेरी श्रद्धा उनमें नहीं रहती तो उन्होंने बताया कि हमारे कुलगुरू ठकुर कुमारलाल जी उल्हासनगर वाले कभी अहमदाबाद आये थे उनकी तबीयत खराब हो गई थी । उनके सहयोग से उनको हास्पीटल में भर्ती करवाकर इलाज करवाया गया। मैने बताया कि अब वे परलोकगमन कर गये हैं। उन्होंने मुझे बताया कि उनको दिख रहा है कि आपके ऊपर और आपके परिवार की तीन पीढ़ियों पर स्वामीजी की नजर है। पहला तुम्हारे ऊपर, दूसरी तुम्हारी संतान के ऊपर जो सुन्दर रूप से सफलता के आयाम छू रहे हैं तीसरी पीढ़ी में तुम्हारे पोते–पोतियों के भविष्य को भी स्वामी जी कृपा भरी नजर से देख रहे हैं।

उनके बड़े पुत्र का मकर संक्रांति 14 जनवरी 22 को अचानक परलोकगमन हो गया था। उसके कारण भी वे बहुत व्यथित थे। मकर संक्रांति पर वह आश्रमों में जाता था। संक्रांति के प्रचलित व्यंजन लेकर अपने हाथों से खिलाकर आता था। हनुमान भाऊ (सुनील लालवानी) अहमदाबाद आये थे। उनको स्टेशन से लेकर आया था फिर रात्रि को छोड़ कर आया था। सबेरे अलार्म बजा तो उठा सहधर्मिणी को अलार्म बंद करने को कहा। उधर जिन जिन की आश्रमों में सेवा लगाई थी वे निकल चुके थे। न कोई बीमारी, न कोई संकेत और वह चल दिया। एक सपना हो गया। वे बहुत ही उदास थे।

उनकी आयु 71 वर्ष है। उनके चेम्बर में उनके पिताजी का फोटो भी लगा था जो 1985 में परमज्योति में विलीन हो गये थे। उनके घर के एक पूरे कमरे में संतों का मंदिर बना हुआ था जिसमें संतों से जुड़ी चीजें, उनके अमर वाक्य वगैरह दीवारों पर लगे हुये थे। संत जी जब भी आते थे तो उसी कमरे में रहते थे। आज भी वह कमरा संतों का ही है। सिद्धभाऊ भी जब संतों के साथ आते थे तो वे बाहर ही सोते थे। संतों के उस रूम में तख्त भी है जिस पर वे दरी बिछाकर बगैर गद्दे के सोते थे।

वे मानते हैं कि उनका घर संतों की कुटिया ही है जिसमें वे रह रहे हैं। उनके घर

में एक पुराना तख्त नीचे रखा हुआ था। उन्होंने बताया स्वामी जी जब आते थे उस तख्त का उपयोग ही करते थे।

मुझे यह ज्ञात था कि स्वामी जी अन्य गुरूओं की तरह किसी भी शिष्य को नामदान नहीं देते थे। मगर उन्होंने बताया कि स्वामीजी द्वारा उनको नामदान दिया गया था। यह बात मेरे अंतरतम को छू गई। यह बात सिद्धभाऊ, हनुमान भाऊ सभी को मालूम है। वे बोले कि वे संत हरीराम जी के समय से ही स्वामी जी से जुड़े हुये हैं। उनके गुरूभाई भीलवाड़ा के हरीसेवा धाम के संत सांईं सेवाराम ने उनका विवाह संपन्न करवाया था। स्वामी सेवाराम भी उनके परिवार में आते थे। उनका एक बड़ा मकान था जिसकी टैरेस पर चांदनी रात में सत्संग होता था प्रसाद बंटता था, उनका संयुक्त परिवार था। 24 व्यक्ति परिवार में थे स्वामीजी से आज्ञा लेकर ही परिवार का विघटन किया गया। वे सरदार नगर के मकान में 1990 में आये। संतों ने ही उनके मकान का डिजाइन पसंद किया था।

जाकर गढ्ढे में गिरो

श्री लोकूमल आसवानी
संत हिरदाराम नगर मो. 9685056977

मेरे ऊपर श्री लोकूमल आसवानी जी का वरद हस्त रहा है। उनको सदैव यह याद रहता है मैं नवयुवक परिषद का संस्थापक हूं, वे मेरे द्वारा किये गये सेवा कार्यो के लिये हमेशा प्रोत्साहित करते रहते है। वे उन लोगों में से है जिन्होंने कभी भी पद के लिये काम नहीं किया। बगैर पद की लालसा किये कार्य करने वाले विरले ही होते हैं। फिर भी वे संतों के द्वारा शुरू किए गये समस्त कार्यों में से अनेक कार्यो के संस्थापक हैं और उन्हें उनकी मर्जी के बगैर पद भी दे दिये जाते हैं ताकि उनके मार्गदर्शन में सेवा कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो सकें।

वे संतों के सेवा कार्यो से जुड़े रहते थे। नेत्र शिविर, यूरोलाजी शिविर, चिकित्सा शिविरों के रात्रि काल के वे प्रहरी रहते थे उनके मार्गदर्शन में ही रात्रि को जब लोग सेवा करने से हिचकिचाते थे, वे अपनी टीम के साथ सेवा में सतत लगे रहते थे क्यों कि उस समय आप्रेशन किये हुए मरीजों को सेवा की सबसे ज्यादा जरूरत होती थी। इसके पूर्व वे सिंधू समाज, जिसके द्वारा संचालित स्कूल कभी संत नगरी के अच्छे स्कूलों में गिना जाता था, के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। वह स्कूल उनके घर के सामने ही स्थित था। उनके द्वारा बेहटगांव में एक मंदिर भी स्थापित किया गया है। जहां ज्ञानोपयोगी एवं धार्मिक पुस्तकों का संग्रह है। आज 82 वर्ष की अवस्था में भी वे सक्रिय रूप से समाज सेवा हेतु तत्पर रहते हैं। वे म.प्र. विद्युत मंडल से अभियंता के पद से सेवानिवृत हुये है। सेवा निवृत्ति के 25 वर्ष के बाद भी वे स्वस्थ जीवन जीते हुये सेवा कार्यो में लगे हुए हैं।

स्वामी जी का उनके ऊपर हमेशा आशीर्वाद बना रहता था। उन्होंने एक प्रसंग का उल्लेख किया। स्वामी जी के दर्शन के लिये एक बुजुर्ग महिला आई। उसको सब ने कहा संतों को दूर से ही प्रणाम करना। मगर वह महिला स्वामी के पास गई और दंडवत प्रणाम करके स्वामीजी के सामने नतमस्तिक हो गई। स्वामी ने उनसे कहा जाकर गड्ढे में गिरो। महिला बाहर आकर जोर जोर से रोने लगी। लोगों ने उससे पूछा क्या हुआ। तो

उन्होंने स्वामीजी के द्वारा कहे गये शब्द दोहरा दिये। वे महिला को स्वामीजी के पास ले गये और उस वृद्ध महिला के जार जार रोने की बात बताई। उन्होंने उस वृद्ध महिला से कारण जाना तो हंसकर बोले मैंने कहा था जाकर गड्ढे में गिरो अर्थात उस गड्ढे में जहां अकूत खजाना तुम्हार इंतजार कर रहा है। ऐसे थे हमारे दयालु स्वामी जी।

पत्थर मत मारो

पारस जैन
साकेत नगर मो. 8319836435

पारस जैन जी संत नगरी में रहते थे। अब वे साकेत नगर में रहते हैं। मेरा उनका पारिवारिक संबंध 1965 से ही था वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक थे। उनकी माताजी का मेरे ऊपर विशेष स्नेह रहता था। आज अचानक सबेरे सबेरे उनसे मुलाकत हो गई मैंने उनसे अपने घर पर आने को कहा तो वे आ गये। उन्होंने अपने जीवन का स्वामीजी से संबंधित प्रसंग सुनाया।

वे छठी कक्षा में पढ़ते थे। यह 1965–66 की बात है। स्वामी जी की कुटिया के बगल में मास्टर महेन्द्र सक्सेना जी के सुपुत्र सुधीर जी के घर के पीछे चार आम के पौधे और एक जामुन का पौधा लगा हुआ था। बरसात आने वाली थी आम के पौधों और जामुन के पेड़ पर फल लगे हुये थे। मंजीत सिंह, सुधीर और उन्होंने आम और जामुन तोड़ने के लिये पत्थरों का इस्तेमाल किया आम तोड़ते तोड़ते एक पत्थर कुटिया के अंदर चला गया। वे लोग डर गये और घर पर जाकर छिपकर बैठ गये। इतने में कुटिया से एक सेवक आया और आकर उनको कहा स्वामी जी ने आपको बुलाया है। जाने के अलावा कोई चारा नहीं था तीनों वहां गये और जाकर दरी पर लाईन लगा कर बैठ गये और सोच रहे थे खूब डांट पड़ेगी।

थोड़ी देर बाद स्वामी जी बड़ी तस्तरी में भरकर ढेरों केरियां ले आये और उनको दीं ओर कहा पत्थर मत मारा करो। जब भी तुम्हें केरी, आम खाने की इच्छा हो आ जाया करो। कहां वे सोचकर गये थे डांट खाने को, यहां तो स्वामी जी स्वयं अपने हाथों से उनके लिये तस्तरी भरकर केरियां लाये थे। उन्होंने श्रद्धापूर्वक उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया।

सेवा ही मोक्ष द्वार

श्री गोबिन्द सतवानी
अहमदाबाद मो. 98250095043

स्वामी जी कहते थे गुरूवाणी पाठ किया करो। उनके द्वारा लगाये जाने वाले नेत्र शिविर, यूरोलाजी शिविर, चिकित्सा शिविरों में आये हुये रोगियों की सेवा करो। किसी भी पीर फकीर के चरणों में झुकने से कुछ नहीं होगा। सेवा ही आपको मोक्ष द्वार तक पहुंचायेगी। आपको मरीजों के मुख से निकले हुए आशीर्वाद नीरोगी रखेंगे। आप तो सेवा

करो बच्चों में भी सेवा के संस्कार डालो।

पहले उनका परिवार मांसाहारी था मगर संतों के संग में आने के बाद शाकाहारी बन गया। वे कहते थे घर में ही रहते हुए सत्संग करो। उन्होंने दर्वेश शीतलसिंह, श्री थांवरदास, भाई श्री घुमणसिंह का भी अपने वार्तालाप में जिक्र किया। उन्होंने कहा कि संत जी कहते थे सिद्धभाऊ आध्यात्मिक क्षेत्र में और समाज सेवक के रूप में बहुत ऊंचाइयां छुएंगे। गोबिन्द जी के पिताजी स्व. छत्तूमल जी गुरू ग्रंथसाहिब का नियमित पाठ करते थे। और एक महीने में वे पूरा ग्रंथ पढ़ कर संतों की आज्ञानुसार भोग लगाकर समापन करते थे। यह उनकी दिनचर्या सतत चलती रहती थी। उन्होंने गुरूग्रंथ साहिब के पंथ में प्रचलित 40 भागों का सिंधी में अनुवाद किया था जिसे संतों की आज्ञा से आइलदास हेमनानी के मार्गदर्शन में प्रकाशित किया गया है। गोबिन्द सतवानी जी और उनके भाई बेंकों में सेवारत हैं, उनकी बहन भी शासकीय सेवा में कार्यरत है। उनका परिवार उनके ननिहाल के कारण ही संतों के संपर्क में आया था। सिंध के भिरियन शहर से ही वे लोग संतों से जुड़े हुये थे। उनके नानाजी ही उनके पिताजी को संतों के पास ले गये थे।

संतों का आग्रह होता था कि गुरूवाणी को कंठस्थ करो। उठते, बैठते, सोते, जागते फिर वह आपके अंतःस्थल में स्वाभाविक रूप से चलने लगेगी आपको प्रयास करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी स्वामीजी के कारण ही उनका परिवार गुरुवाणी से जुड़ गया था। जब मैं उनके घर पहुंचा तो गोबिन्द जी की माताजी रहरासि साहिब का पाठ कर रही थीं जबान से बोलते हुए। उसके बाद उन्होंने कीरतन सोहिला का पाठ करने के बाद अरदास की। मैने भी उस समय उस पाठ का आनंद लिया। उनका परिवार संतों के सेवा कार्यों में भी जाता था शारीरिक, मानसिक, आर्थिक रूप से जुड़ा रहता था। मगर सेवा कार्यो से ज्यादा वे गुरूवाणी से जुड़े हुये थे। उनके पिताजी को प्रोटेस्ट की समस्या थी अतः स्वामी जी बार बार उनको आग्रह करते थे कि ज्यादा देर बैठकर पाठ मत किया करो। थोड़ी थोड़ी देर में विश्राम लेकर फिर पाठ पर बैठा करो। कणाह प्रसाद भी उनके पिताजी स्व.छत्तूमल जी अपने हाथ से बनाते थे। स्वामी जी कहते थे गुरूवाणी पढ़ने के लिए गुरूग्रंथ साहिब पर जितनी बार बैठो उतनी बार शरीर शुद्धि करके बैठो यह भी उनका विशेष आग्रह रहता था।

जिथे महर तेरी.....

श्रीमती मायादेवी जेठानी
अहमदाबाद मो. 9328230194

श्री भगवानदास जेठानी जी के घर पर नाश्ता करने के समय उनकी सहधर्मिणी से भी वार्तालाप हुआ। वे लोग हर तीन महीने में स्वामीजी से मिलने के लिये पुष्कर या संत नगरी, जहां पर भी संत जी होते थे, जाते थे। रेल्वे स्टेशन पर उतरते ही वे सीधे कुटिया पर जाते थे। नाश्ता, भोजन सब कुटिया की सात्विक प्रसादी के रूप में लेते थे। यह क्रम अनवरत चलता था।

बाद में उनकी इकलौती बेटी की सगाई स्वामीजी की सहमति लेकर ईदगाहहिल्स स्थित अतिप्रतिष्ठित परिवार श्री चन्द्र कुमार लालचंदानी के सुपुत्र से हुई।

सगाई होने पर पता नहीं स्वामी जी के दिल में क्या आया कि उन्होंने आज्ञा दी कि अब ज्यादा आना जाना मत करो, बेटी की ससुराल जो भोपाल में हो गई है। इसलिये उसके बाद आना कम हो गया। बाद में स्वामी जी भी जल्दी ही परलोक गमन कर गये थे। उनके दो बेटों की शादी संतो की सहमति से ही ऐसे परिवारों से हुई जो संतों से जुड़े हुए थे। एक बहू भोपाल से तो दूसरी भावनगर(गुजरात) से है। उनके दोनों बेटों को दो दो संतानें हैं। बड़ा बेटा अब व्यवसाय संभालने लगा है छोटे बेटे का बेटा इंजीनियरिंग कालेज में है। और बाकी दो 7वीं, 8वीं में पढ़ते हैं। वे आजकल समाज में बढ़ते प्रेम–विवाह प्रसंगों से नाराज़ नजर आई। उनके भाई मुरलीधर गोलानी जी सेवा केन्द्रों से जुड़े हैं। वे अहमदाबाद में स्थित स्वामी जी के कुबेरनगर सेवा केन्द्र के प्रभारी हैं। वे 12 बजे से शाम को देर तक सेवा कार्यो में तन्मयता से जुड़े रहते हैं। उस सेवा केन्द्र पर कंपयूटर सेंटर, कोचिंग सेन्टर, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, सिलाई केन्द्र, गरीबों को राशन वितरण, बच्चों को पढ़ाई के लिये स्कालरशिप इत्यादि देने के महायज्ञ होते रहते हैं।

उनके घर के सभी सदस्य अपनी सुविधानुसार घर के अंदर बने मंदिर में गुरूवाणी का पाठ और सत्संग करते रहते हैं। उनके दो बेटों का जन्म 1972,1974 और बेटी का जन्म 1984 में हुआ है।

साध की महिमा बेद न जानहि

श्री जयराम लालवानी
अशोक चौक जयपुर मो. 9414539321

श्री सुखमनी साहिब में श्री गुरू अर्जुनदेव जी की वाणी है आप फरमाते हैं–

''साध की महिमा बेद न जानहि, जेता सुनहि तेता बखिआनहि।।

यह बात शायद वर्ष 1996 की है, श्रद्धेय संत साहिब जी एक दिन अशोक चौक में दाल मिल वालों के घर विराजमान थे। सत्संग चल रहा था और संगत में करीब 20 प्रेमी बैठे थे। सांई जी मौज में थे स्वामी जी ने एक हाथ से दोनो आखें ढक ली थीं और इसी अवस्था में आपने एक महानुभाव को खड़ा किया जिनका नाम श्री भगवानदास रावतानी था, उनकी उम्र करीब 60 वर्ष थी। उनसे साईंजी ने पूछा भाई आपके श्री हरिराम साहिब जी जो सिन्ध में हालाणी दरबार में गुरूगद्दी पर थे, कौन लगते हैं? श्री रावतानी जी ने कहा वे मेरे दादाजी अथवा परदादा जी थे तब साईं जी ने कहा कि आप पहले सुबह उठकर श्री जपुजी का पाठ करते थे और आप अभी तीन सालों से पाठ नहीं कर रहे है, तो श्री भगवानदास जी ने यह स्वीकार किया तब साईंजी ने फरमाया, ''भाई आपके लिए श्री हरिराम साहिब जी का संदेश है आप यह कार्य (अमृतवेला में श्री जपुजी साहिब का पाठ करना) वापस चालू करें''। अब इस वार्तालाप एवम् संदेश के गूढ़ रहस्यों को इस प्रकार समझें।

''पहुंचे हुए सन्त सतगुरू देह त्यागने के बाद ऊपर के मण्डलों में सूक्ष्म रूप में विराजमान रहते हैं वहां रहकर भी भगवान के नाम में लीन रहते हैं और वहां पर रहकर अपने प्रियजनों, संगत और सेवकों की संभाल करते रहते हैं।''

श्री हरिराम साहिब जी करीब 70–80 वर्ष पूर्व बृह्मलीन हुए थे और ऊपर के मण्डलों में रहकर अपनी संगत, प्रियजनों की सम्भाल कर रहे थे। हमारे साईजी भी ऐसी

कमाई वाले पूर्ण संत सतगुरू थे जो देह में तो यहाँ विराजमान थे पर रुहानियत की दृष्टि से हर स्थान पर, चाहे वह इस पृथ्वी पर हो या ऊपर के मण्डलों में हो, जगह विराजमान हैं।

''ब्रह्मा गिआनी की मिति कउनु बखानै, ब्रह्मा गिआनी की गति ब्रह्मा गिआनी जानैं।।

''ब्रह्मा गिआनी सभ स्रिसटि का करता, ब्रह्मा गिआनी सद जीवै नही मरता।।

हर स्थान में प्रभु का करो दर्श

श्री सुरेश खियाणी

संत हिरदाराम नगर मो. 9425301540

यह वाक्या 1975 का है मेरा मित्र केवल टहिल्यानी मुझे संत जी की कुटिया पे ले गया उस समय मैं तृतीय वर्ष इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। सबेरे के 9–10 बजे का समय था सन्त जी पुरानी कुटिया के अन्दर कुछ लोगों से बात कर रहे थे। मैं और मेरा मित्र भीतर गये और कुटिया में एक तरफ बैठ गये। बातों–बातों में संत जी का ध्यान मेरी ओर गया और उन्होने केवल से जो अक्सर कुटिया में जाया करते थे, से पूछा यह कौन है? उन्होंने कहा यह मेरा मित्र है और इंजीनियरिंग का छात्र है। उन्होंने मेरी और दृष्टि कर कहा, बड़े इंजीनियर बनोगे मैंने अहंकार वश कहा बड़ा इंजीनियर क्या होता है? उस आयु में मेरा संत महात्माओं में विश्वास कम और इंजीनियरिंग पढ़ने का अहंकार ज्यादा था, संत जी ने मेरे प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। बात आई गई हो गयी।

तीन साल बाद अर्थात 1978 में जब मेरे इंजीनियरिंग के फाइनल ईयर के परिणाम घोषित हुए तो मैं हैरान था कि मेरा रिजल्ट रोक दिया गया था जब कालेज से जानना चाहा तो मालूम हुआ कि एक विषय के वायवा में मुझे 25 में से 5 ही नम्बर मिले हैं जबकि पास होने के लिये 13 नम्बर की आवश्यकता थी। चूंकि मेरी गिनती क्लास में टापर में होती थी अतः कालेज द्वारा मेरा रिजल्ट रोककर रखा गया था। कालेज प्रबंधन से पता चला कि मुझे वायवा में पुनः बैठना होगा और मेरे परिणाम सप्लीमेन्ट्री से उत्तीर्ण माने जायेंगे। सप्लीमेंट्री से पास विद्यार्थीयों को अच्छी कम्पनियों में नौकरी की पात्रता न होने के कारण मैं काफी चिन्तित हुआ। तभी अचानक मुझे सन्त जी का स्मरण हो आया और 1975 का वाकया याद आया। लगा कि हो न हो शायद उस समय मैंने सन्तजी का दिल दुखाया और ये उसीका परिणाम है यह ख्याल आते ही मैंने अपने मित्र केवल टहिल्याानी से संत जी से मिलवाने का आग्रह किया और रात्रि 8–8:30 बजे हम कुटिया पहुंचे। केवल के पास कुटिया के गेट की चाबी रहती थी अभी हम गेट तक पहुंचे ही थे कि संत जी की आवाज आई कौन है? केवल ने अपना परिचय दिया तभी संतजी दरवाजे पर आए मैंने 1975 का वाकया बयान कर अपने परीक्षा के परिणाम की जानकारी दी। संत जी ने कहा हां मुझे याद है तुमने गलत शब्द कहे थे पर मैं तो किसी का बुरा मानता नहीं। पर ठीक है तुम्हारी सप्लीमेंट्री आई है तो परीक्षा दे देना मैंने प्रार्थना की कि मैं बिना सप्लीमेन्ट्री के पास होना चाहता हूं। संत जी ने कहा अच्छा ठीक है जाओ। आगे कुछ दिनों में मुझे पत्ता चला कि मेरे परिणाम पर विचार करने हेतु कुलपति भोपाल यूनिवर्सिटी की अध्यक्षता में एक 3 सदस्यी समिति गठित की गई और मैं आश्चर्य चकित था कि समिति ने दो महीने पश्चात अपनी रिपोर्ट कालेज प्रबधन को सौंपी जिसमें मेरे वायवा के

5 नम्बर से बढ़कर 13 करने की अनुशसा की और कालेज प्रबंधन ने मुझे पास इन फर्स्ट डिवीजन (हॉनर) घोषित किया।

इस प्रकार का वाकया कालेज के इतिहास में पहली बार हुआ मैं समझ गया कि यह संत जी की कृपा का परिणाम है। तत्पश्चात 1978 से 1979 तक तकरीबन एक वर्ष मैं नियमित रूप से कुटिया जाता रहा। और संत जी के सान्निध्य में मैंने बहुत कुछ अनुभव किया जिसका वर्णन करना मेरे लिये कठिन है। फिर भी एक वाकया मैं जरूर बताना चाहूंगा। उन दिनों मुझे मलेरिया बुखार अक्सर आ जाता था (तकरीबन हर महीने)। ऐसे ही एक बार जब मैं बुखार के कारण 5–6 दिन कुटिया न जा सका तो संतजी ने सहज ही पूछ लिया क्यों नहीं आये मैंने बताया कि मैं मलेरिया बुखार से पीड़ित था और यह बुखार हर महीने आ रहा है। संतजी ने कुटिया में लगे नीम के पेड़ की ओर इशारा करके कहा कि वहां जाओ और कहो कि मलेरिया अब मत आना मैंने वैसा ही किया और आप शायद विश्वास न करें कि आज (2022) तक मुझे फिर कभी मलेरिया बुखार नहीं आया। जहां मुझे हर महीने कुनैन की गोलियां खानी पड़ती थीं अब 45 वर्ष बीत गये मुझे कभी कुनैन की गोली की आवश्यकता नहीं पड़ी।

संतजी का जीवन सेवा और भक्ति से परिपूर्ण था वे अक्सर कहते थे

जंहिं खाधी कसु तंहिं खे हर गाल्ह में ईंदो रसु, करे सेवा जपे नाम अंदर में पियो हसु,
हर हंधु प्रभु खे पियो पसु, न कडहिं माया मोह में फसु
उन जो लोक परलोक में थींदो जसु, इहो आहे हिरदाराम जे डसु।

(जिन्होंने खाया गम, उनको हर स्थिति में आयेगा रस, करके सेवा, नाम स्मरण अंतस्थल में हंस, हर स्थान में प्रभु का करो दर्श, न कभी माया मोह में फंस उनका लोक परलोक में होगा यश, यही है हिरदाराम जी का संदेश)

स्वामीजी का यात्रा टिकट

श्री प्रभुदास पाहूजा
उदयपुर मो. 9829897821

एक वैवाहिक समारोह में मेरा उदयपुर जाना हुआ, 4 दिन का समय था। श्री महेश कुमार दयारामानी ने बताया था कि उदयपुर में स्वामी जी के अनुयायी श्री प्रभुदास पाहूजा जी रहते हैं। न उनका मेरे पास पता था, न फोन नं.। मगर कहते हैं न कि खोजने से परमात्मा भी मिल जाता है तो मुझे जयपुर से मुकेश भाग्या जी के द्वारा उनका फोन नं. उपलब्ध हुआ वाट्सअप से और मैंने भी देर न करते हुए उन्हें फोन लगाकर मिलने का समय लिया। श्री पाहूजा जी 90 वर्ष की अवस्था पार कर चुके थे। कुछ दिन पहले ही घर में गिर गये थे, पांव में फ्रेक्चर हो गया था, उसके बाद भी मेरा मंतव्य जानकर उन्होंने आने के लिए कह दिया। मेरे होटल से 12 कि.मी. दूर, पहले एक मेजिक वाहन, फिर दूसरे मेजिक वाहन को बदलकर मैं। उनके पत्ते पर पैदल ही पहुंचा। मेरे चरण स्पर्श करने पर उन्होनें बड़ी आत्मीयता से मेरे चरण स्पर्श करने पर आशीर्वाद दिया। मुझे उनके बारे में कुछ भी पता नहीं थां, सिर्फ नाम सुना था, लगा कि कोई साधारण से सेवक होंगें। मगर उनका व्यक्तित्व तो मेरी सोच से कई गुना ऊंचा निकला।

शुरूआत हुई, उन्होंने स्वामी जी से मुलाकात का वर्णन करते हुए वह रेल्वे टिकट

भी दिखाई, जिस टिकट से स्वामी जी ने यात्रा की थी। यह 6 अगस्त 1999 का टिकट था, जिसका टिकट नंबर 065079865 था, कितनी तपस्या करके 23 वर्ष तक उन्होनें संभालकर रखा था। उसी टिकट के साथ स्वामी जी ने उनको एक 100 रू. का और एक 10 रू. का नोट भी दिया था। उसको भी उन्होंने अभी तक संभालकर रखा है। यह उनके स्वामी जी के प्रति अगाध श्रद्धा का परिचय था।

उनको शनशाईन ट्रस्ट, लेखराजमल मेलवाणी ट्रस्ट से सहायता मिलती है, संत जे.पी. वासवानी, संत हिरदाराम जी, स्वामी ब्रह्माानंद शास्त्री जी, स्वामी हंसराज जी (भीलवाड़ा), गुरू गोलवलकर, आचार्य रजनीश का भी उनको अपने घर में आतिथ्य करने का अवसर मिला है।

उनके द्वारा 12 रू. प्रति वर्गफुट (बारह रूपये) की दर से यूटीआई उदयपुर, टाऊन प्लानिंग विभाग से 7000 फुट भूखण्ड समाज के सहयोग से क्रय की थी। उस पर साधू वासवानी धर्मार्थ ट्रस्ट का निर्माण करवाया था उस समय लगभग 16 लाख रू. निर्माण पर खर्च किये गये थे। उसमें स्वामी जी का अथाह सहयोग रहा। उन्होनें कहा कि स्वामी जी का शतप्रतिशत सहयोग राशि दिलाने में रहा। इसमें दानदाताओं में श्री दयाल हरजानी, श्री विक्योमल सर्राफ और सिंगापुर के दानदाताओं का सहयोग मिला। आज उसमें स्कूल चलता है। यदि कोई बच्चा आर्थिक रूप से कमजोर होता है, तो उसके लिए 25 प्रतिशत फीस उनके पालकों द्वारा 25 प्रतिशत स्कूल के द्वारा माफ की जाती है, बाकी 50 प्रतिशत साधू वासवानी धर्मार्थ ट्रस्ट से दी जाती है। स्कूल से मासिक 50000 रू. का लाभ होता है, उसमें से 90 प्रतिशत राशि इन्हीं बालको के लिये खर्च की जाती है, बाकी 10 प्रतिशत अन्य दान कार्यों में। उस राशि से ट्रस्ट का कोई भी सदस्य चाय तक नहीं पीता है।

साधू वासवानी धर्मार्थ ट्रस्ट के भवन का लोकार्पण स्वामी संत हिरदाराम जी के पावन करकमलों से हुआ था। संत जी उस समय 4 दिन तक उनके घर पर ही रूके थे। उन्होनें स्वामी जी से पहली मुलाकात के बारे में बताया। वे पुष्कर के ब्रह्माा जी के मंदिर पर अपनी तीन बहुओं, बेटों, परिवार के साथ दर्शन के लिए गये थे। वहीं पर एक दर्शनार्थी से उनको संतो के बारे में पता चला उस समय प्रातः काल के 9:15 हुये थे और स्वामी जी के दर्शन का समय 10 बजे तक ही था। इसके पूर्व उन्होंने स्वामी जी का नाम भी नहीं सुना था। वे तुरन्त संतों के आश्रम पर पुष्कर पहुंचे और उनका आशीर्वाद उनको मिला। उनका कहना है योग संयोग से या प्रभू की नियति के कारण यह कार्य सम्पन्न हुआ। उन्होंने सन् 78–79 में उदयपुर में झूलेलाल भवन के निर्माण हेतु लोगों से अपील की। इन्दौर के जैकबाबाद सिंधी समुदाय से उन्हें एक लाख रू. का दान मिला। आज झूलेलाल भवन उदयपुर का जाना पहचाना स्थान है। स्वामी जी ने उन्हें कहा था, गांधीधाम में सिंधी कन्याओं का सामूहिक विवाह सम्मेलन होता है, आप जाकर देखकर आओ और फिर उदयपुर में आकर कार्य करो। वे वहां गये देख कर आये, वहां की कुछ व्यवस्थाओं में सुधार कर उदयपुर में यह कार्य शुरू करवाया और अभी तक 1000 से ज्यादा कन्याओं का विवाह संपन्न करा चुके हैं।

वे उदयपुर की नगर परिषद और उदयपुर टाऊन एंड डेव्हलमेंट संस्था के ट्रस्टी रह चुके है। वे उदयपुर सिंधी पंचायत के 18 वर्ष तक अध्यक्ष और 12 वर्ष तक सेक्रेटरी के पद का निर्वहन कर चुके हैं। स्वामी जी के संपर्क में आने के बाद ही उन्हें शिक्षा और सामूहिक विवाह कार्यक्रमों में रूचि जागी और उनको स्वामी जी की इच्छा के अनुसार ही

चला रहे हैं।

उनके द्वारा 25 नवम्बर को साधू टी एल वासवानी जी और 21 सितम्बर को स्वामी जी का जन्म दिन मनाया जाता है और जरूरतमंदों को शॉल, रजाई इत्यादि का वितरण किया जाता है। वे संतों को साक्षात देवता मानते हैं। उनके सान्निध्य में बैठने से सकारात्मक तरंगे निकलती है, जो उनमें नई ऊर्जा का संचार करती थीं। संत जी उनके घर में दूध, दलिया को बड़े चाव से खाते थे। उनका परिवार जैकबाबाद सिंध में रहता था। उनके पिता श्री भीमनदास पाहूजा भी सेवा कार्यों से जुड़े हुये थे। सिंध के जैकबाबाद में बहुत गर्मी पड़ती हैं। उन्होंने वहां पर एक हाल का निर्माण करवाकर उसमें पंखे लगवा रखे थे। लोग भरी दोपहर को गर्मी से निजात पाने के लिए वहां आकर लेट जाते थे।1946 में श्री माधवराव सदाशिवराव गोलकर (गुरूजी) के नाम से विख्यात राष्ट्रीय सेवक संघ के सर संघ चालक, जैकबाबाद में उनके घर पर ही रूके थे। हवन करवाया था। उनके पिता जी स्व. भीमनदास पाहूजा जी उस समय हिंदू महासभा के अध्यक्ष थे।

आचार्य रजनीश भी जब उदयपुर आये थे, तो उनका भोजन भी उनके घर से ही बनकर जाता था। वे आचार्य रजीनश की लेखनी के भी कायल दिखे। स्वामी जी की इच्छा अनुसार, उन्होंने यूरोलोजी कैम्प हेतु एक सप्ताह के अंदर ही उदयपुर में व्यवस्था की, जिसके लिये उदयपुर के दानदाताओं के साथ उदयपुर नगर परिषद् का भी सहयोग मिला। आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का निःशुल्क आपरेशन, भोजन–व्यवस्था दवा–दारू एवं उनको गांव से लाकर वापस छोड़ने की भी व्यवस्था की गई। इस केम्प में अमेरीका से आये निःस्वार्थभावी डाक्टरों की टीम का योगदान उल्लेखनीय है।

स्वामी जी ने उनको पुष्कर बुलाकर, वृद्धजनों की सेवा के लिये वृद्धाश्रम बनाने का संकल्प बताया। उदयपुर नगर परिषद से उसके लिये 100 रू. प्रतिवर्ग फुट की दर से 20000 बीस हजार वर्ग फीट का भूखण्ड आवंटित किया गया। स्वामी जी ने उसके लिये आशीर्वादस्वरूप उनको 11000 ग्यारह हजार रूपये दिये। आज वहां पर 20 रूम का वृद्धाश्रम बन चुका है। वहां पर वृद्धजनों को एक रूम में दो दो, को रखा जाता है उनके रहने खाने की निःशुल्क व्यवस्थायें की गई हैं। उन्होंनें बताया उस जैसा सुन्दर वृद्धाश्रम पूरे राजस्थान में कहीं पर भी नहीं है। अंत में उनके चरणों में शीश झुकाकर मैंने अपने आपको धन्य बना लिया। प्रभू उनको खुश रखे और वे पुनः पुनः अवतरित हो।

सेवा ही सबसे बड़ा पद

श्री हीरानन्द ज्ञानचन्दानी
सेक्रेट्री, शहीद हेमूकालाणी एज्यूकेशन सोसायटी,
संत हिरदाराम नगर मो. 7000889825

श्री हीरो भाऊ के नाम से प्रसिद्ध संत हिरदाराम नगर के उच्च कोटि के समाज सेवक के रूप में जाना पहचाना नाम है। वे 1982 से सेवा कार्यों से जुड़े। प्रारम्भ उनका, नगर की सामाजिक संस्था, नवयुवक परिषद जो साक्षरता के लिये काम करती हैं, से हुआ। और उनके मिलनसार प्रवृति, सौम्य तथा मुसकराते चेहरे, समाजसेवा से जुड़ी हुई उनके पिताजी की शख्सियत, लग्न एवं श्रद्धा से की हुई उनकी समाज सेवा की भावना

के कारण वे प्रख्यात होते गये। स्टेट बैंक आफ इंडिया में मैनेजर के पद से वे समय पूर्व ही सेवा निवृति लेकर, सेवा कार्यों के लिये समर्पित होते गये। आज वे समाज सेवा के शिखर पर हैं अनेक बार आग्रह करने के बाद 31 जुलाई, 2022 को उनका वाइस रिकार्ड 21 मिनट 58 सेकण्ड का प्राप्त हुआ और उसको आपके सामने रखते हुये मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मैं समाज सेवा में तिनका हूं पर वे समाज सेवा के आधार स्तम्भ हैं यह कहते हुए मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझ रहा हूं। आज नवयुवक परिषद जिस स्थिति में हैं, वह श्रेय उनकी कर्मठ टीम को ही जाता है। सबको साथ ले चलने की क्षमता हीरो भाऊ में ही है। उन्होंने बताया, परम श्रद्धेय, परमहंस, स्वामी हिरदाराम साहिब जी परम त्यागी संत थे उन्होंने न कोई मंदिर बनवाये, न ही उन्होंने कोई शिष्य ही बनाये। वे गरीबों को ही अपना मसीहा मानते थे। वे बड़े चाव से कहते थे, मैं भी सेवादार हूं, आप भी सेवादार है। उनका मूल मंत्र 'बूढ़े बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार, करें भावना से इनकी सेवा, पायेंगे लोक परलोक में सुख अपार'।

मगर इनमें से भी स्वामी जी शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति समर्पित रहते थे। वे कहते थे हम किसी को हमेशा राशन उपलब्ध नहीं करा सकते मगर उनको शिक्षा के लिये प्रेरित कर, सहायता कर अपने पैरों पर खड़ा कर सकते हैं। वह खुद अपने परिवार का सहारा बनेगा और फिर दूसरों को भी सहायता करेगा। इस क्षेत्र में संत नगरी में पहले ही नवयुवक परिषद के माध्यम से कार्य हो रहा था। स्वामी जी की प्रेरणा, सिद्धभाऊ के सहयोग से मुझे सेवा करने का अवसर मिला, उसके पूर्व में समाज सेवा में कहीं था ही नहीं।

उनके ऊपर सिद्धभाऊ का वरदहस्त रहा। वे स्वामी जी को स्वामी राम–कृष्ण परमहंस और सिद्ध भाऊ को स्वामी विवेकानन्द के तुल्य मानते हैं। वे हमारे जैसे कार्यकर्ताओं के लिये रोशन मीनार रहे हैं। सिद्धभाऊ टेलीफोन एक्सचेंज में टेलीफोन आपरेटर के रूप में कार्य करते थे, वे रात्रि कालीन पारी करते थे, सबेरे स्वामी जी की सेवा में लग जाते थे। उसके बाद वे और मैं साईकिल पर जा जा कर सेवा कार्यों के लिए दानदाता बनाते थे। अच्छे कार्य के कारण कार्यकार्ता भी जुड़ते गए। उसके बाद नवयुवक परिषद का विस्तार होता गया। वोकेशनल ट्रेनिंग के लिये भगवान कला केन्द्र, कैरियर बनाने के लिये स्वामी विवेकानन्द कैरियर अकादमी, बच्चों को अच्छी रोजगार व ज्ञानवर्धक किताबों के लिये नीतू मेहतानी लायब्रेरी का संचालन शुरू किया गया। जिससे हजारों बच्चों को रोजगार मिला। स्वामी जी के कार्यों का विस्तार गांधी नगर एवं करोंद क्षेत्रों में भी किया गया। गांधीनगर में गरीबों के फ्री में मकान बनाकर दिये गए। वहां पर अच्छे स्कूल भी खोले गए।

गांधीनगर में लक्ष्मीदेवी विक्योमल सर्राफ स्कूल, प्रेरणा किरण स्कूल, चाइल्ड होप स्कूल बनाये गये। करोंद में भी स्कूल का निर्माण किया गया। संत नगरी में भी साधू वासवानी स्कूल, नवयुवक सभा, विद्यासागर पब्लिक स्कूल, मिठी गोबिन्दराम व नवनिधि स्कूल संत हिरदाराम गर्ल्स कालेज, संत हिरदाराम प्राकृतिक एवं योग महाविद्यालय, एमबीए महाविद्यालय, खोले गये। स्कूल से लेकर महाविद्यालय सबके सब 500 मी. के व्यास में स्थापित हो गये। शासकीय स्तर पर बैरागढ़ में केवल प्राइमरी, मिडिल एवं हायरसेकेन्डरी स्कूल ही है।

उन्होंने सेवा कार्यों में विशेष रूप से महेश दयारामानी, कन्हैयालाल रामनानी का उल्लेख किया। शिक्षा के बाद स्वामी जी का ध्यान स्वास्थ्य के सेवा कार्यों पर केन्द्रित

संत नगरी को आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं। आज वहां की बिल्डिंगें, कार्य, कार्यकर्ता जो कर रहे हैं वह वास्तव में अद्वितीय है। उन्होंने बताया कि वे बड़े ही वहां हुए हैं, स्वामी जी के दर्शन के बगैर उनको आनन्द ही नहीं आता था। वे दौड़ते हुये आते थे। वे पुष्कर होते थे या बैरागढ़ वे घर वालों को बताकर चल देते थे। स्वामीजी उनको 3 दिन ही आश्रम में रूकने की आज्ञा देते थे। वे कहते थे आप व्यवसायी हो, आपको ज्यादा नहीं रोकूंगा। उन्होंने बताया कि हमारी सात पीढ़ियां स्वामीजी से जुड़ी हुई हैं। उनके परदादा, दादी, पिताजी व स्वयं उनके बेटे अब उनके पोते भी स्वामीजी से जुड़े हुए है। उसके पूर्व की भी दो पीढ़ियां स्वामी जी से जुड़ी हुई थीं। हमारा उनका संबंध अविभाजित भारत के सिंध से ही उनके गुरू हरीराम जी से शुरू होता है। उन्होंने बताया कि वे हर रामधुनी पर यहां पर आते थे।

स्वामी जी को उनके तीन जन्मों का ज्ञान था। पिछले जन्म में वे क्या थे, इस जन्म में क्या हैं और अगले जन्म में क्या होंगे यह वे जानते थे। हमारे संत छिपे हुए गुदड़ी के लाल थे। उन्होंने कभी अपने आपको, अपनी शक्तियों को दिखाने का प्रयास नहीं किया।

संतो के जीवित रहते हुये ही उनके जन्म दिन पर बैरागढ़ का नाम संत हिरदाराम नगर करने वाले थे मगर संतों को जैसे ही मालूम हुआ तो उन्होंने उसका डटकर विरोध किया फिर वह प्रक्रिया रोक दी गई और संतों के महाप्रयाण के बाद कार्यान्वित की गई।

उन्होंने बताया कि स्वामीजी ने कभी अपने आपको उजागर करने का प्रयास ही नहीं किया वे शान्ति प्रिय व्यक्ति थे। जब हमारे कुलगुरू के बारे में मैंने उनको बताया कि उनके मांसांहार और मंदिरापान के कारण मेरी श्रद्धा उनमें नहीं रहती तो उन्होंने बताया कि हमारे कुलगुरू ठकुर कुमारलाल जी उल्हासनगर वाले कभी अहमदाबाद आये थे उनकी तबीयत खराब हो गई थी । उनके सहयोग से उनको हास्पीटल में भर्ती करवाकर इलाज करवाया गया। मैने बताया कि अब वे परलोकगमन कर गये हैं। उन्होंने मुझे बताया कि उनको दिख रहा है कि आपके ऊपर और आपके परिवार की तीन पीढ़ियों पर स्वामीजी की नजर है। पहला तुम्हारे ऊपर, दूसरी तुम्हारी संतान के ऊपर जो सुन्दर रूप से सफलता के आयाम छू रहे हैं तीसरी पीढ़ी में तुम्हारे पोते–पोतियों के भविष्य को भी स्वामी जी कृपा भरी नजर से देख रहे हैं।

उनके बड़े पुत्र का मकर संक्रांति 14 जनवरी 22 को अचानक परलोकगमन हो गया था। उसके कारण भी वे बहुत व्यथित थे। मकर संक्रांति पर वह आश्रमों में जाता था। संक्रांति के प्रचलित व्यंजन लेकर अपने हाथों से खिलाकर आता था। हनुमान भाऊ (सुनील लालवानी) अहमदाबाद आये थे। उनको स्टेशन से लेकर आया था फिर रात्रि को छोड़ कर आया था। सबेरे अलार्म बजा तो उठा सहधर्मिणी को अलार्म बंद करने को कहा। उधर जिन जिन की आश्रमों में सेवा लगाई थी वे निकल चुके थे। न कोई बीमारी, न कोई संकेत और वह चल दिया। एक सपना हो गया। वे बहुत ही उदास थे।

उनकी आयु 71 वर्ष है। उनके चेम्बर में उनके पिताजी का फोटो भी लगा था जो 1985 में परमज्योति में विलीन हो गये थे। उनके घर के एक पूरे कमरे में संतों का मंदिर बना हुआ था जिसमें संतों से जुड़ी चीजें, उनके अमर वाक्य वगैरह दीवारों पर लगे हुये थे। संत जी जब भी आते थे तो उसी कमरे में रहते थे। आज भी वह कमरा संतों का ही है। सिद्धभाऊ भी जब संतों के साथ आते थे तो वे बाहर ही सोते थे। संतों के उस रूम में तख्त भी है जिस पर वे दरी बिछाकर बगैर गद्दे के सोते थे।

वे मानते हैं कि उनका घर संतों की कुटिया ही है जिसमें वे रह रहे हैं। उनके घर

में एक पुराना तख्त नीचे रखा हुआ था। उन्होंने बताया स्वामी जी जब आते थे उस तख्त का उपयोग ही करते थे।

मुझे यह ज्ञात था कि स्वामी जी अन्य गुरूओं की तरह किसी भी शिष्य को नामदान नहीं देते थे। मगर उन्होंने बताया कि स्वामीजी द्वारा उनको नामदान दिया गया था। यह बात मेरे अंतरतम को छू गई। यह बात सिद्धभाऊ, हनुमान भाऊ सभी को मालूम है। वे बोले कि वे संत हरीराम जी के समय से ही स्वामी जी से जुड़े हुये हैं। उनके गुरूभाई भीलवाड़ा के हरीसेवा धाम के संत सांई सेवाराम ने उनका विवाह संपन्न करवाया था। स्वामी सेवाराम भी उनके परिवार में आते थे। उनका एक बड़ा मकान था जिसकी टैरेस पर चांदनी रात में सत्संग होता था प्रसाद बंटता था, उनका संयुक्त परिवार था। 24 व्यक्ति परिवार में थे स्वामीजी से आज्ञा लेकर ही परिवार का विघटन किया गया। वे सरदार नगर के मकान में 1990 में आये। संतों ने ही उनके मकान का डिजाइन पसंद किया था।

जाकर गढ्ढे में गिरो

श्री लोकूमल आसवानी
संत हिरदाराम नगर मो. 9685056977

मेरे ऊपर श्री लोकूमल आसवानी जी का वरद हस्त रहा है। उनको सदैव यह याद रहता है मैं नवयुवक परिषद का संस्थापक हूं, वे मेरे द्वारा किये गये सेवा कार्यो के लिये हमेशा प्रोत्साहित करते रहते है। वे उन लोगों में से है जिन्होंने कभी भी पद के लिये काम नहीं किया। बगैर पद की लालसा किये कार्य करने वाले विरले ही होते हैं। फिर भी वे संतों के द्वारा शुरू किए गये समस्त कार्यों में से अनेक कार्यो के संस्थापक हैं और उन्हें उनकी मर्जी के बगैर पद भी दे दिये जाते हैं ताकि उनके मार्गदर्शन में सेवा कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो सकें।

वे संतों के सेवा कार्यो से जुड़े रहते थे। नेत्र शिविर, यूरोलाजी शिविर, चिकित्सा शिविरों के रात्रि काल के वे प्रहरी रहते थे उनके मार्गदर्शन में ही रात्रि को जब लोग सेवा करने से हिचकिचाते थे, वे अपनी टीम के साथ सेवा में सतत लगे रहते थे क्यों कि उस समय आप्रेशन किये हुए मरीजों को सेवा की सबसे ज्यादा जरूरत होती थी। इसके पूर्व वे सिंधू समाज, जिसके द्वारा संचालित स्कूल कभी संत नगरी के अच्छे स्कूलों में गिना जाता था, के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। वह स्कूल उनके घर के सामने ही स्थित था। उनके द्वारा बेहटगांव में एक मंदिर भी स्थापित किया गया है। जहां ज्ञानोपयोगी एवं धार्मिक पुस्तकों का संग्रह है। आज 82 वर्ष की अवस्था में भी वे सक्रिय रूप से समाज सेवा हेतु तत्पर रहते हैं। वे म.प्र. विद्युत मंडल से अभियंता के पद से सेवानिवृत हुये है। सेवा निवृत्ति के 25 वर्ष के बाद भी वे स्वस्थ जीवन जीते हुये सेवा कार्यो में लगे हुए हैं।

स्वामी जी का उनके ऊपर हमेशा आशीर्वाद बना रहता था। उन्होंने एक प्रसंग का उल्लेख किया। स्वामी जी के दर्शन के लिये एक बुजुर्ग महिला आई। उसको सब ने कहा संतों को दूर से ही प्रणाम करना। मगर वह महिला स्वामी के पास गई और दंडवत प्रणाम करके स्वामीजी के सामने नतमस्तिक हो गई। स्वामी ने उनसे कहा जाकर गड्ढे में गिरो। महिला बाहर आकर जोर जोर से रोने लगी। लोगों ने उससे पूछा क्या हुआ। तो

उन्होंने स्वामीजी के द्वारा कहे गये शब्द दोहरा दिये। वे महिला को स्वामीजी के पास ले गये और उस वृद्ध महिला के जार जार रोने की बात बताई। उन्होंने उस वृद्ध महिला से कारण जाना तो हंसकर बोले मैंने कहा था जाकर गड्ढे में गिरो अर्थात उस गड्ढे में जहां अकूत खजाना तुम्हार इंतजार कर रहा है। ऐसे थे हमारे दयालु स्वामी जी।

पत्थर मत मारो

पारस जैन

साकेत नगर मो. 8319836435

पारस जैन जी संत नगरी में रहते थे। अब वे साकेत नगर में रहते हैं। मेरा उनका पारिवारिक संबंध 1965 से ही था वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक थे। उनकी माताजी का मेरे ऊपर विशेष स्नेह रहता था। आज अचानक सबेरे सबेरे उनसे मुलाकत हो गई मैंने उनसे अपने घर पर आने को कहा तो वे आ गये। उन्होंने अपने जीवन का स्वामीजी से संबंधित प्रसंग सुनाया।

वे छठी कक्षा में पढ़ते थे। यह 1965–66 की बात है। स्वामी जी की कुटिया के बगल में मास्टर महेन्द्र सक्सेना जी के सुपुत्र सुधीर जी के घर के पीछे चार आम के पौधे और एक जामुन का पौधा लगा हुआ था। बरसात आने वाली थी आम के पौधों और जामुन के पेड़ पर फल लगे हुये थे। मंजीत सिंह, सुधीर और उन्होंने आम और जामुन तोड़ने के लिये पत्थरों का इस्तेमाल किया आम तोड़ते तोड़ते एक पत्थर कुटिया के अंदर चला गया। वे लोग डर गये और घर पर जाकर छिपकर बैठ गये। इतने में कुटिया से एक सेवक आया और आकर उनको कहा स्वामी जी ने आपको बुलाया है। जाने के अलावा कोई चारा नहीं था तीनों वहां गये और जाकर दरी पर लाईन लगा कर बैठ गये और सोच रहे थे खूब डांट पड़ेगी।

थोड़ी देर बाद स्वामी जी बड़ी तस्तरी में भरकर ढेरों केरियां ले आये और उनको दीं ओर कहा पत्थर मत मारा करो। जब भी तुम्हें केरी, आम खाने की इच्छा हो आ जाया करो। कहां वे सोचकर गये थे डांट खाने को, यहां तो स्वामी जी स्वयं अपने हाथों से उनके लिये तस्तरी भरकर केरियां लाये थे। उन्होंने श्रद्धापूर्वक उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया।

सेवा ही मोक्ष द्वार

श्री गोबिन्द सतवानी

अहमदाबाद मो. 98250095043

स्वामी जी कहते थे गुरूवाणी पाठ किया करो। उनके द्वारा लगाये जाने वाले नेत्र शिविर, यूरोलाजी शिविर, चिकित्सा शिविरों में आये हुये रोगियों की सेवा करो। किसी भी पीर फकीर के चरणों में झुकने से कुछ नहीं होगा। सेवा ही आपको मोक्ष द्वार तक पहुंचायेगी। आपको मरीजों के मुख से निकले हुए आशीर्वाद नीरोगी रखेंगे। आप तो सेवा

करो बच्चों में भी सेवा के संस्कार डालो।

पहले उनका परिवार मांसाहारी था मगर संतों के संग में आने के बाद शाकाहारी बन गया। वे कहते थे घर में ही रहते हुए सत्संग करो। उन्होंने दर्वेश शीतलसिंह, श्री थांवरदास, भाई श्री घुमणसिंह का भी अपने वार्तालाप में जिक्र किया। उन्होंने कहा कि संत जी कहते थे सिद्धभाऊ आध्यात्मिक क्षेत्र में और समाज सेवक के रूप में बहुत ऊंचाइयां छुएंगे। गोबिन्द जी के पिताजी स्व. छत्तूमल जी गुरू ग्रंथसाहिब का नियमित पाठ करते थे। और एक महीने में वे पूरा ग्रंथ पढ़ कर संतों की आज्ञानुसार भोग लगाकर समापन करते थे। यह उनकी दिनचर्या सतत चलती रहती थी। उन्होंने गुरूग्रंथ साहिब के पंथ में प्रचलित 40 भागों का सिंधी में अनुवाद किया था जिसे संतों की आज्ञा से आइलदास हेमनानी के मार्गदर्शन में प्रकाशित किया गया है। गोबिन्द सतवानी जी और उनके भाई बेंकों में सेवारत हैं, उनकी बहन भी शासकीय सेवा में कार्यरत है। उनका परिवार उनके ननिहाल के कारण ही संतों के संपर्क में आया था। सिंध के भिरियन शहर से ही वे लोग संतों से जुड़े हुये थे। उनके नानाजी ही उनके पिताजी को संतों के पास ले गये थे।

संतों का आग्रह होता था कि गुरूवाणी को कंठस्थ करो। उठते, बैठते, सोते, जागते फिर वह आपके अंतःस्थल में स्वाभाविक रूप से चलने लगेगी आपको प्रयास करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी स्वामीजी के कारण ही उनका परिवार गुरुवाणी से जुड़ गया था। जब मैं उनके घर पहुंचा तो गोबिन्द जी की माताजी रहरासि साहिब का पाठ कर रही थीं जबान से बोलते हुए। उसके बाद उन्होंने कीरतन सोहिला का पाठ करने के बाद अरदास की। मैने भी उस समय उस पाठ का आनंद लिया। उनका परिवार संतों के सेवा कार्यों में भी जाता था शारीरिक, मानसिक, आर्थिक रूप से जुड़ा रहता था। मगर सेवा कार्यो से ज्यादा वे गुरूवाणी से जुड़े हुये थे। उनके पिताजी को प्रोटेस्ट की समस्या थी अतः स्वामी जी बार बार उनको आग्रह करते थे कि ज्यादा देर बैठकर पाठ मत किया करो। थोड़ी थोड़ी देर में विश्राम लेकर फिर पाठ पर बैठा करो। कणाह प्रसाद भी उनके पिताजी स्व.छत्तूमल जी अपने हाथ से बनाते थे। स्वामी जी कहते थे गुरूवाणी पढ़ने के लिए गुरूग्रंथ साहिब पर जितनी बार बैठो उतनी बार शरीर शुद्धि करके बैठो यह भी उनका विशेष आग्रह रहता था।

जिथे महर तेरी.....

श्रीमती मायादेवी जेठानी
अहमदाबाद मो. 9328230194

श्री भगवानदास जेठानी जी के घर पर नाश्ता करने के समय उनकी सहधर्मिणी से भी वार्तालाप हुआ। वे लोग हर तीन महीने में स्वामीजी से मिलने के लिये पुष्कर या संत नगरी, जहां पर भी संत जी होते थे, जाते थे। रेल्वे स्टेशन पर उतरते ही वे सीधे कुटिया पर जाते थे। नाश्ता, भोजन सब कुटिया की सात्विक प्रसादी के रूप में लेते थे। यह क्रम अनवरत चलता था।

बाद में उनकी इकलौती बेटी की सगाई स्वामीजी की सहमति लेकर ईदगाहहिल्स स्थित अतिप्रतिष्ठित परिवार श्री चन्द्र कुमार लालचंदानी के सुपुत्र से हुई।

सगाई होने पर पता नहीं स्वामी जी के दिल में क्या आया कि उन्होंने आज्ञा दी कि अब ज्यादा आना जाना मत करो, बेटी की ससुराल जो भोपाल में हो गई है। इसलिये उसके बाद आना कम हो गया। बाद में स्वामी जी भी जल्दी ही परलोक गमन कर गये थे। उनके दो बेटों की शादी सतो की सहमति से ही ऐसे परिवारों से हुई जो संतों से जुड़े हुए थे। एक बहू भोपाल से तो दूसरी भावनगर(गुजरात) से है। उनके दोनों बेटों को दो दो संतानें हैं। बड़ा बेटा अब व्यवसाय संभालने लगा है छोटे बेटे का बेटा इंजीनियरिंग कालेज में है। और बाकी दो 7वीं, 8वीं में पढ़ते हैं। वे आजकल समाज में बढ़ते प्रेम–विवाह प्रसंगों से नाराज़ नजर आई। उनके भाई मुरलीधर गोलानी जी सेवा केन्द्रों से जुड़े हैं। वे अहमदाबाद में स्थित स्वामी जी के कुबेरनगर सेवा केन्द्र के प्रभारी हैं। वे 12 बजे से शाम को देर तक सेवा कार्यो में तन्मयता से जुड़े रहते हैं। उस सेवा केन्द्र पर कंपयूटर सेंटर, कोचिंग सेन्टर, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, सिलाई केन्द्र, गरीबों को राशन वितरण, बच्चों को पढ़ाई के लिये स्कालरशिप इत्यादि देने के महायज्ञ होते रहते हैं।

उनके घर के सभी सदस्य अपनी सुविधानुसार घर के अंदर बने मंदिर में गुरूवाणी का पाठ और सत्संग करते रहते हैं। उनके दो बेटों का जन्म 1972,1974 और बेटी का जन्म 1984 में हुआ है।

साध की महिमा बेद न जानहि

श्री जयराम लालवानी

अशोक चौक जयपुर मो. 9414539321

श्री सुखमनी साहिब में श्री गुरू अर्जुनदेव जी की वाणी है आप फरमाते हैं–

''साध की महिमा बेद न जानहि, जेता सुनहि तेता बखिआनहि।।

यह बात शायद वर्ष 1996 की है, श्रद्धेय संत साहिब जी एक दिन अशोक चौक में दाल मिल वालों के घर विराजमान थे। सत्संग चल रहा था और संगत में करीब 20 प्रेमी बैठे थे। सांई जी मौज में थे स्वामी जी ने एक हाथ से दोनो आखें ढक ली थीं और इसी अवस्था में आपने एक महानुभाव को खड़ा किया जिनका नाम श्री भगवानदास रावतानी था, उनकी उम्र करीब 60 वर्ष थी। उनसे साईंजी ने पूछा भाई आपके श्री हरिराम साहिब जी जो सिन्ध में हालाणी दरबार में गुरूगद्दी पर थे, कौन लगते हैं? श्री रावतानी जी ने कहा वे मेरे दादाजी अथवा परदादा जी थे तब साईं जी ने कहा कि आप पहले सुबह उठकर श्री जपुजी का पाठ करते थे और आप अभी तीन सालों से पाठ नहीं कर रहे है, तो श्री भगवानदास जी ने यह स्वीकार किया तब साईंजी ने फरमाया, ''भाई आपके लिए श्री हरिराम साहिब जी का संदेश है आप यह कार्य (अमृतवेला में श्री जपुजी साहिब का पाठ करना) वापस चालू करें''। अब इस वार्तालाप एवम् संदेश के गूढ़ रहस्यों को इस प्रकार समझें।

''पहुंचे हुए सन्त सतगुरू देह त्यागने के बाद ऊपर के मण्डलों में सूक्ष्म रूप में विराजमान रहते हैं वहां रहकर भी भगवान के नाम में लीन रहते हैं और वहां पर रहकर अपने प्रियजनों, संगत और सेवकों की संभाल करते रहते हैं।''

श्री हरिराम साहिब जी करीब 70–80 वर्ष पूर्व बृह्मलीन हुए थे और ऊपर के मण्डलों में रहकर अपनी संगत, प्रियजनों की सम्भाल कर रहे थे। हमारे साईजी भी ऐसी

कमाई वाले पूर्ण संत सतगुरू थे जो देह में तो यहाँ विराजमान थे पर रुहानियत की दृष्टि से हर स्थान पर, चाहे वह इस पृथ्वी पर हो या ऊपर के मण्डलों में हो, जगह विराजमान हैं।

''ब्रह्मा गिआनी की मिति कउनु बखानै, ब्रह्मा गिआनी की गति ब्रह्मा गिआनी जानैं।।

''ब्रह्मा गिआनी सभ स्रिसटि का करता, ब्रह्मा गिआनी सद जीवै नही मरता।।

हर स्थान में प्रभु का करो दर्श

श्री सुरेश खियाणी

संत हिरदाराम नगर मो. 9425301540

यह वाक्या 1975 का है मेरा मित्र केवल टहिल्यानी मुझे संत जी की कुटिया पे ले गया उस समय मैं तृतीय वर्ष इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। सबेरे के 9–10 बजे का समय था सन्त जी पुरानी कुटिया के अन्दर कुछ लोगों से बात कर रहे थे। मैं और मेरा मित्र भीतर गये और कुटिया में एक तरफ बैठ गये। बातों–बातों में संत जी का ध्यान मेरी ओर गया और उन्होने केवल से जो अक्सर कुटिया में जाया करते थे, से पूछा यह कौन है? उन्होंने कहा यह मेरा मित्र है और इंजीनियरिंग का छात्र है। उन्होंने मेरी और दृष्टि कर कहा, बड़े इंजीनियर बनोगे मैंने अहंकार वश कहा बड़ा इंजीनियर क्या होता है? उस आयु में मेरा संत महात्माओं में विश्वास कम और इंजीनियरिंग पढ़ने का अहंकार ज्यादा था, संत जी ने मेरे प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। बात आई गई हो गयी।

तीन साल बाद अर्थात 1978 में जब मेरे इंजीनियरिंग के फाइनल ईयर के परिणाम घोषित हुए तो मैं हैरान था कि मेरा रिजल्ट रोक दिया गया था जब कालेज से जानना चाहा तो मालूम हुआ कि एक विषय के वायवा में मुझे 25 में से 5 ही नम्बर मिले हैं जबकि पास होने के लिये 13 नम्बर की आवश्यकता थी। चूंकि मेरी गिनती क्लास में टापर में होती थी अतः कालेज द्वारा मेरा रिजल्ट रोककर रखा गया था। कालेज प्रबंधन से पता चला कि मुझे वायवा में पुनः बैठना होगा और मेरे परिणाम सप्लीमेन्ट्री से उत्तीर्ण माने जायेंगे। सप्लीमेंट्री से पास विद्यार्थीयों को अच्छी कम्पनियों में नौकरी की पात्रता न होने के कारण मैं काफी चिन्तित हुआ। तभी अचानक मुझे सन्त जी का स्मरण हो आया और 1975 का वाकया याद आया। लगा कि हो न हो शायद उस समय मैंने सन्तजी का दिल दुखाया और ये उसीका परिणाम है यह ख्याल आते ही मैंने अपने मित्र केवल टहिल्याानी से संत जी से मिलवाने का आग्रह किया और रात्रि 8–8:30 बजे हम कुटिया पहुंचे। केवल के पास कुटिया के गेट की चाबी रहती थी अभी हम गेट तक पहुंचे ही थे कि संत जी की आवाज आई कौन है? केवल ने अपना परिचय दिया तभी संतजी दरवाजे पर आए मैंने 1975 का वाकया बयान कर अपने परीक्षा के परिणाम की जानकारी दी। संत जी ने कहा हां मुझे याद है तुमने गलत शब्द कहे थे पर मैं तो किसी का बुरा मानता नहीं। पर ठीक है तुम्हारी सप्लीमेंट्री आई है तो परीक्षा दे देना मैंने प्रार्थना की कि मैं बिना सप्लीमेन्ट्री के पास होना चाहता हूं। संत जी ने कहा अच्छा ठीक है जाओ। आगे कुछ दिनों में मुझे पत्ता चला कि मेरे परिणाम पर विचार करने हेतु कुलपति भोपाल यूनिवर्सिटी की अध्यक्षता में एक 3 सदस्यी समिति गठित की गई और मैं आश्चर्य चकित था कि समिति ने दो महीने पश्चात अपनी रिपोर्ट कालेज प्रबधन को सौंपी जिसमें मेरे वायवा के

5 नम्बर से बढ़कर 13 करने की अनुशसा की और कालेज प्रबंधन ने मुझे पास इन फर्स्ट डिवीजन (हॉनर) घोषित किया।

इस प्रकार का वाकया कालेज के इतिहास में पहली बार हुआ मैं समझ गया कि यह संत जी की कृपा का परिणाम है। तत्पश्चात 1978 से 1979 तक तकरीबन एक वर्ष मैं नियमित रूप से कुटिया जाता रहा। और संत जी के सान्निध्य में मैंने बहुत कुछ अनुभव किया जिसका वर्णन करना मेरे लिये कठिन है। फिर भी एक वाकया मैं जरूर बताना चाहूंगा। उन दिनों मुझे मलेरिया बुखार अक्सर आ जाता था (तकरीबन हर महीने)। ऐसे ही एक बार जब मैं बुखार के कारण 5–6 दिन कुटिया न जा सका तो संतजी ने सहज ही पूछ लिया क्यों नहीं आये मैंने बताया कि मैं मलेरिया बुखार से पीड़ित था और यह बुखार हर महीने आ रहा है। संतजी ने कुटिया में लगे नीम के पेड़ की ओर इशारा करके कहा कि वहां जाओ और कहो कि मलेरिया अब मत आना मैंने वैसा ही किया और आप शायद विश्वास न करें कि आज (2022) तक मुझे फिर कभी मलेरिया बुखार नहीं आया। जहां मुझे हर महीने कुनैन की गोलियां खानी पड़ती थीं अब 45 वर्ष बीत गये मुझे कभी कुनैन की गोली की आवश्यकता नहीं पड़ी।

संतजी का जीवन सेवा और भक्ति से परिपूर्ण था वे अक्सर कहते थे

जंहिं खाधी कसु तंहिं खे हर ग़ाल्ह में ईंदो रसु, करे सेवा जपे नाम अंदर में पियो हसु,
हर हंधु प्रभु खे पियो पसु, न कड॒हिं माया मोह में फसु
उन जो लोक परलोक में थींदो जसु, इहो आहे हिरदाराम जे ड॒सु।

(जिन्होंने खाया गम, उनको हर स्थिति में आयेगा रस, करके सेवा, नाम स्मरण अंतस्थल में हंस, हर स्थान में प्रभु का करो दर्श, न कभी माया मोह में फंस उनका लोक परलोक में होगा यश, यही है हिरदाराम जी का संदेश)

स्वामीजी का यात्रा टिकट

श्री प्रभुदास पाहूजा
उदयपुर मो. 9829897821

एक वैवाहिक समारोह में मेरा उदयपुर जाना हुआ, 4 दिन का समय था। श्री महेश कुमार दयारामानी ने बताया था कि उदयपुर में स्वामी जी के अनुयायी श्री प्रभुदास पाहूजा जी रहते हैं। न उनका मेरे पास पता था, न फोन नं.। मगर कहते हैं न कि खोजने से परमात्मा भी मिल जाता है तो मुझे जयपुर से मुकेश भाग्या जी के द्वारा उनका फोन नं. उपलब्ध हुआ वाट्सअप से और मैंने भी देर न करते हुए उन्हें फोन लगाकर मिलने का समय लिया। श्री पाहूजा जी 90 वर्ष की अवस्था पार कर चुके थे। कुछ दिन पहले ही घर में गिर गये थे, पांव में फ्रेक्चर हो गया था, उसके बाद भी मेरा मंतव्य जानकर उन्होंने आने के लिए कह दिया। मेरे होटल से 12 कि.मी. दूर, पहले एक मेजिक वाहन, फिर दूसरे मेजिक वाहन को बदलकर मैं। उनके पत्ते पर पैदल ही पहुंचा। मेरे चरण स्पर्श करने पर उन्होनें बड़ी आत्मीयता से मेरे चरण स्पर्श करने पर आशीर्वाद दिया। मुझे उनके बारे में कुछ भी पता नहीं थां, सिर्फ नाम सुना था, लगा कि कोई साधारण से सेवक होंगें। मगर उनका व्यक्तित्व तो मेरी सोच से कई गुना ऊंचा निकला।

शुरूआत हुई, उन्होंने स्वामी जी से मुलाकात का वर्णन करते हुए वह रेल्वे टिकट

भी दिखाई, जिस टिकट से स्वामी जी ने यात्रा की थी। यह 6 अगस्त 1999 का टिकट था, जिसका टिकट नंबर 065079865 था, कितनी तपस्या करके 23 वर्ष तक उन्होनें संभालकर रखा था। उसी टिकट के साथ स्वामी जी ने उनको एक 100 रू. का और एक 10 रू. का नोट भी दिया था। उसको भी उन्होंने अभी तक संभालकर रखा है। यह उनके स्वामी जी के प्रति अगाध श्रद्धा का परिचय था।

उनको शनशाईन ट्रस्ट, लेखराजमल मेलवाणी ट्रस्ट से सहायता मिलती है, संत जे.पी. वासवानी, संत हिरदाराम जी, स्वामी ब्रह्माानंद शास्त्री जी, स्वामी हंसराज जी (भीलवाड़ा), गुरू गोलवलकर, आचार्य रजनीश का भी उनको अपने घर में आतिथ्य करने का अवसर मिला है।

उनके द्वारा 12 रू. प्रति वर्गफुट (बारह रूपये) की दर से यूटीआई उदयपुर, टाऊन प्लानिंग विभाग से 7000 फुट भूखण्ड समाज के सहयोग से क्रय की थी। उस पर साधू वासवानी धर्मार्थ ट्रस्ट का निर्माण करवाया था उस समय लगभग 16 लाख रू. निर्माण पर खर्च किये गये थे। उसमें स्वामी जी का अथाह सहयोग रहा। उन्होनें कहा कि स्वामी जी का शतप्रतिशत सहयोग राशि दिलाने में रहा। इसमें दानदाताओं में श्री दयाल हरजानी, श्री विक्योमल सर्राफ और सिंगापुर के दानदाताओं का सहयोग मिला। आज उसमें स्कूल चलता है। यदि कोई बच्चा आर्थिक रूप से कमजोर होता है, तो उसके लिए 25 प्रतिशत फीस उनके पालकों द्वारा 25 प्रतिशत स्कूल के द्वारा माफ की जाती है, बाकी 50 प्रतिशत साधू वासवानी धर्मार्थ ट्रस्ट से दी जाती है। स्कूल से मासिक 50000 रू. का लाभ होता है, उसमें से 90 प्रतिशत राशि इन्हीं बालको के लिये खर्च की जाती है, बाकी 10 प्रतिशत अन्य दान कार्यों में। उस राशि से ट्रस्ट का कोई भी सदस्य चाय तक नहीं पीता है।

साधू वासवानी धर्मार्थ ट्रस्ट के भवन का लोकार्पण स्वामी संत हिरदाराम जी के पावन करकमलों से हुआ था। संत जी उस समय 4 दिन तक उनके घर पर ही रूके थे। उन्होनें स्वामी जी से पहली मुलाकात के बारे में बताया। वे पुष्कर के ब्रह्माा जी के मंदिर पर अपनी तीन बहुओं, बेटों, परिवार के साथ दर्शन के लिए गये थे। वहीं पर एक दर्शनार्थी से उनको संतो के बारे में पता चला उस समय प्रातः काल के 9:15 हुये थे और स्वामी जी के दर्शन का समय 10 बजे तक ही था। इसके पूर्व उन्होंने स्वामी जी का नाम भी नहीं सुना था। वे तुरन्त संतों के आश्रम पर पुष्कर पहुंचे और उनका आशीर्वाद उनको मिला। उनका कहना है योग संयोग से या प्रभू की नियति के कारण यह कार्य सम्पन्न हुआ। उन्होंने सन् 78–79 में उदयपुर में झूलेलाल भवन के निर्माण हेतु लोगों से अपील की। इन्दौर के जैकबाबाद सिंधी समुदाय से उन्हें एक लाख रू. का दान मिला। आज झूलेलाल भवन उदयपुर का जाना पहचाना स्थान है। स्वामी जी ने उन्हें कहा था, गांधीधाम में सिंधी कन्याओं का सामूहिक विवाह सम्मेलन होता है, आप जाकर देखकर आओ और फिर उदयपुर में आकर कार्य करो। वे वहां गये देख कर आये, वहां की कुछ व्यवस्थाओं में सुधार कर उदयपुर में यह कार्य शुरू करवाया और अभी तक 1000 से ज्यादा कन्याओं का विवाह संपन्न करा चुके हैं।

वे उदयपुर की नगर परिषद और उदयपुर टाऊन एंड डेव्हलमेंट संस्था के ट्रस्टी रह चुके है। वे उदयपुर सिंधी पंचायत के 18 वर्ष तक अध्यक्ष और 12 वर्ष तक सेक्रेटरी के पद का निर्वहन कर चुके हैं। स्वामी जी के संपर्क में आने के बाद ही उन्हें शिक्षा और सामूहिक विवाह कार्यक्रमों में रूचि जागी और उनको स्वामी जी की इच्छा के अनुसार ही

चला रहे हैं।

उनके द्वारा 25 नवम्बर को साधू टी एल वासवानी जी और 21 सितम्बर को स्वामी जी का जन्म दिन मनाया जाता है और जरूरतमंदों को शॉल, रजाई इत्यादि का वितरण किया जाता है। वे संतों को साक्षात देवता मानते हैं। उनके सान्निध्य में बैठने से सकारात्मक तरंगे निकलती है, जो उनमें नई ऊर्जा का संचार करती थीं। संत जी उनके घर में दूध, दलिया को बड़े चाव से खाते थे। उनका परिवार जैकबाबाद सिंध में रहता था। उनके पिता श्री भीमनदास पाहूजा भी सेवा कार्यों से जुड़े हुये थे। सिंध के जैकबाबाद में बहुत गर्मी पड़ती हैं। उन्होंने वहां पर एक हाल का निर्माण करवाकर उसमें पंखे लगवा रखे थे। लोग भरी दोपहर को गर्मी से निजात पाने के लिए वहां आकर लेट जाते थे।1946 में श्री माधवराव सदाशिवराव गोलकर (गुरूजी) के नाम से विख्यात राष्ट्रीय सेवक संघ के सर संघ चालक, जैकबाबाद में उनके घर पर ही रूके थे। हवन करवाया था। उनके पिता जी स्व. भीमनदास पाहूजा जी उस समय हिंदू महासभा के अध्यक्ष थे।

आचार्य रजनीश भी जब उदयपुर आये थे, तो उनका भोजन भी उनके घर से ही बनकर जाता था। वे आचार्य रजीनश की लेखनी के भी कायल दिखे। स्वामी जी की इच्छा अनुसार, उन्होंने यूरोलोजी कैम्प हेतु एक सप्ताह के अंदर ही उदयपुर में व्यवस्था की, जिसके लिये उदयपुर के दानदाताओं के साथ उदयपुर नगर परिषद् का भी सहयोग मिला। आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का निःशुल्क आपरेशन, भोजन–व्यवस्था दवा–दारू एवं उनको गांव से लाकर वापस छोड़ने की भी व्यवस्था की गई। इस केम्प में अमेरीका से आये निःस्वार्थभावी डाक्टरों की टीम का योगदान उल्लेखनीय है।

स्वामी जी ने उनको पुष्कर बुलाकर, वृद्धजनों की सेवा के लिये वृद्धाश्रम बनाने का संकल्प बताया। उदयपुर नगर परिषद से उसके लिये 100 रू. प्रतिवर्ग फुट की दर से 20000 बीस हजार वर्ग फीट का भूखण्ड आवंटित किया गया। स्वामी जी ने उसके लिये आशीर्वादस्वरूप उनको 11000 ग्यारह हजार रूपये दिये। आज वहां पर 20 रूम का वृद्धाश्रम बन चुका है। वहां पर वृद्धजनों को एक रूम में दो दो, को रखा जाता है उनके रहने खाने की निःशुल्क व्यवस्थायें की गई हैं। उन्होंनें बताया उस जैसा सुन्दर वृद्धाश्रम पूरे राजस्थान में कहीं पर भी नहीं है। अंत में उनके चरणों में शीश झुकाकर मैंने अपने आपको धन्य बना लिया। प्रभू उनको खुश रखे और वे पुनः पुनः अवतरित हो।

सेवा ही सबसे बड़ा पद

श्री हीरानन्द ज्ञानचन्दानी
सेक्रेट्री, शहीद हेमूकालाणी एज्यूकेशन सोसायटी,
संत हिरदाराम नगर मो. 7000889825

श्री हीरो भाऊ के नाम से प्रसिद्ध संत हिरदाराम नगर के उच्च कोटि के समाज सेवक के रूप में जाना पहचाना नाम है। वे 1982 से सेवा कार्यों से जुड़े। प्रारम्भ उनका, नगर की सामाजिक संस्था, नवयुवक परिषद जो साक्षरता के लिये काम करती हैं, से हुआ। और उनके मिलनसार प्रवृति, सौम्य तथा मुसकराते चेहरे, समाजसेवा से जुड़ी हुई उनके पिताजी की शख्सियत, लग्न एवं श्रद्धा से की हुई उनकी समाज सेवा की भावना

के कारण वे प्रख्यात होते गये। स्टेट बैंक आफ इंडिया में मैनेजर के पद से वे समय पूर्व ही सेवा निवृति लेकर, सेवा कार्यों के लिये समर्पित होते गये। आज वे समाज सेवा के शिखर पर हैं अनेक बार आग्रह करने के बाद 31 जुलाई, 2022 को उनका वाइस रिकार्ड 21 मिनट 58 सेकण्ड का प्राप्त हुआ और उसको आपके सामने रखते हुये मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मैं समाज सेवा में तिनका हूं पर वे समाज सेवा के आधार स्तम्भ हैं यह कहते हुए मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझ रहा हूं। आज नवयुवक परिषद जिस स्थिति में हैं, वह श्रेय उनकी कर्मठ टीम को ही जाता है। सबको साथ ले चलने की क्षमता हीरो भाऊ में ही है। उन्होंने बताया, परम श्रद्धेय, परमहंस, स्वामी हिरदाराम साहिब जी परम त्यागी संत थे उन्होंने न कोई मंदिर बनवाये, न ही उन्होंने कोई शिष्य ही बनाये। वे गरीबों को ही अपना मसीहा मानते थे। वे बड़े चाव से कहते थे, मैं भी सेवादार हूं, आप भी सेवादार है। उनका मूल मंत्र 'बूढ़े बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार, करें भावना से इनकी सेवा, पायेंगे लोक परलोक में सुख अपार'।

मगर इनमें से भी स्वामी जी शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति समर्पित रहते थे। वे कहते थे हम किसी को हमेशा राशन उपलब्ध नहीं करा सकते मगर उनको शिक्षा के लिये प्रेरित कर, सहायता कर अपने पैरों पर खड़ा कर सकते हैं। वह खुद अपने परिवार का सहारा बनेगा और फिर दूसरों को भी सहायता करेगा। इस क्षेत्र में संत नगरी में पहले ही नवयुवक परिषद के माध्यम से कार्य हो रहा था। स्वामी जी की प्रेरणा, सिद्धभाऊ के सहयोग से मुझे सेवा करने का अवसर मिला, उसके पूर्व में समाज सेवा में कहीं था ही नहीं।

उनके ऊपर सिद्धभाऊ का वरदहस्त रहा। वे स्वामी जी को स्वामी राम–कृष्ण परमहंस और सिद्ध भाऊ को स्वामी विवेकानन्द के तुल्य मानते हैं। वे हमारे जैसे कार्यकर्ताओं के लिये रोशन मीनार रहे हैं। सिद्धभाऊ टेलीफोन एक्सचेंज में टेलीफोन आपरेटर के रूप में कार्य करते थे, वे रात्रि कालीन पारी करते थे, सबेरे स्वामी जी की सेवा में लग जाते थे। उसके बाद वे और मैं साईकिल पर जा जा कर सेवा कार्यों के लिए दानदाता बनाते थे। अच्छे कार्य के कारण कार्यकार्ता भी जुड़ते गए। उसके बाद नवयुवक परिषद का विस्तार होता गया। वोकेशनल ट्रेनिंग के लिये भगवान कला केन्द्र, कैरियर बनाने के लिये स्वामी विवेकानन्द कैरियर अकादमी, बच्चों को अच्छी रोजगार व ज्ञानवर्धक किताबों के लिये नीतू मेहतानी लायब्रेरी का संचालन शुरू किया गया। जिससे हजारों बच्चों को रोजगार मिला। स्वामी जी के कार्यों का विस्तार गांधी नगर एवं करोंद क्षेत्रों में भी किया गया। गांधीनगर में गरीबों के फ्री में मकान बनाकर दिये गए। वहां पर अच्छे स्कूल भी खोले गए।

गांधीनगर में लक्ष्मीदेवी विक्योमल सर्राफ स्कूल, प्रेरणा किरण स्कूल, चाइल्ड होप स्कूल बनाये गये। करोंद में भी स्कूल का निर्माण किया गया। संत नगरी में भी साधू वासवानी स्कूल, नवयुवक सभा, विद्यासागर पब्लिक स्कूल, मिठी गोबिन्दराम व नवनिधि स्कूल संत हिरदाराम गर्ल्स कालेज, संत हिरदाराम प्राकृतिक एवं योग महाविद्यालय, एमबीए महाविद्यालय, खोले गये। स्कूल से लेकर महाविद्यालय सबके सब 500 मी. के व्यास में स्थापित हो गये। शासकीय स्तर पर बैरागढ़ में केवल प्राइमरी, मिडिल एवं हायरसेकेन्डरी स्कूल ही है।

उन्होंने सेवा कार्यों में विशेष रूप से महेश दयारामानी, कन्हैयालाल रामनानी का उल्लेख किया। शिक्षा के बाद स्वामी जी का ध्यान स्वास्थ्य के सेवा कार्यों पर केन्द्रित

रहा। पहले वे नेत्र शिविर लगवाते थे। 1984 में भोपाल की 'यूनियन कार्बाइड' से गैस रिसाव कांड के बाद उन्होंने, सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय का निर्माण करवाया। उन्होनें आरोग्य केन्द्र (प्राकृतिक एवं योग चिकित्सालय) की भी स्थपना करवाई, जो अपने आप में अद्वितीय है। सेवा सदन मे कैम्पों का 12 महीने संचालन होता रहता है कार्यकर्ता बगैर किसी लाभ–लालच के सेवा करके आपने आपको भाग्यवान समझते हैं। स्वामी जी के सहयोग से संत नगर, गांधीनगर एवं गांवो में पानी की समस्या से निपटने के लिये बोरिंग करवाई गई। आज भी वे कार्य कर रही है। जिसका ढाई लाख रूपये बिजली का बिल नवुयुवक परिषद देती है।

इसके अलावा कन्याओं के विवाह के लिए सहायता, गर्भवती माताओं को प्रसव पूर्व पोषण आहार, विधवाओं को हर महीने राशन वितरण, किसी गरीब परिवार में हुए निधन पर सहायता राशि, किसी असहाय मरीज को चिकित्सा सहायता के लिये धनराशि संबंधी सेवा कार्य किए जाते हैं।

देश–विदेश में आई प्राकृतिक आपदाओं में भी स्वामी जी ने दिल खोलकर सेवा कार्यों के लिये दानदाताओं से आग्रह कर उनके खजाने खुलवा दिये थे। संत नगरी में एक समय पर सरकार द्वारा आवंटित भूखण्डो पर झुग्गी झोपड़ियां बन गई थी। शासकीय स्तर पर हल होता न देखकर स्वामी जी के सहयोग से उनको उचित स्थान पर विस्थापित कर, असामाजिक गतिविधियों से संत नगरी को बचाया गया। सेवाक्षेत्र में जो कार्यकर्ता हैं वे अपनी आय में से यथाशक्तिदान भी देते हैं, वे तन, मन, धन तीनों से सेवा करते हैं। इस कारण ही सेवा कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

यदि हमें परमात्मां की प्राप्ति करनी है तो सेवा ही वह मार्ग है जिसे करने पर हमारा मन निर्मल होता जाता है, जब हृदय निर्मल होगा तो ही भक्ति में मन लगेगा और परम पिता परमेश्वर की प्राप्ति होगी। आज भी स्वामी जी सूक्ष्म रूप से हमारे साथ हैं यह अनुभूति आज भी सेवादारों को होती है उनकी कृपा से अनेक कार्य संपन्न हो रहे हैं। सिद्धभाऊ के बारे में उन्होंने कहा, वे आज भी अपने आपको गुरू नहीं मानते वे आज भी सेवादार के रूप में कार्य करते हैं। हमें कभी कोई समस्या आती है तो उनको बताते हैं वे उसका समाधान तुरंत ही बता देते हैं। वे बालब्रह्माचारी हैं। स्वामी जी के मार्गदर्शन में देश के अनेक हिस्सों में भी सेवा कार्य संचालित होते हैं। जहां–जहां स्वामी जी के अनुयायी हैं वहां सेवा की भागीरथी न बहे ऐसा हो ही नहीं सकता। उन्होंने अंत में कामना की कि वे और सभी सेवादार जीवन के अंतिम श्वास तक सेवा के कार्य में निरन्तर पहले से ज्यादा और ज्यादा जुड़ते जायें।

सेवा बनाती है ऊर्जावान

श्री श्रीचंद लोकवानी जी
मालवीय नगर जयपुर मो. 9413238534

श्रीचंद लोकवानी जी को मैने वाटसअप के द्वारा संस्मरण भेजने का आग्रह किया था, मगर उनसे मोबाइल पर बातचीत हुई। वे जीव सेवा समिति जयपुर के संस्थापक सदस्यों में से हैं। आज वे जयपुर जीव सेवा समिति के अध्यक्ष हैं। और 85 वर्ष की आयु में भी सक्रिय रूप से स्वामीजी द्वारा बताये सेवा मार्गों को पूर्ण निष्ठा से क्रियान्वित कर रहे

हैं। जयपुर में वे बच्चों को शिक्षण सामग्री का वित्तरण, नेत्र शिविरों, यूरोलाजी शिविरों का आयोजन भी करते हैं। वे संत हिरदाराम नगर में रह चुके हैं। वे भोपाल के ए.जी.आफिस में नौकरी करते थे और वहीं से सेवानिवृत्त हुए। वे अपने छोटे भाई आवत लोकवानी जी के साथ पहली बार पुष्कर स्वामीजी के आश्रम में गये थे। उस समय वे मासांहार, मदिरापान करते थे। बाद में उनकी यह आदत समाप्त हो गई।

संत हिरदाराम नगर में रहते हुए उनके द्वारा यहां चंचल चौराहे पर स्थापित शिवालय की नींव रखी गई थीं। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से भी संत नगरी में जुड़े रहे। वे कहते थे कि इस उम्र में भी वे अपनी समस्त ऊर्जा से सेवा कार्य से जुड़े हुए हैं, कोई रोग नहीं, कोई दवाई नहीं, उनकी संतानों में 4 बेटियां हैं जो कि अच्छे–अच्छे पदों पर सेवारत्त हैं। यह स्वामी जी की कृपा का ही फल है।

तू कर उसकी फिक्र वो करेगा तेरी फिक्र

श्री हीरालाल बादलानी

मालवीय नगर जयपुर मो. 9414360477

एक ही संदेश पर अपनी स्मृतियां भेजकर श्री हीरालाल जी ने अपनी स्वामीजी में अटूट आस्था का परिचय दिया। उनको शत् शत् वंदन उन्होंने अपनी आवाज में रिकार्डकर मुझे आडियो भेजा उसके अनुसार, स्वामी जी कहते हैं

'तू कर उसकी फिक्र वो करेगा तेरी फिक्र'

अपने आखिरी श्वास तक सेवा के कार्य करते हुये ही परम पिता परमेश्वर की ज्योति में लीन हो जाऊं यही तमन्ना है। उन्होंने बताया स्वामी जी कहते थे

'उठाओगे हाथ में झंडा, पड़ेगा उसका तुम्हारे ऊपर डंडा'

इसीलिये कभी भी नेतागिरी वाला भाव मन में नहीं आया। उन्होंने श्री दयाल मूलचंदानी जी की बहुत तारीफ करते हुए बताया कि, एक मौनी बाबा के कहने पर जयपुर में वर्षा यज्ञ कराया था जिस दिन पूर्ण आहुति डाली गई। उसी दिन जयपुर में झमाझम बारिश हुई। कंवर नगर में तो लोगों के घरों में पानी भर गया। दूसरे वर्ष फिर मौनी बाबा ने यज्ञ करने को कहा, मगर साधक खर्च करने में आनाकानी कर रहे थे। स्वामीजी तक यह बात पहुंची, तो उन्होंने कहा यज्ञ कौन करा रहा हैं। सबने कहा आप। तो उन्होनें कहा फिर फिक्र क्यों कर रहे हो। फिर सबने मिलकर यज्ञ करवाया। 12 लाख का खर्चा आया था। इस यज्ञ होने के 2 वर्ष पहले ही स्वामी जी ने पुष्कर–कुटिया में सिद्धभाऊ को बोला था मुझे जयपुर में बड़े बड़े पांडाल लगे दिख रहे हैं। वहां पर बड़े बड़े यज्ञ हो रहे हैं। हम उनकी यह बात समझ नहीं सके थे मगर फिर साक्षात होते हुये देखा। मौनीबाबा बहुत सिद्ध पुरूष थे, वे बोलते नहीं थे। कोई उनके सामने जाता था तो वे स्लेट पर लिख कर उनका वर्तमान, भूत, भविष्य बता देते थे। यज्ञ के लिये वे हवन कुंड बनाते थे। 70 साधू वे वहां लाते थे जो यज्ञ संपन्न करवाते थे। यज्ञ सबेरे 3 घंटे होता था। गाय के शुद्ध घी से आहूतियां डाली जाती थी। उस समय वृंदावन से भी कथा वाचक को आमंत्रित किया था। उस आनन्द की अनुभूति आज तक होती है। 700 दिनों तक अखण्ड रामायण का पाठ चला था।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

डॉ. अनिल चोट
ज्योतिष केन्द्र का संचा
संत हिरदाराम नगर मो. 9827269

स्व. किशनचन्द चोटरानी जी का नाम आज भी संत नगरी में संतों के अन भक्तों में याद किया जाता है। उनके मार्गदर्शन में अनेक सेवा कार्य हुये। वे ट्रस्टी के में भी सेवा कार्यों में स्वामी जी द्वारा नामित व्यक्ति थे। उनके सुपुत्र स्व. दीपक चोटर जी नवयुवक परिषद के चुने हुये सक्रिय कार्यकर्ताओं में थे। छात्र उत्थान समिति वर्त में नवयुवक परिषद में सम्माहित संस्था के वे संस्थापक सदस्यों में थे। मिलनसार, के लिये समर्पित। उनकी माताजी भी देवीतुल्य थी अनेक बार उनसे मुलाकात ह पुत्रवत उनका स्नेह सदैव मुझे मिला। उनके दूसरे सुपुत्र महेश जी जो आशापुरा दर से जुड़े हुये हैं और अनिल चोटरानी जी मासिक, वार्षिक रामधुनी के आज भी संयोजव साथ ही अन्नक्षेत्र संचालन भी उनके द्वारा होता है।

वार्तालाप शुरू हुआ तो पता चला कि जब स्वामी जी ने अखण्ड रामधुनी करने विचार मन में लाया और संत नगरी में चलने वाली सामाजिक संस्था नवयुवक सभा सामने इसको शुरू करने का प्रस्ताव रखा तो सदस्यों को लगा कि यह कैसे संभव है 7 दिन तक अखण्ड रामधुनी का संचालन हो सकेगा। एक दिन की भगत लगती है तो 12–1 बजे तक मंडप खाली हो जाता है यहां तो सात दिन 24 घंटे सिर्फ – 'हरे राम राम राम राम हरे हरे, हेरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे' का जाप कैसे लगातार सकता है। संयोजन कैसे होगा, व्यवस्थाएं कैसे होंगी सदस्य एकमत नहीं थे। उन लगा यह संभव ही नहीं है। मगर उनके पिताजी ने सोचा कि शुरू करना चाहिये चली तो एक दो दिन बाद बंद कर देंगे। यह सोचकर वे आये किसी को बताया न जब सदस्य स्वामी जी के पास आये तो स्वामीजी ने कहा मुझे पता है कि आप ल सहमत नहीं हो पा रहे हो, मगर आप में से एक कोई है जो इसको शुरू करने का मन संकल्प लेकर आया है। कौन संकल्प लेकर आया है मुझे नहीं मालुम मगर एक है। स्वयं आगे आये तो उनके पिताजी स्व. किशनचंद चोटरानी जी आगे आये और बोल व्यवस्था देखूंगा और इस तरह रामधुनी की शुरूआत बैरागढ़ में 1965 में हुई। दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में शुरू होती थी और अक्सर नये वर्ष के पहले दिन सम होती थी। 1965 में शुरू हुआ यह क्रम 57 वर्ष तक निरंतर जारी रहा। बाद में संतों ब्रह्मालीन होने के बाद अब यह क्रम 20 दिसम्बर से शुरू होकर 26 दिसम्बर तक चल है। क्योंकि संत जी 21 दिसम्बर को वेंकुण्ठ धाम में जाकर ब्रह्मालीन हो गये थे।

उन्होनें बताया 1990 में जब रामधुनी को शुरू हुये 25वां वर्ष था वहां पर स्व जी आये और आते से ही उन्होंने कहा आज मैं पुत्र बांटने के लिये बैलगाड़ी भर कर ल हूं। रामधुनी में जो भी व्यक्ति एक हजार रूपये दान में देगा प्रभू उसको पुत्र अवश्य दे 1990 में 1000 रू. काफी बड़ी राशि थी मगर अनेक श्रद्धालुओं ने 1000 रूपये की र संतों को दी। परिणाम जानने के लिये एक वर्ष बाद लोग रामधुनी पर आये तो वे उन गोद में पुत्ररत्न लेकर आये थे। स्वामी जी के कहे वचन पत्थर की लकीर होते थे।

उन्होंने बताया कि कुटिया के एक सेवक के पुत्र ने डिप्लोमा इन इंजीनियरिं पास किया था। स्वामी जी ने उनकी तरफ देखकर कहा यह बच्चा बैंक में अधिक



संत जी ध्यान मुद्रा में





संत जी गंगा स्नान करते हुए



ंत जी देश विदेश से आए अनुयाईयों के साथ



संत जी



कबीर पंथी श्री अभिलाष जी महाराज संतो को प्रणाम करते

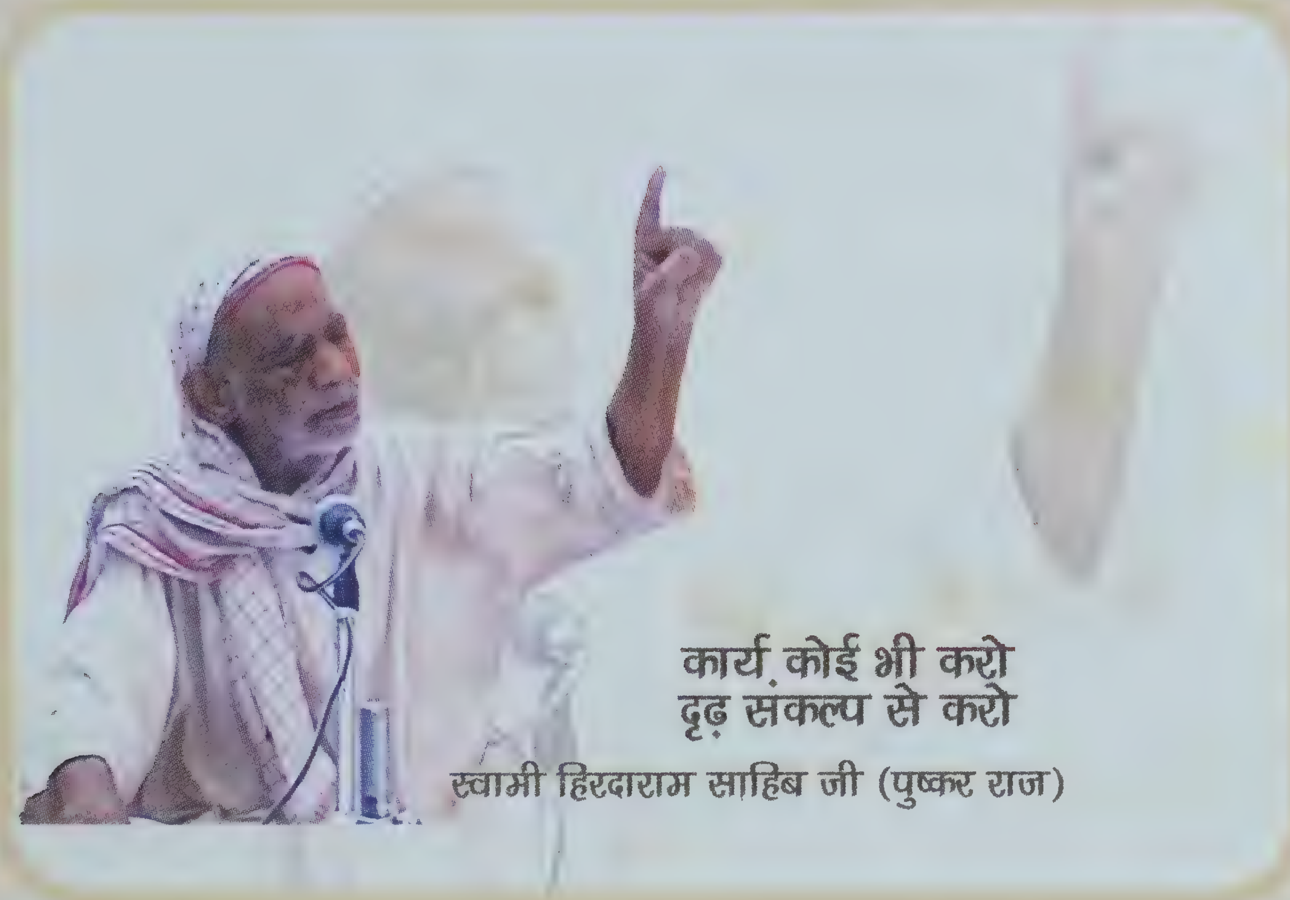


संत जी आशापुरा दरबार की संचालिका बहन गीता देवी के साथ



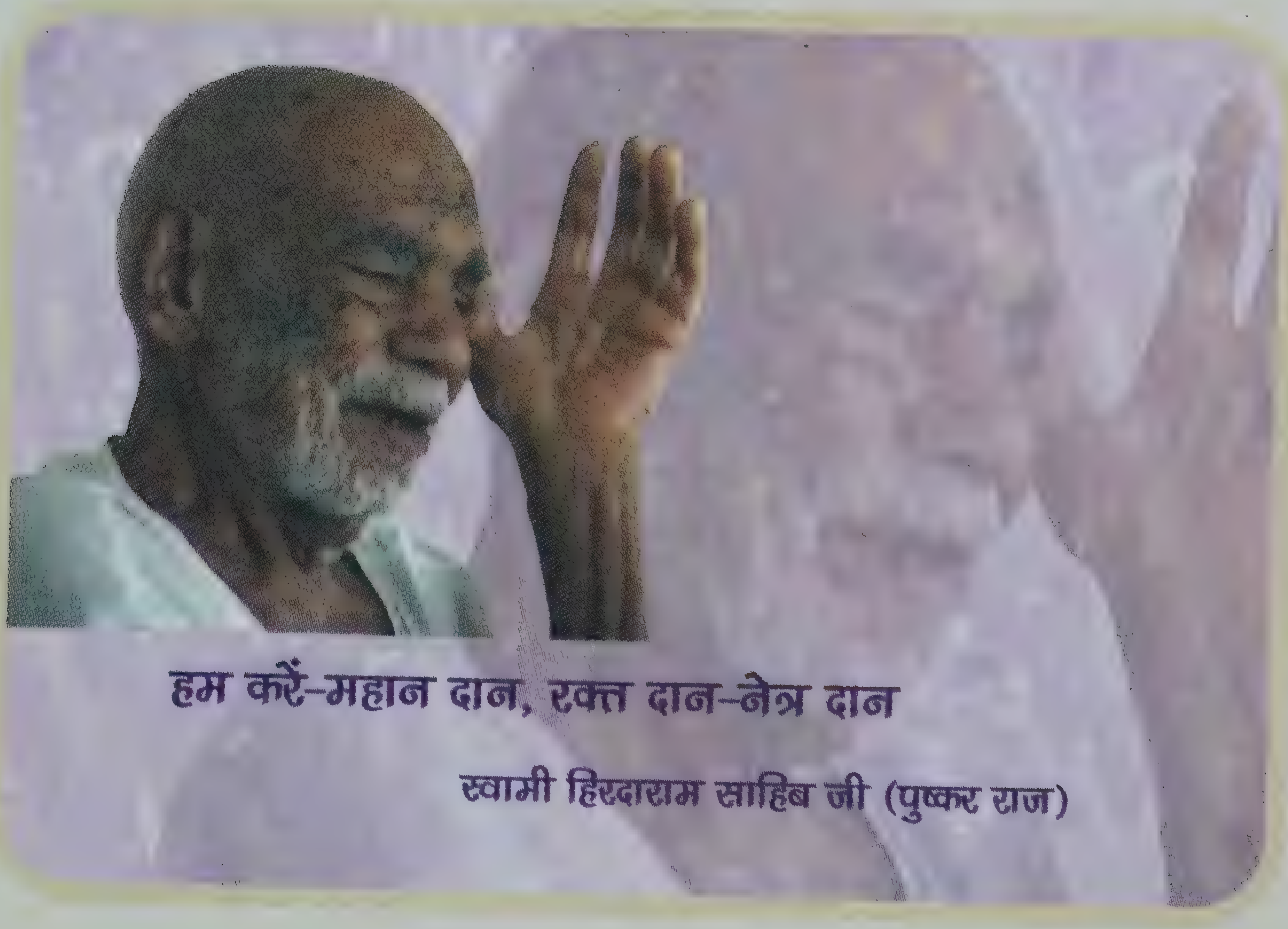


संत जी सिद्ध भाऊ, हनुमान भाऊ, सन्यासी से बात करते हुए


कार्य कोई भी करो
दृढ़ संकल्प से करो
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


कोई भी सेवा
बड़ी या छोटी नहीं होती
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


सादे, सफेद और हल्के वस्त्र
पहनने से
मन में शांति मिलती है
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)


हम करें-महान दान, रक्त दान-नेत्र दान
स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)

बनेगा। तब पास में खड़े सेवक ने कहा स्वामी जी इसकी पढ़ाई इंजीनियरिंग में है यह बैंक में आफीसर कैसे बनेगा। स्वामी जी ने सुना और मुस्करा कर चले गये। वह इंजीनियर बच्चा वास्तव में बाद में इलाहाबाद बैंक से अधिकारी बनकर सेवा निवृत्त हुआ यह वृतांत मुझे भी पता है।

उनके भाई दीपक चोटरानी जी के लिये स्वामी जी कहते थे यह उद्योगपति बनेगा। इनके माता पिता शासकीय सेवा में लगे हुये थे, उनको विश्वास नहीं हुआ मगर बाद में उन्होंने अनिल इंडस्ट्री की स्थापना की जहां कापियाँ बनती थी उसका उद्‌घाटन भी संतों के करकमलों से किया गया था।

उनकी यादों के पिटारे में से एक और बात निकली। कुटिया पर स्वामीजी के दर्शन और आशीर्वाद हेतु म.प्र. के मुख्यमंत्री स्व. श्री बाबूलाल गौर और उस समय के म. प्र. भाजपा के अध्यक्ष श्री शिवराज सिंह चौहान जी आए थे। स्वामी जी जब आये तो श्री पुरूषोत्तम पारवानी जी ने स्वामी जी से उनका परिचय करवाया। तब पुरुषोत्तम पारवानी जी ने स्व. बाबूलाल गौर की तरफ इशारा कर कहा यह बड़ा मंत्री और श्री शिवराज सिंह चौहान की तरफ इशारा करते हुये बोले यह छोटा मंत्री। फिर स्वामी जी हंसकर बोले, गलत श्री शिवराज सिंह चौहान बड़ा मंत्री और बाबूलाल गौर छोटा मंत्री। स्वामी जी की बात सुनकर श्री पुरूषोत्तम जी बोलने में संकोच कर रहे थे कि कैसे वे बाबूलाल गौर जो मुख्यमंत्री के सामने ऐसा बोल सकते हैं। स्वामी जी ने जब दो तीन बार वही बात दोहराई तो स्व. बाबूलाल गौर जी ने कहा स्वामी जी क्या कहना चाह रहे हैं तो श्री पुरूषोत्तम जी ने झिझकते हुए कहा स्वामी जी बोल रहे है आप छोटे और श्री शिवराज जी बड़े मंत्री हैं। बात हंसी के ठहाकों के साथ समाप्त हो गई। मगर कालान्तर में देखा गया। कि शिवराज जी के मुख्यमंत्री काल में बाबूलाल गौर मंत्री रहे। और स्वामी जी का कहा वाक्य सत्य सिद्ध हुआ था।

स्वामीजी के कथन - सत्य वचन

श्री आसनदास मूलचन्दानी
भोपाल मो. 7389266278

श्री आसनदास मूलचंदानी जी स्व. मास्टर लखीराम मूलचंदानी जी के सुपुत्र हैं। स्वामी जी को संत हिरदाराम नगर में लाने का श्रेय इनके परिवार को ही जाता है। इनका पूरा परिवार उच्च शिक्षित हैं। इनके एक भाई दयाल मूलचंदानी जी भी बीएचईएल में कार्य करते थे। एक भाई राम मूलचन्दानी पहले मेडीकल–री–प्रजेंटिव थे, बाद में वे मौलाना आज़ाद कालेज ऑफ टेक्नालाजी में कार्य पर लगे। उनसे दो माह पूर्व जब वार्तालाप हुआ तो भी उन्होंने बात नहीं की मगर बाद में रात्रि को 10 बजे के आसपास उनका फोन आया मैं खाना खा रहा था, घंटी बजती रही, फोन दूसरे कमरे में था। भोजन समाप्ति के बाद जब मैंने फोन को उठाया तो देखा उनका फोन था। आश्चर्य मिश्रित भाव से फोन उठाया तो दूसरी तरफ से उनकी आवाज सुनी, मैने प्रणाम किया, उनसे मेरा परिचय बी.एच.ई.एल. से ही था। मैं भी उस समय बी.एच.ई.एल. में सर्विस करता था। बाद में जब बी.एच.ई.एल. में मकान लिया, वहीं सोनागिरी कालोनी में इनका भी मकान था। मेरा एल.आई.जी., उनका एम.आई.जी., यदा कदा आफिस के काम से भी उनसे

मुलाकात हो जाती थी और पड़ोसी के नाते भी, गुरूभाई के नाते भी, उनके संस्मरणों को मूर्त रूप देने का प्रयास कर रहा हूं।

उनकी दादी मां और संत जी की माता आपस में रिश्तेदार थीं। बहुत गहरा रिश्ता था। इतना गहरा रिश्ता कि दोनों माताओं को एक ही समय में संतान हुई। जब बहनें आपस में मिलती तो एक दूसरे के बच्चों को स्तनपान भी करवाने में नहीं हिचकती थी। इस लिहाज से जब संतजी आते थे तो वे हमेशा उनकी दादी माता को मां का दर्जा ही देते थे बड़ी नम्रता से बोलते थे बचपन में मैंने आपका दूध पिया हैं, यह उपकार मैं कैसे भूल सकता हूँ जैसे मेरी माँ वैसे ही आप भी माँ की तरह ही हैं।

उन्होंने आगे बताया संत जी 1951 में पहली बार संतनगरी में पधारे थे। उनका घर आज जहां संतजी का समाधि स्थल है वहां से मुश्किल से 150 मीटर की दूरी पर था। संतजी उनके घर पर आकर रूके थे। संतजी को उन्होंने सोने के लिये खटिया दी थीं और वे सब के सब नीचे बिस्तर लगाकर सोये थे। संत जी को पुष्कर आश्रम से बैरागढ़ में रहना ज्यादा पसंद था तो उनको उनके घर के पास ही दूदानी परिवार से मकान दिलाकर दिया था मगर संत जी को वहां आनंद नहीं आया तो उनको जहां आज कुटिया है, वहां पर एक कच्चा कमरा लेकर दिया तब इस मौहल्ले को मुस्लिम कैंप कहते थे। वहीं पर संतजी रहने लगे। यह मकान राम भरोसे जी का था। बाद में श्री चोइथराम मूलचंदानी एवं उनके पिताजी द्वारा भाग्या परिवार जी से मिलकर संतों के लिये कुछ दान राशि ली जिससे संतों को मकान का सुधार कर विस्तृत रूप दिया गया।

उन्होंने बताया कि एक बार जब वे चौथी कक्षा में पढ़ते थे, पढ़ने में कमजोर थे तब स्वामी जी ने उनके पिता स्व. लखीमल जी को बोला यह लड़का इंजीनियर बनेगा। तो उन्होंने कहा स्वामी जी यह पढ़ने में कमजोर है, यह मास्टर ही बन जाये तो भी मैं खुश हो जाऊंगा। मगर स्वामीजी का कहा सत्य हुआ। तब से इनका पढ़ने में मन लगने लगा और उन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण की और बी.एच.ई.एल. भोपाल में इंजीनियरिंग पद पर नौकरी ज्वाइन की। मगर उनको लगा कि उनको सेन्ट्रल गवर्नमेंट यां स्टेट गवर्नमेंट में नौकरी लग जाये मगर स्वामी जी ने उनको कहा यहां स्थिर जाब है, अन्य विभागों में तुम्हारे ट्रान्सफर होते रहेंगे यहीं रहो। यह बात उन्होंनें मानी और आज जब उस बात को याद करते हैं तो कहते हैं अच्छा हुआ स्वामी जी का कहना माना आज मेरे बेटे उच्च शिक्षित हैं। उनकी एक बेटी शासकीय हा.से.स्कूल में प्रिंसिपल है, दूसरी बेटी उनकी एक्सीलेंस कालेज में प्रोफेसर है। उनके बेटे ने एप्लाइड केमेस्ट्री में पीएचडी किया हुआ है। उन्होंने बताया कि बचपन में स्वामी जी का नाम राम था, उनको प्यार से रामू बुलाते थे मगर उनके गुरू स्वामी हरीराम ने उनको संत हिरदाराम का नाम दिया। 1965 में स्वामी संत हिरदाराम जी ने रामधुनी की शुरूआत की। शुरू–शुरू में लोगों को उनका रामधुनी लगाना पसंद नहीं आता था, मगर जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे लोगों की उनमें आस्था बढ़ती गई। उस समय संत हिरदाराम नगर से हमेशा कांग्रेस के प्रत्याशी जीतते थे तो उन्होंने स्व. श्री अर्जुनदास मूर्जानी जी को जनसंघ पार्टी से विधायक पद के लिए लड़ने को कहा और वे जीते भी। उन्होंने यह भी बताया कि उनके पिता मास्टर लखीराम जी और स्वामी जी हमउम्र थे उनमें और स्वामी जी में गहरी मित्रता थी। स्वामी जी के प्रयासों से ही रामभरोसे जी से आश्रम के सामने की कृषिभूमि उन्होंने सिंधू टाकीज बैरागढ़ के मालिक स्व. तोतलदास ईसरानी जी को दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने बताया था कि उनका बेटा डाक्टर बनेगा ऐसा

स्वामी जी ने आशीर्वाद दिया था। आज सचमुच में उनका बेटा पीएचडी कर डाक्टर बन गया हैं। स्वामीजी जो कहते थें वह हो जाता था उनकी शक्तियों को उन्होंने साक्षात महसूस किया हैं। वे सचमुच में महान संत, समाज के हित में काम करने वाले, पर पीड़ा को महसूस करने वाले, गरीबों की सहायता करने वाले, अपने संपर्क में आने वाले व्यक्ति से उसके सामर्थ्य के अनुसार, रूचि के अनुसार दायित्व सौंप कर काम करवाने में सिद्धहस्त थें।

अमेरिका के श्री नत्थुरमल लालचंदानी के बड़े भाई मास्टर लखीराम मूलचंदानी जी के साढू भाई थे। मास्टर लखीराम जी ने नत्थुरमल लालचंदानी जी का परिचय स्वामी जी से करवाया जो बाद में समाज सेवा के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा। उन्होंने अमेरिका में स्वामी जी का नाम प्रसिद्ध कर दिया और अनेक दानदाताओं को स्वामी जी के कार्यों से जोड़ा। जिस कारण समाज सेवा के कार्य आज भी अबाध गति से चल रहे हैं। स्वामी जी के रहते हुये तो कार्य हुए मगर उनके जाने के बाद भी हो रहे हैं।

स्वामीजी की कृपा से इन्द्रदेव प्रसन्न

श्री सुरेश कुमार आवतरामानी

संत हिरदाराम नगर मो. 9111001622

संतजी ने अपना पूरा जीवन दीन–दुखियों की सेवा में लगा दिया। यह बात 1979 के जुलाई महीने की है। उस समय मध्यप्रदेश में 45 जिले थे और पूरे राज्य में जुलाई माह का पहला पखवाड़ा खत्म होने के बावजूद बारिश का कहीं भी नामोनिशान नहीं था। किसान, व्यापारी तथा वाणिज्यिक कार्यों के लोग बड़े चिंतित थे। सरकार भी अवर्षा की स्थिति से निबटने की कार्य योजना बनाने में लगी थी। उन दिनों श्री वीरेन्द्र कुमार सखलेचा जी मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री थे।

साधु–संतों का जीवन केवल स्वयं के लिये नहीं होता है। अवर्षा की स्थिति को देखते हुए संत हिरदाराम साहिब जी भी चिंतित थे। तब उन्होंने बैरागढ़ में पंचायत पदाधिकारी स्व. थद्धाराम ज्ञानचंदानी जी (पूर्व उप महापौर) को बुलवाया और कहा कि बैरागढ़ में भगवान इन्द्र को प्रसन्न करने के लिये सूर्योदय से सूर्यास्त तक एक महायज्ञ आयोजित करवायें। इस महायज्ञ में आहुतियां अर्पित करने/कराने के साथ ही गरीब–गुरबों, कन्याओं के लिये दिन भर एक भण्डारा चलाकर उनको भोजन कराया जाए। स्व. थद्धाराम जी ने संत जी को वचन दिया कि वे दो–तीन दिन में इस कार्य के लिये चन्दा उगाही कर महायज्ञ का आयोजन करवायेंगे। दो–तीन दिन तक कुछ न होने पर संत जी ने पुनः थद्धाराम जी को बुलवाया तथा कहा कि उनका यह काम जल्दी होना चाहिये वरना बारिश न होने की स्थिति में किसान अपने खेतों में बुवाई नहीं कर पायेंगे तथा इस बार अन्न की पैदावार नहीं हो पायेगी। महायज्ञ आयोजन में विलम्ब अपेक्षित नहीं है। संत जी की नाराजगी को देखते हुए स्व. थद्धाराम जी ने कहाकि अब चाहे चंदा इकट्ठा हो या न हो अगले दिन महायज्ञ जरूर आयोजित होगा।

अगले ही दिन महायज्ञ का आयोजन हुआ और दिन भर उपनगर वासियों ने इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए हवन में आहूतियां डाली तथा गरीब–गुरबों और कन्याओं के लिये आम भण्डारा चलाया गया। इसके बाद प्रभु की ऐसी कृपा हुई कि

भोपाल , सीहोर, रायसेन और विदिशा जिलों में भरपूर वर्षा हुई, किसान खेतीबाड़ी में लग गये। किसानों और व्यापारियों के माथे पर उभरी चिंता की रेखायें खत्म हो गई। इन चार जिलों को छोड़कर शेष मध्यप्रदेश के 41 जिलों में सूखे की स्थिति पूर्ववत बनी हुई थी। इसका प्रमाण यह है कि श्री वीरेन्द्र कुमार सखलेचा जी तत्कालीन मुख्यमंत्री ने दिसम्बर 1979 के अंत में विधानसभा में इन चार जिलों को छोड़कर शेष मध्यप्रदेश को सूखा ग्रस्त घोषित कर दिया।

सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर दोनो बदले

श्री लोकचंद जनियानी
ट्रस्टी सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय,
संत हिरदाराम नगर मो. 9111001621

संत हिरदाराम नगर में श्री लोकचंद जनियानी की गिनती नवयुवक परिषद के निष्ठावान व निष्कंलक छवि रखने वाले कार्यकर्ता के रूप में होती है। परिषद से सामाजिक जीवन शुरू कर वे आज सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय के ट्रस्टी के रूप में कार्य करते हैं। स्वामी जी के संपर्क में आने के पूर्व उनमें खान–पान की अनेक विकृतियां थी जो धीरे– धीरे कम करते गये। अब लोकचन्द जनियानी जी की दिनचर्या में अमृतवेले 3 बजे से शुरू होकर रात्रि के 9 बजे तक निरन्तर 18 घंटे कर्मशील जीवन जीने की हैं। आज उनसे जब संतों के संस्मरणों को सुनाने की बात हुई तो उनके द्वारा बताई जानकारियां लिपिबद्ध कर रहा हूँ। उन्होनें बताया कि 36 वर्ष की उम्र में सन् 1992 में वे संतो के संपर्क में आये। उनको देखकर वे अभिभूत हो गये। उनका सादा जीवन, सादे वस्त्र और उच्च विचारों के वे कायल हो गये, उस समय उनका वजन भी ज्यादा था और साईटिका की बीमारी से भी परेशान थे। सिद्धभाऊ ने उन्हें आरोग्य केन्द्र में इलाज कराने की सलाह दी। वे वहां गये और एक ही महीने के इलाज के बाद वे पूर्णतः स्वस्थ्य हो गये। उनका वजन भी कम हो गया। आज उनकी आयु 66 वर्ष हो गई है। 36 वर्ष का बीमार व्यक्ति आज 66 वर्ष की उम्र में स्वस्थ हैं और 18 घंटे तक बगैर विश्राम किए जीवन यापन कर रहा है। और सेवा के माध्यम से जुड़कर संतों के द्वारा कहे गये अमृतवचन –

'बूढ़े बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार,
करें भावना से इनकी सेवा, पायेंगें लोक परलोक में सुख अपार'

को साकार रूप दे रहा है इसे वे अपने जीवन का मूलमंत्र मानते हैं।

उन्होंने बात को आगे बढाते हुए बताया कि आज उनके जीवन में सिर्फ जन्म के समय मिला हुआ नाम ही बचा है, बाकी जीवन के अंदर विद्यमान साफ्टवेयर और हार्डवेयर दोनों स्वामीजी के उपकार के कारण बदल गये हैं। मैं जन्म के समय का लोकचंद हूं ही नहीं, पूर्णतयाः परिवर्तित हो गया हूँ। मन से, तन से, हर तरह से स्वस्थ्य और संतुष्ट हूँ। उन्होनें बताया कि अब उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य प्रभु की प्राप्ति बन गया है। उन्होनें स्टेट बैंक आफ इंडिया से 50 वर्ष की आयु में ही सेवा निवृत्ति ले ली। उनके 3 बच्चे नौकरी में लग गये थे। बिटिया बैंक आफ इण्डिया में, बेटा स्टेट बैंक आफ इंडिया में, दूसरा बेटा इंजीनियर बन गया था। जीवन यापन के लिये मिलने वाली पेंशन

ही बहुत थी, अतः उन्होनें नौकरी छोड़ कर सेवा कार्य में अपने आपको झोंक दिया। उन्होनें बताया कि उनका घर उन्हें स्वर्ग का अहसास कराता है। बेटे, बहुएं, पत्नी सब सात्विक प्रवृति के हैं। बड़ा बेटा बैंक में प्रबंधक के पद पर होने के बाद भी घर आकर उनकी सेवा में लग जाता है।

उनके होते हुए सेवासदन नेत्र चिकित्सालय आज मध्यप्रदेश ही नहीं, देश में अपनी प्रसिद्धि के झंडे गाड़ चुका है। वहां प्रतिदिन कैम्प लगते है। मरीजों को गांवों से चेकअप कर लाने से लेकर उनके आपरेशन, खाने, पीने की व्यवस्था तथा उनको घर तक पहुंचाने के हर कार्य कुशलता पूर्वक संचालित होते हैं। उन्होंने बताया कि स्वामी जी कहते हैं कि हमें मरीजो की सेवा सहानुभूति से नहीं, संवेदनाओं से करना चाहिए। उनका दुःख अपने दुःख जैसा महसूस करना चाहिये। रोगी भगवान का रूप होते हैं, यह स्वामी जी से उन्होनें सीखा, उसी भावना से उनकी सेवा होती है। वे रोते हुए आते हैं। हंसते हुए जाते हैं तथा ढेरों आशीर्वाद देकर जाते हैं और इसीलिए उन्होनें महसूस किया कि उनके आशीर्वाद के कारण असंभव लगने वाले कार्य भी संभव बन जाते है। उन्होंने कहा न उनमें उतनी अक्ल है, न योग्यता है, न छलकपट है, ये जो सेवा कार्य चल रहे हैं उनको चलाने वाले संत जी ही हैं और सिद्धभाऊ का मार्गदर्शन है, जो ये कार्य इतनी तेजी से चल रहे हैं।

सक्षम से खींचो, अक्षम को सींचो।

श्री सुरेश जसवानी
संत हिरदाराम नगर मो. 9425029911

हमने दुनियां में अनेक संत महात्मा देखे। कई संतों को प्रवचन देते व सुनते देखा। कई संतों ने केवल मंदिर ही बनवाए और भगवान की पूजा में जीवन लीन किया, परन्तु ऐसे विरले संत देखने को मिलते हैं, जिन्होंने जीवन में कभी कोई मंदिर नहीं बनवाया। किसी संत महात्मा की पहचान, अक्सर उसकी वाणी और जनता के दिए गए प्रवचनों अथवा आलीशान व भव्य मंदिरों के निर्माण से होती हैं। कोई संत किसी को दीर्घायु, तो किसी महिला को सौभाग्यवती का आशीर्वाद देता है, तो कोई संत किसी को उसका भविष्य बताकर ख्याति अर्जित करता है, लेकिन इन सभी से परे स्वामी हिरदाराम साहिब ने न तो कभी बैठकर घंटो प्रवचन दिए, न ही कोई मंदिर और पूजा घर बनाया। उनका संदेश स्पष्ट था कि

बूढ़े, बच्चे और बीमार हैं परमेश्वर के यार,
करें भावना से उनकी सेवा, पाएगे लोक-परलोक में सुख अपार।

सेवा की सुवास से जीवन को महकाना ही उनकी नजर में भगवान की सच्ची पूजा थी। ब्रह्मालीन स्वामी हिरदाराम साहिब इसी पूजा अर्चना में अहर्निश, अनवरत रहे। इस युग में जिन–जिन विरले जनों ने इस सेवा के सत्य को गहरे से आत्मसात किया है, उन्होंने ही स्वामी हिरदाराम को जाना और अच्छी तरह से पहचाना है। सक्षम से खींचो, अक्षम को सींचो। इस शक्ति के बल पर स्वामी हिरदाराम ने सेवा का एक अदभुत साम्राज्य खड़ा किया। ऐसा साम्राज्य जहां त्याग, तपस्या, भक्ति, क्षमा, स्मरण की ईंटे और गारा है, तो सेवा, प्रेम, स्नेह, करूणा, दया, त्याग, का सीमेंट है, जिसका जोड़ इतना मजबूत है कि उसकी दीवारें सदियों तक कायम रहने वाली हैं।

चन्द्रकुमार भंभानी (ढोलकी) इंदौर

इंदौर से चन्द्रकुमार भंभानी ढोलकी को मैने संदेश भेजा कि संतो के उपर वे अपने संस्मरण मुझे भेजे और मेरे एक ही अनुरोध पर उन्होने संदेश भेज दिये उनका नाम मुझे जब मैं लेखन का काम बंद कर चुका था तब किसी ने सुझाया था। उन्होने एक दिन बाद ही मुझे अपने संस्मरण भेज दिये। जो उन्होने मुझे भेजा वह सिंधी भाषा में था और उसको उन्ही के संस्मरण को हिन्दी में, मैं आपके सामने रख रहा हूं।

उन्होने लिखा कि वे जब छोटे थे तो रोज अपने दादा के साथ रतलाम में दरबार में जाते थे। वहीं पर एक दिन मुझे सांई जी का दर्शन हुआ जो रतलाम में पधारे हुए थे। वे छोटे बच्चो को अपार प्यार करते थे। उन्होने बच्चो को बोला ओर कहा बोलो

1. मैं रोज सवेरे जल्दी उठूंगा।
2. मैं रोज मंदिर में प्रार्थना कर अगरबत्ती जलाउंगा।
3. मैं रोज माता पिता के चरण स्पर्श करुंगा।
4. मैं बडे बाल हिप्पी कट नहीं रखवाउंगा।
5. मैं मां बाप का आज्ञाकारी पुत्र बनूंगा।
6. मैं साधु संतो की सेवा करुंगा।
7. मैं रोज सुखमनी साहिब का पाठ करुंगा।

यह स्वामी जी ने सब बच्चो से संकल्प करवाया फिर सबको उन्होने एक एक करके बुलाया ओर हर एक को एक रुपये का नोट आशीष स्वरुप दिया (दास के पास आज भी वह एक रुपैया का नोट स्वामी जी का प्रसाद समझकर संभालकर रखा हुआ है)।

यह आशीर्वाद सभी बच्चो को स्वामी जी द्वारा प्राप्त हुआ। मैं बचपन में ढोलक बजाता था इसलिए स्वामीजी ने मेरा नाम ढोलकी रख दिया और लोग आज मुझे मेरे नाम से कम जानते है मगर ढोलकी नाम से ज्यादा जानते है।

जून 2001 में सेवक जिस कंपनी में काम करता था वह कंपनी नुकसान में चली गयी और उसको बंद कर दिया गया मेरी भी नौकरी चली गयी। नौकरी जाने के कारण मेरे परिवार को पालन पोषण करने के लिए समस्या आ गयी एक माह हो गया मगर दूसरी नौकरी नही मिली।

तब सेवक संत हिरदाराम नगर में आया स्वामीजी ने देखा ओर अपने सेवको से पूछा कि यह ढोलकी क्यो आया है। सेवक ने स्वामीजी को पूरी अपनी परेशानी बताई तब स्वामीजी ने कहा करतार सब भली करेगे।

जब सेवक वापिस इंदौर घर पर आया तो दूसरी कंपनी का नियुक्ति पत्र पडा हुआ था।

स्वामी जी कहते थे (जो पूजेंगे नानक शाह फकीर, वे सदैव खाएगे शक्कर ओर खीर) स्वामीजी गुरुनानक जी के वचनो को मानते थे इसलिए वे स्वयं नानक शाह की ज्योत बन गये क्योंकि वचन को मानने वालो के अंदर ही ज्योत प्रकट होती है।

'गुरु साक्षी ज्योत परगट होइ' हमारे प्यारे सिद्ध भाउ जी ने भी संतो के वचनो का पालन किया ओर वहीं संतों वाली ज्योत उनके अंदर प्रवेश कर गई।

'जिउ महाउदिआन में मारग पावै'
'तिउ साधू संग मिल जौत प्रगटावै।'

हमारा भी यह फर्ज बनता है कि हम आदरणीय सिद्ध भाऊ को भी स्वामीजी के उसी जौत के दर्शन करे एवं सिद्ध भाऊ के एक एक वचन का हृदय में धारण करें तब

हमारे अंदर भी वहीं ज्योत जगेगी। हम सिद्ध भाउ के वचनों को सत करके माने तभी हमारा लोक परलोक सुहेला बनेगा ओर हम भी संतो से जाकर मिलेगे।

''सत वचन साधू उपदेस
सत ते जन जाकै रिदै प्रवेश।।''

❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

श्री जगदीश वच्छानी
सचिव जीव सेवा समिति, अजमेर

श्री जगदीश वच्छानी जी अजमेर नगर के चलने वाले स्वामी जी के सेवा कार्यो को मूर्तरूप् देने के लिए सदैव तत्पर रहते है। मेरा उनसे परिचय एक नैत्र शिविर के दौरान पुष्कर में हुआ। जब भी अजमेर जाता हूं, उनका घर, मेरी बहन के घर से 100 मीटर ही दूर है। कोशिश रहती है उनसे मिल लूं। वे संत नगरी में आए थे। उन्होनें मेरे आग्रह पर अपनी आवाज में संस्मरण रिकार्ड करके भेजे है। जिनको मैं सारांश रुप में लिखने का प्रयास कर रहा हूं।

उनका परिवार सिंध से ही स्वामी जी के संपर्क में रहा। उनके दादाजी डॉ. स्व. श्री परसराम जी स्वामी जी के गुरू स्व. श्री हरीराम साहिब जी के सानिध्य में रहते हुए उनके द्वारा सौंपे गए सामाजिक दायित्व को पूरा करते थे। उनके चाचा, बुआएं वगैरह भी सेवा मार्ग में जुड़े हुए है। वे सब अच्छे व्यवसायों से, नौकरी से जुड़े हुए हैं। वे तन, मन, धन से सदैव समर्पित रहते हैं।

स्वामी जी से जुड़े हुए कुछ अविस्मणीय, अविश्वसनीय बातें उन्होने बताई। उन्होने ने बताया कि स्वामी जी जयपुर में उनके घर आए थे। उनके पिताजी की उम्र उस समय मात्र 26 वर्ष थी। उनके कमर में भयंकर पीड़ा थी। उस समय जयपुर के सेवक स्वामी के दर्शन की कामना लिए हुए आये हुए थे। उन्होनें पिताजी को गोद में उठाकर स्वामी जी के सामने बिठाया। पिताजी का नाम श्री हरूमल जी था। स्वामी जी आए और उन्होने पिताजी को कहा उठकर बैठो। मगर पिताजी उठ नहीं रहे थे। जब स्वामी जी ने दो–तीन बार बोला तो उनको बुजुर्गो शिष्य ने कहा स्वामी जी बोल रहे है तो उठ कर बेठो। तब पिताजी उठ कर खड़े हो गए। जिनको चार लोगों ने गोद में उठाकर बिठाया था वे खड़े हो गए। यह चमत्कार देखकर सभी दंग रह गए।

उनकी माताजी भी स्वामी जी में अपार श्रद्धा रखती थीं। एक दिन वे स्वामी जी को बहुत याद कर रहीं थी साथ ही साथ वे श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ भी कर रहीं थी। इतने में शाम के 7 बजे दरवाजा खटखटाया गया। और स्वामी जी प्रगट हो गए और स्वामी जी ने कहां तुम्हारी बेतार की तार मेरे तक पहुंची और देखो में हाजिर हो गया। वे स्वामी जी को साक्षात गुरूनानक जी का अवतार ही मानते है और अनेक शहरों में उन्होनें प्रगट होकर लोगों को दर्शन दिए हैं।

उनके भाई को बार–बार मलेरिया हो जाता था। वे बहुत कमजोर हो गए थे। स्वामी जी उनके घर आए। जब स्वामी जी आते थे तो एक–एक सप्ताह उनके घर में हीं रहते थे। स्वामी जी शाम को घर आए, उनके पिताजी घर के काम से पानी का पाईप लेकर लॉन में पानी डाल रहे थे। बातों ही बातों में उनके पिताजी ने अपने बेटे के बीमार होने की बात बताई। उस समय उनको 102 डिग्री फैरनहाईट के बराबर बुखार था।

शरीर तवे सा जल रहा था। स्वामी जी ने पानी का पाइप उनके पिताजी के हाथ से छीना और पाईप से उनके भाई के ऊपर इतना पानी उड़ेला कि जैसे उसको नहला रहे हों। चमत्कार हुआ, भाई का बुखार खत्म हो गया और सारी थकान उतर गई। स्वामी जी ने उसको बोलो उठो दौड़ लगाओ, उसके बाद उसको कभी भी मलेरिया नहीं हुआ।

वे 1981 में 20 वर्ष की उम्र में वे जयपुर से अजमेर आए थे। अपनी नौकरी के संबंध में। तब भी सेवा कार्य गुप्त रूप् से स्वामी जी के चलते थे। राशन पहुंचाना, दवाईयां पहुंचाना, कन्याओं की शादी में आर्थिक सहायता देना, बच्चों की शिक्षा के लिए किताबें, स्टेशनरी, फीस की मदद करना। यह बस काम गुप्त रूप से चलते थे।

1983 में स्वामी जी ने पुष्कर में नेत्र शिविर लगाने का निर्णय लिया। मगर उसके किए सामाजिक संस्था का बैनर होना आवश्यक था। उस समय बीकानेर से श्री लाल जय सिंघानी जी आए थे। उनके द्वारा रजिस्टर्ड सोसायटी साधू वासवानी सेवा निकेतन है । उसी के बैनर तले शिविर लगाया गया। स्वामी जी ने सोचा था और किस तरह अपने आप बैनर आ गया। यह स्वामी जी की संकल्प शक्ति का प्रतीक था।

25 जुलाई 1989 को सिद्ध भाऊ से आज्ञा लेकर जीव सेवा समिति अजमेर का गठन किया गया। फिर तो कार्यकर्ता जुड़ते गए, दानदाता जुड़ते गए और अनेक सेवा क्षेत्रों में स्वामी जी कृपा से,दया की वर्षा होती रही। शिक्षा के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत काम होते गए।

1990 के अन्त में स्वामी जी के मन में विचार आया कि पुष्कर में एक अस्पताल का निर्माण होना चाहिए । तो उस समय पुष्कर में ऋषि गोधूमल मारियानी जी का एक प्लॉट था । उन्होने स्वामी जी को वह प्लॉट देते हुए कहा, आप इस पर हॉस्पिटल का निर्माण करवाओं। योजना बनी वहां होम्योपैथिक अस्पताल का निर्माण हुआ। एक ऑपरेशन थियेटर का निर्माण भी करवाया। पहले हम सोच रहे थे बनवाए या न बनवाए मगर स्वामी जी की दूर दृष्टी थी, 9 मई 1991 को वह बनकर तैयार हुआ और फिर हमने वहां पर शिविर लगवाने शुरू किए। 18 शिविर लग चुके हैं।वहां पर विशेषज्ञ डॉक्टर भी आने लगे है, चिकित्सालय भी शुरू हो गया। सब निःशुल्क था।

1993–1997 में अजमेर, पुष्कर में भयंकर जल आपदा आई। झगड़े शुरू हो गए पानी के लिए त्राहिमाम–त्राहिमाम मच गया। एक दिन सबेरे स्वामी जी ने सिद्ध भाऊ को नींद से उठाकर बोला जल सेवा करने का मन में विचार आया है। मगर कार्य इतना सरल नहीं है। मगर स्वामी जी का आदेश था। शहर के गणमान्य व्यक्तियों को बुलाया गया ओर प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनी।उस समय एक अजमेर के विधायक किशन मोटवानी जिनका राजनैतिक कद बहुत ज्यादा था का सहयोग मिला। योजना को मूर्तरूप देने का मन बनाय उस समय हम मित्र जयपुर गए उस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत जी थे उनको स्वामी जी के संकल्प के बारें में बताया गया। मगर उस समय बैंक में कुल जमा राशि थी मात्र 20 हजार रूपए। उस समय इंजीनियर ने बताया कि जो आपने प्रोजेक्टस सबमिट किया है, उसकी लगभग कीमत 20 लाख से ज्यादा हे।जिसमें नल कूप खोदना, जानवरों के पानी की टंकीयां बनवाना। जल प्याऊओं का निर्माण इत्यादि शामिल थे, पाइप लाइन बिछाना, सीमेन्ट की टंकिया लगवाना सब शामिल थे।

स्वामी जी ने कहां कार्य शुरू करो, पानी जैसे झरने दानवीरों के घरों से अपने आप निकलेंगे और आपका काम होता जाएगा। 101 नलकूपों का खनन किया गया। जगह–जगह प्याऊ व नल लगवाए गए। लगभग पानी की समस्या सुलझ गई। हमने 20

लाख का खर्च सोचा था। मगर खर्च हुआ 25 लाख से ज्यादा और उसके बाद भी दो लाख बच गए।

स्वामी जी कहते थे मन में विश्वास रख कर काम करो भगवान पर ।भरोसा रखो लोग अपने आप जुड़ते जायेंगे। पैसे के लिए कोई काम कभी नहीं रूकेगा। आपको भावना से मेहनत करनी है बगैर अपना स्वार्थ रखें।

यूरोलॉजी की 33 कैम्प भी लग चुके है। सबकी अवधारणा है कि स्वामी जी को सिर्फ संत मानना ही पर्याप्त नहीं है, वे स्वयं गुरूनानक जी के प्रतिरूप थे। इसलिए आज भी उनके द्वारा बताए गए कार्य उनके 21 दिसम्बर 2008 को ब्रह्लीन होने के बाद भी निरन्तर ना सिर्फ चल रहे है बल्कि दिनों दिन बड़ रहे है और बड़ते रहेंगे।

नायला धाम में जो जयपुर - आगरा रोड़ पर स्थित था वहां पर अंधत्व का बहुत प्रकोप था। यह बास्को के पास था। हम लोग वहां की स्थिति देख आए और स्वामी जी को वस्तुस्थिति से अवगत कराया। वहां पर बहुत गरीबी है, कोई सुविधा नहीं है, वहां पर एक भगवान शिव का मंदिर है वहां पर मेला भी लगता है और उसमें बड़े-बड़े व्यक्तित्व के धनी लोग आते है। स्वामी ने श्री मुकेश भाग्याजी, मुख्य चिकित्साधिकारी के.सी. शर्मा और उन्हें वहां जाकर कैम्प की संभावना का अवलोकन करने भेजा। स्वामी जी बोले मैं यह कैम्प नहीं लगा रहा हूं इसके द्वारा मैं आपको दिखाना और सिखाना चाहता हूं। दिखाना यह चाहता हूं कि कैसे नेत्र ऑपरेशन करके लोगों को अंधत्व से मुक्ति मिल सकती है ।और सिखाना यह चाहता हूं कि कैम्प कैसे लगाए जाते हैं। हमने स्वामी जी के आदेश पर कैम्प लगाने की घोषणा कर दी । मौका मुआइना करने के लिए नायला धाम गए। उस समय पैसे की भी व्यवस्था नहीं थी उसी समय वहां पर बाम्बे के सेठ द्वारकादास के पोते श्री कालीचरण माखीजानी आ गए। आकर उन्होने वांछित धनराशि की व्यवस्था कर दी। श्री कालीचरण माखीजानी बहुत बड़े भवन निर्माण और उच्च कोटि के आर्टीकेचर है। तब स्वामी जी ने कहा देखें कैसे आप लोगों ने अच्छी सोच रखी । आप लोगों ने प्रभु के दर पर विन्ती की तो देखो उसके परिणामस्वरूप धन की व्यवस्था कैसे हो गई। तब कैम्प का आयोजन हुआ जीव सेवा समिति के माध्यम से 8000 लोग आए और 400 व्यक्तियों का सफल ऑपरेशन हुआ। कैम्प लगी, बहुत सुचारू रूप से कार्य हुआ और उसके बाद भी धनराशि बच गई। इस तरह हम देखते है कि स्वामी जी के माध्यम से बड़े -बड़े सेवा प्रकल्प शुरू किए। जल सेवा, नेत्र कैम्प, यूरोलॉजी कैम्प इत्यादि सही समय पर सुव्यवस्थित तरीके से सम्पन्न हुए।

1990 में स्वामी जी के मन में अवर्षा की स्थिति देखते हुए वर्षा यज्ञ करवाने का मन में विचार उत्पन्न हुआ। अचानक ही आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वान धर्मवीर जी स्वामीजी के दर्शनार्थ अपने आप आए। स्वामी जी ने उनको अपने प्रकल्प के बारे में बताया तो उनकी संस्था परोपकारणी सभा और जीव सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में वर्षा यज्ञ का आयोजन किया गया। यह मई-जून से शुरू होकर रक्षा बंधन तक चलता रहा। लोगों के उत्साह की तो सीमा ही नहीं थी। शुद्ध घी ओर हवन सामग्री की सप्लाई रूकती ही नहीं थी। स्वामी जी की हवन -यज्ञ में बहुत आस्था थी। वे कहते थे इससे परिवार में स्वास्थ्य, एकता और संस्कारों का संचार तो होता ही है। साथ ही साथ पर्यावरण की शुद्धि भी होती है।

संत शक्ति

श्री खुशाल चांडवानी
डी-108 जीवन विहार कालोनी, भोपाल
मो. 9425371848

मुझे बार–बार कहा गया कि भैया आप खुशाल चांडवानी से जरूर मिलना उनके पास स्वामी जी की बहुत सी यादों के खजाने मिलेंगे। मेरा उनके परिवार से तो संबंध था, मगर व्यक्तिगत रूप से उनसे संबंध बहुत ही सामान्य था। उनकी सहधर्मिणी से मेरा परिचय बचपन से ही था। वे मेरी मुंहबोली बहन जैसी रही हैं। बचपन से अनेकों बार उनकी चरण वंदना की है। दयालु प्रकृति की है। आज मैंने उनसे मिलने की इच्छा जाहिर की। चार बजे के आसपास मिलने का समय लिया मगर मेरा शेड्यूल बिगड़ता गया। उन्होंने इस बीच 2–3 बार मुझसे फोन करके पूछा भैया कब आ रहे हैं। मैंने बताया कि मै जिस काम से आपके पास आ रहा हूं उसी काम में लगा हुआ हूँ। जितना जल्दी हो सका, आता हूँ और आते आते 5:30 बज गये। वहां पर उनके बड़े भाई नंदलाल जी भी बैठे थे। उनसे मेरा पुराना परिचय था या कहूं कि वे मुझे पार्ट टाइम मैकेनिकल इंजीरियरिंग कोर्स करने में सहायक गुरू रूप थे। वार्तालाप शुरू हुआ।

उन्होंने कहा कि उनकी इतनी हस्ती नहीं है कि वे स्वामीजी का वर्णन कर सकें। पर जब मैंने कहा एक पीढ़ी स्वामीजी की शक्तियों को साक्षात् देखने–जानने वाली चली गई अब भी हम ऐसे संकोच करेंगे तो आने वालों को संतों की शक्तियों का पता कैसे चलेगा? किसी को तो आगे आना पड़ेगा मैं कोशिश कर रहा हूं कृपया आप भी सहयोग करें। बड़ी मुशकिल से उन्होंने और नंदलालजी ने जो बताया वह मैं अपने शब्दों में आपके सामने रख रहा हूं। नंदलालजी ने बताया कि जो संस्कार हमें संतजी से मिले उनको हम आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनके बेटे ने एक एन.जी.ओ. का गठन किया है ब्उच क्पतपमे नाम का उसका 10 लाख का पैकेज था उसको छोड़कर वह सात साल तक समाज सेवा में लगा रहा। आज उसके एन.जी.ओ. के माध्यम से 20000 विद्यार्थी लाभाविन्त हो रहे हैं और लगभग इस एनजीओ से लगभग 3000 सेवाधारी भी जुड़े हुये हैं। बी.टेक. करने के बाद वह फिर से आई.आई.एम. अहमदाबाद से एम.बी.ए. कर रहा है। उसका चयन ओला कंपनी में बहुत अच्छे पैकेज पर हो चुका है। उनका दूसरा बेटा भी माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी में एक्जीक्यूटिव पद पर कार्यरत है। खुशालजी ने बताया कि वे रात्रि को अपने अभिन्न मित्र स्व. दीपक चोटरानी के साथ कुटिया पर सोते थे। एक बार वे रात्रि को 12 बजे पहुंचे, उस समय स्व. दादा रोचीराम जी भी जग रहे थे फिर तो स्वामीजी के बारे में बातें शुरू हुई तो रात्रि के 3 कब बज गये पता ही नहीं चला।

संत जी ने एक बार उन्हें बताया कि पुष्कर में वे रोज शाम को टहलने जाते थे। एक बार उन्हें एक दर्वेश मिला। उनके साथ वे 2–3 दिन तक लगातार टहलते रहे। उनको वह दर्वेश बहुत ज्ञानवान लगा। उनसे वे प्रभावित होने लगे। एक दिन वैसे ही वे उसके साथ टहल रहे थे तो इतने में एक अजनबी आया और उनको बोला मैं आपको 2–3 दिन से ढूंढ़ रहा हूं आप मेरे साथ चलो और वह उसको पकड़कर ले गया। तब स्वामीजी को लगा उनकी उस व्यक्ति के प्रति जो धारणा थी वह सही नहीं थी। वे उससे ज्ञान अर्जित करना चाहते थे। उनको लगा जिस आदमी का अपने मन पर ही वश नहीं है वह किसी को ज्ञान कैसे दे सकता है। स्वामी जी छोटी–छोटी बातों में सिखा देते थे। वे

बोलते थे फ्रूट खरीदने जाओ तो यदि फ्रूट वाले को आप कहेंगे तौल के दो, तो वो आपको सड़ा गला भी दे देगा, मगर उसको बोलते जाओ अच्छा **देना, खुद भी हाथ लगा कर देखोगे तो वह आपको ग़लत नहीं दे सकेगा। उन्होंने** बताया स्वामीजी जो खड़ाऊ पहनते थे, वे राजस्थान से आते थे। जब नये–नये होते थे तो वे उसको उनके मित्र दीपक को दे देते थे। दीपक उन पादुकाओं को पहनकर आश्रम में ही चलता रहता था और जब वे मुलायम हो जाती थीं तब स्वामीजी को दे देता था ताकि नई नई पादुकाएं पहनने से स्वामीं जी के पैरों में छाले न पड़े। स्वामीजी अपना तौलिया वगैरह भी उनको धोने के लिये देते थे और कहते थे ऐसे धोना कि ज्यादा फटे नहीं।

एक बार कुटिया में सांप निकला खुशाल जी धुले हुये बर्तन रखने जा रहे थे। उनकी नजर पड़ गई। उनके मुख से डर के मारे चीख निकल गई। स्वामीजी ने पूछा क्या हुआ। उनको सांप दिखाया तो उन्होंने कहा एक बड़ा डंडा ले आओ। डंडा लाया गया। स्वामीजी ने बड़े आराम से सांप के बीचों बीच उस पर डंडे से दबाव बनाया। सांप फन निकालकर फड़फड़ाने लगा तब स्वामी जी ने एक डिब्बा मंगाया वह सांप के सामने रखा और वह डिब्बे के अंदर चला गया। डिब्बे का ढक्कन बंद कर दिया गया। रात्रि हो गई थी अतः दूसरे दिन सबेरे उस सांप को जंगल में छोड़ दिया गया।

कालांतर में खुशालजी के पड़ोस में भी किसी घर में सांप घुस गया था खुशाल जी ने उसी विधि से सांप को पकड़कर डिब्बे में बंद कर दिया। स्वामी जी एक बार कुटिया में श्री परसरामजी को आवाज दे रहे थे खुशाल जी कुटिया में ही थे तीन बार परसराम–परसराम करके बुलाया तो खुशाल जी दौड़ते हुये आये। स्वामी जी ने पूछा मैंने पहले पुकारा तो तुमने सुना नहीं क्या? वे बोले स्वामीजी सुना था मगर आप तो परसराम जी को बुला रहे थे इसलिये मैं नहीं आया। तब उन्होंने प्यार से उनको एक थप्पड़ मारा और कहा वो नहीं थे तो कोई तो आता, उस समय पानी गिर रहा था।

उन्होंने बताया वे अपने नानाजी के साथ पहली बार कुटिया में आये थे। धीरे–धीरे 4–5 दोस्तों का ग्रुप बन गया वे हर रविवार को कुटिया जाते थे, सत्संग सुनने। एक–दो बार गये तो स्व.रूपचंद दूदानी जी की उन पर नजर पड़ी उस समय कुटिया में कवेलू चढ़ाने का काम चल रहा था। उन्होंने उसे स्व. रोचीराम जी की सहायता करने की बात कही। फिर तो उनका यह क्रम ही बन गया।

एक दिन वे खड़े थे तो स्वामीजी आये उनके हाथ मे अंगूरों के गुच्छे और 1–1 रू के नोट थे उन्होंने दिखाते हुये कहा आप में से जो चाय पीना छोड़ेगा उसे 1रू और यह अंगूर का गुच्छा दूंगा। उन सबने कहा हम छोड़ देंगे, और 14 वर्ष तक उन्होंने चाय नहीं पी।

उन्होंने बताया उनके पिता श्री मूरजमल चांडवानी जी की कालापीपल में चाय की होटल थी। वे चौथी क्लास में पढ़ते थे। सबेरे 8 बजे स्कूल जाते थे, 12 बजे वापस आते थे। घर पर बस्ता रखकर दूध का खाली कमण्डल लेकर ट्रेन से कालापीपल जाते थे ट्रेन 12 बजे दोपहर को जाती थी। वहां पर दिन भर काम करते थे और रात को बिलासपुर ट्रेन से 10 बजे संतनगरी दूध लेकर आते थे। गांव वाले चाय उधार पीते थे और गेहूं की फसल आने पर गेहूं के रूप में पैसे चुकाते थे। वे ट्रेन से ही छोटी छोटी थैलियां बनाकर गेहूं घर पर लाते थे।

वे एकाउंटेंट जनरल आफिस में सहायक लेखापाल के रूप में कार्यरत हैं। उनकी सहधर्मिणी यूनाइटेड इंश्योरेंस आफिस में नौकरी करती हैं। उनका बेटा दिल्ली

यूनीवर्सिटी से एमबीए कर रहा है। उनकी बिटिया इन्दौर से बीटेक करके अच्छी कंपनी मे काम कर रही हैं। वे इसे संतों का आशीर्वाद मानते है। वे आपस में चार भाई है, नंदलालजी, चंद्रकुमारजी, खुशालजी एवं नानक जी सब पर परम पिता परमेश्वर की आसीम कृपा है।

भुज का भूकम्प

श्री अशोक सावलानी

दुबई मो. 0097155-9852130

लगभग 5 वर्ष पूर्व श्री अशोक सावलानी जी से मेरा परिचय मनोहर छतवानी जी के कारण शेल्टर फांउडेशन के संस्थापक के रूप में हुआ। शेल्टर फांउडेशन गरीब लोगों को सस्ते दामों पर मकान बनवाकर देता है। लगभग 1,30,000 रू. में एक रूम अपार्टमेंट, 1,70,000 रू. 2 रूम और 2,25,000 रू में वन बीएचके आज से 10 वर्ष पूर्व दिये थे। वास्तव में यह उस समय के बाजार मूल्य का 20 प्रतिशत ही था। उसमें से भी उनको बैंक के माध्यम से ऋण दिलवाया गया था। यह 2011 की बात है। मुझे इस कार्य के साथ मनोहर छतवानी ने जोड़ा और जब वे 2 वर्ष बाद आये तो उनसे पहली मुलाकात हुई। अत्यंत साधारण से व्यक्ति लगे। लेश मात्र भी उनसे मिलकर नहीं लगा कि वे इतने बड़े संगठन के निर्माता हैं। वे जब भी आते हैं तो मेरे घर भी जरूर आते है। यह मेरा सौभाग्य है। उनसे जब मैंने पुस्तक के लिये संस्मरण मांगे तो उन्होंने जो रिकार्डड ऑडियो भेजा वहीं मैं लिखने जा रहा हूं।

उन्होंने बताया उनके चचेरे भाई हांगकांग में रहते हैं। वे स्वामीजी के पास संतान की इच्छा लेकर गये थे। स्वामीजी ने उनको चार आम दिये और कहा कि आपको चार संतान होगीं, उसमें से एक आप अपनी बहन को दे देना जिसे संतान नही है। स्वामी जी के वचन सत्य साबित हुए और उन्होंने स्वामीजी की आज्ञानुसार एक संतान अपनी बहन को दे दी।

उन्हें स्वामीजी के दर्शन पहली बार सन् 2003 में हुए। उन्होंने स्वामीजी को बताया कि विक्योमल सर्राफ जी उनके मामा थे। उनको बताया गया था स्वामीजी 5–10 मिनट ही समय देते हैं मगर उस दिन स्वामीजी से उनका वार्तालाप 30–40 मिनट से ज्यादा ही हुआ था। उन्होंने उस मुलाकात में स्वामीजी को शेल्टर फाउंडेशन की जानकारी दी और बताया कि भुज में भूकंप पीड़ितों के लिये उन्होंने मकान बनवाये थे, हमने उनसे संतनगरी में भी मकान बनवाने की इच्छा जाहिर की तो उन्होंने सहयोग का पूरा आश्वासन दिया। उस काम में संतों के अनुयायियों ने भी बहुत सहायता दी, जिस कारण वे 124 फ्लेट बनवा सके और जरूरतमंदों को दे सके। उन फ्लेटों में स्वच्छ पानी, बिजली, किचन, लेट, बाथ का भी पूरा ध्यान रखा गया है। उस कालोनी का नाम भी उन्होंने स्वामी हिरदाराम कालोनी ही रखा। श्री अशोक सावलानी जी के परिवारिक गुरू संत धर्मदास जी थे, जो 1940 में परमधाम में चले गये थे। उनकी दरबार मांझांदनि थी। उनकी वर्सी अक्टूबर में होती हैं, स्वामीजी की उस दरबार में बहुत आस्था थी। वे वर्सी पर भी आते थे। उपरोक्त कालोनी में 240 और भी मकान बनने हैं। शासकीय स्वीकृतियाँ मिलते ही उनका निर्माण कार्य चालू हो जायेगा।

गुरू पूरे चरणी लाया संगी सदा सदाई

श्री कुलजेन्द्र सिंहजी
कनाडा मो. 9065951313

मुझे श्री पुरूषोत्तम पारवानी जी ने बैंगलोर के निवासी तेजेन्द्रसिंह का नंबर दिया और बताया कि उनका परिवार स्वामीजी में बहुत आस्था रखता है। मैने वहां पर फोन लगाया, किसी बहन की आवाज आई उनसे स्वामीजी के बारे में चर्चा हुई उनसे मुझे बहुत आशीर्वाद प्राप्त हुये। मेरे फोन करने का आशय जानकर उन्होंने बताया कि उनके जेठजी अभी संत हिरदाराम नगर आये हुए हैं और वृद्धाश्रम में रुके हुए हैं। उनसे उनका फोन नं. लिया, फोन लगाया। उन्होंने शायद ै पसमदज (शांत) पर रखा हुआ था। मैं वृद्धाश्रम चला गया। उनके रूम का दरवाजा खटखटया मगर वे नींद में थे उन्होंने नहीं खोला। बाद में पता पड़ा कि वे लगभग 2 बजे के आसपास खाना खाने आते हैं। आप उस समय आ जाइये। मैं 2 बजे फिर गया। वे नीचे ही थे। रसोईघर में उनसे बात शुरू की। उनसे जो जानकारी मिली उसे लिखने का प्रयास कर रहा हूं। उन्हें दर्वेश शीतलसिंह जी के माध्यम से संतों के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने बताया कि दर्वेश शीतलसिंह, जो ज्ञान के भंडार थे, ने उन्हें बताया कि उनके गुरू स्वामी हिरदाराम साहिबजी है। हमने सोचा शीतलसिंह जी जो इतने बड़े दर्वेश है तो उनके गुरू कितनी बड़ी शक्ति होंगे। उनके दर्शन करने चाहिये। वे उस समय इन्दौर में थे। स्वामीजी भी इन्दौर में अपने किसी अनुयायी के यहां आये थे। यह बात 1983 की थी। उस समय वे 17 वर्ष के होंगे। वे गये और स्वामीजी के पांव छू लिये। शीतल सिंह जी ने बोला कुलजेन्द्रसिंह तुम्हारा बेड़ा पार हो गया। बच्चे थे, छोटी बुद्धि थी वह बात समझ नहीं पाये।

उन्होंने इन्दौर से सिविल इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण की। वे जब इन्दौर में पढ़ते थे तब वे संतनगरी स्वामीजी के चरण छूने की इच्छा लेकर आये। उन्होंने कुटिया के सेवादारों से कहा वे इन्दौर से स्वामी जी के दर्शन की प्यास एवं चरण छूने की इच्छा लेकर आये हैं। उन्होंने कहा स्वामीजी किसी को भी पांव छूने नहीं देते ऐसा आप बोलना भी मत नहीं तो वे नाराज हो जायेंगे। मैं गया उनके दर्शन किये और वापस आ गया। मन बहुत उदास हो गया था कि में गया तो मगर स्वामीजी के चरण स्पर्श नहीं कर पाया। वहां से वापस इन्दौर आया। गुरूद्वारे गया। वहां पर हुकमनामा आया,

गुरू पूरे चरणी लाया संगी सदा सदाई

मन को बहुत शान्ति मिली, हुक्मनामा बता रहा था, गुरूचरणों में मेरी चरण वंदना पहुंच गई है। 1998 फिर वे अपने माता–पिता भाई तेजेन्द्रसिंह के साथ पुनः भोपाल आये स्वामीजी के दर्शन करने के लिये। मन मे यह इच्छा थी कि स्वामी जी से कहें कि हमारा बेड़ा पार कर दो। हम स्वामीजी से यह कह ही नहीं पाये संकोच में पड़े रहे मगर स्वामीजी तो मन की बात पढ़ लेते थे। जब हम वापस आने लगे तो उनके मुखारविंद से स्वतः ही निकल गया 'बेड़ा पार'। कितनी न हमें खुशी हुई उनके शब्द सुनकर बता नहीं सकते।दर्वेश शीतलसिंह के बेटे का नाम उन्होंने हिम्मतसिंह रखने को कहा। वैसे उसका नाम मोहनसिंह था। मोहनसिंह को बुरा लगा। क्योकि सिख समुदाय में श्री गुरू ग्रंथ साहब से हुक्मनामा सुनकर ही बच्चे का नामकरण किया जाता है और स्वामीजी ने तो बगैर हुक्मनामे के ही उनका नाम हिम्मतसिंह रख दिया था। अतः वे गुरूद्वारे गये और

हुक्मनामा जाकर सुना। हुक्मनामें में आया

हमारी गणत कोई नहीं गनिये

अर्थात् यहां पर भी 'ह' शब्द ही नामकरण के लिये निकला तब उनको स्वामीजी में अगाध श्रद्धा पैदा हुई। वे अपना जन्मदिन 9 अक्टूबर 67 को मानते हैं। वे बोले एक बार अपने जन्मदिन पर संतजी के ब्रह्मालीन होने के बाद कुटिया पर माथा टेकने आये। उस समय भी श्री गुरू ग्रंथ साहिब के हुक्मनामे में आया –

'पूरे चरणी लागे।'

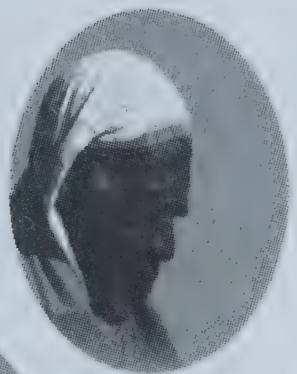
अर्थात स्वामीजी आज भी सूक्ष्म शरीर में विद्यमान हैं। उन्होंने बताया कि मुझे तो श्री गुरूग्रंथ साहिब के रूप में, गुरूनानक देव जी एवं ब्रह्मालीन संत स्वामी हिरदाराम जी में एक ही प्रकाश नज़र आता है। बहुत दिनों से मेंरे मन में यह विचार चल रहा था कि मैं अपने द्वारा लिखित संत हिरदाराम साहिब दर्शन पुस्तक में विदेशों में बसे उनके कुछ अनुयाइयों के संस्मरण भी शामिल कर सकूं। मैं नहीं जानता था कि कैसे मिलेंगे मगर मुझे मालूम था स्वामीजी मेरी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे। जब मैं कुलजेन्द्रसिंह जी के पास गया मुझे मालूम नहीं था कि वे कहां के हैं पता चला कि वे कनाडा से हैं। देखिये स्वामीजी ने कैसे मेरी इच्छा पूरी की।

मन का दमन

श्री कन्हैयालाल हेमनानी
संत हिरदाराम नगर
मो. 9424476348

स्वामी जी कहते थे – 'करो उस पर मनन, यदि मन यहां वहां भटके तो करो पूरी शक्ति से उसका दमन।' उन्होंने बताया कि वे मोबाइल का सीमित प्रयोग करते हैं सेवा निवृत्त हैं तो शास्त्रों का अध्ययन करते हैं।कन्हैयालाल हेमनानी जी स्व. आइलदास हेमनानी जी के सुपुत्र हैं। मंजू संस्कार केन्द्र का संचालन पहले उनके पिताजी करते थे जो उनके स्वर्गवास के बाद उनके जिम्मे आ गया हैं। बैंक से समय पूर्व सेवानिवृत्ति ले ली थी क्योंकि दोनों पुत्र रोजगार में लग गये थे। उनको पेंशन से इतना मिल जाता है कि नौकरी की जरूरत ही नहीं महसूस होती। सीमित आवश्यकताएं हैं उनकी अपने जीवन की, सादा जीवन उच्च विचार! सबेरे अमृतवेला में जागकर पाठ करना और स्वामीजी के अनुयाइयों के साथ गुरू वंदना करना उनका नित्य का नियम है। उनसे जब मैंने स्वामीजी के बारे में बातें शुरू की तो उन्होंने सिर्फ स्वामीजी का एक वाक्य सूत्र के रूप में दिया। वह एक सूत्र ही अपने आप में बहुत सुन्दर है। जिसे हर अनुयायी को अपने जीवन में उतारना चाहिये।

'करो एक शब्द का चयन, करो उस पर घोर मनन
यदि मन यहां वहां भटके तो, करो पूरी शक्ति से उसका दमन'



सुख चाहो तो सुख दो

सेवा संकल्प



संत कुटिया में
साई चांडूराम साहिब



संत कुटिया में आर आर एस प्रमुख
श्री बाला साहेब देवरस

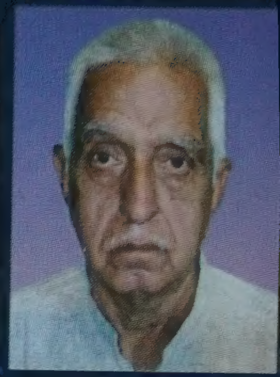


संत कुटिया में प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी



आदरणीय जननी
स्व. श्रीमती सीता देवी
लच्छवानी
के
चरण कमलों
में
अर्पित समर्पित

लेखक परिचय



आसूदो छबलदास लच्छवाणी

जन्म : 03 11 1950, भीलवाड़ा (राजस्थान)

शिक्षा : बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से स्नातक 1972
मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा 1984
केन्द्रीयकृत लेखापाल परीक्षा उत्तीर्ण 1989

नौकरी भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड भोपाल से वरिष्ठ कार्यपालक सुपरवाइजर(वित्त) से सेवानिवृत्त नवम्बर 2010

विविध :
- पहली रचना स्कूल पत्रिका में प्रकाशित 1967 में
- साहित्यिक संगोष्ठीयों में भाग लेना
- साक्षरता को समर्पित 'नवयुवक परिषद' का गठन 1978
- संस्कारों के निर्माण के लिए कार्यरत 'प्रयास' का गठन 1989
- व्यवसायिक शिक्षा के सहयोग के लिए कार्यरत ''प्रोफेशनल एज्युकेशन सहायता समूह'' संत हिरदाराम नगर का गठन 1915

मध्य प्रदेश सिंधी साहित्य अकादमी के सहयोग से

- 'हलंदा हलो' सिंधी नाटक जिस पर पहली संत हिरदाराम नगर में बनी वीडियो फिल्म 1986 में
- 'पाणी अ विच पथरु' काव्य संग्रह 2019
- 'सुहिणो सुपिनो' सिंधी नाटक 2020 की सर्वश्रेष्ठ गद्य कृति मानते हुए कृष्ण खटवानी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित ।
- गुरूवाणी के 'श्लोक महिला नवां' के 57 श्लोकों का सिंधी में अनुवा कर प्रकाशन 2019
- गुरूवाणी के 'आनंद साहिब, रहरास साहिब, कीर्तन सोहला, शब्द हजारे का भी सिंधी भाषा में अनुवाद प्रकाशन के लिए तैयार शीघ्र ही प्रकाशन
- 'जाने के लिए जाऊंगा नहीं' (काव्य संग्रह) 2008 पर 'मध्यप्रदेश राष्ट्र भाषा प्रचार समिति भोपाल' द्वारा अहिंदी भाषी द्वारा हिंदी सेवाओं के लिए दीए जाने वाले सम्मान
- 'सैय्यद अमीर अली मीर' से सम्मानित 2010
- साक्षरता के लिए समर्पित जीवन 1978 से

संपर्क सूत्र- 'संत आशीष', 62, गुरू नानक कालोनी, संत हिरदाराम जी की कुटिया के पास, संत हिरदाराम नगर भोपाल म. प्र. पिन कोड 462030
मोबाइल 9893809097